जैनाचार्य – जैनधर्मदिवाकर – पूज्यश्री – घासीलालजी – महाराज–
विरचितया 'सुन्दरबोधिन्याख्यया' टीकया समलङ्कृतम्
हिन्दीगुर्जरभाषानुवादसहितम्

॥ श्री निरयावलिकासूत्रम् ॥

"NIRIYAVALIKASUTRAM

नियोजकः–
संस्कृत–प्राकृतज्ञ–जैनागमनिष्णात–प्रियव्याख्यानि–
पण्डितमुनि–श्रीकन्हैयालालजी–महाराज

❀

प्रकाशकः
अ. भा० श्वे० स्था० जैनशास्त्रोद्धार–समिति–प्रमुख
श्रेष्ठि–श्रीशान्तिलाल–मङ्गलदासभाई–महोदय.
मु० राजकोट (सौराष्ट्र)

❀

द्वितीयावृत्ति प्रति १०००

वीर सम्वत २४८६ विक्रमसम्वत २०१६
ईस्वीसन् १९६०

मूल्यम् रू ११=००

निरयावलिका सूत्रकी विषयानुक्रमणिका।

પ્રાપ્તિસ્થાન
શ્રી અ ભા શ્વે સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ
ગ્રીન લોજ પાસે, રાજકોટ

Published by
Sree Akhil Bharat S S
Jain Shastroddhar Samiti,
Garedia Kuva Road RAJKOT
(Saurashtra) W Ry India

*

બીજી આવૃત્તિ પ્રત ૧૦૦૦
વીર સવત ૨૪૮૬
વિક્રમ સવત ૨૦૧૬
ઇસ્વી સન્ ૧૯૬૦

મુદ્રક અને મુદ્રણસ્થાન
જયન્તિલાલ દેવચદ મહેતા
જય ભારત પ્રેસ,
ગરેડીઆ કુવા રોડ
શાક માર્કેટ પાસે, રાજકોટ

प्रस्तावना

ससारके सभी जीव परम अमृत समान सुखकी गवेषणा करते हैं, सुखके प्रयत्नमें लगे रहते हैं, सुखके कारणको ढूँढते हैं, सुखके वातावरणको पसद करते हैं, सुखकी याचना और सुख ही की मिन्नत मानते हैं, तो भी वे परम सुखके बदले परम दुःख ही प्राप्त करते हैं। सभी प्रयत्न सभी कारण और सभी वातावरण ये दुःखरूप जालमें परिणत होकर आत्मरूप भोले भाले मृगोंको फसा कर दुःखित करते हैं। जिससे आत्मा अपना भान भूलकर अज्ञानरूपी अन्धकारमें गोता खाता है भटकता है, फिर इन्द्रिय रूपी चोर चारों तरफसे आकर दुर्बल आत्माको घेर लेते हैं और अनेक प्रकारकी विडम्बना करते हुए आत्माको हैरान करते हैं। जैसे इन्द्र वज्रसे पर्वतको चूर २ कर डालता है वैसे ही वे आत्माके शम-दम आदि गुणोंको नाश करके आत्माको जड जैसा बनाते हुए हीन हीन बनाकर छोडते हैं।

जब आत्मा निर्बल हो जाता है तब मोहरूपी सुभट आत्मराज्यमें प्रवेश करता है, और वहाँ विघ्नपरपराको उपस्थित कर आत्माका सर्वस्व लूटकर उसको भवरूप कूपमे डालता है। वहाँ आत्माको सयोग वियोगरूप आधिव्याधि रूप दुष्ट जलजतु हरएक तरहसे कष्ट पहुँचाते हैं, सर्प जैसे मेंढकको गिल जाता है वैसे ही जन्म जरा मृत्यु आत्माको गिलता रहता है। फिर किस प्रकार सुखकी आशा की जाय? ऐसी अवस्थामे तो सुखका स्वप्न भी नही मिल सकता, 'हा कष्टम्' तो भी ससारी जीव सुखकी आशा करते हैं।

फिर अविरति रूपी राक्षसी आकर आत्माको घेर लेती है और विष समान विषय भोगोमें फसाकर उसे निःसार बना देती है, आत्माके निज स्वरूपको पलटाकर विभावदशा उत्पन्न करती है जिससे आत्मा परस्वरूपको अपना स्वरूप समझकर भवभ्रमण रूप परपराकी और भी वृद्धि करता हुआ कष्ट पर कष्ट भोगता है, सुख कैसे प्राप्त हो इसकी तलाशमें घूमता है, इतनेमें कषाय रूप राक्षस विविध प्रकारसे त्रास पैदा करता है, तो भी आत्मा दुःखके निदान

निरयालिका आदि पाँच उपाङ्ग भगवानकी धर्मकथानुयोग वाणीमें अन्तर्हित हैं। इन पाँचों उपाङ्गोंमें (१) निरयावलिका अन्तकृतका (अन्तगडसूत्र) उपाङ्ग है, और (२) कल्पावतसिका अनुत्तरोपपातिकका, (३) पुष्पिता प्रश्नव्याकरण सूत्रका, (४) पुष्पचूलिका विपाकसूत्रका, एव वृष्णिदशा दृष्टिवादाङ्गका उपाङ्ग है।

इनमें निरयावलिका उपाङ्गमें काल आदि दस कुमारोंका वर्णन काल आदि दस अध्ययनोंमें किया गया है। जो सक्षिप्तमें इस प्रकार है–

महाराज श्रेणिककी अनेक रानियाँ थी। उनमें नन्दा, चेल्लना, काली, सुकाली, महाकाली, कृष्णा, सुकृष्णा, महाकृष्णा, वीरकृष्णा, रामकृष्णा, पितृसेनकृष्णा, और महासेनकृष्णा, ये उनकी मुख्य रानियाँ थीं। इनमें नन्दाके पुत्र अभयकुमार थे, चेल्लनाके पुत्र कूणिक, वेहल्य और वेहायस थे। काली आदि दसों रानियोंके पुत्र क्रमश काल, सुकाल, महाकाल, कृष्ण, सुकृष्ण, महाकृष्ण, वीरकृष्ण, रामकृष्ण, पितृसेनकृष्ण और महासेनकृष्ण थे। इन कुमारोंमें अभयकुमार प्रव्रजित हो गये। चेल्लनाके पुत्र कूणिकने काल आदि दस कुमारोंको अपनी ओर मिलाकर महाराज श्रेणिकको कैद कर लिया और उन्हें अनेक प्रकारकी तकलीफें देने लगा। एक दिन कूणिक अपनी माताके चरण वन्दनके लिये आया। माताने उसे देखकर अपना मुह फिरा लिया। यह देख कूणिक हाथ जोड इस प्रकार बोला–हे माता! मैं अपने पराक्रमसे राज्यका सम्राट् बना, यह देखकर भी तुझे आनन्द नहीं होता, तुम्हारे मुखपर हर्षका कोई चिह्न नहीं दिखायी देता, तुम उदासीन हो, क्या यह तुम्हारे लिये उचित है? भला तुम्ही सोचो, कौन ऐसी मा होगी जो अपने पुत्रकी उन्नति पर प्रसन्न न होगी। यह सुनकर महारानी चेल्लनाने कहा–बेटा! तुम्हारी इस उन्नतिसे मुझे किस प्रकार आनन्द हो? क्यों कि तुमने अपने पिता महाराज श्रेणिकको कैद कर लिया है, जो तुम्हारे देव गुरुके समान हैं, जिन्होंने तुम्हारे उपर अनेक उपकार किये हैं। उन्हीके साथ तुम्हारा यह व्यवहार समुचित है! जरा तुम्ही सोचो!

कूणिकने कहा–मा! जो श्रेणिक राजा मुझे मार डालना चाहते थे, वे मेरे परम उपकारी हैं, यह कैसे! स्पष्ट बताओ।

रूप उस कषायको ही सुखका निदान समझकर उसमें आसक्त होता है, सुखके जितने जितने भी कारण हे- अहिंसा संयम तप आदि, उनको दुःख रूप समझकर उन्हें छोड बैठता है, धर्म अधर्म आत्मा अनात्माके विवेकसे वंचित रहता है, उन्मार्गगामी बनता है, सुमार्गको परित्याग करता है, फिर उसी दुःख परंपराकी जालमें फंसता है। इतनेमें प्रमाद रूपी पिशाच आकर झूमता है और आत्माकी ऐसी छिन्न भिन्न दशा करता है कि आत्मा जड स्वरूप बनकर जड वस्तुओंमे ही आनन्द मानता है।

इधर अशुभयोग रूप भूत आत्मामे प्रवेश करता है, तब फिर क्या? कल्पनासेभी बाहर परिस्थिति बन जाती है। अशुभ योगों की अशुभ प्रवृत्तियाँ अशुभ कार्योंकी और आत्माको घसीटती हैं। फिर आत्मा परतन्त्र बनकर ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मोंको मन्द तीव्र आदि रसमें प्रवृत्त हो बांधता है और एकसौ अडतालीस प्रकृतियो की फांसमें फंसकर नाना प्रकार का दुष्कृत्य करके नरक निगोद आदि अनन्त दुःखरूपी खड्डेमे गिर जाता है। इस प्रकार अनन्त काल तक आत्माके लिये मनुष्यभव पाना तो दूर रहा, किन्तु निगोदकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रियसे बादर एकेन्द्रियका भी भव वह नहीं पा सकता।

इस तरह चतुरगतीमें भटकता भव भ्रमण करता २ आत्मा कदाचित् मनुष्य भवमे आ भी गया तो मिथ्यात्व अविरति कषाय प्रमाद और अशुभ योगों की प्रवृत्तिया उसको घेर लेती हैं, जिससे वह फिर भवाटवीमें पड जाता है और उसी विकल दशाको प्राप्त कर जन्म मरण आदि पाता रहता है।

इस प्रकारकी अवस्था सकल संसारी जीवों की भगवानने अपने केवलज्ञानरूपी प्रकाशसे अवलोकन करके परम करुणा करते हुए शारीरिक मानसिक दुःखोंको मिटानेवाली जन्म मरण आदिको उच्छेद करनेवाली जिनवाणीको द्वादश अंग द्वारा प्रवचन रूपसे प्रकाशित की है। वह वाणी १ चरणकरणानुयोग २ धर्मकथानुयोग ३ गणितानुयोग और ४ द्रव्यानुयोग रूपमें विभक्त है।

निरयालिका आदि पाँच उपाङ्ग भगवानकी धर्मकथानुयोग वाणीमें अन्तर्हित हैं। इन पाँचों उपाङ्गोंमें (१) निरयावलिका अन्तकृतका (अन्तगडसूत्र) उपाङ्ग है, और (२) कल्पावतंसिका अनुत्तरोपपातिकका, (३) पुष्पिता प्रश्नव्याकरण सूत्रका, (४) पुष्पचूलिका विपाकसूत्रका, एव वृष्णिदशा दृष्टिवादाङ्गका उपाङ्ग है।

इनमें निरयावलिका उपाङ्गमें काल आदि दस कुमारोंका वर्णन काल आदि दस अध्ययनोंमें किया गया है। जो सक्षिप्तमें इस प्रकार है—

महाराज श्रेणिककी अनेक रानियाँ थी। उनमें नन्दा, चेल्लना, काली, सुकाली, महाकाली, कृष्णा, सुकृष्णा, महाकृष्णा, वीरकृष्णा, रामकृष्णा, पितृसेनकृष्णा, और महासेनकृष्णा, ये उनकी मुख्य रानियाँ थी। इनमें नन्दाके पुत्र अभयकुमार थे, चेल्लनाके पुत्र कूणिक, वेहल्य और वैहायस थे। काली आदि दसों रानियोंके पुत्र क्रमश काल, सुकाल, महाकाल, कृष्ण, सुकृष्ण, महाकृष्ण, वीरकृष्ण, रामकृष्ण, पितृसेनकृष्ण और महासेनकृष्ण थे। इन कुमारोंमें अभयकुमार प्रव्रजित हो गये। चेल्लनाके पुत्र कूणिकने काल आदि दस कुमारोंको अपनी ओर मिलाकर महाराज श्रेणिकको कैद कर लिया और उन्हें अनेक प्रकारकी तकलीफें देने लगा। एक दिन कूणिक अपनी माताके चरण वन्दनके लिये आया। माताने उसे देखकर अपना मुह फिरा लिया। यह देख कूणिक हाथ जोड इस प्रकार बोला—हे माता! मैं अपने पराक्रमसे राज्यका सम्राट् बना, यह देखकर भी तुझे आनन्द नही होता, तुम्हारे मुखपर हर्षका कोई चिह्न नही दिखायी देता, तुम उदासीन हो, क्या यह तुम्हारे लिये उचित है? भला तुम्ही सोचो, कौन ऐसी मा होगी जो अपने पुत्रकी उन्नति पर प्रसन्न न होगी। यह सुनकर महारानी चेल्लनाने कहा—बेटा! तुम्हारी इस उन्नतिसे मुझे किस प्रकार आनन्द हो? क्यो कि तुमने अपने पिता महाराज श्रेणिकको कैद कर लिया है, जो तुम्हारे देव गुरुके समान हैं, जिन्होंने तुम्हारे उपर अनेक उपकार किये हैं। उन्हीके साथ तुम्हारा यह व्यवहार समुचित है! जरा तुम्ही सोचो!

कूणिकने कहा–मा! जो श्रेणिक राजा मुझे मार डालना चाहते थे, वे मेरे परम उपकारी हैं, यह कैसे! स्पष्ट बताओ।

रूप उस कषायको ही सुखका निदान समझकर उसमें आसक्त होता है, सुखके जितने जितने भी कारण हैं– अहिंसा संयम तप आदि, उनको दुःख रूप समझकर उन्हें छोड बैठता है, धर्म अधर्म आत्मा अनात्माके विवेकसे वंचित रहता है, उन्मार्गगामी बनता है, सुमार्गको परित्याग करता है, फिर उसी दुःख परंपराकी जालमें फसता है। इतनेमे प्रमाद रूपी पिशाच आकर झूमता है और आत्माकी ऐसी छिन्न भिन्न दशा करता है कि आत्मा जड स्वरूप बनकर जड वस्तुओमे ही आनन्द मानता है।

इधर अशुभयोग रूप भूत आत्मामे प्रवेश करता है, तब फिर क्या? कल्पनासेभी बाहर परिस्थिति बन जाती है। अशुभ योगों की अशुभ प्रवृत्तियाँ अशुभ कार्योंकी और आत्माको घसीटती हैं। फिर आत्मा परतंत्र बनकर ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मोंको मन्द तीव्र आदि रसमे प्रवृत्त हो बांधता है और एकसौ अडतालीस प्रकृतियो की फासमे फसकर नाना प्रकार का दुष्कृत्य करके नरक निगोद आदि अनन्त दुःखरूपी खड्डेमें गिर जाता है। इस प्रकार अनन्त काल तक आत्माके लिये मनुष्यभव पाना तो दूर रहा, किन्तु निगोदकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रियसे बादर एकेन्द्रियका भी भव वह नही पा सकता।

इस तरह चतुरगतीमें भटकता भव भ्रमण करता २ आत्मा कदाचित् मनुष्य भवमे आ भी गया तो मिथ्यात्व अविरति कषाय प्रमाद और अशुभ योगों की प्रवृत्तिया उसको घेर लेती हैं, जिससे वह फिर भवाटवीमें पड जाता है और उसी विकल दशाको प्राप्त कर जन्म मरण आदि पाता रहता है।

इस प्रकारकी अवस्था सकल संसारी जीवों की भगवानने अपने केवलज्ञानरूपी प्रकाशसे अवलोकन करके परम करुणा करते हुए शारीरिक मानसिक दुःखोंको मिटानेवाली जन्म मरण आदिको उच्छेद करनेवाली जिनवाणीको द्वादश अंग द्वारा प्रवचन रूपसे प्रकाशित की है। वह वाणी १ चरणकरणानुयोग २ धर्मकथानुयोग ३ गणितानुयोग और ४ द्रव्यानुयोग रूपमें विभक्त है।

एक २ भाग काल आदि दस कुमारोंको दिया, और ग्यारहवाँ भाग खुद लेकर राज्य करने लगा।

राजा श्रेणिकने सेचनक गन्ध हाथी और रानी नन्दाने अठारह लडीवाला हार कूणिकके छोटे भाई वैहल्यको दिया था। वह हाथी पर बैठ गङ्गा नदीमे अपने अन्तःपुर परिवारके साथ क्रीडा करते थे। उनकी क्रीडा देखकर लोग कहने लगे—वास्तविक राज्योपभोग तो वैहल्य कुमार ही करते है। कूणिक तो नाम मात्रके राजा हैं, क्यो कि उनके पास सेचनक गन्ध हाथी नहीं है। धीरे २ वैहल्यकी जलक्रीडाका समाचार कूणिक राजाकी रानी पद्मावतीको मालुम हुआ, वह वैहल्यसे सेचनक हाथी और अठारह लडीवाला हार ले लेनेके लिये कूणिकको बार बार प्रेरित करने लगी। कूणिकने अन्तमें रानीकी बात मानकर अपने भाईसे हाथी और हार माँगा। उन्होंने भी राज्यका हिस्सा माँगा, परन्तु कूणिक इस पर तैयार न हो सके। यह देख वैहल्य कुमार मौका पाकर हाथी हार आदि अपनी सभी सामग्री लेकर अपने अन्तःपुर परिवारके साथ वैशाली नगरीमे अपने नाना चेटकके पास पहुँचे। कूणिकने अपने दूतके द्वारा चेटकको सदेशा दिया—कि आप हाथी और हारके साथ वैहल्यको भेजदे। इसपर चेटकने उत्तरमें सदेशा भेजा—यदि तुम राज्यका भाग वैहल्यको दो तो इसे हम हाथी और हारके साथ भेज सकते हैं, परन्तु कूणिकको यह शर्त मजूर नही हुई, फल स्वरूप दोनोमे युद्ध हुआ। इधर कणिककी तरफ काल आदि दस कुमार थे उधर चेटककी और नौ लच्छी नौ मल्लकि ये अठारह गणराजा थे। इनमे प्रत्येकके पास तीन २ हजार हाथी घोडे रथ और तीन २ करोड पैदल सैनिक थे। प्रथम दिनकी लडाईमे कालकुमार अपने तीन २ हजार हाथी घोडे रथ और तीन करोड पैदल सैनिकके साथ चेटक राजासे लडनेके लिये आया और चेटकके एक अमोघ बाणसे सैन्य सहित मारा गया। दूसरे दिन सुकालकुमार, तीसरे दिन महाकाल, चौथे दिन कृष्णकुमार, पाँचवें दिन सुकृष्ण, छठे दिन महाकृष्ण, सातवे दिन वीरकृष्ण, आठवें दिन रामकृष्ण, नवमें दिन पितृसेनकृष्ण, और दशवें दिन महासेनकृष्ण अपने २ सैन्य सहित चेटकके

रानीने कहा–बेटा! जब तुम मेरे गर्भमे आये, उस समय मुझे दोहद उत्पन्न हुआ कि मैं राजा श्रेणिकके उदरबलिका मांस तल भूनकर मदिराके साथ खाऊँ। इसके लिये मैं उदास रहने लगी और दिनानुदिन क्षीण होने लगी। जब यह समाचार तुम्हारे पिताको मिला तो उन्होने इसका कारण शपथ पूर्वक पूछा, तो मैने अपना दोहद बतलाया। बादमे तुम्हारे पिताने मेरा दोहद पूरा किया। दोहद पूरा हो जानेके बाद मैने सोचा–यह बालकने गर्भावस्थामे ही पिताका मांस खाया, उत्पन्न होनेपर न जाने क्या करेगा? इस लिये जिस किसी प्रकार इस गर्भको गिरा देना ही श्रेयस्कर है। पर अनेक प्रकारकी ओषधीसे भी गर्भ न गिरा। फिर नौ महीनेके बाद उस गर्भसे तुम पैदा हुए, मैने तुम्हे अनिष्ट समझ कर उकरडी पर फिकवा दिया। यह बात तुम्हारे पिताको मालुम हुई, वह तुम्हें खोज कर ले आये और मुझे उन्होने इस कार्यके लिये बडी भर्त्सना की। तेरी उङ्गलीको उकरडी पर मुर्गेने काट खाया जिससे वह सूज गयी उसमें पीप भर आया, तुझे असह्य वेदना होने लगी, तू चिल्लाने लगा, उस समय तेरे पिता तुम्हारे पास बैठे रहते थे, दिन रात तुम्हारी परिचर्या करते रहेते थे, तुम जब व्रणकी वेदनासे रो पडते थे, उस समय तुम्हारी उङ्गलीको अपने मुहमे डाल पीप चूसकर थूक देते थे, उससे तुझे शान्ति मिलती थी और तू धीरे २ अच्छा हो गया। बेटा! तु ही सोच, ऐसे परम उपकारी पिताके साथ तेरा यह बर्ताव उचित है? अपनी मा के मुखसे यह सुन कूणिक बहुत दुःखी हुआ। परम उपकारी पिताका बन्धन तोडूँ इस भावनासे उसी समय हाथमे कुल्हाडी लेकर जिस पिंजरेमें महाराजा श्रेणिक कैद थे, उस पिंजरेको तोडनेके लिये चल पडा। लेकिन राजा श्रेणिकने कूणिकको हाथमे कुठार लेकर आते हुए देख मनमें सोचा–न जाने यह कूणिक मुझे किस कुमौतसे मारेगा? इस भयसे उन्होने अपनी अगूठीमे जडा हुआ तालपुट विष चूस कर अपना अन्त कर लिया। पिताकी मृत्युसे कूणिक अत्यधिक दुःखी हुआ, उसे राजगृहकी प्रत्येक वस्तु पिताकी स्मृति दिलाकर दुःखित करने लगी, पिताके प्रति किये हुए अन्याय उसकी आत्माको कष्ट देने लगे। वह राजगृहमे नहीं रह सका, राजगृह छोडकर चम्पानगरीको उसने राजधानी बनायी। वहाँ अपने भाई बन्धुओंके साथ रहने लगा और राज्यको ग्यारह भागोंमें बाँटकर

अध्ययन हैं। उन दसों देवियोंका नाम-श्री (१) ह्री (२) धी (३) कीर्ति (४) बुद्धि (५) लक्ष्मी (६) इलादेवी (७) सुरादेवी (८) रसदेवी (९) और गन्धदेवी (१०) है। ये दसों देवियाँ भगवानके दर्शनके लिये आयीं और नाट्यविधि दिखाकर अपने २ स्थान पर चली गयी। गौतमस्वामीने इन देवियोंकी ऋद्धि प्राप्तिके बारेमें पूछा। भगवानने इन सबोंका पूर्व भवका वर्णन किया, और कहा-हे गौतम! ये सभी देवलोकसे च्यव कर महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेंगी और सिद्ध होकर सभी दुखोंका अन्त करेंगी!

इसका पाँचवाँ वर्गका नाम वृष्णिदशा वर्ग है। इसमें बारह अध्ययन हैं। ये बारहो अध्ययन बारह कुमारोंका नामसे हैं। उन कुमारोंका नाम-निषध (१) मायनी (२) वह (३) वह (४) पगता (५) ज्योति (६) दशरथ (७) दृढरथ (८) महाधन्वा (९) सप्तधन्वा (१०) दशधन्वा ११ और शतधन्वा १२ है। इनमे निषधकुमारका वर्णन इस प्रकार है-निषध कुमार राजा बलदेव और रानी रेवतीका पुत्र थे। इनका विवाह पचास राजकन्याओंके साथ हुआ और वह अपने उपरी महलमे सुख पूर्वक रहने लगे। एक समय द्वारकाके नन्दन वन उद्यानमें भगवान अर्हत् अरिष्टनेमि पधारे। भगवानके दर्शनके लिये कृष्ण वासुदेव आदि नन्दन वन उद्यानमे गये। निषधकुमारको भी भगवानके पधारनेका समाचार ज्ञात हुआ। वह भी भगवानके दर्शनके लिये। धर्म कथा सुनकर श्रावक धर्म स्वीकार कर अपने घर लौट गये। भगवानका अन्तेवासी वरदत्त अनगार निषधकुमारकी सौम्यता देख मुग्ध हो गये। और निषधकुमारको यह सौम्यता और ऋद्धि आदि कैसे प्राप्त हुई? इस बारेमे भगवानसे पूछा। भगवानने निषधकुमारके पूर्वभवका वर्णन किया। वरदत्तने पूछा-हे भदन्त। यह निषधकुमार आपके समीप प्रव्रजित होगा? भगवानने कहा-हाँ, वरदत्त! यह निषधकुमार मेरे समीप प्रव्रजित होगा। इसके बाद भगवान जनपदमे विचरने लगे। एक समय निषधकुमार पोषधशालामें दर्भके आसन पर बैठे हुए थे। उनके मनमे यह भावना पैदा हुई -यदि भगवान यहाँ आवें तो मै उनका दर्शन करूँ और उनकी

साथ लडने आये और चेटकके द्वारा ससैन्य मारे गये। और अपने पाप कर्मके प्रभावसे निरय (नरक) गामी हुए। इसी वस्तुको भगवानने गौतम स्वामीको उनके पूछने पर निरयावलिका नामसे फरमाया है।

कल्पावतंसिका नामक द्वितीय वर्गमे दस अध्ययन हैं, इन दसों अध्ययनोंका नाम क्रमसे—पद्म (१) महापद्म (२) भद्र (३) सुभद्र (४) पद्मभद्र (५) पद्मसेन (६) पद्मगुल्म (७) नलिनीगुल्म (८) आनन्द (९) और नन्दन (१०) है। प्रथम अध्ययनमे पद्मकुमारका वर्णन इस प्रकार है। पद्मकुमार भगवान महावीर स्वामीके पास प्रव्रजित हो पाँच वर्षों तक श्रामण्य पर्याय पाली, अन्तमे मासिकी सलेखनासे साठ भक्तोंको छेदित कर काल प्राप्त हुए, और सौधर्म कल्पमे देवता होकर उत्पन्न हुए। वहाँसे च्यव कर महाविदेह क्षेत्रमे जन्म लेंगे और सिद्ध होकर सब दुखोंका अन्त करेंगे। इसी प्रकार महापद्मसे लेकर नन्दन पर्यन्त नौ कुमारों का वर्णन जानना चाहिये। ये सभी भगवानके समीप प्रव्रजित हुए और सलेखनासे अपने शरीरको त्याग कर देवलोकमे देव होकर उत्पन्न हुए। वहाँसे च्यव कर महाविदेह वर्षमे जन्म लेंगे और सिद्ध होकर सब दुखोंका अन्त करेंगे। ये पद्म आदि दस कुमारोंके पुत्र और महाराज श्रेणिकके पौत्र (पोते) थे।

पुष्पिता नामक तृतीय वर्गमे चन्द्र (१) सूर (२) शुक्र (३) बहुपुत्रिका (४) पूर्ण (५) मानभद्र (६) दत्त (७) शिव (८) बलेपक (९) अनादृत (१०) इन दसो देवोंका दस अध्ययनोंमे वर्णन है। ये सब भगवान महावीर प्रभुके दर्शन करनेके लिये देवलोकसे अपने २ परिवारके साथ आये और अपनी वैक्रियिक शक्तिसे नाट्य विधि दिखाकर अन्तर्हित हो गये। गौतम स्वामीने उनकी विशाल ऋद्धिके बारेमे भगवानसे पूछा-हे भदन्त! इन्हें यह ऋद्धि कहाँसे प्राप्त हुई? भगवानने गौतम स्वामीको चन्द्र आदि देवके पूर्वभवका वर्णन सुनाया और उन्होंने कहा-गौतम! ये सब देवलोकसे च्यव कर महाविदेह वर्षमे उत्पन्न होकर सिद्ध होंगे।

पुष्पचूलिका नामक चतुर्थ वर्गमें भी दस देवियोंके नामसे दस

अध्ययन हैं। उन दसों देवियोंका नाम-श्री (१) ह्री (२) धी (३) कीर्ति (४) बुद्धि (५) लक्ष्मी (६) इलादेवी (७) सुरादेवी (८) रसदेवी (९) और गन्धदेवी (१०) है। ये दसों देवियाँ भगवानके दर्शनके लिये आयीं और नाट्यविधि दिखाकर अपने २ स्थान पर चली गयी। गौतमस्वामीने इन देवियोंकी ऋद्धि प्राप्तिके बारेमें पूछा। भगवानने इन सबोंका पूर्व भवका वर्णन किया, और कहा-हे गौतम ! ये सभी देवलोकमे च्यव कर महाविदेह क्षेत्रमे जन्म लेंगी और सिद्ध होकर सभी दुखोंका अन्त करेंगी।

इसका पाँचवाँ वर्गका नाम वृष्णिदशा वर्ग है। इसमें बारह अध्ययन हैं। ये बारहों अध्ययन बारह कुमारोंका नामसे है। उन कुमारोंका नाम-निषध (१) मायनी (२) वह (३) वह (४) पगता (५) ज्योति (६) दशरथ (७) दृढरथ (८) महाधन्वा (९) सप्तधन्वा (१०) दशधन्वा ११ और शतधन्वा १२ है। इनमें निषधकुमारका वर्णन इस प्रकार है-निषध कुमार राजा बलदेव और रानी रेवतीका पुत्र थे। इनका विवाह पचास राजकन्याओंके साथ हुआ और वह अपने उपरी महलमें सुख पूर्वक रहने लगे। एक समय द्वारकाके नन्दन वन उद्यानमें भगवान अर्हत् अरिष्टनेमि पधारे। भगवानके दर्शनके लिये कृष्ण वासुदेव आदि नन्दन वन उद्यानमे गये। निषधकुमारको भी भगवानके पधारनेका समाचार ज्ञात हुआ। वह भी भगवानके दर्शनके लिये। धर्म कथा सुनकर श्रावक धर्म स्वीकार कर अपने घर लौट गये। भगवानका अन्तेवासी वरदत्त अनगार निषधकुमारकी सौम्यता देख मुग्ध हो गये। और निषधकुमारको यह सौम्यता और ऋद्धि आदि कैसे प्राप्त हुई ? इस बारेमें भगवानसे पूछा। भगवानने निषधकुमारके पूर्वभवका वर्णन किया। वरदत्तने पूछा-हे भदन्त। यह निषधकुमार आपके समीप प्रव्रजित होगा ? भगवानने कहा-हाँ, वरदत्त ! यह निषधकुमार मेरे समीप प्रव्रजित होगा। इसके बाद भगवान जनपदमे विचरने लगे। एक समय निषधकुमार पोषधशालामें दर्भके आसन पर बैठे हुए थे। उनके मनमे यह भावना पैदा हुई -यदि भगवान यहाँ आवें तो मैं उनका दर्शन करूँ और उनकी

उपासना करू। भगवानने निषधकुमारके मनकी बात जान ली और अठारह हजार श्रमणोंके साथ नन्दन वन उद्यानमे पधारे। 'निषध-कुमारने भगवानका दर्शन किया, और बादमें माता पितासे पूछकर' अनगार हो गये और बयालीस भक्तोको अनशनसे छेदित कर काल प्राप्त हुए। उनके काल प्राप्त होनेके बाद वरदत्त अनगारने भगवानसे पूछा-हे भदन्त! आपका अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक निषध अनगार इस शरीर को छोडकर कहाँ गये? भगवानने कहा-हे वरदत्त! मेरा अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक निषध नामक अनगार सर्वार्थ सिद्ध विमानमे देव होकर उत्पन्न हुआ। वहाँ उसकी स्थिति तेतीस सागरोपम है। वह वहाँ से च्यव कर महाविदेह क्षेत्रके उन्नात नगरमे विशुद्ध मातृ पितृ वंशवाले राजकुलमे उत्पन्न होगा, बाल्यावस्था बीत जानेपर स्थविरोके समीप प्रव्रजित होगा और सिद्ध होकर सभी दुखोका अन्त करेगा। इसी प्रकार मायनी आदि ग्यारह राजकुमारोंकाभी वर्णन जानना चाहिये। ये सभी भगवान अरिष्टनेमिके समीप प्रव्रजित हुए और अपने नश्वर शरीरको छोड सर्वार्थ सिद्ध विमानमें देव होकर उत्पन्न हुए और च्यवकर, महाविदेह क्षेत्रमे जन्म लेकर सिद्ध होगे और सभी दुखोका अन्त करेगे।

यह पाचो उपाङ्गका संक्षिप्त वर्णन है।

इस निरयावलिका आदि पाचो उपाङ्गो पर जैनाचार्य पूज्य श्री घासीलालजी महाराजने सुन्दरबोधिनी नामकी टीका की है। इस टीका की विशेषता संस्कृत प्राकृतज्ञ विद्वान मूल और संस्कृत टीका को देखकर समझ लेंगे। और सकल साधारण अन्यजन हिन्दी और गुजराती भाषाके अनुवादसे इसकी विशेषता समझेंगे। इस पर हम अधिक लिखना उचित नही समझते, क्यों कि 'हाथ कङ्गनको आरसी क्या?' बस, इसी न्यायसे हम अपना वक्तव्य समाप्त करते हैं। इत्यलम्।

राजकोट,
१७ मई १९४८

मुनि कन्हैयालाल

અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી

જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ

❀

ગરેડીયા કુવા રોડ - ગ્રીન લોજ પાસે,

રાજકોટ

❀

દાનવીરોની નામાવલી

શરૂઆત તા ૧૮-૧૦-૪૮ થી તા ૧૫ ૫ ૬૦ સુધીમા

દાખલ થયેલ મેમ્બરોના મુબારક નામો

❀

લાઈફ મેમ્બરોનુ ગામવાર ધ્કાવારી લિસ્ટ

❀

(રૂા ૨૫૦ થી ઓછી રકમ ભરનારનુ

નામ આ યાદીમા સામેલ કરેલ નથી)

उपासना करु। भगवानने निषधकुमारके मनकी बात जान ली और अठारह हजार श्रमणोंके साथ नन्दन बन उद्यानमें पधारे। निषध-कुमारने भगवानका दर्शन किया, और बादमे माता पितासे पूछकर अनगार हो गये और बयालीस भक्तोंको अनशनसे छेदित कर काल प्राप्त हुए। उनके काल प्राप्त होनेके बाद वरदत्त अनगारने भगवानसे पूछा–हे भदन्त! आपका अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक निषध अनगार इस शरीर को छोडकर कहाँ गये? भगवानने कहा–हे वरदत्त! मेरा अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक निषध नामक अनगार सर्वार्थ सिद्ध विमानमें देव होकर उत्पन्न हुआ। वहाँ उसकी स्थिति तेतीस सागरोपम है। वह वहाँ से च्यव कर महाविदेह क्षेत्रके उन्नात नगरमे विशुद्ध मातृ पितृ वंशवाले राजकुलमे उत्पन्न होगा, बाल्यावस्था बीत जानेपर स्थविरोके समीप प्रव्रजित होगा और सिद्ध होकर सभी दुखोका अन्त करेगा। इसी प्रकार मायनी आदि ग्यारह राजकुमारोंकाभी वर्णन जानना चाहिये। ये सभी भगवान अरिष्टनेमिके समीप प्रव्रजित हुए और अपने नश्वर शरीरको छोड सर्वार्थ सिद्ध विमानमे देव होकर उत्पन्न हुए और च्यवकर, महाविदेह क्षेत्रमे जन्म लेकर सिद्ध होगे और सभी दुखोका अन्त करेगे।

यह पाचो उपाङ्गका संक्षिप्त वर्णन है।

इस निरयावलिका आदि पाचो उपाङ्गो पर जैनाचार्य पूज्य श्री घासीलालजी महाराजने सुन्दरबोधिनी नामकी टीका की है। इस टीका की विशेषता संस्कृत प्राकृतज्ञ विद्वान मूल और संस्कृत टीका को देखकर समझ लेंगे। और सकल साधारण भव्यजन हिन्दी और गुजराती भाषाके अनुवादसे इसकी विशेषता समझेंगे। इस पर हम अधिक लिखना उचित नहीं समझते, क्यों कि 'हाथ कङ्कनको आरसी क्या?' बस, इसी न्यायसे हम अपना वक्तव्य समाप्त करते हैं। इत्यलम्।

राजकोट,
१८ मई १९४८

मुनि कन्हैयालाल.

અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ

ગરેડીયા કુવા રોડ – ગ્રીન લોજ પાસે,

રા જ કો ટ

દાનવીરોની નામાવલી

શરૂઆત તા ૧૮-૧૦-૪૮ થી તા ૧૫ ૫ ૬૦ સુધીમા
દાખલ થયેલ મેમ્બરોના મુબારક નામો

લાઈફ મેમ્બરોનુ ગામવાર કક્કાવારી લિસ્ટ

(રૂા ૨૫૦ થી ઓછી રકમ ભરનારનુ
નામ આ યાદીમા સામેલ કરેલ નથી)

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ—૧૧

(ઓછામા ઓછી રૂા ૫૦૦૦ની રકમ આપનાર)

નબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ શાતીલાલ મગળદાસભાઇ જાણીતા મીલમાલીક	અમદાવાદ	૧૦૦૦૦
૨	શેઠ હરખચદ કાળીદાસભાઇ વારીયા હા શેઠ લાલચદભાઇ જેચદભાઇ, નગીનભાઇ વૃજલાલભાઇ તથા વલ્લભદાસભાઇ	ભાણવડ	૬૦૦૦
૩	કોઠારી જેચદ અજરામર હા હરગોવિદભાઇ જેચદભાઇ	રાજકોટ	૫૨૫૧
૪	શેઠ ધારશીભાઇ જીવનભાઇ	વારસી	૫૦૦૧
૫	સ્વ પિતાશ્રી છગનલાલ શામળદાસના સ્મરણાર્થે હા શ્રી ભોગીલાલ છગનલાલભાઇ ભાવસાર	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૬	સ્વ દિનેશભાઇના સ્મરણાર્થે હા શેઠ કાતિલાલ મણીલાલ જેશીગભાઇ	અમદાવાદ	૫૦૦૦
૭	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ હ શેઠ ચીમનલાલભાઇ શાતીલાલભાઇ તથા પ્રમુખભાઇ	અમદાવાદ	૬૦૦૧
૮	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૯	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા માતુશ્રી કડવીબાઇ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૦	શેઠ પોચાલાલ પીતાબરદાસ	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૧૧	શાહ રગજીભાઈ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૫૦૦૧

નોટ – ઘાટકોપરવાળા શેઠ માણેકલાલ એ મહેતા તરફથી અમદાવાદમા પાલડી બસ સ્ટેન્ડ પાસે પ્લોટ ન ૫૦ વાળી ૬૯૮ ચો વાર જમીન સમિતિને ભેટ મળેલ છે અને જેનુ રજીસ્ટર તા ૨–૩–૬૦ ના રોજ થઇ ગયેલ છે

મુરબ્બીશ્રીઓ—૨૦

(ઓછામા ઓછી રૂા ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નં.	નામ	ગામ	રકમ
૧	વકીલ જીવરાજભાઇ વર્ધમાન કોઠારી હા કહાનદાસભાઇ તથા વેણીલાલ કોઠારી	જેતપુર	૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ મુળજીભાઇ	રાજકોટ	૩૬૦૪
૩	મ્હેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદ	રાજકોટ	૩૨૮૯ાા—ાા
૪	મ્હેતા માણેકલાલ અમુલખરાય	ઘાટકોપર	૩૨૫૦
૫	સંઘવી પીતામ્બરદાસ ગુલાબચંદ	જામનગર	૩૧૦૧
૬	નામદાર ઠાકોર સાહેબ લખધીરસિંહજી બહાદુર	મોરબી	૨૦૦૦
૭	શેઠ દહેરચંદ કુવરજી હા શેઠ ન્યાલચંદ દહેરચંદ	સિદ્ધપુર	૨૦૦૦
૮	શાહ છગનલાલ હેમચંદ વમા હા મોહનલાલભાઇ તથા મોતીલાલભાઇ	મુંબઇ	૨૦૦૦
૯	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ હા શેઠ ચન્દ્રકાંત વીઠલચંદ	મોરબી	૧૯૬૩
૧૦	મ્હેતા સોમચંદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્નિ અ સૌ મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ	૧૫૦૦
૧૧	મ્હેતા પોપટલાલ માવજીભાઇ	જામજોધપુર	૧૫૦૨
૧૨	દોશી કપુરચંદ અમરશી હા દલપતરામભાઇ	જામજોધપુર	૧૦૦૨
૧૩	ખજડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૧૦૦૨
૧૪	શેઠ માણેકલાલ ભાણજીભાઈ	પોરબંદર	૧૦૦૧
૧૫	શ્રીમાન ચંદ્રસિંહજી સાહેબ મ્હેતા (રેલ્વે મેનેજર)	કલકતા	૧૦૦૧
૧૬	મ્હેતા સોમચંદ નેણસીભાઇ (કરાચીવાળા)	મોરબી	૧૦૦૧
૧૭	શાહ હરિલાલ અનોપચંદ	ખંભાત	૧૦૦૧
૧૮	મોદી કેશવલાલ હરીચંદ્ર	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૧૯	કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદ	મુંબઇ	૧૦૦૦
૨૦	કોઠારી રંગીલદાસ હરખચંદ	ભાવનગર	૧૦૦૦

સહાયક મેમ્બરો—૬૩

(ઓછામા ઓછી રૂા ૫૦૦ની રકમ આપનાર)

ક્રમ	નામ	ગામ	રકમ
૧	શ્રી સ્થા જૈનસઘ હા શેઠ જુઆભાઈ વેલશીભાઇ	વઢવાણશહેર	૭૫૦
૨	શેઠ નરોતમદાસ ઓઘડભાઇ	શીવ	૭૦૦
૩	શેઠ રતનશી હીરજીભાઇ હા ગોરધનદાસભાઇ	જામજોધપુર	૫૫૫
૪	ખાટવીયા ગીરધર પરમાણદ હા અમીચદભાઇ	ખાખીજાળીયા	૫૨૭
૫	મોરબીવાળા મઘની દેવચદ નેણશીભાઇ તથા તેમના ધર્મપત્નિ અ સો મણીબાઈ તરફથી હા મુળચદ દેવચદ મઘની	મલાડ	૫૧૧
૬	વોરા મણીલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૦૯
૭	ગોસલીયા હરીલાલ લાલચદ તથા ચપાબેન ગોસલીયા	,,	૫૦૨
૮	શાહ પ્રેમચદ માણેકચદ તથા અ સૌ સમરતબેન	,,	૫૦૨
૯	શે૦ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	,,	૫૦૧
૧૦	શેઠ ચદુલાલ છગનલાલ	,,	૫૦૧
૧૧	શાહ શાતિલાલ માણેકલાલ	,,	૫૦૧
૧૨	શેઠ શીવલાલ ડમરભાઇ (કરાચીવાળા)	લીમડી	૫૦૧
૧૩	કામદાર તારાચદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૧
૧૪	મ્હેતા મોહનલાલ કપુરચદ	,,	૫૦૦
૧૫	શેઠ ગોવિંદજીભાઇ પોપટભાઇ	,,	૫૦૦
૧૬	શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	,,	૫૦૧
૧૭	સ્વ પિતાશ્રી નદાજીના સ્મરણાર્થે હા. વેણીચદ શાતીલાલ (જાબુઆવાળા)	મેઘનગર	૫૦૧
૧૮	શ્રી સ્થા જૈનસઘ હા શેઠ ઠાકરશી કરશનજી	થાનગઢ	૫૦૦
૧૯	શે૦ તારાચદ પુખરાજજી	ઔરગાબાદ	૫૦૦
૨૦	શ્રી સ્થા. જૈન સઘ	[illegible] ઔરગાબાદ	૫૦૦
૨૧	મ્હેતા મુળચદ રાઘવજી હા મગનલાલભાઈ તથા દુર્લભજીભાઇ [illegible]	[illegible]	૭૫૦
૨૨	શેઠ હરખચદ પુરૂષોતમ હા ઈન્દુકુમાર	ચોરવાડ	૫ ૦
૨૩	,, કેશરીમલજી વ તીમવજી ગુગલીયા	મવાડ	૫૦૦
૨૪	શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા ખાટવીયા અમીચદ ગીરધરભાઇ	ખાખીજાળીયા	૫૦૧
૨૫	શેઠ ખીમજીભાઇ બાવાભાઇ હા ફૂલચદભાઇ ગુલાબચદભાઈ, નાગરદાસભાઈ, જમનાદાસભાઈ	મુબઇ	૫૦૧

૨૬	શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ રંગલી હા મુળજીભાઈ મણીલાલભાઈ	મુબઈ	૫૦૧
૨૭	સ્વ. કાતીલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ બાલચદ સાકરચદ	,,	૫૦૧
૨૮	કામદાર રતીલાલ દુર્લભજી (જેતપુરવાળા)	મુબઈ	૫૦
૨૯	શાહ જયતીલાલ અમૃતલાલ	શીવ	૫૦૧
૩૦	વોરા મણીલાલ લક્ષ્મીચદ	શીવ	૫૦૧
૩૧	શેઠ ગુલાબચદ ભુદરભાઈ તથા કસ્તુરબેન હા ભાઈ અનોપચદ	ખારરોડ	૫૦૧
૩૨	મહાન ત્યાગી બેન ધીરજકુવર ચુનીલાલ મ્હેતા	ધ્રાફા	૫૦૧
૩૩	શ્રી સ્થા જૈન સઘ	ધ્રાફા	૫૦૧
૩૪	શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ	રાજકોટ	૫૦૧
૩૫	શે૦ ચતુર્દાસ ઠાકરશી તથા અ સૌ નદકુવરબેન	જામનગર	૫૦૩
૩૬	શેઠ દેવચદ અમરશી (બેન ધીરજકુવરની દીક્ષા પ્રસગે ભેટ)	ભાણવડ	૫૦૧
૩૭	શ્રી સ્થા જૈન સઘ (બેન ધીરજકુવરની દીક્ષા પ્રસગે ભેટ)	ભાણવડ	૫૦૧
૩૮	વકીલ વાડીલાલ નેમચદ શાહ	વીરમગામ	૫૦૧
૩૯	મ્હેતા શાતિલાલ મણીલાલ હા કમળાબેન મ્હેતા	અમદાવાદ	૫૫૬
૪૦	શ્રીયુત લાલચદજી તથા અ સૌ ધીમાબેન	,,	૫૦૧
૪૧	શેઠ મોહનલાલ મુકુટચદ બાલચા	,,	૫૦૧
૪૨	સ્વ શેઠ ઉકાભાઈ ત્રિભોવનદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ લક્ષ્મીબાઈ ગીરધર તરફથી હા મરઘાબેન તથા મણુબેન	અમદાવાદ	૫૦૧
૪૩	પારેખ જયતીલાલ મનસુખલાલ રાજકોટવાળા હા વિનુભાઈ	,	૫૦૧
૪૪	શ્રીયુત શેઠ લાલચદજી મીશ્રીલાલજી	,	૫૦૧
૪૫	શ્રી સ્થા જૈન સઘ	વાકાનેર	૫૦૧
૪૬	શ્રી સ્થા જૈન સઘ	બોટાદ	૫૦૧
૪૭	શેઠ ગુદડમલજી શેષમલજી જૈન	(બગર) પીપળગાવ	૫૦૧
૪૮	સ્વ તુરખીયા લહેરચદ માણેકચદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ છબલીબાઈ તરફથી હા ભાઈ જયતીલાલ તથા પૂનમચદભાઈ	ડભાસ	૫૦૧
૪૯	શાહ ચચળદાસ શુભ ા જી હા શેઠ શુકનરાજજી	અમદાવાદ	૫૦૧
૫૦	ભાવસાર ખોડીદાસ ગણેશભાઈ	ધધુકા	૫૦૧
૫૧	અ સૌ હીરાબેન માણેકલાલ મ્હેતા	ઘાટકોપર	૫૦૧
૫૨	મ્હેતા શાતીલાલ મગનલાલ તથા અ સૌ પદ્માવતી શાતિલાલ મહેતા	અમદાવાદ	૫૦૦

૫૩ શેઠ હીરાચંદજી વનેચંદજી કટારીયા હુબલી ૫૦૧
૫૪ શેઠ છોટુભાઇ હરગોવિંદદાસ કટોરીવાળા મુંબઇ ૫૦૧
૫૫ પારેખ રતિલાલ નાનચંદ મોરબીવાળા તરફથી તેમના
પિતાશ્રી નાનચંદ ગોવિંદજીના સ્મરણાર્થે તથા તેમના
ધર્મપત્નિ અ સૌ વસંત બહેનના અઠાઇ તપ નિમિતે
હા ભુપતલાલ રતિલાલ અમદાવાદ ૫૧૧
૫૬ સ્વ શાહ ત્રીભોવનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ
શીવકુંવરબાઈ તરફથી હા રતીલાલ ત્રીભોવનદાસ શાહ અમદાવાદ ૫૧૧
૫૭ શ્રીમાન નાથાલાલ માણેકચંદ પારેખ મુંબઈ (માટુંગા) ૫૦૧
૫૮ શ્રી લીમડી સંપ્રદાયના ગચ્છાધીપતી પૂ આચાર્ય મહારાજશ્રી
લાધાજી સ્વામીના સ્મરણાર્થે હા શેઠ જેશીંગભાઇ પોચાલાલ
(મહારાજશ્રી છોટાલાલજી સદાનંદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
૫૯ સ્વ શ્રી વિનયમૂર્તિ શ્રી લખમીચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ જેશીંગભાઇ પોચાલાલ (મહારાજશ્રી છોટાલાલજી
સદાનંદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
૬૦ બા બ્ર પ્રભાવતી બેન કેશવલાલ ઉજેનવાળા તરફથી તેમની
દીક્ષા પ્રસંગે વીરમગામ ૫૫૧
૬૧ શ્રીયુત હરજીવનદાસ રાયચંદ હા છબીલદાસ હરજીવન અમદાવાદ ૫૦૧
૬૨ શેઠ પોપટલાલ હંસરાજ તથા દિવાળીબેનના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ અમદાવાદ ૫૦૨
૬૩ અ સૌ લીલાવતી બેન ઇશ્વરલાલ " ૫૦૨

૫૪૯ લાઇફ મેમ્બરો

અમદાવાદ તથા પરાઓ

૧	શેઠ ગીરધરલાલ કરમચંદ	૨૫૧
૨	શેઠ છોટાલાલ વખતચંદ હા ફકીરચંદ ભાઈ	૨૫૧
૩	શાહ કાંતિલાલ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૪	શાહ પોપટલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૫	શેઠ પ્રેમચંદ માણેકચંદ	૨૫૦
૬	શાહ રતીલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૭	શેઠ લાલભાઈ મગનદાસ	૨૫૧
૮	સ્વ. અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા કાનજીભાઇ અમૃતલાલ દેશાઈ	૨૫૧
૯	શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ	૨૫૧
૧૦	શાહ નરસિંહદાસ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૧૧	બીપીનચંદ્ર તથા ઉમાકાંત ચુનીલાલ ગોપાણી	૩૦૧
૧૨	શ્રી શાહપુર દરિયાપુરી આઠકોટી સ્થા. જૈન ઉપાશ્રય હા વહીવટ કર્તા શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	૨૫૧
૧૩	શ્રી છીપાપોળ દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા. જૈન સંઘ હા શેઠ ચંદુલાલ અચરતલાલ	૨૫૧
૧૪	શાહ ચીનુભાઇ બાલાભાઇ C/o શાહ બાલાભાઈ મહાસુખલાલ	૨૫૧
૧૫	શાહ ભાઈલાલ ઉજમશી	૨૫૧
૧૬	શ્રી સુખલાલ ડી. શેઠ હા ડૉ. કુ. સરસ્વતીબેન શેઠ	૨૫૧
૧૭	શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈન સંઘ હા શેઠ કાંતિલાલ જીવણલાલ	૨૫૧
૧૮	મોદી નાથાલાલ મહાદેવદાસ	૨૫૧
૧૯	શાહ મોહનલાલ ત્રીકમલાલ	૨૫૧
૨૦	શ્રી છકોટી સ્થા. જૈન સંઘ હા શેઠ પોપટલાલ પિતામ્બરદાસ	૨૫૧
૨૧	દેશાઇ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા ભાઇલાલ અમૃતલાલ	૨૫૧
૨૨	શાહ નવનીતરાય અમુલખરાય	૨૫૧
૨૩	શાહ મણીલાલ આશારામ	૨૫૧
૨૪	શેઠ ચીનુભાઇ સાકરચંદ	૨૫૧
૨૫	શાહ વ. જીવનદાસ ઉમેદચંદ	૨૫૧
૨૬	શાહ રજનીકાંત કસ્તુરચંદ	૨૫૧

૨૭ સઘવી જીવણલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૨૮ શાહ શાતિલાલ મોહનલાલ ધ્રાંગધ્રાવાળા	૨૫૨
૨૯ અ મૌ બેન રતનબાઈ નહ્વિથા હા શેઠ ફુલાજી ચપાલાનજી	૨૫૧
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા	૨૫૧
૩૧ શ્રી સરસપુર દરીયાપુરી આઠ કોટી સ્થા જૈન ઉપાશ્રય હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૩૨ શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા સાદડીવાળા	૨૫૧
૩૩ સ્વ પિતાશ્રી જવાહીરલાલજી તથા પૂ ચાચાજી હજારીમલજી બરડીયાના સ્મરણાર્થે હા મુળચદ જવાહીરલાલજી બરડીયા	૨૫૧
૩૪ સ્વ ભાવસાર બબાભાઈ (મ ગળદાસ) પાનાચદના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ પુરીબેન	૨૫૧
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી રવજીભાઈ તથા સ્વ માતુશ્રી મુળીબાઈના સ્મરણાર્થે હા ઠકલભાઈ કોઠારી	૩૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચદ જાખડાવાળા હા પાર્વતી બેન	૨૫૧
૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચદ ગજસીતાપુરવાળા	૨૫૧
૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ મણીલાલભાઇ	૨૫૦
૪૦ ભાવસાર છોટાલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૪૧ ભાવસાર મકરાભાઈ છગનલાલ	૨૫૧
૪૨ અ સૌ બેન જીવીબેન રતિલાલ હા ભાવસાર રતિલાલ હ ગોવિંદાસ	૨૫૧
૪૩ ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ પાટણવાળા	૨૫૧
૪૪ સઘવી બાલુભાઈ ડમળશી તથા તેમના ધર્મપત્નિઓ અ સૌ ચપાબેન તથા વસતબેન તરફથી	૨૫૧
૪૫ અ સૌ વિદ્યાબેન વનેચદ દેશાઈ વર્ષીતપ તથા અઠાઈ પ્રસગે હા ભુપેન્દ્રકુમાર વનેચદ દેશાઈ	૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ	૨૫૧
૪૭ શાહ શામળભાઈ અમરશીભાઈ	૫૧
૪૮ અ સૌ કકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્નિ)	૩૦૯
૪૯ અ સૌ સવિતાબેન (જયતીલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૦ અ સૌ શાતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૧ અ સૌ સુનદાબેન (રમણભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧

૫૨ શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા વાગમલજી રૂગનાથજી - ૩૦૧
૫૩ શેઠ મણીલાલ બોધાભાઇ - ૨૫૧
૫૪ પટવા સુમેરમલજી અનોપચંદજી જોધપુરવાળા ૩૦૧
૫૫ સ્વ માણેકલાલ વનમાળીદાસ શેઠના સ્મરણાર્થે
હા રમણલાલ માણેકલાલ ૨૫૧
૫૬ સ્વ શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીના સ્મરણાર્થે
હા કનૈયાલાલ ધનરાજજી ૩૦૧
૫૭ શ્રી સારંગપુર દ આ કો સ્થા જૈન સંઘ
હા શાહ રમણલાલ ભગુભાઇ ૨૫૧
૫૮ દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મીબાઇ લહેરચંદના સ્મરણાર્થે
હા દોશી મનહરલાલ કરશનદાસ મુળીવાળા ૨૫૧
૫૯ શાહ પુનમચંદ ફતેહચંદ ૨૫૧
૬૦ શ્રીયુત ચતુરભાઇ નંદલાલ ૨૫૧
૬૧ શ્રીયુત અમૃતલાલ ઈશ્વરલાલ મ્હેતા ૨૫૧
૬૨ શાહ જાદવજી મોહનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમુલખભાઇ ૨૫૧
૬૩ અ સૌ બેન લાભુબેન મગનલાલ હા શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઈ
વઢવાણ શહેરવાળા ૩૦૧
૬૪ અ સૌ બેન કાંતાબેન ગોરધનદાસ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૬૫ દોશી ફુલચંદ સુખલાલભાઇ બોટાદવાળાના સ્મરણાર્થે
હા દોશી છબીલદાસ ફુલચંદભાઇ ૨૫૧
૬૬ લાલાજી રામકુંવરજી જૈન ૨૫૧
૬૭ શેઠ છોટાલાલ શુમાનચંદ પાલનપુરવાળા ૨૫૧
૬૮ શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ ૨૫૧
૬૯ સંઘવી સૂર્યકાંત ચુનીલાલના સ્મરણાર્થે
હા સંઘવી જીવણલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧
૭૦ ભાવસાર મોહનલાલ અમુલખરાય ૨૫૧
૭૧ મ્હેતા મૂળચંદ મગનલાલ ૨૫૧
૭૨ વૈદ્ય નરસિંહદાસ સાકરચંદના ધર્મપત્નિ રેવાબાઇના સ્મરણાર્થે
હા હરીલાલ નરસિંહદાસ ૨૫૧
૭૩ શાહ ફુલચંદ મુલચંદભાઇ હા હસમુખભાઇ ફુલચંદભાઇ ૨૫૧
૭૪ શે૦ મિશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી ખરડીયા ૨૫૧
૭૫ શાહ લલ્લુભાઇ મગનભાઇ ચૂડાવાળા હા જશવંતલાલ લલ્લુભાઇ ૩૦૧

૨૭ સઘવી જીવણુલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૨૮ શાહ શાતિલાલ મોહનલાલ ધ્રાંગધ્રાવાળા	૨૫૨
૨૯ અ સૌ બેન રતનબાઇ નરસિંઆ હા શેઠ ધુલાજી ચપાલાનજી	૨૫૧
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા	૨૫૧
૩૧ શ્રી નગરપુર દરીયાપુરી આઠ કોટી સ્થા જૈન ઉપાશ્રય હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૩૨ શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા સાદડીવાળા	૨૫૧
૩૩ સ્વ પિતાશ્રી જવાહીરલાલજી તથા પૂ ચાચાજી હજારીમલજી ખરડીયાના સ્મરણાર્થે હા મુગચદ જવાહીરલાલજી ખરડીયા	૨૫૧
૩૪ સ્વ ભાવસાર બબાભાઇ (મગળદાસ) પાનાચદના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ પુરીબેન	૨૫૧
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી રવજીભાઇ તથા સ્વ માતુશ્રી મુળીબાઇના સ્મરણાર્થે હા ડકલભાઇ કોઠારી	૩૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચદ જાખડાવાળા હા પાર્વતી બેન	૨૫૧
૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચદ રાજસીતાપુરવાળા	૨૫૧
૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ મણીલાલભાઇ	૨૫૦
૪૦ ભાવસાર છોટાલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૪૧ ભાવસાર સકરાભાઇ છગનલાલ	૨૫૧
૪૨ અ સૌ બેન જીવીબેન રતિલાલ હા ભાવસાર રતિલાલ હરગોવિંદાસ	૨૫૧
૪૩ ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ પાટણવાળા	૨૫૧
૪૪ સઘવી બાલુભાઇ કમળશી તથા તેમના ધર્મપત્નિઓ અ સૌ ચપાબેન તથા વસતબેન તરફથી	૨૫૧
૪૫ અ સૌ વિદ્યાબેન વનેચદ દેશાઇ વર્ષીતપ તથા અઠાઈ પ્રસગે હા ભુપેન્દ્રકુમાર વનેચદ દેશાઈ	૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ	૨૫૧
૪૭ શાહ શામળભાઈ અમરશીભાઇ	૫૧
૪૮ અ સૌ કકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્નિ)	૩૦૯
૪૯ અ સૌ સવિતાબેન (જયતીલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૦ અ સૌ શાતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૧ અ સૌ સુનદાબેન (મણુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧

૯૭	અ સૌ લીલાવતી ધીરજલાલ મ્હેતા C/o ડૉ ધીરજલાલ ત્રીકમલાલ મ્હેતા	૩૦૧
૯૮	શેઠ રાજમલજી ઘામીમલજી કોઠારી કોશીથડવાળા તરફથી શ્રી જૈન સંઘને ભેટ	૨૫૧
૯૯	શેઠ ચુનીલાલ ભગવાનજી C/o રતીલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧
૧૦૦	ભાગ્યવતી અરવીંદકુમાર C/o અરવીંદકુમાર મકરભાઈ ભાવસાર	૨૫૧
૧૦૧	અ સૌ ચંચળબેન મનસુખલાલ હા મનસુખલાલ જેઠાલાલ રૂપેરા	૨૫૧
૧૦૨	સ્વ આમીબાઈ તથા શેઠ વસ્તીમલજી ભીમાજીના સ્મરણાર્થે હા શેઠ મીશ્રીમલજી દેવીચંદજી ઓસવાલ કેરુવાળા	૨૫૧
૧૦૩	સ્વ શેઠ કીશનમલજી માંડોતના સ્મરણાર્થે હા ગીરેમલજી કીશનમલજી મોજતવાલા	૨૫૧
૧૦૪	સ્વ શેઠ વકતાવરમલજીના સ્મરણાર્થે હા શેઠ ધીસાલાલજી મુકનરાજજી શીયાગીયા (જોધપુરવાળા)	૨૫૧
૧૦૫	શાહ મહાસુખલાલ ભાઈલાલ (સદાનંદી પંડિત મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૦૬	અ સૌ કાંતાબેન કાળીદાસ C/o કુમાર બુક બાઈન્ડીંગ વર્કસ	૨૫૧
૧૦૭	સ્વ શેઠ હીમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના સુપુત્રો મેસર્સ દ્વારકાદાસ એન્ડ બ્રધર્સ તરફથી	૩૫૧
૧૦૮	અ સૌ કાંતાબેનના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર નાગરદાસ હરજીવનદાસ	૨૫૧
૧૦૯	શ્રી ઉમેદચંદ ઠાકરશી C/o M/s યુ ટી ગોપાણી એન્ડ સન્સ	૩૫૧
૧૧૦	પૂ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૧૧૧	શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૧૧૨	સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા પ્રભુદાસભાઈ મહેતા	૨૫૧
૧૧૩	શાહ ભુરાલાલ કાળીદાસ	૨૫૧
૧૧૪	સ્વ પિતાશ્રી મોતીલાલજીના સ્મરણાર્થે હા મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા	૨૫૧
૧૧૫	શેઠ પરસોતમદાસ અમરસીના ધર્મપત્નિ સ્વ કુસુમબેનના સ્મરણાર્થે તથા અ સૌ સવિતાબેનના માસખમણ નિમિત્તે હા સોમચંદ પરસોતમદાસ (પોર્ટ સુદાનવાળા)	૩૦૧

૭૬	કુમારી પુષ્પાબેન હીરાલાલ (ચાંદ મુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૭૭	શાહ મણીલાલ ઠાકરશી હા કમળાબેન મણીલાલ લખતરવાળા (ચાંદ મુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૭૮	મીસ નલીનીબેન જયતીલાલ	૨૫૧
૭૯	સ્વ ઉમેદરામ ત્રીભુવનદાસના ધર્મપત્નિ કાશીબાઇના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ ઉમેદરામ (ચાંદ મુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૮૦	સ્વ ભાવસાર મોહનલાલ છગનલાલના ધર્મપત્નિ દિવાળીબાઇના સ્મરણાર્થે હા રતીલાલ માણેકલાલ (ચાંદ મુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૮૧	મહેતા દેવીચંદજી ખૂબચંદજી ધોકા ગઢસીયાણુવાળાના સ્મરણાર્થે હા મહેતા ચુનીલાલ હરમાનચંદ	૨૫૧
૮૨	ઘાસીલાલજી મોહનલાલજી કોઠારી C/o લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર	૨૫૧
૮૩	સ્વ શેઠ નાથાલાલ રતનાભાઇ મારફતીયાના સ્મરણાર્થે પુનાબેન તરફથી હા કરશનભાઇ (ચાંદ મુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૮૪	શાહ મણીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૮૫	ભાવસાર જયતીલાલ ભોગીલાલ	૨૫૧
૮૬	ભાવસાર દિનુભાઇ ભોગીલાલ	૨૫૧
૮૭	ભાવસાર રમણલાલ ભોગીલાલ	૨૫૧
૮૮	ભાવસાર કનુભાઇ સકરચંદ	૨૫૧
૮૯	શે૦ ભેરૂમલજી સાહેબ જોધપુરવાળા	૨૫૧
૯૦	સ્વ બેનાણી વર્ધમાન રામજીભાઇ કુંદણીવાળાના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ વર્ધમાન	૨૫૧
૯૧	સ્વ શાહ કચરાભાઇ લહેરાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાન્તિલાલ કચરાભાઈ	૨૫૧
૯૨	એક સ્વધર્મી બંધુ હા શાહ રીખભદાસજી જયતિલાલજી	૨૫૧
૯૩	અ સૌ સરસ્વતીબેન મણીલાલ ચતુરભાઇ શાહ (સદાનંદી છોટાલાલ મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૯૪	ચીમનલાલ મણીલાલ શાહ (દરિયાપુરી સંપ્રદાયના પૂ તપસ્વી મહારાશ્રી માણેકચંદ્રજી મહારાજના શિષ્ય મુનિશ્રી મગનલાલજી મહારાજશ્રીના સ્મરણાર્થે)	૨૫૧
૯૫	જેકુંવર વ્રજલાલ પારેખ	૨૫૧
૯૬	પુનમચંદજી જવાહરલાલજી બરડીયા	૨૫૧

ઇન્દોર

૧	અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેશાઈ જેતપુરવાળા (અ સૌ બેન વિદ્યાબેનના વર્ષી તપ નિમિતે) હા અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર	૨૫૧
૨	શ્રીયુત ભાઇલાલ છગનલાલ તુરખીયા	૩૫૧
૩	સ્વ ગૌરીશંકર કાળીદાસ દેશાઇ જેતપુરવાળાના સ્મરણાર્થે હા ભુપતલાલ ગૌરીશંકર દેશાઇ	૨૫૦

ઉદેપુર

૧	શેઠ મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૨	શ્રીમતી મોહીનીબાઇ C/o મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૩	અ સૌ બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહરના ધર્મપત્નિ હા શેઠ મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૪	શેઠ છગનલાલજી બાગ્રેચા	૨૫૧
૫	શેઠ મગનલાલજી બાગ્રેચા	૨૫૧
૬	સ્વ શેઠ કાળુલાલજી લોઢાના સ્મરણાર્થે હા શેઠ દોલતસિંહજી લોઢા	૨૫૧
૭	સ્વ શેઠ પ્રતાપમલજી સાખલાના સ્મરણાર્થે હા પ્રાણુલાલ હીરાલાલ સાખલા	૨૫૧
૮	શેઠ ભીમરાજજી થાવરચંદજી બાફણા	૨૫૧
૯	શ્રીયુત સાહેબલાલજી મ્હેતા	૩૦૧
૧૦	શેઠ પન્નાલાલજી ગણેશલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૧૧	શેઠ દીપચંદજી પન્નાલાલજી લોઢા	૨૫૧

ઉપલેટા

૧	શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદાસ	૨૫૧
૨	સ્વ બેન સંતોકબેન કચરા હા આતમચંદભાઇ, છોટાલાલભાઈ તથા અમૃતલાલભાઇ વાલજી (કલ્યાણુવાળા)	૨૫૧
૩	શેઠ ખુશાલચંદ કાનજીભાઇ હા શેઠ પ્રતાપભાઇ	૨૫૧
૪	દોશી વીઠલજી હંસરાજ	૨૫૧
૫	સંઘાણી મુળશંકર હરજીવનભાઇના સ્મરણાર્થે હા તેમના પુત્રો જયંતીલાલ તથા રમણીકલાલ	૨૫૧

૧૧૯ શ્રીમાન જોરાવરમલજી ધર્મચંદજી, ડુંગરવાલ રાજાજી રાજાજીકાકેરડા વાળા (મુનિશ્રી માગીલાલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઇ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ ગાંડાલાલ ભીખાલાલ ૨૫૧

અજમેર

૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ ડુંગરવાલ ૨૫૧

અલ્વર

૧ શ્રીમતી ચંપાદેવી C/o બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી ૨૫૧
૨ ચાંદમલજી મહાવીરપ્રસાદ પાલાવત ૨૫૧
૩ શ્રીયુત રૂપભકુમાર સુમતિકુમાર જૈન ૨૫૧

આસનસોલ

૧ બાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ મણીબાઇ તરફથી હા ૦મિકલાલ, અનિલકાંત, વિનોદરાય ૨૫૧

આટકોટ

૧ મ્હેતા ચુનીલાલ નારણદાસ ૩૦૧

આણંદ

૧ શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા મનસુખલાલભાઇ ૨૫૧

આકોલા

૧ શેઠ કંચનલાલભાઇ રાઘવજી અજમેરા C/o મેસર્સ અજમેરા બ્રધર્સ એન્ડ કું. (પૂ. સદાનંદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧

ઇગતપુરી

૧ શેઠ પંનાલાલ લખીચંદ જૈન ૨૫૧

ઇન્દોર

૧	અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેશાઇ જેતપુરવાળા (અ સૌ બેન વિદ્યાબેનના વર્ષી તપ નિમિતે) હા અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર	૨૫૧
૨	શ્રીયુત ભાઇલાલ છગનલાલ તુરખીયા	૩૫૧
૩	સ્વ ગૌરીશંકર કાળીદાસ દેશાઇ જેતપુરવાળાના સ્મરણાર્થે હા ભુપતલાલ ગૌરીશંકર દેસાઇ	૨૫૦

ઉદેપુર

૧	શેઠ મોતીલાલજી રણુજીતલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૨	શ્રીમતી મોહીનીબાઇ C/o મોતીલાલજી રણુજીતલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૩	અ સૌ બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહરના ધર્મપત્નિ હા શેઠ મોતીલાલજી રણુજીતલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૪	શેઠ છગનલાલજી બાગ્રેચા	૨૫૧
૫	શેઠ મગનલાલજી બાગ્રેચા	૨૫૧
૬	સ્વ શેઠ કાળુલાલજી લોઢાના સ્મરણાર્થે હા શેઠ દોલતસિંહજી લોઢા	૨૫૧
૭	સ્વ શેઠ પ્રતાપમલજી માખલાના સ્મરણાર્થે હા પ્રાણુલાલ હીરાલાલ માખલા	૨૫૧
૮	શેઠ ભીમરાજજી થાવરચંદજી બાફણા	૨૫૧
૯	શ્રીયુત સાહેબલાલજી મ્હેતા	૩૦૧
૧૦	શેઠ પન્નાલાલજી ગણેશલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૧૧	શેઠ દીપચંદજી પન્નાલાલજી લોઢા	૨૫૧

ઉપલેટા

૧	શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદાસ	૨૫૧
૨	સ્વ બેન મતોકબેન કચરા હા ઓતમચંદભાઇ, છોટાલાલભાઈ તથા અમૃતલાલભાઇ વાલજી (કલ્યાણવાળા)	૨૫૧
૩	શેઠ ખુશાલચંદ કાનજીભાઇ હા શેઠ પ્રતાપભાઇ	૨૫૧
૪	દોશી વીઠ્ઠલજી હરખચંદ	૨૫૧
૫	સંઘાણી મુળશંકર હરજીવનભાઇના સ્મરણાર્થે હા તેમના પુત્રો જયંતીલાલ તથા રમણીકલાલ	૨૫૧ ૨૫૧

ઉમરગાંવ રોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

એડન કેમ્પ

૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા રાયચંદભાઈ, પોપટલાલભાઇ તથા રસીકલાલભાઇ ૨૫૧
૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરૂષોત્તમદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકતા જૈન શ્વે સ્થા (ગુજરાતી) સંઘ
હા શાહ જયસુખલાલ પ્રભુલાલ ૨૫૧

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઇના સ્મરણાર્થે હા શેઠ
આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
૨ ડો મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડો રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે હા મારફતીયા
ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
૫ સ્વ શ્રીયુત વાડીલાલ પરશોતમદાસના સ્મરણાર્થે હા
ઘેલાભાઇ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧
૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
૭ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઇ ૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સંઘ હા ભાવસાર
દામોદરદાસભાઇ ઇશ્વરલાલભાઇ ૨૫૧
૨ પાર્વતીબેન C/o જેસીંગભાઇ ઇશ્વરલાલભાઇ ૨૫૧

કાટોર

૧ શ્રી સ્થા જૈનસઘ હા શેઠ જેશીંગભાઇ પોચાલાલ
(માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

કેત્રાસગઢ

૧ શ્રી શ્વે સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ દેવચદ અમુલખ ૨૫૧

કલ્યાણ

૧ સઘવી ઠાકરશીભાઇ મઘજીના સ્મરણાર્થે
હા શાહ હીંમતલાલ હરખચદ ૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

કુદણી–આટકોટ

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશી ૨૫૧

કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧
૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઇ વાઘાણી
(તેમના સ્વ સુપુત્ર રામજીભાઇના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

કમ્પાલા

૧ સ્વ શેઠ નાનચદ મોતીચદ પ્રાફાવાળાના સ્મરણાર્થે હા. તેમના
સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચદ શેઠ ૨૫૧
૨ શ્રીમતી હીરાબેન, રતીલાલ નાનચદ શેઠ પ્રાફાવાળા ૨૫૧

કુશળગઢ

૧ શેઠ ચપાલાલજી દેવીચદજી ૨૫૧

ખાખીજાળીયા

૧ બાટવીયા ગુલાબચદ લીલાધર ૨૫૧

ઉમરગાંવ રોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા — ૨૫૧

એડન કેમ્પ

૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા રાયચંદભાઇ, પોપટલાલભાઇ તથા રસીકલાલભાઇ — ૨૫૧
૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરૂષોત્તમદાસ — ૨૫૧
૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી — ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકતા જૈન શ્વે સ્થા (ગુજરાતી) સંઘ
હા શાહ જયસુખલાલ પ્રભુલાલ — ૨૫૧

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઇના સ્મરણાર્થે હા શેઠ
આત્મારામ મોહનલાલ — ૨૫૧
૨ ડૉ મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડૉ રતનચંદ મયાચંદ — ૨૫૧
૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ — ૨૫૧
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે હા મારફતીયા
ચંદુલાલ મણીલાલ — ૨૫૧
૫ સ્વ શ્રીયુત વાડીલાલ પરશોતમદાસના સ્મરણાર્થે હા
ઘેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ — ૨૫૧
૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ — ૨૫૧
૭ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઇ — ૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સંઘ હા ભાવસાર
દામોદરદાસભાઈ ઇશ્વરલાલભાઇ — ૨૫૧
૨ પાર્વતીબેન C/o જેસીંગભાઇ ઇશ્વરલાલભાઈ — ૨૫૧

ગોંડલ

૧	સ્વ ખાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસના ધર્મપત્નિ કમળબાઇ તરફથી હા માણેકચદભાઇ તથા કપુરચદભાઈ	૨૫૧
૨	પીપળીયા લીલાધર દામોદર તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ અ સૌ લીલાવતી સાકરચદ કોઠારીના ખીજા વર્ષીતપની ખુશાલીમા	૩૦૧
૩	કામદાર જુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા હરીલાલ જુઠાલાલ કામદાર	૩૦૧
૪	સ્વ કોઠારી કૃપાશકર માણેકચદના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ પ્રભાકુવરબેન	૨૫૧
૫	કોઠારી ગુલાબચદ રાયચદ રગુનવાળા	૨૫૧
૬	જસાણી રૂગનાથભાઈ નાનજી હા ચુનીલાલભાઇ	૨૫૧
૭	માસ્તર હકમીચદ દીપચદ શેઠ	૨૫૧

ગોધરા

૧	શાહ ત્રીભોવનદાસ છગનલાલ	૩૦૧
૨	સ્વ પ્રેમચદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા શાહ ચુનીલાલ પ્રેમચદ	૩૦૧

ઘટકણુ

૧	શાહ ચદુલાલ કેશવલાલ	૨૫૧

ઘોલવડ (થાણા)

૧	મ્હેતા ગુલાબચદજી ગભીરમલજી	૩૦૦

ઘોડનદી

૧	શેઠ ચદ્રભાણુ શોભાચદ ગાદીયા	૨૫૧

ચુડા

૧	શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા રતીલાલ મગનલાલ ગાધી	૨૫૧

ચોટીલા

૧	શાહ વનેચદ જેઠાલાલ શ્રી સ્થા જૈન સઘને ભેટ	૩૦૧

ખારાઘોડા

૧	સ્વ પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા સ્વ અ સૌ બેન જમકુબાઇ તથા લીલાબાઇના સ્મરણાર્થે હા નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ	૨૫૧
૨	સ્વ શેઠ ઓઘડલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હા ભાઇચંદ ઓઘડભાઇ	૨૫૧

ખીચન

૧	શેઠ કીશનલાલ પૃથ્વીરાજ	૩૫૨

ખુરદારોડ

૧	શેઠ ગીરધારીલાલજી સીતારામજી-ખેડપવાળા	૩૦૦
૨	શેઠ નરસિંહદાસ શાંતીલાલજી ભોરલાવાળા (મુનિશ્રી ચાંદમલજીના ઉપદેશથી)	૨૫૧

ખંભાત

૧	શેઠ માણેકલાલ ભગવાનદાસ	૨૫૧
૨	શેઠ ત્રિભોવનદાસ મંગળદાસ	૨૫૧
૩	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા પટેલ કાંતીલાલ અંબાલાલ	૨૫૧
૪	શાહ ચંદુલાલ હરીલાલ	૨૫૧
૫	શાહ સાકરચંદ મોહનલાલ	૨૫૧
૬	શાહ સકરાભાઇ દેવચંદ	૨૫૧

ગાંધીધામ

૧	શાહ મોરારજી નાગજી એન્ડ કું	૨૫૧

ગુંદાલા

૧	શાહ માલશી ઘેલાભાઈ	૨૫૧

ગુલાબપુરા

૧	શ્રી સ્થા જૈન વર્ધમાન સંઘ હા માગીલાલજી ઉંકારમલજી ધનોપવાળા	૨૫૧

૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ ૨૫૧
૫ વકીલ મણીલાલ ખેંગારભાઇ પુનાતર ૨૫૧

જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઇ ૨૫૧

જુનાગઢ

૧ શાહ મણીલાલ મીઠાભાઇ હા હરિલાલભાઇ (હાટીનામાળીયાવાળા) ૨૫૧

જામજોધપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા મ્હેતા પોપટલાલ માવજીભાઇ ૩૮૭
૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા ૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન ૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઇ ૨૫૧
૫ શેઠ બાવનજી જેઠાભાઇ ૨૫૧
૬ શેઠ વ્રજલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧

જેતપુર

૧ કોઠારી ડોલરકુમાર વેણીલાલ ૨૫૧
૨ અ સૌ બેન સુરજકુવર વેણીલાલ કોઠારી ૨૫૧
૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઇ હા નરભેરામભાઈ (જસાપુરવાળા) ૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ ૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપૂરચંદ ૨૫૧
૨ કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ
જબકબેન તરફથી હા શાંતીલાલભાઇ ગોંડલવાળા ૨૫૧

જોધપુર

૧ શેઠ નવરતનમલજી ધનવતસિંહજી ૨૫૦
૨ શેઠ હસ્તીમલજી મનરૂપમલજી સામસુખા ૨૫૧

ચારભુજારોડ

૧ શેઠ માગીલાલજી હીરાચંદજી બાબેલ ૩૦૧

જમશેદપુર

૧ દોશી ઝવેરચંદ વલભજી ૨૫૧

જલેસર (બાલાસોર)

૧ સંઘવી નાનચંદ પોપટભાઇ થાનગઢવાળા ૨૫૧

જયપુર

૧ શ્રીમાન હિંમતસિંહજી સાહેબ ગલૂડિયા, એડિસનલ કમીશ્નર અજમેર ડીવીઝનવાળાના ધર્મપત્નિ અ સૌ માણેકકુંવરબેન તરફથી હા ખુશાલસિંહજી ગલૂડિયા ૩૫૧
૨ શ્રીમાન શેઠ શીરેમલજી નવલખાના ધર્મપત્નિ અ સૌ પ્રેમલતાદેવી ૨૫૧

જાવરા

૧ સ્વ ભંડારી સ્વરૂપચંદજી શાહના ધર્મપત્નિ મોતીબેનના સ્મરણાર્થે હા શ્રીયુત લાલચંદજી રાજમનજી કીશનગઢવાળા (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧

જામખંભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારણજી ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા મ્હેતા રણછોડદાસ પરમાણંદ ૨૫૧
૩ સંઘવી પ્રાણુલાલ લવજીભાઇ ૨૫૧

જામનગર

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી ૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઇ ૨૫૧
૩ ડૉ સાહેબ પી પી શેઠ ૨૫૦

૪	શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ	૨૫૧
૫	વકીલ મણીલાલ એગારભાઇ પુનાતર	૨૫૧

જુનારદેવ

૧	ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઇ	૨૫૧

જુનાગઢ

૧	શાહ મણીલાલ મીઠાભાઇ હા હરિલાલભાઇ (હાટીનામાળીયાવાળા)	૨૫૧

જામજોધપુર

૧	શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મ્હેતા પોપટલાલ માવજીભાઇ	૩૮૭
૨	શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા	૨૫૧
૩	દોશી માણેકચદ ભવાન	૨૫૧
૪	પટેલ લાલજી જુઠાભાઇ	૨૫૧
૫	શેઠ બાવનજી જેઠાભાઇ	૨૫૧
૬	શેઠ વ્રજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

જેતપુર

૧	કોઠારી ડોલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૧
૨	અ સૌ બેન સુરજકુવર વેણીલાલ કોઠારી	૨૫૧
૩	શે૦ અમૃતલાલ હીરજીભાઇ હા નરભેરામભાઈ (જમાપુરવાળા)	૨૫૧
૪	દોશી છોટાલાલ વનેચદ	૨૫૧

જેતલસર

૧	શાહ લક્ષ્મીચદ કપૂરચદ	૨૫૧
૨	કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ જબકબેન તરફથી હા શાતીલાલભાઇ ગોડલવાળા	૨૫૧

જોધપુર

૧	શેઠ નવરતનમલજી ધનવતસિહજી	૨૫૦
૨	શેઠ હસ્તીમલજી મનરૂપમલજી સામસુખા	૨૫૧

૩ શેઠ પુખરાજજી પદમરાજજી ભંડારી ૨૫૧
૪ શેઠ વસ્તીમલજી આનંદમલજી સામસુખા ૨૫૧

જોરાવરનગર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ ચંપકલાલ ધનજીભાઇ ૨૫૧

ઝરીયા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ કનૈયાલાલ બી મોદી ૨૫૧

ડોડાયચ્ચા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ ૨૫૦

ઢસા

૧ શ્રી ઢસાગામ સ્થા જૈન સંઘ હા એક સદ્‌ગૃહસ્થ તરફથી ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા બગડિયા નરભેરામ જેઠાલાલ (ઢસા જંકશન) ૨૫૦

તાસગાવ

૧ સ્વ ચુનીલાલજી દુગડના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ ઢોઢુબાઇના તરફથી હા શેઠ રામચંદજી દુગડ ૩૫૧

થાનગઢ

૧ શાહ ઠાકરશીભાઇ કરસનજી ૨૫૧
૨ શેઠ જેઠલાલ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ધારશીભાઇ પાશવીરભાઇ હા સુખનાલભાઇ ૨૫૧
૪ હંસાબેન અરવીંદ હા ભાઇ રવીચંદ માણેકચંદ ૩૦૧

દહાણુરોડ

૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓધડ ખંધાર (કરાચીવાળા) ૨૫૧

દાહોદ

૧ શેઠ માણેકલાલભાઇ ખેગારજી ૨૫૧

દિલ્હી

૧ લાલજી પૂર્ણચંદજી જૈન (સેન્ટ્રલ બેંકવાળા) ૩૫૧
૨ શ્રીયુત કીશનચંદજી મ્હેતાબચંદજી ચોરડીયા
હા શ્રીમતી નગીનાદેવી તથા શ્રીયુત મ્હેતાબચંદ જૈન ૨૫૧
૩ અ સૌ મન્જનબેન ઇંદરમલજી પારેખ ૨૫૧
૪ લાલાજી મીઠનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
૫ લાલાજી ગુલશનરાયજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
૬ સ્વ લક્ષ્મીચંદજીના સ્મરણાર્થે નગીનાદેવી સુજતીના તરફથી
હા સંઘવી હેમન્તકુમારજી જૈન ૨૫૧
૭ બેન વિજયાકુમારી જૈન C/o મ્હેતાબચંદ જૈન
(વયોવૃદ્ધ સરલ સ્વભાવી ફૂલમતીજી મહાસતીજીની પ્રેરણાથી) ૨૫૧
૮ શ્રીમાન લાલાજી રતનચંદજી જૈન C/o આઈ સી હોઝીયરી ૨૫૧

ઢાકા

૧ શેઠ મણીલાલ જેચંદભાઇ

ધાર

૧ શેઠ સાગરમલજી પનાલાલજી

ધ્રાંગધ્રા

૧ ભાવદીક્ષિત અ સૌ રૂપાળીબેન હીમતલાલ સંઘવીના તપશ્ચાર્યે
સંઘવી ચીમનલાલ પરસોતમદાસ સંઘવી તરફથી ૩૦૫
૨ સંઘવી નરસિંહદાસ વખતચંદ ૩૦૧
૩ શ્રી સ્થા જૈન મોટા સંઘ હા શેઠ મગળજી જીવરાજ ૨૫૧
૪ ઠક્કર નારણદાસ હરગોવિંદદાસ ૨૫૧
૫ ડોસાણી કપુરચંદ મગળજી ૨૫૧

ધોરાજી

૧ મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઇ ૩૫૧
૨ અ સૌ બચીબેન બાબુભાઈ ૨૫૧

૩	ધી નવસૌરાષ્ટ્ર ઓઈલ મીલ પ્રા લીમીટેડ	૨૫૧
૪	સ્વ રાયચદ પાનાચદના સ્મરણાર્થે હા ચીમનલાલ રાયચદ શાહ	૩૦૧
૫	ગાધી પોપટલાલ જેચંદભાઇ	૨૫૦
૬	દેશાઇ છગનલાલ ડાહ્યાભાઇ લાઠવાળાના ધર્મપત્નિ દિવાળીબેન તરફથી હા કુમારી હસુમતી	૨૫૧
૭	શેઠ દલપતરામ વસનજી મહેતા	૨૫૧
૮	એક સદ્ગ્રહસ્થ હા મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	૨૫૧
૯	સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી કચરાભાઇના તથા ચિ હસાના સ્મરણાર્થે હા પટેલ દલીચદ ભગવાનજી	૩૦૧
૧૦	મહેતા હેમચદ કાળીદાસ જામખભાળીયાવાળા	૨૫૧

ધધુકા

૧	શેઠ પોપટલાલ ધારશીભાઈ	૨૫૧
૨	સ્વ ગુલાબચદભાઈના સ્મરણાર્થે હા વોરા પોપટલાલ નાનચદ	૨૫૧
૩	શ્રી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ વસાણી	૨૫૧

ધુલિયા

૧	શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હા કનૈયાલાલજી છાજેડ	૨૫૧

નડીયાદ

૧	શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઇ	૨૫૧

નારાયણ ગામ

૧	મોતીલાલજી હીરાચંદજી ચોરડીયા બોરીવાળા	૨૫૧

નદુરબાર

૧	શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ પ્રેમચદ ભગવાનલાલ	૨૫૦

નાગોર

૧	શ્રીપાલભાઇ એન્ડ કુા હા સાગરમલજી લુકડ ડેરવાળા તરફથી	૨૫૧

પાલનપુર

૧ બેન લક્ષ્મીબાઈ હા મહેતા હરિલાલ પિતાંબરદાસ ૨૫૧
૨ શ્રી લોંકાગચ્છ સ્થા જૈન પુસ્તકાલય હા કેશવલાલ જી શાહ ૨૫૧

પાણમણા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ છોટાલાલ પૂંજાભાઈ ૨૫૧

પાલેજ

૧ સ્વ મનસુખલાલ મોહનલાલ સંઘવીના સ્મરણાર્થે
હા ભાઈ ધીરજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

પ્રાંતીજ

૧ સ્થા જૈન સંઘ હા શ્રીયુત અંબાલાલ મહાસુખરામ ૨૫૦

પીપળગાવ

૧ શેઠ ગુદડમલજી રૂપમલજી જોવર C/o શેઠ બાલચંદ મીશ્રીલાલ ૫૦૧

પૂના

૧ શેઠ ઉત્તમચંદજી કેવળચંદજી બેરા ૨૫૧

ફાલના

૧ મહેતા પુખરાજજી હસ્તીમલજી નાદડીવાળા ૩૦૧
૨ મ્હેતા કુંદનમલજી અમરચંદજી નાદડીવાળા ૨૫૧

બગસરા

૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવજી ગઇડીવાળા
હા નાનચંદ પ્રેમચંદ શાહ ૨૫૧

૩	શ્રી નવસૌરાષ્ટ્ર ઓઈલ મીલ પ્રા. લીમીટેડ	૨૫૧
૪	સ્વ. રાયચંદ પાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા. ચીમનલાલ રાયચંદ શાહ	૩૦૧
૫	ગાંધી પોપટલાલ જેચંદભાઈ	૨૫૦
૬	દેશાઈ છગનલાલ ડાહ્યાભાઈ લાઠવાળાના ધર્મપત્નિ દિવાળીબેન તરફથી હા. કુમારી હસુમતી	૨૫૧
૭	શેઠ દલપતરામ વસનજી મહેતા	૨૫૧
૮	એક સદ્‌ગૃહસ્થ હા. મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	૨૫૧
૯	સ્વ. પિતાશ્રી ભગવાનજી કચરાભાઈના તથા ચિ. હંસાના સ્મરણાર્થે હા. પટેલ દલીચંદ ભગવાનજી	૩૦૧
૧૦	મહેતા હેમચંદ કાળીદાસ જામખંભાળીયાવાળા	૨૫૧

ધંધુકા

૧	શેઠ પોપટલાલ ધારશીભાઈ	૨૫૧
૨	સ્વ. ગુલાબચંદભાઈના સ્મરણાર્થે હા. વોરા પોપટલાલ નાનચંદ	૨૫૧
૩	શ્રી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ વસાણી	૨૫૧

ધુલિયા

૧	શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હા. કનૈયાલાલજી છાજેડ	૨૫૧

નડીયાદ

૧	શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઈ	૨૫૧

નારાયણ ગામ

૧	મોતીલાલજી હીરાચંદજી ચોરડીયા બોરીવાળા	૨૫૧

નંદુરબાર

૧	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ પ્રેમચંદ ભગવાનલાલ	૨૫૦

નાગોર

૧	શ્રીપાલભાઈ એન્ડ કું. હા. સાગરમલજી લુંકડ ડેરવાળા તરફથી	૨૫૧

બોટાદ

૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે
 હા તેમના ધર્મપત્નિ છબલબેન — ૨૫૧

બોડેલી

૧ શાહ પ્રવીણચંદ્ર નરસિંહદાસ સાણંદવાળા — ૨૫૧
૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ — ૨૫૧

બોરા

૧ સ્વરૂપચન્દજી જવાહરમલજી બોરડીયા, મનોબાઇ સુગનલાલજીના
 સ્મરણાર્થે (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) — ૨૫૧
૨ બેન રાધીબાઈ (પૂ આચાર્ય ધર્મદાસજી મહારાજના સંપ્રદાયના
 મંત્રિ કીશનલાલજી મહારાજના સુશિષ્ય શોભાગમલજી
 મહારાજના શિષ્ય સ્વ કેવળચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે)
 (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) — ૨૫૧

ભાણવડ

૧ શેઠ જેચંદભાઇ માણેકચંદભાઇ — ૩૫૨
૨ સંઘવી માણેકચંદ માધવજી — ૨૫૧
૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા — ૨૫૧
૪ શેઠ ગમજી જીણાભાઇ — ૨૫૧
૫ શેઠ પદમશી ભીમજી રોફરીયા — ૨૫૧
૬ રોફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઇ હા અ સૌ શાતાબેન વમનજી — ૨૫૧
૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ ભવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના
 ધર્મપત્નિ દિવાળીબેન લીલાધર (ગુંદાવાળા) — ૨૫૧

ભાવનગર

૧ સ્વ કુંવરજી બાવાભાઇના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચંદ કુંવરજી — ૩૦૧
૨ કોઠારી ઉદયલાલજી સાહેબ — ૨૫૧

બરવાળા–ઘેલાશા

૧ સ્વ મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે
  હા તેમના ધર્મપત્નિ સુરજબેન મોરારજી — ૨૫૧

બદનાવર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ હા, મિશ્રીલાલ જૈન વકીલ — ૨૫૧

બાલોતરા

૧ શાહ જેઠમલજી હસ્તીમલજી ભગવાનદાસજી ભણુસારી — ૨૫૧

બીદડા

૧ શાહ કાનજી શામજીભાઇ — ૨૫૧

બિકાનેર

૧ શેઠ ભેરૂદાનજી શેઠીયા — ૨૫૪

બેરાજા

૧ શેઠ ગાગજી કેશવજી જ્ઞાનભડાર માટે — ૨૫૧

બેલાડી

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ હજારીમલજી હસ્તીમલજી રાકા — ૨૫૧

બેરમો

૧ શ્રી બેરમો સ્થા જૈન સઘ હા મ્હેતા નવલચદ હાકેમચદ — ૨૫૧

બેગલોર

૧ બાટવીયા વનેચદ અમીચદ, મહાવીર ટેક્ષટાઇલ સ્ટોર તરફથી
  ભાઇ ચન્દ્રકાન્તના લગ્નની ખુશાલીમા — ૨૫૨
૨ શેઠ કિશનલાલજી કુલચદજી સાહેબ — ૨૫૧

બોટાદ

૧ સ્વ વેસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્નિ છબલબેન — ૨૫૧

બોડેલી

૧ શાહ પ્રવીણચંદ્ર નરસિંહદાસ સાણંદવાળા — ૨૫૧
૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ — ૨૫૧

બોરા

૧ સ્વરૂપચન્દજી જવાહરમલજી બોરડીયા, મનોબાઇ સુગનલાલજીના
સ્મરણાર્થે (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) — ૨૫૧
૨ બેન રાધીબાઈ (પૂ આચાર્ય ધર્મદાસજી મહારાજના સંપ્રદાયના
મંત્રિ કીશનલાલજી મહારાજના સુશિષ્ય શોભાગમલજી
મહારાજના શિષ્ય સ્વ કેવળચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે)
(ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) — ૨૫૧

ભાણવડ

૧ શેઠ જેચંદભાઇ માણેકચંદભાઇ — ૩૫૨
૨ સંઘવી માણેકચંદ માધવજી — ૨૫૧
૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા — ૨૫૧
૪ શેઠ રામજી જીણાભાઇ — ૨૫૧
૫ શેઠ પદમશી ભીમજી રોફરીયા — ૨૫૧
૬ રોફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઇ હા અ સૌ શાતાબેન વસનજી — ૨૫૧
૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ ભવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના
ધર્મપત્નિ દિવાળીબેન લીલાધર (ગુંદાવાળા) — ૨૫૧

ભાવનગર

૧ સ્વ કુવરજી બાવાભાઇના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચંદ કુવરજી — ૩૦૧
૨ કોઠારી ઉદયલાલજી સાહેબ — ૨૫૧

બરવાળા–ઘેલાશા

૧	સ્વ મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ સુરજબેન મોરારજી	૨૫૧

બદનાવર

૧	શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સંઘ હા મિશ્રીલાલ જૈન વકીલ	૨૫૧

બાલોતરા

૧	શાહ જેઠમલજી હસ્તીમલજી ભગવાનદાસજી ભણસારી	૨૫૧

બીદડા

૧	શાહ કાનજી શામજીભાઈ	૨૫૧

બિકાનેર

૧	શેઠ ભેરૂદાનજી શેઠીયા	૨૫૪

બેરાજા

૧	શેઠ ગાગજી કેશવજી જ્ઞાનભંડાર માટે	૨૫૧

બેલારી

૧	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ હજારીમલજી હસ્તીમલજી રાંકા	૨૫૧

બેરમો

૧	શ્રી બેરમો સ્થા જૈન સંઘ હા મ્હેતા નવલચંદ હાકેમચંદ	૨૫૧

બેંગલોર

૧	બાટવીયા વનેચંદ અમીચંદ, મહાવીર ટેક્ષટાઈલ સ્ટોર તરફથી ભાઈ ચન્દ્રકાન્તના લગ્નની ખુશાલીમાં	૨૫૨
૨	શેઠ કિશનલાલજી ફુલચંદજી સાહેબ	૨૫૧

માંડવા

૧ શ્રી માડવા સ્થા જૈન સઘ
હા અ સૌ કચનગૌરી રતીલાલ ગોસલીયા (ગઢડાવાળા) ૨૫૧

માલેગાવ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા ફતેલાલ, માલુ જૈન ૨૫૧

મુબઈ તથા પરાંઓ

૧ સ્વ પિતાશ્રી કુદનમલજી મોતીલાલજી મુથાના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ મોતીલાલજી જીગરમલજી (અહમદનગરવાળા) ૨૫૧

૨ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સઘ હા કામદાર રૂપચદ શીવલાલ (અધેરી) ૨૫૧

૩ અ સૌ કમળાબેન કામદાર હા કામદાર રૂપચદ શીવલાલ (અધેરી) ૨૫૧

૪ સ્વ માતુશ્રી કડવીબાઈના સ્મરણાર્થે હા તેમના પૌત્ર
હકમીચદ તારાચદ દોશી (અધેરી) ૨૫૧

૫ શાહ હરજીવન કેશવજી ૨૫૧

૬ શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ સૌ કાન્તાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧

૭ સઘવી હિંમતલાલ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૮ વોરા પાનાચદ સઘજીના સ્મરણાર્થે
હા ત્રબકલાલ પાનાચદ એન્ડ બ્રધર્સ ૨૫૧

૯ શાહ રામજી કરશનજી થાનગઢવાળા ૨૫૧

૧૦ સ્વ જટાશકર દેવજીભાઇ દોશીના સ્મરણાર્થે
હા રણછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાશકર દોશી ૩૦૧

૧૧ ઘેલાણી વલભજી નરભેરામ હા નરસીહદાસ વલભજી ૨૫૧

૧૨ કપાસી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧

૧૩ શાહ ત્રીભોવનદાસ માનસિગભાઇ દોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા શાહ હરખચદ ત્રિભોવનદાસ ૨૫૧

૧૪ ખેતાણી મણીલાલ કેશવજી (વડીયાવાળા) ઘાટકોપર ૨૫૧

૧૫ સ્વ પિતાશ્રી શામળજી કલ્યાણજી ગોડલવાળાના સ્મરણાર્થે
હા વૃજલાલ શામળજી બાવીસી ૩૦૧

૧૬ શાહ મનહરલાલ પ્રાણજીવનદાસ ૨૫૧

ભીલવાડા

૧ શ્રી શાંતિ જૈન પુસ્તકાલય હા ચાંદમલજી આનંદમલજી સિંઘવી ૨૫૧
૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રીલાલજી ૩૦૧

ભીમ

૧ ચંપકલાલજી જૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ છોગામલજી માંગીલાલજી ૨૫૧

ભુસાવલ

૧ શેઠ રાજમલજી નંદલાલજી ચેરીટેબલટ્રસ્ટ ૨૫૧

ભોજાય

૧ જ્ઞાન મંદિરના સેક્રેટરી શાહ કુંવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચંદજી મહેતા ૨૫૧
૨ મ્હેતા મણીલાલ ભાઈચંદ ૨૫૧
૩ મ્હેતા સુરજમલ ભાઈચંદ ૨૫૧
૪ બાપાલાલ ભાઈચંદ મહેતા ૨૫૧

મનોર

૧ શાહ શેરમનજી દેવીચંદજી જસાંતગઢવાળા હા
પૂનમચંદજી શેરમલજી ઓસ્યા ૨૫૧

માનકુવા

૧ સ્વ મહેતા કુંવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ
કુંવરબાઈ હરખચંદ (માનકુવા સ્થા જૈન સંઘ માટે) ૨૫૧

માંડવી

૧ શ્રી સ્થા છકોટી જૈન સંઘ હા મહેતા ચુનીલાલ ચેલજી ૨૭૭

૪૪ શેઠ મણીલાલ ગુલાબચંદ ઘાટકોપર ૨૫૧
૪૫ શેઠ શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઇ ૨૫૧
૪૬ શાહ શીવજી માણેકભાઈ ૨૫૧
૪૭ મેસર્સ સવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કું હા શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ ૨૫૧
૪૮ શાહ નગીનદાસ કલ્યાણજી (વેગવળવાળા) ૨૫૧
૪૯ મહેતા રતિલાલ ભાઇચંદ ૨૫૧
૫૦ શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા ૨૫૧
૫૧ બેન કેશરબાઇ ચંદુલાલ જેસીંગભાઇ શાહ ૨૫૧
૫૨ પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદ સાયલાવાળાના ધર્મપત્નિ અ સૌ
ચંચળબાઇના સ્મરણાર્થે હા સાગભાઇ ચીમનલાલ ૨૫૧
૫૩ ધી મરીના મોર્ડન હાઇસ્કુલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા શાહ મણીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧
૫૪ મહેતા મોટર સ્ટોર્સ હા અનોપચંદ ડી મહેતા ૨૫૧
૫૫ શેઠ રમીકલાલ પ્રભાશંકર મોરબીવાળા તરફથી તેમના
માતુશ્રી મણીબેનના સ્મરણાર્થે ૩૦૧
૫૬ શ્રીયુત જશવતલાલ ચુનીલાલ વોરા ૨૫૦
૫૭ શાહ કુવરજી હંસરાજ ૨૫૧
૫૮ દડીયા જેસીંગલાલ ત્રીકમજી ૨૫૧
૫૯ મોદી અભેચંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા ડોસાલાલ અભેચંદ ૨૫૧
૬૦ શાહ જેઠાલાલ ડામરશી ધ્રાગધ્રાવાળા હા શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ ૨૫૦
૬૧ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જસાણીના સ્મરણાર્થે
હા લક્ષ્મીચંદભાઇ તથા કેશવલાલભાઇ ૩૦૧
૬૨ સ્વ પિતાશ્રી શાહ અબાલાલ પુરૂષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે
હા શાહ બાપલાલ અબાલાલ ૨૫૧
૬૩ સ્વ કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ ઝવેરબેન
મગનલાલ વતી જયતિલાલ કસ્તુરચંદ મસ્કાગીયા (ચુડાવાળા) ૨૫૧
૬૪ શેઠ ડુંગરશી હંસરાજ વીસરીયા ૨૫૧
૬૫ શાહ રતનશી મોણશીની કું ૨૫૧
૬૬ શેઠ શીવલાલ ગુલાબચંદ મેવાવાળા ૨૫૧
૬૭ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ ૨૫૧
૬૮ સ્વ પિતાશ્રી વિરચંદ જેસીંગ શેઠ લખતરવાળાના સ્મરણાર્થે
હા કેશવલાલ વીરચંદ ૨૫૧
૬૯ ચંદુલાલ કાનજી મહેતા ૨૫૧

૧૭	સ્વ આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હા શાતિલાલ આશારામવતી જશવતલાલ શાતિલાલ		૨૫૧
૧૮	ગાધી કાતીલાલ માણેકચદ		૨૫૧
૧૯	શાહ રવજીભાઇ તથા ભાઇલાલભાઇની કુા	(કાદીવલી)	૨૫૧
૨૦	અ સૌ લાધુબેન હા રવજીભાઇ શામજી	,,	૨૫૧
૨૧	સ્વ માતુશ્રી માણેકબાઇના સ્મરણાર્થે હા શેઠ વલભદાસ નાનજી		૩૦૧
૨૨	એક સદ્‌ગૃહસ્થ હા શેઠ સુદરલાલ માણેકલાલ		૨૫૧
૨૩	શેઠ ખુશાલભાઇ ખેગારભાઇ		૨૫૦
૨૪	શેઠ ચુનીલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા		૨૫૧
૨૫	સ્વ માતુશ્રી ગોમતીબાઇના સ્મરણાર્થે હા શાહ પોપટલાલ પાનાચદ		૨૫૧
૨૬	કોટેચા જયતીલાલ રણછોડદાસ સૌભાગ્યચદ જુનાગઢવાળા		૨૫૧
૨૭	વોરા ઠાકરશી જશરાજ		૨૫૧
૨૮	કોઠારી સુખલાલજી પુનમચદજી	(ખારરોડ)	૨૫૧
૨૯	અ સૌ બેન કુદનગૌરી મનહરલાલ સઘવી	,,	૨૫૧
૩૦	કોઠારી રમણીકલાલ કસ્તુરચદભાઇ		૨૫૧
૩૧	દેશાઇ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા દલીચદ અમૃતલાલ દેશાઇ		૨૫૧
૩૨	સ્વ ત્રીભોવનદાસ વ્રજપાળ વીંછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે હા હરગોવિંદદાસ ત્રિભોવનદાસ અજમેરા		૨૫૧
૩૩	તેજાણી કુબેરદાસ પાનાચદ		૨૫૧
૩૪	શેઠ સરદારમલજી દેવીચદજી કાવેડીયા (સાદડીવાળા)		૨૫૧
૩૫	શેઠ નેમચદ સ્વરૂપચદ ખભાતવાળા હા ભાઇ જેઠાલાલ નેમચન્દ		૨૫૧
૩૬	શાહ કોરશીભાઈ હીરજીભાઈ		૩૦૧
૩૭	શ્રીમતી મણીબાઇ વ્રજલાલ પારેખ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ ફડ હા વૃજલાલ દુર્લભજી		૨૫૧
૩૮	દડિયા અમૃતલાલ મોતીચદ	(ઘાટકોપર)	૨૫૧
૩૯	દોશી ચત્રભુજ સુદરજી	,,	૨૫૧
૪૦	દોશી જુગલકિશોર ચત્રભુજ	,,	૨૫૧
૪૧	દોશી પ્રવિણચદ ચત્રભુજ	,,	૨૫૧
૪૨	શેઠ મનુભાઇ માણેકચદ હા ઝાટકીયા નરભેરામ મોરારજી	,,	૨૫૧
૪૩	શાહ કાતીલાલ મગનલાલ	,	૨૫૧

૪૪ શેઠ મણીલાલ ગુલાબચંદ ઘાટકોપર ૨૫૧
૪૫ શેઠ શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઇ ૨૫૧
૪૬ શાહ શીવજી માણેકભાઈ ૨૫૧
૪૭ મેસર્સ મવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કુા હા શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ ૨૫૧
૪૮ શાહ નગીનદાસ કલ્યાણજી (વેરાવળવાળા) ૨૫૧
૪૯ મહેતા રતિલાલ ભાઇચંદ ૨૫૧
૫૦ શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા ૨૫૧
૫૧ બેન કેશરબાઇ ચંદુલાલ જેસીંગભાઇ શાહ ૨૫૧
૫૨ પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદ માયલાવાળાના ધર્મપત્નિ અ સૌ
ચંચળબાઇના સ્મરણાર્થે હા સાગભાઇ ચીમનલાલ ૨૫૧
૫૩ ધી મરીના મોર્ડન હાઇસ્કુલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા શાહ મણીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧
૫૪ મહેતા મોટર સ્ટોર્સ હા અનોપચંદ ડી મહેતા ૨૫૧
૫૫ શેઠ રસીકલાલ પ્રભાશંકર મોરબીવાળા તરફથી તેમના
માતુશ્રી મણીબેનના સ્મરણાર્થે ૩૦૧
૫૬ શ્રીયુત જશવંતલાલ ચુનીલાલ વોરા ૨૫૦
૫૭ શાહ કુંવરજી હંસરાજ ૨૫૧
૫૮ દડીયા જેસીંગલાલ ત્રીકમજી ૨૫૧
૫૯ મોદી અભેચંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા ડોસાલાલ અભેચંદ ૨૫૧
૬૦ શાહ જેઠાલાલ ડામરશી ધ્રાગધ્રાવાળા હા શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ ૨૫૦
૬૧ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જમાણીના સ્મરણાર્થે
હા લક્ષ્મીચંદભાઇ તથા કેશવલાલભાઇ ૩૦૧
૬૨ સ્વ પિતાશ્રી શાહ અંબાલાલ પુરૂષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે
હા શાહ બાપલાલ અંબાલાલ ૨૫૧
૬૩ સ્વ કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ ઝવેરબેન
મગનલાલ વતી જયંતિલાલ કસ્તુરચંદ મસ્કારીયા (ચુડાવાળા) ૨૫૧
૬૪ શેઠ ડુંગરશી હંસરાજ વીસરીયા ૨૫૧
૬૫ શાહ રતનશી મોણશીની કુા ૨૫૧
૬૬ શેઠ શીવલાલ ગુલાબચંદ મેવાવાળા ૨૫૧
૬૭ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ ૨૫૧
૬૮ સ્વ પિતાશ્રી વિરચંદ જેસીંગ શેઠ લખતરવાળાના સ્મરણાર્થે
હા કેશવલાલ વીરચંદ ૨૫૧
૬૯ ચંદુલાલ કાનજી મહેતા ૨૫૧

૭૦	શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સઘ	
	હા કેશરીમલજી અનોપચદજી ગુગલીયા (મલાડ)	૨૫૧
૭૧	સ્વ પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઈના સ્મરણાર્થે	
	હા શાહ કાનજી પતુભાઇ ,,	૨૫૧
૭૨	અ સૌ પાનબાઇ હા શેઠ પદમશી નરસિંહભાઇ ,,	૨૫૧
૭૩	સ્વ નાગશીભાઇ સેજપાલના સ્મરણાર્થે હા રામજી નાગશી ,,	૩૦૧
૭૪	સ્વ ગોડા વણારશી ત્રીભોવનદાસ સરસઇવાળાના સ્મરણાર્થે	
	હા જગજીવન વણારશી ગોડા ,,	૨૫૧
૭૫	સ્વ કાનજી મૂળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતુશ્રી દિવાળીબાઇના	
	૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસગે હા જયતિલાલ કાનજી ,,	૨૫૧
૭૬	શાહ પ્રેમજી માલશી ગગર ,,	૨૫૧
૭૭	શાહ વેલશી જેશીગભાઇ છાસરાવાળા તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ	
	સ્વ નાનબાઇના સ્મરણાર્થે ,,	૩૦૧
૭૮	સ્વ પિતાશ્રી રાયશી વેલશીના સ્મરણાર્થે હા	
	શાહ દામજી રાયશીભાઇ ,,	૩૦૧
૭૯	સ્વ પિતાશ્રી ભીમજી કોરશી તથા માતુશ્રી પાલાબાઇના	
	સ્મરણાર્થે હા શાહ ઉમરશી ભીમશી ,,	૩૦૧
૮૦	શાહ વરજાગભાઇ શીવજીભાઇ ,	૨૫૧
૮૧	શાહ ખીમજી મુળજી પૂજા ,,	૨૫૧
૮૨	સ્વ માતુશ્રી જકલબાઇના સ્મરણાર્થે હા દેશાઇ વ્રજલાલ કાળીદાસ ,,	૨૫૧
૮૩	અ સૌ સમતાબેન શાતિલાલ C/o શાતીલાલ ઉજમશી શાહ ,,	૨૫૧
૮૪	સ્વ કેશવલાલ વછરાજ કોઠારીના સ્મરણાર્થે સૂરજબેન તરફથી	
	હા તનસુખ નાલભાઇ ,	૨૫૧
૮૫	સ્વ પિતાશ્રી હસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે	
	હા દેવશી હસરાજ કચ્છ બીદડાવાળા ,,	૨૫૧
૮૬	ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજી (બોરીવલી)	૨૫૨
૮૭	શેઠ ત્રબકલાલ કસ્તુરચદ લીમડી અજરામર શાસ્ત્ર ભડારને ભેટ (માટુગા)	૨૫૧
૮૮	અ સૌ બેન રજનગૌરી C/o શાહ ચદુલાલ લક્ષ્મીચદ ,	૨૫૧
૮૯	શાહ નટવરલાલ દીપચદ તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ અ સૌ	
	સુશીલાબેનના વર્ષીતપની ખુશાલીમા ,,	૨૫૧
૯૦	દોશી ભીખાલાલ વૃજલલ પાળીયાદવાળા ,,	૨૫૧
૯૧	શાહ ગોપાળજી માવસગ ,,	૨૫૧

૯૨ દોશી ફુલચંદ માણેકચંદ „ ૨૫૦
૯૩ શેઠ ચંપકલાલ ચુનીલાલ દાદભાવાળા „ ૨૫૧
૯૪ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સંઘ હા મઘવી
ચીમનલાલ અમરચંદ (દાદર) ૨૫૧
૯૫ શાંતિલાલ ડુંગરશી અદાણી „ ૨૫૧
૯૬ શાહ કરશન લધુભાઇ „ ૩૦૧
૯૭ કીશનલાલ બી મહેતા શીવ ૨૫૧
૯૮ માતુશ્રી જીવીબાઇના સ્મરણાર્થે
હા શામજી શીવજી કચ્છ ગુંદાળાવાળા ગોરેગાવ ૨૫૧
૯૯ સ્વ શાહ રાયશી કચરાભાઇના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ
નેણબાઈ વતી હા જેઠાલાલ રાયશી „ ૨૫૧
૧૦૦ શુશીલાબેનન શકરાભાઇ C/o નવીનચંદ્ર વસંતલાલ શાહ વિલેપાર્લે ૨૫૧
૧૦૧ બેન ચંદનબેન અમૃતલાલ વારિયા ૨૫૧
૧૦૨ સ્વ કાળીદાસ જેઠાલાલ શાહના સ્મરણાર્થે
હા સુમનલાલ કાળીદાસ (કાનપુરવાળા) ૩૦૧
૧૦૩ શાહ ત્રીભોવન ગોપાલજી તથા અ સૌ બેન કસુંબા
ત્રીભોવન (થાનગઢવાળા) શીવ ૨૫૧

મુળી

૧ શેઠ ઉજમશી વીરપાળ હા શેઠ કેશવલાલ ઉજમશી ૩૦૧

મોરબી

૧ દોશી માણેકચંદ સુંદરજી ૩૫૧

મોમ્બાસા

૧ શ્રીયુત નાથાલાલ ડી મ્હેતા ૨૫૧
૨ શાહ દેવરાજ પેથરાજ ૨૫૦

યાદગીરી

૧ શેઠ બાદરમલજી સુરજમલજી એન્ડ કંપની ૨૫૦

૭૦ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સઘ
હા કેશરીમલજી અનોપચદજી ગુગલીયા (મલાડ) ૨૫૧
૭૧ સ્વ પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઈના સ્મરણાર્થે
હા શાહ કાનજી પતુભાઈ „ ૨૫૧
૭૨ અ સૌ પાનબાઇ હા શેઠ પદમશી નરસિંહભાઇ „ ૨૫૧
૭૩ સ્વ નાગશીભાઇ સેજપાલના સ્મરણાર્થે હા રામજી નાગશી „ ૩૦૧
૭૪ સ્વ ગોડા વણારશી ત્રીભોવનદાસ સરસઇવાળાના સ્મરણાર્થે
હા જગજીવન વણારશી ગોડા „ ૨૫૧
૭૫ સ્વ કાનજી મૂળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતુશ્રી દિવાળીબાઇના
૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસગે હા જયતિલાલ કાનજી „ ૨૫૧
૭૬ શાહ પ્રેમજી માલશી ગગર „ ૨૫૧
૭૭ શાહ વેલશી જેશીગભાઇ છાસરાવાળા તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ
સ્વ નાનબાઈના સ્મરણાર્થે „ ૩૦૧
૭૮ સ્વ પિતાશ્રી રાયશી વેલશીના સ્મરણાર્થે હા
શાહ દામજી રાયશીભાઇ „ ૩૦૧
૭૯ સ્વ પિતાશ્રી ભીમજી કોરશી તથા માતુશ્રી પાલાબાઇના
સ્મરણાર્થે હા શાહ ઉમરશી ભીમશી „ ૩૦૧
૮૦ શાહ વરજાગભાઈ શીવજીભાઇ „ ૨૫૧
૮૧ શાહ ખીમજી મુળજી પૂજા „ ૨૫૧
૮૨ સ્વ માતુશ્રી જકલબાઇના સ્મરણાર્થે હા દેશાઇ વ્રજલાલ કાળીદાસ „ ૨૫૧
૮૩ અ સૌ સમતાબેન શાતિલાલ C/o શાતીલાલ ઉજમશી શાહ „ ૨૫૧
૮૪ સ્વ કેશવલાલ વછરાજ કોઠારીના સ્મરણાર્થે સૂરજબેન તરફથી
હા તનસુખ નાલભાઈ „ ૨૫૧
૮૫ સ્વ પિતાશ્રી હસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે
હા દેવશી હસરાજ કચ્છ બીદડાવાળા „ ૨૫૧
૮૬ ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજી (બોરીવલી) ૨૫૨
૮૭ શેઠ ત્રબકલાલ કસ્તુરચદ લીમડી અજરામર શાસ્ત્ર ભડારને ભેટ (માટુગા) ૨૫૧
૮૮ અ સૌ બેન રજનગૌરી C/o શાહ ચદુલાલ લક્ષ્મીચદ „ ૨૫૧
૮૯ શાહ નટવરલાલ દીપચદ તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ અ સૌ
સુશીલાબેનના વર્ષીતપની ખુશાલીમા „ ૨૫૧
૯૦ દોશી ભીખાલાલ વૃજલાલ પાળીયાદવાળા „ ૨૫૧
૯૧ શાહ ગોપાળજી માવસગ „ ૨૫૧

૧૧ દોશી મોતીચંદ ધારશીભાઇ (રીટાયર્ડ એકઝીકયુટીવ એન્જીનીયર) ૨૫૧
૧૨ કામદાર ચંદુલાલ જીવરાજ (ધ્રાગધ્રાવાળા) ૨૫૦
૧૩ હેમાણી ઘેલાભાઈ સવચંદ ૨૫૧
૧૪ દફતરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૧
૧૫ સ્વ મ્હેતા દેવચંદ પુરૂષોતમના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ
હેમકુવરબાઇ તરફથી હા જયતિલાલ દેવચંદ મ્હેતા ૨૫૧
૧૬ પારેખ શીવલાલ ઝુઝાભાઇ મોમ્બાસાવાળા હા અ. સૌ. કંચનબેન ૨૫૨

રાપર

૧ પૂજ્ય વાલજીભાઇ ન્યાલચંદભાઇ ૨૫૧

લખતર

૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા શાતિલાલ રાયચંદ શાહ ૨૫૧
૨ ભાવસાર હરજીવનદાસ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે
હા ત્રીભોવનદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે
હા ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી ૨૫૧
૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ ૨૫૧
૫ શાહ જાદવજી ઓધડભાઇના સ્મરણાર્થે હા શાતિલાલ જાદવજી ૨૫૧
૬ દોશી ઠાકરશી ગુલાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ
સમરતબ્હેન તરફથી હા જયતીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

લાલપુર

૧ શેઠ નેમચંદ સવજી મોદી હા ભાઇ મગનલાલ ૨૫૧
૨ શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ હા મણીલાલભાઇ તથા જેશીંગલાલભાઈ ૨૫૧

લાખેરી

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ હા મ્હેતા અમૃતલાલ જેઠાલાલ
(સીવીલ એન્જીનીયર સાહેબ) ૨૫૧

લાકડીયા

૧ શ્રી લાકડીયા સ્થા. જૈન સંઘ હા શાહ રતનશી કરમણ ૨૫૧

રતલામ

૧ અનેક ભકતજનો તરફથી હા શ્રીમાન કેશરીમલજી ટક
(શ્રી કેવળચંદ મુનિશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

રાણપુર

૧ શ્રીમતિ માતુશ્રી સમરતબાઇના સ્મરણાર્થે
હા ડૉ નરોતમદાસ ચુનીલાલ કાપડીયા ૨૫૧
૨ સ્વ પિતાશ્રી લહેરાભાઈ ખીમજીના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ કાલીદાસ લહેરાભાઈ વશાણી ૩૦૧

રાણાવાસ

૧ શેઠ જવાનમલજી નેમીચંદજી હા બાબુ રીખબચંદજી ૩૦૧

રાયચુર

૧ સ્વ માતુશ્રી મોઘીબાઇના સ્મરણાર્થે
હા શાહ શીવલાલ ગુલાબચંદ વઢવાણવાળા ૨૫૧
૨ શેઠ કાલુરામજી ચાંદમલજી સંચેતી મુથા ૨૫૧

રાજકોટ

૧ વાડીલાલ ડાઇગ એન્ડ પ્રિન્ટીંગ વર્કસ ૪૦૦
૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચંદ ચીતલીયા ૨૫૧
૩ બાબુ પરશુરામ છગનલાલ શેઠ ઉદેપુરવાળા ૨૫૦
૪ શેઠ મનુભાઈ મુળચંદ (એન્જીનીઅર સાહેબ) ૨૫૧
૫ શેઠ શાંતિલાલ પ્રેમચંદ તેમના ધર્મપત્નિના વર્ષીતપ પ્રસંગે ૨૫૧
૬ શેઠ પ્રજારામ વીઠ્ઠલજી ૨૫૧
૭ ઉદાણી ન્યાલચંદ હાકેમચંદ વકીલ ૨૫૧
૮ બેન સર્યુબાળા નૌતમલાલ જસાણી (વર્ષીતપની ખુશાલી) ૨૫૧
૯ મોદી સૌભાગ્યચંદ મોતીચંદ ૨૫૧
૧૦ બદાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ અ. સૌ.
સમરતબેનના વર્ષીતપ નિમિતે ૨૫૧

૧૧ દોશી મોતીચંદ ધારશીભાઈ-(રીટાયર્ડ એક્ઝીક્યુટીવ એન્જીનીયર) ૨૫૧
૧૨ કામદાર ચંદુલાલ જીવરાજ (ધ્રાગધ્રાવાળા) ૨૫૦
૧૩ હેમાણી ઘેલાભાઈ સવચંદ ૨૫૧
૧૪ દફતરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૧
૧૫ સ્વ મ્હેતા દેવચંદ પુરૂષોતમના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ
હેમકુવરબાઈ તરફથી હા જયંતિલાલ દેવચંદ મ્હેતા ૨૫૧
૧૬ પારેખ શીવલાલ ઝૂઝાભાઈ મોમ્બાસાવાળા હા અ. સૌ કંચનબેન ૨૫૨

રાપર

૧ પૂજ્ય વાલજીભાઈ ન્યાલચંદભાઈ ૨૫૧

લખતર

૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ રાયચંદ શાહ ૨૫૧
૨ ભાવસાર હરજીવનદાસ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે
હા ત્રીભોવનદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે
હા ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી ૨૫૧
૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ ૨૫૧
૫ શાહ જાદવજી ઓઘડભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ જાદવજી ૨૫૧
૬ દોશી ઠાકરશી ગુલાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ
સમરતબ્હેન તરફથી હા જયંતીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

લાલપુર

૧ શેઠ નેમચંદ સવજી મોદી હા ભાઈ મગનલાલ ૨૫૧
૨ શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ હા મણીલાલભાઈ તથા જેશીંગલાલભાઈ ૨૫૧

લાખેરી

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ હા મ્હેતા અમૃતલાલ જેઠાલાલ
(સીવીલ એંજીનીયર સાહેબ) ૨૫૧

લાકડીયા

૧ શ્રી લાકડીયા સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ રતનશી કરમણ ૨૫૧

લીંમડી (સૌરાષ્ટ)

૧ શાહ ચકુભાઈ ગુલાબચંદ ૨૫૧

લીમડી (પંચમહાલ)

૧ શાહ કુંવરજી ગુલાબચંદ ૨૫૧
૨ છાજેડ ઘાસીરામ ગુલાબચંદ ૨૫૧|=
૩ શેઠ વીરચંદ પન્નાલાલજી કર્ણાવટ ૨૫૧

લોનાવલા

૧ શેઠ ધનરાજજી મુલચંદજી મુથા ૨૫૧

લુધિયાના

૧ બાબુ રાજેન્દ્રકુમાર જૈન દિલ્હીવાળા ૨૫૧

વઢવાણ શહેર

૧ શેઠ દિલીપકુમાર સવાઈલાલ C/o શાહ સવાઈલાલ ત્રમ્બકલાલ ૨૫૧
૨ કામદાર મગનલાલ ગોકળદાસ હા રતીલાલ મગનલાલ ૨૫૧
૩ સંઘવી મુળચંદ બેચરભાઈ હા જીવણલાલ ગફુલદાસ ૨૫૧
૪ શેઠ કાંતીલાલ નાગરદાસ ૨૫૧
૫ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ ૨૫૧
૬ સંઘવી શીવલાલ હીમજીભાઈ ૨૫૧
૭ શાહ દેવશીભાઈ દેવકરણ ૨૫૧
૮ વોરા ડોસાભાઈ લાલચંદ સ્થા જૈન સંઘ
હા વોરા નાનચંદ શીવલાલ ૨૫૧
૯ વોરા ધનજીભાઈ લાલચંદ સ્થા જૈન સંઘ
હા વોરા પાનાચંદ ગોબરદાસ ૨૫૧
૧૦ દોશી વીરચંદ સુરચંદ હા દોશી નાનચંદ ઉજમશી ૨૫૧
૧૧ સ્વ વોરા મણીલાલ મગનલાલ તથા વોરા ચત્રભુજ મણીલાલ ૨૫૧
૧૨ શાહ વાડીલાલ દેવજીભાઈ ૨૫૧
૧૩ કામદાર ગોરધનદાસ મગનલાલના ધર્મપત્નિ
અ સૌ કમળાબેન રંગુનવાળા ૨૫૧

૧૪ શેઠ વૃજલાલ સુખલાલ ૨૫૧

વડોદરા

૧ કામદાર કેશવલાલ હિંમતરામ પ્રોફેસર ૨૫૧
૨ વકીલ મણીલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧
૩ સ્વ પિતાશ્રી ફકીરચંદ પુંજાભાઇના સ્મરણાર્થે ૨૫૧
હા શાહ રમણલાલ ફકીરચંદ ૨૫૧

વડીયા

શેઠ ભવાનભાઈ કાળાભાઇ પંચમીયા ૨૫૧

વલસાડ

૧ શાહ ખીમચંદ મુળજીભાઇ ૨૫૧

વણી

૧ મહેતા નાનાલાલ છગનલાલના ધર્મપત્નિ સ્વ ચંચળબેન તથા
પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા મનહરલાલ નાનાલાલ મહેતા ૨૫૧

વટામણ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા પટેલ ડાહ્યાભાઇ હેલુભાઇ ૨૫૧

વડગાવ

૧ શેઠ માણેકચંદજી રાજમલજી બાફણા ૨૫૧

વાકાનેર

૧ ખંઢેરીયા કાંતીલાલ ત્રંબકલાલ ૨૫૧
૨ દફતરી ચુનિલાલ પોપટભાઇ મોરબીવાળા
હા પ્રાણલાલ ચુનીલાલ દફતરી ૨૫૧

વીંછીયા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા અજમેરા રાયચંદ મજપાળ ૨૫૧

વિરમગામ

૧	માસ્તર વીઠલભાઇ મોદી	૨૫૧
૨	શાહ નાગરદાસ માણેકચંદ	૨૫૧
૩	શાહ મણીલાલ જીવણલાલ શાહપુરવાળા	૨૫૧
૪	શાહ અમુલખ નાગરદાસના ધર્મપત્નિ અ સૌ બેન લીલાવતીના વર્ષીતપ નિમિતે હા શાહ કાંતિલાલ નાગરદાસ	૩૦૦
૫	સ્વ શેઠ ઉજમશી નાનચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ ચુનીલાલ નાનચંદ	૨૫૧
૬	સ્વ શેઠ મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ બારાઘોડાવાળાના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હા ખીમચંદભાઇ	૨૫૧
૭	સ્વ શેઠ હરિલાલ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે હા અનુભાઇ	૨૫૧
૮	સંઘવી જેચંદભાઇ નારણદાસ	૨૫૧
૯	સ્વ શાહ વેલશીભાઈ સાકરચંદ કત્રાસગઢવાળાના સ્મરણાર્થે હા ભાઇ ચીમનલાલભાઇ	૨૫૧
૧૦	પારેખ મણીલાલ ટોકરશી લાતીવાળા (મોટી બેનના સ્મરણાર્થે)	૨૫૧
૧૧	શાહ નારણદાસ નાનજીભાઇના પુત્ર વાડીલાલભાઇના ધર્મપત્નિ અ સૌ નારંગીબેનના વર્ષીતપ નિમિતે હા શાંતિલાલ નારણદાસ	૨૫૧
૧૨	સ્વ છબીલદાસ ગોકળદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ કમળાબેન તરફથી હા મંજુલાકુમારી	૨૫૧
૧૩	શ્રી સ્થા જૈન શ્રાવીકા સંઘ હા રંભાબેન વંડીલાલ	૨૫૧
૧૪	સ્વ ત્રિભોવનદાસ દેવચંદ તથા સ્વ ચંચળબેનના સ્મરણાર્થે હા ડૉ હિંમતલાલ સુખલાલ	૨૫૧
૧૫	શાહ મુળચંદ કાનજીભાઇ હા શાહ નાગરદાસ ઓઘડભાઇ	૨૫૧
૧૬	શેઠ મોહનલાલ પિતામ્બરદાસ હા ભાઇ કેશવલાલ તથા મનસુખલાલ	૨૫૧
૧૭	શ્રીમતી હીરાબેન નથુભાઇના વર્ષીતપ નિમિતે હા નથુભાઇ નાનચંદ શાહ	૩૦૧
૧૮	શેઠ મણીલાલ શીવલાલ	૨૫૧
૧૯	સ્વ મણીયાર પરષોતમદાસ સુંદરજીના સ્મરણાર્થે હા સાકરચંદ પરસોતમદાસ શાહ	૨૫૧

વેરાવળ

૧	શાહ કેશવલાલ જેચંદભાઇ	૨૫૧

૨ શાહ ખીમચંદ શોભાગ્યચંદ

૩ સ્વ શેઠ મદનજી જેચંદભાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ
લાડકુવરબાઈ તરફથી હા ધીરજલાલ મદનજી ૨૫૧

૪ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ શોભેચંદ કરશનજી ૨૫૧

૫ શાહ હરકિશનદાસ ફુલચંદ કાનપુરવાળા ૨૫૧

સતારા

૧ સ્વ કોઠારી મદનલાલજી કુંદનમલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્નિ રાજકુવરબાઈ ૨૫૧

સરા

૧ શ્રી સરા સ્થા જૈન સંઘ હા દોશી પાનાચંદ સોમચંદ ૨૫૧

સાણંદ

૧ શાહ હીરાચંદ છગનલાલ હા શાહ ચીમનલાલ હીરાચંદ ૩૦૧
૨ અ સૌ ચંપાબેન હા દોશી જીવરાજ લાલચંદ ૨૫૧
૩ પટેલ મહાસુખલાલ ડોશાભાઈ ૨૫૧
૪ શાહ સાકરચંદ કાનજીભાઇ ૨૫૧
૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કલ્યાણજી સંઘવી લીંમડીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા વાડીલાલ મોહનલાલ કોઠારી ૨૫૧
૬ પારેખ નેમચંદ મોતીચંદ ઝુળાવાળાના સ્મરણાર્થે
હા પારેખ ભીખાલાલ નેમચંદ ૨૫૧
૭ સંઘવી નારણદાસ ધરમશીના સ્મરણાર્થે હા જયંતીલાલ નારણદાસ ૨૫૧
૮ શાહ કસ્તુરચંદ હરજીવનદાસ સાણંદવાળા
હા ડો માણેકલાલ કસ્તુરચંદ શાહ ૨૭૧
૯ શેઠ મોહનલાલ માણેકચંદ ગાંધી ચુડાવાળા તરફથી
તેમના ધર્મપત્નિ મચ્છાબેન લલ્લુભાઇના સ્મરણાર્થે ૩૦૧

સાલબની

૧ દોશી ચુનીલાલ ફુલચંદ ૨૫૦

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનમીયા ૨૫૧

સાસવડ

૧ ચંદનમલજી મુથાના ધર્મપત્નિ અ. સૌ. રગુબાઈ મુથા તરફથી
હા. અમરચંદજી મુથા ૨૫૧

સુરત

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ રતિલાલ લલ્લુભાઇ ૨૫૧
૨ શ્રીયુત કલ્યાણચંદ માણેકચંદ હડાલાવાળા ૨૫૧
૩ શ્રી હરીપુરા છકોટી સ્થા. જૈન સંઘ હા. બાબુલાલ છોટાલાલ શાહ ૨૫૧

સુરેન્દ્રનગર

૧ શેઠ આપશીભાઇ સુખલાલ ૨૫૧
૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ. કેશવલાલ મુળજીભાઇના ધર્મપત્નિ અમરતબાઇના સ્મરણાર્થે
હા. ભાઇલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧
૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ ૨૫૧
૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ ૨૫૧

સુવઇ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનંદી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી
મહારાજના ઉપદેશથી સુવઇ સ્થા. જૈન સંઘ જ્ઞાનભંડારને ભેટ ૨૫૧

સંજેલી

૧ શાહ લુણાજી ગુલાબચંદભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ પ્રેમચંદ દલીચંદ ૨૫૧

હારીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઇ હા. પ્રકાશચંદ્ર અમુલખભાઇ ૩૦૧
૨ સ્વ. બેન ચંદ્રકાંતાના સ્મરણાર્થે હા. શાહ અમુલખ મુળજીભાઇ ૩૦૧

હાટીના માળીયા

૧ શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ ૨૫૦
૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે
હા. તેના નાનાબેન અ. સૌ. મંજુલાબેન ભગવાનદાસ ગાંધી ૨૫૧

તા. ૧૫-૫-૬૦ સુધીના મેમ્બરોની સખ્યા

૧૧ આદ્ય સુરબ્બીશ્રી
૨૦ સુરબ્બીશ્રી
૬૩ સહાયક મેમ્બરો
૫૪૯ લાઇફ મેમ્બર
૬૪ બીજા કલાસના જુના મેમ્બરો

૭૦૭

માકરચદ ભાઈચદ શેઠ

રાજકોટ તા ૧૬-૫-૬૦ મત્રી,

*

તા ૧૬-૫-૬૦થી તા ૩૧-૫-૬૦ સુધીમા નીચે મુજબ નવા મેમ્બરો નોધાયા છે.

રૂા ૫૦૦	કોઠારી પોપટલાલ ચત્રભુજભાઈ	સુરેન્દ્રનગર
રૂા ૩૫૧	સરસ્વતી પુસ્તક ભડાર	અમદાવાદ
રૂા ૩૫૧	શેઠ ભુરાલાલ કાળીદાસ	અમદાવાદ
રૂા ૩૫૧	શેઠ મીયાચદજી જુહારમલજી કટારીયા	રાવટી
રૂ ૩૦૧	શ્રી સ્થા જૈન સઘ	સુરેન્દ્રનગર
રૂા ૨૫૧	ડૉ ધનજીભાઇ પુરૂષોતમદાસ	અમદાવાદ
રૂા ૨૫૧	શાહ કાતીલાલ હીરાચદ	સાણદ
રૂા ૨૫૧	શેઠ ગેરીલાલજી સુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા	અમદાવાદ

*

મેમ્બર ફી.

ઓછામા ઓછા રૂા ૫૦૦૦) આપી આદ્ય સુરબ્બીપદ આપ દિપાવી શકો છો
ઓછામા ઓછા રૂા ૩૦૦૦) આપી એક શાસ્ત્ર આપના નામથી છપાવી શકો છો
ઓછામા ઓછા રૂા ૧૦૦૦) આપી સુરબ્બીપદ મેળવી શકો છો
ઓછામા ઓછા રૂા ૫૦૦) આપી સહાયક મેમ્બર બની શકો છો

અને ઓછામા ઓછા રૂા ૩૫૧) આપી લાઇફ મેમ્બર તરીકે દરેક ભાઇ-બેન દાખલ થઈ શકે છે

ઉપરના દરેક મેમ્બરોને ૩૨ સૂત્રો તથા તેના તમામ ભાગો મળી લગભગ ૭૦ ગ્રથો જેની કિંમત લગભગ ૮૦૦ ઉપર થાય છે તે ભેટ તરીકે મળી શકે છે અને દરેક શાસ્ત્રમા તેમનુ નામ પ્રસિદ્ધ કરવામા આવે છે

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનમીયા ૨૫૧

સાસવડ

૧ ચંદનમલજી મુથાના ધર્મપત્નિ અ. સૌ. રંગુબાઈ મુથા તરફથી
હા. અમરચંદજી મુથા ૨૫૧

સુરત

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ રતિલાલ લલ્લુભાઇ ૨૫૧
૨ શ્રીયુત કલ્યાણચંદ માણેકચંદ હડાલાવાળા ૨૫૧
૩ શ્રી હરીપુરા છકોટી સ્થા. જૈન સંઘ હા. બાબુલાલ છોટાલાલ શાહ ૨૫૧

સુરેન્દ્રનગર

૧ શેઠ ચાપશીભાઇ સુખલાલ ૨૫૧
૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ. કેશવલાલ મુળજીભાઇના ધર્મપત્નિ અમરતબાઇના સ્મરણાર્થે
હા. ભાઇલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧
૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ ૨૫૧
૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ ૨૫૧

સુવઇ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનંદી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી
મહારાજના ઉપદેશથી સુવઇ સ્થા. જૈન સંઘ જ્ઞાનભંડારને ભેટ ૨૫૧

સજેલી

૧ શાહ લુણાજી ગુલાબચંદભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ પ્રેમચંદ દલીચંદ ૨૫૧

હારીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઇ હા. પ્રકાશચંદ્ર અમુલખભાઇ ૩૦૧
૨ સ્વ. બેન ચંદ્રકાતાના સ્મરણાર્થે હા. શાહ અમુલખ મુળજીભાઇ ૩૦૧

હાટીના માળીયા

૧ શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ ૨૫૦
૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે
હા. તેઓના નાનાબેન અ. સૌ. ગંજુલાબેન ભગવાનદાસ ગાંધી ૨૫૧

॥ श्री ॥

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ, રાજકોટ

પંચવર્ષિય યોજના અને તેનો હેતુ

ભવિષ્યના તમારા વારસદારને ખાતર

ફક્ત પાંચ વર્ષ માટે સહાયક બનો

સ્થાનકવાસી સમાજ માટે ધર્મના બે અવલંબન છે પહેલું શ્રમણવર્ગ અને બીજુ આગમ બત્રીશી જ્યાં જ્યાં શ્રમણવર્ગની ગેરહાજરી હોય ત્યાં ત્યાં ધર્મ ટકાવવાનું અત્યારે પણ એકજ સાધન છે અને તે જૈન સિદ્ધાંતો

પરદેશમાં વસ્તા તેમજ ગામડામાં રહેતા ભાઈઓને તેમજ બ્હેનોને વીરવાણીનો લાભ ક્યારે મળી શકે કે જ્યારે તેઓ જે ભાષા જાણતા હોય તે ભાષામાં સૂત્રો લખાયેલ હોય

ભગવાન મહાવીરે ફરમાવેલ વાણીની ગુંથણી ગણધરોએ કરી તે પ્રાકૃત ભાષામાં રચેલા શાસ્ત્રો અત્યારની પ્રજા વાંચી ન શકે એટલે લાભ તો કયાંથી લઇ શકે ?

આ બધી મુસ્કેલીઓના નિવારણ માટે પૂ. આચાર્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ મૂળ શાસ્ત્રોનું પ્રાકૃત, સંસ્કૃત, હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાંતર કરી એકજ પેઈજ ઉપર એકજ પુસ્તકમાં સાથે ચારે ભાષામાં વીર પ્રભુના વચનોનો ખજાનો હરકોઇ વ્યક્તિ સહેલાઈથી વાંચીને તેનો અમૂલ્ય લાભ ઉઠાવી શકે તેવી રીતે તૈયાર કરી રહ્યા છે

આ સમિતિ દ્વારા પૂજ્યશ્રીના બનાવેલા લગભગ અઢાર શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ થઈ ચૂકયા છે હાલમાં ભગવતી સૂત્ર છપાય છે જેના લગભગ ૧૨ ભાગ થશે અને એક જ શાસ્ત્રનો ખર્ચ લગભગ સવા લાખ રૂા થશે બત્રીશ સૂત્રો અને તેના ભાગો મળીને લગભગ ૭૦ સીતેર બુકો પ્રસિદ્ધ થવાની ધારણા છે

રૂા ૨૫૧) ભરનાર લાઈફ મેમ્બરને આ આખો સેટ જેની કિંમત લગભગ રૂા ૭૦૦ થી રૂા ૮૦૦ થાય છે તે ભેટ તરીકે આપવામાં આવે છે પરંતુ આવી રીતે રોજબરોજ તોટો પડતો રહે તે કયાં સુધી ચલાવી શકાય ? અત્યાર સુધી

તા ૧—૬—૬૦ સુધીમાં પ્રસિદ્ધ થયેલાં સૂત્રો

શાસ્ત્રોનો નં	શાસ્ત્રનું નામ		કિંમત
૧	ઉપાસકદશાંગ (બીજી આવૃત્તિ) ખલાસ		૮—૮—૦
૨	દશવૈકાલિક	૧ લો ભાગ	૧૦—૦—૦
	દશવૈકાલિક	૨ જો ભાગ (છપાય છે	૭—૮—૦
૩	આચારાંગ	૧ લો ભાગ	૧૨—૦—૦
	આચારાંગ	૨ જો ,,	૧૦—૦—૦
	આચારાંગ	૩ જો ,,	૧૦—૦—૦
૪	આવશ્યક		૭—૮—૦
૫ થી ૯	નિરયાવલિકા		૧૧—૦—૦
૧૦	નંદી સૂત્ર		૧૨—૦—૦
૧૧	કલ્પ સૂત્ર	૧ લો ભાગ	૨૫—૦—૦
	કલ્પ સૂત્ર	૨ જો ભાગ	૨૦—૦—૦
૧૨	અન્તકૃત		૮—૮—૦
૧૩	વિપાક		૧૫—૦—૦
૧૪	અનુત્તરોપપાતિક		૭—૮—૦
૧૫	દશાશ્રુત		૧૧—૦—૦
૧૬	ઔપપાતિક		૧૨—૦—૦
૧૭	ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર	૧ લો ભાગ	૧૫—૦—૦
	,,	૨ જો ભાગ	૧૫—૦—૦
	,,	૩ જો ભાગ (છપાય છે)	
	,,	૪ થો ,, (,,)	
૧૮	ભગવતી સૂત્ર	૧ લો ભાગ (છપાય છે)	

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ, રાજકોટ

પચવર્ષિય યોજના અને તેનો હેતુ

ભવિષ્યના તમારા વારસદારને ખાતર

ફક્ત પાચ વર્ષ માટે સહાયક બનો

સ્થાનકવાસી સમાજ માટે ધર્મના બે અવલબન છે પહેલુ શ્રમણવર્ગ અને બીજુ આગમ બત્રીશી જ્યા જ્યા શ્રમણવર્ગની ગેરહાજરી હોય ત્યા ત્યા ધર્મ ટકાવવાનુ અત્યારે પણ એકજ સાધન છે અને તે જૈન સિદ્ધાતો

પરદેશમા વસ્તા તેમજ ગામડામા રહેતા ભાઇઓને તેમજ બ્હેનોને વીરવાણીનો લાભ ક્યારે મળી શકે કે જ્યારે તેઓ જે ભાષા જાણતા હોય તે ભાષામા સૂત્રો લખાયેલ હોય

ભગવાન મહાવીરે ફરમાવેલ વાણીની ગુથણી ગણધરોએ કરી તે પ્રાકૃત ભાષામા રચેલા શાસ્ત્રો અત્યારની પ્રજા વાચી ન શકે એટલે લાભ તો ક્યાથી લઇ શકે ?

આ બધી મુશ્કેલીઓના નિવારણ માટે પૂ આચાર્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ મૂળ શાસ્ત્રોનુ પ્રાકૃત, સસ્કૃત, હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાતર કરી એકજ પેઇજ ઉપર એકજ પુસ્તકમા સાથે ચારે ભાષામા વીર પ્રભુના વચનોનો ખજાનો હરકોઇ વ્યકિત સહેલાઈથી વાચીને તેનો અમૂલ્ય લાભ ઉઠાવી શકે તેવી રીતે તૈયાર કરી રહ્યા છે

આ સમિતિ દ્વારા પૂજ્યશ્રીના બનાવેલા લગભગ અઢાર શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ થઈ ચુકયા છે હાલમા ભગવતી સૂત્ર છપાય છે જેના લગભગ ૧૨ ભાગ થશે અને એક જ શાસ્ત્રનો ખર્ચ લગભગ સવા લાખ રૂા થશે બત્રીશ સૂત્રો અને તેના ભાગો મળીને લગભગ ૭૦ સીતેર બુકો પ્રસિદ્ધ થવાની ધારણા છે

રૂા ૨૫૧) ભરનાર લાઇફ મેમ્બરને આ આખો સેટ જેની કિમત લગભગ રૂા ૭૦૦ થી રૂા ૮૦૦ થાય છે તે ભેટ તરીકે આપવામા આવે છે પરતુ આવી રીતે રોજબરોજ તોટો પડતો રહે તે કયા સુધી ચલાવી શકાય ? અત્યાર સુધી

મેમ્બરોની સખ્યા ૭૧૫ની થયેલ છે હાલમા મેમ્બરો થવા માટે વગર પ્રયત્ને નામો આવતા જાય છે જુનાઈ ૧૯૬૦મા મળનાર કાર્યવાહક કમિટી વખતે રૂા ૫૦૧) મેમ્બર ફી કરવા માટે વાટાઘાટો ચાલે છે હાલમા કામ ચલાઉ રૂા ૨૫૧)ને બદલે મેમ્બર ફી રૂા ૩૫૧) રાખવામા આવી છે

ગઈ જનરલ સભાએ ઠરાવ કરીને પચવર્ષીય યોજના ઘડી કાઢી છે અને તેનો હેતુ અત્યારે શાસ્ત્રો ભેટ તરીકે આપવામા જે ખોટ ખમવી પડે છે તે પુરી કરવાનો છે રૂા ૨૫) થી વધુ ગમે તેટલી રકમ પાચ વર્ષ સુધી સમિતિને કોઇપણ વ્યકિત (મેમ્બર હો યા ન હો તે) ભેટ આપે તેમ સમિતિએ અપીલ કરી છે સમિતિના પ્રમુખ શેઠ શાતિલાલભાઈએ રૂા ૧૦૦૦) એક હજાર પાચ વર્ષ સુધી આપવાનુ જાહેર કર્યું છે

અત્યાર સુધીમા રૂા ૪૦૭૮) ની રકમ સમિતિને પહેલા વર્ષની ભેટ તરીકે મળી પણ ગઇ છે આવી રીતે મદદ આપનારને શાસ્ત્રો ભેટ મળવાના નથી તે વાત સમજી શકાય તેમ છે

લગ્ન પ્રસગે, પૂત્ર જન્મ પ્રસગે, દિક્ષા પ્રસગે, વર્ષિતપ પ્રસગે તેમજ બીજા શુભ પ્રસગોએ થતા ખર્ચામા થોડો કાપ મુકીને પણ આ યોજના અપનાવી લેવા સારા સમાજને અમો વિનતિ કરીએ છીએ

અથાગ પરિશ્રમ વેઠીને સમાજના કલ્યાણ માટે જે સત આવુ અણમોલુ કાર્ય કરી રહ્યા છે અને જેને વ્યવસ્થિત રીતે પ્રસિદ્ધ કરીને ઘેર ઘેર આગમો પહોચાડવા જે સમિતિ કાર્યકરી રહી છે તેના હાથ મજબુત કરવા સમાજના સાધુ, સાધ્વી શ્રાવક-શ્રાવિકા એ દરેકની પવિત્ર ફરજ છે -એજ વિનતિ

તા ૧-૬-૬૦ સેવકો,

રાજકોટ માનદ્ મત્રીઓ,

❀

પંચવર્ષીય યોજનાની સંવત ૨૦૧૬ ની પહેલાં વર્ષની ભેટ.

(તા ૩૧-૫-૬૦ સુધીમા દાતાઓ તરફથી મળેલી રકમો)

શ્રી શેઠ શાંતિલાલ મંગળદાસ	અમદાવાદ	૧૦૦૦
,, ,, બાબુલાલ નારણદાસ	ધોરાજી	૨૫૧
,, ,, ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	અમદાવાદ	૨૫૧
,, ,, ઇશ્વરલાલ પુરૂષોતમદાસ	અમદાવાદ	૨૫૧
,, , હરિલાલ અનોપચંદ	ખંભાત	૨૫૦
,, ,, રંગજીભાઇ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૨૫૦
, ,, મુલચંદજી જવાહીરલાલજી ખરડીયા	અમદાવાદ	૧૦૧
,, ,, ગુલાબચંદ લીલાધર બાટવીયા	ખાખીજાળીયા	૧૦૧
,, ,, મ્હેતા પોપટલાલ માવજીભાઇ	જામજોધપુર	૧૦૧
,, ,, શાહ પ્રેમચંદ માણેકચંદ	અમદાવાદ	૧૦૧
,, ,, હાથીભાઇ ચત્રભુજ જામનગરવાળા	અમદાવાદ	૭૫
,, ,, મ્હેતા ભાનુલાલ રૂગનાથ	પ્રાંક્ષા	૭૫
, ,, શાહ હરજીનદાસ કેશવજી	મુંબઇ	૭૫
, ,, જુઆભાઇ વેલશીભાઇ	સુરેન્દ્રનગર	૭૫
,, શાહ હીરાચંદ છગનલાલ હા ચીમનલાલ હીરાચંદ	આણંદ	૫૧
,, ,, મોતીલાલજી હીરાચંદજી	નારાયણગામ	૫૧
,, વકીલ મણીલાલ કેશવલાલ	વડોદરા	૫૧
,, શે૦ ત્રીભોવનદાસ મંગળદાસ	ખંભાત	૫૧
,, ,, બાટવીયા અમીચંદ ગીરધરલાલ	બેંગલોર	૫૧
,, , સુમનલાલ ડાળીદાસભાઇ	કાનપુર	૫૧
,, ,, હરકીશનદાસ ફૂલચંદભાઇ	કાનપુર	૫૧
,, ,, બાગમલજી રૂગનાથમલજી ભણસારી હા શેઠ નેનમલજી	અમદાવાદ	૫૧
,, ,, ગીરધરલાલ મણીલાલ તરફથી (સ્વ અ સૌ છબલબાઇના સ્મરણાર્થે)	ખારાઘોડા	૫૧
,, ,, એક સદ્‌ગૃહસ્થ હા શાહ રીખબદાસ જયંતિલાલ	અમદાવાદ	૫૧
,, ,, બગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૫૧
,, વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ શાહ	વીરમગામ	૫૧
,, સ્થા જૈન સંઘ હા મ્હેતા ચંદુલાલ ખેતશીભાઇ	વણી	૫૧
,, શેઠ દોશી જીવરાજ લાલચંદ	સાણંદ	૫૧

,,	,,	નરસિંહદાસ વણિતચંદ સંઘવી	ધ્રાંગધ્રા	૫૧
,,	ડો	કસ્તુરચંદ બાલાભાઈ શાહ હા રજનીકાંત કસ્તુરચંદ શાહ	અમદાવાદ	૫૧
,,	શેઠ	કસ્તુરચંદ હરજીવનદાસ હા ડો માણેકલાલ કસ્તુરચંદ	સાણંદ	૫૧
,,	,,	ખીમચંદ મણીલાલ	ખારાઘોડા	૩૧
,,	,,	કેશવલાલ ઓતમચંદ શાહ	ખારાઘોડા	૩૧
,,	,,	ભાઈલાલ ઉજમશી શાહ	અમદાવાદ	૩૧
,,	,,	રતીલાલ પોપટલાલ મહેતાના પૂ માતુશ્રી બેન ચંચળબેનના તરફથી ભેટ	વણી	૩૧
,,	,,	અમૃતલાલ ઓઘડભાઈ	ખારાઘોડા	૩૧
,,	,,	મહેતા રણજીતલાલ મોતીલાલ (ઉદેપુરવાળા)	અમદાવાદ	૨૫
,,	,,	કેશવલાલભાઈ	વીરમગામ	૨૫
,,		પ્રવિણાબેન લક્ષ્મણભાઈ	અમદાવાદ	૨૫
,,		પારેખ ભીખાલાલ નેમચંદ	સાણંદ	૨૫

સમિતિ સર્વ દાતાઓનો આભાર માને છે

રાજકોટ
તા ૧-૬-૧૯૬૦

સાકરચંદ ભાઈચંદ શેઠ
મંત્રી

❀

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

जैनाचार्य-जैनधर्म-दिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजीमहाराजविरचितया
'सुन्दरबोधि'-व्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतम्

॥ श्री-निरयावलिकासूत्रम् ॥

॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥

(मालिनी-छन्दः)

सुरमनुजमुनीन्द्रैर्वन्द्यमानाऽङ्घ्रिपद्म,
विदितसकलतत्त्व बोधिद तीर्थनाथम् ।
कृतभवजलनौकारूपधर्मोपदेश,
त्रिभुवनविदितं तं वर्धमानं प्रणम्य ॥ १ ॥

श्री निरयावलिकासूत्र की सुन्दरबोधिनी टीकाका हिन्दीभाषानुवाद

"मङ्गलाचरण"

जिनके चरणकमल, देव, मनुष्य और मुनिवरोंसे वदित हैं। जो सर्व तत्त्वोंके ज्ञाता और बोधिको देने वाला हैं। तथा ससार-सागरसे पार होनेके लिये नौकास्वरूप श्रुतचारित्र धर्मके उपदेशक हैं। एव ज्ञानरूपी नेत्रके दाता हैं, और चतुर्विधसघरूपी तीर्थके स्वामी हैं। ऐसे त्रिलोकमें प्रसिद्ध (चौवीसवें तीर्थंकर) श्री वर्धमानस्वामीको नमस्कार करके ॥ १ ॥

શ્રી નિરયાવલિકા સૂત્રની સુંદરબોધિની નામે ટીકાનો ગુજરાતી અનુવાદ.

"મંગલાચરણ."

જેના ચરણ કમળ દેવ મનુષ્ય તથા મુનિવરોથી વદિત છે, જે સર્વ તત્વના જાણનારા તથા બોધિસ્વરૂપને આપવા વાળા છે, જે સંસારસાગર તરી જવા માટે હોડી રૂપી શ્રુતચારિત્ર ધર્મના ઉપદેશક છે, જે જ્ઞાનરૂપી ચક્ષુના દેનાર છે તથા ચાર પ્રકારના સઘરૂપી તીર્થના પ્રભુ છે, એવા ત્રણ લોકમા વિખ્યાત (ચોવીસમા તીર્થંકર) શ્રી વર્ધમાન સ્વામીને નમસ્કાર કરીને, (૧)

सकलनिगमदक्ष ज्ञानचक्षुःसमेत,
फलितसकललब्धि पूर्वधारं मुनीन्द्रम् ।
जिनवचनरहस्यद्योतक दीनबन्धुं,
करण–चरणधार गौतम चाऽपि नत्वा ॥ २ ॥

(पृथ्वी छन्दः)

सगुप्तिसमिति समा विरतिमादधान सदा,
क्षमावदखिलक्षम कलितमञ्जुचारित्रकम् ।
सदोरमुखवस्त्रिकाविलसिताऽऽननेन्दु गुरु,
प्रणम्य भववारिधिप्लवमपूर्वबोधप्रदम् ॥ ३ ॥

(अनुष्टुप् छन्दः)

जैनीं सुरस्वती नत्वा लोकालोकप्रकाशिनीम् ।
निरयावलिकावृत्तिं, कुर्वे सुन्दरबोधिनीम् ॥ ४ ॥

तथा सब शास्त्रोंके तत्व समझाने में दक्ष (चतुर), ज्ञानदृष्टि से तत्वातत्व का निर्णय करने वाले, सम्पूर्ण लब्धिवाले, चौदहपूर्व धारक, स्याद्वादरूप जिन–वचनके रहस्यको बताने वाले, षट्कायके रक्षक, और चरण–करणके धारी, मुनियोंमें प्रधान ऐसे श्री गौतम-स्वामीको शीश झुकाकर ॥ २ ॥

तथा समितिगुप्तिधारक, समदर्शी, विरतिमार्गमें चलने वाले, पृथिवीके समान सब परीषहोपसर्गोंको सहन करने वाले, निरतिचार चारित्रवाले, सम्यक् बोध के देने वाले, वायुकाय आदि जीवोंकी रक्षाके लिए डोरा सहित मुखवस्त्रिकासे जिनका मुखचन्द्र देदीप्यमान है, और जो ससारसागरमें तिरनेके लिए नौकाके समान हैं, ऐसे परमकृपालु गुरुदेवको वन्दना करके ॥ ३ ॥

તથા સર્વ શાસ્ત્રોના તત્વ સમજાવવામા ચતુર, જ્ઞાનદૃષ્ટિથી તત્ત્વાતત્ત્વનો નિર્ણય કરવાવાળા, સંપૂર્ણ લબ્ધીવાળા, ચૌદ પૂર્વ ધારક, સ્યાદ્વાદ રૂપી જિન—વચનના રહસ્યને બતાવનાર, છકાયની રક્ષા કરનાર તથા ચરણ કરણના ધારક, મુનિઓમા પ્રધાન એવા શ્રી ગૌતમ સ્વામીને મસ્તક નમાવીને, (૨) તથ સમિતિ ગુપ્તિના ધારણ કરનારા સમદર્શી, વિરતિમાર્ગમા વિચરનારા, પૃથ્વીની પેઠે તમામ પરીષહો તથા ઉપસર્ગોને સહન કરવાવાળ, નિરતિચાર ચારિત્રવાળા, સમ્યક્ ઉપદેશ આપવાવાળા, વાયુકાય આદિ જીવોની રક્ષાને માટે દોરા સહિત મુખવસ્ત્રિકાથી જેનુ મુખારવિંદ શોભી રહ્યુ છે તથા જે સસારસાગર તરવા માટે એક નાવ સમાન છે એવા પરમ કૃપાળુ ગુરુદેવને વંદન કરીને (૩)

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था । रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥ १ ॥

छाया–तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरम् आसीत् । ऋद्धस्तिमितसमृद्धम् ॥ १ ॥

टीका–'तेण कालेण' इत्यादि–तस्मिन् काले=अवसर्पिण्याश्चतुर्थारकरूपे तस्मिन् समये=कालविशेषरूपे हीयमानलक्षणे राजगृहं नाम नगरम् आसीत् ।

तद्–(राजगृहं)–वर्णनमित्थमाह–'रिद्धत्थिमियसमिद्धे' इत्युपलक्षणम्, तेन 'पमुइयजणजाणवए, उत्ताणनयणपेक्खणिज्जे, पासाईए, दरिसणिज्जे, अभिरूवे, पडिरूवे,' इत्येतेषामपि सङ्ग्रहः । छाया–ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्, प्रमुदितजनजानपदम्, उत्ताननयनप्रेक्षणीयम्, प्रासादीयम्, दर्शनीयम्, अभिरूपम्, प्रतिरूपम्; ।

"ऋद्ध'–इत्यादि–ऋद्ध=नभःस्पर्शिबहुलप्रासादयुक्त 'बहुजनसङ्कुल च स्तिमित=स्वपरचक्रभयरहित, समृद्ध = हिरण्य–सुवर्ण–धन–धान्यादिपरिपूर्णमिति ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्, अत्र त्रिपदकर्मधारयः । 'प्रमुदिते'–ति प्रमुदितजनजानपदयुक्तम् । तत्रत्यास्तत्राऽऽगता देशान्तरीयाश्च जना हिरण्य–सुवर्ण–धनधान्य–

तथा लोकालोकके स्वरूपको प्रकाशित करने वाली–जिनवाणीको नमस्कार करके मैं घासीलाल मुनि निरयावलिकासूत्र की 'सुन्दरबोधिनी' नामक टीका की रचना करता हूँ ॥ ४ ॥

'तेण कालेण' इत्यादि । उस काल उस समय में अर्थात्–अवसर्पिणीके चौथे आरेके, उसी हीयमान रूप समयमें राजगृह नामका प्रसिद्ध नगर था । जिसमें नभःस्पर्शी ऊँचे-ऊँचे सुन्दर महल थे। जहाँ स्व–पर चक्रका कोई भय नहीं था । और वह धन, धान्यादि ऋद्धियोंसे समृद्ध परिपूर्ण था । जो वहाँ के निवासियोंको तथा देश–

તથા લોકાલોકના સ્વરૂપને પ્રકાશિત કરવાવાળી જિન–વાણીને નમસ્કાર કરી હું ઘાસીલાલ મુનિ નિરયાવલિકા સૂત્રની 'સુંદરબોધિની' નામની ટીકાની રચના કરૂ છુ (૪)

तेण कालेण ઇત્યાદિ તે કાળ અને તે સમયમા અર્થાત્ અવસર્પિણી(કાળ)ના ચોથા આરાના હીયમાન (ઉતરતા) સમયમા રાજગૃહ નામે એક પ્રખ્યાત નગર હતુ કે જેમા ગગનચુંબી ઊંચા ઊંચા સુંદર મહાલયો હતા જ્યા સ્વ પર ચક્રનો ભય ન હોતા તથા તે નગર ધન ધાન્યાદિ ઋદ્ધિઓથી પરિપૂર્ણ સમૃદ્ધિવાળુ હતુ, જે ત્યાના રહેવાશીઓને તથા દેશ પરદેશથી આવવાવાળાને સોનું ચાંદી રત્ન વગેરેના વેપાર–

सकलनिगमदक्ष ज्ञानचक्षुःसमेत,
फलितसकललब्धि पूर्वधार मुनीन्द्रम् ।
जिनवचनरहस्यद्योतक दीनबन्धुं,
करण–चरणधार गौतम चाऽपि नत्वा ॥ २ ॥

(पृथ्वी छन्दः)

सगुप्तिसमितिं समा विरतिमादधान सदा,
क्षमावदखिलक्षम कलितमञ्जुचारित्रकम् ।
सदोरमुखवस्त्रिकाविलसिताऽऽननेन्दु गुरु,
प्रणम्य भववारिधिप्लवमपूर्वबोधमदम् ॥ ३ ॥

(अनुष्टुप् छन्दः)

जैनीं सरस्वती नत्वा लोकालोकप्रकाशिनीम् ।
निरयावलिकावृत्तिं, कुर्वे सुन्दरबोधिनीम् ॥ ४ ॥

तथा सब शास्त्रोंके तत्त्व समझाने में दक्ष (चतुर), ज्ञानदृष्टि से तत्त्वातत्त्व का निर्णय करने वाले, सम्पूर्ण लब्धिवाले, चौदहपूर्व धारक, स्याद्वादरूप जिन–वचनके रहस्यको बताने वाले, षट्कायके रक्षक, और चरण–करणके धारी, मुनियोंमें प्रधान ऐसे श्री गौतम स्वामीको शीश झुकाकर ॥ २ ॥

तथा समितिगुप्तिधारक, समदर्शी, विरतिमार्गमें चलने वाले, पृथिवीके समान सब परीषहोपसर्गोंको सहन करने वाले, निरतिचार चारित्रवाले, सम्यक् बोध के देने वाले, वायुकाय आदि जीवोंकी रक्षाके लिए डोरा सहित मुखवस्त्रिकासे जिनका मुखचन्द्र देदीप्यमान है, और जो ससारसागरमे तिरनेके लिए नौकाके समान हैं, ऐसे परमकृपालु गुरुदेवको वन्दना करके ॥ ३ ॥

તથા સર્વ શાસ્ત્રોના તત્ત્વ સમજાવવામા ચતુર, જ્ઞાનદૃષ્ટિથી તત્ત્વાતત્ત્વનો નિર્ણય કરવાવાળા, સંપૂર્ણ લબ્ધીવાળા, ચૌદ પૂર્વ ધારક, સ્યાદ્વાદ રૂપી જિન—વચનના રહસ્યને બતાવનાર, છકાયની રક્ષા કરનાર તથા ચરણ કરણના ધારક, મુનિઓમા પ્રધાન એવા શ્રી ગૌતમ સ્વામીને મસ્તક નમાવીને (૨) તથા સમિતિ ગુપ્તિના ધારણ કરતારા સમદર્શી, વિરતિમાર્ગમા વિચરનારા, પૃથ્વીની પેઠે તમામ પરીષહો તથા ઉપસર્ગોને સહન કરવાવાળા, નિરતિચાર ચારિત્રવાળા, સમ્યક્ ઉપદેશ આપવાવાળા, વાયુકાય આદિ જીવોની રક્ષાને માટે દોરા સહિત મુખવસ્ત્રિકાથી જેનું મુખારવિંદ શોભી રહ્યું છે તથા જે સંસારસાગર તરવા માટે એક નાવ સમાન છે એવા પરમ કૃપાળુ ગુરુદેવને વંદન કરીને (૩)

'चिराईए, पुव्वपुरिसपन्नत्ते, सच्छत्ते, सज्झए, सघंटे, सपडागे, कयवियद्दीए, लाइयोल्लोइयमहिए' इति, । छाया-चिरादिकम्, पूर्वपुरुषप्रज्ञप्तम्, सच्छत्रम्, सध्वजम्, सघण्टकम्, सपताकम्, कृतवितर्दिकम्, लिप्तोपलिप्तमहितम्, इति।

'चिरादिकम्' इति-चिरः=बहुकालिकः आदिः=निवेशो यस्य तत् तथा, 'पूर्वपुरुषे'ति पूर्वपुरुषैः=प्राचीनपुम्भिः प्रज्ञप्तम्=उपादेयतया प्रतिबोधितम्, सच्छत्रम्, सध्वजम्, सघण्टम्, सपताकम्, एतत्सर्वं स्पष्टम्, कृतवितर्दिकम्=रचितवेदिकम्, 'लाइये'त्यादि लाइय=गोमयमृत्तिकादिना भूम्युपलेपनम् च उल्लोइय=भित्तिसमुदायस्य सेटिकादिभिः समृष्टीकरण च, लाइयोल्लोइये, ताभ्या महित=युक्त प्रशस्तम् परिष्कृतमिति यावत्, एवम्भूत चैत्यमासीत् ।

तत्र व्यन्तरायतनभूमौ अशोकवरपादप.=अशोकाख्यो महावृक्षोऽस्ति, तस्याऽधस्तटे 'पृथिवीशिलापट्टक.' पट्टक इव पट्टकः, आसनरूपेण परिणता पृथिवीशिलेत्यर्थः, अभवत्=आसीत्, तस्य शास्त्रान्तरे वर्णनमित्थमाह—

"विक्खभायामसुप्पमाणे, आइणग-रूय बूर नवणीय तूलफासे, पासाईए, दरिसणिज्जे, अभिरूवे, पडिरूवे" इति । छाया-विष्कम्भायामसुप्रमाणः, अजिनकरूत-बूर नवनीत तूलस्पर्श., प्रासादीयः, दर्शनीयः, अभिरूपः, प्रतिरूप', इति ।

'विष्कम्भे'-ति-विस्तारदैर्घ्याभ्या समुचितप्रमाणोपेतः 'अजिनके'ति-अजिनमेवाऽजिनक=मृगचर्म, रूत = कार्पास , बूर'=स्निग्धवनस्पतिविशेषः, नवनीत=दुग्धविकारविशेषः, तूल=अर्क-शाल्मलीवृक्षजातम्, तद्वत्स्पर्शः कोमल-

---

व्यन्तरायतन था। उसका वर्णन अन्यत्र(दूसरे शास्त्रोंमे) इस प्रकारहै—

पूर्व पुरुषोंके कथनानुसार वह प्राचीन कालसे है। उसमे छत्र, ध्वजा, घण्टा, पताका आदि लगे हुए थे और वेदिकाएँ बनी हुई थी। उसकी भुमि गोमय और मिट्टी से लिपी हुई थी। भीतें खडी चूना आदि से धवलित थी ।

वहाँ उसी स्थान पर एक बडा अशोक वृक्ष था। उसके नीचे मृगचर्म, कपास बूर (वनस्पति), मक्खन और आकडे(अर्क) की रुई (तूल)

હતુ જેનુ વર્ણન અન્યત્ર (બીજા શાસ્ત્રોમા) આવી રીતે છે —

અગાઉના લોકોના કહેવા પ્રમાણે તે જુના વખતથી છે તેમા છત્ર, ધજા, ઘટા, પતાકા આદિ લાગેલા હતા વેદિઓ બનેલી હતી તેની ભૂમિ છાણ અને માટીથી લીંપેલી હતી અને ભીતો ખડી-ચુના વગેરેથી ધવલિત હતી

ત્યા એ જગ્યા ઉપર એક મોટુ અશોક વૃક્ષ હતુ તેની નીચે મૃગચર્મ, કપાસ, બૂર (વનસ્પતિ) માખણ અને આકડાના રૂ જવ સવાળ અને ઉચિત

वस्त्रादीनां समर्घलभ्यतया विविधवाणीज्येन स्वस्वाभीष्टानां पूर्णतया यथानीति लाभेन च प्रमुदिता भवन्ति । 'उत्ताने'-ति उत्ताननयनप्रेक्षणीयम्=सौन्दर्यातिशयादुन्मीलितनिमेषपातवर्जिताक्षिभिर्दर्शनीयम् 'प्रासादीयम्=द्रष्टृणां चित्तप्रसादजनकत्वात्प्रमोदजनकम् , दर्शनीयम् = दृष्टिसुखदत्वेन पुनः पुनर्दर्शनयोग्यम् । अभिरूपम्=मनोज्ञाकृतिकम्, प्रतिरूपम्=अपूर्वचमत्कारकशिल्पकला-कलितत्वेनाद्वितीयरूपम् ॥ १ ॥

मूलम्--तत्थ उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गुणसिलए (नामं) चेइए (होत्था) वण्णओ । असोगवरपायवे पुढवीसिलापट्टए (होत्था) ॥ २ ॥

छाया— तत्र उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे गुणशिलकं (नाम) चैत्यम् (आसीत्) वर्णकः । अशोकवरपादपः पृथिवीशिलापट्टकः (आसीत्) ॥ २ ॥

टीका-'तत्थ' इत्यादि-तत्र=राजगृहे, उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे गुणशिलक (नाम) चैत्य=व्यन्तरायतनमासीत्, कीदृशं चैत्यमिति जिज्ञासायां शास्त्रान्तरे तद्वर्णनमेवमाह-

---

देशान्तरसे आनेवालोको स्वर्ण चादी रत्नादिके व्यापारसे लाभान्वित करनेके कारण आनन्द जनक था। जिसका अतिशय सौन्दर्य टक-टकी लगाकर अनिमेष दृष्टिसे देखनेके योग्य होनेसे वह 'प्रेक्षणीय' था। जो दर्शकोंका मन प्रफुल्लित कर देनेके कारण 'प्रासादीय' प्रमोद जनक था। नेत्रोंको देखनेमे बारम्बार सुख देनेवाला होनेके कारण 'दर्शनीय' था। सुन्दर आकृतिका होने के कारण 'अभिरूप' था। अपूर्व-अपूर्व चमत्कार उत्पन्न करने वाली शिल्पकलाओं से युक्त होनेकेकारण प्रतिरूप अर्थात् अनुपम था ॥ १ ॥

'तत्थ' इत्यादि। उस राजगृहके ईशान कोणमें गुणशिलक नामका

રોજગારથી લાભકારક હોવાથી આનંદજનક હતુ, જેનુ અતિશય સૌદર્ય અનિમેષ દૃષ્ટિથી જોવા લાયક હોવાથી તે 'પ્રેક્ષણીય' હતુ, જે જોનારના મનને પ્રફુલ્લિત કરવાના કારણે 'પ્રાસાદીય' પ્રમોદજનક હતુ, આખોથી જોવામા વારવાર સુખ આપનાર હોવાથી 'દર્શનીય' હતુ, સુદર આકૃતિવાળુ હોવાથી અભિરૂપ' હતુ નવીન નવીન આશ્ચર્ય ઉપજાવે એવી શિલ્પકલાઓવાળુ હોવાથી પ્રતિરૂપ અર્થાત્ અનુપમ હતુ ૧

'તત્થ' ઇત્યાદિ તે રાજગૃહના ઈશાનકોણમા ગુણશિલક નામનુ વ્યન્તરાયતન

सपन्ने, ओयसी, तेयसी, वयसी, जसंसी, जियकोहमाणमायालोहे, जीवियासा-मरणभयविप्पमुक्के, तवप्पहाणे, गुणप्पहाणे, करणचरणप्पहाणे, निग्गहप्पहाणे, घोरबंभचेरवासी, उच्छूढसरीरे, चोद्दसपुव्वी, चउनाणोवगए' इति। अस्य च्छाया—" कुलसम्पन्नः, बलसम्पन्नः, विनयसम्पन्नः, लाघवसम्पन्नः, ओजस्वी, तेजस्वी, वचस्वी, यशस्वी, जितक्रोधमानमायालोभः, जीविताशामरणभयविप्रमुक्तः, तपःप्रधानः, गुणप्रधानः, करणचरणप्रधानः, निग्रहप्रधानः, घोरब्रह्मचर्यवासी, उच्छूढशरीरः, चतुर्दशपूर्वी, चतुर्ज्ञानोपगतः"। इति,

'कुले'ति—कुल=पैतृक' पक्षस्तत्सम्पन्नः, उत्तमपैतृकपक्षयुक्तः, 'बले' ति—बलेन=संहननसमुत्थेन पराक्रमेण युक्तः, वज्र—ऋषभ—नाराच संहननधारीत्यर्थः, 'विनये'ति—विनयति=नाशयति अष्टप्रकारकं कर्म यः स विनयः=अभ्युत्थानादि-गुरुसेवालक्षणस्तत्सम्पन्नः। 'लाघवे' ति—लाघवं द्रव्यतः स्वल्पोपधित्वम्, भावतो गौरवत्रयनिवारणं, तत्सम्पन्नः। 'ओजस्वी 'ति—ओजः=सकलेन्द्रियाणां पाटवं तपःप्रभृतिप्रभावात् समुत्थतेजो वा, तद्वान्, 'तेजस्वी'ति—तेजः=अन्त-र्बहिर्देदीप्यमानत्वम् तेजोलेश्यादि वा, तद्वान्, 'वचस्वी'ति—वचः=आदेयं वचनं सकलप्राणिगणहितसंपादकं निरवद्यवचनं, तद्वान्, 'यशस्वी' ति—यशः=तपः

(शुद्ध) होनेसे कुलसपन्न थे। बलसपन्न अर्थात् संहनन से उत्पन्न पराक्रमसे युक्त थे। वज्रऋषभनाराचसंहननके धारी थे। जो आठ कर्मोंका नाश करे उसको विनय कहते हैं, वह अभ्युत्थानादि गुरु-सेवा स्वरूप है, उससे युक्त थे। लाघवसपन्न थे अर्थात् द्रव्यसे अल्प उपधि वाले थे और भावसे गौरव-(गारव)-त्रय रहित थे। इन्द्रि-योंके सौन्दर्य और तप आदि के प्रभावसे ओजस्वी-प्रतिभाशाली थे। अन्तर 'आत्मप्रभाव' और बाहर 'शरीर प्रभाव' से देदीप्यमान होने के कारण तेजस्वी थे। सब प्राणियोंके हितकारक और निर-वद्य (निर्दोष) वचन युक्त होनेसे आदेय (ग्राह्य) वचन वाले थे।

કુળસંપન્ન હતા, બલસંપન્ન હતા, અર્થાત્ સંહનનથી ઉત્પન્ન થયેલા પરાક્રમવાળા હતા જે આઠ કર્મોનો નાશ કરે તેને વિનય કહે છે, તે અભ્યુત્થાનાદિ ગુરુસેવાના લક્ષણ યુક્ત વિનયસંપન્ન હતા. લાઘવસંપન્ન હતા અર્થાત્ દ્રવ્યથી થોડી ઉપધિવાળા હતા અને ભાવથી ત્રણ ગૌરવથી રહિત હતા. ઇન્દ્રિયોના સૌંદર્યથી તથા તપ વગેરેના પ્રભાવથી પ્રતિભાશાળી હતા. અંતર આત્મપ્રભાવ અને બહાર શરીરપ્રભાવથી દેદીપ્યમાન હોવાના કારણે તેજસ્વી હતા. સર્વે પ્રાણીઓના કલ્યાણકારક તથા નિર્દોષ વચન યુક્ત હોવાથી આદેય (ગ્રાહ્ય) વચનવાળા હતા. તપ તથા સંયમની આરાધના કરવાથી

स्पर्शः, इत्यर्थः, 'प्रासादीय' इत्यादिपदानां व्याख्या पूर्वोक्तरीत्याऽवगन्तव्या। एवम्भूतः पृथिवीशिलापट्टक आसीत् ॥ २ ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे णामं अणगारे जाइसंपन्ने जहा केसी जाव पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे (गामाणुगाम दुइज्जमाणे) जेणेव रायगिहे जाव अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेण जाव विहरइ। परिसा णिग्गया धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया ॥ ३ ॥

छाया–तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तेवासी आर्यसुधर्मा नामाऽनगारो जातिसम्पन्नो यथा केशी, यावत् पञ्चभिरनगारशतैः सार्द्धं संपरिवृतः पूर्वानुपूर्व्या चरन् (ग्रामानुग्राम द्रवन्) यत्रैव राजगृह नगरं यावत् यथाप्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य संयमेन यावद् विहरति। परिषन्निर्गता। धर्मः कथितः। परिषत् प्रतिगता ॥ ३ ॥

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि–तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तेवासी=शिष्यः, आर्यसुधर्मा (स्वामी) नामाऽनगारः विहरतीत्यन्वयः। अथ तद्वर्णनमाह–जातिसम्पन्न'=सुविशुद्धमातृवंशयुक्तः, 'यथाकेशी' ति–केशिनामा श्रमणो गणधरो यथाऽऽसीदित्यर्थः, अत्र यावच्छब्देनैव केशिविशेषणानि संगृह्यन्ते–तथाहि–'कुलसंपन्ने, बलसंपन्ने, विणयसंपन्ने, लाघव

के समान स्पर्शवाला, उचित प्रमाण से लम्बा चौडा आसन के आकार-सा बना हुआ पृथ्वीशिलापट्ट था, जो दर्शनीय अभिरूप प्रतिरूप था ॥२॥

'तेण कालेण' इत्यादि। उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामीके अन्तेवासी (शिष्य) श्री आर्यसुधर्मास्वामी विचरते थे। उनका वर्णन केशी श्रमणके समान इस प्रकार है—

माताका वंश विशुद्ध होनेसे जातिसंपन्न थे। पैतृक पक्ष निर्मल

પ્રમાણની લંબાઈ પહોળાઈ વાળુ આસનના આકાર જેવું પૃથ્વીશિલાપટ્ટ હતુ જે દર્શનીય અભિરૂપ અને પ્રતિરૂપ હતુ (૨)

'तेण कालेण' ઇત્યાદિ તે કાળ અને તે સમયમાં શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર સ્વામીના અન્તેવાસી શ્રી આર્યસુધર્મા સ્વામી વિચારી રહ્યા હતા તેમનું વર્ણન કેશી શ્રમણ સમાન આ પ્રકાર છે –

માતાનું કુળ વિશુદ્ધ હોવાથી જાતિસંપન્ન હતા, પિતાનો પક્ષ શુદ્ધ હોવાથી

संपन्ने, ओयसी, तेयसी, वयसी, जससी, जियकोहमाणमायालोहे, जीवियासा-मरणभयविप्पमुके, तवप्पहाणे, गुणप्पहाणे, करणचरणप्पहाणे, निग्गहप्पहाणे, घोरबंभचेरवासी, उच्छूढसरीरे, चोद्दसपुव्वी, चउनाणोवगए' इति । अस्य च्छाया—" कुलसम्पन्नः, बलसम्पन्नः, विनयसम्पन्नः, लाघवसम्पन्नः, ओजस्वी, तेजस्वी, वचस्वी, यशस्वी, जितक्रोधमानमायालोभः, जीविताशामरणभयविप्रमुक्तः, तपःप्रधानः, गुणप्रधानः, करणचरणप्रधानः, निग्रहप्रधानः, घोरब्रह्मचर्यवासी, उच्छूढशरीरः, चतुर्दशपूर्वी, चतुर्ज्ञानोपगतः " । इति,

'कुले' ति–कुल=पैतृक' पक्षस्तत्सम्पन्नः, उत्तमपैतृकपक्षयुक्तः, 'बले' ति–बलेन=संहननसमुत्थेन पराक्रमेण युक्तः, वज्र–ऋषभ–नाराच संहननधारीत्यर्थः, 'विनये' ति–विनयति=नाशयति अष्टमकारक कर्म यः स विनयः=अभ्युत्थानादि-गुरुसेवालक्षणस्तत्सम्पन्नः । 'लाघवे' ति–लाघवं द्रव्यतः स्वल्पोपधित्वम्, भावतो गौरवत्रयनिवारण, तत्सम्पन्न. । 'ओजस्वी 'ति–ओजः=सकलेन्द्रियाणा-पाटव तपःप्रभृतिप्रभावात् समुत्थतेजो वा, तद्वान्, 'तेजस्वी' ति–तेजः=अन्त-र्बहिर्देदीप्यमानत्वम् तेजोलेश्यादि वा, तद्वान्, 'वचस्वी' ति–वचः=आदेयं वचनं सकलप्राणिगणहितसंपादक निरवद्यवचन, तद्वान्, 'यशस्वी' ति–यशः=तप.

(शुद्ध) होनेसे कुलसंपन्न थे । बलसंपन्न अर्थात् संहनन से उत्पन्न पराक्रमसे युक्त थे । वज्रऋषभनाराचसंहननके धारी थे । जो आठ कर्मोंका नाश करे उसको विनय कहते हैं, वह अभ्युत्थानादि गुरु–सेवा स्वरूप है, उससे युक्त थे । लाघवसंपन्न थे अर्थात् द्रव्यसे अल्प उपधि वाले थे और भावसे गौरव–(गारव)–त्रय रहित थे । इन्द्रि-योंके सौन्दर्य और तप आदि के प्रभावसे ओजस्वी–प्रतिभाशाली थे । अन्तर 'आत्मप्रभाव' और बहार 'शरीर प्रभाव' से देदीप्यमान होने के कारण तेजस्वी थे । सब प्राणियोंके हितकारक और निर-वद्य (निर्दोष) वचन युक्त होनेसे आदेय (ग्राह्य) वचन वाले थे ।

કુલસંપન્ન હતા, બલસંપન્ન હતા, અર્થાત્ સંહનનથી ઉત્પન્ન થયેલા પરાક્રમવાળા હતા જે આઠ કર્મોનો નાશ કરે તેને વિનય કહે છે, તે અભ્યુત્થાનાદિ ગુરુસેવાના લક્ષણ યુક્ત વિનયસંપન્ન હતા. લાઘવસંપન્ન હતા અર્થાત્ દ્રવ્યથી થોડી ઉપાધિવાળા હતા અને ભાવથી ત્રણ ગૌરવથી રહિત હતા ઇન્દ્રિયોના સૌંદર્યથી તથા તપ વગેરેના પ્રભાવથી પ્રતિભાશાળી હતા અંતર આત્મપ્રભાવ અને બહાર શરીરપ્રભાવથી દેદીપ્યમાન હોવાના કારણે તેજસ્વી હતા સર્વે પ્રાણીઓના કલ્યાણકારક તથા નિર્દોષ વચન યુક્ત હોવાથી આદેય (ગ્રાહ્ય) વચનવાળા હતા તપ તથા સંયમની આરાધના કરવાથી

सयमाराधनख्यातिस्तद्वान्, 'जिते'-त्यादि-उदयावलिकामविष्टक्रोधादीनां विजयो=विफलीकरण, तद्वान्, 'जीविते'-त्यादि-जीवित=प्राणधारण तस्याशा, मरण=मृत्युस्तस्माद्भय=त्रासः, ताभ्या विमुक्तः=वर्जितः, 'तपःप्रधान' इति-तपति=दहति ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधकर्माणि इति तपः=चतुर्थ-षष्ठा-ऽष्टमभक्तादिलक्षण तत्प्रधानः शेषमुनिजनापेक्षया विविधप्रकारक-तपोयुक्तः पारणादौ नानाविधाभिग्रहयुक्तः। 'गुणप्रधान' इति-गुण'=ज्ञानादिरत्नत्रय क्षान्त्यादिर्वा तत्प्रधान., उक्तञ्च-

"परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमतुत्थचित्तता।
विद्या विनोदोऽनुदिन न दीनता, गुणा इमे सत्त्ववता भवन्ति ॥१॥" इति ॥

तप और सयमके आराधनसे प्रसिद्धि प्राप्ति होनेके कारण यशस्वी थे। उदयावलिकामें आनेवाले क्रोध आदिको निष्फल करनेके कारण कषायोंके विजेता थे। जीनेकी आशा और मृत्युके भयसे रहित थे। अन्य मुनियोंकी अपेक्षा चतुर्थ भक्त आदि तप अधिक करनेसे, और पारणा आदिमें अनेक प्रकारके कठिन अभिग्रह करनेसे, 'तपःप्रधान' थे, सम्यग् ज्ञान आदि रत्नत्रय, और क्षान्ति आदि दसविध यति-धर्मसे युक्त होनेके कारण 'गुणप्रधान' थे। कहा भी है:-

"परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमतुत्थचितता।
विद्या विनोदोऽनुदिने न दीनता, गुणा इमे सत्त्ववता भवन्ति ॥" इति ॥

अर्थात्-परोपकारमें आनन्द मानना, निःस्पृहता रखना, विनय, सत्य, प्रशान्त भाव, विद्या विनोद, मध्यस्थ भाव और दीनताका त्याग, ये गुण महापुरुषोंमें होते हैं ॥

પ્રસિદ્ધિપ્રાપ્ત હોવાને કારણે યશસ્વી હતા, ઉદયાવલિકા એટલે કર્મફળની પરપરામા આવવા વાળા ક્રોધાદિને જીતવાથી કષાયોના વિજેતા હતા જીવવાની આશા તથા મૃત્યુના ભય રહિત હતા

બીજા મુનિઓની અપેક્ષાએ ચતુર્થ ભક્ત (ઉપવાસ) આદિ તપ બહુ કરવાથી તથા પારણા આદિમા અનેક જાતના કઠિન અભિગ્રહ કરવાથી 'તપપ્રધાન' હતા

સમ્યક્ જ્ઞાન આદિ રત્નત્રય તથા શાન્તિ (ક્ષમા) આદિ દશવિધ યતિધર્મથી યુક્ત હોવાથી 'ગુણપ્રધાન' હતા કહ્યુ પણ છે કે -

"परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमतुत्थचित्तता।
विद्या विनोदोऽनुदिन न दीनता, गुणा इमे सत्त्ववता भवन्ति ॥" इति ॥

અર્થાત્-પરોપકારમા આનદ માનવો, નિસ્પૃહતા રાખવી, વિનય, સત્ય પ્રશાંત

'करणे'ति-करणसप्तति., चरणसप्ततिः, तत्प्रधानः, 'निग्रहप्रधान' इति इन्द्रियनोइन्द्रियनिरोधकरणेन, स्वात्मनोऽपूर्ववीर्यपरिस्फोटन, तत्प्रधानः, 'घोरब्रह्मे'-त्यादि-ब्रह्म=कामपरिसेवनत्यागस्तत्र चरण ब्रह्मचर्य, घोर च तद् ब्रह्मचर्य घोरब्रह्मचर्यम् अल्पसत्त्वेन दुरनुष्ठेय, तत्र वस्तु शीलमस्येति घोरब्रह्मचर्यवासी। 'उच्छूढशरीर' इति-उच्छूढमुज्झितमिव सस्कारपरित्यागाच्छरीर येन स उच्छूढशरीरः, सर्वथा शरीरसस्कारवर्जितः। 'चतुर्दशपूर्वी=चतुर्दशपूर्वधारी. चतुर्ज्ञानोपगतः=केवलवर्जितमत्यादिचतुर्ज्ञानवान एतादृशकेशिश्रमणगणधरसदृशः पञ्चमगणधरः श्रीसुधर्मस्वामी पञ्चभिरनगारशतैः पञ्चशतसख्यकमुनिभिः सार्द्ध=सह सपरिवृतः = पञ्चशतमुनिपरिवारयुक्तः, 'पूर्वानुपूर्व्या' – तीर्थकरोक्तपरम्परया चरन्=विहरन्, ('ग्रामानुग्रामम्' एकस्मात् ग्रामात् ग्रामान्तर द्रवन्=गच्छन् यान-वाहनादि विना पदविहारेण ग्रामान्तरमपरित्यजन्, अनेनाऽप्रतिबद्धविहारिता सूचिता) 'जेणेव' इति-यस्मिन्नेव क्षेत्रविभागे राजगृहनामक नगरमस्ति गुणशिलक नाम चैत्य च तस्मिन्नेव स्थाने उपागच्छति, उपागत्य

तथा करण चरणके धारी थे, इन्द्रिय नोइन्द्रिय (मन) के दमन करने से आत्माका अपूर्व वीर्य स्फोरन करनेके कारण 'निग्रहप्रधान' थे। अल्पसत्ववालो से दुश्चरणीय ब्रह्मचर्यके धारक होनेसे 'घोरब्रह्मचारी' थे। शृङ्गारके लिए सर्वथा शरीरसस्काररहित होनेके कारण 'उच्छूढशरीर' (शरीरममत्वरहित)थे। तथा चतुर्दश पूर्व और चार ज्ञानके धारी थे। इस प्रकार केशी श्रमण गणधर के समान गुणके धारण करनेवाले चार ज्ञान और चौदह पूर्वके धारी पॅचम गणधर श्रीसुधर्मा स्वामी पाँच सौ मुनियोके परिवार सहित तीर्थकरोंकी मर्यादाका पालन करते हुए और ग्रामानुग्राम विचरते हुए, जहाँ राजगृह

ભાવ, વિદ્યા વિનોદ, મધ્યસ્થભાવ અને દીનતાનો ત્યાગ એ ગુણ મહાપુરૂષોમા હોય છે

તથા તેઓ કરણ ચરણના ધારણ કરનાવાળા હતા, ઇન્દ્રિયોને તથા નોઇન્દ્રિય (મન) ને દમન કરવાથી આત્માના અપૂર્વ વીર્ય પ્રગટ કરવાના કારણે 'નિગ્રહપ્રધાન' હતા અલ્પસત્ત્વવાળાથી મુશ્કેલીએ પળાય એવા બ્રહ્મચર્યને ધારણ કરવાથી 'ઘોર બ્રહ્મચારી' હતા શ્રૃગાર માટે શરીરને સર્વથા સસ્કારરહિત રાખતા હોવાથી ઉચ્છૂઢશરીર (શરીરમમત્વ રહિત) હતા

"તથા ચતુર્દશપૂર્વ અને ચાર જ્ઞાનના ધારી હતા એ પ્રમાણે કેશી શ્રમણ ગણધરની સમાન ગુણને ધારણ કરવાવાળા ચાર જ્ઞાન અને ચૌ૦ પૂર્વના ધારી પાચ ગણધર સુધર્મા સ્વામી પાચસો મુનિઓના પરિવાર સાથે તીર્થકરની મર્યાદાનુ પાલન કરતા થકા અને ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતા થકા જ્યા રાજગૃહ નગર છે, જ્યા ગુણશિલક

तस्य 'जम्बू' इति नाम कृतम्, स पञ्चमगणधरसुधर्मस्वामिनिकटे धर्मश्रवणात् प्रतिपन्नशीलसम्यक्त्वोऽपि पित्रोराग्रहवशादष्टानामिभ्यश्रेष्ठिनामष्टौ कन्याः परिणीतवान्, किन्तु कन्यानां हावभावादिभिर्न व्यामोहितः, यतः—

"सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्यां, भवाब्धिस्तीर्यते सुखम् ।
ये दधानो मुनिर्जम्बूः, स्त्री नदीषु कथं ब्रुडेत् ॥ १ ॥" इति ॥

ततो रात्रौ ताः प्रतिबोधयन् चौर्यार्थमागतं चतुःशतनवनवति-तस्करपरिवृतं 'प्रभव'-नामानं तस्कराधिपतिं प्राबोधयत्, ततः प्रातरेव पञ्चशततस्कर

एक ऋद्धिशाली देवने उनकी कुक्षिमें जन्म लिया, माताने स्वप्नमें जम्बू वृक्षको देखा इस लिए उनका नाम जम्बू रखा था। उस जम्बू कुमारने पञ्चम गणधर श्री सुधर्मास्वामी के पास धर्म सुनकर सम्यक्त्व और शीलव्रत धारण किया। पश्चात् सम्यक्त्व और शीलव्रत धारी होकर भी मातापिताके आग्रहसे आठ इभ्य सेठोंकी आठ कन्याओंके साथ विवाह किया, फिरभी ये कन्याओंके हाव - भाव आदिमें मोहित नहीं हुए। कहा भी है :—

"सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्यां, भवाब्धिस्तीर्यते सुखम् ।
ये दधानो मुनिर्जम्बूः, स्त्रीनदीषु कथं ब्रुडेत् ॥ १ ॥ इति"

अर्थात्-सम्यक्त्व और शीलरूप तुम्बोंके द्वारा भवसमुद्र सुखसे तैरा जाता है। उन्हीं सम्यक्त्व और शीलको धारण करने वाले जम्बू अनगार स्त्रीरूप नदियों में कैसे डूब सकते हैं? अर्थात् कभी नहीं ॥१॥

विवाहके बाद रात्रिमें उन आठों स्त्रियोंको प्रतिबोध देते हुए

તેણીની કૂખે જન્મ લીધો. માતાએ સ્વપ્નામાં જમ્બૂ વૃક્ષને જોયું તેથી તેનું નામ જમ્બૂ પાડયું હતું. તે જમ્બૂ કુમારે પંચમ ગણધર શ્રી સુધર્મા સ્વામીની પાસે ધર્મનું શ્રવણ કરી સમ્યક્ત્વ તથા શીલવ્રત ધારણ કર્યું. સમ્યક્ત્વ તથા શીલવ્રત ધારી હોવા છતા પણ માતાપિતાના આગ્રહથી ઇભ્ય શેઠોની આઠ કન્યાઓ સાથે લગ્ન કર્યું પણ તે આઠે કન્યાઓની હાવ-ભાવ આદિ ચેષ્ટામા મોહિત થતા નહોતા. એમ કહ્યું છે કે—

सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्यां भवाब्धिस्तीर्यते सुखम्
ये दधानो मुनिर्जम्बूः, स्त्रीनदीषु कथं ब्रुडेत् ॥ १ ॥ इति ॥

અર્થાત્ સમ્યક્ત્વ તથા શીલરૂપ તુબડીઓ સંસાર સાગર સુખેથી તરી જવાય છે તેજ સમ્યક્ત્વ તથા શીલને ધારણ કરી જમ્બૂ સ્વામી સ્ત્રી રૂપી નદીઓમા કેમ ડૂબી શકે? અર્થાત્ કદી ન ડૂબે (૧)

વિવાહ પછી રાત્રમા તે આઠે સ્ત્રીઓને ઉપદેશ આપતા જમ્બૂકુમારે ચોરી

भार्याष्टकतज्जनकजननी-स्वजनकजननीभिः सह स्वय पञ्चशतसप्तविंशतितमो यौतुकागतकनकनवनवतिकोटीः स्वगृहसम्पत्तिं च परित्यज्य प्राव्राजीत् । क्रमेण केवली जातः, षोडशवर्षाणि गृहस्थत्वे, विंशतिवर्षाणि छद्मस्थावस्थाया, चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि केवलिपर्याये व्यतीतानि, एवमशीतिवर्षाणि सर्वायुः परिपाल्य श्रीप्रभव स्वपदे सम्थाप्य सिद्धिमगमत् । उक्तञ्च-

(वसन्ततिलकावृत्तम्)

" जम्बूसमो भविसमुद्धरणैकचित्तो,
भूतो न कोऽपि भविता धरणीतलेऽस्मिन ।
यस्तस्करानपि चकार शिवाध्वनीनान्
साधून् प्रियाऽष्टकपिताजननीश्च धीरः ॥ १ ॥

जम्बू कुमारने चोरीके लिए आये हुए 'प्रभव'को चार सौ निन्यानवे (४९९) चोरोंके साथ प्रतिबोधित किया । उसके पश्चात् प्रातःकाल ही जम्बू कुमार पाँचसौ चोर, और अपनी आठो भार्याएँ, उनके मातापिता और अपने मातापिता इस तरह पाँचसौ सत्ताइस (५२७) जनोंने दीक्षा ग्रहण की । जम्बूकुमारने अपने दहेजमे आई हुई निन्यानवे (९९) कोटि स्वर्ण मोहरोंको तथा घरकी समस्त सम्पत्ति को त्याग कर दीक्षित हुए, और क्रमसे तप सयम आराधन करके केवल ज्ञान पाये । वे सोलह वर्ष गृहस्थावासमें रहे, बीस वर्ष छद्मस्थ रहे और ४४ चोवालीस वर्ष केवलपर्यायमे रहे । इस प्रकार ८० अस्सी वरसकी सर्व आयु व्यतीत करके प्रभव स्वामी को अपने पद पर स्थापितकर सिद्धपदको पाये । कहा भी है-

કરવા આવેલા પ્રભવને ચા ર સો નવાણુ (૪૯૯) ચોરોની સાથે ઉપદેશ આપ્યો, અને પ્રતિબોધિત કર્યા તે પછી સવારમાજ પાચસો ચોર, પોતાની આઠ સ્ત્રીઓ તથા તેમના માતા પિતા તથા પોતાના માતા પિતા, અને જ બુ પોતે એવી રીતે પાચસો સત્તાવીશ (૫૨૭) જણોએ દીક્ષા ગ્રહણ કરી જમ્બૂ કુમાર પોતાના દાયજામા આવેલી નવાણુ (૯૯) કરોડ સોના મહોરો તથા ઘરની સમસ્ત સ પત્તિનો ત્યાગ કરી દીક્ષિત થયા અને ક્રમથી તપ સયમ આરાધન કરીને કેવળ જ્ઞાન મેળવ્યુ તેઓ સોળ વરસ ગૃહસ્થાશ્રમમા રહ્યા વીશ વરસ છદ્મસ્થ રહયા તથા ચુમાલીસ (૪૪) વરસ કેવલ પર્યાયમા રહયા આમ એસી (૮૦) વરસનું સર્વ આયુષ્ય પૂર્ણ કરીને પ્રભવ સ્વામીને પોતાના પદ પર સ્થાપિત કરી પોતે સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત કર્યુ કહ્યુ છે કે –

स्य 'जम्बू' इति नाम कृतम्, स पञ्चमगणधरसुधर्मस्वामिनिकटे धर्मश्रवणात् प्रतिपन्नशीलसम्यक्त्वोऽपि पित्रोराग्रहवशादष्टानामिभ्यश्रेष्ठिनामष्टौ कन्याः परिणीतवान्, किन्तु कन्याना हावभावादिभिर्न व्यामोहितः, यतः—

"सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्या, भवाब्धिस्तीर्यते सुखम् ।
ये दधानो मुनिर्जम्बूः, स्त्री नदीषु कथ ब्रुडेत् ॥ १ ॥" इति ॥

ततो रात्रौ ताः प्रतिबोधयन् चौर्यार्थमागत चतुःशतनवनवति-तस्कर परिवृत 'प्रभव'-नामान तस्कराधिपतिं प्राबोधयत्, तत प्रातरेव पञ्चशततस्कर

एक ऋद्धिशाली देवने उनकी कुक्षिमे जन्म लिया, माताने स्वप्नमें जम्बू वृक्षको देखा इस लिए उनका नाम जम्बू रखा था। उस जम्बू कुमारने पञ्चम गणधर श्री सुधर्मास्वामी के पास धर्म सुनकर सम्यक्त्व और शीलव्रत धारण किया। पश्चात् सम्यक्त्व और शीलव्रत धारी होकर भी मातापिताके आग्रहसे आठ इभ्य सेठोंकी आठ कन्याओंके साथ विवाह किया, फिरभी वे कन्याओंके हाव - भाव आदिमे मोहित नहीं हुए। कहा भी है :—

"सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्या, भवाब्धिस्तीर्यते सुखम् ।
ये दधानो मुनिर्जम्बू, स्त्रीनदीषु कथ ब्रुडेत् ॥ १ ॥ इति"

अर्थात्-सम्यक्त्व और शीलरूप तुम्बोंके द्वारा भवसमुद्र सुखसे तैरा जाता है। उन्ही सम्यक्त्व और शीलको धारण करने वाले जम्बू अनगार स्त्रीरूप नदियों मे कैसे डूब सकते है? अर्थात् कभी नहीं ॥१॥

विवाहके बाद रात्रिमे उन आठों स्त्रियोंको प्रतिबोध देते हुए

તેણીની કૂખે જન્મ લીધો માતાએ સ્વપ્નામા જબૂ વૃક્ષને જોયુ તેથી તેનુ નામ જબૂ પાડ્યુ હતુ તે જબૂ કુમારે પચમ ગણધર શ્રી સુધર્મા સ્વામીની પાસે ધર્મનુ શ્રવણ કરી સમ્યકૃત્વ તથા શીલવ્રત ધારણ કર્યું સમ્યક્ત્વ તથા શીલવ્રત ધારી હોવા છતા પણ માતાપિતાના આગ્રહથી ઇભ્ય શેઠો ની આઠ કન્યાઓ સાથે લગ્ન કર્યું પણ તે આઠે કન્યાઓની હાવ-ભાવ આદિ ચેષ્ટામા મોહિત થયા નહોતા એમ કહ્યુ છે કે—

सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्या भवाब्धिस्तीर्यते सुखम्
ये दधानो मुनिर्जम्बू, स्त्रीनदीषु कथ ब्रुडेत ॥ १ ॥ इति ॥

અર્થાત્ સમ્યક્ત્વ તથા શીલરૂપ તુબડીઓ સમાન સાગર સુખેથી તરી જવાય છે તેજ સમ્યક્ત્વ તથા શીલને ધારણ કરી જબૂ સ્વામી સ્ત્રી રૂપી નદીઓમા કેમ ડૂબી શકે? અર્થાત્ કદી ન ડૂબે (૧)

વિવાહ પછી રાતમા તે આઠે સ્ત્રીઓને ઉપદેશ આપતા જબૂકુમારે ચોરી

भार्याष्टकतज्जनकजननी–स्वजनकजननीभिः सह स्वय पञ्चशतसप्तविंशतितमो यौतुकागतकनकनवनवतिकोटीः स्वगृहसम्पत्तिं च परित्यज्य प्राव्राजीत् । क्रमेण केवली जातः, षोडशवर्षाणि गृहस्थत्वे, विंशतिवर्षाणि छद्मस्थावस्थायां, चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि केवलिपर्याये व्यतीतानि, एवमशीतिवर्षाणि सर्वायुः परिपाल्य श्रीप्रभवं स्वपदे संस्थाप्य सिद्धिमगमत् । उक्तञ्च–

(वसन्ततिलकावृत्तम्)

"जम्बूसमो भविसमुद्धरणैकचित्तो-,
भूतो न कोऽपि भविता धरणीतलेऽस्मिन् ।
यस्तस्करानपि चकार शिवाध्वनीनान्
माधून् प्रियाऽष्टकपिताजननीश्च धीरः ॥ १ ॥

जम्बू कुमारने चोरीके लिए आये हुए 'प्रभव'को चार सौ निन्यानवे (४९९) चोरोके साथ प्रतिबोधित किया। उसके पश्चात् प्रातःकाल ही जम्बू कुमार पाँचसौ चोर, और अपनी आठो भार्याएँ, उनके मातापिता और अपने मातापिता इस तरह पाँचसौ सत्ताइस (५२७) जनोंने दीक्षा ग्रहण की। जम्बूकुमारने अपने दहेजमे आई हुई निन्यानवे (९९) कोटि स्वर्ण मोहरोंको तथा घरकी समस्त सम्पत्तिको त्याग कर दीक्षित हुए, और क्रमसे तप सयम आराधन करके केवल ज्ञान पाये। वे सोलह वर्ष गृहस्थावासमें रहे, बीस वर्ष छद्मस्थ रहे और ४४ चोवालीस वर्ष केवलपर्यायमे रहे। इस प्रकार ८० अस्सी वरसकी सर्व आयु व्यतीत करके प्रभव स्वामी को अपने पद पर स्थापितकर सिद्धपदको पाये। कहा भी है–

કરવા આવેલા પ્રભવને ચાર સો નવાણુ (૪૯૯) ચોરોની સાથે ઉપદેશ આપ્યો, અને પ્રતિબોધિત કર્યા તે પછી સવારમાજ પાચસો ચોર, પોતાની આઠ સ્ત્રીઓ તથા તેમના માતા પિતા તથા પોતાના માતા પિતા, અને જમ્બૂ પોતે એવી રીતે પાચસો સત્તાવીશ (૫૨૭) જણોએ દીક્ષા ગ્રહણ કરી જમ્બૂ કુમાર પોતાના દાયજામા આવેલી નવાણુ (૯૯) કરોડ સોના મહોરો તથા ઘરની સમસ્ત સપત્તિનો ત્યાગ કરી દીક્ષિત થયા અને ક્રમથી તપ સયમ આરાધન કરીને કેવળ જ્ઞાન મેળવ્યુ તેઓ સોળ વરસ ગૃહસ્થાશ્રમમા રહ્યા વીશ વરસ છદ્મસ્થ રહયા તથા ચુમાલીસ (૪૪) વરસ કેવલ પર્યાયમા રહયા આમ એસી (૮૦) વરસનું સર્વ આયુષ્ય પૂર્ણ કરીને પ્રભવ સ્વામીને પોતાના પદ પર સ્થાપિત કરી પોતે સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત કર્યું કહ્યુ છે કે –

संक्षिप्ता=शरीरान्तर्गतत्वेन सङ्कुचिता विपुला=विशाला अनेकयोजनपरिमितक्षेत्र गतवस्तुभस्मीकरणसमर्थाऽपि, तेजोलेश्या=विशिष्टतपोजनितलब्धिविशेषसमुत्पन्न-तेजोज्वाला यस्य स संक्षिप्तविपुलतेजोलेश्यः=शरीरान्तर्लीनतेजोलेश्यावान्। एवं गुणगणसमेतो 'जम्बूस्वामी' आर्यसुधर्मणोऽनगारस्य अदूरसामन्ते-दूर=विप्रकर्ष., सामन्त=समीप तयोरभावोऽदूरसामन्त तस्मिन् नातिदूरे नाति-निकटे, उचिते देशे इत्यर्थः। 'उड्ढंजाणू' इति-ऊर्ध्वंजानुः-ऊर्ध्वे जानुनी यस्य स तथा, जाव-(यावत्)-शब्देन 'अहोसिरे, कयंजलिपुडे, उक्कुडासणे, झाणकोट्ठोवगए, संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे' इत्येषां सङ्ग्रहः। 'अहोसिरे' इति-अधःशिराः=नतमस्तकः, इतस्ततश्चक्षुर्व्यापारं निवर्त्य नियमितभूमिभागनि हितदृष्टिरित्यर्थः। 'कयंजलिपुडे' इति कृताञ्जलिपुटः=मस्तकन्यस्तसम्पुटीकृत-हस्त, 'उक्कुडासणे' इति-उत्कुटासनः उत्कुट=भूमावलग्नपुतम् आसनं यस्य स तथोक्तः भूप्रदेशास्पृष्टपुततयोपविष्ट इत्यर्थः। ध्यानकोष्ठोपगतः-ध्यायते=चिन्त्यतेऽनेनेति ध्यानम्, एकस्मिन् वस्तुनि तदेकाग्रतया चित्तस्थापनं मित्यर्थः, ध्यानं कोष्ठ इव ध्यानकोष्ठस्तमुपगत., यथा कोष्ठगत धान्यं विकीर्णं न भवति तथैव ध्यानत इन्द्रियान्तःकरणवृत्तयो बहिर्न यान्तीति भाव', निय

और परीषहोपसर्ग-कषाय-रूप शत्रुके विजय करनेमें भयानक अर्थात् वीर थे। घोरव्रतवाले थे अर्थात् कठिन व्रतके पालक थे।

तपके प्रभावसे उत्पन्न होने वाली और अनेक योजन विस्तृत (लम्बे-चौडे) क्षेत्रमें रही हुई वस्तुको भस्म करने वाली अन्तर्ज्वाला रूप लब्धिको 'तेजोलेश्या' कहते है, उसको संक्षिप्त करनेवाले, अर्थात् गुप्तरूपसे रखनेवाले थे। इस तरह गुणके भण्डार श्री जम्बू अनगार श्री आर्यसुधर्मा स्वामी के पास ऊर्ध्वजानु किये हुए, इधर उधर न देखते हुए, दोनों हाथ जोडकर मस्तक झुकाये, उत्कुडासनसे बैठे

ભયાનક અર્થાત્ વીર (બહાદુર) હતા ઉગ્ર વ્રતધારી હતા અર્થાત્ કઠણ વ્રતનું પાલન કરતા હતા

તપના પ્રભાવથી ઉત્પન્ન થવાવાળી અને અનેક યોજન વિસ્તારના ક્ષેત્રમા રહેલી વસ્તુને ભસ્મ કરવાવાળી અંતર્જ્વાલા રૂપ લબ્ધિને 'તેજોલેશ્યા' કહે છે તેને સંક્ષિપ્ત કરવાવાળા અર્થાત્ ગુપ્તરૂપમા રાખવાવાળા હતા આવી રીતે ગુણના ભંડાર શ્રી જબૂ સ્વામીએ શ્રી આર્યસુધર્મા સ્વામીની પાસે ઊર્ધ્વજાનુ રહીને આજુ-બાજુએ નજર ન નાખતા બે હાથ જોડીને માથુ નમાવી ઉકુડાસને બેઠેલા મનને

न्नितचित्तवृत्तिमानित्यर्थः । 'संजमेण' इति-संयमेन सप्तदशविधेन, 'तवसे'ति-तपसा=द्वादशविधेन आत्मानं भावयन् विहरति=तिष्ठति. इति ॥ ४ ॥

मूलम्-तएणं से भगवं जम्बू जायसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-उवंगाणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं एवं उवंगाणं पंच वग्गा पण्णत्ता, तं जहा-निरयावलियाओ १, कप्पवडिंसियाओ २, पुप्फियाओ ३, पुप्फचूलियाओ ४, वण्हिदसाओ ५ ॥ ५ ॥

छाया---ततः खलु भदन्त ! स भगवान् जम्बूः जातश्रद्धः यावत् पर्युपासीनः एवमवादीत्-उपाङ्गानां भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता यावत्सम्प्राप्तेन एवम् उपाङ्गानां पञ्च वर्गाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-निरयावलिकाः (१) कल्पावतंसिकाः (२) पुष्पिताः (३) पुष्पचूलिकाः (४) वह्निदशाः (५) ॥ ५ ॥

टीका-'तएणसे' इत्यादि-ततः खलु=निश्चयेन सः=असौ भगवान्=अपूर्वसम्यक्त्वशीलसमाराधनयशोवान् जम्बूः-जातश्रद्धः=उत्पन्नप्रश्नेच्छः, याव-च्छब्देन-जातसंशयः=उद्भूतसंदेहः, जातकुतूहलः=उत्पन्नौत्सुक्यः, इति संग्रहो बोध्यः, श्रीसुधर्मस्वामिनमुपागत्य सविधिवन्दनं विधायाभिमुखः प्राञ्जलिः पर्यु पासीनः=सेवमानः एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=अवोचत् अप्राक्षीदित्यर्थः-

हुए ध्यानरूपी कोठेमें स्थित, अर्थात् चित्तवृत्तिको एकाग्र करके तप और संयमसे आत्माको भावित करते हुए बैठे थे ॥ ४ ॥

'तएणसे' इत्यादि । उसके बाद श्री आर्य जम्बू अनगार जो जिज्ञासु थे, जिनमे श्रद्धा थी और जिन्हे जिज्ञासाके कारण कौतूहल (उत्सुकता) हुआ था । श्रद्धा उत्पन्न हुई, संशय उत्पन्न हुआ और कौतूहल हुआ । जिन्हें भली भांति श्रद्धा थी, भली भांति संशय था और भली

ध्यानरूपी कोठामां स्थिर रहीने अर्थात् चित्तवृत्तिने એકાગ્ર કરીને તપ તથા સંયમથી આત્માને ભાવિત કરતા થકા બેઠા હતા ॥ ૪ ॥

'तएण से' ઇત્યાદિ ત્યાર પછી શ્રી આર્ય જમ્બૂસ્વામી કે જે જીજ્ઞાસુ હતા, જેને સારી રીતે શ્રદ્ધા હતી, સંશય પણ સારી રીતે હતો, અને કુતૂહલ પણ સારી રીતે

हे भदन्त !=हे भगवन् ! इद गुरोः सम्बोधनम्, उपाङ्गाना श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् आदिकरेण, तीर्थकरेण, स्वय सबुद्धेन पुरुषोत्तमेन, पुरुषसिंहेन, पुरुषवरपुण्डरीकेन, पुरुषवरगन्धहस्तिना, लोकोत्तमेन, लोकनाथेन,

---

भाँति कौतूहल था, खडे होकर जहाँ श्री आर्यसुधर्मा स्वामी थे, वहाँ गये। वहाँ जाकर श्री आर्यसुधर्माको अपने दक्षिण तरफसे अजलिपुट (दोनों हाथ) को घुमानेरूप तीनबार प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दना की, तत्पश्चात् श्री आर्य सुधर्मास्वामी से न अधिक दूर और न अधिक पास-निकट सेवामे उपस्थित हो युगलकर जोड विधिपूर्वक शुश्रूषा करते हुए, इस प्रकार बोले-

हे भगवन् ! - श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने जो स्व-शासनकी अपेक्षासे धर्मकी आदि करनेवाले, जिससे ससार-सागर तैरा जाय उसे तीर्थ कहते हैं, वे तीर्थ चार प्रकार के हैं—साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका, ऐसे चतुर्विध सघ रूप तीर्थकी स्थापना करने वाले स्वय बोधको पाने वाले, ज्ञानादि अनन्त गुणोके धारक होनेसे पुरुषोत्तम। राग द्वेषादि शत्रुओंके पराजय करनेमे अलौकिक पराक्रमशाली होनेसे पुरुषोमे केशरीसिंहके समान। समस्त अशुभ रूप मलसे रहित होनेके कारण विशुद्ध श्वेत कमल के समान निर्मल। अथवा-जैसे कीचडसे उत्पन्न और जलके योगसे बढा हुआ होकर

વધુ તુ તે ઉભા થઇને જ્યા શ્રી આર્ય સુધર્મા સ્વામી હતા ત્યા ગયા ત્યા જઇને શ્રી આર્ય સુધર્માને પોતાની જમણી બાજુએથી અજલિપુટ (બે હાથ) ફેરવવા રૂપ કરી ત્રણ વાર પ્રદક્ષિણા પૂર્વક વદના કરી ત્યાર પછી શ્રી આર્ય સુધર્મા સ્વામીથી બહુ દૂર નહિ તેમ બહુ પાસે પણ નહિ એમ નિકટ સેવામા ઉપસ્થિત થઇ બે હાથ જોડી વિધિપૂર્વક સેવા કરતા આમ બોલ્યા —

હે ભગવન્ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરસ્વામીએ જે સ્વશાસનની અપેક્ષા ધર્મની આદિ કરવાવાળા, જેથી સસારસાગર તરી જવાય તેને તીર્થ કહે છે તે તીર્થ-ચાર પ્રકારના છે—સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક અને-શ્રાવિકા એવા ચતુર્વિધસઘ રૂપ તીર્થની સ્થાપના કરવાવાળા, પોતે બોધ પામેલા, જ્ઞાન વગેરે અનત ગુણ સપન્ન હોવાથી પુરૂષોત્તમ, રાગદ્વેષાદિ શત્રુઓનો પરાજય કરવામા અલૌકિક પરાક્રમવાળા હોવાથી પુરુષોમા કેસરી સિંહ સમાન, સમસ્ત અશુભરૂપી મળથી રહિત હોવાથી વિશુદ્ધ, શ્વેતકમળ સમાન નિર્મળ, એટલે કે—જેમ કાદવમાથી ઉત્પન્ન થયેલુ કમળ પાણીના યોગથી વધતુ હોવા છતા

लोकहितेन, लोकप्रदीपेन, लोकप्रद्योतकरेण, अभयदेन, चक्षुर्देन, मार्गदेन,

भी कमल उन दोनों (जल-कीच) के संसर्ग को छोडकर सदा निर्लेप रहता है, और अपने अलौकिक सुगंधि आदि गुणोंसे देव मनुष्यादिकोंका शिराभूषण बनता है, वैसे ही भगवान् कर्मरूपी कीचड से उत्पन्न और भोगरूपी जलसे बढे हुए होकर भी उन दोनोंके संसर्गको त्याग कर निर्लेप रहते हैं और केवलज्ञानादि गुणोंसे परिपूर्ण होनेके कारण भव्य जीवों के शीरोधार्य हैं, जिसका गन्ध सूंघते ही सब हाथी डर के मारे भाग जाते हैं। इस हाथीको 'गन्धहस्ती' कहते है। उस गन्धहस्तीके आश्रयसे जैसे राजा सदा विजयी होता है, उसी प्रकार भगवानके अतिशय से देशके १ अतिवृष्टि, २ अनावृष्टि, ३ शलभ(तीड), ४ चूहे, ५ पक्षी, ६ स्वचक्र-परचक्र-भय, यह छह प्रकारकी ईति, और महामारी आदि सभी उपद्रव तत्काल दूर हो जाते है। और आश्रित भव्य जीव सदा सब प्रकारसे विजयी होते हैं। चौतीस अतिशयों और वाणीके पैंतीस गुणोंसे युक्त होनेके कारण लोगोमे उत्तम। अलभ्य रत्नत्रय के लाभ रूप योग और लब्ध रत्नत्रयके पालन रूप क्षेमके कारण होने से भव्य जीवोंके नाथ। एकेन्द्रिय आदि सकल प्राणीगणके हितकारक। जिस प्रकार

એ બેઉ (પાણી-કાદવ) ના સંસર્ગને છોડીને હમેશા નિર્લેપ રહે છે, તથા પોતાની અલૌકિક સુગંધ આદિ ગુણોથી દેવ, મનુષ્ય આદિના મસ્તકનું ભૂષણ બને છે, તેવીજ રીતે ભગવાન કર્મરૂપી કાદવમાંથી ઉત્પન્ન અને ભોગરૂપી જલથી વૃદ્ધિ પામ્યા છતા તે બઉના સંસર્ગના ત્યાગ કરીને નિર્લેપ રહે છે, તથા કેવળજ્ઞાન આદિ ગુણોથી પરિપૂર્ણ હોવાથી ભવ્યજીવોના શિરોધાર્ય છે જેનો ગંધ સુંઘતાજ બધા હાથી બીકથીજ ભાગી જાય છે તેવા હાથીને 'ગંધહસ્તી' કહે છે, તે ગંધહસ્તીના આશ્રયથી જેમ રાજા હમેશા વિજય મેળવે છે, તેવીજ રીતે ભગવાનના અતિશયથી દેશના અતિવૃષ્ટિ (૧) અનાવૃષ્ટિ (૨), શલભ (તીડ) (૩), ઉંદર (૪) પક્ષી (૫), સ્વચક્ર પરચક્ર ભય (૬), એ છ પ્રકારની ઈતિ (ઉપદ્રવ) અને મહામારી આદિ સર્વે ઉપદ્રવ તત્કાલ દૂર થઈ જાય છે, તથા આશ્રિત ભવ્ય જીવ હમેશા સર્વ પ્રકારે વિજયી થાય છે ચોત્રીશ અતિશય તથા વાણીના પાંત્રીશ ગુણોથી યુક્ત હોવાથી લોકોના ઉત્તમ, અલભ્ય રત્નત્રયના લાભરૂપી યોગ તથા લબ્ધ રત્નત્રયના પાલન રૂપી ક્ષેમનું કારણ હોવાથી ભવ્ય જીવોના નાયક, એકેન્દ્રિય આદિ સર્વ પ્રાણીગણના હિત કરનારા, જેમ દીપક

दीपक सबके लिये समान प्रकाशकारी है ता भी नेत्रवाले ही उससे लाभ उठा सकते हैं नेत्रहीन नहीं, उसी प्रकार भगवानका उपदेश सबके लिये समान हितकर होने पर भी भव्य जीव ही उससे लाभ उठाते हैं अभव्य नहीं, अतएव भव्योंके हृदयमे अनादि काल से रहे हुए मिथ्यात्व रूप अन्धकार को मिटाकर आत्माके यथार्थ स्वरूपको प्रकाशित करनेवाले। लोक शब्दसे यहा लोक और अलोक दानोंका ग्रहण है अतएव केवलज्ञान रूपी आलोकसे समस्त लोकालोकके प्रकाश करनेवाले। मोक्षके साधक उत्कृष्ट धैर्य रूपी अभय को देनेवाले, अथवा-समस्त प्राणियोंके सङ्कटको छुडाने वाली दया (अनुकम्पा) के धारक। ज्ञाननेत्रके दायक, अर्थात् जैसे किसी गहन वनमें लुटेरोंसे लूटे गये और आखों पर पट्टी बाध कर तथा हाथ पैर पकड कर गड्ढेमें गिराये गये पथिकके कोई दयालु सब बन्धनों को तोड कर नेत्र खोल देता है, इसी प्रकार भगवान भी ससार रूपी अपार कान्तारमे राग-द्वेष रूप लुटेरोंसे, ज्ञानादि गुणोको लूट कर तथा कदाग्रह रूप पटेसे ज्ञान चक्षुको ढक कर मिथ्यात्व के गड्ढेमे गिराये गये भव्य जीवोंके उस कदाग्रह रूप पट्टेको दूर कर ज्ञाननेत्रको देने वाले हैं, अतएव सम्यक् रत्नत्रय स्वरूप मोक्षमार्ग,

બધાને માટે સરખો પ્રકાશ કરે છે તો પણ આખવાળાજ માત્ર તેનાથી લાભ મેળવી શકે છે નેત્રહીન એટલે આધળા મેળવી શકતા નથી તેમ ભગવાનનો ઉપદેશ બધા માટે સમાન હિતકારક હોવા છતા પણ ભવ્ય જીવોજ તેનો લાભ મેળવી શકશે અભવ્ય નહિ મેળવી શકે એ રીતે ભવ્યોના હૃદયમા અનાદિ કાળથી રહેલુ મિથ્યાત્વરૂપી અ ધારૂ મટાડીને આત્માના યથાર્થ સ્વરૂપને પ્રકાશિત કરવાવાળા લોક શબ્દથી અહીં લોક અને અલોક બેઉ સમજવાના છે આ રીતે કેવળજ્ઞાનરૂપી આલોકથી તમામ લોક અને અલોકને પ્રકાશ કરવાવાળા, મોક્ષના સાધક, ઉત્કૃષ્ટ ધૈર્યરૂપી અભયને દેવાવાળા, અથવા સમસ્ત પ્રાણિઓના સ કટ મટાડનારી દયા (અનુક પા)ના ધારક જ્ઞાનરૂપી નેત્ર આપનારા અર્થાત્ જેમ કોઇ ગહનવનમા લૂટારાથી લૂટાઈ ગયેલા અને આખે પાટા બાધીને તથા હાથપગ પકડીને ખાડામા નાખી દીધેલા મુસાફરને કોઇ દયાળુ બધા બ ધનો તોડી આખો ઉઘાડી દે છે તેવી રીતે ભગવાન પણ સ સારરૂપી અટવીમા રાગ-દ્વેષ રૂપી લૂટારાથી, જ્ઞાનાદિ ગુણોને લૂટી તથા કદાગ્રહરૂપી પાટાથી જ્ઞાનચક્ષુને ઢાકી દઇ મિથ્યાત્વરૂપી ખાડામા પાડી નાખેલા ભવ્યજીવોને કદાગ્રહરૂપી પાટાથી મુક્ત કરી જ્ઞાનરૂપી નેત્ર દેવાવાળા એટલે સમ્યક્ રત્નત્રય સ્વરૂપ મોક્ષમાર્ગ અથવા વિશિષ્ટ

शरणदेन, जीवदेन, बोधिदेन, धर्मदेन, धर्मदेशनादेन, धर्मनायकेन, धर्मसारथिकेन, धर्मवर-चातुरन्तचक्रवर्तिकेन, द्वीपत्राण-शरण-गतिप्रतिष्ठेन, अप्रतिहत-

अथवा विशिष्ट गुणको प्राप्त होने वाले, क्षयोपशम भाव रूप मार्गको देने वाले। कर्म शत्रुओ से दुःखित प्राणियोंको शरण (आश्रय) देने वाले, पृथिव्यादि षड्जीव-निकाय मे दया रखने वाले, अथवा मुनियोंके जीवनाधार स्वरूप संयमजीवितको देने वाले। शम संवेग आदि प्रकाश, अथवा जिनवचनमें रुचिको देने वाले। धर्मके उपदेशक। धर्मके नायक अर्थात् प्रवर्त्तक। धर्मके सारथी अर्थात जिस प्रकार रथपर चढे हुए को सारथी रथके द्वारा सुखपूर्वक उसके अभीष्ट स्थान पर पहुँचाता है, उसी प्रकार भव्य प्राणियो को धर्म रूपी रथके द्वारा सुखपूर्वक मोक्ष स्थान पर पहुँचाने वाले। दान, शील, तप और भावसे नरक आदि चार गतियों का अथवा चार कषायोंका अन्त करनेवाले, अथवा चार-दान, शील, तप और भाव से अन्त=रमणीय, या दान आदि चार अन्त=अवयव वाले, अथवा दान आदि चार अन्त=स्वरूप वाले श्रेष्ठ धर्म को 'धर्मवरचातुरन्त' कहते है, यही जन्म जरा मरण के नाशक होने से चक्र के समान है। अतएव धर्मवरचातुरन्त रूप चक्र के धारक। यहाँ पर 'वर' पद देनेसे राजचक्रकी अपेक्षा धर्मचक्रकी उत्कृष्टता तथा सौगत (बौद्ध) आदि धर्मका निराकरण किया गया है, क्योंकि राजचक्र

ગુણના પ્રાપ્ત કરાવવાવાળા ક્ષયોપશમભાવ રૂપી માર્ગ દેવાવાળા, કર્મશત્રુથી પીડિત પ્રાણિઓને આશ્રય દેવાવાળા, પૃથ્વી આદિ છ જીવનિકાયમા દયા રાખવાવાળા, અથવા મુનીયોના જીવન આધાર સ્વરૂપ સયમ જીવન દેવાવાળા, શમ સવેગ આદિ પ્રકાશ અથવા જિન વચનમા રૂચિ દેવાવાળા, ધર્મના ઉપદેશક, ધર્મના નાયક અર્થાત્ પ્રવર્તક, ધર્મના સારથી અર્થાત્ જેમ રથ ઉપર બેઠેલાને સારથી રથવડે સુખપૂર્વક તેના અભીષ્ટ સ્થાને પહોચાડે છે તેવી રીતે ભવ્ય પ્રાણિઓને ધર્મરૂપી રથદ્વારા સુખપૂર્વક મોક્ષસ્થાન પર પહોચાડનાર, દાન, શીલ, તપ તથા ભાવથી નરક આદિ ચાર ગતિઓના અથવા ચાર કષાયોના અત કરવાવાળા, અથવા ચાર-દાન, શીલ, તપ તથા ભાવથી અત=રમણીય, અથવા દાન આદિ ચાર અન્ત=અવયવવાળા, અથવા દાન આદિ ચાર અન્ત=સ્વરૂપવાળા, શ્રેષ્ઠ ધર્મને 'ધર્મવરચાતુરન્ત' કહે છે, એજ જન્મ જરા મરણના નાશ કરવાવાળા હોવાથી ચક્ર સમાન છે, એટલે ધર્મવરચાતુરન્ત રૂપી ચક્રના ધારક, અહીં 'વર' પદ ગ્રહણ કરવાથી રાજચક્રની અપેક્ષા ધર્મચક્રની ઉત્કૃષ્ટતા તથા સોગત (બૌદ્ધ) આદિ ધર્મનું નિરાકરણ કરેલુ છે, કેમકે રાજચક્ર કેવળ આ લોકનુંજ

दीपक सबके लिये समान प्रकाशकारी है तो भी नेत्रवाले ही उससे लाभ उठा सकते हैं नेत्रहीन नही, उसी प्रकार भगवानका उपदेश सबके लिये समान हितकर होने पर भी भव्य जीव ही उससे लाभ उठाते है अभव्य नहीं, अतएव भव्योंके हृदयमे अनादि काल से रहे हुए मिथ्यात्व रूप अन्धकार को मिटाकर आत्माके यथार्थ स्वरूपको प्रकाशित करनेवाले । लोक शब्दसे यहा लोक और अलोक दोनोंका ग्रहण है अतएव केवलज्ञान रूपी आलोकसे समस्त लोका लोकके प्रकाश करनेवाले । मोक्षके साधक उत्कृष्ट धैर्य रूपी अभय को देनेवाले, अथवा–समस्त प्राणियोंके सकटको छुडाने वाली दया (अनुकम्पा) के धारक । ज्ञाननेत्रके दायक, अर्थात् जैसे किसी गहन वनमे लुटेरोसे लूटे गये और आखों पर पट्टी याध कर तथा हाथ पैर पकड कर गड्ढेमें गिराये गये पथिकके कोई दयालु सब बन्धनों को तोड कर नेत्र खोल देता है, इसी प्रकार भगवान भी ससार रूपी अपार कान्तारमे राग–द्वेष रूप लुटेरोंसे, ज्ञानादि गुणोको लूट कर तथा कदाग्रह रूप पटेसे ज्ञान चक्षुको ढक कर मिथ्यात्व के गड्ढेमे गिराये गये भव्य जीवोंके उस कदाग्रह रूप पट्टेको दूर कर ज्ञाननेत्रको देने वाले हैं, अतएव सम्यक् रत्नत्रय स्वरूप मोक्षमार्ग,

---

બધાને માટે સરખો પ્રકાશ કરે છે તો પણ આખવાળાજ માત્ર તેનાથી લાભ મેળવી શકે છે નેત્રહીન એટલે આધળા મેળવી શકતા નથી તેમ ભગવાનનો ઉપદેશ બધા માટે સમાન હિતકારક હોવા છતા પણ ભવ્ય જીવોજ તેનો લાભ મેળવી શકશે અભવ્ય નહિ મેળવી શકે એ રીતે ભવ્યોના હૃદયમા અનાદિ કાળથી રહેલુ મિથ્યાત્વરૂપી અ ધારૂ મટાડીને આત્માના યથાર્થ સ્વરૂપને પ્રકાશિત કરવાવાળા લોક શબ્દથી અહી લોક અને અલોક બેઉ સમજવાના છે આ રીતે કેવળજ્ઞાનરૂપી આલોકથી તમામ લોક અને અલોકને પ્રકાશ કરવાવાળા, મોક્ષના સાધક, ઉત્કૃષ્ટ ધૈર્યરૂપી અભયને દેવાવાળા, અથવા સમસ્ત પ્રાણિઓના સ કટ મટાડનારી દયા (અનુક પા)ના ધારક જ્ઞાનરૂપી નેત્ર આપનારા અર્થાત્ જેમ કોઇ ગહનવનમા લૂટારાથી લૂટાઇ ગયેલા અને આખે પાટા બાધીને તથા હાથપગ પકડીને ખાડામા નાખી દીધેલા મુસાફરને કોઇ દયાળુ બધા બ ધનો તોડી આખો ઉઘાડી દે છે તેવી રીતે ભગવાન પણ સ સારરૂપી અટવીમા રાગ–દ્વેષ રૂપી લૂટારાથી, જ્ઞાનાદિ ગુણોને લૂટી તથા કદાગ્રહરૂપી પાટાથી જ્ઞાનચક્ષુને ઢાકી દઇ મિથ્યાત્વરૂપી ખાડામા પાડી નાખેલા ભવ્યજીવોને કદાગ્રહરૂપી પાટાથી મુક્ત કરી જ્ઞાનરૂપી નેત્ર દેવાવાળા એટલે સમ્યક્ રત્નત્રય સ્વરૂપ મોક્ષમાર્ગ અથવા વિશિષ્ટ

शब्दसमुदायात्मकवाक्यतात्पर्यविषयीभूतः को भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः, कथित इत्यर्थः। जम्बूस्वामिपृच्छानन्तरं सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिनं प्रति प्राह–हे जम्बू ! एवम्=इत्थम् खलु=निश्चयेन यावत्=उक्तगुणवता सम्प्राप्तेन=मुक्तिं लब्धवता श्रमणेन भगवता महावीरेण एवं=वक्ष्यमाणरीत्या उपाङ्गानां 'पञ्च वर्गाः' इति, अध्ययनसमूहो वर्गस्ते प्रज्ञप्ताः=निरूपिताः, तद्यथा=तदेव दर्श्यते–निरयावलिकाः (१), अस्योपाङ्गस्य 'कल्पिके'ति नामान्तरम्, कल्पावतंसिकाः (२), पुष्पिताः (३), पुष्पचूलिकाः (४), वृष्णिदशाः (५), अस्य 'वह्निदशे'ति नामान्तरम् । इह सर्वत्रावयवगतबहुत्वविवक्षाया बहुवचनम् ।

तत्र निरयावलिकाः—

यत्रावलिकाप्रविष्टाः=श्रेणिप्रव्यवस्थिता, इतरे च नरकाऽऽवासाः प्रसङ्गतस्तद्गामिनश्च मनुष्यास्तिर्यञ्चः प्रतिपाद्यन्ते तास्तथा (१), कल्पावतंसिकाः–

मोक्षको प्राप्त करने वाले उन प्रभुने उपाङ्गोंका क्या भाव कहा ? । इस प्रकार जम्बूस्वामीके पूछने पर श्री सुधर्मा स्वामीने जम्बूस्वामीसे कहा–हे जम्बू ! इस प्रकार उक्त गुण विशिष्ट यावत् सिद्धि गतिको प्राप्त करने वाले भगवान्ने उपाङ्गोंके पाच वर्ग निरूपण किये हैं वे क्रमशः इस प्रकार हैं :–

(१) निरयावलिका, इसका दूसरा नाम 'कल्पिका, भी है। (२) कल्पावतंसिका, (३) पुष्पिता, (४) पुष्पचूलिका और (५) वृष्णिदशा, इसका भी 'वह्निदशा' दूसरा नाम है। यहाँ सब जगह–अवयवगत बहुत्व विवक्षा से बहु वचन है।

इन पाचोमेंसे प्रथम—(१) निरयावलिका सूत्रमें नरकावासोंका तथा उनमें उत्पन्न होने वाले मनुष्य और तिर्यञ्चोंका वर्णन है।

કરવાવાળા તે પ્રભુએ ઉપાગોનો ભાવ શુ કહ્યો છે એ પ્રકારે જબૂ સ્વામીએ પૂછવાથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ જબૂ સ્વામીને કહ્યુ–હે જબૂ ! એ પ્રકારે કહેલા ગુણવિશિષ્ટ યાવત્ સિદ્ધ ગતિની પ્રાપ્તિ કરવાવાળા ભગવાને ઉપાગોના પાચ વર્ગ નિરૂપણ કર્યા છે તે અનુક્રમે નીચે પ્રમાણે છે —

(૧) નિરયાવલિકા, આનુ બીજુ નામ 'કલ્પિકા' પણ છે (૨) કલ્પાવતંસિકા (૩) પુષ્પિતા (૪) પુષ્પચૂલિકા તથા (૫) વૃષ્ણિદશા આનુ પણ 'વહ્નિદશા' એવુ બીજુ નામ છે અહીં બધે ઠેકાણે અવયવગત બહુત્વ વિવક્ષાથી બહુવચન વપરાયુ છે

એ પાચેમાથી પ્રથમ (૧) નિરયાવલિકા સૂત્રમા નરકાવાસોનુ તથા તેમા ઉત્પન્ન થનારા મનુષ્ય તથા તિર્યંચોનુ વર્ણન છે

वरज्ञानदर्शनधरेण, व्यावृत्तच्छद्मकेन, जिनेन, जापकेन, तीर्णेन, तारकेण, बुद्धेन, बोधकेन, मुक्तेन, मोचकेन, सर्वज्ञेन सर्वदर्शिना, शिवमचलमरुजमनन्तमक्षयमव्याबाधमपुनरावृत्तिक सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन, कोऽर्थः=

केवल इस लोकका साधक है, परलोकका नहीं, तथा सौगत आदि धर्म यथार्थ तत्वोंका निरूपक न होनेसे श्रेष्ठ नहीं। 'चक्रवर्ती' पद देनेसे तीर्थङ्करोंको छह खण्डके अधिपतिकी उपमा दी गई है, क्योंकि वह चक्रवर्ती भी चार सीमावाले, अर्थात् उत्तर दिशामें हिमवान् और पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, दिशाओंमें लवण समुद्र तक जिसकी सीमा है ऐसे भरतक्षेत्र पर एक शासन राज्य करता है। ससार-समुद्रमें डूबते हुए जीवोंके एक मात्र आश्रय होनेसे द्वीप समान। भव्य जीवोंके कल्याणकारी होनेसे त्राणस्वरूप अतएव उनके शरण-आधारस्थान। तीनों कालमें अविनाशी स्वरूप वाले। आवरणरहित केवलज्ञान, केवलदर्शन के धारक। ज्ञानावरणीय आदि कर्मोंका नाश करने वाले। राग-द्वेषरूप शत्रुको स्वय जीतने वाले और दूसरोंको जीताने वाले। भवसमुद्रको स्वय तैरने वाले और दूसरोंको तिराने वाले। स्वय बोधको प्राप्त करने वाले और दूसरोंको प्राप्त कराने वाले। स्वय मुक्त होने वाले और दूसरोंको मुक्त करनेवाले। सर्वज्ञ, सर्वदर्शी तथा निरुपद्रव, निश्चल, कर्मरोगरहित, अनन्त, अक्षय, बाधारहित पुनरागमनरहित, ऐसे सिद्ध स्थान अर्थात्

સાધન છે પરલોકનુ નહી તથા સૌગત આદિ ધર્મ યથાર્થ તત્વોના નિરૂપણ ન કરતા હોવાથી શ્રેષ્ઠ નથી 'ચક્રવર્તિ' પદ આપવાથી તીર્થંકરોને છ ખંડના અધિપતિની ઉપમા દીધી છે, કેમકે તે ચક્રવર્તી પણ ચાર સીમાવાળા અર્થાત્ ઉત્તર દિશામા હિમવાન અને પૂર્વ, દક્ષિણ, પશ્ચિમ દિશાઓમા લવણસમુદ્ર સુધી જેની સીમા છે એવા ભરતક્ષેત્ર પર એક શાસન રાજ્ય કરે છે સસારસમુદ્રમા ડુબતા જીવોને એકજ આશ્રય હોવાથી દ્વીપ સમાન, ભવ્યજીવોના કલ્યાણકારી હોવાથી ત્રાણ સ્વરૂપ તેથી તેઓને શરણ આધારસ્થાન ત્રણે કાળમા આવરણરહિત કેવળજ્ઞાન, કેવળદર્શનના ધારક, જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોના નાશ કરવાવાળા, રાગદ્વેષરૂપી શત્રુને જાતેજ જીતનારા તેમજ બીજાને જીતાવવાવાળા, ભવસમુદ્રને જાતે તરનારા તેમ બીજાને તારનારા, પોતે બોધ મેળવનારા તેમજ બીજાને બોધ પ્રાપ્ત કરાવનારા, પોતે મુક્ત થવાવાળા તથા બીજાને મુક્ત કરવાવાળા, સર્વજ્ઞ સર્વદર્શી તથા ઉપદ્રવ વગરના નિશ્ચલ કર્મરોગ રહિત, અનન્ત, અક્ષય, બાધારહિત, પુનરાગમનરહિત, એવા સિદ્ધસ્થાન એટલે મોક્ષને પ્રાપ્ત

मूलम्–जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणंपञ्च वग्गा पन्नत्ता तं जहा निरयावलियाओ जाव वण्हिदसाओ, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवगाणं निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव सपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ? ॥ ६ ॥

छाया–यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् समाप्तेन उपाङ्गाना पञ्च वर्गाः प्रज्ञप्ता तद्यथा–निरयावलिका यावत् वृष्णिदशाः, प्रथमस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य उपाङ्गाना निरयावलिकाना श्रमणेन भगवता यावत् समाप्तेन कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ? ॥ ६ ॥

टीका–'जइण भंते' इत्यादि । अथ सोत्साह सविनय जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिन पप्रच्छ–भदन्त=हे भगवन ! यदि=यदा खलु=निश्चयेन यावत्=उक्तगुणवता समाप्तेन=मुक्तिं लब्धवता, श्रमणेन=दुश्चरतपश्चर्याप्रसिद्धेन भगवता महावीरेण उपाङ्गाना पञ्चवर्गाः प्रज्ञप्ताःनिरूपिताः तद्यथा=तदेव दर्श्यते–निरयावलिका इत्यारभ्य वृष्णिदशापर्यन्ता, तेषु हे भदन्त !=हे भगवन् निरयावलिकानामुपाङ्गाना प्रथमवर्गस्य श्रमणेन भगवता यावत्–उक्तगुणवता सम्प्राप्तेन=मोक्षगतेन कति=कियत्सख्यकानि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ? ॥ ६ ॥

मूलम्–एव खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेण उवगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाण दस अज्झयणा पन्नत्ता, त

निरयावलिका–अन्तकृद्दशाङ्गका उपाङ्ग है। कल्पावतंसिका–अनुत्तरोपपातिक दशाङ्गका। पुष्पिका–प्रश्नव्याकरणका। पुष्पचूलिका–विपाकसूत्रका। और वृष्णिदशा–दृष्टिवादका उपाङ्ग है। ॥ ५ ॥

'जइण भंते' इत्यादि । हे भदंत ! भगवान महावीर प्रभुने निरयावलिका से लेकर वृष्णिदशा पर्यन्त उपाङ्गोंके पांच वर्ग कहे उनमें भगवानने निरयावलिका के कितने अध्ययन कहे हैं ? ॥ ६ ॥

નિરયાવલિકા—અંતકૃતદૃશાંગનું ઉપાંગ છે, કલ્પાવતંસિકા એ અનુત્તરોપપાતિક દશાંગનું, પુષ્પિકા પ્રશ્નવ્યાકરણનું, પુષ્પિચૂલિકા, એ વિપાક સૂત્રનું તથા, વૃષ્ણિદશા, એ દૃષ્ટિવાદનું ઉપાંગ છે ॥ ૫ ॥

'जइण भंते' ઇત્યાદિ હે ભદંત ! ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ નિરયાવલિકાથી માંડીને વૃષ્ણિદશા સુધીના ઉપાંગોના પાંચ વર્ગ કહ્યા તેમાં ભગવાને નિરયાવલિકાના કેટલા અધ્યયન કહ્યા છે ? ॥ ૬ ॥

नाम–कल्पावतमकदेवमतिबद्धग्रन्थपद्धतिः, तास्तथा (२), पुष्पिताः–सयमभाव नया पुष्पिताः सुखिनाः माणिन' सयमाऽऽराधनपरित्यागेन ग्लानावस्था माप्ताः सङ्कुचिताः सन्तो भूयस्तदाराधनेन पुष्पिता यत्र मतिपाद्यन्ते ताः पुष्पिता' (३), 'पुष्पचूलिकाः' पूर्वोक्तार्थविशेषमतिपादिकाः पुष्पचूडा', ता एव तथा ड–लयोरैक्यात् (४), वृष्णिदशाः–अय चाऽन्वर्थः–वृष्णिपदेन 'नामैकदेशेन नाम ग्रहणम्' इति न्यायबलात् अन्धकवृष्णिनराधिपो ग्रह्यते, तत्कुले ये, जातास्तेऽपि अन्धकवृष्णयो निगद्यन्ते, तेषा दशाः=अवस्थाश्चरितगतिसिद्धिगमनलक्षणा यासु ग्रन्थपद्धतिषु वर्ण्यन्ते तास्तथा (५), तत्र 'अन्तकृद्दशाङ्गस्य कल्पिका (निरयावलिका) (१), अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य कल्पावतसिकाः (२), प्रश्नव्याकरणस्य पुष्पिकाः (ता) (३), विपाकसूत्रस्य पुष्पचूलिकाः (४), दृष्टिवादस्य वृष्णिदशाः (५) उपाङ्गानि विज्ञेयानि ॥ ५ ॥

(२) द्वितीय–कल्पावतसिका सूत्रमे सौधर्म आदि बारह देवलोकोमें कल्पप्रधान इन्द्र सामानिक आदिकी मर्यादायुक्त–कल्पावतसक विमानोंका और तप विशेषसे उनमें उत्पन्न होने वाले देवोंको तथा उनकी ऋद्धिका वर्णन है।

(३) तृतीय पुष्पिता सूत्रमें जिन्होंने सयम भावनासे विकसित हृदय होकर सयम लिया, पीछे उसके आराधनाका परित्याग करनेमें शिथिल होनेसे ग्लान अवस्थाको प्राप्त हुए और फिर सयमकी आराधना करके पुष्पित और सुखी बने, उनका वर्णन है।

(४) चौथे पुष्पचूलिका सूत्रमे–पूर्वोक्त अर्थका ही विशेष वर्णन है।

(५) पाँचवें–वृष्णिदशा सूत्रमें–अन्धकवृष्णि राजाके कुलमें उत्पन्न होने वालोंकी अवस्था–चरित्र, गति और सिद्धिगमनका वर्णन है।

(२) द्वितीय-કલ્પાવતસિકા સૂત્રમા સૌધર્મ આદિ બાર દેવલોકમા કલ્પ પ્રધાન ઇન્દ્રસામાનિક આદિ મર્યાદ યુક્ત કલ્પાવતસક વિમાનોનુ તથા તપ વિશેષથી તેમા ઉત્પન્ન થનારા દેવોનુ તથા તેમની ઋદ્ધિનુ વર્ણન છે

(૩) તૃતીય–પુષ્પિતા સૂત્રમા જેમણે સયમ ભાવનાથી વિકસિત હૃદયપૂર્વક સયમ લીધો, પછી તેની આરાધનાનો પરિત્યાગ કરવામા શિથિલ થઇ જતા ગ્લાન અવસ્થા પ્રાપ્ત થઇ અને ફરી સયમની આરાધના કરી પુષ્પિત અને સુખી બન્યા તેનુ વર્ણન છે

(૪) ચોથા પુષ્પચૂલિકા–સૂત્રમા અગાઉ કહેલા અર્થનુજ વિશેષ વર્ણન છે

(૫) પાચમા વૃષ્ણિદશા–સૂત્રમા અન્ધકવૃષ્ણિરાજાના કુળમા ઉત્પન્ન થનારની અવસ્થા, ચારિત્ર, ગતિ તથા સિદ્ધિગમનનુ વર્ણન છે

मूलम्—जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण उवंगाणंपंच वग्गा पन्नत्ता तं जहा निरयावलियाओ जाव वण्हिदसाओ, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवगाणं निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव सपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ? ॥ ६ ॥

छाया—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् समाप्तेन उपाङ्गाना पञ्च वर्गा प्रज्ञप्ता. तद्यथा—निरयावलिका यावत् वृष्णिदशाः, प्रथमस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य उपाङ्गाना निरयावलिकाना श्रमणेन भगवता यावत् समाप्तेन कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ? ॥ ६ ॥

टीका—'जइण भंते' इत्यादि । अथ सोत्साह सविनय जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिन पप्रच्छ—भदन्त=हे भगवन् ! यदि=यदा खलु=निश्चयेन यावत्=उक्तगुणवता समाप्तेन=मुक्ति लब्धवता, श्रमणेन=दुश्चरतपश्चर्याप्रसिद्धेन भगवता महावीरेण उपाङ्गाना पञ्चवर्गा प्रज्ञप्ताःनिरूपिताः तद्यथा=तदेव दर्श्यंते—निरयावलिका इत्यारभ्य वृष्णिदशापर्यन्ता, तेषु हे भदन्त !=हे भगवन् निरयावलिकानामुपाङ्गाना प्रथमवर्गस्य श्रमणेन भगवता यावत्=उक्तगुणवता सम्माप्तेन=मोक्षगतेन कति=कियत्सख्यकानि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ? ॥ ६ ॥

मूलम्—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव सपत्तेण उवगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाण दस अज्झयणा पन्नत्ता, त

निरयावलिका—अन्तकृद्दशाङ्गका उपाङ्ग है । कल्पावतंसिका—अनुत्तरोपपातिक दशाङ्गका । पुष्पिका—प्रश्नव्याकरणका । पुष्पचूलिका—विपाकसूत्रका । और वृष्णिदशा—दृष्टिवादका उपाङ्ग है । ॥ ५ ॥

'जइण भंते' इत्यादि । हे भदंत ! भगवान महावीर प्रभुने निरयावलिका से लेकर वृष्णिदशा पर्यन्त उपाङ्गोंके पांच वर्ग कहे उनमें भगवानने निरयावलिका के कितने अध्ययन कहे हैं ? ॥ ६ ॥

નિરયાવલિકા—અંતકૃતદ્દશાગનુ ઉપાગ છે, કલ્પાવતંસિકા એ અનુત્તરોપપાતિક દશાગનુ, પુષ્પિકા પ્રશ્નવ્યાકરણનુ, પુષ્પિચૂલિકા, એ વિપાક સૂત્રનુ તથા, વૃષ્ણિદશા, એ દૃષ્ટિવાદનુ ઉપાગ છે ॥ ૫ ॥

'જઇણ ભંતે' ઇત્યાદિ હે ભદંત ! ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ નિરયાવલિકાથી માંડીને વૃષ્ણિદશા સુધીના ઉપાગોના પાચ વર્ગ કહ્યા તેમા ભગવાને નિરયાવલિકાના કેટલા અધ્યયન કહ્યા છે ? ॥ ૬ ॥

जहा–काले १ सुकाले २ महाकाले ३ कण्हे ४ सुकण्हे ५ तहा महाकण्हे ६ वीरकण्हे ७ य बोद्धव्वे रामकण्हे ८ तहेव य पिउसेणकण्हे ९ नवमे दसमे महासेणकण्हे १० उ ॥ ७॥

छाया–एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन उपाङ्गानां प्रथमस्य वर्गस्य निरयावलिकानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा–कालः (१) सुकाल. (२) महाकाल. (३) कृष्णः (४) सुकृष्ण. (५) तथा महाकृष्ण. (६) वीर कृष्णश्च (७) बोद्धव्यः । रामकृष्ण' (८) तथैव च पितृसेनकृष्णो नवम' (९) दशमो महासेनकृष्णस्तु (१०) ॥ ७ ॥

टीका–सुधर्मास्वामी प्राह–'एवं खलु' इत्यादि–हे जम्बू' ! एवं खलु यावत्=उक्तगुणवता सम्प्राप्तेन सिद्धिगतिं गतेन, श्रमणेन=घोरपरीषहोपसर्ग सहनशीलेन भगवता महावीरेण निरयावलिकानामकोपाङ्गस्य प्रथमस्य वर्गस्य दश अध्यनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा–काल' (१), सुकालः (२), महाकाल (३), कृष्ण (४), सुकृष्ण' (५), तथा महाकृष्ण (६), वीरकृष्ण. (७), रामकृष्ण. (८), तथैव च पितसेनकृष्णः (९), नवम' । दशमस्तु महासेनकृष्ण (१०)

बोद्धव्य इति सर्वत्रान्वेति, विज्ञेय इति तदर्थः । काल्यादिशब्देभ्य इदमर्थेऽणप्रत्यये कृते कालादयः शब्दा सिद्धयन्ति तथा काल्या'तन्नाम्न्या

श्री सुधर्मास्वामी श्री जम्बूस्वामीसे कहते हैं–'एवं खलु' इत्यादि ।

हे जम्बू ! श्रमण यावत् मोक्षप्राप्त भगवानने निरयावलिकाके दस अध्ययन कहे है, उन दस अध्ययननोके नाम इस प्रकार हैं।–(१) काल, (२) सुकाल, (३) महाकाल, (४) कृष्ण, (५) सुकृष्ण (६) महाकृष्ण, (७) वीरकृष्ण, (८) रामकृष्ण (९) पितृसेन कृष्ण, और (१०) महासेनकृष्ण ।

'काली' आदि शब्दोंसे–उसके सम्बन्धी अर्थमे 'अण्' प्रत्यय

શ્રી સુધર્માસ્વામી શ્રી જમ્બૂસ્વામીને કહે છે — 'एवं खलु' ઇત્યાદિ

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ યાવત્ મોક્ષપ્રાપ્ત ભગવાને નિરયાવલિકાના દશ અધ્યયન કહ્યા છે એ દશ અધ્યયનના નામ આ પ્રકારના છે–

(૧) કાલ, (૨) સુકાલ, (૩) મહાકાલ, (૪) કૃષ્ણ, (૫) સુકૃષ્ણ, (૬) મહાકૃષ્ણ, (૭) વીરકૃષ્ણ, (૮) રામકૃષ્ણ, (૯) પિતૃસેનકૃષ્ણ તથા (૧૦) મહાસેનકૃષ્ણ

'કાલી' આદિ શબ્દોથી તેના સબધી અર્થમા 'અણ' પ્રત્યય કર્યો છે, જેથી

महाराज्या अय पुत्र इति काल । एवं सर्वत्र विज्ञेयम् । अत्र 'कुमारे'ति सर्वत्र योजनीय यथा-'कालकुमार' इत्यादि, कालीकुमार इत्यर्थः ॥ ७ ॥

मूलम्-जइणं भंते ! समणेण जाव संपत्तेणं उवंगाण पढमस्स निरयावलियाण दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? ॥ ८ ॥

छाया-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् समाप्तेन उपाङ्गाना प्रथमस्य निरयावलिकाना दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य भदन्त ! अध्ययनस्य निरयावलिकाना श्रमणेन यावत् समाप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? ॥ ८ ॥

टीका-'जइण भंते' इत्यादि । यदि खलु भदन्त !=हे भगवन् ! यावत्=पूर्वोक्तगुणवता समाप्तेन=मुक्ति लब्धवता, श्रमणेन भगवता महावीरेण निरयावलिकानामकोपाङ्गस्य प्रथमस्य वर्गस्य दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि=निगदितानि हे भदन्त ! = हे भगवन् ! निरयावलिकाना प्रथमस्य अध्ययनस्य यावत्=पूर्वोक्तगुणवता समाप्तेन=मुक्ति लब्धवता श्रमणेन=भगवता महावीरेण कोऽर्थः प्रज्ञप्तः=प्रतिपादितः ?

अत्र सर्वत्र 'श्रमणेन' 'यावत्' 'समाप्तेन' इत्यादिपदाना पुन पुनरुपादान भगवद्भक्तिबाहुल्यसूचनाय ।

किया है, जिससे काली महारानीका पुत्र काल कुमार कहा जाता है, उसके चरित्रप्रतिबोधक अध्ययन भी काल-अध्ययन नामसे प्रसिद्ध है। इस प्रकार सब अध्ययनकी योजना समझना चाहिए ॥ ७ ॥

जम्बू स्वामीने सुधर्मा स्वामीसे फिर पूछा 'जइण भंते' इत्यादि ।

हे भदन्त ! इन दस अध्ययनोंमे प्रथम-कालकुमार अध्ययनका भगवानने क्या अर्थ कहा ?

यहा सर्वत्र श्रमण आदि पदोका पुन पुन उपादान किया है वह भगवानकी अतिशय भक्ति सूचनार्थ है। अथवा वाक्यभेदसे

કાલી મહારાણીના પુત્ર કાલકુમાર કહેવાય છે તેનુ ચરિત્રપ્રતિબોધક અધ્યયન પણ કાલ-અધ્યયન નામથી પ્રસિદ્ધ છે આ પ્રકારે બધા અધ્યયનની યોજના સમજવી જોઇએ ॥૭॥

જંબૂ સ્વામીએ સુધર્મા સ્વામીને વળી પૂછ્યુ-'जइण भंते' ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત, એ દશ અધ્યયનોમા પ્રથમ-કાલકુમાર અધ્યયનનો ભગવાને શુ અર્થ કહ્યો?

અહીં સર્વત્ર શ્રમણ આદિ પદોનુ વારવાર ઉપાદાન કર્યું છે, તે ભગવાનની અતિશય ભકિત સૂચનાર્થ છે, અથવા વાકય ભે થી પુનરૂકિત દોષ ન સમજવો જોઇએ

यद्वा-वाक्यभेदेन पुनरुक्तिर्न विज्ञेया। अन्यच्च भगवद्गुणाना सन्तत स्मरणेन भव्यानामन्यविषयतो मनोनिवृत्तिपूर्वकोपादेयविषयावधानार्थं पुनः पुनः कथन गुण एवेति ॥ ८ ॥

अथ प्रथम कालकुमार वर्णयति-'एव खलु' इत्यादि ।

मूलम्-एवं खलु जबू ! तेणं कालेणं तेण समएण इहेव जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे चपा नामं नयरी होत्था, रिद्ध०, पुन्नभद्दे चेइए, तत्थण चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवी अत्तए कूणिए नाम राया होत्था, महया०, ॥९॥

छाया-एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे चपा नाम नगरी अभूत् । ऋद्ध०, पूर्णभद्र चैत्यम्, तत्र खलु चम्पाया नगर्यां श्रेणिकस्य राज्ञ' चेल्लनाया देव्या आत्मज कूणिको नाम राजाऽभवत्, महता० ॥ ९ ॥

टीका-हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव=अस्मिन्नेव देशत प्रत्यक्ष दृश्यमाने जम्बूद्वीपे=तन्नामकम यद्वीपे न पुनर्जम्बूद्वीपानामनन्तत्वादन्यत्रेति भाव । भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे=भरतक्षेत्रस्य मध्यप्रदेशे चम्पा नाम नगरी

पुनरुक्तिदोष नही समझना चाहिए। अथवा भगवान के गुणोंको बार बार स्मरण करनेसे भव्यों का अन्य विषयसे मनोवृत्ति का निरोध होजाता है। उपादेय विषयमे सावधान होनेके लिये पुन' पुनः उन्ही शब्दोका उच्चारण किया है अर्थात् उन्ही पदोका बार बार श्रवण करनेसे उपादेय विषय पर चित्त श्रद्धालु होजाता है ॥८॥

यहा प्रथम काल कुमारका वर्णन करते है—

श्री सुधर्मास्वामी श्री जम्बूस्वामी से कहते हैं-' एव खलु ' इत्यादि ।

हे जम्बू ! उस काल उस समय इसी ही-मध्य जम्बु द्वीप

અથવા ભગવાનના ગુણોનુ વારવાર સ્મરણ કરવાથી ભવ્યોની બીજા વિષયથી મનોવૃત્તિનો નિરોધ થઈ જાય છે ઉપાદેય વિષયમા સાવધાન થવા માટે ફરી ફરી તે શબ્દોનુ ઉચ્ચારણ કર્યુ છે અર્થાત્ તેના તે શબ્દો વારવાર શ્રવણ કરવાથી ઉપાદેય વિષયમા ચિત્ત શ્રદ્ધાળુ થઈ જાય છે ॥ ૮ ॥

અહિ પહેલા કાલકુમારનુ વર્ણન કરે છે –

શ્રી સુધર્મા સ્વામી શ્રી જબૂ સ્વામીને કહે છે – ' एव खलु ' ઇત્યાદિ

હે જબૂ ! તે કાલ તે સમય આજ મધ્ય જબૂદ્વીપમા ભરતનામે ક્ષેત્ર છે જેના

अभूत् 'ऋद्धस्तिमितसमृद्धा' ऋद्धा=नभःस्पर्शिबहुलप्रासादयुक्ता बहुलजनसङ्कुला च, स्तिमिता=स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धन-धान्यादिपरिपूर्णा, अत्र त्रि-पदकर्मधारयः ।

तत्रेशानकोणे पूर्णभद्रं नाम चैत्यम्=व्यन्तरायतनम् उद्यानमिति वा आसीदिति शेषः । तत्र खलु चम्पानगर्यां श्रेणिकस्य=तन्नामकस्य, राज्ञः पुत्रः चेल्लनायाः=तन्नाम्न्या देव्याः=राज्ञ्याः आत्मजः=अङ्गजातः कूणिको नाम राजा अभवत् । 'महता' शब्देन-'महयाहिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे' अच्चंतविसुद्ध-दीहरायकुलवंससुप्पसूए, निरंतरं रायलक्खणविराइयंगमंगे सीमंधरे मणुस्सिंदे, पुरिससीहे, पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरइ' इत्यादीनां सङ्ग्रहः । छाया-महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसारः, अत्यन्तविशुद्धदीर्घराजकुलवंशसुप्रसूतः, नि-रन्तरं राजलक्षणविराजिताङ्गाङ्गः, सीमन्धरः, मनुष्येन्द्रः, पुरुषसिंहः, प्रशान्त-डिम्बडम्बरं राज्यं प्रसाधयन् विहरति ।

राजवर्णनमाह-'महाहिमव'दित्यादिना-महाँश्चासौ हिमवान् महा हिम-वान् स इव महान् शेषराजपर्वतापेक्षया, मलयो=मलयाचलः, मन्दरो=मेरुगिरिः, महेन्द्रः=सुरपतिः पर्वतविशेषो वा, तद्वत्सारः=प्रधानो यस्तथा, अत्यन्तविशुद्धः= अतिनिर्मलः दीर्घः=चिरकालीनो राज्ञां कुलरूपो वंशस्तत्र प्रसूतः=जातः अति-

---

में भरत नामका क्षेत्र है, उसके मध्य भागमें चम्पा नामकी नगरी गगनचुम्बी प्रासादों से अलङ्कृत स्वचक्र परचक्रका भय रहित और धन धान्य आदि से सम्पन्न थी। उसके ईशान कोणमें पूर्णभद्र नामका व्यन्तरायतन था। उस चम्पानगरीमें श्रेणिक राजाके पुत्र कोणिक राजा राज्य करते थे जो चेलना महारानीके गर्भसे जन्मे थे।

कोणिक राजाका वर्णन इस प्रकार है-महा हिमवान पर्वतके समान थे अर्थात्-शेष अन्य राजा रूप पर्वतोंसे बढे चढे थे। मलय पर्वत और महेन्द्र पर्वत के समान श्रेष्ठ थे, अत्यन्त निर्मल प्राचीन

મધ્ય ભાગમા ચપા નામની નગરી આકાશસ્પર્શી ભવનોથી શોભિત સ્વપર ચક્ર ભય રહિત અને ધન ધાન્ય આદિથી સપન્ન હતી તેના ઈશાન કોણમા પૂર્ણભદ્ર નામે વ્યતરાયતન હતુ તે ચપા નગરીમા શ્રેણિક રાજાના પુત્ર કોણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા, જે ચેલણા મહારાણીના ગર્ભથી જન્મ્યા હતા

કોણિક રાજાનું વર્ણન આ પ્રકારે છે—

મહા હિમવાન પર્વત સમાન હતા અર્થાત્ શેષ અન્ય રાજા રૂપી પર્વતોથી મોટા હતા મલય પર્વત અને મહેન્દ્ર પર્વતના સમાન શ્રેષ્ઠ હતા અત્યત નિર્મલ

यद्वा-वाक्यभेदेन पुनरुक्तिर्न विज्ञेया। अन्यच्च भगवद्गुणाना सन्तत स्मरणेन भव्यानामन्यविषयतो मनोनिवृत्तिपूर्वकोपादेयविषयावधानार्थं पुनः पुनः कथन गुण एवेति ॥ ८ ॥

अथ प्रथम कालकुमार वर्णयति-'एव खलु' इत्यादि ।

मूलम्-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेण समएण इहेव जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे चपा नामं नयरी होत्था, रिद्ध०, पुन्नभद्दे चेइए, तत्थण चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवी अत्तए कूणिए नाम राया होत्था, महया०, ॥९॥

छाया-एव खलु जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बू द्वीपे द्वीपे भारते वर्षे चपा नाम नगरी अभूत् । ऋद्ध०, पूर्णभद्र चैत्यम्, तत्र खलु चम्पाया नगर्या श्रेणिकस्य राज्ञ चेल्लनाया देव्या आत्मज• कूणिको नाम राजाऽभवत्, महता० ॥ ९ ॥

टीका-हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव=अस्मिन्नेव देशत• प्रत्यक्ष दृश्यमाने जम्बूद्वीपे=तन्नामकम यद्वीपे न पुनर्जम्बूद्वीपानामनन्तत्वादन्य त्रेति भाव । भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे=भरतक्षेत्रस्य मध्यप्रदेशे चम्पा नाम नगरी

पुनरुक्तिदोष नहीं समझना चाहिए। अथवा भगवान के गुणोंको बार बार स्मरण करनेसे भव्यों का अन्य विषयसे मनोवृत्ति का निरोध होजाता है। उपादेय विषयमे सावधान होनेके लिये पुनः पुन उन्ही शब्दोका उच्चारण किया है अर्थात् उन्हो पदोका बार बार श्रवण करनेसे उपादेय विषय पर चित्त श्रद्धालु होजाता है ॥८॥

यहा प्रथम काल कुमारका वर्णन करते हैं—

श्री सुधर्मास्वामी श्री जम्बूस्वामी से कहते हैं-' एव खलु ' इत्यादि ।

हे जम्बू ! उस काल उस समय इसी ही-मध्य जम्बू द्वीप

અથવા ભગવાનના ગુણોનુ વારવાર સ્મરણ કરવાથી ભવ્યોની બીજા વિષયથી મનોવૃત્તિનો નિરોધ થઈ જાય છે ઉપાદેય વિષયમા સાવધાન થવા માટે ફરી ફરી તે શબ્દોનુ ઉચ્ચારણ કર્યું છે અર્થાત્ તેના તે શબ્દો વારવાર શ્રવણ કરવાથી ઉપાદેય વિષયમા ચિત્ત શ્રદ્ધાળુ થઈ જાય છે ॥ ૮ ॥

અહિં પહેલા કાલકુમારનુ વર્ણન કરે છે -

શ્રી સુધર્મા સ્વામી શ્રી જબૂ સ્વામીને કહે છે - ' एव खलु ' ઇત્યાદિ

હે જબૂ! તે કાલ તે સમય આજ મધ્ય જબૂદ્વીપમા ભરતનામે ક્ષેત્ર છે જેના

यस्या सा तथा, कोमलकरचरणयुक्ता, अत्र–'यावत्' शब्देन–'अहीणपंचिंदिय सरीरा, लक्खणवंजणगुणोववेया, माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगा, ससिसोमाकारा, कंता, पियदंसणा, सुरूवा' इत्यन्तविशेषणानामन्यत्रोक्तानां समन्वयो बोद्धव्यः। एषा छाया–अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरा, लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता, मानोन्मानप्रमाणपरिपूर्णसुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्गी, शशिसौम्याकारा, कान्ता, प्रियदर्शना, सुरूपा, इति।

अथैतानि विशेषणानि प्रतिपदं व्याचक्ष्महे–अहीनानि=लक्षणस्वरूपाभ्यां परिपूर्णानि पञ्च इन्द्रियाणि यस्मिंस्तादृशं शरीरं यस्याः सा अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरा–स्वस्वविषयग्रहणसमर्थपूर्णाकारचक्षुरादीन्द्रियविशिष्टेत्यर्थः, 'लक्षणे' ति लक्ष्यन्ते=चिह्न्यन्ते यैस्तानि लक्षणानि=स्त्रीचिह्नानि हस्तस्थविद्याधनजीवितरेखारूपाणि वा, व्यज्यन्ते यैस्तानि व्यञ्जनानि=मषतिलकादीनि, गुणाः=सौशील्यपातिव्रत्यादयो, यद्वा – पूर्वोक्तप्रकारैर्लक्षणैर्व्यज्यन्ते इति लक्षणव्यञ्जनास्ते च

रानी थी। 'सुकुमालपाणिपाया' जिसके हाथ पैर अत्यन्त कोमल थे। 'अहीणपंचिंदियसरीरा' लक्षण और स्वरूपसे परिपूर्ण (पूरी) पांच इन्द्रिया सहित शरीर वाली थी, अर्थात् जिसकी चक्षु आदि पांचों इन्द्रियाँ अपने-अपने विषय ग्रहण करनेमें पूर्ण सावधान, तथा-यथायोग्य आकार वाली थी।

'लक्खणवंजणगुणोववेया' जिनके द्वारा पहचान होती है उनको लक्षण (चिह्न) कहते हैं। अथवा हाथ आदिमें बनी हुई विद्या धन जीवन आदिकी रेखाओंको लक्षण कहते हैं। जिनके द्वारा अभिव्यक्ति (प्रगटपन) होती है, उन तिल और मस आदि को व्यञ्जन कहते हैं, सुशीलता पतिव्रतता आदि गुण हैं, इन तीनों से जो स्त्री युक्त हो उसे लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता कहते हैं, अथवा लक्षणोंके द्वारा व्यक्त

'सुकुमालपाणिपाया' જેના હાથ પગ અત્યંત કોમળ હતા

'अहीणपंचिंदियसरीरा' લક્ષણ તથા સ્વરૂપથી પરિપૂર્ણ પાંચ ઇંદ્રિયો સહિત શરીરવાળી હતી અર્થાત્ જેની ચક્ષુ આદિ પાંચે ઇંદ્રિયો પાત પોતાના ગ્રહણ કરવામાં પૂર્ણ સાવધાન તથા યથાયોગ્ય આકારવાળી હતી

लक्खणवंजणगुणोववेया' જેનાથી ઓળખાય તેને લક્ષણ કહે છે અથવા હાથ આદિમાં બનેલી વિદ્યા ધન આદિની રેખાઓને લક્ષણ (ચિહ્ન) કહે છે જેના દ્વારા અભિવ્યક્તિ (પ્રગટપણું) થાય છે તે તલ અથવા મસ આદિને વ્યંજન કહે છે સુશીલતા પતિવ્રતપણું આદિ ગુણ છે, આ ત્રણેથી જે સ્ત્રી યુક્ત હોય તેને लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता કહે છે અથવા લક્ષણો દ્વારા વ્યક્ત હોવાવાળા ગુણોને લક્ષણ વ્યંજન ગુણ

निर्मलचिरन्तनराजकुलसमुत्पन्नः, निरन्तर=सर्वदा, राज्ञां लक्षणानि=स्वस्तिकशङ्ख चक्रादीनि तैः विराजित=शोभितमङ्गाङ्ग=प्रत्यङ्ग यस्य स तथा, सामुद्रिकशास्त्र-प्रतिपादितराजलक्षणोपेतशरीर इत्यर्थः, 'सीमन्धरः' राजमर्यादापालकः 'मनुष्येन्द्र'=मनुष्येषु=नरेषु इन्द्र इव ऐश्वर्यवान्, 'पुरुषसिंहः'=पुरुषेषु सिंह इव शूर'=शत्रून् प्रति अप्रतिहतवीर्यवान्, 'प्रशान्ते' ति-प्रशान्तानि डिम्बानि=अति वृष्ट्यनावृष्टिमूषकशलभशुकात्यासन्नराजरूपा विघ्नाः, डम्बराणि=परस्परराजप्रजा-विरोधरूपक्लेशा यत्र, तथाभूत राज्य प्रसाधयन्=परिपालयन् विहरति=तिष्ठति ॥९॥

मूलम्-तस्स णं कूणियस्स रन्नो पउमावई नामं देवी होत्था, सोमालपाणिपाया जाव विहरइ ॥ १० ॥

छाया-तस्य खलु कूणिकस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी अभवत्, सुकुमारपाणिपादा यावत् विहरति ॥ १० ॥

टीका-'तस्सण' इत्यादि-तस्य कूणिकस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी अभवत्, तस्या वर्णनमाह-'सुकुमारपाणिपादा' सुकुमार = कोमल पाणिपाद

राजवशमे जन्मे थे। जिनके शरीर के प्रत्येक अवयवमे स्वस्तिक, शख, चक्र आदि राजचिह्न यथास्थान स्थित थे। राजमर्यादाके पालक थे। ऐश्वर्यसम्पन्न होनेसे मनुष्योंके इन्द्र थे। और शत्रुओंको अप्रतिहत शक्ति द्वारा जीतनेसे पुरुषमे सिंहके समान थे। जिनका राज्य अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूषक चूहे, शलभ-टिड्डियाँ, शुक-तोते तथा राजाओ का युद्धादिके कारण गाव के समीप निवास करना, इन छह प्रकार की ईतियों=उपद्रवोंसे मुक्त था। ऐसे राज्यका पालन महाराज कोणिक करते थे। ॥ ९ ॥

'तस्सण' इत्यादि। महाराज कोणिकके पद्मावती नामक महा-

પ્રાચીન રાજવશમા જન્મ્યા હતા જેના શરીરના પ્રત્યેક અવયવમા સ્વસ્તિક, શખ, ચક્ર આદિ રાજચિહ્ન યોગ્ય ઠેકાણે રહેલા હતા રાજમર્યાદાના પાલક હતા ઐશ્વર્ય સપન્ન હોવાથી મનુષ્યોના ઇન્દ્ર હતા તથા શત્રુઓને અપ્રતિહત શક્તિ દ્વારા જીતવાથી પુરુષમા સિંહસમાન હતા જેનુ રાજ્ય અતિવૃષ્ટિ, અનાવૃષ્ટિ, મૂષક (ઉદરો), શલભ (તીડ), શુક (પોપટ) તથા રાજાઓના યુદ્ધ આદિના કારણે ગામની નજીક નિવાસ કરવો, એ છ પ્રકારની ઇતિ એટલે ઉપદ્રવથી મુક્ત હતુ એવા રાજ્યનુ પાલન મહારાજ કોણિક કરતા હતા ॥ ૯ ॥

'तस्सण' ઇત્યાદિ મહારાજ કોણિકને પદ્માવતી નામની મહારાણી હતી

यस्या सा तथा, कोमलकरचरणयुक्ता, अत्र-'यावत्' शब्देन-'अहीणपचिंदियसरीरा, लक्खणवंजणगुणोववेया, माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगा, ससिसोमाकारा, कंता, पियदंसणा, सुरूवा' इत्यन्तविशेषणानामन्यत्रोक्तानां समन्वयो बोद्धव्यः। एषां छाया-अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरा, लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता, मानोन्मानप्रमाणपरिपूर्णसुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्गी, शशिसौम्याकारा, कान्ता, प्रियदर्शना, सुरूपा, इति।

अथैतानि विशेषणानि प्रतिपदं व्याचक्ष्महे-अहीनानि=लक्षणस्वरूपाभ्यां परिपूर्णानि पञ्च इन्द्रियाणि यस्मिंस्तादृशं शरीरं यस्याः सा अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरा-स्वस्वविषयग्रहणसमर्थपूर्णाकारचक्षुरादीन्द्रियविशिष्टेत्यर्थः, 'लक्षणे' ति लक्ष्यन्ते=चिह्न्यन्ते यैस्तानि लक्षणानि=स्त्रीचिह्नानि करतलस्थविद्याधनजीवितरेखारूपाणि वा, व्यज्यन्ते यैस्तानि व्यञ्जनानि=मषतिलकादीनि, गुणाः=सौशील्यपातिव्रत्यादयो, यद्वा - पूर्वोक्तप्रकारैर्लक्षणैर्व्यज्यन्ते इति लक्षणव्यञ्जनास्ते च

रानी थी। 'सुकुमालपाणिपाया' जिसके हाथ पैर अत्यन्त कोमल थे। 'अहीणपचिंदियसरीरा' लक्षण और स्वरूपसे परिपूर्ण (पूरी) पाँच इन्द्रिया सहित शरीर वाली थी, अर्थात् जिसकी चक्षु आदि पाचों इन्द्रियां अपने-अपने विषय ग्रहण करनेमें पूर्ण सावधान, तथा-यथायोग्य आकार वाली थी।

'लक्खणवंजणगुणोववेया' जिनके द्वारा पहचान होती है उनको लक्षण (चिह्न) कहते हैं। अथवा हाथ आदिमें बनी हुई विद्या धन जीवन आदिकी रेखाओंको लक्षण कहते हैं। जिनके द्वारा अभिव्यक्ति (प्रगटपन) होती है, उन तिल और मस आदि को व्यञ्जन कहते हैं, सुशीलता पतिव्रतता आदि गुण हैं, इन तीनों से जो स्त्री युक्त हो उसे लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता कहते हैं, अथवा लक्षणोंके द्वारा व्यक्त

'सुकुमालपाणिपाया' જેના હાથ પગ અત્યંત કોમળ હતા

'अहीणपचिंदियसरीरा' લક્ષણ તથા સ્વરૂપથી પરિપૂર્ણ પાચ ઇંદ્રિયો સહિત શરીરવાળી હતી અર્થાત્ જેની ચક્ષુ આદિ પાચે ઇંદ્રિયો પોત પોતાના ગ્રહણ કરવામા પૂર્ણ સાવધાન તથા યથાયોગ્ય આકારવાળી હતી

'लक्खणवंजणगुणोववेया' જેનાથી ઓળખાય તેને લક્ષણ કહે છે અથવા હાથ આદિમા બનેલી વિદ્યા ધન આદિની રેખાઓને લક્ષણ (ચિહ્ન) કહે છે જેના દ્વારા અભિવ્યક્તિ (પ્રગટપણુ) થાય છે તે તલ અથવા મસ આદિને વ્યજન કહે છે સુશીલતા પતિવ્રતપણુ આદિ ગુણ છે આ ત્રણેથી જે સ્ત્રી યુક્ત હોય તેને लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता કહે છે અથવા લક્ષણો દ્વારા વ્યક્ત હોવાવાળા ગુણોને લક્ષણ વ્યજન ગુણ

गुणाः, अथवा-मोक्तस्वरूपाणा लक्षणव्यञ्जनाना ये गुणास्तैः, उपपेता=समन्विता, अत्र 'उप' 'अप'इत्युपसर्गयोः शकन्ध्वादित्वात्पररूपम् ।

हस्तस्थप्रधानरेखालक्षणानि यथा—

"जस्स हवइ बहुरेहो, हत्थो अहवा रहियसयलरेहो ।
सो अप्पाऊ अहणो, तहा दुही लक्खणन्नुणिद्दिट्ठो ॥ १ ॥
एगेगगुलिमज्झे, होई पणवीससवच्छर आऊ ।
जाणह जीवियरेह, जा य कणिट्ठगुलीमूला ॥ २ ॥
करहाओ वणरेहा, मणिवधत्तो तहेव पिउरेहा ।
गया सव्वा पुण्णा, हवंति चे आउगोत्तधणलाहो ॥ ३ ॥"

छाया-यस्य भवति बहुरेखो, हस्तोऽथवा रहितसकलरेखः ।
सोऽल्पायूरधनस्तथा दुःखी लक्षणज्ञैर्निर्दिष्ट ॥ १ ॥
एकैकाङ्गुलिमध्ये, भवति पञ्चविंशतिवत्सरमायुः ।
जानत जीवितरेखा, या च कनिष्ठाङ्गुलीमूलात् ॥ २ ॥

होने वाले गुणोंको लक्षणव्यञ्जनगुण कहते हैं, और इनसे युक्त स्त्रीको-लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता कहते हैं, अथवा पूर्वोक्त लक्षणो और व्यञ्जनोके गुणोंको लक्षणव्यञ्जनगुण कहते हैं, और इनसे युक्त स्त्रीको लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता कहते हैं। महारानी पद्मावती इन गुणों से युक्त थी।

हाथ की प्रधान रेखाओंके लक्षण इस प्रकार हैं-जिसके हाथमे बहुत रेखाएँ हों या बिल्कुल रेखाएँ न हों वे अल्पायु वाले निर्धन और दुःखी होते हैं, ऐसे, लक्षणके जानने वाले कहते हैं ॥ १ ॥

जो रेखा कनिष्ठ अगुलीके मूलसे निकलती है वह जीवन-आयु-की रेखा है। एक-एक अगुलीमे पचीस-पचीस वर्षकी आयु होती है, अर्थात् यदि आयुकी रेखा एक अगुल तक है तो (२५)

કહે છે તથા તેનાથી યુક્ત જે સ્ત્રી હોય તેને लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता કહે છે અથવા પૂર્વોકત લક્ષણો તથા વ્યજનોના ગુણોને લક્ષણ વ્યજન ગુણ કહે છે તથા તેનાથી યુક્ત જે સ્ત્રી હોય તેને लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता કહે છે મહારાણી પદ્માવતીમા આ ગુણો હતા

હાથની મુખ્ય મુખ્ય રેખાઓના લક્ષણ આ પ્રકારના છે-જેના હાથમા બહુ રેખાઓ હોય અથવા બિલકુલ રેખા ન હોય તે અલ્પ આયુવાળા, નિર્ધન તથા દુખી હોય છે એમ લક્ષણના જાણવાવાળા કહે છે ૧

જે રેખા ટચલી આગળીના મૂળથી નીકળે છે તે જીવન-આયુની રેખા છે એક એક આગળીમા પચીસ-પચીસ વર્ષની આયુ હોય છે અર્થાત્ જો આયુની રેખા એક આગળી સુધી હોય તો પચીસ વર્ષની આયુ, એ હિસાબે આગળ પણ સમજી લેવું જોઇએ.(૨)

करभाङ्कनरेखा, मणिबन्धात्तथैव पितृरेखा ।
एताः सर्वाः पूर्णा, भवन्ति चेदायुर्गोत्रधनलाभः ॥ ३ ॥ इति ।

'माने'ति–मीयते–परिच्छिद्यते पदार्थोऽनेनेति मान, तुलाङ्गुलीप्रस्थादिना तोलन, यद्वा–जलादिपरिपूर्णकुण्डादिप्रविष्टे पुरुषादौ यदा द्रोणपरिमित जलादि निस्सरति तदा स पुरुषादिर्मानवानित्युच्यते तदेव, उन्मानम्=ऊर्ध्वमान, यद्वा–अर्द्धभाररूपः परिमाणविशेषः, प्रमाण=सर्वतो मान, यद्वा–निजाङ्गुलीभिरष्टोत्तरशताङ्गुलिपरिमितोच्छ्रायः, इत्थ च–मान चोन्मान च प्रमाणं चेत्येषा द्वन्द्वे मानोन्मानप्रमाणानि, तैः परिपूर्णानि=सम्पन्नानि, अत एव सु-

पचीस वर्षकी आयु, दो अगुली तक हो तो (५०) पचास वर्षकी आयु, इस हिसाबसे आगे समझना चाहिये ॥ २ ॥

धन की रेखा करम–गुहेसे निकलती है और मणिवन्ध (करके मूल) से पितृरेखा फूटती है। यदि ये सब रेखाएँ पूर्ण हो तो आयु गोत्र प्रतिष्ठा और धनका लाभ होता है ॥ ३ ॥

"माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वगसुदरगा" जिसके द्वारा पदार्थ मापा जाय उसे मान कहते है, अर्थात् तराजू अगुली सेर छटांक आदिके द्वारा तौलना, अथवा कोई पुरुष आदि जलसे सपूर्ण भरे हुए कुण्ड (शरीरप्रमाण गहरा, शरीरप्रमाण लम्बा व शरीरप्रमाण चौडा) आदि में घुसे और उसके घुसनेसे एक द्रोण–(परिमाणविशेष) जल बाहर निकले तो, उस पुरुष आदिको मानयुक्त कहते हैं । मान–शब्दसे इसीका ग्रहण करना चाहिए । मान से अधिकको अथवा अर्धभार रूप परिमाण को उन्मान कहते हैं। सर्वतोमान को, अथवा अपने अगुलीसे (१०८) एक सौ आठ अगुली ऊँचाईको प्रमाण कहते

ધનની રેખા કરભ–ગુહાથી નિકળે છે તથા મણિબંધ (કાંડાના મૂળથી) પિતૃરેખા ફૂટે છે જો આ બધી રેખાઓ પૂર્ણ હોય તો આયુ, ગોત્ર, પ્રતિષ્ઠા તથા ધનનો લાભ થાય છે (૩)

"माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वगसुदरगा" જેના દ્વારા પદાર્થ માપી શકાય તેને માન કહે છે અર્થાત્ ત્રાજવું, આગળ, શેર, છટાંક આદિના દ્વારા તોળવુ અથવા કોઈ પુરુષ વગેરે જલથી સપૂર્ણ ભરેલા કુંડાદિ (શરીર જેટલો ઊંડો તથા લાંબો પહોળો)મા પેસે અને તેના પેસવાથી એક દ્રોણ (પરિમાણ–વિશેષ) જલ બહાર નિકળે તો તે પુરુષ આદિને માનયુક્ત કહે છે માન શબ્દથી આજ વાત સમજવી જોઇએ માનથી અધિકને અથવા અર્ધભાર રૂપ પરિમાણને ઉન્માન કહે છે, સર્વતોમાનને અથવા પોતાની આંગળીથી (૧૦૮) એકસો આઠ આંગળી ઊંચાઇને પ્રમાણ કહે છે આ માન

गुणाः, अथवा-प्रोक्तस्वरूपाणा लक्षणव्यञ्जनाना ये गुणास्तैः, उपपेता=सम न्विता, अत्र 'उप' 'अप'इत्युपसर्गयोः शकन्ध्वादित्वात्पररूपम् ।

हस्तस्थप्रधानरेखालक्षणानि यथा—

"जस्स हवइ बहुरेहो, हत्थो अहवा रहियसयलरेहो ।
सो अप्पाऊ अहणो, तहा दुही लक्खणन्नुणिद्दिट्ठो ॥ १ ॥
एगेगंगुलिमज्झे, होई पणवीसवच्छर आऊ ।
जाणह जीवियरेह, जा य कणिट्ठंगुलीमूला ॥ २ ॥
ऊरहाओ धणरेहा, मणिवधत्तो तहेव पिउरेहा ।
एया सव्वा पुण्णा, हवंति चे आउगोत्तधणलाहो ॥ ३ ॥"

छाया-यस्य भवति बहुरेखो, हस्तोऽथवा रहितसकलरेखः ।
सोऽल्पायूरधनस्तथा दुःखी लक्षणज्ञैर्निर्दिष्टः ॥ १ ॥
एकैकाङ्गुलिमध्ये, भवति पञ्चविंशतिवत्सरमायुः ।
जानत जीवितरेखा, या च कनिष्ठाङ्गुलीमूलात् ॥ २ ॥

होने वाले गुणोको लक्षणव्यञ्जनगुण कहते हैं, और इनसे युक्त स्त्रीको-लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता कहते हैं, अथवा पूर्वोक्त लक्षणो और व्यञ्जनोके गुणोंको लक्षणव्यञ्जनगुण कहते हैं, और इनसे युक्त स्त्रीको लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता कहते हैं। महारानी पद्मावती इन गुणों से युक्त थी।

हाथ की प्रधान रेखाओके लक्षण इस प्रकार हैं-जिसके हाथमें बहुत रेखाएँ हों या बिल्कुल रेखाएँ न हों वे अल्पायु वाले निर्धन और दुःखी होते हैं, ऐसे, लक्षणके जानने वाले कहते हैं ॥ १ ॥

जो रेखा कनिष्ठ अगुलीके मूलसे निकलती है वह जीवन-आयु-की रेखा है। एक-एक अगुलीमें पचीस-पचीस वर्षकी आयु होती है, अर्थात् यदि आयुकी रेखा एक अगुल तक है तो (२५)

કહે છે તથા તેનાથી યુકત જે સ્ત્રી હોય તેને लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता કહે છે અથવા પૂર્વોકત લક્ષણો તથા વ્યજનોના ગુણોને લક્ષણ વ્યજન ગુણ કહે છે તથા તેનાથી યુકત જે સ્ત્રી હોય તેને लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता કહે છે મહારાણી પદ્માવતીમા આ ગુણો હતા

હાથની મુખ્ય મુખ્ય રેખાઓના લક્ષણ આ પ્રકારના છે—જેના હાથમા બહુ રેખાઓ હોય અથવા બિલકુલ રેખા ન હોય તે અલ્પ આયુવાળા, નિર્ધન તથા દુખી હોય છે એમ લક્ષણના જાણવાવાળા કહે છે ૧

જે રેખા ટચલી આગળીના મૂળથી નીકળે છે તે જીવન-આયુની રેખા છે એક એક આગળીમા પચીસ-પચીસ વર્ષની આયુ હોય છે અર્થાત્ જો આયુની રેખા એક આગળી સુધી હોય તો પચીસ વર્ષની આયુ, એ હિસાબે આગળ પણ સમજી લેવું જોઈએ.(૨)

छाया–तत्र खलु चम्पायां नगर्यां श्रेणिकस्य राज्ञः भार्या कूणिकस्य राज्ञः क्षुल्लमाता काली नाम देवी अभवत्, सुकुमारपाणिपादा, यावत् सुरूपा ॥११॥

टीका–'तत्थण' इत्यादि–तत्र = तस्यां चम्पायां नगर्यां 'खलु' इति वाक्यालङ्कारे, श्रेणिकस्य राज्ञः भार्या=पट्टराज्ञी कूणिकस्य राज्ञः क्षुल्लमाता=लघुजननी काली नाम देवी सुकुमारपाणिपादेति पूर्ववत्, अभवत्, पुनः सा कीदृशी? ति विशेषवर्णनमाह–'कोमुइरयणियरविमलपडिपुन्नसोमवयणा, कुडलुल्लिहियगंडलेहा, सिंगारागारचारुवेसा' छाया–कौमुदीरजनिकरविमलपरिपूर्णसौम्यवदना, कुण्डलोल्लिखितगण्डरेखा, शृङ्गारागारचारुवेषा, एतेषां विशेषणानामेव व्याख्या–तथाहि 'कौमुदी'ति–'कु'शब्देन मही प्रोक्ता, 'मुद' हर्षे ततो द्वयम् । धातुज्ञैर्नियमैश्चैव, तेन सा कौमुदी स्मृता ॥ १ ॥

कौ पृथिव्यां मोदन्ते जनाः, अन्तर्भावितण्यर्थत्वाद् हर्षयति प्राणिन इति कुमुदश्चन्द्रस्तस्येयं कौमुदी आश्विन–कार्तिकपूर्णिमाचन्द्रिका, तत्प्रधानो यो रज-

---

'तत्थण' इत्यादि । उस चम्पा नगरीमें श्रेणिक राजाकी पट्टरानी कोणिक राजाकी लघुमाता काली नामकी देवी सुकुमाल कर–चरणवाली यावत् सुरूपा थी ।

फिर इन्हीं काली देवी का वर्णन करते हैं—

'कोमुइरयणियरविमलपडिपुन्नसोमवयणा'

कौमुदी शब्दका अर्थ इस प्रकार है—

"'कु' शब्देन मही प्रोक्ता, 'मुद' हर्षे, ततो द्वयम् ।
धातुज्ञैर्नियमैश्चैव, तेन सा कौमुदी स्मृता ॥ १ ॥"

'कु' शब्दका अर्थ पृथिवी है, 'मुद' शब्दका अर्थ हर्षित करना है, जो पृथ्वीमें रहे हुए जनोंको आनन्द उत्पन्न करे उसको कौमुदी कहते हैं। कौमुदी याने आश्विन कार्तिक मास रूप शरद ऋतुकी

'तत्थण' ઇત્યાદિ તે ચંપા નગરીમાં શ્રેણિક રાજાની પટરાણી કોણિક રાજાની લઘુમાતા કાલી નામે દેવી સુકોમળ હાથ પગવાળી બહુ સ્વરૂપવાન હતી

વળી તે કાલી દેવીનુ વર્ણન કરે છે—

'कोमुइरयणियरविमलपडिपुन्नसोमवयणा'

કૌમુદી શબ્દનો અર્થ આવો છે—

"'कु' शब्देन मही प्रोक्ता, 'मुद' हर्षे, ततो द्वयम् ।
धातुज्ञैर्नियमैश्चैव, तेन सा कौमुदी स्मृता ॥ १ ॥"

'કુ' શબ્દનો અર્થ પૃથ્વી છે 'મુદ' શબ્દનો અર્થ 'હર્ષિત કરવુ' છે જે પૃથ્વી ઉપર રહેલા માણસોને આનંદ કરાવે તેને કૌમુદી કહે છે કૌમુદી અર્થાત્ આસો કાર્તિક

जातानि=यथोचितावयवसन्निवेशवन्ति, सर्वाणि=सकलानि अङ्गानि=अज्यते=व्य ज्यते ज्ञायते प्राणी यैस्तानि मस्तकादारभ्य चरणान्तानि यस्मिन् शरीरे तत् मानोन्मानप्रमाणपरिपूर्णसुजातसर्वाङ्गम्, अत एव तादृश सुन्दरमङ्ग=वपुर्यस्याः सा तथोक्ता, 'शशी'ति शशी=चन्द्रस्तद्वत् सौम्यः=आह्लादक आकारः=स्वरूप यस्याः सा, 'कान्ता' कमनीया, चित्तहारिणी, 'प्रिये'ति प्रिय=दर्शकजनमना ह्लादक दर्शनम्=अवलोकन यस्याः सा प्रियदर्शना, यत्तु-दर्शन रूपमिति व्या ख्यात तत्पूर्वोत्तरोपात्तविशेषणपौनरुक्त्यापत्त्या हेयमेव। यत एवविशेषणविशिष्टाऽत एव सुरूपा=सर्वातिशायिरूपलावण्यवती, रूपेण लावण्यस्याप्युपलक्षितत्वात् ॥१०॥

मूलम्—तत्थणं चपाए नगरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नाम देवी होत्था सोमालपाणिपाया जाव सुरूवा ॥ ११ ॥

हैं। इन मान उन्मान और प्रमाणसे युक्त होनेक कारण सुजात (यथायोग्य अवयवोकी रचनासे सुन्दर) जो सर्वाङ्ग-जिसके द्वारा प्राणी व्यक्त होता है-किसी आकृतिके रूपमे दिखाई देता है उसे, अर्थात् पैरोंसे लेकर मस्तक तकके अवयवोंको अग कहते हैं। इन सब अगोंसे सुन्दर अगवाली महारानी पद्मावती थी।

"ससिसोमाकारा" चन्द्रमाके समान शान्त आकारवाली थी 'कंता' जो कमनीया-चित्त हरण करनेवाली हो उस स्त्रीको 'कान्ता' कहते है।

'पियदसणा' जिसकी दृष्टि दर्शकोंके मनमें आह्लाद उत्पन्न करती हो उस स्त्रीको 'प्रियदर्शना' कहते हैं। इस प्रकार उक्तगुणविशिष्ट होनेसे-वह 'सुरूपा' श्रेष्ठ रूप लावण्यवती थी ॥ १० ॥

ઉન્માન તથા પ્રમાણથી યુક્ત હોવાને કારણે સુજાત (યથાયોગ્ય અવયવોના રચનાથી સુંદર) જે સર્વાંગ, જેના દ્વારા પ્રાણી વ્યક્ત હોય છે-કોઈ આકૃતિના રૂપમાં દેખાય છે તેને અર્થાત્ પગથી માંડીને માથા સુધીના અવયવોને અંગ કહે છે આ બધા અંગોથી સુંદર અંગવાળી મહારાણી પદ્માવતી હતી

'ससिसोमाकारा' ચંદ્રમા સમાન શાંત આકારવાળી હતી 'कंता' જે કમનીયા ચિત્ત હરણ કરવાવાળી હોય તે સ્ત્રીને 'कांता' કહે છે

'पियदसणा' જેની નજર જોનારાના મનમાં આનંદ ઉત્પન્ન કરતી હોય તે સ્ત્રીને 'પ્રિયદર્શના' કહે છે આ પ્રકારે કહેલા ગુણવિશિષ્ટ હોવાથી તે 'सुरूपा' શ્રેષ્ઠ રૂપલાવણ્યવતી હતી (૧૦)

यस्याः सा तथा । वैश्वासिका=सर्वथा विश्वसनीया, सम्मता=सम्मानयोग्या तत्कृतगृहकार्याणा समतत्वात्, बहुमता=पतिदासीदासादिसकलपरिजनसम्मानिता, अनुमता=सकलकार्यानुमतिग्रहणयोग्यत्वात् सकलकुटुम्बममदर्शिनी विप्रियकरणेऽप्यनुकूलेत्यर्थः, भाण्डकरण्डकसमाना=आभरणकरण्डकतुल्या भूषणकरण्डकवत्पतिसुरक्षितेत्यर्थः, तैलकेळेव सुसगोपिता=तैलकेला देशविशेषप्रसिद्धो मृण्मयस्तैलभाजनविशेषः, सोऽतिसौन्दर्येण दृष्टिदोषसभवाद् भङ्गभयाच्च सुष्ठु सगोप्यते, एव सा, चेलपेटेव सुसपरिगृहीता=बहुमूल्यवस्त्रमञ्जुषेव मनागप्यविचलतया स्वायत्तीकृता सा=पूर्वोक्तगुणविशिष्टा काली देवी श्रेणिकेन राजा स्वपतिना सार्द्धं विपुलान्=बहून् नानाविधान् भोगान्=शब्दादिविषयान् भुञ्जाना=अनुभवन्ती विहरति=आस्ते स्म ॥ ११ ॥

मूलम्—तीसेणं कालीए देवोए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था, सोमालपाणिपाए जावसुरूवे ॥ १२ ॥

छाया—तस्याः खलु काल्याः देव्याः पुत्रः कालो नाम कुमारोऽभवत्, सुकुमारपाणिपादः यावत् सुरूपः ॥ १२ ॥

शील आदि गुणके कारण विश्वास योग्य थी। पतिके मनके अनुकूल कार्य करनेसे समान योग्य थी. सकल कुटुम्बके हित करनेसे 'बहुमता' थी, सब कार्य पतिकी समतिसे करनेके कारण 'अनुमता' थी, भूषणकरण्डकके समान 'सुरक्षिता थी। किसी देशमें मिट्टीका तेलपात्र ऐसा सुन्दर होता है कि जिसको दृष्टिदोषसे बचानेके लिये गुप्त रखते हैं, इसी प्रकार वह सुगोपित थी, बहु मूल्य वस्त्रवाली पेटीके समान सर्वथा सुपरिगृहीता थी। ऐसे विशिष्ट गुणवाली काली महारानी श्रेणिक राजा के साथ अनेक प्रकारके शब्दादिविषयोंका अनुभव करती हुई रहती थी ॥ ११ ॥

યોગ્ય હતુ શીલ આદિ ગુણો વડે વિશ્વાસપાત્ર હતી પતિના મનને અનુકૂળ કાર્ય કરવાથી સન્માનયોગ્ય હતી સકલ કુટુબનુ હિત કરવાથી 'बहुमता' હતી બધા કાર્ય પતિની સમતિથી કરવાને કારણે 'अनुमता' હતી ભૂષણકરડક (ઘરેણાના કરડીયા-ડાબલા)ની પેઠે સુરક્ષિત હતી કોઈ દેશમા માટીનુ તેલપાત્ર એવુ સુદર હોય છે કે જેને દૃષ્ટિ દોષથી બચાવવા માટે ગુપ્ત રાખે છે તેની પેઠે આ પણ સુગોપિત હતી, કિંમતી વસ્ત્રવાળી પેટીની પેઠે સર્વથા રાજાથી સુપરિગૃહીતા હતી એવા વિશિષ્ટ ગુણવાળી કાલી મહારાણી શ્રેણિક રાજાની સાથે અનેક પ્રકારના શબ્દાદિ વિષયોનો અનુભવ કરતી રહેતી ॥૧૧॥

निकरश्चन्द्रस्तद्वत् विमल परिपूर्ण सौम्य=रमणीय वदन=मुख यस्याः सा तथा, 'कुण्डले'ति-कुण्डलाभ्या कर्णाभरणविशेषाभ्या उल्लिखिता=घृष्टा गण्डरेखा= कपालतलविरचितकस्तूरीरेखा यस्याः सा तथा, 'शृङ्गारे'ति-शृङ्गारस्य रसविशेस्य अगारमिव अगार, तथा चारुः=सुन्दरः वेशो=नेपथ्य यस्याः सा तथा, इति।

पुनः कोदृशी सेत्याह-'सेणियस्स रण्णो इट्ठा कता पिया मणुन्ना नामधिज्जा वेसासिया सम्मया बहुमया अणुमया भडकरडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसगोविया चेलपेडा इव सुसपरिग्गहिया सा काली देवी सेणिएण रन्ना सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरइ' छाया-'श्रेणिकस्य राज्ञ इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा नामधेया वैश्वासिका समता बहुमता अनुमता भाण्डकरण्डकसमाना तैलकेलेव सुसगोपिता चेलपेटेव सुसपरिगृहीता सा काली देवी श्रेणिकेन राज्ञा सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरति।

इष्टा=अभिलषणीया पातिव्रत्यादिगुणबाहुल्यात्, कान्ता=कमनीया, प्रिया =प्रेमवती सदाप्रेमविषयत्वात् किमन्यदर्शनेनेति परिणामजनिका, मनोज्ञा = पतिमनोविनोदिनी, भावत. पतिभाववती, स्वरूपतः शोभना। नामधेया= प्रशस्तनामवती, नामधार्या, इति वा छाया, तत्र नामधार्य=हृदि धरणीय

पूर्णिमाकी उज्वल चन्द्रिका (चाँदनी) उस चन्द्रिकावाला चन्द्रमाके समान निर्मल सपूर्ण रमणीय मुखवाली थी। 'कुडलुल्लिहियगडलेहा' जिनके घर्षण लगनेसे कपोल पर रही हुई कस्तूरी आदि सुगधी द्रव्यकी रेखा हट गई है ऐसे विशाल कुडलको धारण करनेवाली थी। 'सिंगारागारचारुवेसा', शृगार रसका घर और सुन्दर वेष वाली थी। 'इष्टा' पातिव्रत्य आदि गुणोसे राजा श्रेणिकके अभिलषित थी। 'कान्ता' राजा के मनमें आह्लाद उत्पन्न करनेके कारण कान्ता-कमनीय थी। राजाके प्रेम उत्पन्न करनेके कारण 'प्रिया' थी। राजाके मन प्रसन्न करनेके कारण 'मनोज्ञा' थी तथा प्रशस्त नामवाली थी, उसका नाम हृदयमें धारण करने योग्य था।

માસ રૂપી શરદ ઋતુની પૂર્ણિમાની ઉજ્વલ ચદ્રિકા તે ચદ્રિકાવાળા જે ચદ્રમા સમાન નિર્મલ સપૂર્ણ રમણીય મુખવાળી હતી 'कुडलुल्लिहियगडलेहा'-જેને ઘસારો લાગવાથી ગાલ પર રહેલી કસ્તૂરી આદિ સુગધી દ્રવ્યની રેખા જતી રહી છે એવા વિશાલ કુડલને ધારણ કરવા વાળી હતી 'सिंगारागारचारुवेसा' શ્રૃગાર રસનુ ઘર તથા સુદર વેષ વાળી હતી 'इष्टा' પાતિવ્રત્ય આદિ ગુણોથી રાજા શ્રેણિકની માનીતી હતી 'कान्ता' રાજાના મનમા આનદ ઉત્પન્ન કરનારી હતી તેથી કાન્તા એટલે કમનીય હતી રાજાનો પ્રેમ ઉત્પન્ન કરવાને કારણે 'प्रिया' હતી રાજાનુ મન પ્રસન્ન કરવાવાળી હોવાથી 'मनोज्ञा' હતી તથા પ્રશસ્ત નામવાળી હતી અથવા તેનુ નામ હૃદયમા ધારણ કરવા

यस्याः सा तथा । वैश्वासिका = सर्वथा विश्वसनीया, सम्मता=सम्मानयोग्या तत्कृतगृहकार्याणा समतत्वात्, बहुमता=पतिदासीदासादिसकलपरिजनसम्मानिता, अनुमता=सकलकार्यानुमतिग्रहणयोग्यत्वात् सकलकुटुम्बममदर्शिनी विप्रियकरणेऽप्यनुकूलेत्यर्थ.,भाण्डकरण्डकसमाना=आभरणकरण्डकतुल्या भूषणकरण्डकवत्पतिसुरक्षितेत्यर्थ., तैलकेलेव सुसगोपिता=तैलकेला देशविशेषप्रसिद्धो मृण्मयस्तैलभाजनविशेषः, सोऽतिसौन्दर्येण दृष्टिदोपसभवाद् भङ्गभयाच्च सुष्ठु सगोप्यते, एव सा, चेलपेटेव सुसपरिगृहीता=बहुमूल्यवस्त्रमञ्जुषेव मनागप्यविचलतया स्वायत्तीकृता सा = पूर्वोक्तगुणविशिष्टा काली देवी श्रेणिकन राजा स्वपतिना सार्द्धं विपुलान् = बहून् नानाविधान् भोगान् = शब्दादिविपयान् भुञ्जाना = अनुभवन्ती विहरति=आस्ते स्म ॥ ११ ॥

मूलम्–तीसेणं कालीए देवीए पुत्ते काले नाम कुमारे होत्था, सोमालपाणिपाए जावसुरूवे ॥ १२ ॥

छाया–तस्याः खलु काल्या. देव्या. पुत्रः कालो नाम कुमारोऽभवत्, सुकुमारपाणिपादः यावत् सुरूपः ॥ १२ ॥

शील आदि गुणके कारण विश्वास योग्य थी। पतिके मनके अनुकूल कार्य करनेसे समान योग्य थी. सकल कुटुम्बके हित करनेसे 'बहुमता' थी, सब कार्य पतिकी समतिसे करनेके कारण 'अनुमता' थी, भूषणकरण्डकके समान 'सुरक्षिता थी। किसी देशमें मिट्टीका तेलपात्र ऐसा सुन्दर होता है कि जिसको दृष्टिदोपसे बचानेके लिये गुप्त रखते हैं, इसी प्रकार वह सुगोपित थी, बहु मूल्य वस्त्रवाली पेटीके समान सर्वथा सुपरिगृहीता थी। ऐसे विशिष्ट गुणवाली काली महारानी श्रेणिक राजा के साथ अनेक प्रकारके शब्दादिविषयोंका अनुभव करती हुई रहती थी ॥ ११ ॥

યોગ્ય હતુ શીલ આદિ ગુણો વડે વિશ્વાસપાત્ર હતી પતિના મનને અનુકૂળ કાર્ય કરવાથી સન્માનયોગ્ય હતી સકલ કુટુબનુ હિત કરવાથી 'बहुमता' હતી બધા કાર્ય પતિની સમતિથી કરવાને કારણે 'अनुमता' હતી ભૂષણકરડક (ઘરેણાના કરડીયા–ડાબલા)ની પેઠે સુરક્ષિત હતી કોઇ દેશમા માટીનુ તેલપાત્ર એવુ સુદર હોય છે કે જેને દષ્ટિ દોષથી બચાવવા માટે ગુપ્ત રાખે છે તેની પેઠે આ પણ સુગોપિત હતી, કિંમતી વસ્ત્રવાળી પેટીની પેઠે સર્વથા રાજાથી સુપરિગૃહીતા હતી એવા વિશિષ્ટ ગુણવાળી કાલી મહારાણી શ્રેણિક રાજાની સાથે અનેક પ્રકારના શબ્દાદિ વિષયોનો અનુભવ કરતી રહેતી ॥૧૧॥

टीका-'तीसेण' इत्यादि। तस्याः काल्या देव्याः पुत्रः कालो नाम कुमारोऽभवत्, स कीदृशः? इत्यपेक्षायामाह-सुकुमारपाणिपादः, सुरूपः, इत्य नयोर्व्याख्या पूर्वोक्तदिशाऽवसेया। यावत्करणात् 'पासाइए, दरिसणिज्जे, अभिरूवे, पडिरूवे, इत्येषा सङ्ग्रहो ज्ञेयः। एतच्छाया-प्रासादीयः, दर्शनीयः, अभिरूपः प्रतिरूपः, इति। प्रासादीयः=दर्शकजनमनोमोदजनकः, दर्शनीयः= दृष्टिसुखदत्वेन भूयो भूयो दर्शनयोग्यः, अभिरूपः=मनोज्ञाकृतिकः, प्रतिरूपः= सर्वातिशायिरूपलावण्यवान् इति। अत्र प्रसङ्गवशात् श्रेणिक-कूणिक-वर्णनं, कालकुमारादिवर्णनं च संक्षेपतः कथ्यते-

तत्र किल पुत्रवत्प्रजापालस्य श्रेणिकभूपालस्य राज्ये रत्नद्वयमासीत्- देवसमर्पितहारः १, सेचनकहस्ती २ च, यावत् तदीयराज्यस्य मूल्यं ततो ऽप्यधिकं मूल्यं तद्रत्नद्वयस्य। हारोत्पत्तिरग्रे भणिष्यते। कूणिकस्योत्पत्तिः

'तीसेण' इत्यादि। उस काली महारानी के कोमल कर चरण वाला और सुन्दर रूपवाला 'काल' नामका कुमार था। वह 'कालीकुमार' के नामसे भी प्रसिद्ध है। जो मनको प्रसन्न करनेवाला, देखनेवालोंके नेत्रको आनन्द देनेवाला, सुन्दर आकृतिवाला और अतिशय रूप लावण्यका धारण करनेवाला था।

यहाँ प्रसङ्गवश श्रेणिक, कूणिक तथा काल कुमारका संक्षिप्त वर्णन करते हैं—

वहां पुत्रके समान प्रजाके पालन करनेवाले श्रेणिक राजाके राज्यमें दो रत्न थे-(१)=प्रथम देवसमर्पित हार, (२) दूसरा सेचनक हस्ती था। ये दोनों रत्न इतने मूल्यवान थे कि जो राजाका सम्पूर्ण राज्य भी दे दिया जाय तो भी उनकी कीमत न हो सके। हारकी

'तीसेण' ઇત્યાદિ તે કાલી મહારાણીને કોમળ હાથ પગ વાળો, તથા સુંદર રૂપ વાળો કાલ નામનો કુંવર હતો તે 'કાલીકુમાર' ના નામથી પ્રસિદ્ધ છે જે મનને પ્રસન્ન કરવાવાળો, નજરે જોનારાનાં નેત્રને આનંદ આપવા વાળો, સુંદર આકૃતિ વાળો તથા અતિશય રૂપ લાવણ્યને ધારણ કરવા વાળો હતો

અહીં પ્રસંગવશ રાજા શ્રેણિક, કૂણિક તથા કાલ કુમારનું સંક્ષિપ્ત વર્ણન કરે છે—

ત્યાં પુત્રની પેઠે પ્રજાનું પાલન કરવા વાળા શ્રેણિક રાજાના રાજ્યમાં બે રત્ન હતા (૧)પ્રથમ દેવે આપેલ હાર (૨) બીજુ સેચનક હાથી હતો. આ બેઉ રત્ન એવા કિંમતી હતા કે જો રાજાનું આખું રાજ્ય પણ દઈ દેવાય તો પણ તેની કિંમત ન થઈ શકે

शास्त्रकारेण स्वयं विस्तारेण कथयिष्यते, कालादिकुमाराणां च आरम्भसङ्ग्रामतो नरकयोग्यकर्मोपचयात् तत्प्राप्तिमरणवर्णनं चात्रैव शास्त्रे प्रतिपादयिष्यते ।

कूणिकश्चम्पायां नगर्यां प्राज्यं राज्यं चकार । कूणिकस्य चेल्लनाऽङ्गजातावन्यावपि वैहल्य-वैहायसौ द्वौ भ्रातरावास्ताम् ।

अथ कदाचित् प्रथमकल्पे सकलस्वर्द्धिसम्पन्नः सुरवृन्दवन्दितपदारविन्दोऽपास्ततन्द्रः शक्रेन्द्रः सुधर्मसभायां सम्यक्त्वप्रशंसां चक्रे । तथाहि—

"अंतोमुहुत्तमित्तं वि फासियं हुज्ज जेहिं समत्तं ।
तेसिं अवड्ढपुग्गलपरियट्टो चेव संसारो ॥ १ ॥

उत्पत्ति आगे कही जायगी और कूणिक की उत्पत्ति शास्त्रकार स्वयं विस्तारसे कहेंगे। कालकुमार आदि कुमारोंके आरंभ और संग्रामसे नरकयोग्य कर्मोंके उपचयके कारण उनकी नरकप्राप्तिका और मरणका वर्णन इसी शास्त्रमें किया जायगा।

चम्पा नगरीमें कूणिक राजा निष्कंटक राज्य करता था। उस कूणिक राजाके चेलना मातासे जन्मे हुए-वैहल्य और वैहायस नामके दो भाई थे।

एक समय सौधर्म देवलोकमें संपूर्ण देव ऋद्धिवाले देववृन्दसे वंदितचरण वाले उत्साही शक्रेन्द्रने सुधर्मा सभाके अन्दर इस प्रकार सम्यक्त्वकी प्रशंसा की, जैसे कहा है:—

"अंतोमुहुत्तमित्तं वि फासियं हुज्ज जेहिं समत्तं ।
तेसिं अवड्ढपुग्गलपरियट्टो चेव संसारो ॥ १ ॥"

હારની ઉત્પત્તિ વિષે આગળ કહેવામાં આવશે તથા કૂણિકની ઉત્પત્તિ શાસ્ત્રકાર પોતે વિસ્તારથી કહેશે કાલ કુમાર આદિ કુમારોના આરંભ તથા સંગ્રામથી નરકયોગ્ય કર્મોના ઉપચયના કારણે તેમની નરકપ્રાપ્તિનું તથા મરણનું વર્ણન આ શાસ્ત્રમાં કરવામાં આવશે

કૂણિક રાજા ચંપા નગરીમાં નિષ્કંટક રાજ્ય કરતા હતા તે કૂણિક રાજાને માતા ચેલનાથી જન્મેલા વૈહલ્ય તથા વૈહાયસ નામે બે ભાઈ હતા.

એક સમય સૌધર્મ દેવ લોકમાં સંપૂર્ણ ઋદ્ધિવાળા દેવવૃંદથી વંદિત ચરણવાલા ઉત્સાહી શક્રેન્દ્રે સુધર્મા સભાની અંદર આ પ્રકારે સમ્યક્ત્વની પ્રશંસા કરી જેમ કહ્યું છે કે—

"અંતોમુહુત્તમિત્તં વિ ફાસિયં હુજ્જ જેહિં સમત્તં ।
તેસિં અવડ્ઢપુગ્ગલપરિયટ્ટો ચેવ સંસારો ॥ ૧ ॥"

टीका-'तीसेण' इत्यादि । तस्याः काल्या देव्याः पुत्रः कालो नाम कुमारोऽभवत्, स कीदृशः? इत्यपेक्षायामाह-सुकुमारपाणिपादः, सुरूपः, इत्य नयोर्व्याख्या पूर्वोक्तदिशाऽवसेया । यावत्करणात् 'पासाइए, दरिसणिज्जे, अभिरूवे, पडिरूवे, इत्येपा सङ्ग्रहो ज्ञेयः । एतच्छाया-प्रासादीय., दर्शनीयः, अभिरूपः प्रतिरूप', इति । प्रासादीयः=दर्शकजनमनोमोदजनकः, दर्शनीय'= दृष्टिसुखदत्वेन भूयो भूया दर्शनयोग्यः, अभिरूप =मनोज्ञाकृतिकः, प्रतिरूप.= सर्वातिशायिरूपलावण्यवान् इति । अत्र प्रसङ्गवशात् श्रेणिक-कूणिक-वर्णनं, कालकुमारादिवर्णन च सक्षेपतः कथ्यते-

तत्र किल पुत्रवत्प्रजापालस्य श्रेणिकभूपालस्य राज्ये रत्नद्वयमासीत्- देवसमर्पितहारः १, सेचनकहस्ती २ च, यावत् तदीयराज्यस्य मूल्य ततोऽप्यधिक मूल्य तद्रत्नद्वयस्य । हारोत्पत्तिरग्रे भणिष्यते । कूणिकस्योत्पत्ति.

'तीसेण' इत्यादि । उस काली महारानी के कोमल कर चरण वाला और सुन्दर रूपवाला 'काल' नामका कुमार था । वह 'कालीकुमार' के नामसे भी प्रसिद्ध है । जो मनको प्रसन्न करनेवाला, देखनेवालोके नेत्रको आनन्द देनेवाला, सुन्दर आकृतिवाला और अतिशय रूप लावण्यका धारण करनेवाला था ।

यहाँ प्रसङ्गवश श्रेणिक, कूणिक तथा काल कुमारका संक्षिप्त वर्णन करते हैं—

वहा पुत्रके समान प्रजाके पालन करनेवाले श्रेणिक राजाके राज्यमें दो रत्न थे-(१)=प्रथम देवसमर्पित हार, (२) दूसरा सेचनक हस्ती था । ये दोनों रत्न इतने मूल्यवान थे कि जो राजाका सम्पूर्ण राज्य भी दे दिया जाय तो भी उनकी कीमत न हो सके । हारकी

'तीसेण' ઇત્યાદિ તે કાલી મહારાણીને કોમળ હાથ પગ વાળો, તથા સુંદર રૂપ વાળો કાલ નામનો કુંવર હતો તે 'કાલીકુમાર' ના નામથી પ્રસિદ્ધ છે જે મનને પ્રસન્ન કરવાવાળો, નજરે જોનારાના નેત્રને આનંદ આપવા વાળો, સુંદર આકૃતિ વાળો તથા અતિશય રૂપ લાવણ્યને ધારણ કરવા વાળો હતો

અહીં પ્રસંગવશ રાજા શ્રેણિક, કૂણિક તથા કાલ કુમારનું સંક્ષિપ્ત વર્ણન કરે છે—

ત્યાં પુત્રની પેઠે પ્રજાનું પાલન કરવા વાળા શ્રેણિક રાજાના રાજ્યમાં બે રત્ન હતા (૧)પ્રથમ દેવે આપેલહાર (૨) બીજુ સેચનક હાથી હતો આ બેઉ રત્ન એવા કિંમતી હતા કે જો રાજાનું આખું રાજ્ય પણ દઈ દેવાય તો પણ તેની કિંમત ન થઈ શકે

किञ्च—

(इन्द्रवज्राछन्दः)

"सम्यक्त्वरत्नान्न परं हि रत्नं, सम्यक्त्वबन्धोर्न परोऽस्ति बन्धुः।
सम्यक्त्वमित्रान्न परं हि मित्रं, सम्यक्त्वलाभान्न परोऽस्ति लाभः ॥२॥"

हृदयभूमिकाया मञ्जातः सम्यक्त्वाचारदृढमूलो भावनाजलधारासिच्यमानः श्रुतचारित्रलक्षणधर्मस्कन्धः प्रमाणशाखो नयप्रतिशाखो दयादानक्षमाधृति-

अर्थात्-निर्मल सम्यक्त्व अतुल सुखका निधान है, वैराग्यका धाम (घर) है, संसारके क्षणभंगुर और नाशवान सुखोंकी असारता समझनेके लिए सच्चा विवेकस्वरूप है, भव्य जीवोंके मनुष्य तिर्यञ्च सम्बन्धी और नरक निगोद आदि दुःखोंका उच्छेद करनेवाला है और मोक्ष सुखरूपी वृक्षका बीजस्वरूप है ॥ १ ॥

और भी कहा है'—

"सम्यक्त्वरत्नान्न परं हि रत्नं, सम्यक्त्वबन्धोर्न परोऽस्ति बन्धुः।
सम्यक्त्वमित्रान्न परं हि मित्रं, सम्यक्त्वलाभान्न परोऽस्ति लाभः ॥२॥"

अर्थात्—संसारमें सम्यक्त्व रत्नके समान अन्य रत्न नहीं, सम्यक्त्व बन्धु के समान अन्य बन्धु नहीं। सम्यक्त्व मित्रके समान अन्य मित्र नहीं। सम्यक्त्व लाभके समान अन्य लाभ नहीं ॥ २ ॥

सम्यक्त्व रूपी महावृक्ष हृदय भूमिमें उत्पन्न होता है सम्यक्त्व का आचार जिसका मूल है, भावना जलसे सींचा जाता है,

અર્થાત્-નિર્મળ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખનું નિધાન છે વૈરાગ્યનું ધામ (ઘર) છે સંસારના ક્ષણભંગુર તથા નાશવાન સુખોની અસારતા સમજવા માટે ખરેખર વિવેક સ્વરૂપ છે ભવ્ય જીવોના મનુષ્ય તિર્યંચ સંબંધી તથા નરક નિગોદ આદિ દુઃખના ઉચ્છેદ કરવાવાળુ છે તથા મોક્ષસુખ રૂપી વૃક્ષના બીજ સ્વરૂપ છે (૧)

ફરી પણ કહ્યુ છે કે—

"सम्यक्त्वरत्नान्न परं हि रत्नं, सम्यक्त्वबन्धोर्न परोऽस्ति बन्धुः
सम्यक्त्वमित्रान्न परं हि मित्रं, सम्यक्त्वलाभान्न परोऽस्ति लाभः ॥ २ ॥"

અર્થાત્—સંસારમાં સમ્યક્ત્વ રત્નના જેવું બીજું રત્ન નથી સમ્યક્ત્વ બંધુના જેવો બીજો બંધુ નથી સમ્યક્ત્વ મિત્રના જેવો બીજો કોઇ મિત્ર નથી અને સમ્યક્ત્વ લાભના જેવો બીજો કોઇ લાભ નથી (૨)

સમ્યક્ત્વરૂપી મહાવૃક્ષ હૃદયરૂપ ભૂમિમાં ઉત્પન્ન થાય છે સમ્યક્ત્વનો આચાર જેનું મૂળ છે ભાવનાજળથી જેનું સિંચન થાય છે જેનું શ્રુત તથા ચારિત્ર ધર્મ રૂપી

"अन्तर्मुहूर्तमात्रमपि स्पृष्टं भवेद् यैः सम्यक्त्वम् ।
तेषामपार्द्धपुद्गलपरिवर्तश्चैव संसारः ॥ १ ॥" इति च्छाया,

सम्यक्त्वसद्भावे प्रशमसंवेगादयो गुणाः प्रसभमुदयन्ते तदानीं कथमपि तदुदयं प्रतिरोद्धुं न कश्चन समर्थो भवति ।

उक्तञ्च–

(मालिनीछन्दः)

"असमसुखनिधानं धाम संविग्नतायाः,
भवसुखविमुखत्वोद्दीपने सद्विवेकः ।
नरनरकपशुत्वोच्छेदहेतुर्नराणां
शिवसुखतरुबीजं शुद्धसम्यक्त्वलाभः ॥ १ ॥"

जो भव्य प्राणी अन्तर्मुहूर्त मात्र भी सम्यक्त्वका स्पर्श कर लेता है, वह देशत. न्यून (कम) अर्धपुद्गलपरावर्तनसे अवश्य मोक्ष पाता है। अर्ध पुद्गलपरावर्तनका स्वरूप अणुत्तरोपपातिक सूत्रकी अर्थबोधिनी टीकासे समझ लेना चाहिए

सम्यक्त्वकी प्राप्ति होने पर शम, संवेग आदि गुण आत्मामें सहज उत्पन्न होते हैं, सम्यक्त्वके सद्भावमें गुणोंके विकासको कोई नहीं रोक सकता है। कहा भी है.—

"असमसुखनिधानं धाम संविग्नतायाः,
भवसुखविमुखत्वोद्दीपने सद्विवेकः ।
नरनरकपशुत्वोच्छेदहेतुर्नराणां,
शिवसुखतरुबीजं शुद्धसम्यक्त्वलाभः ॥ १ ॥"

જે ભવ્ય પ્રાણી અન્તર્મુહૂર્ત માત્ર પણ સમ્યક્ત્વનો સ્પર્શ કરી લે છે તે દેશત (થોડુ) ન્યૂન (ઓછા) અર્ધપુદ્ગલપરાવર્તનથી અવશ્ય મોક્ષ પામે છે અર્ધ પુદ્ગલપરાવર્તનનું સ્વરૂપ અનુત્તરોપપાતિક સૂત્રની અર્થબોધિની ટીકાથી સમજી લેવું જોઇએ

સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ થવાથી શમ સંવેગ આદિ ગુણ આત્મામા સહજ ઉત્પન્ન થાય છે સમ્યક્ત્વના સદ્ભાવમા ગુણોના વિકાસને રોકી શકતુ નથી

કહ્યુ પણ છે કે —

"असमसुखनिधानं धाम संविग्नतायाः,
भवसुखविमुखत्वोद्दीपने सद्विवेकः ।
नरनरकपशुत्वोच्छेदहेतुर्नराणां,
शिवसुखतरुबीजं, शुद्धसम्यक्त्वलाभः ॥ १ ॥"

किञ्च—

(इन्द्रवज्राछन्दः)

"सम्यक्त्वरत्नान्न परं हि रत्नं, सम्यक्त्वबन्धोर्न परोऽस्ति बन्धुः ।
सम्यक्त्वमित्रान्न परं हि मित्रं, सम्यक्त्वलाभान्न परोऽस्ति लाभः ॥२॥"

हृदयभूमिकायां सञ्जातः सम्यक्त्वाचारदृढमूलो भावनाजलधारासिच्यमानः श्रुतचारित्रलक्षणधर्मस्कन्धः प्रमाणशाखो नयप्रतिशाखो दयादानक्षमाधृति-

---

अर्थात्-निर्मल सम्यक्त्व अतुल सुखका निधान है, वैराग्यका धाम (घर) है, संसारके क्षणभंगुर और नाशवान सुखोंकी असारता समझनेके लिए सच्चा विवेकस्वरूप है, भव्य जीवोंके मनुष्य तिर्यञ्च सम्बन्धी और नरक निगोद आदि दुःखोंका उच्छेद करनेवाला है और मोक्ष सुखरूपी वृक्षका बीजस्वरूप है ॥ १ ॥

और भी कहा है—

"सम्यक्त्वरत्नान्न परं हि रत्नं, सम्यक्त्वबन्धोर्न परोऽस्ति बन्धुः ।
सम्यक्त्वमित्रान्न परं हि मित्रं, सम्यक्त्वलाभान्न परोऽस्ति लाभः ॥२॥"

अर्थात्-संसारमें सम्यक्त्व रत्नके समान अन्य रत्न नहीं, सम्यक्त्व बन्धु के समान अन्य बन्धु नहीं। सम्यक्त्व मित्रके समान अन्य मित्र नहीं। सम्यक्त्व लाभके समान अन्य लाभ नहीं ॥ २ ॥

सम्यक्त्व रूपी महावृक्ष हृदय भूमिमे उत्पन्न होता है सम्यक्त्व का आचार जिसका मूल है, भावना जलसे सींचा जाता है,

---

અર્થાત્-નિર્મળ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખનું નિધાન છે વૈરાગ્યનું ધામ (ઘર) છે સંસારના ક્ષણભંગુર તથા નાશવાન સુખોની અસારતા સમજવા માટે ખરેખર વિવેક સ્વરૂપ છે ભવ્ય જીવોના મનુષ્ય તિર્યંચ સંબંધી તથા નરક નિગોદ આદિ દુઃખોનો ઉચ્છેદ કરવાવાળું છે તથા મોક્ષસુખ રૂપી વૃક્ષના બીજ સ્વરૂપ છે (૧)

ફરી પણ કહ્યું છે કે—

"सम्यक्त्वरत्नान्न परं हि रत्नं, सम्यक्त्वबन्धोर्न परोऽस्ति बन्धुः
सम्यक्त्वमित्रान्न परं हि मित्रं, सम्यक्त्वलाभान्न परोऽस्ति लाभः ॥ २ ॥"

અર્થાત્-સંસારમાં સમ્યક્ત્વ રત્નના જેવું બીજું રત્ન નથી સમ્યક્ત્વ બંધુના જેવો બીજો બંધુ નથી સમ્યક્ત્વ મિત્રના જેવો બીજો કોઈ મિત્ર નથી અને સમ્યક્ત્વ લાભના જેવો બીજો કોઈ લાભ નથી (૨)

સમ્યક્ત્વરૂપી મહાવૃક્ષ હૃદયરૂપ ભૂમિમાં ઉત્પન્ન થાય છે સમ્યક્ત્વનો આચાર જેનું મૂળ છે ભાવનાજળથી જેનું સિંચન થાય છે જેનું શ્રુત તથા ચારિત્ર ધર્મ રૂપી

"अन्तर्मुहूर्तमात्रमपि स्पृष्ट भवेद् यैः सम्यक्त्वम् ।
तेषामपार्द्धपुद्गलपरिवर्तश्चैव ससारः ॥ १ ॥" इति च्छाया,

सम्यक्त्वसद्भावे प्रशमसवेगादयो गुणाः प्रसभमुदयन्ते तदानीं कथमपि तदुदय प्रतिरोद्धु न कश्चन समर्थो भवति ।

उक्तञ्च—

(मालिनीछन्दः)

"असमसुखनिधान धाम सविग्नतायाः,
भवसुखविमुखत्वोद्दीपने सद्विवेकः ।
नरनरकपशुत्वोच्छेदहेतुर्नराणा
शिवसुखतरुबीज शुद्धसम्यक्त्वलाभ ॥ १ ॥"

जो भव्य प्राणी अन्तर्मुहूर्त मात्र भी सम्यक्त्वका स्पर्श कर लेता है, वह देशत. न्यून (कम) अर्धपुद्गलपरावर्तनसे अवश्य मोक्ष पाता है। अर्ध पुद्गलपरावर्तनका स्वरूप अणुत्तरोपपातिक सूत्रकी अर्थबोधिनी टीकासे समझ लेना चाहिए

सम्यक्त्वकी प्राप्ति होने पर शम, सवेग आदि गुण आत्मामें सहज उत्पन्न होते हैं, सम्यक्त्वके सद्भावमें गुणोंके विकासको कोई नहीं रोक सकता है। कहा भी हैः—

"असमसुखनिधान धाम सविग्नतायाः,
भवसुखविमुखत्वोद्दीपने सद्विवेक ।
नरनरकपशुत्वोच्छेदहेतुर्नराणा,
शिवसुखतरुबीज शुद्धसम्यक्त्वलाभ ॥ १ ॥"

જે ભવ્ય પ્રાણી અન્તર્મુહૂર્ત માત્ર પણ સમ્યક્ત્વનો સ્પર્શ કરી લે છે તે દેશત (થોડુ) ન્યૂન (ઓછા) અર્ધપુદ્ગલપરાવર્તનથી અવશ્ય મોક્ષ પામે છે અર્ધ પુદ્ગલપરાવર્તનનું સ્વરૂપ અનુત્તરોપપાતિક સૂત્રની અર્થબોધિની ટીકાથી સમજી લેવું જોઈએ

સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ થવાથી શમ સવેગ આદિ ગુણ આત્મામા સહજ ઉત્પન્ન થાય છે સમ્યક્ત્વના સદ્ભાવમા ગુણોના વિકાસને રોકી શકતુ નથી

કહ્યુ પણ છે કે —

"असमसुखनिधान धाम सविग्नतायाः,
भवसुखविमुखत्वोद्दीपने सद्विवेक ।
नरनरकपशुत्वोच्छेदहेतुर्नराणा,
शिवसुखतरुबीज, शुद्धसाम्यक्त्वलाभ' ॥ १ ॥"

किञ्च—

(इन्द्रवज्राछन्दः)

"सम्यक्त्वरत्नान्न परं हि रत्नं, सम्यक्त्वबन्धोर्न परोऽस्ति बन्धुः ।
सम्यक्त्वमित्रान्न परं हि मित्रं, सम्यक्त्वलाभान्न परोऽस्ति लाभः ॥२॥"

हृदयभूमिकायां सञ्जातः सम्यक्त्वाचारदृढमूलो भावनाजलधारासिच्य-
मानः श्रुतचारित्रलक्षणधर्मस्कन्धः प्रमाणशाखो नयप्रतिशाखो दयादानक्षमाधृति-

अर्थात्-निर्मल सम्यक्त्व अतुल सुखका निधान है, वैराग्यका धाम (घर) है, संसारके क्षणभंगुर और नाशवान सुखोंकी असारता समझनेके लिए सच्चा विवेकस्वरूप है, भव्य जीवोंके मनुष्य तिर्यञ्च सम्बन्धी और नरक निगोद आदि दुःखोंका उच्छेद करनेवाला है और मोक्ष सुखरूपी वृक्षका बीजस्वरूप है ॥ १ ॥

और भी कहा है —

"सम्यक्त्वरत्नान्न परं हि रत्नं, सम्यक्त्वबन्धोर्न परोऽस्ति बन्धुः ।
सम्यक्त्वमित्रान्न परं हि मित्रं, सम्यक्त्वलाभान्न परोऽस्ति लाभः ॥२॥"

अर्थात्-संसारमें सम्यक्त्व रत्नके समान अन्य रत्न नहीं, सम्यक्त्व बन्धु के समान अन्य बन्धु नहीं। सम्यक्त्व मित्रके समान अन्य मित्र नहीं। सम्यक्त्व लाभके समान अन्य लाभ नहीं ॥ २ ॥

सम्यक्त्व रूपी महावृक्ष हृदय भूमिमें उत्पन्न होता है सम्यक्त्व का आचार जिसका मूल है, भावना जलसे सींचा जाता है,

અર્થાત્-નિર્મળ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખનું નિધાન છે વૈરાગ્યનું ધામ (ઘર) છે સંસારના ક્ષણભંગુર તથા નાશવાન સુખોની અસારતા સમજવા માટે ખરેખર વિવેક સ્વરૂપ છે ભવ્ય જીવોના મનુષ્ય તિર્યંચ સંબંધી તથા નરક નિગોદ આદિ દુઃખનો ઉચ્છેદ કરવાવાળું છે તથા મોક્ષસુખ રૂપી વૃક્ષના બીજ સ્વરૂપ છે (૧)

ફરી પણ કહ્યું છે કે —

"सम्यक्त्वरत्नान्न परं हि रत्नं, सम्यक्त्वबन्धोर्न परोऽस्ति बन्धुः
सम्यक्त्वमित्रान्न परं हि मित्रं, सम्यक्त्वलाभान्न परोऽस्ति लाभः ॥ २ ॥"

અર્થાત્-સંસારમાં સમ્યક્ત્વ રત્નના જેવું બીજું રત્ન નથી સમ્યક્ત્વ બંધુના જેવો બીજો બંધુ નથી સમ્યક્ત્વ મિત્રના જેવો બીજો કોઇ મિત્ર નથી અને સમ્યક્ત્વ લાભના જેવો બીજો કોઇ લાભ નથી (૨)

સમ્યક્ત્વરૂપી મહાવૃક્ષ હૃદયરૂપ ભૂમિમાં ઉત્પન્ન થાય છે સમ્યક્ત્વનો આચાર જેનું મૂળ છે ભાવનાજળથી જેનું સિંચન થાય છે જેનું શ્રુત તથા ચારિત્ર ધર્મ રૂપી

दलोशीलभविजनमनोमिलिन्दवृन्दगुञ्जितजिनवचनप्रेमप्रसूनः शास्त्रवृतिकः (वृति-'वाड' इति भाषायाम्) स्वर्गापवर्गसुखफलो निजात्मकल्याणरसः सम्यक्त्वमहामही रुहो मिथ्यात्वगजेन्द्रादिकृतोपसर्गकुशास्त्रकुतर्कमहावातशतसहस्रैरप्युन्मूलयितुमशक्यः।

इति विस्तरेणास्य वर्णनमाचाराङ्गसूत्रस्या (चतुर्थाध्ययनेऽऽचारचिन्तामणिटीकातोऽवसेयम् ।

एवं सम्यक्त्वप्रशंसां कुर्वाणः सुरपतिरवधिज्ञानेन जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रे श्रेणिकभूपं ददर्श । सम्यक्त्वगुणशालिनं राजनयपालिनं तं विलोक्य प्रफुल्लवदनः

जिसके श्रुत और चारित्र धर्मरूपी स्कंध हैं, प्रत्यक्ष आदि प्रमाणरूप जिसकी शाखाएँ हैं, नयरूप प्रतिशाखाएँ हैं, दया, दान, क्षमा, धृति और शीलरूप पत्र-पत्ते हैं, जिनवचनका प्रेमरूप सुन्दर पुष्प है, जिस पर भव्य जीवोंके मनरूपी भ्रमरवृन्द गूंज रहे हैं, शास्त्ररूपी वाडसे सुरक्षित है, स्वर्ग और मोक्षके सुखरूप फल है, निज आत्माके कल्याणरूप रस है, ऐसे सुदृढ सम्यक्त्वरूपी महावृक्षको मिथ्यात्वरूपी महागजकृत उपसर्ग और कुशास्त्र कुतर्करूपी हजारो महावायु नहीं उखाड सकता ।

सम्यक्त्वका विस्तृत वर्णन आचाराङ्ग सूत्रके चौथे अध्ययनकी आचारचिन्तामणि टीकामे किया गया है ।

इस प्रकार सम्यक्त्व प्रशंसा करते हुए सुरपति सुधर्मा इन्द्रने अवधिज्ञान द्वारा जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमे श्रेणिक राजाको देखा । सम्यक्त्वगुणशाली राजनीति को पालनेवाले राजाको देखकर प्रसन्नमुख होकर

સ્કંધ (થડ) છે પ્રત્યક્ષ આદિ પ્રમાણ રૂપ જેની શાખાઓ છે નયરૂપી પ્રતિ-શાખાઓ છે દયા, દાન ક્ષમા, ધૃતિ તથા શીલરૂપ પાંદડા છે જિન વચનના પ્રેમરૂપી સુંદર પુષ્પ છે જેના ઉપર ભવ્ય જીવોના મનરૂપી ભમરાના વૃંદ ગુંજન કરી રહ્યા છે શાસ્ત્રરૂપી વાડથી સુરક્ષિત છે સ્વર્ગ તથા મોક્ષના સુખરૂપી ફલ છે પોતાના આત્માના કલ્યાણરૂપી રસ છે એવા સુદૃઢ સમ્યક્ત્વરૂપી મહાવૃક્ષને મિથ્યાત્વરૂપી મહાગજકૃત ઉપસર્ગો તથા કુશાસ્ત્ર કુતર્ક રૂપી હજારો મહાવાત ઉખેડી નહિ શકે

સમ્યક્ત્વનું વિસ્તારથી વર્ણન આચારાંગ સૂત્રના ચોથા અધ્યયનની આચાર ચિંતામણિ ટીકામાં કરેલું છે

આ પ્રકારે સમ્યક્ત્વની પ્રશંસા કરતા થકા સુરપતિ સુધર્મા ઈન્દ્રે અવધિજ્ઞાન દ્વારા જંબૂ દ્વીપના ભરત ક્ષેત્રમાં શ્રેણિક રાજાને જોયા સમ્યક્ત્વગુણશાલી રાજનીતિનું પાલન કરવાવાળા રાજાને જોઈને પ્રસન્નમુખ થઈ પોતે સમ્યક્ત્વગુણથી નિર્મળ ઈન્દ્ર,

कमलः सम्यक्त्वगुणविमलः सादरं भूयो भूयोऽवाप्तसम्यक्त्वादिगुणश्रेणिक श्रेणिकं सुधर्माख्याया स्वदेवसभायां प्रशशंस । इत्थं पुरन्दरास्यशैलनिस्सृता श्रेणिक-सम्यक्त्वप्रशंसासरित् सकलसुरसदस्य श्रवणसिन्धुमवगाहत ।

देवाश्च तदीयसम्यक्त्वादिगुणगणमहिमानं श्रावं श्रावमममन्दानन्दतुन्दिला जातकौतूहलाः श्रेणिकं धन्यममन्यन्त । तदा द्वौ मिथ्यात्विदेवौ शक्रवचनं न श्रद्दधतुः । श्रेणिकं परीक्षितुं मनुष्यलोके तदन्तिकं समागतौ । उक्तञ्च-

" मुहेंदुदिव्व मुहवत्थिगो हि सग्गा सुरो सेणियरायमागा ।
परिक्खिउ साहुसुवेसधारी अज्जासमेओ य सरोतडे सो ॥ १ ॥"

छाया-' मुखेन्दुदीव्यन्मुखवस्त्रिको हि, स्वर्गात्सुरः श्रेणिकराजमागात् ।
परीक्षितुं साधुसुवेषधारी, आर्यासमेतश्च सरस्तटेऽसौ ॥ १ ॥'

स्वयं सम्यक्त्व गुणसे निर्मल इन्द्र, आदरके साथ बार बार सम्यक्त्व-गुणधारी श्रेणिक राजाकी प्रशंसा अपनी सुधर्मसभामें करने लगे। इस प्रकार राजा श्रेणिककी प्रशंसारूपी नदी इन्द्रके मुखरूपी पर्वतसे निकल कर सभामें बैठे हुए सब देवोंके कर्णरूपी सागरमें पहुची।

देवता लोग उनके सम्यक्त्व आदि गुणोंकी महिमा सुन-सुन कर अपूर्व आनन्दसे भर गए और आश्चर्यचकित होकर श्रेणिक राजाको धन्यवाद देने लगे उस समय दो मिथ्यात्वी देवोंने इन्द्रके वचनपर श्रद्धा नहीं की और राजा श्रेणिककी परीक्षा लेनेके लिये मनुष्य लोकमें उनके पास आये । जैसे कहा है'—

मुहेंदुदिव्व मुहवत्थिगो हि, सग्गा सुरो सेणियरायमागा ।
परिक्खिउ साहुसुवेसधारी, अज्जासमेओ य सरोतडे सो ॥ १ ॥

આદર સહિત વારવાર પોતાની સુધર્મા સભામા સમ્યક્ત્વગુણધારી શ્રેણિક રાજાની પ્રશંસા કરવા લાગ્યા ' એ પ્રકારે રાજા શ્રેણિકની પ્રશંસારૂપી નદી ઇન્દ્રના મુખરૂપી પર્વતથી નિકળી સભામા બેઠેલા સર્વ દેવોના કર્ણરૂપી સાગરમા પહોચી

દેવતા લોકો તેના સમ્યક્ત્વ આદિ ગુણોનો મહિમા સાભળી સાભળીને અપૂર્વ આનંદથી ભરપૂર થઈ ગયા તથા આશ્ચર્ય ચકિત થઈને શ્રેણિક રાજાને ધન્યવાદ દેવા લાગ્યા

તે સમયે બે મિથ્યાત્વી દેવોએ ઇંદ્રના વચન ઉપર શ્રદ્ધા ન કરી અને રાજા શ્રેણિકની પરીક્ષા લેવા માટે મનુષ્ય લોકમા તેની પાસે આવ્યા જેમ કહ્યુ છે કે—

મુહેંદુદિવ્વ મુહવત્થિગો હિ સગ્ગા સુરો સેણિયરાયમાગા ।
પરિક્ખિઉ સાહુસુવેસધારી, અજ્જાસમેઓ ય સરોતડે સો ॥ १ ॥

दलोशीलभविजनमनोमिलिन्दवृन्दगुञ्जितजिनवचनप्रेमप्रसून' शास्त्रवृतिक', (वृति-'वाड' इति भाषायाम्) स्वर्गापवर्गसुखफलो निजात्मकल्याणरस, सम्यक्त्वमहामहीरुहो मिथ्यात्वगजेन्द्रादिकृतोपसर्गकुशास्त्रकुतर्कमहावातशतसहस्रैरप्युन्मूलयितुमशक्यः।

इति विस्तरेणास्य वर्णनमाचाराङ्गसूत्रस्या (चतुर्थाध्ययनेऽऽचारचिन्तामणिटीकातोऽवसेयम् ।

एव सम्यक्त्वप्रशसा कुर्वाण' सुरपतिरवधिज्ञानेन जम्बूद्वीपभरतक्षेत्र श्रेणिकभूप ददर्श । सम्यक्त्वगुणशालिन राजनयपालिन त विलोक्य प्रफुल्लवदन

जिसके श्रुत और चारित्र धर्मरूपी स्कध हैं, प्रत्यक्ष आदि प्रमाणरूप जिसकी शाखाएँ हैं, नयरूप प्रतिशाखाएँ है, दया, दान, क्षमा, धृति और शीलरूप पत्र-पत्ते हैं, जिनवचनका प्रेमरूप सुन्दर पुष्प है, जिस पर भव्य जीवोंके मनरूपी भ्रमरवृन्द गूंज रहे है, शास्त्ररूपी वाडसे सुरक्षित है, स्वर्ग और मोक्षके सुखरूप फल है, निज आत्माके कल्याणरूप रस है, ऐसे सुदृढ सम्यक्त्वरूपी महावृक्षको मिथ्यात्वरूपी महागजकृत उपसर्ग और कुशास्त्र कुतर्करूपी हजारो महावायु नही उखाड सकता ।

सम्यक्त्वका विस्तृत वर्णन आचाराङ्ग सूत्रके चौथे अध्ययनकी आचारचिन्तामणि टीकामे किया गया है ।

इस प्रकार सम्यक्त्व प्रशसा करते हुए सुरपति सुधर्मा इन्द्रने अवधिज्ञान द्वारा जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमे श्रेणिक राजाको देखा । सम्यक्त्वगुणशाली राजनीति को पालनेवाले राजाको देखकर प्रसन्नमुख होकर

સ્કધ (થડ) છે પ્રત્યક્ષ આદિ પ્રમાણ રૂપ જેની શાખાઓ છે નયરૂપી પ્રતિ-શાખાઓ છે દયા, દાન ક્ષમા, ધૃતિ તથા શીલરૂપ પાદડા છે જિન વચનના પ્રેમરૂપી સુદર પુષ્પ છે જેના ઉપર ભવ્ય જીવોના મનરૂપી ભમરાના વૃદ ગુજન કરી રહ્યા છે શાસ્ત્રરૂપી વાડથી સુરક્ષિત છે સ્વાર્ગ તથા મોક્ષના સુખરૂપી ફ્લ છે પોતાના આત્માના કલ્યાણરૂપી રસ છે એવા સુદૃઢ સમ્યક્ત્વરૂપી મહાવૃક્ષને મિથ્યાત્વરૂપી મહાગજકૃત ઉપસર્ગો તથા કુશાસ્ત્ર કુતર્ક રૂપી હજારો મહાવાત ઉખેડી નહિ શકે

સમ્યક્ત્વનુ વિસ્તારથી વર્ણન આચારાગ સૂત્રના ચોથા અધ્યયનની આચાર ચિંતામણિ ટીકામા કરેલુ છે

આ પ્રકારે સમ્યક્ત્વની પ્રશસા કરતા થકા સુરપતિ સુધર્મા ઈન્દ્રે અવધિજ્ઞાન દ્વારા જમ્બૂ દ્વીપના ભરત ક્ષેત્રમા શ્રેણિક રાજાને જોયા સમ્યક્ત્વગુણશાલી રાજનીતિનુ પાલન કરવાવાળા રાજાને જોઈને પ્રસન્નમુખ થઈ પોતે સમ્યક્ત્વગુણથી નિર્મળ ઈન્દ્ર,

ततः श्रेणिकोऽवदत्-त्वादृशाना दम्भ दुराचार च वीक्ष्य मम धर्मानुरागो नापगच्छति, पृथिवी पाताल गच्छेत्, सूर्यः पश्चिमदिश्युदियात्, चन्द्रो वह्निं वर्षेत्, वह्निः शीतलो भवेत्, अमृत विष भवेत् तदपि मम सम्यक्त्व न प्रचलेत्। ततो देवद्वयमवधिज्ञानेन राजान सम्यक्त्वधर्मे निश्चल विज्ञाय पुनः पुनः स्तौति। तथाहि—

(इन्द्रवज्रा)

"सम्यक्त्वधारी च परोपकारी,
धन्योऽसि राजन्! कृतपुण्यराशि।
तुल्यस्त्वया कोऽपि न भूतलेऽस्मिन्,
सर्वं समक्ष त्वयि दृष्टमेतत्॥ १॥

ऐसे साधुके वचन सुनकर राजा क्रोधित हो बोले—

निर्लज्ज! छोड इस दुष्कृत्यको, नही तो दण्ड दूगा। यह सुनकर वह साधुवेषधारी बोला? किसको दण्ड देते है? गौतमादि चौदह हजार मुनि और चन्दनबाला आदि छत्तीश हजार साध्वियाँ सभी अन्तर दुराचारी और बाहर साधुपनका आडम्बर रखते हैं तो मुझ अकेलेपर ही क्यो आक्षेप करते हो?।

यह सुनकर राजा श्रेणिक बोले-तुम्हारे जैसे दम्भी और दुराचारीको देख कर मेरा धर्मका अनुराग नही हट सकता है, अर्थात जिनवचनपर स्थित मेरी दृढ श्रद्धा नहीं हट सकती है, पृथ्वी पातालमे चली जाय, सूर्य पश्चिममें उदय हो जाय, चन्द्र अग्नि बरसावे, अग्नि शीतल बन जाय, अमृत विष बने तो भी मेरा सम्यक्त्व विचलित नही हो सकता।

એવા સાધુના વચન સાભળી રાજા ક્રોધ કરીને બોલ્યા —

નિર્લજ્જ! છોડી દે આ દુષ્કૃત્યને, નહિ તો દડ કરીશ આ સાભળીને તે સાધુવેષધારી બોલ્યો-દડ કોને આપશો? ગૌતમ આદિ ચૌદ હજાર મુનિ તથા ચદન બાળા આદિ છત્રીસ હજાર સાધ્વીઓ તમામ અન્તર દુરાચારી તથા બહાર સાધુપણાનો આડબર રાખે છે તો મારા એકલાના ઉપરજ કેમ આક્ષેપ કરો છો?

આ સાભળીને રાજા શ્રેણિક બોલ્યા-તમારા જેવા દભી તથા દુરાચારીને જોઇને મારો ધર્મ ઉપરનો અનુરાગ ડગી શકશે નહિ, અર્થાત્ જિનવચન ઉપર મારી દૃઢ શ્રદ્ધા વિચલિત ન થઇ શકે પૃથ્વી પાતાળમા ચાલી જાય, સૂર્ય પશ્ચિમમા ઊગે, ચદ્ર અગ્નિ વરસાવે, અગ્નિ ઠડો બની જાય, અમૃત ઝેર બની જાય તો પણ મારૂ સમ્યક્ત્વ ચલાયમાન થઇ શકે નહિ

ततः साधुरूपधारी सुरो जलाशये जालं वितत्य स्थितः, आर्यिकारूपधारी तत्र सरस्तीरे तिष्ठति स्म। अत्रान्तरे श्रेणिको राजा पवनसेवनार्थं समागतः। तत्र मत्स्यं हन्तुमुद्यतं साधुं विलोक्यावोचत्-किमिति साधुर्भूत्वा दुराचरसि ?।

स सरोपं तमुवाच-इयमार्यिका दोहदवतीत्यतो मीनमांसं बुभुक्षमाणाऽस्तीत्येतदर्थं जालं विस्तारयामि, त्वमितो गच्छ राजन्! किं ते प्रयोजनमेतादृशप्रश्नेन ?, इति तद्वचनं राजा श्रुत्वा कोपारुणनयनोऽवदत् निर्लज्ज! कृत्यमिदं त्यज, अन्यथा देहदण्डं ते दास्यामि। इति श्रुत्वाऽसौ साधुरवोचत्-गौतमादयश्चतुर्दशसहस्रमुनयश्चन्दनबालादयः षट्त्रिंशत्सहस्रार्यिकाश्च सर्वे अन्तर्दुराचारिणो बहिः साधुवेषधारिणः सन्ति तर्हि किं मामधिक्षिपसि ?।

उन दोनों देवोने वैक्रिय शक्तिसे साधु और साध्वीका रूप धारण किया मुखपर सदोरकमुखवस्त्रिका बाधी और कक्ष प्रदेश (काख) मे रजोहरण लिया, इस प्रकार वेष बनाकर सरोवरके किनारे जा खडे हुए। उनमेसे एक देव साधुरूप धारण किया हुआ जाल फैलाकर सरोवरके तटपर खडा होगया और दूसरा साध्वी रूप धारण किया हुआ वही उसके समीपमे खडा हो गया। उसी अवसरपर महाराज श्रेणिक क्रीडाके निमित्त घूमते हुए वहाँ आ पहूँचे उन्होंने मछली मारनेके लिए उद्यत साधुको देखकर कहा ओह! तुम साधु होकर यह दुष्ट आचरण क्यों करते हो ? तब वह साधुवेषधारी क्रोधित होकर बोला-यह आर्या गर्भवती होनेसे इसको मछली खानेका दोहद उत्पन्न हुआ है इस लिए मछलिया मारनेको जाल फैलाये खडा हूँ, जाइये-राजन्! इससे आपका क्या प्रयोजन है ?

તે બન્ને દેવોએ વૈક્રિય શકિતથી સાધુ તથા સાધ્વીનુ રૂપ ધારણ કર્યું મુખ ઉપર દોરાસહિત મુખવસ્ત્રિકા બાધી તથા કાખમા રજોહરણ લીધુ એ પ્રકારનો વેષ લઇ તળાવને કાંઠે જઇ ઊભા રહ્યા એમાથી એક દેવ સાધુનું રૂપ ધારણ કરીને જાળ ફેલાવી સરોવરના તટ ઉપર ઊભો રહ્યો તથા બીજો સાધ્વીનુ રૂપ ધારણ કરી ત્યાજ તેની પાસે ઊભો રહ્યો તે વખતે મહારાજ શ્રેણિક ક્રીડા નિમિત્તે ફરતા ફરતા ત્યા આવી પહોચ્યા તેમણે માછલી મારવા માટે ઉદ્યત થયેલા સાધુને જોઇને કહ્યુ ઓહ! તમે સાધુ થઇને આ દુષ્ટ આચરણ શા માટે કરો છો? ત્યારે તે સાધુવેષધારી ક્રોધ કરીને બોલ્યો-આ આર્યા ગર્ભવતી હોવાથી તેને માછલી ખાવાનો ડહોળો થયો છે એટલા માટે માછલી મારવાને જાળ ફેલાવીને ઊભો છુ જાઓ રાજન્! એનું આપને શુ પ્રયોજન છે?

ततः श्रेणिकोऽवदत्-त्वादृशाना दम्भ दुराचार च वीक्ष्य मम धर्मानुरागो नापगच्छति, पृथिवी पाताल गच्छेत्, सूर्यः पश्चिमदिश्युदियात्, चन्द्रो वह्नि वर्षेत्, वह्निः शीतलो भवेत्, अमृत विष भवेत् तदपि मम सम्यक्त्व न प्रचलेत्। ततो देवद्वयमवधिज्ञानेन राजान सम्यक्त्वधर्मे निश्चल विज्ञाय पुनः पुनः स्तौति। तथाहि—

(इन्द्रवज्रा)

"सम्यक्त्वधारी च परोपकारी,
धन्योऽसि राजन्! कृतपुण्यराशिः।
तुल्यस्त्वया कोऽपि न भूतलेऽस्मिन्,
सर्व समक्ष त्वयि दृष्टमेतत् ॥ १ ॥

ऐसे साधुके वचन सुनकर राजा क्रोधित हो बोले—

निर्लज्ज! छोड इस दुष्कृत्यको, नही तो दण्ड दूगा। यह सुनकर वह साधुवेषधारी बोला? किसको दण्ड देते हैं? गौतमादि चौदह हजार मुनि और चन्दनबाला आदि छत्तीश हजार साध्वियाँ सभी अन्तर दुराचारी और बाहर साधुपनका आडम्बर रखते हैं तो मुझ अकेलेपर ही क्यों आक्षेप करते हो?।

यह सुनकर राजा श्रेणिक बोले-तुम्हारे जैसे दम्भी और दुराचारीको देख कर मेरा धर्मका अनुराग नही हट सकता है, अर्थात् जिनवचनपर स्थित मेरी दृढ श्रद्धा नही हट सकती है, पृथ्वी पातालमें चली जाय, सूर्य पश्चिममें उदय हो जाय, चन्द्र अग्नि बरसावे, अग्नि शीतल बन जाय, अमृत विष बने तो भी मेरा सम्यक्त्व विचलित नही हो सकता।

એવા સાધુના વચન સાભળી રાજા ક્રોધ કરીને બોલ્યા —

નિર્લજ્જ! છોડી દે આ દુષ્કૃત્યને, નહિ તો દડ કરીશ આ સાભળીને તે સાધુવેષધારી બોલ્યો-દડ કોને આપશો? ગૌતમ આદિ ચૌદ હજાર મુનિ તથા ચદનબાળા આદિ છત્રીસ હજાર સાધ્વીઓ તમામ અન્તર દુરાચારી તથા બહાર સાધુપણાનો આડબર રાખે છે તો મારા એકલાના ઉપરજ કેમ આક્ષેપ કરો છો?

આ સાભળીને રાજા શ્રેણિક બોલ્યા-તમારા જેવા દભી તથા દુરાચારીને જોઇને મારો ધર્મ ઉપરનો અનુરાગ ડગી શકશે નહિ, અર્થાત્ જિનવચન ઉપર મારી દૃઢ શ્રદ્ધા વિચલિત ન થઇ શકે પૃથ્વી પાતાળમા ચાલી જાય, સૂર્ય પશ્ચિમમા ઊગે, ચદ્ર અગ્નિ વરસાવે, અગ્નિ ઠડો બની જાય, અમૃત ઝેર બની જાય તો પણ મારૂ સમ્યક્ત્વ ચલાયમાન થઇ શકે નહિ

अन्यच्च—

शार्दूलविक्रीडितम् ।

" सम्यक्त्व विमल पर दृढतर यद्वर्णित तावक,
देवेन्द्रेण ततोऽधिक त्वयि सदा तद् भूपते ! राजते ।
दान दीनदयालुता जिनवचोमर्मज्ञता साधुता,
धर्मैकप्रियता गुरौ विनयिता देवेऽनुरागस्तथा ॥ २ ॥

उसके पश्चात उन दोनों देवोने अवधिज्ञान द्वारा राजाको सम्यक्त्व धर्मके अन्दर निश्चल जानकर बारम्बार इस प्रकार स्तुति करने लगे—

" सम्यक्त्वधारी च परोपकारी, धन्योऽसि राजन् ! कृतपुण्यराशिः ।
तुल्यस्त्वया कोऽपि न भूतलेऽस्मिन्, सर्व समक्ष त्वयि दृष्टमेतत् ॥ १ ॥

अर्थात्-हे सम्यक्त्वधारी, परोपकारी राजन्, तुम धन्य हो। तुम्हारे जैसा पुण्यवान् अटलसमकितधारी इस भूतल पर अन्य नहीं। जो सम्यक्त्वधारीके गुण होते है वे सब तुममे प्रत्यक्ष पाये जाते हैं ॥१॥

फिर भी—

सम्यक्त्व विमल पर दृढतर यद्वर्णित तावक,
देवेन्द्रेण ततोऽधिक त्वयि सदा तद् भूपते ! राजते ।
दान दीनदयालुता जिनवचोमर्मज्ञता साधुता,
धर्मैकप्रियता गुरौ विनयिता देवेऽनुरागस्तथा ॥ २ ॥

त्यार पछी ते बन्ने देवो अवधिज्ञान द्वारा राजाने सम्यक्त्व धर्मनी अंदर निश्चल जाणीने वारवार तेनी आ प्रमाणे प्रशसा करवा लाग्या—

सम्यक्त्वधारी च परोपकारी, धन्योऽसि राजन् ! कृतपुण्यराशिः ।
तुल्यस्त्वया कोऽपि न भूतलेऽस्मिन् सर्व समक्ष त्वयि दृष्टमेतत् ॥ १ ॥

અર્થાત્—હે સમ્યક્ત્વધારી પરોપકારી રાજન્ તમો ધન્ય છો, તમારા જેવા પુણ્યવાન અટલ સમકિતધારી આ પૃથ્વી ઉપર બીજા નથી જે સમ્યક્ત્વધારીના ગુણ હોય છે તે બધા તમારામા પ્રત્યક્ષ જોવામા આવે છે (૧)

ફરી પણ—

सम्यक्त्व विमल पर दृढतर यद्वर्णित तावक,
देवेन्द्रेण ततोऽधिक त्वयि सदा तद् भूपते ! राजते ।
दान दीनदयालुता जिनवचोमर्मज्ञता साधुता,
धर्मैकप्रियता गुरौ विनयिता देवेऽनुरागस्तथा ॥ २ ॥

एवं स्तुवन् देवदर्शनममोघं भवतीति प्रसन्न एको देवो हारमपरश्च द्वौ मृद्गोलकौ श्रेणिकाय दत्त्वा स्वस्थानं गतौ। ततः श्रेणिकेन देवदत्तहारश्चेल्लनायै दत्तः, द्वौ मृद्गोलकौ च नन्दायै। नन्दा च 'पतिदत्तं किमपि वस्तु सादरं ग्राह्य'मिति मनसि कृत्वा पातिव्रत्यरक्षायै मृद्गोलकौ जानानाऽपि सपत्नीद्वेषं विहाय सादरमादत्तो। सर्वोत्कर्षं मञ्जूषायां स्थापनसमये भूषणकरण्डा

हे राजन्! दान देना, दीन पर दया रखना, जिनवचनके रहस्यका जानना, सज्जनता रखना, धर्मका अद्वितीय प्रेम, गुरुजनके साथ विनय और वीतराग देवके प्रति अनुराग इत्यादि जो तुम्हारे दृढतर सम्यक्त्वके निर्मल गुण इन्द्रने वर्णन किये हैं उससे भी अधिक तुम्हारेमें साक्षात् मौजूद हैं ॥ २ ॥

इस प्रकार राजाकी प्रशंसा करते हुए देवोंने देवदर्शन अमोघ होता है, इस भावसे प्रसन्न होकर उनमेसे एक देव राजाको हार और दूसरा देव दो मिट्टीके गोले भेट करता है। बाद वे दोनों अपने स्थानपर गये और राजा अपने स्थानपर आया। पश्चात् राजा श्रेणिकने देवसमर्पित हार चेल्लना महारानीको दिया, और दोनों मिट्टीके गोले नन्दा महारानीको दिये। नन्दाने भी 'पतिकी दी हुई कोई भी वस्तु आदरसे लेना चाहिए, यह पतिव्रताका धर्म है' ऐसा विचारकर अपनी सौतके साथ ईर्षाको छोडकर आदरसे उन गोलोको लेलिए। और अत्यन्त हर्ष के साथ उन मिट्टीके गोलोको सुरक्षितपनेसे अपनी

હે રાજન્! દાન દેવુ, ગરીબ ઉપર દયા રાખવી, જિનવચનના રહસ્યને જાણવુ, સજ્જનતા રાખવી, ધર્મમા અદ્વિતીય પ્રેમ, ગુરુજનની સાથે વિનય તથા વીતરાગ દેવમા અનુરાગ, ઇત્યાદિ જે તમારા દૃઢતર સમ્યક્ત્વના નિર્મળ ગુણ ઇંદ્રે વર્ણન કર્યા છે તેનાથી પણ વધારે તમારામા સાક્ષાત્ મોજુદ છે (૨)

આ પ્રકારે રાજાની પ્રશંસા કરતા થકા દેવાએ દેવદર્શન અમોઘ હોય છે, એ ભાવથી પ્રસન્ન થઈ તેમનામાથી એક દેવ રાજાને હાર અને બીજો દેવ બે માટીના ગોળા ભેટ આપે છે પછી તે બેઉ પોતાના સ્થાને ગયા તથા રાજા પોતાને સ્થાને આવ્યા પછી રાજા શ્રેણિકે દેવે આપેલો હાર ચેલ્લના મહારાણીને આપ્યો તથા બેઉ માટીના ગોળા નદા મહારાણીને આપ્યા નદાએ પણ 'પતિએ આપેલી કોઈ પણ વસ્તુ આદરથી લેવી જોઈએ એ પતિવ્રતાનો ધર્મ છે' એમ વિચાર કરી પોતાની શોકયની સાથે ઇર્ષાને છોડી આદરથી તે ગોળા લઈ લીધા અને અત્યત હર્ષથી તે

घातेन तौ भग्नौ । तत्रैकस्मिन् कुण्डलयुगलमपरस्मिन् वस्त्रयुग्मं च वीक्ष्य परं प्रमुदिता जाता ।

अन्यदाऽभयो भगवन्तं महावीरमभु पृष्टवान्-अपश्चिमः को राजऋषिर्भविष्यति ? । भगवता प्रोक्तम्-अतः परं बद्धमुकुटो नृपो न प्रव्रजिष्यतीति श्रुत्वा श्रेणिकभूपेन तातेन दीयमानं राज्यं न स्वीकृतवान् ।

नन्दया दीक्षाभिलाषिणमभयकुमारं ज्ञात्वा कुण्डलयुगलं वैहल्याय दत्तम्, वस्त्रयुग्मञ्च वैहायसाय । तदनु महतोत्सवेन महाराज्ञी नन्दाऽभयकुमारश्चोभौ प्रव्रजितौ ।

पेटीमे रखने लगी उस समय भूषणकरडककी टक्करसे दोनों फूट गए, तब वहा वह देखती है कि एक गोलेमे कुण्डलकी जोडी और दूसरेमें दो दिव्य वस्त्र हैं, ऐसा देखकर रानी बहुत प्रसन्न हुई ।

एक समय अभयकुमारने भगवान महावीर स्वामीसे पूछा कि-हे भगवन् ! अंतिम राजर्षि कौन होगा ?

भगवानने कहा-हे अभयकुमार ! आज पीछे मुकुटबद्ध राजा प्रव्रजित नही होगा। यह सुनकर अभयकुमारने मनमें विचार किया कि-अगर पिताद्वारा मिलने वाले राज्यको स्वीकार करू तो मै भी मुकुटबद्ध राजा बनू, परन्तु भगवानका वचन है कि-मुकुटबद्ध राजा राजर्षि नही बनेगा एतदर्थ मैं राज्य नही लूगा। इस लिए पितासे प्राप्त होते राज्यको उनने स्वीकार नहीं किया ।

माटीना गोळाने सुरक्षित रीते पोतानी पेटीमा राखवा लागी परंतु ते राखती वखते आभूषणना डाबलाना अथडावाथी बेउ फूटी गया त्यारे तेना जोवामा आव्यु के एक गोलामा कुडलनी जोडी छे तथा बीजामा बे दिव्य वस्त्र छे आ जोईने राणी बहु प्रसन्न थई

एक समय अभयकुमारे भगवान महावीर स्वामीने पूछ्यु के-हे भगवान् ! अतिम राजऋषि कोण थशे ?

भगवाने कह्यु-हे अभयकुमार आज पछी मुगटधारी राजा प्रव्रजित थशे नहि आ साभळीने अभयकुमारे मनमा विचार कर्यो के जो पिता तरफथी मळनार राज्यनो स्वीकार करु तो हु पण मुगटबद्ध राजा बनु परतु भगवाननु वचन छे के मुगटबद्ध राजा राजऋषि नहि बने ते माटे पिता तरफथी मळनार राज्यनो स्वीकार नहि करु, आम निश्चय करीने तेणे राज्यनो स्वीकार न कर्यो

श्रेणिकस्य राज्ञः काली-महाकाली-प्रभृतिराज्ञीभ्यः कालकुमारादिकाः पुत्रा आसन्। अभयकुमारस्य प्रव्रज्यानन्तरं कूणिकः कदाचित् [illegible] कालकुमारादिभिः सह [illegible] मन्त्रयति स्म [illegible]।

तेन कूणिकेन स्वपूर्वभववैरेण श्रेणिको बद्धो लोहपञ्जरे निक्षिप्य [illegible]। [illegible]।

अभयकुमारको दीक्षाभिलाषी जानकर नन्दा महारानीने कुण्डल युगल वेहल्ल कुमारको दिया और वस्त्रयुगल वेहायस कुमारको दिया और फिर इसके बाद नन्दा महारानी और अभयकुमार दोनो प्रव्रजित हुए।

श्रेणिक राजाके काली महाकाली आदि अन्य रानियोंसे काल महाकाल आदि और भी अनेक पुत्र थे। अभयकुमारके दीक्षा लेने पर कूणिक राजा जिनका चरित्र आगे वर्णन करेंगे उन्होंने एक समय एकान्तमें कालकुमार आदि दस कुमारोंके साथ इस प्रकार मंत्रणा (सलाह) की—अपने पिता महाराज श्रेणिक अपने इष्ट सुखके विघातक हैं इस लिये इनको बन्धनमें डालकर राज्यका भाग करके सुखपूर्वक राज्यसुखका अनुभव करें। यह बात सब भाइयोंको पसन्द आई और उन्होंने स्वीकार कर ली।

अपने पूर्वभवके वैरसे कूणिकराजाने अपने पिता श्रेणिकको किसी बहाने पकडकर लोहेके पींजरेमें डालकर सुबह शाम अपने

[illegible]

[illegible]

[illegible]

घातेन तौ भग्नौ । तत्रैकस्मिन् कुण्डलयुगलमपरस्मिन् वस्त्रयुग्म च वीक्ष्य पर प्रमुदिता जाता ।

अन्यदाऽभयो भगवन्त महावीरप्रभु पृष्टवान्–अपश्चिम॰ को राजऋषि र्भविष्यति ? । भगवता प्रोक्तम्–अतः पर बद्धमुकुटो नृपो न प्रव्रजिष्यतीति श्रुत्वा श्रेणिकभूपेन तातेन दीयमान राज्य न स्वीकृतवान् ।

नन्दया दीक्षाभिलाषिणमभयकुमार ज्ञात्वा कुण्डलयुगल वैहल्याय दत्तम्, वस्त्रयुग्मश्च वैहायसाय । तदनु महतोत्सवेन महाराज्ञी नन्दाऽभयकुमारश्चोभौ प्रव्रजितौ ।

पेटीमें रखने लगी उस समय भूषणकरडककी टक्करसे दोनों फूट गए, तब वहा वह देखती है कि एक गोलेमे कुण्डलकी जोडी और दूसरेमें दो दिव्य वस्त्र हैं, ऐसा देखकर रानी बहुत प्रसन्न हुई ।

एक समय अभयकुमारने भगवान महावीर स्वामीसे पूछा कि–हे भगवन् ! अतिम राजर्षि कौन होगा ?

भगवानने कहा–हे अभयकुमार ! आज पीछे मुकुटबद्ध राजा प्रव्रजित नही होगा। यह सुनकर अभयकुमारने मनमें विचार किया कि–अगर पिताद्वारा मिलने वाले राज्यको स्वीकार करू तो मै भी मुकुटबद्ध राजा बनू, परन्तु भगवानका वचन है कि–मुकुटबद्ध राजा राजर्षि नही बनेगा एतदर्थ मैं राज्य नहीं लूगा। इस लिए पितासे प्राप्त होते राज्यको उनने स्वीकार नहीं किया ।

માટીના ગોળાને સુરક્ષિત રીતે પોતાની પેટીમા રાખવા લાગી પરંતુ તે રાખતી વખતે આભૂષણના ડાબલાના અથડાવાથી બેઉ ફૂટી ગયા ત્યારે તેના જોવામા આવ્યુ કે એક ગોલામા કુડલની જોડી છે તથા બીજામા બે દિવ્ય વસ્ત્ર છે આ જોઇને રાણી બહુ પ્રસન્ન થઇ

એક સમય અભયકુમારે ભગવાન મહાવીર સ્વામીને પૂછ્યુ કે–હે ભગવાન્ ! અતિમ રાજઋષિ કોણ થશે ?

ભગવાને કહ્યુ–હે અભયકુમાર આજ પછી મુગટધારી રાજા પ્રવ્રજિત થશે નહિ આ સાભળીને અભયકુમારે મનમા વિચાર કર્યો કે જો પિતા તરફથી મળનાર રાજ્યનો સ્વીકાર કરૂ તો હુ પણ મુગટબદ્ધ રાજા બનુ પરતુ ભગવાનનું વચન છે કે મુગટબદ્ધ રાજા રાજઋષિ નહિ બને તે માટે પિતા તરફથી મળનાર રાજ્યનો સ્વીકાર નહિ કરૂ, આમ નિશ્ચય કરીને તેણે રાજ્યનો સ્વીકાર ન કર્યો

भूपस्यैतादृशी दशा जाता ?, केन कर्मणा-एतादृगवस्था जातेति सर्वज्ञो जानाति, सर्वज्ञमन्तरेण को नाम कर्मगतिं ज्ञातुं शक्नोति । हे आत्मन् ! यदि धर्मो नाशयते तदा तवापि तादृशी दुर्दशा भविष्यति ' ।

इत्यादि स्वमनसि विचार्य चेल्लना निरन्तर प्रवर्धमानपरिणामेन धर्मक्रिया करोति । नमस्कारपौरुषीप्रभृतिदशविधप्रत्याख्यानसमाचरण श्रावकव्रतपरिपालन, मार्यमाणजीवरक्षण, स्वधर्मिपरिपोषण, दीनाऽनाथाऽन्धपङ्ग्वादिकरुणाकरण साधु-साध्वी-श्रावक--श्राविकारूपचतुर्विधतीर्थसेवाकरणमशरणाशरण्यता

ऐसे शक्तिशाली महाप्रभाववाले भूपकी भी यह दुर्दशा हो रही है, किस कर्मसे इनकी ऐसी दशा हुई है इसे तो सर्वज्ञके सिवाय कोई नहीं जान सकता है। हे आत्मन् ! अगर तू धर्मका आराधन नहीं करेगा तो तेरी भी एसी ही दुर्दशा होनेवाली है।

इत्यादि कर्मकी गहन गतिको और अपने पतिकी दुर्दशाको विचारती हुई निरन्तर प्रवर्धमान परिणामसे धर्मक्रिया करती थी। नमस्कार (नवकारसी) पौरुषी आदि दस प्रकारके प्रत्याख्यान (पच्चखाण) नित्यप्रति करती थी। श्रावकके व्रतोंका पालन करता थी, मारेजाते हुए जीवोंको बचाती थी, साधर्मियोंका पोषण करती थी, और दीन, अनाथ, पङ्गुजनोंके ऊपर परम करुणा करके अन्न, वस्त्र, औषधि आदिके द्वारा उनके दुःखोंका निवारण करती थी। साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप चार तीर्थ की सेवा करती थी। निराधारकी

પ્રભાવવાળા રાજાની પણ આવી દુર્દશા થઇ રહી છે કયા કર્મથી તેમની આવી દશા થઇ છે તે તો સર્વજ્ઞ સિવાય કોઈ જાણી શકતુ નથી

હે આત્મન્ ! અગર જો તુ ધર્મનુ આરાધન નહિ કરે તો તારી પણ આવીજ દુર્દશા થવાની છે

આ પ્રમાણે કર્મની ગહન ગતિનો અને પોતાના પતિની દુર્દશાનો, વિચાર કરતી થકી હમેશા પ્રવર્ધમાન પરિણામથી ધર્મક્રિયા કરતી હતી નમસ્કાર (નવકારસી) પૌરૂષી આદિ દશ પ્રકારના પ્રત્યાખ્યાન (પચ્ચખાણ) નિત્ય પ્રતિ કરતી હતી શ્રાવકના વ્રતોનું પાલન કરતી હતી માર્યા જતા જીવોને બચાવતી હતી સાધર્મીઓનું પોષણ કરતી હતી તથા દીન, અનાથ, લુલાપાંગળા માણસોના ઉપર પરમ કરૂણા કરીને અન્ન વસ્ત્ર ઔષધ વગેરેથી તેમના દુખોનું નિવારણ કરતી હતી સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચાર તીર્થની સેવા કરતી હતી નિરાધારની આધાર હતી કયા સુધી

तदा चेल्लना च प्रच्छन्नरीत्या खाद्य वस्तु तथा च स्वपरिधानवस्त्रमार्द्रीकृत्य भूपसमीपे गच्छति। गुप्तरीत्या भोज्य वस्त्रनिष्पीडनजल च भूपाय समर्पयति। कशाघातप्रबलवेदनाशमनाय भेपजमिश्रितवस्त्रजलेन गात्र प्रक्षालयति, तत्प्रभावेन भूपो वेदना न वेदयति।

अथ चेल्लनावृत्तान्त वर्ण्यते—चेल्लना त्रिकाल धर्मक्रिया समाराधयति मनसि विचारयति च—'अहो ! कर्मणा विचित्रागतिरीदृशशक्तिशालिनोऽपि

भृत्योंके द्वारा सौ-सौ चाबुककी मार महाराज श्रेणिकको दिलवाता था और खान-पान भी रोक दिया था, जब मनमे आता तब खानेको देता था। इस प्रकार राजाको भूख और प्यासकी यातनासे पीडित देखकर चेल्लना महारानी अत्यत दुःखित हुई और वह खानेकी वस्तु गुप्त रीतिसे बांध लेती और पानीसे भीगे वस्त्र पहनकर राजाकी पास जाती थी खाद्य वस्तु गुप्त रीतिसे राजाको खिलाती और अपने कपडे निचोड कर उसका पानी पीलाती और चाबुककी प्रबल चोटसे उत्पन्न हुई वेदनाको शान्त करनेके लिए औपधसे मिले हुए वस्त्र जलसे राजाके शरीरको धोती थी, जिससे वेदना कुछ कम पडजाती थी।

अब चेल्लनाके विषयमे कहते हैं—चेल्लना महारानी धर्मात्मा और धर्मपरायणा थी। त्रिकाल (प्रात काल, मध्याह्न और सायकाल) धर्मध्यान करती थी और अपने पति महाराज श्रेणिकके विषयमे बोलती थी कि—अहो! कर्मोंकी कैसी विचित्र गति है, कि जिससे

સો સો ચાબુકનો માર મહારાજ શ્રેણિકને દેવરાવતો હતો તથા ખાવા પીવાનુ પણ અટકાવ્યુ હતુ પોતાના મનમા આવે ત્યારે ખાવાને આપતો હતો આ પ્રકારે રાજાને ભૂખ અને તરસની પીડાથી દુ ખી જોઇને ચેલ્લના મહારાણી બહુ દુ ખી થઇ અને તે ખાવાની વસ્તુ છાની રીતે બાધી તથા પાણીથી ભીંજાવેલા વસ્ત્ર પહેરી રાજાના પાસે જતી ખાવાની વસ્તુ છાની રીતે કાઢી રાજાને ખવરાવતી તથા પોતાના કપડા નિચોવીને તેનુ પાણી પીવરાવતી તથા ચાબુકના સખત ઘાથી ઉત્પન્ન થતી વેદનાને શાત કરવા માટે ઔષધ લગાડેલા વસ્ત્રના પાણીથી રાજાના શરીરને ધોતી હતી જેથી વેદના કઇક ઓછી પડી જાતી હતી

હવે ચેલ્લનાનું વૃત્તાત કહે છે—ચેલ્લના મહારાણી ધર્માત્મા તથા ધર્મપરાયણા હતી ત્રિકાલ ધર્મ ધ્યાન કરતી હતી તથા પોતાના પતિ મહારાજ શ્રેણિકની બાબતમા કહેતી હતી કે—અહો! કર્મોની કેવી વિચિત્ર ગતિ છે જેથી આવા શક્તિશાળી મહા-

भूपस्यैतादृशी दशा जाता ?, केन कर्मणा–एतादृगवस्था जातेति सर्वज्ञो जानाति, सर्वज्ञमन्तरेण को नाम कर्मगतिं ज्ञातुं शक्नोति । हे आत्मन् ! यदि धर्मो नाराध्यते तदा तत्रापि तादृशी दुर्दशा भविष्यति ' ।

इत्यादि स्वमनसि विचार्य चेल्लना निरन्तर प्रवर्धमानपरिणामेन धर्मक्रिया करोति । नमस्कारपौरुषीप्रभृतिदशविधप्रत्याख्यानसमाचरण श्रावकव्रतपरिपालन, मार्यमाणजीवरक्षण, स्वधर्मिपरिपोषण, दीनाऽनाथाऽन्धपङ्ग्वादिकरुणाकरण साधु–साध्वी—श्रावक–श्राविकारूपचतुर्विधतीर्थसेवाकरणमशरणाशरण्यता

ऐसे शक्तिशाली महाप्रभाववाले भूपकी भी यह दुर्दशा हो रही है, किस कर्मसे इनकी ऐसी दशा हुई है इसे तो सर्वज्ञके सिवाय कोई नहीं जान सकता है। हे आत्मन् ! अगर तू धर्मका आराधन नहीं करेगा तो तेरी भी एसी ही दुर्दशा होनेवाली है।

इत्यादि कर्मकी गहन गतिको और अपने पतिकी दुर्दशाको विचारती हुई निरन्तर प्रवर्धमान परिणामसे धर्मक्रिया करती थी। नमस्कार (नवकारसी) पौरुषी आदि दस प्रकारके प्रत्याख्यान (पच्चखाण) नित्यप्रति करती थी। श्रावकके व्रतोंका पालन करती थी, मारेजाते हुए जीवोंको बचाती थी, साधर्मियोंका पोषण करती थी, और दीन, अनाथ, पङ्गुजनोंके ऊपर परम करुणा करके अन्न, वस्त्र, औषधि आदिके द्वारा उनके दुःखोंका निवारण करती थी। साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप चार तीर्थ की सेवा करती थी। निराधारकी

પ્રભાવવાળા રાજાની પણ આવી દુર્દશા થઈ રહી છે કયા કર્મથી તેમની આવી દશા થઈ છે તે તો સર્વજ્ઞ સિવાય કોઈ જાણી શકતુ નથી

હે આત્મન્! અગર જો તુ ધર્મનુ આરાધન નહિ કરે તો તારી પણ આવીજ દુર્દશા થવાની છે

આ પ્રમાણે કર્મની ગહન ગતિને અને પોતાના પતિની દુર્દશાનો, વિચાર કરતી થકી હમેશા પ્રવર્ધમાન પરિણામથી ધર્મક્રિયા કરતી હતી નમસ્કાર (નવકારસી) પોરૂષી આદિ દશ પ્રકારના પ્રત્યાખ્યાન (પચખાણ) નિત્ય પ્રતિ કરતી હતી શ્રાવકના વ્રતોનુ પાલન કરતી હતી મારર્યા જતા જીવોને બચાવતી હતી સાધર્મીઓનુ પોષણ કરતી હતી તથા દીન, અનાથ, લુલાપાગળા માણસોના ઉપર પરમ કરૂણા કરીને અન્ન વસ્ત્ર ઓષધ વગેરેથી તેમના દુઃખોનુ નિવારણ કરતી હતી સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચાર તીર્થની સેવા કરતી હતી નિરાધારની આધાર હતી કયા સુધી

सकलजीवहितसुखपथ्यकारिता च दधाना, एवं विचित्रधर्मक्रिया कुर्वाणा विहरति, त्रिकालसामायिकं च कुरुते । तथाहि—

"सा चेल्लणा भूमिथलं पमज्ज, वत्थाइ सव्वं पडिलेहिय भावा ।
बद्धा सदोरं मुहवत्तिमासे, सामाइयं तं कुणए तिकालं ॥१॥"

छाया—"सा चेल्लना भूमिस्थलं प्रमार्ज्य, वस्त्रादि सर्वं प्रतिलेख्य भावात् ।
बद्ध्वा सदोरां मुखवस्त्रीमास्ये, सामायिकं तत् कुरुते त्रिकालम् ॥ १॥"

अन्यदा कूणिकः सर्वालङ्कारविभूषितः स्वमातुश्चेल्लनादेव्याश्चरणौ वन्दितुं समागतस्तत्र तामार्त्तध्यानयुक्तां दृष्ट्वा वन्दमानः कूणिकराजः स्वजननीं पृच्छति—

आधार थी, कहाँ तक कहें महारानी चेल्लना सब प्रकारसे सब जीवोंके लिए हितकारी, पथ्यकारी, और सुखकारी थी, और अनेक प्रकारसे धर्मक्रिया करती हुई शीलव्रत आदि आराधन करती हुई तीनों काल सामायिक करती थी। कहा है.—

"सा चेल्लणा भूमिथलं पमज्ज, वत्थाइ सव्वं पडिलेहिय भावा ।
बद्धा सदोरं मुहवत्तिमासे, सामाइयं तं कुणए तिकालं" ॥ १ ॥

वह चेलना महारानी विधिपूर्वक पहले प्रमार्जिका (पूँजनी) से भूमिको पूँज लेती थी, बाद वस्त्रोंकी प्रतिलेखना (पडिलेहणा) करके मुँहपर सदोरकमुखवस्त्रिका बाधकर तीनों कालमें सामायिक करती थी।

एक समय कूणिक महाराज सब अलंकार पहिने हुए अपनी माता चेल्लना महारानीके पास चरण-वन्दनके लिए आये। अपने पतिके दुःखसे दुःखित आर्तध्यानयुक्त अपनी माताको देखकर कहने

કહીએ મહારાણી ચેલ્લના સર્વ પ્રકારે બધા જીવોને માટે હિતકારી, પથ્યકારી અને સુખકારી હતી તથા અનેક પ્રકારે ધર્મક્રિયા કરતી થકી શીલવ્રત આદિ આરાધન કરતી થકી ત્રણે કાળ સામાયિક કરતી હતી કહ્યું છે કે—

"સા ચેલ્લણા ભૂમિથલં પમજ્જ, વત્થાઇ સવ્વં પડિલેહિય ભાવા ।
બદ્ધા સદોરં મુહવત્તિમાસે સામાઇયં તં કુણએ તિકાલં ॥ ૧ ॥"

તે ચેલ્લના મહારાણી વિધિપૂર્વક પહેલા પુંજણીથી ભૂમિને પુંજી પછી વસ્ત્રોની પ્રતિલેખના (પડિલેહણા) કરી મોં ઉપર દોરા સહિત મુખવસ્ત્રિકા બાંધીને ત્રણે કાલ (સવાર બપોર સાંજ) સામાયિક કરતી હતી

એક સમય કૂણિક મહારાજ બધા અલંકાર પહેરીને પોતાની માતા ચેલ્લના મહારાણીની પાસે ચરણ-વંદન માટે આવ્યા પોતાના પતિના દુઃખથી દુઃખિત આર્ત-ધ્યાન કરતી પોતાની માતાને જોઈને કહેવા લાગ્યા—હે જનની! હું પોતે મોટા

हे मातः ! यदहं खलु स्वयमेव महाराज्याभिषेकेण विशालराज्यश्रियमनुभवामि तेन किं तव मनसि सन्तोष उल्लास प्रमोदो न वर्त्तते ? तुभ्य मम भाग्योदयो न रोचते किम् ? । ततश्चेल्लणा देवी कूणिकराजमेवमवादीत्–हे पुत्र ! यत्त्व देवगुरुसदृशपरमस्नेहानुरागरक्त निज तात निगडबन्धने विधाय स्वय राज्यश्रियमनुभवसि तत्कथ तादृशेन दुष्कृतेन मम मनसि तुष्टिहर्षविकाशश्च । ततः कूणिक पृच्छति–हे मातः ! कथ मयि तातः स्नेहानुरागरक्त ?, तदा सा जगाद–हे पुत्र ! यथोपकुरुते तमेव त्व द्वेक्षि, पश्य–जन्मानन्तर मदाज्ञया दास्या वने त्व विसृष्टस्तदानीं तवेयमङ्गुलिः कुक्कुटेन तुण्डेन खण्डिता, अत-

लगे–हे जननी मैं स्वय बडे राज्यके अभिषेकसे अभिषिक्त होकर विशाल राज्यश्रीका अनुभव कर रहा हूँ, इससे तुम्हारे मनमे क्या सतोष, उल्लास, प्रमोद नही है ? क्या मेरा भाग्योदय तुझे इष्ट मालूम नहीं देता ? । पुत्रके ऐसे वचन सुनकर महारानी चेल्लना देवी बोली–पुत्र ! तू देव और गुरुके समान परम स्नेहवाले अपने पिताको बन्धनमें डालकर स्वय राजश्रीका अनुभव करता है ऐसे दुष्कृत्यसे किस तरह मेरा मन सन्तुष्ट और प्रमुदित हो सकता है ? ।

तब कूणिक महाराज बोले–हे जननी ! मेरे पिताका मुझपर किस तरहका अनुराग है ? ।

माता बोली–वत्स ! जो तेरे उपकारी हैं, तू उन्हीका द्वेष करता है, देख–तेरे जन्म होनेके बाद तुझे मेरी आज्ञासे दासीने अशोक–वाटिकामें छोड दिया था, उस समय तेरी यह अगुली कुक्कुट–(मुर्गे) ने अपनी तीक्ष्ण चोचसे खडित करदी थी और तू

राज्यना अभिषेकथी अभिषेक करायेलो होइ विशाल राज्यश्रीनो अनुभव करी रह्यो छु तेथी तमारा मनमा शु सतोष, उल्लास आनद नथी थतो ? शु मारु भाग्योदय तमने नथी गमतु ? पुत्रना आवा वचन साभळी महाराणी चेल्लना देवी बोली–पुत्र ! तु देव तथा गुरु समान परम स्नेहवाळा पोताना पिताने बधनमा नाखी पोते राज्यश्रीनो अनुभव करी रह्यो छे एवा दुष्कृत्यथी केवी रीते मारु मन सतुष्ट तथा आनदित रही शके ?

त्यारे कूणिक महाराज बोल्या–हे जननी ! मारा पितानो मारा उपर केवी जातनो अनुराग छे ?

माता कहे–वत्स ! जे तारो उपकारी छे तनोज तु द्वेष करे छे जो–तारो जन्म थया पछी मारी आज्ञाथी दासीए तने अशोकवाटिकामा मूकी दीधो हतो ते वखते तारी आ आगळी कुकडाए पोतानी तीखी चाचथी खडित करी दीधी हती

कूणिकस्य युद्ध साहाय्यविधायकाना कालादिदशकुमाराणा रथमुशल नामकसङ्ग्रामे प्रचुरजनविनाशकरणेन नरकप्रायोग्यकर्मसम्पादनहेतोर्निरयगामित्वेन कालादिदशकुमारविवरणग्रथितस्य प्रथमाध्ययनस्य 'निरयायुः' इति नाम ।

अथ रथमुशलाभिधानसङ्ग्रामाविर्भावे कारणमुच्यते, तथाहि—चम्पाया नगर्या कूणिको राजा राज्यशासन करोति । तदीयावनुजौ वैहल्य—वैहायसौ पितृदत्तसेचनकहस्तिनमारूढौ दिव्यकुण्डलवसनहारालङ्कृतौ विलसन्तौ कूणिक

राजगृह नगरको छोडकर राजाने अपनी राजधानी चम्पानगरीमे की और वहा अपने भाइयो व कुटुम्बियोके सहित रहकर राज्य करने लगे ।

इसप्रकार महाराज कूणिकका वर्णन यहा पर समाप्त होता है ।

रथमुशल सग्रामका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है.—

कूणिक राजाके युद्धमे सहायता करनेवाले कालकुमार आदि दस कुमारोने रथमुशल सग्राममे बहुत जनोके विनाश करनेके कारण नरकप्राप्तिरूप कर्मोका उपार्जन किया और नरकगामी बने, उन्ही दस कुमारोका वर्णन इस प्रथम अध्ययनमें है, इस कारण इसका 'निरयायु' नाम है ।

अब रथमुशल सग्रामकी उत्पत्तिका कारण कहते है–

चम्पानगरीमें कूणिक राजा राज्य करते थे । उनके वैहल्य और वैहायस, ये दो छोटे भाई थे । वे पिताके दिये हुए सेचनक हाथीपर चढकर दिव्य कुण्डल वस्त्र और हारको पहनकर विलास

નગરને છોડીને રાજાએ પોતાની રાજધાની ચપાનગરીમા કરી અને ત્યા પોતાના ભાઈઓ તથા કુટુબિઓ સાથે રહીને રાજ્ય કરવા લાગ્યો

આ પ્રમાણે મહારાજ કૂણિકનુ વર્ણન અહી સમાપ્ત થાય છે

રથમુશલ સગ્રામનુ સક્ષિપ્ત વર્ણન આ પ્રકારે છે —

કૂણિક રાજાને યુદ્ધમા સહાયતા કરવાવાળા કાલકુમાર આદિ દશ કુમારોને રથમુશલ સગ્રામમા ઘણા માણસોનો વિનાશ કરવાના કારણથી નરકપ્રાપ્તિરૂપ કર્મોનુ ઉપાર્જન કર્યુ તથા નરકગામી બન્ય તેજ દશ કુમારોનુ વર્ણન આ પ્રથમ અધ્યયનમા છે આ કારણથી આનુ 'નિરયાયુ' નામ છે

હવે રથમુશલ સગ્રામની ઉત્પત્તિનુ કારણ કહે છે —

ચપાનગરીમા કૂણિક રાજા રાજ કરતા હતા તેમને વૈહલ્ય તથા વૈહાયસ એ બે નાનાભાઈ હતા તેઓ પિતાએ આપેલા સેચનક હાથી ઉપર બેસીને દિવ્ય કુડલ,

राजमहिषी पद्मावती निरीक्ष्य सेचनकगजमपहर्तुं कूणिकं प्रेरितवति। कूणिकेन नैकधा विज्ञाप्यमानाऽपि हस्तिहरणनिपक्तमानसा ततो न निवृत्ता। ततः पद्मावतीप्रेरितः कूणिको हस्तिनं तौ याचते। हस्तियाचने कृते वैहल्यवैहायसौ सपरिवारौ सान्तःपुरौ कूणिकभयाद् विशाल्या नगर्यां चेटकनामकं स्वमातामह राजानं प्रपन्नौ।

कूणिकेन दूतप्रेषणेन स्वकीयानुजौ चेटको याचित, परञ्च चेटकेन तौ न प्रेषितौ, किन्तु दूतद्वारा कूणिकनिकटे संवादः प्रहितः—राज्यभागमाभ्यां यदि दास्यसि तदाऽमू हारहस्तिनौ च प्रेषयिष्यामीति। ततः कूणिकः कोपारुणनयनयुगलो वार्तां प्रेषयामास—यदि तौ वैहल्य-वैहायसौ न प्रेषयसि तदा युद्धाय सनद्धो भव। चेटकेनोक्तम्—अहमपि सनद्धोऽस्मि।

करते थे। उन्हे देखकर पद्मावती रानीने सेचनक हाथीको अपने अधीन करनेके लिये कूणिकको प्रेरित किया। भ्रातृप्रेमके कारण कूणिकके बहुत समझाने पर भी रानीका मन हाथीसे नहीं हटा। अन्तमें पद्मावतीकी बात मानकर कूणिकने दोनो भाइयोंसे हाथीकी याचना की। हाथीकी याचना करनेपर दोनो भाई भयभीत हो अपने२ परिवार सहित विशाला नगरीमे अपने नाना चेटक महाराजके पास चले गये।

कूणिकने दूतद्वारा राजा चेटकसे हार और हाथी सहित भाइयोंको मागा। तब चेटकने दूतद्वारा कूणिकको यह समाचार भेजा—यदि तुम राज्यका भाग इन दोनोंको देते हो तो इनको तथा हार एव हाथीको भेज सकते है। यह सुनकर महाराज कूणिककी आँखे लाल हो गयीं और उन्होने सन्देश भेजा—यदि हार हाथीके साथ

ભ્રો તથા હાર પહેરીને વિલાસ કરતા હતા. તેમને જોઈને પદ્માવતી રાણીએ સેચનક હાથીને પોતાના કબજામા લેવા માટે કૂણિકને પ્રેરણા કરી ભ્રાતૃપ્રેમને લીધે કૂણિકે બહુ સમજાવી છતા પણ રાણીનુ મન હાથીથી હઠયુ નહિ આખરે પદ્માવતીની વાત માનીને કૂણિકે બન્ને ભાઈઓ પાસેથી હાથી માગ્યો હાથી માગવાથી બન્ને ભાઈને બીક લાગી અને પોતાના પરિવાર સાથે વિશાલાનગરીમા પોતાના નાના ચેટક મહારાજની પાસે ચાલ્યા ગયા

કૂણિકે દૂત દ્વારા રાજા ચેટક પાસે હાર તથા હાથી સહિત ભાઈઓ માગ્યા ત્યારે ચેટકે દૂત દ્વારા કૂણિકને આ સમાચાર મોકલ્યા "જો તમે રાજ્યનો ભાગ આ બન્નેને દેતા હો તો તેઓને તથા હાર તેમજ હાથીને મોકલી શકુ" આ સાભળી મહારાજ કૂણિકની આખો લાલ થઈ ગઈ તથા તેમણે સદેશ મોકલ્યો જો હાર

कूणिकस्य युद्ध साहाय्यविधायकाना कालादिदशकुमाराणा रथमुशल नामकसङ्ग्रामे प्रचुरजनविनाशकरणेन नरकप्रायोग्यकर्मसम्पादनहेतोर्निरयगामित्वेन कालादिदशकुमारविवरणग्रथितस्य प्रथमाध्ययनस्य 'निरयायुः' इति नाम ।

अथ रथमुशलाभिधानसङ्ग्रामाविर्भावे कारणमुच्यते, तथाहि—चम्पाया नगर्यां कूणिको राजा राज्यशासन करोति । तदीयावनुजौ वैहल्य-वैहायसौ पितृदत्तसेचनकहस्तिनमारूढौ दिव्यकुण्डलवसनहारालङ्कृतौ विलसन्तौ कूणिक

राजगृह नगरको छोडकर राजाने अपनी राजधानी चम्पानगरीमे की और वहा अपने भाइयो व कुटुम्बियोके सहित रहकर राज्य करने लगे ।

इसप्रकार महाराज कूणिकका वर्णन यहा पर समाप्त होता है।

रथमुशल सग्रामका सक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है.—

कूणिक राजाके युद्धमे सहायता करनेवाले कालकुमार आदि दस कुमारोने रथमुशल सग्राममें बहुत जनोंके विनाश करनेके कारण नरकप्राप्तिरूप कर्मोका उपार्जन किया और नरकगामी बने, उन्ही दस कुमारोका वर्णन इस प्रथम अध्ययनमें है, इस कारण इसका 'निरयायु' नाम है ।

अब रथमुशल सग्रामकी उत्पत्तिका कारण कहते है—

चम्पानगरीमें कूणिक राजा राज्य करते थे । उनके वैहल्य और वैहायस, ये दो छोटे भाई थे । वे पिताके दिये हुए सेचनक हाथीपर चढकर दिव्य कुण्डल वस्त्र और हारको पहनकर विलास

નગરને છોડીને રાજાએ પોતાની રાજધાની ચપાનગરીમા કરી અને ત્યા પોતાના ભાઈઓ તથા કુટુબિઓ સાથે રહીને રાજ્ય કરવા લાગ્યો.

આ પ્રમાણે મહારાજ કૂણિકનુ વર્ણન અહી સમાપ્ત થાય છે

રથમુશલ સગ્રામનુ સક્ષિપ્ત વર્ણન આ પ્રકારે છે —

કૂણિક રાજાને યુદ્ધમા મહાયતા કરવાવાળા કાલકુમાર આદિ દશ કુમારોને રથમુશલ સગ્રામમા ઘણા માણસોનો વિનાશ કરવાના કારણથી નરકપ્રાપ્તિરૂપ કર્મોનુ ઉપાર્જન કર્યું તથા નરકગામી બન્યા. તેજ દશ કુમારોનુ વર્ણન આ પ્રથમ અધ્યયનમા છે આ કારણથી આનું 'નિરયાયુ' નામ છે

હવે રથમુશલ સગ્રામની ઉત્પત્તિનું કારણ કહે છે —

ચપાનગરીમા કૂણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા તેમને વૈહલ્ય તથા વૈહાયસ એ બે નાનાભાઈ હતા તેઓ પિતાએ આપેલા સેચનક હાથી ઉપર બેસીને દિવ્ય કુડલ,

सैन्यदले गरुडव्यूहः, चेटकसैन्ये च सागरव्यूहो निर्मित आसीत् । ततश्च प्रथमेऽह्नि कूणिकराजस्य कालकुमारोऽनुजो निजसैन्ययुतः सेनापतिः स्वयं युध्यमानश्चेटकेन निक्षिप्तेनामोघेनैकेन शरेण निहतः । कूणिकसैन्यं च भग्नम् । ततो द्वयोरपि राज्ञोर्बलं निजं निजं स्थानं प्राप्तम् ।

द्वितीयेऽह्नि सुकालो निजसैन्यसमन्वितो रणमुपगतो युध्यमानश्चेटकेनैकेन शरेण निपातितः । एवं तृतीयेऽह्नि महाकालः, चतुर्थे दिने कृष्णकुमारः, पञ्चमे दिवसे सुकृष्णकुमारः, षष्ठे महाकृष्णः, सप्तमे वीरकृष्णः, अष्टमे रामकृष्णः, नवमे पितृसेनकृष्णः, दशमे दिने पितृमहासेनकृष्णश्च चेटकेनैकैकेन बाणेन प्रत्यहमेकैकशः कालादयो दश कुमारा निहताः । दशसु निहतेषु कूणिक-

---

एकही अमोघ बाण छोडते थे। वहाँ कूणिकके सैन्यमें गरुडव्यूह था और चेटक (चेडा) के सैन्यमें सागरव्यूह। उसके बाद पहिले दिनमें कूणिक राजाके छोटे भाई कालकुमार अपनी सेना सहित सेनापति बनकर स्वयं चेटक-(चेडा) महाराजके साथ लडता हुआ उनके अमोघ बाणसे मारा गया। और कूणिककी सेना नष्ट होगयी।

दूसरे दिन सेनासहित सुकालकुमार युद्धमें चेटकके बाणसे मारे गये। इसी तरह तीसरे दिन महाकाल कुमार, चौथे दिन कृष्ण कुमार, पँचवें दिन सुकृष्णकुमार, छठे दिन महाकृष्ण कुमार, सातवें दिन वीरकृष्ण कुमार, आठवें दिन रामकृष्ण कुमार, नवमें दिन पितृसेनकृष्ण कुमार और दसवें दिन पितृमहासेनकृष्ण कुमार चेटकके एक-एक बाणसे मारे गये। दसों कुमारोंके मारे जाने पर

દિવસમાં એકજ અમોઘ બાણ છોડતા હતા. આ તરફ કૂણિકના સૈન્યમાં ગરૂડવ્યૂહ હતો તથા ચેટક (ચેડા)ના સૈન્યમાં સાગર-વ્યૂહ હતો. ત્યાર પછી પહેલે દિવસે કૂણિક રાજાનો નાનોભાઈ કાલકુમાર પોતાની સેના સહિત સેનાપતિ બનીને પોતે ચેટક (ચેડા) મહારાજની સાથે લડતા લડતા તેના અમોઘ બાણથી માર્યો ગયો, અને કૂણિકની સેનાનો નાશ થઈ ગયો.

બીજે દિવસે સેના સાથે સુકાલકુમાર યુદ્ધમાં ચેટકના બાણથી માર્યા ગયા. આજ રીતે ત્રીજે દિવસે મહાકાલ કુમાર, ચોથે દિવસે કૃષ્ણકુમાર, પાંચમે દિવસે સુકૃષ્ણ કુમાર, છઠ્ઠે દિવસે મહાકૃષ્ણ કુમાર, સાતમે દિવસે વીરકૃષ્ણ કુમાર, આઠમે દિવસે રામકૃષ્ણકુમાર, નવમે દિવસે પિતૃસેનકૃષ્ણકુમાર, તથા દશમે દિવસે પિતૃમહાસેનકૃષ્ણકુમાર, ચેટકના એક-એક બાણથી માર્યા ગયા. દશેય કુમારોના માર્યા ગયાથી

ततो युद्धनिश्चयानन्तर कूणिकेन सह कालप्रभृतयो दश वैमात्रेया अनुजा राजानश्चेटकनृपेण सङ्ग्रामाय समुपगताः । तत्रैकैकस्य त्रीणि त्रीणि गजानामश्वाना रथाना च सहस्राणि, मनुष्याणा च तिस्र' कोटय आसन्, कूणिकस्यापि तावदेव बलम् ।

चेटकभूपोऽपि एतादृश सङ्ग्रामप्रसङ्ग विज्ञायाष्टादशगणराजैः सह सम्मेलन कृतवान् । कालादीना प्रत्येक यावद् गजादिबलपरिमाण तावदेव चेटकस्यापि । ततो युद्ध प्रवृत्तम् । चेटकराजस्तु युद्धकाले व्रतपरायण आसीत्, अतो रणे एकस्मिन् दिने एकमेवामोघ बाण मुञ्चति । तत्र युद्धक्षेत्रे कणिक-

वैहल्य और वैहायसको नहीं भेजते हो तो युद्धके लिये तैयार हो जाओ । चेटकने कहा–हम भी तैयार हैं ।

इस प्रकार युद्धका निश्चय होजानेके बाद कूणिकके साथ काल-कुमार आदि दसों सौतेले छोटे भाई चेटक राजासे लडनेके लिए आये । उन दसोंमें प्रत्येकके साथ तीन-तीन हजार हाथी घोडे और रथ थे तथा तीन - तीन करोड सैनिक थे । कूणिक के साथ भी इतनी ही सेना थी ।

चेटक (चेडा) महाराज भी इस प्रकार सग्रामका प्रसङ्ग समझ-कर अठारह देशके गणराजाओका सघटन किया । कालादि कुमा-रोंके प्रत्येकके पास जितनी सेनायें थी, उतनी ही चेटक आदि प्रत्येक राजाके पास थी । अनन्तर दोनोंका युद्ध हुआ । चेटक (चेडा) महाराज तो युद्धकालमे व्रतधारी थे, इस लिए युद्धमें एक दिनमें

સાથે વેહલ્ય અને વેહાયસને ન મોકલતા હો તો યુદ્ધને માટે તૈયાર થઈ જાઓ ચેટકે કહ્યુ–અમે પણ તૈયાર છીએ

આ પ્રમાણે યુદ્ધનો નિશ્ચય થયા પછી કૂણિકની સાથે કાલકુમાર આદિ દશે ઓરમાન નાનાભાઈ ચેટક રાજા સાથે લડવા માટે આવ્યા એ દશેયમા દરેકની સાથે ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી ઘોડા તથા રથ હતા અને ત્રણ ત્રણ કરોડ સૈનિક હતા કૂણિક રાજાની પાસે પણ એવડીજ સેના હતી

ચેટક (ચેડા) મહારાજે પણ આ પ્રકારનો લડાઈનો પ્રસગ સમજીને અઢાર દેશના ગણરાજાઓનુ સગઠન કર્યું કાલ આદિ કુમારોની દરેકની પાસે જેટલી સેનાઓ હતી તેટલીજ ચેટક આદિ પ્રત્યેક રાજાની પાસે હતી ત્યાર પછી બન્નેનુ યુદ્ધ થયુ ચેટક (ચેડા) મહારાજ તો યુદ્ધકાલમા વ્રતધારી હતા એથી યુદ્ધમા એક

'रथमुशल चे'ति=मुशलेन सहितो रथस्तस्मात् निस्सरन्मुशलो धावमानो जनसमुदाय यत्र विनाशयति स सङ्ग्रामो 'रथमुशल' इति निगद्यते ॥ १२ ॥

तत्र कूणिकेन सह कालः स्वबलसमन्वितः रथमुशलसङ्ग्राममुपयातः, इत्याशयक सूत्रमाह–'तएण से काले' इत्यादि ।

मूलम्–तएणं से काले कुमारे अन्नया कयाइ तिहि दंति-सहस्सेहि, तिहि रहसहस्सेहिं, तिहिं आससहस्सेहिं, तिहिं मणुयकोडीहि गरुडवूहे एक्कारसमेणं खंडेणं कूणिएणं रन्ना सद्धिं रहमुसलं संगामं ओयाए ॥ १३ ॥

छाया–तत. खलु स कालः कुमारः अन्यदा कदाचित् त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः त्रिभी रथसहस्रैः, त्रिभिरश्वसहस्रैः त्रिभिर्मनुजकोटिभिः गरुडव्यूहे एकादशेन खण्डेन कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं रथमुशल सङ्ग्रामम् उपयातः ॥ १३ ॥

टीका–'तएण से' इत्यादि–ततः सङ्ग्रामनिर्णयानन्तर सः=असौ प्रथमः काल'=कालकुमारः अन्यदा=अन्यस्मिन् कदाचित्=कस्मिंश्चित् समये त्रिभिः= त्रिसख्यकै., दन्तिना=हस्तिना सहस्राणि=दन्तिसहस्राणि तैस्तथा, त्रिभी रथ-सहस्रैः, त्रिभिरश्वसहस्रैः, त्रिभिर्मनुजकोटिभिः सह गरुडव्यूहे एकादशेन खण्डेन

वेदना होती है उस सग्रामको 'महाशिलाकटक' कहते हैं ।

'रथमुशल'–मुशलयुक्त रथको 'रथमुशल' कहते हैं, अर्थात्–रथसे–निकलकर मुशल बहुत वेगसे दौडकर शत्रुपक्षका विनाश–(सहार) करता है उस सग्रामको 'रथमुशल' कहते हैं । ॥ १२ ॥

वहाँ कूणिकके साथ कालकुमार अपनी सेना लेकर रथमुशल सग्राममें उपस्थित हुए, इस आशयका सूत्र कहते हैं–'तएण से काले' इत्यादि ।

सग्रामके निश्चित होजानेके पश्चात् वह कालकुमार नियत

રથમુશલ—મુશલયુક્ત રથને 'રથમુશલ' કહે છે અર્થાત્ રથમાથી નીકળી મુશલ બહુ વેગથી દોડીને શત્રુપક્ષનો વિનાશ (સહાર) કરે છે એ સગ્રામને "રથમુશલ" કહે છે (૧૨)

ત્યા કૂણિકની સાથે કાલકુમાર પોતાની સેના લઇને રથમુશલ સગ્રામમા ઉપસ્થિત થયા આ આશયનુ સૂત્ર કહે છે—'तएण से काले' ઇત્યાદિ

સગ્રામનો નિશ્ચય થઇ ગયા પછી તે કાલકુમાર નિશ્ચિત વખતે ત્રણ ત્રણ હજાર

चेटक जेतु देवाराधनायाष्टमभक्त कृतवान् । ततः शक्रचमरौ द्वौ देवेन्द्रौ प्रसन्नौ समागतौ । तत्र शक्र उवाच–चेटको व्रतधारी श्रावकोऽस्तीत्यतस्त न हनिष्यामि, पर त्वा रक्षितु शक्नोमि, कूणिकेनोक्त–तथाऽस्तु, ततः शक्रस्तद्रक्षणाय वज्र कल्पमभेद्यकवच विकुर्वितवान् । चमरश्च–'महाशिलाकण्टक' 'रथमुशल' चेति द्वौ सङ्ग्रामौ विकुर्वितवान्, तत्र महाशिलेव प्राणापहारकत्वात् कण्टको 'महाशिला-कण्टक' इत्युच्यते । अथवा–तृणाग्रेणापि हतस्य गजाश्वादेर्महाशिलाकण्टकेन हतस्येव वेदना यत्र भवति स सङ्ग्रामो 'महाशिलाकण्टक' इत्युच्यते ।

'चेटकको जीतें' इस भावसे कूणिक राजाने देवताको आराधन करनेके लिए अष्टमभक्त किया । उसके बाद शक्रेन्द्र और चमरेन्द्र प्रसन्न हुए और कूणिकके पास आये । उनमेंसे शक्रेन्द्र बोले–हे कूणिक ! चेटक (चेडा) राजा व्रतधारी श्रावक है इस लिए हम उसे नहीं मार सकते, पर तेरी रक्षा कर सकते हैं । शक्रेन्द्रके मुखसे निकले इन वचनोंको श्रवणकर कूणिकने 'तथास्तु' कहा । कूणिकके 'तथास्तु' कहने याने स्वीकार करलेनेके बाद शक्रेन्द्र कूणिककी रक्षा के लिए-वज्रसदृश अभेद्य कवच वैक्रियक्रियासे बनाया । चमरेन्द्रने महाशिला कटक और रथमुशल नामक सग्राम विकुर्वित किया ।

'महाशिलाकण्टक'–जो महाशिलाके समान प्राणोंका कटक अर्थात् घातक है वह महाशिलाकटक कहलाता है, अथवा तिनकेकी नोंकसे मारनेपर भी हाथी घोडे आदिको महाशिलाकटकसे मारने जैसी तीव्र

'ચેટકને જીતુ' એવા ભાવથી કૂણિક રાજાએ દેવતાનુ આરાધન કરવા માટે અઠમ (૩ ઉપવાસ) કર્યા તેથી શકેન્દ્ર તથા ચમરેન્દ્ર પ્રસન્ન થયા તથા કૂણિકની પાસે આવ્યા તેમાથી શકેન્દ્ર બોલ્યા–હે કૂણિક ! ચેટક (ચેડા) રાજા વ્રતધારી શ્રાવક છે તેથી અમે તેને નહિ મારી શકીએ, પણ તારી રક્ષા કરી શકીએ શકેન્દ્રના મુખથી નિકળેલા આ વચનો સાભળીને કૂણિકે 'તથાસ્તુ' કહ્યુ કૂણિકના 'તથાસ્તુ' કહેવાથી એટલે સ્વીકાર કરી લીધા પછી શકેન્દ્રે કોણિકની રક્ષાને માટે વજ્રના જેવુ અભેદ્ય કવચ વૈક્રિય ક્રિયાથી બનાવ્યુ

ચમરેન્દ્રે મહાશિલાકટક તથા રથમુશલ નામે સગ્રામ વિકુર્વિત કર્યો

'મહાશિલાકટક'–જે મહાશિલાના જેવો પ્રાણોનો કટક અર્થાત્ ઘાતક છે તે મહાશિલાકટક કહેવાય છે, અથવા તૃણખલાની અણીથી મારવાથી પણ હાથી ઘોડા આદિને મહાશિલાકટકથી મારવા જેવી તીવ્ર વેદના થાય છે, એ સગ્રામને 'મહા-શિલાકટક' કહે છે

विषयो विचारः वृक्षस्याङ्कुर इव, यावत्करणात्-"चिंतिए, कप्पिए, पत्थिए, मणोगए संकप्पे" इति सगृह्यन्ते, तदनु चिन्तितः=पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारः द्विपत्रित इव, ततः कल्पितः=स एव व्यवस्थायुक्तः पुत्रविषयको विचारः पल्लवित इव, प्रार्थितः स एव इष्टरूपेण स्वीकृतः पुष्पित इव, मनोगतः सकल्पः=मनसि इष्टरूपेण निश्चयः फलित इव समुदपद्यत=जातः।

अर्थात् आत्मविषयक विचार उत्पन्न हुआ। वह–'चिंतित' अर्थात् वारवार स्मरणसे 'द्विपत्रित' के समान, 'कल्पित' वही पुत्रविषयक विचार व्यवस्थायुक्त होनेसे 'पल्लवित' के समान, 'प्रार्थित' मनमें विचार स्वीकृत होजानेके कारण 'पुष्पित' के समान, 'मनोगत सकल्प' वही इष्ट रूपसे मनमें निश्चित होजानेके कारण 'फलित' के समन अवस्थाको प्राप्त हुआ।

भावार्थ—सग्रामके प्रारम्भ होजाने पर महारानी कालीके हृदयमें पुत्र स्नेहके कारण एक समय वृक्षके अकुरके सदृश आत्मिक भाव अकुरित हुए, पश्चात् वेही विचार वारवारके चिन्तन–स्मरणसे द्विपत्रित अर्थात् जैसे बीजसे अकुर और अकुरके कुछ बढनेपर दो कोमल किशलय–दो नये पत्ते निकलते हैं, उसी प्रकार विचारोंका स्वरूप बढा, बाद वेही वात्सल्यमय विचार 'कल्पित' याने पल्लवित–अधिक पत्रोंके रूपमें अग्रसर हुए, पश्चात् मनमें बढते–पनपते हुए उन विचारोंके 'प्रार्थित' होजानेपर याने अपने विश्वाससे स्वीकृत होजाने पर 'पुष्पित' फूले हुएके समान होगये और अन्तमें जब

થયો તે 'ચિંતિત'=અર્થાત વારવાર સ્મરણથી દ્વિપત્રિત સમાન, 'કલ્પિત'=તે પુત્ર વિષેનો વિચાર વ્યવસ્થાયુકત થવાથી પલ્લવિતના સમાન, 'પ્રાર્થિત'=મનમા વિચારનો સ્વીકાર થઇ જવાથી પુષ્પિતના સમાન મનોગત સંકલ્પ=તે ઇષ્ટરૂપથી મનમા નિશ્ચય થઈ જવાથી ફલિતના સમાન અવસ્થાને પ્રાપ્ત થયો

ભાવાર્થ—સગ્રામ શરૂ થઇ જતા મહારાણી કાલીના હૃદયમા પુત્ર–સ્નેહના કારણે એક વૃક્ષના ફણગા જેવો આત્મિક ભાવ અંકુરિત થયો પછી તેજ વિચાર વારવારના ચિંતન સ્મરણથી દ્વિપત્ર અર્થાત્ જેમ બીજમાથી અંકુર અને અંકુર જરા વધવાથી બે કોમલ કિસલય–બે નવા પાદડા નિકળે છે તેવીજ રીતે વિચારોનુ સ્વરૂપ વધવા બાદ તેજ વાત્સલ્યમય વિચાર 'કલ્પિત' અર્થાત્ 'પલ્લવિત' વધારે પાદડાના રૂપમા આગળ આવે–પછી મનમા વધતા–વિસ્તાર પામતા તે વિચારો 'પ્રાર્થિત' થઈ જતા યાને પોતાનાજ વિશ્વાસથી સ્વીકારાઇ જવાથી પુષ્પિત ફૂલની પેઠે થઇ ગયા તથા

=अंशेन सहितेन एकादशभागिना कूणिकेन राज्ञा सार्द्ध रथमुशल=तदाख्य सङ्ग्रामम् उपयातः=उपगतः प्राप्त इत्यर्थः ॥ १३ ॥

मूलम्–तएणं तीसे कालीए देवीए अन्नया कयाइ कुडुंब-जागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प-ज्जित्था–एवं खलु मम पुत्ते कालकुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव ओयाए, से मन्ने किं जइस्सइ ? नो जइस्सइ ? जीवि-स्सइ नो जीविस्सइ ? पराजिणिस्सइ ? णो पराजिणिस्सइ ? काले णं कुमारे णं अहं जीवमाणं पासिज्जा ? ओहयमण० जाव झियाइ ॥ १४ ॥

छाया–ततः खलु तस्याः काल्या देव्या अन्यदा-कदाचित् कुटुम्ब जागरिका जाग्रत्या अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत–एवं खलु मम पुत्रः कालकुमार त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावत् उपयातः तन्मन्ये किं जेष्यति ? न जेष्यति ? जीविष्यति ? न जीविष्यति ? पराजेष्यते ? न पराजेष्यते ? कालं खलु कुमारम् अहं जीवन्तं द्रक्ष्यामि ? अपहतमनःसंकल्पा यावत् ध्यायति॥१४॥

टीका–'तएणं तीसे' इत्यादि। ततः=युद्धप्रवर्तनानन्तरम् अन्यदा कदाचित् एकस्मिन् दिने कुटुम्बजागरिकाः–कुटुम्बः=स्वजनवर्गः पोष्यवर्गादिस्तदर्थं जागरिका=जागरणमिन्द्रियैर्विषयज्ञानयोग्यावस्था जाग्रत्याः=प्राप्नुवत्याः, तस्याः काल्याः देव्याः अयम्=एष एतद्रूपः=वक्ष्यमाणलक्षणः आध्यात्मिकः=आत्म-

---

समयपर तीन २ हजार हाथी–घोडे–रथ आदि, एवं तीन करोड पैदल सेनाको लेकर गरुडव्यूहमें, ग्यारहवें अंशके भागी राजा कूणिकके साथ 'रथमुशल' संग्राम में उपस्थित हुआ ॥ १३ ॥

'तएणं तीसे' इत्यादि

संग्राम आरम्भ होनेपर इधर एक समय कुटुम्बजागरणा करती हुई काली महारानीके हृदयमें वृक्षके अङ्कुरसमान 'आध्यात्मिक'

હાથી ઘોડા રથ આદિ અને ત્રણ કરોડ પાયદળ સેનાને લઈને ગરૂડ વ્યૂહમા અગીયારમા ભાગના ભાગીદાર રાજા કૂણિકની સાથે 'રથમુશલ' સંગ્રામમા ઉપસ્થિત થયા (૧૩)

'तएणं तीसे' ઇત્યાદિ

સંગ્રામનો આરંભ થતા એક વખત કુટુંબ–જાગરણા કરતી કાલી મહારાણીના હૃદયમા વૃક્ષના અંકુરની પેઠે 'આધ્યાત્મિક' અર્થાત્ આત્મવિષયક વિચાર ઉત્પન્ન

विषयो विचारः वृक्षस्याङ्कुर इव, यावत्करणात्-"चिंतिए, कप्पिए, पत्थिए, मणोगए सकप्पे" इति सगृह्यन्ते, तदनु चिन्तितः=पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारः द्विपत्रित इव, ततः कल्पितः=स एव व्यवस्थायुक्तः पुत्रविषयको विचारः पल्लवित इव, प्रार्थितः स एव इष्टरूपेण स्वीकृतः पुष्पित इव, मनोगतः सकल्पः=मनसि इष्टरूपेण निश्चयः फलित इव समुदपद्यत=जातः ।

अर्थात् आत्मविषयक विचार उत्पन्न हुआ । वह - 'चिंतित' अर्थात् वारवार स्मरणसे 'द्विपत्रित' के समान, 'कल्पित' वही पुत्रविषयक विचार व्यवस्थायुक्त होनेसे 'पल्लवित' के समान, 'प्रार्थित' मनमें विचार स्वीकृत होजानेके कारण 'पुष्पित' के समान, 'मनोगत सकल्प' वही इष्ट रूपसे मनमें निश्चित होजानेके कारण 'फलित' के समान अवस्थाको प्राप्त हुआ ।

भावार्थ—सग्रामके प्रारम्भ होजाने पर महारानी कालीके हृदयमें पुत्र स्नेहके कारण एक समय वृक्षके अकुरके सदृश आत्मिक भाव अकुरित हुए, पश्चात् वेही विचार वारबारके चिन्तन-स्मरणसे द्विपत्रित अर्थात् जैसे बीजसे अकुर और अकुरके कुछ बढनेपर दो कोमल किशलय - दो नये पत्ते निकलते हैं, उसी प्रकार विचारोका स्वरूप बढा, बाद वेही वात्सल्यमय विचार 'कल्पित' याने पल्लवित-अधिक पत्रोंके रूपमे अग्रसर हुए, पश्चात् मनमें बढते - पनपते हुए उन विचारोंके 'प्रार्थित' होजानेपर याने अपने विश्वाससे स्वीकृत होजाने पर 'पुष्पित' फूले हुएके समान होगये और अन्तमें जब

થયો તે 'ચિંતિત'=અર્થાત વારવાર સ્મરણથી દ્વિપત્રિત સમાન, 'કલ્પિત'=તે પુત્ર વિષેનો વિચાર વ્યવસ્થાયુક્ત થવાથી પલ્લવિતના સમાન, 'પ્રાર્થિત'=મનમા વિચારનો સ્વીકાર થઇ જવાથી પુષ્પિતના સમાન મનોગત સ કલ્પ=તે ઇષ્ટરૂપથી મનમા નિશ્ચય થઈ જવાથી ફલિતના સમાન અવસ્થાને પ્રાપ્ત થયો

ભાવાર્થ—સગ્રામ શરૂ થઇ જતા મહારાણી કાલીના હૃદયમા પુત્ર-સ્નેહના કારણે એક વૃક્ષના ફણગા જેવો આત્મિક ભાવ અકુરિત થયો પછી તેજ વિચાર વારવારના ચિંતન સ્મરણથી દ્વિપત્ર અર્થાત્ જેમ બીજમાથી અકુર અને અકુર જરા વધવાથી બે કોમલ કિસલય-બે નવા પાદડા નિકળે છે તેવીજ રીતે વિચારોનુ સ્વરૂપ વધવા બાદ તેજ વાત્સલ્યમય વિચાર 'કલ્પિત' અર્થાત્ 'પલ્લવિત' વધારે પાદડાના રૂપમા આગળ આવે-પછી મનમા વધતા-વિસ્તાર પામતા તે વિચારો 'પ્રાર્થિત' થઈ જતા યાને પોતાનાજ વિશ્વાસથી સ્વીકારાઇ જવાથી પુષ્પિત ફૂલની પેઠે થઇ ગયા તથા

सकल्पस्वरूपमाह–'एव खलि'–त्यादिना । मम पुत्रः=आत्मजः काल कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः=त्रिसहस्रसख्यकगजैः, यावत्करणात्–रथानामश्वानाञ्च त्रिभिः सहस्रैर्मनुष्याणा च तिसृभिः कोटिभि. सह उपयातः=सङ्ग्रामाय गतः, तन्मन्ये=तत् सदिहे–किं जेष्यति ? सङ्ग्रामे शत्रूनभिभूय प्रताप प्राप्स्यस्यति ?, अथवा–न जेष्यति ?, जीविष्यति ?=प्राणधारण करिष्यति ? अथवा–न जीविष्यति ? पराजेष्यते ?=शत्रुतः परास्तो भविष्यति ? वा न पराजेष्यते ? अह काल कुमार=स्वपुत्र खलु=निश्चयेन जीवन्त = प्राणयुक्त द्रक्ष्यामि=प्रेक्षिष्ये, इत्येवम्, 'अपहृतमन'सकल्पा'–अपहतो=मलिनीभूतो मनःसकल्पो=योग्याऽयोग्य विचारो यस्याः सा तथा, यावत्करणात्–करयलपल्हत्थियमुही, अट्टज्झाणोवगया, ओमथियणयणवयणकमला, दीणविवन्नवयणा, मणोमाणसिएण दुक्खेण अभिभूया' एतेषा सङ्ग्रहः । करतलपर्यस्तितमुखी, आर्तध्यानोपगता, अवमथितनयनवदन कमला, दीनविवर्णवदना, मनोमानसिकेन दु'खेन अभिभूता, इतिच्छाया., 'कर

उनपर दृढ सकल्प होगया तब वे फलितसमान अवस्थाको प्राप्त हुए याने वृक्षके फलके समान फलरूप बन गये ।

अब महारानी कालीके बिचारका स्वरूप कहते हैं–'एव खलु' इत्यादि ।

मेरा पुत्र कालकुमार तीन२ हजार हाथी घोडे रथ और तीन कोटि सेनाके साथ सग्राममे गया है। मेरे मनमे इस बातका सशय आ रहा है कि–वह युद्धमे शत्रुओं पर विजय पावेगा अथवा नहीं? वह जीवित रहेगा या नहीं ?। शत्रु उससे पराजित होगे या नहीं ?। मैं अपने लाल कालकुमारको जीवितावस्थामे देखूगी या नहीं ?। इस प्रकारके अनेक सशयात्मक विचार करने लगि । ऐसे कर्तव्याकर्तव्यके

અતમા જ્યારે તેના ઉપર દૃઢ સકલ્પ થઇ ગયો ત્યારે તે 'ફલિત' જેવી અવસ્થાને પ્રાપ્ત થાય છે અર્થાત્ વૃક્ષના ફળની જેમ ફલરૂપ થઇ ગયા

હવે મહારાણી કાલીના વિચાર (સકલ્પ)નુ સ્વરૂપ કહે છે–'एव खलु' ઇત્યાદિ

મારો પુત્ર કાલ કુમાર ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી ઘોડા રથ તથા ત્રણ કરોડ સેનાની સાથે સગ્રામમા ગયો છે મારા મનમા આ વાતનો સશય આવે છે કે તે યુદ્ધમા શત્રુઓ ઉપર વિજય મેળવશે કે નહિ? તે જીવિત રહેશે કે નહિ? તેનાથી શત્રુ પરાજય પામશે કે નહિ? હુ મારા લાલ કાલકુમારને જીવિત અવસ્થામા જોઇશ કે નહિ? આ પ્રકારના અનેક સશયાત્મક વિચાર કરવા લાગી એવા કર્તવ્ય અકર્તવ્યના

तले'ति–करतले=हस्ततले पर्यस्तित=स्थापित मुख यया सा तथा, 'आर्ते'ति–ऋत=दुःख पुत्रविरहजन्य तत्र भवमार्त, तच्च ध्यान, तत्रोपगता=पुत्रविरहजन्य-दुःखान्वित ध्यानयुक्तेत्यर्थः, 'अवमथिते'ति–अवमथितानि=अधःकृतानि नयन-वदनरूपाणि कमलानि यया सा तथा, प्रबलदुःखेन निम्नम्लाननेत्रमुखकमले-त्यर्थः, 'दीने'ति–दीनस्य=अकिंचनस्येव विवर्ण=कान्तिरहित मुख यस्याः सा तथा=शोकम्लानवदनेत्यर्थः, 'मनोमानसिकेने'ति–मनसि भव मानसिक दुःख मनस्येव, न वहिः, वचनादिभिरप्रकाशितत्वात्–यत् तन्मनोमानसिक, तेन दुःखेन अभिभूता=व्याप्ता, शोकसागरप्रविष्टा ध्यायति=आर्त ध्यान करोति, इति ॥१४॥

मूलम्–तेण कालेणं तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसरिए । परिसा निग्गया । तए णं तीसे कालीए देवीए, इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ॥ १५ ॥

छाया–तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रवणो भगवान् महावीरः सम-वसृत । परिषत् निर्गता । ततः खलु तस्याः काल्याः देव्याः एतस्याः कथायाः लब्धार्थाया सत्याः अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत ॥१५॥

विचार और उनका निर्णय जब शिथिल अवस्थाको धारण करने लगे तब सहसा रानीका मन मलिन होगया और हथेलीपर अपना मुँह रखकर पुत्र विरहके दुःखसे क्षुब्ध रानी आर्तध्यान करने लगी । अत्यन्त दुःखके कारण कुम्हलाये हुए कमलके समान नेत्र और मुखको नीचा किये हुए बैठ गई, उसका मुख दीनजनके समान शोका-च्छादित–उदासीन हो गया । वह मानसिक दुःखोंसे घिरी हुई शोक सागरमे डूबी हुई आर्तध्यानपरायणा थी । ॥ १४ ॥

વિચાર તથા તેના નિર્ણય જ્યારે શિથિલ અવસ્થાને ધારણ કરવા લાગ્યા ત્યારે એકદમ રાણીનું મન મલિન થઈ ગયું તથા હથેળી ઉપર પોતાનું મો રાખીને પુત્ર વિરહના દુખથી પીડાતી રાણી આર્તધ્યાન કરવા લાગી અત્યત દુખને લીધે કરમાઈ ગયેલા કમળના જેવા નેત્ર તથા મુખને નીચુ કરીને બેસી ગઈ તેનુ મુખ ગરીબ માણસના જેવુ શોકાચ્છાદિત (દીલગીરીથી છવાઈ ગયેલુ) ઉદાસીન થઈ ગયુ તે માનસિક દુખોથી ઘેરાયેલી શોકના સાગરમા ડૂબી જવાથી આર્તધ્યાનપરાયણા હતી (૧૪)

९

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृतः=सदेवमनुष्यपरिषदि भव्यानुपदेष्टु समुपस्थितः, परिपत्=जनसमुदायः निर्गता=गृहान्निस्सृता । तत परिपन्निर्गमनानन्तर खलु=निश्चयेन तस्याः=पूर्वोक्तायाः प्रसिद्धाया वा, काल्या देव्याः एतस्याः=समीपतरवर्तिन्याः कथायाः लब्धार्थायाः-लब्धोऽर्थो यया सा तस्याः ज्ञातार्थाया इत्यर्थः, अयम् एतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः 'आध्यात्मिकः' आत्मनि विचारः यावत्पदगृहीताना 'चिंतिए, कप्पिए, पत्थिए, मणोगए सकप्पे' एतेषा च व्याख्याऽव्यवहितपूर्वसूत्रोक्तरीत्या विज्ञेया, समुदपद्यत ॥ १५ ॥

तदेव दर्शयति—'एव खलु' इत्यादि ।

मूलम्—एवं खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्विं० इहमागए जाव विहरइ, तं महाफल खलु तहारूवाणं जाव विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए, तं गच्छामि ण समण जाव पज्जुवासामि, इमं च णं एयारूव वागरणं पुच्छिस्सामित्तिकट्टु एवं सपेहेइ, सपेहित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जाणप्पवरजुत्तमेव उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता जाव पच्चप्पिणंति ॥ १६ ॥

'तेण कालेण' इत्यादि ।

उस काल उस समय श्रमण भगवान महावीर स्वामी उस नगरीमें पधारे। देवता और मनुष्योकी सभामें भव्योंको धर्म-देशना देने लगे। धर्मकथा श्रवण करनेके लिए परिषद निकली। भगवान यहाँ पधारे हैं, ऐसा वृत्तान्त सुनकर काली रानीके मनमें वक्ष्यमाण आगे कहे जानेवाले विचार उत्पन्न हुए। ॥ १५ ॥

'तेण कालेण' ઇત્યાદિ

તે કાળે તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સ્વામી તે નગરીમા પધાર્યા દેવતા તથા મનુષ્યોની સભામા ભવ્યોને ધર્મદેશના દેવા લાગ્યા ધર્મકથા સાભળવા માટે પરિષદ નીકળી ભગવાન અહીં પધાર્યા છે એવો વૃત્તાન્ત સાભળી કાલી રાણીના મનમા વક્ષ્યમાણ-આ પ્રમાણે વિચાર ઉત્પન્ન થયા (૧૫)

छाया—एवं खलु श्रमणो भगवान् महावीरः पूर्वानुपूर्व्या० इहागतं यावद् विहरति, तन्महाफलं खलु तथारूपाणां यावत् विपुलस्यार्थस्य ग्रहणतया तद्गच्छामि खलु श्रमणं यावत् पर्युपासे, इदं च खलु एतद्रूपं व्याकरणं प्रक्ष्यामि, इति कृत्वा एवं समेक्षते समेक्ष्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! धार्मिकं यानप्रवरं युक्तमेव उपस्थापयत, उपस्थाप्य यावत् प्रत्यर्पयन्ति ॥ १६ ॥

टीका—एवं खलु यत्-श्रमणो भगवान् महावीरः पूर्वानुपूर्वी=यथाक्रमं, यद्वा-पूर्वेषां तीर्थकराणां या आनुपूर्वी=परिपाटी मर्यादेत्यर्थः, तां चरन्=आचरन् परिपालयन्नित्यर्थः, "गामाणुगामं दूइज्जमाणे"=ग्रामानुग्रामं द्रवन् 'ग्रामानुग्रामम्'-एकस्माद् ग्रामाद् अनु=पश्चाद् यो ग्रामस्तम्, अर्थादनुक्रमेण ग्रामाद्ग्रामान्तरं द्रवन्=विहरन्, इह=अस्यां चम्पानगर्यां विद्यमानं पूर्णभद्रमुद्यानम् आगतः=समन्ताद् विहृत्योपस्थितः, यावत्करणात् 'अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे' एतेषां सङ्ग्रहः । छाया-'यथाप्रतिरूपम् अवग्रहम् अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्' इति । 'यथे'-ति-यथाप्रतिरूपं=यथा संयमिकल्पम् अवग्रहम्=निवासार्थमुद्यानपालस्याज्ञाम् अवगृह्य=आदाय संयमेन=सप्तदशविधेन तपसा=द्वादशविधेन आत्मानं भावयन्=वासयन् संयोजयन्निति यावत्, विहरति=विराजते, तत्=तस्मात् महाफलं-महत्=विशालं फलं=शुभपरिणामलक्षणम्, अत्र 'जत एवे'तिशेषः खलु=निश्चयेन तथारूपाणां शुभपरिणामरूपमहाफलजननस्वभावानां, यावच्छब्देन-"अरिहंताणं, भगवंताणं, णामगोयस्सवि सवणयाए किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणाए, एक्कस्सवि आरियस्स, धम्मियस्स, सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण" एतेषां सङ्ग्रहः । छाया—'अर्हतां भगवतां

वे विचार ये हैं-'एवं खलु' इत्यादि—

श्रमण भगवान महावीर प्रभु यहाँ पधारे हैं, और संयमी लोगोके कल्पके अनुसार निवासके लिए उद्यानपालकी आज्ञा लेकर संयम और तपसे अपनी आत्माको भावित करते हुए विराजते हैं, तथारूप अरि-

ते विચાર આ છે—'एवं खलु'

શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુ અહીં પધાર્યા છે તથા સંયમી લોકોના કલ્પને અનુસરી નિવાસને માટે ઉદ્યાનપાલની (વાડીના પાલક કે માળીની) આજ્ઞા લઈને સંયમ તથા તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા બિરાજે છે તથા રૂપ અરિહંત અર્થાત્ સર્વજ્ઞતાના કારણે જેનાથી કોઈ વાત અજાણી નથી અને સંપૂર્ણ ઐશ્વર્યના

नामगोत्रस्यापि श्रवणतया किमङ्ग ! पुनरभिगमन–वन्दन–नमस्यन–प्रतिप्रच्छन–पर्युपासनेन, एकस्यापि आर्यस्य धार्मिकस्य सुवचनस्य श्रवणतया किमङ्ग ! पुन" इति । 'अर्हता'–नास्ति रहः=प्रच्छन्न किञ्चिदपि येषा सर्वज्ञत्वात्तेऽर्हन्त स्तेषाम्, 'भगवता'–भगः=समग्रैश्वर्यादिगुण., स विद्यते येषा ते भगवन्त स्तेषाम् । नाम च=वर्धमानादि, गुणनिष्पन्नमभिधान गोत्र च=काश्यपादि, तयो. समाहारे नामगोत्र, तस्य श्रवणेनापि महाफल भवति । किमङ्ग ! पुन. अभि गमन=सम्मुख गमनम्, वन्दन=गुणकीर्तनम् । नमस्यन=पञ्चाङ्गसयत्ननमनपूर्वक नमस्करणम्, प्रतिप्रच्छन=शरीरादिवार्ताप्रश्नः, पर्युपासना=सावद्ययोगपरिहारपूर्वक-निरवद्यभावेन सेवाकरणम्–एतेषा समाहारस्तथा, अय भाव.–भगवन्नामगोत्र श्रवणमात्रेणापि शुभपरिणामरूप फल भवति, तर्हि अभिगमनादिना जात फल किं पुनः कथनीयम् ? अर्थात् तत्फलमानन्त्याद्वक्तुमशक्यमिति । एकस्यापि आर्यस्य=आर्यप्रणीतस्य धार्मिकस्य=श्रुतचारित्रलक्षणधर्मप्रतिबद्धस्य सुवचनस्य= सर्वप्राणिहितकारकवचसः श्रवणतया=श्रवणेन यत् फल तत् किं पुनर्वाच्यम् ?

हन्त अर्थात् सर्वज्ञताके कारण जिनसे कोई बात छिपी हुई नहीं है और सम्पूर्ण ऐश्वर्यके कारण जो भगवान हैं, उनके वर्धमान आदि नाम और कश्यप आदि गोत्रके सुननेसे भी शुभ परिणाम स्वरूप महाफल होता है तो सम्मुख जाना, गुण–कीर्तन करना और पाँचों अगोंको यतना पूर्वक नमाकर नमस्कार करना, शरीर आदिकी सुख शाता पूछना, और भगवानके त्यागी होनेके कारण सावद्यका परि हार–पूर्वक उनकी निरवद्य सेवा करना, इन सबका क्या फल होगा, इसका तो कहना ही क्या ?

और उनका एक भी श्रेष्ठ श्रुत चारित्र धर्म युक्त और समस्त प्राणियोंके हितकारी सुवचनके श्रवणसे जो महाफल मिलता है तो

કારણેજ ભગવાન છે તેમના વર્ધમાન આદિ નામ તથા કશ્યપ આદિ વગેરે ગોત્રને સાંભળવાથી શુભ પરિણામ સ્વરૂપ મહાફલ થાય છે–તો સમ્મુખ જવુ, ગુણનું કીર્તન કરવુ, તથા પાંચે અંગોને યતનાપૂર્વક નમાવીને નમસ્કાર કરવા, શરીર આદિ વગેરેની સુખ–શાતા પૂછવી તથા ભગવાન ત્યાગી હોવાથી સાવદ્યના પરિહાર પૂર્વક તેમની નિરવદ્ય સેવા કરવી એ બધાનું શું ફળ હોય તેનું તો કહેવુંજ શું ?

તેમના વચનના આચાર અને તેમના એક પણ શ્રેષ્ઠ શ્રુત ચારિત્ર ધર્મ યુક્ત તથા સમસ્ત પ્રાણિઓનું હિતકારી સુવચન સાંભળવાથી જે મહાફળ મળે

अर्थात् वक्तुमशक्यम् । विपुलस्य=प्रभूततरस्य अर्थस्य=भगवद्वचनप्रतिपाद्यविषयस्य श्रुतचारित्रलक्षणस्य ग्रहणतया=ग्रहणेन यत्फलं भवति तत् किं पुनर्वाच्यम्? अर्थात्कथमपि वक्तु न शक्यम् । तत्=तस्मात् कारणात् अहं गच्छामि श्रमण-श्राम्यति=तपस्यतीति श्रमणो=द्वादशवर्षाणि घोरतपश्चरणात् 'श्रमण' इति प्रसिद्धिं लब्धवान्, तम् । जावशब्देन-'भगवं महावीरं, वंदामि, नमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, विणएणं' इत्येषां संग्रहः । एतच्छाया—'भगवन्तं, महावीरं, वन्दे, नमस्यामि, सत्कारयामि, सम्मानयामि, कल्याणं, मङ्गलं, दैवतं, चैत्यं, विनयेन' इति ।

'भगवन्त'मिति-भगः=ज्ञान, माहात्म्य, यशः, वैराग्य, मुक्तिः,

उनका विपुल श्रुत चारित्र रूप जो अर्थ है उसको ग्रहण करनेके फलका तो कहना ही क्या है?-वह फल तो अकथनीय=है । इसलिये मैं श्रमण भगवान् महावीर प्रभुके पास जाऊँ और उनको वन्दन-नमस्कार करूँ, सत्कार सम्मान करूँ जो कल्याण स्वरूप हैं, मंगल स्वरूप हैं, दैवत-इष्ट देव हैं और चैत्य - ज्ञानस्वरूप हैं उन प्रभुकी विनयपूर्वक उपासना करूँ ।

अब यहाँ श्रमण भगवान आदि पदोंका विशेष अर्थ करते हैं:-

(१) श्रमण=साढे बारह वरस तक घोर तपस्या की, इसलिए 'श्रमण' नामसे प्रसिद्ध हैं । (२) भगवान्-भग शब्दके ज्ञानादि दस अर्थ जिनमें हो उन्हें भगवान कहते हैं । 'भग' शब्दके दस अर्थ-

(१) सम्पूर्ण पदार्थोंको विषय करनेवाला ज्ञान

(२) महात्म्य अर्थात अनुपम और महान् महिमा.

છે તો તેમના વિપુલ શ્રત ચારિત્ર રૂપી જે અર્થ છે તેના ગ્રહણ કરવાના ફળનુ તો કહેવુજ શુ ? તે ફળ તો અકથનીય છે આથી હુ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુની પાસે જાઉ તથા તેમને વદન નમસ્કાર કરૂ સત્કાર સન્માન કરૂ જે કલ્યાણ સ્વરૂપ છે મગળ સ્વરૂપ છે દૈવત અર્થાત્ ઇષ્ટ દેવ છે તથા ચૈત્ય-જ્ઞાનસ્વરૂપ છે તે પ્રભુની વિનયપૂર્વક ઉપાસના કરૂ

હવે અહીં શ્રમણ ભગવાન આદિ શબ્દોના વિશેષ અર્થ કરીએ છીએ

(૧) શ્રમણ=સાડા બાર વરસ સુધી ઉગ્ર તપશ્ચર્યા કરી તેથી 'શ્રમણ' નામથી પ્રસિદ્ધ છે (૨) ભગવાન-ભગ શબ્દના જ્ઞાન આદિ દશ અર્થ જેમા હોય તેને ભગવાન કહેવા ભગ' શબ્દોના દશ અર્થ—

(૧) સપૂર્ણ પદાર્થોને વિષય કરવાવાળુ જ્ઞાન

(૨) મહાત્મ્ય અર્થાત્ અનુપમ તથા મહાન્ મહિમા

नामगोत्रस्यापि श्रवणतया किमङ्ग ! पुनरभिगमन–वन्दन–नमस्यन–प्रतिप्रच्छन–पर्युपासनेन, एकस्यापि आर्यस्य धार्मिकस्य सुवचनस्य श्रवणतया किमङ्ग ! पुनः' इति । 'अर्हता'–नास्ति रहः=प्रच्छन्नं किञ्चिदपि येषां सर्वज्ञत्वात्तेऽर्हन्त स्तेषाम्, 'भगवता'–भगः=समग्रैश्वर्यादिगुणः, स विद्यते येषां ते भगवन्त स्तेषाम् । नाम च=वर्धमानादि, गुणनिष्पन्नमभिधानं गोत्रं च=कश्यपादि, तयोः समाहारे नामगोत्रं, तस्य श्रवणेनापि महाफलं भवति । किमङ्ग ! पुनः अभिगमनं=सम्मुखं गमनम्, वन्दनं=गुणकीर्तनम् । नमस्यनं=पञ्चाङ्गसयत्ननमनपूर्वकं नमस्करणम्, प्रतिप्रच्छनं=शरीरादिवार्ताप्रश्नः, पर्युपासना=सावद्ययोगपरिहारपूर्वकं निरवद्यभावेन सेवाकरणम्–एतेषां समाहारस्तथा, अयं भावः–भगवन्नामगोत्र श्रवणमात्रेणापि शुभपरिणामरूपं फलं भवति, तर्हि अभिगमनादिना जातं फलं किं पुनः कथनीयम् ? अर्थात् तत्फलमानन्त्याद्वक्तुमशक्यमिति । एकस्यापि आर्यस्य=आर्यप्रणीतस्य धार्मिकस्य=श्रुतचारित्रलक्षणधर्मप्रतिबद्धस्य सुवचनस्य= सर्वप्राणिहितकारकवचसः श्रवणतया=श्रवणेन यत् फलं तत् किं पुनर्वाच्यम् ?

हन्त अर्थात् सर्वज्ञताके कारण जिनसे कोई बात छिपी हुई नहीं है और सम्पूर्ण ऐश्वर्यके कारण जो भगवान हैं, उनके वर्धमान आदि नाम और कश्यप आदि गोत्रके सुननेसे भी शुभ परिणाम स्वरूप महाफल होता है तो सम्मुख जाना, गुण–कीर्तन करना और पाँचो अगोंको यतना पूर्वक नमाकर नमस्कार करना, शरीर आदिकी सुख-शाता पूछना, और भगवानके त्यागी होनेके कारण सावद्यका परिहार–पूर्वक उनकी निरवद्य सेवा करना, इन सबका क्या फल होगा, इसका तो कहना ही क्या ?

और उनका एक भी श्रेष्ठ श्रुत चारित्र धर्म युक्त और समस्त प्राणियोंके हितकारी सुवचनके श्रवणसे जो महाफल मिलता है तो

કારણેજ ભગવાન છે તેમના વર્ધમાન આદિ નામ તથા કશ્યપ આદિ વગેરે ગોત્રને સાંભળવાથી શુભ પરિણામ સ્વરૂપ મહાફલ થાય છે–તો સમ્મુખ જવું, ગુણનું કીર્તન કરવુ, તથા પાંચે અંગોને યતનાપૂર્વક નમાવીને નમસ્કાર કરવા, શરીર આદિ વગેરેની સુખ–શાતા પૂછવી તથા ભગવાન ત્યાગી હોવાથી સાવદ્યના પરિહાર પૂર્વક તેમની નિરવદ્ય સેવા કરવી એ બધાનું શું ફળ હોય તેનું તો કહેવુંજ શું ?

તેમના વચનના આચાર અને તેમના એક પણ શ્રેષ્ઠ શ્રુત ચારિત્ર ધર્મ યુક્ત તથા સમસ્ત પ્રાણિઓનું હિતકારી સુવચન સાંભળવાથી જે મહાફળ મળે

स्यामि=सयत्नपञ्चाङ्गनमनपूर्वकं नमस्करोमि, सत्कारयामि=अभ्युत्थानादिनिरवद्य-क्रियासम्पादनेनाऽऽराधयामि, सम्मानयामि=मनोयोगपूर्वकमर्हदुचितवाक्यप्रयोगादिना समाराधयामि, कल्याण=कर्मबन्धसकलोपाधिव्याधिबाधाविधुरत्वात् कल्यो मोक्षस्तम्, आ=समन्तात् नयति=प्रापयतीति ज्ञानादिरत्नत्रयलक्षणमोक्षमार्गोपदेशदानद्वारा (भविजनान्) कल्याः जन्मजरादिरोगमुक्तान् आणयति=धातूनामनेकार्थत्वात् सम्पादयतीति वा कल्याणस्तम्, 'मङ्गल=सकलहितप्रापकत्वाच्छुभमय, यद्वा-मा गालयति भवाब्धेस्तारयतीति मङ्गलः, अथवा-मङ्गते=अजरामरत्वगुणेन भविजनान् भूषयतीति मङ्गो=मोक्षस्तं लाति=आदत्त इति मङ्गलस्तम्, दैवतम्=आराध्यदेवस्वरूपम् अत्र 'देवतेव दैवतमिति स्वार्थेऽण्' चैत्य=चित्ते भव तदस्या

निर्मल मनके साथ वचनसे स्तुति करूँ। यतना-पूर्वक पाच अग नमाकर नमस्कार करूँ। यतना-पूर्वक अभ्युत्थान आदि निरवद्य क्रियासे भगवानका सत्कार करूँ। मनोयोग-पूर्वक अर्हन्तो का उचित वाक्य द्वारा सम्मान करूँ। कर्मबन्धसे उत्पन्न होनेवाली उपाधि-व्याधिके नाशक होनेसे 'कल्य' को मोक्ष कहते हैं, उसको प्राप्त करानेके कारण भगवान् कल्याण-स्वरूप हैं। अथवा ज्ञानादि रत्नत्रयरूप मोक्ष मार्गके उपदेश द्वारा भव्य जीवोको जन्म, जरा मृत्युरूप रोगसे मुक्त करते हैं, इस कारण भी कल्याणस्वरूप है। सम्पूर्णहितको प्राप्त करानेवाले तथा भवसागरसे तारनेवाले हैं इसलिये भगवान मङ्गल स्वरूप हैं। अथवा अजर अमर गुणोसे भव्यजनोको भूषित करनेके कारण 'मङ्ग' को मोक्ष कहते है, उसे जो प्राप्त करावे वह मङ्गल कहलाता है, इसलिये भगवान भी मङ्गल हैं। इष्टदेव स्वरूप

કરૂ યતના-પૂર્વક પાચ અગ નમાવીને નમસ્કાર કરૂ યતના-પૂર્વક અભ્યુત્થાન આદિ નિરવદ્ય ક્રિયાથી ભગવાનનો સત્કાર કરૂ મનોયોગ-પૂર્વક અર્હન્તોનુ ઉચિત વાકયોથી સમ્માન કરૂ કર્મબધથી ઉત્પન્ન થનારી ઉપાધિ અને વ્યાધિના નાશક હોવાથી 'કલ્ય' તે મોક્ષ કહેવાય છે તેને પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી ભગવાન કલ્યાણ-સ્વરૂપ છે અથવા-જ્ઞાનાદિ રત્નત્રયરૂપ મોક્ષ મર્ગના ઉપદેશ દ્વારા ભવ્ય જીવોને જન્મ જરા મૃત્યુ રૂપ રોગથી મુકત કરે છે આ કારણથી પણ કલ્યાણ-સ્વરૂપ- છે સપૂર્ણ હિતને પ્રાપ્ત કરાવવાવાળા તથા ભવસાગરથી તારવાવાળા છે તેથી ભગવાન મગલ-સ્વરૂપ છે અથવા અજર અમર ગુણોથી ભવ્ય જનોને ભૂષિત કરવાના કારણે મગને મોક્ષ કહેલ છે તેને જે પ્રાપ્ત કરાવે તે મગળ કહેવાય છે આથી ભગવાન્ પણ મગળ છે એવા ઇષ્ટદેવ-સ્વરૂપ હોવાથી દૈવત છે અને વિશિષ્ટ જ્ઞાનવાળા હોવાથી

सौन्दर्यम्, वीर्यः, श्रीः, धर्मः, ऐश्वर्यं, सोऽस्याऽस्तीति भगवान्, तम्, 'महावीर' मिति-वीरयति=पराक्रमते मोक्षानुष्ठाने इति वीरः, महाँश्चासौ वीरो महावीरो= वर्धमानस्वामी चरमतीर्थंकरस्तम् वन्दे=मनःप्रणिधानपूर्वक वाचा स्तौमि, नम

---

(३) विविध प्रकारके अनुकूल और प्रतिकूल परीषहोंको सहन करनेसे उत्पन्न होनेवाली या संसारकी रक्षा करनेवाले अलौकिक भावोंसे उत्पन्न होनेवाली कीर्ति ।

(४) क्रोध आदि कषायोंका सर्वथा निग्रहरूप वैराग्य ।

(५) समस्त कर्मोंका क्षयस्वरूप मोक्ष ।

(६) सुर – असुर और मानवके अन्तःकरणको हरलेने वाला सौन्दर्य ।

(७) अन्तराय कर्मके नाशसे उत्पन्न होनेवाला अनन्त बल ।

(८) घातिया–कर्मरूपी–पटलके हट जानेसे प्रादुर्भूत होनेवाली अनन्त चतुष्टय-(ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य-रूप) लक्ष्मी ।

(९) मोक्षके द्वारको खोलनेका साधन श्रत चारित्र यथा-ख्यात चारित्र रूप धर्म ।

(१०) तीन लोकका आधिपत्य रूप ऐश्वर्य ।

(३) महावीर–मोक्षके अनुष्ठानमे पराक्रम करनेवाले होनेसे महावीर कहे जाते हैं, ऐसे महावीर वर्धमान स्वामी चरम तीर्थंकरकी

---

(૩) વિવિધ પ્રકારના અનુકૂળ તથા પ્રતિકૂળ પરીષહોને સહન કરવાથી ઉત્પન્ન થનારી અથવા સંસારની રક્ષા કરવાવાળી અલૌકિક ભાવનાથી ઉત્પન્ન થનારી કીર્તિ

(૪) ક્રોધ આદિ કષાયોનો સર્વથા નિગ્રહરૂપ વૈરાગ્ય

(૫) તમામ કર્મોના ક્ષયસ્વરૂપ મોક્ષ

(૬) સુર–અસુર અને માનવના અંતઃકરણને હરી લેવાવાળુ સૌંદર્ય

(૭) અંતરાય કર્મના નાશથી ઉત્પન્ન થનારૂ અનંત બળ

(૮) ઘાતિયા કર્મ રૂપી પડદો હટી જવાથી પ્રાદુર્ભૂત હોવાવાળી અનંત ચતુષ્ટય (જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર, વીર્ય-રૂપ) લક્ષ્મી

(૯) મોક્ષના દ્વારને ઉઘાડનારૂ સાધન શ્રુત ચારિત્ર યથાખ્યાત ચારિત્ર રૂપ ધર્મ

(૧૦) ત્રણ લોકના આધિપત્ય રૂપ ઐશ્વર્ય

(૩) મહાવીર–મોક્ષના અનુષ્ઠાનમા પરાક્રમ કરવાવાળા મહાવીર કહેવાય એવા મહાવીર વર્ધમાન સ્વામી ચરમ તીર્થંકરની નિર્મળ મનની સાથે વાણીથી સ્તુતિ

मूलम्—तए णं सा काली देवी ण्हाया कयवलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहि जाव महत्तरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता नियगपरियालसंपरिवुडा चंपं नयरिं मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुन्नभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता छत्ताईए जाव धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं जाव महत्तरगविंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ, वंदित्ता ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणा नमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासइ ॥ १७ ॥

छाया—ततः खलु सा काली देवी स्नाता कृतबलिकर्मा यावत् अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरा बह्वीभिः कुब्जाभिः यावन्महत्तरकवृन्दपरिक्षिप्ताः अन्तःपुरान्निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला, यत्रैव धार्मिको यानप्रवरस्तत्रोपागच्छति, उपागत्य धार्मिकं यानप्रवरं दूरोहति, दूरुह्य निजकपरिवारसंपरिवृता चम्पां नगरीं मध्य-मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव पूर्णभद्रश्चैत्यस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य छत्रादिकं यावद् धार्मिकं यानप्रवरं स्थापयति स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवरात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य बह्वीभिः कुब्जाभिः यावत्-महत्तरकवृन्दपरिक्षिप्ता यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिःकृत्वो वन्दते, वन्दित्वा स्थिता चैव सपरिवारा शुश्रूषमाणा नमस्यन्ती अभिमुखी विनयेन प्राञ्जलिपुटा पर्युपासते ।१७।

टीका—'तएणं सा' इत्यादि—ततः=तदनन्तरं सा पूर्वोक्ता काली देवी स्नाता=कृतस्नाना कृतबलिकर्मा=स्नाने कृते पशुपक्ष्याद्यर्थं कृतान्नभागा, जाव-

स्तीति, यद्वा चित्तिर्विशिष्टज्ञान तया युक्तमिति, सर्वथा विशिष्टज्ञानवन्तमित्यर्थः, विनयेन=प्रतिपत्तिविशेषेण पर्युपासे=सेवे, तथा 'इम' ति–इद=मम हृदयस्थम् एतद्रूप पुत्रविषयक व्याकरण=प्रश्न खलु=निश्चयेन=प्रक्ष्यामि=निर्णेष्यामि, इति कृत्वा=इति मनसि निश्चित्य एवम् = अनेन प्रकारेण सप्रेक्षते=विचारयति, सप्रेक्ष्य=विचार्य, कौटुम्बिकपुरुषान्=प्रधानकर्मकारिपुरुषान्=शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा=आहूय, एव=वक्ष्यमाणम् अवदत्=आज्ञापयदिति ।

किमाज्ञापयत् ? इत्याह–'क्षिप्रमेवे'त्यादिना–भो देवानुप्रियाः !=हे कार्य करणप्रवीणा ! यूय धार्मिक=धर्माय नियुक्त धार्मिक, यात्यनेनेति यान रथादिक, तत्र प्रवर श्रेष्ठ शीघ्रगामित्वादिगुणोपेतम्, इत्युपलक्षण तेन 'चाउग्घट, आसरह' इत्यनयोरपि ग्रहणम् । एतच्छाया–चतुर्घण्टम्, अश्वरथम् इति । चतुर्घण्टमिति–चतस्र'=पृष्ठतोऽग्रत॰ पार्श्वतश्च लम्बमाना घण्टा यस्य यस्मिन् वा स चतुर्घण्टस्तम् 'अश्वरथ' मिति–अश्वयुक्तो रथोऽश्वरथः, शाकपार्थिवादित्वान्मध्य मपदलोप , तम्–युक्तमेव=अश्वसारथ्यादिसहितमेव न तु तद्रहित, क्षिप्र=शीघ्रमेव नतु विलम्बेन, उपस्थापयत=प्रगुणीकुरुत, उपस्थाप्य=प्रगुणीकृत्य यावच्छब्देन कौटुम्बिकपुरुषा कालीदेव्याज्ञानुसारेण सर्व कृत्वा तदाज्ञा प्रत्यर्पयन्ति ॥१६॥

होनेसे दैवत है । विशिष्ट ज्ञान युक्त होनेसे चैत्य है । ऐसे भगवानकी विनयके साथ निरवद्य सेवा करू, और मेरे हृदयमे स्थित पुत्रसम्बन्धी प्रश्नका निश्चय करू । इस प्रकार अपने मनमे विचार कर काली महा रानीने अपने कौटुम्बिक (आज्ञाकारी) जनोको बुलाया और आज्ञा दी ।

क्या आज्ञा दी ? वह कहते है–हे चतुर कार्यकर्ताओ ! तुम लोग रथोमे श्रेष्ठ–शीघ्र गतिवाला रथ जिसके आगे पीछे और दोनो बाजुओंमे चार घण्टिकायें लगी हुई ह ऐसा धार्मिक अश्वरथ, सारथी आदिके सहित लाओ । कौटुम्बिक पुरुष काली महारानीको आज्ञा अनुसार रथ तैयार कर उनसे बोले हे महारानी ! आपकी आज्ञानुसार रथ तैयार है ॥ १६ ॥

ચૈત્ય છે એવા ભગવાનની વિનય–પૂર્વક નિરવદ્ય સેવા કરૂ તથા મારા હૃદયમા રહેલ પુત્રસબધી પ્રશ્નનો નિશ્ચય–ખુલાસો–કરૂ આ પ્રકારે પોતાના મનમા વિચાર કરી કાલી મહારાણીએ પોતાના કૌટુમ્બિક (આજ્ઞાકારી) જનોને બોલાવ્યા તથા આજ્ઞા કરી

હે ચતુર કાર્યકર્તાઓ ! તમે લોકો ઉત્તમ રથ–શીઘ્ર ગતિવાળા રથ જેની આગળ પાછળ તથા બન્ને બાજુએ ચાર ઘટડીઓ લગાડેલી એવા ધાર્મિક અશ્વરથ, સારથી આદિ સહિત લઇ આવો કૌટુમ્બિક પુરૂષોએ કાલી મહારાણીની આજ્ઞા પ્રમાણે રથ તૈયાર કરીને તેને કહ્યુ –હે મહારાણી ! આપની આજ્ઞા પ્રમાણે રથ તૈયાર છે (૧૬)

याहिं ४, जोनयाहिं ५, पल्हवियाहिं ६, ईसिणियाहिं ७, वासिणियाहिं ८, लासियाहिं ९, लउसियाहिं १०, दविडीहिं ११, सिंहलीहिं १२, आरवीहिं १३, पक्कणीहिं १४, बहलीहिं १५, मुरुंडीहिं १६, सबरीहिं १७, पारसीहिं १८, णाणादेसाहिं- इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं," इत्येषा संग्रहः ।

चिलातीभिः=अनार्यदेशोत्पन्नाभिः-वामनाभिः=ह्रस्वशरीराभिः १, वट-भाभिः=मडहकोष्ठाभिः २, बर्बरीभिः=बर्बरदेशसंभवाभिः ३, बकुशिकाभिः ४, यौनकाभिः ५, पल्हविकाभिः ६, इसिनिकाभिः ७, वासिनिकाभिः ८, लासिकाभिः ९, लकुशिकाभिः १०, द्राविडीभिः ११, सिंहलीभि १२, आरवीभिः १३, पक्कणीभिः १४, बहुलीभिः १५, मुसण्डीभिः १६, शबरीभिः १७, पारसीभिः १८, नानादेशाभिः=बहुविधदेशोत्पन्नाभिरित्यर्थः, इङ्गितचिन्तितप्रार्थितविज्ञायिकाभिः, इङ्गितेन=नेत्रवक्त्रहस्ताङ्गुल्यादिचेष्टाविशेषेण चिन्तित=हृदि भावित,

---

देशकी, (४) 'बकुशिका'-बकुश देशकी, (५) 'यौनका'-यौन देशकी, (६) 'पल्हविका'-पल्हव देशकी, (७) इसिनिका'-इसिनिकदेशकी, (८) 'वासिनिका' वासिनिक देशकी, (९) 'लासिका'-लासिक देशकी, (१०) 'लकुशिका'-लकुश देशकी, (११) 'द्राविडी'-द्रविड देशकि, (१२) 'सिंहली'-सिंहल देशकी, (१३) 'आरवी'-अरब देशकी, (१४) 'पक्कणी'-पक्कण देशकी, (१५) 'बहुली'-बहुल देशकी, (१६) 'मुसण्डी'-मुसण्ड देशकी, (१७) 'शबरी'-शबर देशकी, और (१८) 'पारसी'-पारस देशकी दासियाँ ।

इस प्रकारकी अनेक देशमे उत्पन्न होनेवाली दासियाँ, जो इङ्गित, चिन्तित, प्रार्थितको जाननेवाली थी ।

' इङ्गित '-का अर्थ-नेत्र, मुख, हाथ तथा अंगुली आदिके इशारेसे अभिप्रायको जानना ।

દેશની (૭) ઇસનિક દેશની (૮) વાસિનિક દેશની (૯) લાસિક દેશની (૧૦) લકુશ દેશની (૧૧) દ્રવિડ દેશની (૧૨) સિંહલ દ્વીપ દેશની (૧૩) અરબ દેશના (૧૪) પક્કણુ દેશની (૧૫) બહુલ દેશની (૧૬) મુસડ દેશની (૧૭) શબર દેશની તથા (૧૮) પારસ દેશની દાસીઓ

આવી રીતે અનેક દેશમા ઉત્પન્ન થનારી દાસીઓ ઇંગિત, ચિંતિત, પ્રાર્થિતને જાણુવા વાળી હતી

' ઇંગિત ' નો અર્થ નેત્ર, મુખ, હાથ તથા આગળી આદિના ઇશારાથી અભિપ્રાયને જાણુવો

शब्देन-'कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेस्साइं वत्थाइं पवरपरिहिया' इत्येषां सङ्ग्रहः। एतच्छाया च-कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता, शुद्धप्रवेश्यानि वस्त्राणि प्रवरपरिधृता' 'कृतकौतुके'ति-कृतानि कौतुकानि मषीपुण्ड्रादीनि, मङ्गलानि= सर्षपदध्यक्षतचन्दनदूर्वादीनि च प्रायश्चित्तानीव दुःस्वप्नादिविनाशायावश्यकर्तव्य त्वात्प्रायश्चित्तानि यया सा तथा, यथा पापविनाशार्थं प्रायश्चित्तमवश्य क्रियते तथैव दुःस्वप्नदोपशान्त्यर्थं दध्यक्षतादीनि मङ्गलान्यवश्य ध्रियन्त इति तात्पर्यम्। 'अल्पमहर्घे'-ति-अल्पानि=स्तोकभारवन्ति महार्घाणि=बहुमूल्यानि यानि आभरणानि=भूषणानि तैरलङ्कृत=भूषित शरीर यस्या॰ सा अल्पमहार्घाभरणालङ्कृत शरीरा, बह्वीभिः=प्रचुराभिः, कुब्जाभिः=कुब्जशरीराभिः सेवापरायणदासीभि॰ 'जाव' शब्देन-"चिलाईहिं वामणाहिं १, वडभाहिं २, बब्बरीहिं ३, बउसि

'तएण सा' इत्यादि-बाद रानीने स्नान किया और पशु पक्षी आदिके लिये अन्नका भाग निकालनेरूप बलिकर्म किया और दृष्टिदोष (नजर) निवारणके लिये मषी (काजल) का चिह्न किया और पाप नाश करनेके लिए जैसे प्रायश्चित्त किया जाता है वैसे ही दुःस्वप्न आदि दोषोंके निवारणके लिए मङ्गलरूप सरसो, दहीं, चावल चन्दन ओर दूब आदिको धारण किया, तथा अल्प भार किन्तु बहुमूल्य भूषणोंसे शरीरको भूषित किया और सेवापरायण कुबडी आदि १८ अठारह प्रकारकी दासियोंको साथ चलनेका हुक्म दिया। उन दासियोंके नाम इस प्रकार हैं-(१) 'चिलाती' चिलात नामके अनार्य देशमें उत्पन्न होने वाली 'कुब्जा'-कुबडी तथा 'वामना'-ठिंगनी दासियां, (२) 'वटभा'-जिस देशमें छोटे-छोटे पेटवाले जन्मते हैं उस देशकी, (३) 'बर्बरी'-बर्बर

'तएण सा' ઇત્યાદિ પછી રાણીએ સ્નાન કર્યું તથા પશુ પક્ષી આદિને માટે અન્નનો ભાગ કાઢવા રૂપી બલિકર્મ કર્યું તથા દૃષ્ટિદોષ (નજર) ના નિવારણને માટે મષી (કાજળ)નું ચિહ્ન કર્યું તથા પાપનાશ કરવા માટે જેમ પ્રાયશ્ચિત્ત કરાય છે તેવીજ રીતે દુઃસ્વપ્ન આદિ દોષોના નિવારણને માટે મંગલરૂપ સરસવ, દહીં ચાવલ, ચંદન તથા દૂર્વા વગેરેને ધારણ કર્યા, તથા વજનમાં અલ્પ પણ કિમ્મતમાં ભારે એવા ઘરેણાથી શરીરને શણગાર્યું સેવાપરાયણ કૂબડી દાસીઓ આદિ ૧૮ પ્રકારની દાસીઓને સાથે ચાલવાને હુકમ કર્યો તેના નામ આ પ્રકારે છે—(૧) ચિલાત નામના અનાર્ય દેશમાં ઉત્પન્ન થનારી કૂબડી અને ઠીંગણી દાસીઓ. (૨) જે દેશમાં નાના નાના પેટવાળા જન્મ લે છે તે દેશની (૩) બર્બર દેશની (૪) બકુશ દેશની (૫) યોન દેશની (૬) પહ્

याहिं ४, जोनयाहिं ५, पल्हवियाहिं ६, ईसिणियाहिं ७, वासिणियाहिं ८, लासियाहिं ९, लउसियाहिं १०, दविडीहिं ११, सिंहलीहिं १२, आरवीहिं १३, पक्कणीहिं १४, बहलीहिं १५, मुरुंडीहिं १६, सबरीहिं १७, पारसीहिं १८, णाणादेसाहिं- इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं," इत्येषा सग्रहः ।

चिलातीभिः=अनार्यदेशोत्पन्नाभिः–वामनाभि'=ह्रस्वशरीराभिः १, वट-भाभिः=मडहकोष्ठाभिः २, बर्बरीभिः=बर्बरदेशसभवाभिः ३, बकुशिकाभिः ४, यौनकाभिः ५, पल्हविकाभिः ६, इसिनिकाभि' ७, वासिनिकाभिः ८, लासिकाभिः ९, लकुशिकाभिः १०, द्राविडीभिः ११, सिंहलीभि. १२, आरवीभिः १३, पक्कणीभिः १४, बहुलीभि' १५, मुसण्डीभिः १६, शबरीभि' १७, पारसीभिः १८, नानादेशाभिः=बहुविधदेशोत्पन्नाभिरित्यर्थः, इङ्गितचिन्तितप्रार्थित-विज्ञायिकाभिः, इङ्गितेन=नेत्रवक्त्रहस्ताङ्गुल्यादिचेष्टाविशेषेण चिन्तित=हृदि भावित,

---

देशकी, (४) 'बकुशिका'–बकुश देशकी, (५) 'योनका'–यौन देशकी, (६) 'पल्हविका'–पल्हव देशकी, (७) इसिनिका'–इसिनिकदेशकी, (८) 'वासिनिका' वासिनिक देशकी, (९) 'लासिका'–लासिक देशकी, (१०) 'लकुशिका'–लकुश देशकी, (११) 'द्राविडी'–द्रविड देशकि, (१२) 'सिंहली'–सिंहल देशकी, (१३) 'आरवी'–अरब देशकी, (१४) 'पक्कणी'–पक्कण देशकी, (१५) 'बहुली'–बहुल देशकी, (१६) 'मुसण्डी'–मुसण्ड देशकी, (१७) 'शबरी'–शबर देशकी, और (१८) 'पारसी'–पारस देशकी दासियाँ ।

इस प्रकारकी अनेक देशमे उत्पन्न होनेवाली दासियाँ, जो इङ्गित, चिन्तित, प्रार्थितको जाननेवाली थी ।

' इङ्गित '–का अर्थ–नेत्र, मुख, हाथ तथा अगुली आदिके इशारेसे अभिप्रायको जानना ।

દેશની (૭) ઇસનિક દેશની (૮) વાસિનિક દેશની (૯) લાસિક દેશની (૧૦) લકુશ દેશની (૧૧) દ્રવિડ દેશની (૧૨) સિંહલ દ્વીપ દેશની (૧૩) અરબ દેશના (૧૪) પકકણ દેશની (૧૫) બહુલ દેશની (૧૬) મુસડ દેશની (૧૭) શબર દેશની તથા (૧૮) પારસ દેશની દાસીઓ

આવી રીતે અનેક દેશમા ઉત્પન્ન થનારી દાસીઓ ઇંગિત, ચિંતિત, પ્રાર્થિતને જાણવા વાળી હતી.

' ઇંગિત ' નો અર્થ નેત્ર, મુખ, હાથ તથા આગળી આદિના ઇશારાથી અભિપ્રાયને જાણવો

प्रार्थितं च=अभिलषितं च विजानन्ति यास्तथा, ताभिःबुध्यमानाभिः, युक्तेति शेषः । तथा 'महत्तरे'ति—अतिशयेन महान्=महत्तरः स एव महत्तरकः=अन्तःपुररक्षकः, तेषां वृन्दम्=नानादेशोत्पन्नचेटकसमूहस्तेन 'परिक्षिप्ता'=परि=सर्वतः क्षिप्ता=मध्ये स्थापिता, तथा सती अन्तःपुरात् निर्गच्छति=बहिर्निःसरति निर्गत्य यत्रैव=यस्मिन्नेव स्थाने बाह्या=बहिर्भवा उपस्थानशाला=उपवेशनमण्डपः यत्रैव=यस्मिन्नेव स्थले धार्मिकयानप्रवरः=रथादियानोत्तमः, तत्रैव=तस्मिन्नेव स्थाने उपागच्छति=समुपैति, उपागम्य=धार्मिकयानप्रवरसमीपमागत्य धार्मिकं=धर्माय नियुक्तं यानप्रवरं दूरोहति=आरोहति, दूरुह्य=उक्तयानप्रवरमारुह्य 'निजके' ति—निजा एव निजकाः=स्वकीयाः परिवाराः=दास्यादयः, तैः सपरिवृता=परिवेष्टिता, चम्पां नगरीं मध्यमध्येन=चम्पानगर्या मध्यभागेन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव पूर्णभद्रचैत्यं तत्रैव उपागच्छति=समायाति, उपागत्य 'छत्ताईए' छत्रादिकान् 'यावत्'—शब्देन तीर्थकरातिशेषान् पश्यति, दृष्ट्वा धार्मिकं यानप्रवरं स्थापयति, स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवराद्=धार्मिकरथात् प्रत्यवरोहति=अधस्तादवतरति, प्रत्यवरुह्य=अवतीर्य बहीभिः कुब्जाभि=पूर्वोक्तदासीभिर्युक्ता यावत् महत्तरकवृन्दपरिक्षिप्ता पञ्चाभिगमपुरस्सरं यत्रैव=यस्मिन्नेव पूर्णभद्रोद्याने भगवान् महावीर-

---

'चिन्तित'—हृदयके भावको अनुमानसे समझना ।

'प्रार्थित'—अभिलषितको अनुमानसे जानना ।

ऐसी दासियोंके साथ अन्तःपुररक्षक पुरुषवृन्दसे तथा अनेक देशमें उत्पन्न होनेवाले दाससमूहसे घिरी हुई अन्तःपुरसे बाहर निकलकर भवनके सभा-मण्डपमें जिस स्थलपर धार्मिक रथ था वहाँ आई और रथमें बैठी । बाद अपने सब परिवार के साथ चम्पा नगरीके बीच-रास्तेसे होकर जहाँ पूर्णभद्र चैत्य था वहाँ पहुँची । और तीर्थंकरके छत्र आदि अतिशयोंको देखकर अपने रथको स्थापित किया और

'ચિંતિત'—હૃદયના ભાવને અનુમાનથી સમજાવો

'પ્રાર્થિત'—અભિલષિત (ઈચ્છા જેની હોય તે) અનુમાનથી જાણવું

એવી દાસીઓની સાથે અંતઃપુરરક્ષક પુરૂષવૃંદથી તથા અનેક દેશના ઉત્પન્ન થનારા દાસસમૂહથી ઘેરાયેલી અંતઃપુરથી બહાર નીકળીને ભવનના સભામંડપમાં જે ઠેકાણે ધાર્મિક રથ હતો ત્યાં જઇ રથમાં બેઠી. પછી પોતાના સઘળા પરિવારની સાથે ચંપા નગરીના મધ્ય રસ્તામાં થઇને જ્યાં પૂર્ણભદ્ર ચૈત્ય હતું ત્યાં પહોંચી તથા તીર્થંકરોના છત્રાદિ અતિશયોને જોઇને પોતાના રથને ઉભો રાખી નીચે ઉતરી અને પછી પોતાના

स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रमण भगवन्त महावीर त्रिःकृत्वो वन्दते, च= पुनः स्थितैव सपरिवारा शुश्रूषमाणा=सेवमाना नमस्यन्ती अभिमुखी=सम्मुखं स्थिता विनयेन = नम्रभावेन प्राञ्जलिपुटा = ललाटतटसविनयविन्यस्तकरकमला पर्युपास्ते=सेवते ॥ १७ ॥

मूलम्—तए णं समणे भगव जाव कालीए देवीए तीसे य महतिमहालयाए धम्मकहा भाणियव्वा जाव समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ ॥ १८ ॥

छाया—ततः खलु श्रमणो भगवान यावत् काल्यै देव्यै तस्या च महातिमहालयाया परिषदि धर्मकथा भणितव्या यावत् श्रमणोपासको वा श्रमणोपासिका वा विहरन् आज्ञाया आराधको भवति ॥ १८ ॥

टीका—'तएण समणे' इत्यादि—ततः=तदनन्तर श्रमणो भगवान महावीरः यावद्—सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तुकामः, काल्यै देव्यै तस्या= पूर्वोक्ताया महाति—महालयाया=अतिविशालाया परिषदि धर्मकथा भणितव्या= कथयितव्या, धर्मकथास्वरूप विस्तरत उपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसजीविन्याख्याया व्याख्याया विलोकनीय विशेषजिज्ञासुभिरिति ।

रथसे नीचे उतरी। फिर अपने सब परिवारके साथ पाच अभिगम पूर्वक जहाँ भगवान विराजते हैं वहाँ पहुँचकर विधिपूर्वक वन्दना-नमस्कार किया, और सपरिवार भगवानके सम्मुख नतमस्तक हो विनयके साथ अञ्जलिपुटको ललाटपर रखती हुई खडी होकर सेवा करने लगी ॥ १७ ॥

'तएण समणे' इत्यादि। बाद मोक्षगामी श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने काली महारानीको लक्ष्य करके विशाल परिषदमें धर्मकथा कही। धर्मकथाका विशेष वर्णन जाननेके जिज्ञासुओंको हमारी बनाई

સઘળા પરિવાર સાથે પાચ અભિગમ-પૂર્વક જ્યા ભગવાન બિરાજતા હતા ત્યા પહોચીને વિધિપૂર્વક વદના-નમસ્કાર કર્યા તથા સપરિવાર ભગવાનની સમ્મુખ માથુ નમાવીને વિનયપૂર્વક અજલિ પુટને (જોડેલા હાથને) લલાટ પર રાખી ઊભી રહીને સેવા કરવા લાગી (૧૭)

'तएण समणे' ઇત્યાદિ, બાદ મોક્ષગામી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર સ્વામીએ કાલી મહારાણીને લક્ષ્ય કરી વિશાલ પરિષદમા ધર્મકથા કહી ધર્મકથાનુ વિશેષ વર્ણન

'जाव' शब्देन-'एयस्स अगारधम्मस्स अणगारधम्मस्स सिक्खाए उट्ठिए' इत्येषा सङ्ग्रहः । एतच्छाया च-'एतस्य अगारधर्मस्य अनगार धर्मस्य, शिक्षायाम् उत्थित' इति । एतस्यागारधर्मस्यानगारधर्मस्य शिक्षाया मुत्थितः=उद्यतः श्रमणोपासकः=श्रावकः श्रमणोपासिका=श्राविका वा द्वावपि विहरन्तौ आज्ञायाः=भगवदाज्ञायाः आराधकौ भवतः ॥ १८ ॥

अथ कालीवक्तव्यमाह-'तए ण सा' इत्यादि ।

मूलम्-तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ-जाव-हियया समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव एवं वयासी-एवं खलु भंते! मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव रहमुसलसंगामं ओयाए, से णं भंते किं जइस्सइ? नो जइस्सइ? जाव काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा?। कालीति समणे भगवं महावीरे कालिं देविं एवं वयासी-एवं खलु काली! तव पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव कूणिएणं रन्ना सद्धिं रहमुसलं संगामं संगामेमाणे हयमहियपवरवीरघाइयनिवडियचिंधज्झयपडागे निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगस्स रन्नो सपक्खं सपडिदिसिं रहेणं पडिरहं हव्वमागए ॥१९॥

छाया--तत खलु सा काली देवी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावत्-हृदया श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रि॰

हुई उपासकदशाङ्ग सूत्रकी अगारधर्म-सञ्जीवनी नामक टीकामें देखना चाहिये।

'जाव' शब्दसे अगार अनगार धर्मकी शिक्षामें तत्पर श्रावक और श्राविका को भगवानकी आज्ञाके आराधक जानना ॥ १८ ॥

જાણવા માટે જીજ્ઞાસુઓએ અમારી બનાવેલી उपासकदशाङ्गसूत्रनी अगारधर्मसञ्जीवनी નામની ટીકામાં જોઈ લેવું જોઈએ

'जाव' શબ્દથી અગાર અનગાર ધર્મની શિક્ષામાં તત્પર શ્રાવક તથા શ્રાવિકાને ભગવાનની આજ્ઞાના આરાધક સમજવા. ॥ १८ ॥

कृत्वो यावदेवमवादीत्-एवं खलु भदन्त ! मम पुत्रः काल. कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावत्-रथमुशलसङ्ग्रामम् अवयातः, स खलु भदन्त ! किं जेष्यति? नो जेष्यति? यावत् काल खलु कुमारमहं जीवन्त द्रक्ष्यामि? कालि! इति श्रमणो भगवान् महावीर. कालीं देवीमेवमवादीत्-एवं खलु कालि! तव पुत्रः कालः कुमार. त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यावत् कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं रथमुशल सङ्ग्राम सङ्ग्रामयन हतमथितप्रवरवीरघातितनिपातितचिह्नध्वजपताकः निरालोका दिशः कुर्वन् चेटकस्य राज्ञः सपक्ष सप्रतिदिक् रथेन प्रतिरथ हव्यमागतः ॥ १९ ॥

टीका-ततः=धर्मकथाश्रवणानन्तर, काली देवी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तिके=समीपे धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण श्रुत्वा=कर्णविषयीकृत्य निशम्य=हृदयेनाऽवधार्य हृष्ट-यावत्-हृदया-हृष्टतुष्टचित्तानन्दिता हर्षवशविसर्पद्हृदया सती श्रमण भगवन्त महावीर त्रि.कृत्व.=त्रिवार यावत्-वन्दित्वा नमस्यित्वा एव=वक्ष्यमाणम् अवादीत्=अवोचत्-हे भदन्त ! खलु=निश्चयेन एवम्=अनेन प्रकारेण मम पुत्रः कालकुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः=हस्तिसहस्रैः, 'जाव' शब्देन-त्रिभिस्त्रिभी रथाश्वसहस्रैर्मनुष्याणा तिसृभिः कोटिभिर्युक्तो रथमुशल सङ्ग्रामम् अवयात.=समुपागत, हे भदन्त ! सः=कालः कुमार. खलु=निश्चयेन किं जेष्यति? वा नो जेष्यति? यावच्छब्देन-जीविष्यति? नो जीविष्यति? पराजेष्यते? नो पराजेष्यते? अह काल कुमार खलु=निश्चयेन जीवन्त

अब काली रानीके प्रश्नका वर्णन करते हैं-'तएण सा' इत्यादि।

श्रमण भगवान महावीरके समीप श्रुतचारित्रलक्षण धर्म सुनकर और उसे हृदयमें धारणकर प्रफुल्लित हो तीन बार वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार भगवानसे पूछने लगी-

हे भगवान्! मेरा पुत्र कालकुमार तीन २ हजार हाथी-घोडे-रथ और तीन करोड पैदल सेनाके साथ रथमुशल सग्राममे गया है वह विजयी होगा या नहीं?, वह जीवित रहेगा या नहीं?, वह पराभवको पायेगा या जीतेगा?, मैं उसे जिन्दा देखूँगी या नही?,

---

હવે કાલી રાણીના પ્રશ્નનુ વર્ણન કરે છે-'तएण सा' ઇત્યાદિ

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસેથી શ્રુતચારિત્રલક્ષણ ધર્મ સાભળીને તથા તેને હૃદયમા ધારણ કરી પ્રફુલ્લિત થઇ ત્રણ વાર વદન-નમસ્કાર કરી આવી રીતે ભગવાનને પૂછવા લાગી-

હે ભગવન્! મારો પુત્ર કાલકુમાર ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી-ઘોડા-રથ તથા ત્રણ કરોડની પાયદળ સેનાની સાથે રથમુશલ સગ્રામમા ગયો છે તે વિજયી થશે કે

'जाव' शब्देन-'एयस्स अगारधम्मस्स अणगारधम्मस्स सिक्खाए उट्ठिए' इत्येषा सङ्ग्रहः। एतच्छाया च-'एतस्य अगारधर्मस्य अनगारधर्मस्य, शिक्षायाम् उत्थित' इति। एतस्यागारधर्मस्यानगारधर्मस्य शिक्षायामुत्थित'=उद्यतः श्रमणोपासकः=श्रावकः श्रमणोपासिका=श्राविका वा द्वावपि विहरन्तौ आज्ञाया.=भगवदाज्ञायाः आराधकौ भवतः ॥ १८ ॥

अथ कालीवक्तव्यमाह-'तए ण सा' इत्यादि।

मूलम्—तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ—जाव—हियया समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव एव वयासी—एव खलु भंते! मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहि जाव रहमुसलसंगामं ओयाए, से णं भंते किं जइस्सइ? नो जइस्सइ? जाव काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा?। कालीति समणे भगवं महावीरे कालिं देविं एवं वयासी—एव खलु काली! तव पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव कूणिएणं रन्ना सद्धिं रहमुसलं संगामं संगामेमाणे हयमहियपवरवीरघाइयनिवडियचिंधज्झयपडागे निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगस्स रन्नो सपक्खं सपडिदिसिं रहेणं पडिरहं हव्वमागए ॥१९॥

छाया—ततः खलु सा काली देवी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावत्-हृदया श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रि.

हुई उपासकदशाङ्ग सूत्रकी अगारधर्म-सजीवनी नामक टीकामे देखना चाहिये।

'जाव' शब्दसे अगार अनगार धर्मकी शिक्षामे तत्पर श्रावक और श्राविका को भगवानकी आज्ञाके आराधक जानना ॥ १८ ॥

જાણવા માટે જીજ્ઞાસુઓએ અમારી બનાવેલી उपासकदशाङ्गसूत्रनी अगारधर्मसजीवनी નામની ટીકામા જોઇ લેવુ જોઇએ

'जाव' શબ્દથી અગાર અનગાર ધર્મની શિક્ષામા તત્પર શ્રાવક તથા શ્રાવિકાને ભગવાનની આજ્ઞાના આરાધક સમજવા. ॥ १८ ॥

कृत्वो यावदेवमवादीत्-एवं खलु भदन्त ! मम पुत्रः काल. कुमारः त्रिभि-र्दन्तिसहस्रै. यावत्-रथमुशलसङ्ग्रामम् अवयातः, स खलु भदन्त ! किं जेष्यति? नो जेष्यति? यावत् काल खलु कुमारमहं जीवन्त द्रक्ष्यामि? कालि! इति श्रमणो भगवान् महावीर कालीं देवीमेवमवादीत्-एवं खलु कालि! तव पुत्रः कालः कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यावत् कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं रथमुशल सङ्ग्राम सङ्ग्रामयन् हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताकः निरालोका दिशः कुर्वन् चेटकस्य राज्ञः सपक्ष सप्रतिदिक् रथेन प्रतिरथ हव्यमागतः ॥ १९ ॥

टीका-ततः=धर्मकथाश्रवणानन्तरं, काली देवी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तिके=समीपे धर्मं=श्रुतचारित्रलक्षण श्रुत्वा=कर्णविषयीकृत्य निशम्य=हृदयेनाऽवधार्य हृष्ट-यावत्-हृदया-हृष्टतुष्टचित्तानन्दिता हर्षवशविसर्पद्हृदया सती श्रमण भगवन्त महावीर त्रिःकृत्वः=त्रिवार यावत्-वन्दित्वा नमस्यित्वा एवं=वक्ष्यमाणम् अवादीत्=अवोचत्-हे भदन्त ! खलु=निश्चयेन एवम्=अनेन प्रकारेण मम पुत्रः कालकुमार. त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः=हस्तिसहस्रैः, 'जाव'शब्देन-त्रिभिस्त्रिभी रथाश्वसहस्रैर्मनुष्याणा तिसृभि. कोटिभिर्युक्तो रथमुशल सङ्ग्रामम् अवयात.=समुपागत , हे भदन्त ! सः=कालः कुमार. खलु=निश्चयेन किं जेष्यति? वा नो जेष्यति? यावच्छब्देन-जीविष्यति? नो जीविष्यति? पराजेष्यते? नो पराजेष्यते? अहं काल कुमार खलु=निश्चयेन जीवन्त

अब काली रानीके प्रश्नका वर्णन करते हैं-' तएण सा ' इत्यादि।

श्रमण भगवान महावीरके समीप श्रुतचारित्रलक्षण धर्म सुनकर और उसे हृदयमें धारणकर प्रफुल्लित हो तीन बार वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार भगवानसे पूछने लगी-

हे भगवान्! मेरा पुत्र कालकुमार तीन २ हजार हाथी-घोडे-रथ और तीन करोड पैदल सेनाके साथ रथमुशल सग्राममें गया है वह विजयी होगा या नहीं?, वह जीवित रहेगा या नहीं?, वह पराभवको पायेगा या जीतेगा?, मैं उसे जिन्दा देखूँगी या नहीं?,

---

હવે કાલી રાણીના પ્રશ્નનુ વર્ણન કરે છે-' तएण सा ' ઇત્યાદિ

શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરની પાસેથી શ્રુતચારિત્રલક્ષણુ ધર્મ સાભળીને તથા તેને હૃદયમા ધારણુ કરી પ્રફુલ્લિત થઇ ત્રણુ વાર વદન-નમસ્કાર કરી આવી રીતે ભગવાનને પૂછવા લાગી-

હે ભગવન્! મારો પુત્ર કાલકુમાર ત્રણુ ત્રણુ હજાર હાથી-ઘોડા-રથ તથા ત્રણુ કરોડની પાયદળ સેનાની સાથે રથમુશલ સગ્રામમા ગયો છે તે વિજયી થશે કે

द्रक्ष्यामि ?। इति कालीदेवीप्रश्नं श्रुत्वा श्रमणो भगवान् महावीरः एवं=वक्ष्यमाणं प्रतिवचनम् अवादीत्=अवोचत्, हे कालि! एवं खलु तव पुत्रः कालः कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावच्छब्देन युद्धसामग्रीयुक्तः, कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं रथमुशलं संग्रामं सङ्ग्रामयन्=संग्रामं कुर्वन् 'हतमथिते'-ति-सैन्यगतहतत्वारोपात् हतः, मानगतमथितत्वारोपात् मथितः, प्रवराश्चते वीराः प्रवरवीराः=सुभटाः घातिताः=विनाशिता यस्य स प्रवरवीरघातितः आर्षत्वान्न निष्ठान्तस्य पूर्वप्रयोगः, चिह्नस्य=सैन्यलक्षणस्य ध्वजाः=गरुडचिह्नयुक्ताः केतवः, पताकाश्च चिह्नध्वजपताकाः, निपातिताः चिह्नध्वजपताका यस्य स निपातितचिह्नध्वजपताकः, हतो मथितः प्रवरवीरघातितश्चासौ निपातितचिह्नध्वजपताकः=हतमथितप्रवरवीरघातितनिपातितचिह्नध्वजपताकः, तादृशः सन् निरालोकाः=हतप्रभाः दिशः कुर्वन्-सर्वदिशः प्रभारहिताः कुर्वन्-चेटकस्य राज्ञः सपक्ष-समानौ पक्षौ=वामदक्षिणापार्श्वौ यस्य (आगमनस्य) तत् सपक्षं यथास्यात्तथा आगत इत्यनेनान्वयः, क्रियाविशेषणम्, अतः सामान्ये नपुंसकम्, एवं समतिदिक्=समानाः प्रतिदिशो यस्य तत् सप्रतिदिक् समानप्रतिदिक्त्वेन परस्पराभिमुखं यथास्यात्तथा, इदमपि क्रियाविशेषणम्, रथेन प्रतिरथ-प्रतिगतः=सम्मुखः रथो यस्य तत् प्रतिरथं=रथाभिमुखं यथास्यात्तथा हव्यं=शीघ्रम् आगतः=आयातः, चेटकराजस्य सर्वथा सम्मुखं समागत इत्यर्थः ॥ १९ ॥

ऐसे काली महारानीके प्रश्नोंको सुनकर भगवान बोले—

हे काली महारानी! तेरा पुत्र कालकुमार तीन २ हजार हाथी-घोडे-रथ और युद्धकी समस्त सामग्री सहित कूणिक राजाके साथ रथमुशल संग्राममें युद्ध करता हुआ वह अपनी सेना और सारी रण-सामग्रीके नष्ट होजाने पर, बडे २ वीरों के मारे जाने और घायल होने पर तथा ध्वजा पताका आदि चिन्होंके धराशायी होजानेसे अकेला

नहि ?, ते જીવતો રહેશે કે નહિ ?, તે હારી જશે કે જીતશે ?, હું તેને જીવતો દેખીશ કે નહિ ?,

આવા કાલી મહારાણીના પ્રશ્નો સાંભળીને ભગવાન બોલ્યા-હે કાલી મહારાણી! તારો પુત્ર કાલકુમાર ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી-ઘોડા-રથ તથા યુદ્ધની તમામ સામગ્રી સાથે કૂણિક રાજાની સાથે રથમુશલ સંગ્રામમાં યુદ્ધ કરતો થકો સેના તથા રણસામગ્રી તમામ નાશ પામ્યા પછી, મોટા મોટા વીરોના મરણથી અને ઘાયલ થવાથી તથા ધ્વજા પતાકા આદિ ચિન્હો જમીનદોસ્ત થઈ જવાથી એકલો જ પોતાના પરાક્રમથી

मूलम्–तए णं से चेडए राया काल कुमारं एजमाणं पासइ, कालं एज्जमाणं पासित्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता वइसाहं ठाणं ठाइ ठाइत्ता आययकण्णायय उसु करेइ करित्ता कालं कुमार एगाहच्च कूडाहच्च जीवियाओ ववरोवेइ। तं कालगए णं काली! काले कुमारे नो चेव णं तुमं कालं कुमारं जीवमाणं पासिहिसि ॥ २० ॥

छाया–ततः खलु स चेटको राजा कालं कुमारम् एजमान पश्यति। कालमेजमान दृष्ट्वा आशुरुप्त' यावत् मिसमिसन् धनु॰ परामृशति, परामृश्य इषु परामृशति, परामृश्य वैशाख स्थान तिष्ठति, स्थित्वा आयतकर्णायतमिषु करोति, कृत्वा काल कुमारमेकाहत्य कूटाहत्य जीविताद् व्यपरोपयति। तत् कालगतः खलु कालि! काल॰ कुमार' नो चैव खलु त्व काल कुमार जीवन्त द्रक्ष्यसि ॥ २० ॥

टीका–'तएण से चेडए' इत्यादि–तत॰=कूणिकस्य रणे चेटकसम्मुख-गमनानन्तर सः=पूर्वोक्तः प्रसिद्धो वा चेटको राजा एजमानम्=आयान्त काल कुमार पश्यति, एजमान काल कुमार दृष्ट्वा=अवलोक्य आशुरुप्तः=शीघ्रकोपाविष्टः, जाव शब्देन–'रुट्ठे, कुविए, चंडिक्किए,' एतेषा सङ्ग्रहः। एतच्छाया–रुष्टः, कुपित, चाण्डिक्यितः, इति ॥ रुष्टः=रोषयुक्त', कुपित –अन्त'स्थितक्रोधेन प्रस्फुरदधर॰, चाण्डिक्यित =चाण्डिक्य=रौद्ररूपत्व सजातमस्येति चाण्डिक्यितः=

ही अपने पराक्रमसे सभी दिशाओको निस्तेज करता हुआ रथपर बैठकर चेटक राजाके रथके सामने महावेगसे आया ॥ १९ ॥

'तएण से चेटए' इत्यादि। तदनन्तर चेटक राजा कालकुमारको अपने सम्मुख आया हुआ देखकर तत्क्षण क्रुद्ध हो उठे, रूष्ट हुए और आन्तरिक कोपके कारण उनके होठ फडफडाने लगे, उन्होने

બધી દિશાઓને નિસ્તેજ કરતો થકો રથમા બેસીને ચેટક રાજાના રથની સામે મહા વેગથી આવ્યો (૧૯)

'तएण से चेडए' ઇત્યાદિ ત્યાર બાદ ચેટકરાજા કાલકુમારને પોતાની સન્મુખ આવેલો જોઇને તત્કાળ ક્રોધિત થઇ ગયા, રૂષ્ટ થયા તથા આતરિક ક્રોધ ને લીધે તેના હોઠ ફડફડવા લાગ્યા, તેમણે રૌદ્ર (ભયાનક) રૂપ ધારણ કર્યું એવ ક્રોધની

मुहूर्तान्तरेण=अन्तर्मुहूर्तानन्तरम् आस्वस्था=लब्धचैतन्या सती उत्थया=कथमपि दास्यादिना उत्थानक्रियया उत्तिष्ठति, उत्थाय श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते, नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एव=वक्ष्यमाणम् अवादीत्-हे भदन्त ! एतत्= भवद्भाषितम्, एवम्=एवमेवाऽस्ति, तथ्यम्=यथार्थम्, हे भदन्त ! अवितथम्= यथार्थस्वरूपनिरूपकम्, हे भदन्त ! असदिग्धम्=सशयविपरीतानध्यवसायवर्जितम् हे भदन्त ! एष'=भवदुक्तः अर्थः=भाव' खलु=निश्चयेन सत्य'=सम्यग्निर्णायकः, तद् यथा=येन प्रकारेण यूयमेतद्वदथ, इति कृत्वा=इति भगवत्समीपे निवेद्य श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा तमेव=पूर्वो क्तमेव धार्मिक यानप्रवर दूरोहति, दूरुह्य यस्या दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिश प्रतिगता ॥ २१ ॥

कालीराज्ञ्या गमनानन्तर गौतम' पृच्छति-'भतेत्ति' इत्यादि ।

मूलम्-भतेत्ति भगव गोयमे जाव वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-कालेण भंते ! कुमारे तिहिं दतिसहस्सेहि जाव रहमुसलं संगाम सगामेमाणे चेडएण रन्ना एगाहच्चं कूडाहच्च जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे काल किच्चा कहि उववन्ने ? । गोयमाइ समणे भगव महावीरे गोयम एव वयासी-एव खलु गोयमा ! काले कुमारे तिहि दतिसहस्सेहि जाव जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे

समान मूर्च्छित हो धडामसे भूमिपर गिर पडी। कुछ समय पश्चात् सचेष्ट होकर दासी आदिके द्वारा खडी हुई। बाद भगवानको वन्दन नमस्कार करके बोली-हे भदन्त ! जैसा आप कहते हैं, वैसा ही है, यथार्थ है, सन्देह रहित है, सत्य है और सर्वथा सत्य है। ऐसा कहकर भगवान् को वन्दन-नमस्कार करके पूर्वोक्त धार्मिक रथमें बैठकर अपने स्थानपर गयी ॥ २१ ॥

પડી ગઇ થોડા વખત પછી ચેતના આવી તથા દાસીઓની મદદથી ઊભી થઇ પછી ભગવાનને વદન નમસ્કાર કરીને બોલી-હે ભદત જેમ આપ કહો છો તેમજ છે યથાર્થ છે શકારહિત છે સત્ય છે તથા સર્વથા સાચુંજ છે એમ કહી ભગવાનને વદન નમસ્કાર કરી અગાઉ વર્ણવેલા ધાર્મિક રથમા બેસીને પોતાના સ્થાને ગઇ (૨૧)

कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरगे दस-सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ २२ ॥

छाया—भदन्त ! इति भगवान् गौतमः यावद् वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—कालः खलु भदन्त ! कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यावद् रथमुशलं संग्रामं संग्रामयन् चेटकेन राज्ञा एकाहत्य कूटाहत्य जीविताद् व्यपरोपितः सन् कालमासे कालं कृत्वा क गतः ? क उपपन्नः ? । गौतम ! इति श्रमणो भगवान् महावीरः गौतममेवमवादीत्—एवं खलु गौतम ! कालः कुमारस्त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यावद् जीविताद् व्यपरोपितः सन् कालमासे कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यां हेमाभे नरके दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषु नैरयिकतया उपपन्नः ॥ २२ ॥

टीका—हे भदन्त ! इति सम्बोध्य-भगवान् गौतमः यावत्=मोक्षगति-प्राप्तं श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—हे भदन्त ! कालः कुमारः खलु=निश्चयेन त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावद् रथमुशलं सङ्ग्रामं सङ्ग्रामयन् चेटकेन राज्ञा वज्ररूपेण एकेनैव बाणेन जीविताद् व्यपरोपितो मृतः सन् कालमासे=कालावसरे कालं कृत्वा क गतः ? क उपपन्नः ?

हे गौतम ! इति सम्बोध्य श्रमणो भगवान् महावीरो भगवन्तं गौतमम्-एवम्=वक्ष्यमाणम् अवादीत्—हे गौतम ! खलु=निश्चयेन एवम्=उक्तकर्मकारकः कालकुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्युक्तो यावत् जीविताद् व्यपरोपितः सन् कालमासे

रानीके चले जानेके बाद श्री गौतम स्वामी भगवानसे पूछते है–' भंतेत्ति ' इत्यादि ।

हे भदन्त ! कालकुमार तीन २ हजार हाथी घोडे रथ और अपने सम्पूर्ण सैन्य वर्गके साथ रथमुशल संग्राममें लडाई करता हुआ चेटक राजाके वज्रस्वरूप एक ही बाणसे मारा गया। वह मृत्युके समय कालमास होकर कहाँ गया और कहाँ उत्पन्न हुआ ? ।

भगवान कहते है–हे गौतम ! वह क्रूर कर्म करनेवाला काल-

રાણીના ગયા પછી શ્રી ગૌતમ સ્વામી ભગવાનને પૂછે છે -'भंतेत्ति' ઇત્યાદિ

હે ભદંત ! કાલકુમાર ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી-ઘોડા-રથ તથા પોતાના સંપૂર્ણ સૈન્ય વર્ગ સાથે રથમુશલ સંગ્રામમાં લડાઇ કરતો થકો ચેટક રાજાના વજ્રસ્વરૂપ એકજ બાણુથી માર્યો ગયો તે મૃત્યુને અવસરે કાલ કરીને ક્યાં ગયો અને ક્યાં ઉત્પન્ન થયો ?

ભગવાન કહે છે—હે ગૌતમ ! ક્રૂર કર્મ કરનાર તે કાલકુમાર પોતાની

कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यां हेमाभे नामके नरके=नरकवासे दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषु नैरयिकतया=नारकित्वेन उपपन्नः=समुत्पन्नः॥२२॥

गौतमस्वामी पुनः पृच्छति-'कालेण भंते' इत्यादि।

मूलम्--कालेण भंते! कुमारे केरिसएहिं आरंभेहिं केरिसएहिं समारंभेहिं केरिसएहिं आरंभसमारंभेहिं केरिसएहिं भोगेहिं केरिसएहिं संभोगेहिं केरिसएहिं भोगसंभोगेहिं केरिसएण वा असुभकडकम्मपब्भारेणं कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए जाव नेरइयत्ताए उववन्ने?। एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थणं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था, महया०। तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदा नामं देवी होत्था, सोमाला जाव विहरति। तस्सणं सेणियस्स रन्नो पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था, सोमाले जाव सुरूवे साम-दान-भेद-दंड-कुसले जहा चित्तो जाव रज्जधुराए चिंतए यावि होत्था॥ २३ ॥

छाया-कालः खलु भदन्त! कुमारः कीदृशैरारम्भैः, कीदृशैः समारम्भैः, कीदृशैः आरम्भसमारम्भैः, कीदृशैर्भोगैः, कीदृशैः संभोगैः, कीदृशैः भोगसंभोगैः कीदृशेन वा अशुभकृतकर्मप्राग्भारेण कालमासे कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यां यावत् नैरयिकतया उपपन्नः?। एवं खलु गौतम! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमभूत् ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्। तत्र खलु राजगृहे नगरे श्रेणिको नाम राजाऽभूत् महा०। तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञो नन्दा नाम देवी अभूत् सुकुमारा० यावत् विहरति। तस्य खलु श्रेणिकस्य

कुमार अपनी सेना सहित लडता हुआ यहाँसे मरकर पङ्कप्रभा नामक चौथे नरकके अन्दर हेमाभनामके नरकावासमें दस सागरोपम स्थितिवाला नैरयिक हुआ ॥ २२ ॥

સેના સહિત લડતો થકો અહીંથી મરણ પામી પંકપ્રભા નામના ચોથા નરકમાં હેમાભ નામના નરકાવાસમાં દસ સાગરોપમની સ્થિતિવાળો નૈરયિક (નારકી) થયો ૨૨

राज्ञः पुत्रो नन्दाया देव्या आत्मजः अभयो नाम कुमारोऽभूत् सुकुमारः यावत् सुरूपः साम-दान-भेद-दण्डकुशल', यथा चित्तो यावद् राज्यधुरायाश्चिन्तकोऽभूत् ॥ २३ ॥

टीका-कालकुमारः खलु हे भदन्त! कीदृशै आरम्भैः प्राणातिपातादि सावद्यानुष्ठानै., समारम्भै.=खड्गादिना प्राण्युपमर्दनरूपव्यापारै', आरम्भसमारम्भै'=आरभ्यन्ते=विनाश्यन्ते जीवा यैर्हिंसादिव्यापारैरित्यारम्भास्तेषां समारम्भाः सम्पादनानि तैः, कीदृशैः भोगै=शब्दादिविषयै ?, कीदृशैः सम्भोगैः= तीव्राभिलापजनकविषयै. ?, कीदृशः भोगसम्भोगै=महारम्भपरिग्रहरूपविषयाभिलाषै. ?, कीदृशेन वा अशुभकर्मप्राग्भारेण=अशुभकर्मसमूहेन कालमासे=कालावसरे काल कृत्वा चतुर्थ्यां पृथिव्या यावत् नैरयिकतया उपपन्नः ?। हे गौतम! 'एव खलु' इत्यादि निगदसिद्धम् ॥ २३ ॥

पुन. श्री गौतम स्वामी पूछते हैं:-' कालेण भंते ' इत्यादि।

हे भदन्त! वह कालकुमार हिंसा झूठ आदि सावद्य अनुष्ठानरूप आरम्भसे तलवार आदि शस्त्रोंद्वारा प्राणियोंका उपमर्दनरूप समारम्भसे, जिससे प्राणियोंका संहार होता है ऐसे आचरण करनेसे, किस तरहके शब्दादि विषय भोगोंसे तथा किस तरहके तीव्र अभिलाषाजनक विषयोंके सभोगोंसे और किस तरहके महारम्भ और महापरिग्रहरूप विषयोंके अभिलाषारूप भोगोपभोगोंसे और कौनसे अशुभ कर्मोंके पुञ्जसे वह काल करके चौथे नरकमें गया ?। भगवान कहते हैं-हे गौतम! उस काल उस समयमें राजगृह नामक नगर था जो ऋद्धि आदिसे समृद्ध था। उसमें श्रेणिक राजा राज्य करते थे। उनकी रानीका

પુન ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે—' कालेण भंते ' ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત! તે કાલકુમાર હિંસા, જૂઠ, આદિ સાવદ્ય અનુષ્ઠાનરૂપ આરભથી, તલવાર આદિ શસ્ત્રોથી પ્રાણીઓનો નાશ કરવારૂપ, સમારભથી, જેનાથી પ્રાણિઓનો સહાર થાય એવા આરભનું આચરણ કરવાથી, કેવી જાતના શબ્દાદિ વિષયભોગથી, કેવી જાતની તીવ્ર અભિલાષા વડે ઉત્પન્ન થતા વિષયોના સભોગથી, તથા કેવી જાતના મહારભ અને મહાપરિગ્રહરૂપ વિષયોની અભિલાષારૂપ ભોગોપભોગોથી તથા કેવા અશુભ કર્મોના પુજથી તે કાલ કરીને (મૃત્યુ પામીને) ચોથા નરકમા ગયો ? ભગવાન કહે છે—હે ગૌતમ! તે કાલ તે સમયે રાજગૃહ નામની નગરી હતી જે ઋદ્ધિ આદિથી સમદ્ધ હતી તેમા શ્રેણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા તેની રાણીનુ નામ નદા

मूलम्—तस्स णं सेणियस्स रन्नो चेल्लणा नामं देवी होत्था, सोमाला जाव विहरइ । तएणं सा चेल्लणा देवी अन्नया कयाइं तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा, जहा पभावई, जाव सुमिणपाढगा पडिविसज्जिता, जाव चेल्लणा से वयणं पडिच्छित्ता जेणेव सए भवणे तेणेव अणुपविट्ठा ॥ २४ ॥

छाया—तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञश्चेल्लना नाम देवी आसीत् सुकुमारा यावद् विहरति । ततः खलु सा चेल्लना देवी अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशके वासगृहे यावत् सिंह स्वप्ने दृष्ट्वा खलु प्रतिबुद्धा यथा प्रभावती, यावत् स्वप्नपाठकाः प्रतिविसर्जिता यावत् चेल्लना तस्य वचन प्रतीष्य यत्रैव स्वक भवन तत्रैवानुप्रविष्टा ॥ २४ ॥

टीका—'तस्स ण' 'इत्यादि । 'तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञः' इत्यारभ्य 'तत्रैवानुप्रविष्टा' इत्यन्तस्य व्याख्यान सुगमम् ॥ २४ ॥

नाम नन्दा था, जो अत्यन्त सुकुमार थी, यावत् अपने पूर्वजन्म उपार्जित पुण्यसे प्राप्त मनुष्य-सम्बन्धी सुखोंका अनुभव करती हुई विचरती थी । उनके अभयकुमार नामक पुत्र था, जो सुकुमार सुरूप तथा सभी लक्षणोंसे युक्त था । साम, दाम, दण्ड, भेद आदि नीतिमें निपुण था । चित्तप्रधानके समान राजकार्य दक्षतासे करता था ॥ २३ ॥

'तस्स ण' इत्यादि ।

उस श्रेणिक राजाकी दूसरी रानी चेलना थी, जो सुकुमारता (कोमलता) आदि नारीगुणोंसे सभी तरह युक्त थी । उसने स्वप्नमें एक समय सिंह देखा उसी समय जाग उठी और प्रभावतीके समान

હતુ જે બહુ સુકુમાર હતી પોતાના પૂર્વજન્મમા કરેલા પુણ્યથી પ્રાપ્ત થયેલા મનુષ્ય સબધી સુખોનો અનુભવ કરતી વિચરતી હતી તેને અભયકુમાર નામે પુત્ર હતો જે સુકુમાર રૂપવાન તથા બધા લક્ષણોથી યુકત હતો સામ, દામ, દડ, ભેદ આદિ નીતિમા નિપુણ હતો ચિત્ત પ્રધાનની પેઠે રાજકાર્યને દક્ષતાપૂર્વક કરતો હતો ૨૩

'तस्स ण' ઇત્યાદિ તે શ્રેણિક રાજાની બીજી રાણી ચેલના હતી જે સુકુમાર (કોમળતા) આદિ સ્રીને લગતા ગુણોથી સર્વ પ્રકારે યુક્ત હતી તેણે સ્વપ્નામા એક વખત સિંહને જોયો અને જાગી ઉઠી. પ્રભાવતીની પેઠે રાજાને સ્વપ્ન કહ્યુ જેથી રાજાએ

मूलम्—तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइं तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए-धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव जम्मजीवियफले जाओ ण णियस्स रन्नो उदरवलीमंसेहि सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च जाव पसन्न च आसाएमाणीओ जाव परिभाएमाणीओ दोहल पविणेंति ॥ २५ ॥

छाया—ततः खलु तस्याश्चेल्लनाया देव्या अन्यदा कदाचित् त्रिषु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु अयमेतद्रूपो दोहद प्रादुर्भूत.-धन्याः खलु ताः अम्बाः यावत् (तासा) जन्म-जीवित-फल याः खलु निजस्य राज्ञः उदरवलिमासैः शूलैश्च तलितैश्च भर्जितैश्च सुरा च यावत् प्रसन्ना च आस्वादयन्त्यो यावत् परिभाजयन्त्यो दोहद प्रविणयन्ति ॥ २५ ॥

टीका–'तएण तीसे' इत्यादि । ततः=तदनन्तर खलु=निश्चयेन अन्यदा कदाचित् चेल्लनाया देव्याः त्रिषु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु अयम्=वक्ष्यमाणः, एतद्रूप =एतदाकारकः दोहद. प्रादुर्भूतः=समुत्पन्न –ता अम्बा =जनन्यः धन्याः =प्रशसनीया यावत् जन्मजीवितफल = तासा जन्मनो जीवितस्य च फल= आनन्दरूपम् याः निजस्य राज्ञः=स्वामिन. खलु शूलै पक्वै' तलितै =स्नेहादिना

राजाको जाकर स्वप्न कहा, राजाने स्वप्नपाठक बुलाये । उन्होंने स्वप्नका फल कहा और राजाने उन्हें प्रीतिदान देकर विसर्जित (विदा) किये । स्वप्नफल सुननेके पश्चात् रानी अपने महलमे गयी ॥ २४ ॥

'तएण तीसे' इत्यादि ।

बाद रानी चेलनाको, गर्भके तीन महिने पूरे होनेपर ऐसा दोहद-(दोहला) उत्पन्न हुआ कि-धन्य हैं वे माताएँ, यावत् उन्हीका जन्म और जीवित सफल है जो अपने पतिके उदरवलि (कलेजा)के

સ્વપ્નપાઠકોને બોલાવ્યા, તેઓએ સ્વપ્નફલ કહ્યુ રાજાએ તેમને પ્રીતિદાન આપીને વિસર્જિત (વિદાય) કર્યા સ્વપ્નફલ સાભળ્યા પછી રાણી પોતાના મહેલમા ગઈ ૨૪

'तएण तीसे' ઇત્યાદિ પછી રાણી ચેલનાને ત્રણ મહિના પુરા થતા એવો દોહલો (તીવ્ર ઇચ્છા) થયો કે ધન્ય તે માતાઓને અને તેમનો જન્મ તથા જીવતર સફલ છે કે જે પોતાના પતિના ઉદરવલિ (કલેજા)ના માસને શૂળ ઉપર સેકીને તથા તેલમા

पक्वैः भर्जितैः=केवलवह्निपक्वैः उदरवलिमांसैः दोहदं प्रविनयन्तीत्यनेन सम्बन्धः, सुरां=मदिरां च यावत् परिभाजयन्त्यः=अन्योन्यं ददत्यो दोहदं प्रविणयन्ति= पूरयन्ति, अहमपि स्वपतेः श्रेणिकस्य राज्ञः पक्वतलितभर्जितोदरवलिमांसैर्दोहदं प्रपूरयेयं तदा धन्या किंतु तादृक्करणेऽसमर्थाऽस्मि, इत्यादि ॥ २५ ॥

मूलम्--तए णं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुइयमुही ओमंथियनयणवयणकमला जहोचियं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं अपरिभुंजमाणी करतलमलियव्व कमलमाला ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ ॥ २६ ॥

छाया—ततः खलु सा चेल्लना देवी तस्मिन् दोहदे अविनीयमाने शुष्का बुभुक्षिता निर्मांसा अवरुग्णा, अवरुग्णशरीरा निस्तेजाः दीनविमनोवदना पाण्डुकितमुखी अवमन्थितनयनवदनकमला यथोचितं पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारम् अपरिभुञ्जन्ती करतलमलितेव कमलमाला उपहतमनःसङ्कल्पा यावद् ध्यायति ।२६।

टीका–'तए णं सा' इत्यादि–ततः=तदनु सा चेल्लना देवी तस्मिन् दोहदे अविनीयमाने=अपूर्यमाणे सति शुष्का=शुष्कप्राया रुधिरपरिशोषणात्,

---

मांसको शूलपर पकाकर और तेलमें तलकर एवं अग्निमें सेककर मदिराके साथ आस्वादन करती हुई यावत् परस्पर-आपसमें देती हुई अपने दोहद (दोहले)को पूरा करती हैं। यदि मैं भी अपने पति श्रेणिक राजाके पकाये हुवे तले हुवे सेके हुवे उदरवलि (कलेजा)के मांससे दोहदको पूरा करूं तो मैं धन्य बनूं परन्तु ऐसा करनेमें असमर्थ हूं ॥ २५ ॥

'तए णं सा' इत्यादि—

उसके बाद वह चेलना रानी दोहद नहीं पूरा होनेसे रक्तके

તળીને કે અગ્નિમાં સેકીને દારૂની સાથે તેનો સ્વાદ લેતી અને અરસપરસ દેતા પોતાના એ દોહદને પરિપૂર્ણ કરે છે જો હું પણ મારા પતિ શ્રેણિક રાજાના પકાયેલા તળેલા અને સેકેલા કલેજાના માંસથી મારો દોહદ પૂરો કરૂં તો ધન્ય બનું પણ તેમ કરવામાં હું અસમર્થ છું ૨૫

'तए णं सा' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે ચેલના રાણી પોતાને દોહદ (ઇચ્છા) પુરો ન થવાથી લોહી સૂકાઈ

बुभुक्षिता=आहाराऽकरणेन बुभुक्षितेव, निर्मांसा=मांसरहिता-मांसवृद्ध्यभावात्, अवरुग्णा=रोगवतीव मनोवृत्तिभङ्गात्, अवरुग्णशरीरा=भग्नगात्रा, निस्तेजाः= शरीरद्युतिरहिता, दीनविमनोवदना=दीनस्येव वि=विगतम्=उत्साहरहितं मनः, कान्ति रहितं वदनं च यस्याः सा तथा-अकिञ्चनवदुत्साहहीनमनोनिष्प्रभमुख- वतीति भावः। पाण्डुकितमुखी=पाण्डुवर्णयुक्तमुखवती, अवमथितनयनवदनकमला =अधः कृतनेत्रमुखकमला, यथोचितं=यथायोग्यं पुष्पवस्त्रगन्धमालालङ्कारम्-अपरि- भुञ्जन्ती=असेवमाना, करतलमलिता=हस्ततलमर्दिता कमलमालेव कान्तिहीना, उपहतमनःसङ्कल्पा = कर्तव्याकर्तव्यविवेकविकला यावद् ध्यायति=आर्तध्यानं करोति ॥ २६ ॥

मूलम्-तएणं तीसे चेल्लणाए देवीए अंगपडियारियाओ चेल्लणं देविं सुक्कं भुक्खं जाव झियायमाणी पासंति, पासित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करतल-

सूख जानेके कारण सूख गयी। अरुचिसे आहार आदि नहीं करनेके कारण भूखी रहने लगी। शरीरमे मांस नहीं रहनेके कारण क्षीण- काय हो गयी, मनको चोट पहुँचनेसे रोगी के समान हो गयी, शरीरकी कांति हट जानेसे तेजरहित हो गयी, उसका मन दीनके समान उत्साहरहित और मुख निस्तेज हो गया, अतएव रानीका चेहरा फीका पड गया। इस कारण नेत्र और मुखकमलको नीचे किये हुए यथायोग्य पुष्प वस्त्रादिकको भी नहीं धारण करती थी, वह हाथसे मली हुई-कुचली हुई कमलकी मालाके समान कान्तिहीन दुःखित मनवाली कर्तव्याकर्तव्यके विवेकसे रहित होकर यावत् आर्त- ध्यान करती थी ॥ २६ ॥

જવાથી શુષ્ક થઈ ગઇ અરૂચિથી આહાર આદિ ન કરવાથી ભૂખી રહેવા લાગી શરીરમાં માંસ ન રહેવાથી શરીરે દુબળી થઈ ગઇ. મનમાં ઘા લાગવાથી રોગીસમાન થઇ ગઇ શરીરની કાંતિ ઓછી થતાં તેજરહિત થઈ ગઇ તેનું મન દીન સમાન ઉત્સાહરહિત તથા મોઢું નિસ્તેજ થઇ ગયું આમ રાણીનો ચહેરો ફીકો પડી ગયો આથી નેત્ર તથા મુખ નીચે ઝુકાવીને બેઠી થતી, યથાયોગ્ય પુષ્પ-વસ્ત્રાદિ અલંકારો ધારણ કરતી નહોતી તે હાથના મર્દનથી કરમાયેલી કમલની માળા જેવી કાંતિ વગરની દુઃખિત મન વાળી કર્તવ્ય અકર્તવ્ય વિવેકથી રહિત બની જઇને સઘળો વખત આર્તધ્યાનમાં વીતાવતી હતી ૨૬

पक्वैः भर्जितैः=केवलवह्निपक्वैः उदरवलिमांसैः दोहदं प्रविनयन्तीत्यनेन सम्बन्धः, सुरा=मदिरां च यावत् परिभाजयन्त्य =अन्योन्य ददत्यो दोहदं प्रविणयन्ति= पूरयन्ति, अहमपि स्वपतेः श्रेणिकस्य राज्ञः पक्वतलितभर्जितोदरवलिमांसैर्दोहदं प्रपूरयेयं तदा धन्या किंतु तादृक्करणेऽसमर्थाऽस्मि, इत्यादि ॥ २५ ॥

मूलम्--तएणं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्ज-माणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुइयमुही ओमंथियनयणवयणकमला जहो-चियं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं अपरिभुंजमाणी करतलमलियव्व कमलमाला ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ ॥ २६ ॥

छाया---ततः खलु सा चेल्लना देवी तस्मिन् दोहदे अविनीयमाने शुष्का बुभुक्षिता निर्मांसा अवरुग्णा, अवरुग्णशरीरा निस्तेजा दीनविमनावदना पाण्डुकितमुखी अवमन्थितनयनवदनकमला यथोचितं पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारम् अपरिभुञ्जन्ती करतलमलितेव कमलमाला उपहतमनःसङ्कल्पा यावद् ध्यायति ।२६।

टीका-'तएणं सा' इत्यादि-तत =तदनु सा चेल्लना देवी तस्मिन् दोहदे अविनीयमाने = अपूर्यमाणे सति शुष्का=शुष्कप्राया रुधिरपरिशोषणात्,

मांसको शूलपर पकाकर और तेलमें तलकर एवं अग्निमें सेककर मदिराके साथ आस्वादन करती हुई यावत् परस्पर–आपसमें देती हुई अपने दोहद (दोहले)को पूरा करती हैं। यदि मैं भी अपने पति श्रेणिक राजाके पकाये हुवे तले हुवे सेके हुवे उदरवलि (कलेजा)के मांससे दोहदको पूरा करू तो मैं धन्य बनूँ परन्तु ऐसा करनेमें असमर्थ हू ॥ २५ ॥

'तएणं सा' इत्यादि—

उसके बाद वह चेलना रानी दोहद नहीं पूरा होनेसे रक्तके

તળીને કે અગ્નિમાં સેકીને દારૂની સાથે તેનો સ્વાદ લેતી અને અરસપરસ દેતા પોતાના એ દોહદને પરિપૂર્ણ કરે છે જો હુ પણ મારા પતિ શ્રેણિક રાજાના પકાયેલા તળેલા અને સેકેલા કલેજાના માંસથી મારો દોહદ પૂરો કરૂં તો ધન્ય બનુ પણ તેમ કરવામાં હુ અસમર્થ છુ ૨૫

'तएणं सा' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે ચેલના રાણી પોતાને દોહદ (ઇચ્છા) પુરો ન થવાથી લોહી સૂકાઇ

मूलम्—तएणं से सेणिए राया चेल्लणं देविं एववयासी माणं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहय० जाव झियायह, अहं ण तहा जइस्सामि जहा णं तव दोहलस्स सपत्ती भविस्सइत्ति कट्टु चेल्लण देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहि मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहि कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहि मंगल्लाहिं मियमधुरसस्सिरीयाहिं वग्गूहि समासासेइ, समासासित्ता चेल्लणाए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं वहूहिं आएहि उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य परिणामेमाणे२ तस्स दोहलस्स आय वा उवायं वा ठिइं वा अविदमाणे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ ॥ २९ ॥

छाया—ततः खलु स श्रेणिको राजा चेल्लना देवीमेवमवादीत्-मा खलु त्वं देवानुप्रिये ! अवहत० यावद् ध्याय, अहं खलु तथा यतिष्ये, यथा खलु तव दोहदस्य सम्पत्तिर्भविष्यतीति कृत्वा चेल्लना देवीं ताभिरिष्टाभिः कान्ताभिः प्रियाभिर्मनोज्ञाभिर्मनोऽमाभिरुदाराभिः कल्याणाभिः शिवाभिर्धन्या

धन्य हैं जो अपने पतिके उदरवलिका मास पकाकरके तलकरके और अग्निमें सेक भूनकर मदिराके साथ एक दूसरी सखीको देती हुई-आस्वादन करती हुई अपना दोहद पूरा करती हैं । मुझे भी ऐसा ही दोहद उत्पन्न हुआ है-लेकिन हे स्वामिन् ! वह दोहद पूरा नहीं होनेसे आज मेरी यह दशा हुई है और मैं आर्तध्यान करती हूं ॥२८॥

ઉદર-વલિના માસને પકાવી તળીને અગ્નિમા સેકી ભૂંજી મદિરાની સાથે એક બીજી સખીને આપતી આસ્વાદ લેતી પોતાનો દોહદ પૂરો કરે છે મને પણ એવોજ દોહદ ઉત્પન્ન થયો છે પણ હે સ્વામિન્ ! તે પુરો નહિ થવાથી આજ મારી આવી દશા થઈ છે અને આર્તધ્યાન કરૂ છુ (૨૮)

ता अम्बाः, या खलु निजस्य राज्ञ उदरवलिमांसैः शूलकैश्च यावद् दोहद विन यन्ति,' ('यद्यहमप्येव करोमि तदा धन्या भवामि' इति। ततः खलु अह हे स्वामिन् ! तस्मिन दोहदे अविनीयमाने शुष्का बुभुक्षिता यावद् ध्यायामि ॥२८॥

टीका—'तएण से' इत्यादि । सम्भ्रान्तः सन्=आश्चर्यचकितः सन्। नो आद्रियते=न सम्मानयति, नो परिजानाति—न सम्यङ् नृपवचन हृदये निदधाति । तूष्णीका=समालम्बितमौनभावा । द्वितीयमपि द्वतीयवार तृतीय मपि=तृतीयवारम् । शेष सुगमम् ॥ २८ ॥

'तएण से' इत्यादि

महाराज श्रेणिक दासियोंके मुखसे इस वृत्तान्तको सुनकर घबराते हुए शीघ्र चेलना रानीके पास आये, और चेलना रानीकी दुरवस्थाको देखकर बोले—हे देवानुप्रिये ! तुम्हारी इस तरहकी दु ख जनक अवस्था कैसे हो गयी ? और क्यों आर्तध्यान कर रही हो ?, यह सुनकर रानी कुछ नही बोली। पश्चात् राजाने दो तीन बार पुन. पूछा—हे देवानुप्रिये ! क्या तुम्हारी इस बातका सुनने लायक मैं नही हुँ जो मुझसे तुम अपनी बात छिपाती हो ? इस प्रकार राजाद्वारा दो तीन बार पूछे जाने पर रानी बोली—हे स्वामिन् ! ऐसी कोई बात नहीं है जो आपसे छुपाई जाय और आप उसे सुननेके योग्य नहीं हो, आप उसे सर्वथा सुन सकते है, वह बात इस प्रकार है—उस उदार स्वप्नके फल स्वरूप गर्भके तीसरे मासके अन्तमे मुझे इस प्रकार दोहद (दोहला) उत्पन्न हुआ है कि—वे माताए

'तएण से' ઇત્યાદિ

મહારાજ શ્રેણિક, દાસીઓને મોઢેથી આ વૃત્તાતને સાભળી, ગભરાતા, જલદી ચેલના રાણીની પાસે આવ્યા, તથા ચેલના રાણીની ખરાબ અવસ્થાને જોઈને બોલ્યા—હે દેવાનુપ્રિયે ! તમારી આ પ્રકારની દુખજનક અવસ્થા કેવી રીતે થઇ ગઈ ? શા માટે આર્તધ્યાન કરે છે ? આ સાભળીને રાણી કાઈ ન બોલી પછી રાજાએ બે ત્રણ વાર-ફરીને પૂછયુ—હે દેવાનુપ્રિયે ! શુ તમારી આ વાત સાભળવા લાયક હુ નથી કે જેથી મારાથી તુ પોતાની વાત છૂપી રાખે છે ? આ પ્રકારે બે ત્રણ વાર રાજાએ પૂછવાથી રાણી બોલી-હે સ્વામી ! એવી કોઈ વાત નથી જે આપથી છાની રખાય તથા આપ તે સાભળવા યોગ્ય ન હો આપ તે સર્વથા સાભળી શકો છો એ વાત આમ છે—તે ઉદાર સ્વપ્નના ફલ સ્વરૂપ ગર્ભના ત્રીજા મહિનાના અતમા મને એવા પ્રકારનો દોહદ (ઇચ્છા) ઉત્પન્ન થયો કે તે માતાને ધન્ય છે કે જે પોતાના પતિના

मूलम्—तएणं से सेणिए राया चेल्लणं देविं एवंवयासी माणं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहय० जाव झियायह, अहं ण तहा जइस्सामि जहा णं तव दोहलस्स सपत्ती भविस्सइत्ति कट्टु चेल्लण देविं ताहि इट्ठाहिं कंताहिं पियाहि मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहि कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहि मंगल्लाहि मियमधुरसस्सिरीयाहिं वग्गूहि समासासेइ, समासासित्ता चेल्लणाए देवीए अतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं वहूहिं आएहि उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य परिणामेमाणे२ तस्स दोहलस्स आय वा उवायं वा ठिइ वा अविदमाणे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ ॥ २९ ॥

छाया—ततः खलु स श्रेणिको राजा चेल्लना देवीमेवमवादीत्–मा खलु त्व देवानुप्रिये ! अवहत० यावद् ध्याय, अह खलु तथा यतिष्ये, यथा खलु तव दोहदस्य सम्पत्तिर्भविष्यतीति कृत्वा चेल्लना देवीं ताभिरिष्टाभिः कान्ताभि प्रियाभिमनोज्ञाभिर्मनोऽमाभिरुदाराभिः कल्याणाभिः शिवाभिर्धन्या

धन्य हैं जो अपने पतिके उदरवलिका मास पकाकरके तलकरके और अग्निमें सेक भूनकर मदिराके साथ एक दूसरी सखीको देती हुई–आस्वादन करती हुई अपना दोहद पूरा करती हैं। मुझे भी ऐसा ही दोहद उत्पन्न हुआ है–लेकिन हे स्वामिन् ! वह दोहद पूरा नहीं होनेसे आज मेरी यह दशा हुई है और मैं आर्तध्यान करती हू ॥२८॥

ઉદર–વલિના માસને પકાવી તળીને અગ્નિમા સેકી ભૂજી મદિરાની સાથે એક બીજી સખીને આપતી આસ્વાદ લેતી પોતાનો દોહદ પૂરો કરે છે મને પણ એવોજ દોહદ ઉત્પન્ન થયો છે પણ હે સ્વામિન્ ! તે પુરો નહિ થવાથી આજ મારી આવી દશા થઈ છે અને આર્તધ્યાન કરૂ છુ (૨૮)

भिर्माङ्गल्याभिर्मितमधुरसश्रीकाभिर्वल्गुभिः समाश्वासयति, समाश्वास्य चेल्लनाया देव्या अन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव सिंहासन तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सिंहासनवरे पौरस्त्याभिमुखो निषीदति, निषद्य तस्य दोहदस्य सम्पत्तिनिमित्त बहुभिरायैरुपायैश्च औत्पत्तिकीभिश्च वैनयिकीभिश्च कार्मिकी (कर्मजा) भिश्च पारिणामिकीभिश्च परिणामयन्२ तस्य दोहदस्य आय वा उपाय वा स्थितिं वा अविन्दन् अपहतमनः सङ्कल्पो यावद् ध्यायति ॥ २९ ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः=तदनन्तर स श्रेणिको राजा चेल्लनामवादीत्–हे देवानुप्रिये! त्व आर्तध्यान मा कुरु, अह तथा यतिष्ये यथा तव दोहदस्य सम्पत्ति=सम्पन्नता भविष्यतीति कृत्वा=इति कथयित्वा चेल्लना देवी ताभि=वक्ष्यमाणाभिः इष्टाभि=अभिलषणीयाभिः, कान्ताभि= वाञ्छितार्थपूरणीभि, प्रियाभिः=प्रेमोत्पादिकाभिः, मनोज्ञाभिः=शोभनाभि= मनोऽमाभि=पुनःपुन मनोऽनुस्मरणीयाभिः, उदाराभिः=अत्यद्भुताभिः, कल्याणीभिः=वाञ्छितार्थप्राप्तिकारिकाभि, शिवाभि=उपद्रवरहिताभि, धन्याभिः= गर्भवाञ्छासम्पादिकाभिः, माङ्गल्याभिः=कर्णप्रियाभिः, मितमधुरसश्रीकाभि= प्रमितमत्तकोकिलशब्दवन्मनोहरस्वरशोभाभिः, वल्गुभि=वाणीभि समाश्वासयति=

'तए ण से' इत्यादि।

चेलना रानीकी ऐसी बात सुनकर राजा बोले–हे देवानुप्रिये! तुम आर्तध्यानको छोडो मैं ऐसा ही प्रयत्न करूँगा। जिससे तुम्हारा दोहद पूरा हो। ऐसा कहकर राजाने मनको आह्लाद करनेवाली, वाञ्छित अर्थको देनेवाली प्रेममयी मनोज्ञ, वारम्बार मनको अच्छी लगनेवाली, अद्भुत, मनोवाछित फलको देनेवाली, सुखदायी, गर्भ वाञ्छाको पूर्ण करनेवाली, कानोंको प्रिय लगनेवाली, मत्त कोकिलाके स्वरके समान मनोहर वाणी द्वारा रानीको सन्तुष्ट किया। रानीको

'तएण से' ઇત્યાદિ

ચેલના રાણીની એવી વાત સાભળી રાજા બોલ્યા–'હે દેવાનુપ્રિયે! તુ આર્તધ્યાન છોડી દે હુ એવોજ પ્રયત્ન કરીશ કે જેથી તારો દોહદ પૂરો થાય એમ કહી રાજાએ મનને આનદ કરાવનારી, વાછિત અર્થ (ઇચ્છા પ્રમાણે) દેવાવાળી, પ્રેમમયી, મનોજ્ઞ, વારવાર મનને સારી લાગનારી, અદ્ભુત મનોવાન્છિત ફળને દેવાવાળી, સુખદાયી ગર્ભવાછાને પૂર્ણ કરવાવાળી, કાનને પ્રિય લાગવાવાળી, મત્ત બનેલ કોયલના સ્વર જેવી મનોહર વાણી દ્વારા રાણીને સતુષ્ટ કરી રાણીને આ પ્રકારે

सन्तोषयति। समाश्वास्य चेल्लनादेवीसमीपात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्र बाह्या उपस्थानशाला आस्थानमण्डपः, यत्र सिंहासनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सिंहासनवरे=श्रेष्ठसिंहासने पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वाभिमुखः सन् निषीदति=उपविशति तस्य दोहदस्य सम्पत्तिनिमित्त=सम्पादनार्थं बहुभिः=अनेकैः आयैः=साधनैः, उपायैः=प्रयोगैः, तथा-औत्पत्तिकीभिः=शास्त्राभ्यासनिरपेक्षाऽदृष्टाऽश्रुताऽननुभूतविषयग्राहिकाभिः, च पुनः वैनयिकीभिः=गुरुरत्नाधिकादिशुश्रूषासजाताभिः कार्मिकीभिः=कर्मजाभिः-अनिशं क्रियाकरणेन जायमानाभिः, पारिणामिकीभिः=वयआदिपरिणामजन्याभिः, परिणामः=दीर्घकालपूर्वापरपर्यालोचजन्य आत्मनो धर्मविशेषः, स प्रयोजनमस्याः सा पारिणामिकी, अत्र प्रत्रगतबहुत्वविवक्षाया ताभिः, चतुर्विधाभिः बुद्धिभिः परिणामयन् २=दोहदसम्पादनरूपविचारं कुर्वन् २ तस्य दोहदस्य आयं=साधनम् वा उपायं=प्रयोगं वा स्थितिं=व्यवस्था वा अविन्दन्=अलभमानो भूपः अपहृतमनःसंकल्पो यावद् ध्यायति=आर्तध्यानं करोति ॥ २९ ॥

इस प्रकार आश्वासन देकर राजा सभामण्डपमें आये, और पूर्व दिशाकी ओर मुँहकर अपने सिंहासनपर बैठे तथा उस दोहदको पूरा करनेकी चिन्ता करने लगे, परन्तु—

(१) शास्त्रोंके अभ्यास विना ही अनदेखे अनसुने और अनुभवमें भी न आये हुए विषयोंको यथार्थ रूपसे ग्रहण करनेवाली औत्पत्तिकी बुद्धि, (२) विनयसे उत्पन्न होनेवाली वैनयिकी बुद्धि, (३) हमेशा कार्य करनेसे उत्पन्न होनेवाली कार्मिकी बुद्धि, (४) वयकेपरिणामसे उत्पन्न होनेवाली पारिणामिकी बुद्धि,

इन चारों प्रकारकी बुद्धि द्वारा तथा अनेक साधन (सामग्री) एवम् अनेक प्रयोग द्वारा भी राजा उस दोहदको पूरा करनेमें समर्थ नहीं हो सके अतएव आर्तध्यान करने लगे ॥ २९ ॥

આશ્વાસન દઈને રાજા સભામંડપમાં આવ્યા તથા પૂર્વદિશા તરફ મોં રાખી પોતાના સિંહાસન પર બેઠા તથા તે દોહદ (ઈચ્છા) પુરો કરવાની ચિંતા કરવા લાગ્યા પરંતુ—

(૧) શાસ્ત્રોના અભ્યાસ વિનાજ ન જોયેલા ન સાંભળેલા તથા અનુભવમાં પણ ન આવેલા વિષયોને યથાર્થરૂપે જાણવાવાળી ‘ઔત્પત્તિકી’ બુદ્ધિ, (૨) વિનયથી ઉત્પન્ન થનારી ‘વૈનયિકી’ બુદ્ધિ, (૩) હંમેશ કાર્ય કરવાથી ઉત્પન્ન થનારી ‘કાર્મિકી’ બુદ્ધિ, (૪) ઉમરના પરિણામે ઉત્પન્ન થનારી ‘પારિણામિકી’ બુદ્ધિ આ ચારે પ્રકારની બુદ્ધિ દ્વારા તથા અનેક સાધન સામગ્રી એટલે અનેક પ્રયોગ દ્વારા પણ રાજા તે દોહદને પૂરો કરવામાં સમર્થ ન થયા તેથી આર્તધ્યાન કરવા લાગ્યા (૨૯)

मूलम्—इमं च अभए कुमारे ण्हाए जाव सरीरे, सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं राय ओहय० जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-अन्नया णं ताओ! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ जाव हियया भवह किन्न ताओ! अज्ज तुब्भे ओहय० जाव झियायह? तं जइणं अह ताओ! एयस्स अट्ठस्स अरिहे सवणयाए तो ण तुब्भे मम एयमट्ठं जहाभूयमवितह असदिद्धं परिकहेह, जाण अहं तस्स अट्ठस्स अतगमणं करोमि। तएण से सेणिए राया अभयं कुमार एवं वयासी—णत्थि णं पुत्ता! से केइ अट्ठे जस्स णं तुम अणरिहे सवणाए एव खलु पुत्ता! तव चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स ओरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाण जाव उयरवलिमंसेहिं सोल्लेहि य जाव दोहलं विणेंति।

तएणं सा चेल्लणा देवी तसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का जाव झियायइ। तएणं अह पुत्ता! तस्स दोहलस्स सपत्तिनिमित्त बहुहिं आएहि य जाव ठिइ वा अविंदमाणे ओहय० जाव झियामि! तएणं से अभए कुमारे सेणिय राय एव वयासी—माणं ताओ! तुब्भे ओहय० जाव झियायह, अह ण तह जइहामि, जहाणं मम चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ—त्ति कट्टु सेणिय राय ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता जेणेव सए गिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अब्भितरए रहस्सिए ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं

तुब्भे देवाणुप्पिया ! सूणाओ अल्लमंस रुहिरं वत्थिपुडगं च गिण्हह। तएणं ते ठाणिज्जा पुरिसा अभयेणं कुमारेणं एववुत्ता समाणा हट्ठ० करतल० जाव पडिसुणेत्ता अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता जेणेव सूणा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, अल्ल मंसं रुहिरं वत्थिपुडग च गिण्हति गिण्हित्ता, जेणेव अभए कुमारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल० तं अल्ल मस रुहिरं वत्थिपुडगं च उवणेंति ॥३०॥

छाया—ततश्च खलु अभयः कुमारः स्नातः यावत्-शरीरः स्वकात् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव श्रेणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, श्रेणिक राजानम् अवहत० यावद् ध्यायन्त पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-अन्यदा खलु तात ! यूय मा दृष्ट्वा हृष्ट० यावद्हृदयाः भवथ, किं खलु तात ! अद्य यूयम् अवहत० यावद् ध्यायथ, तद् यदि खल्वह तात ! एतस्यार्थस्याऽर्हः श्रवणतायै तदा खलु यूय मम एतमर्थं यथाभूतमवितथमसदिग्ध परिकथयत, यस्मात् खल्वह तस्यार्थस्यान्तगमन करोमि।

'इम च ण' इत्यादि।

इधर अभयकुमार स्नानकर यावत् सभी प्रकारके आभूषणोंसे सुसज्जित हो अपने महलसे निकलकर उसी सभा-मण्डपमें आए जहाँ श्रेणिक राजा बैठे थे। श्रेणिक राजाको आर्तध्यान करते हुए देखकर बोले—

हे तात ! और दिन जब मैं आता था तो आप मुझे देख कर प्रसन्न होते थे, किन्तु आज क्या कारण है जो मेरी ओर देखते भी नहीं और आर्तध्यानमें बैठे हैं। अगर इस बातको सुननेके

'इम च ण' ઇત્યાદિ

આ બાજુ અભયકુમાર સ્નાન કરી તમામ પ્રકારના આભૂષણોથી સજ્જ થઇ મહેલમાથી નીકળી તેજ સભામડપમા આવ્યા કે જ્યા શ્રેણિક રાજા બેઠા હતા શ્રેણિક રાજાને આર્તધ્યાન કરતા જોઈ કહ્યુ-હે તાત ! હુ જ્યારે બીજા દિવસે આવતો ત્યારે આપ મને જોઈ ખુશી થતા હતા પણ આજ શુ કારણ છે કે મારી સામુ ય જોતા નથી તથા આર્તધ્યાનમા બેઠા છો. જો હુ આ વાતને સાભળવા યોગ્ય છુ એમ સમ

मूलम्—इमं च अभए कुमारे ण्हाए जाव सरीरे, सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं राय ओहय० जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–अन्नया णं ताओ! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ जाव हियया भवह किन्न ताओ! अज्ज तुब्भे ओहय० जाव झियायह? तं जइणं अहं ताओ! एयस्स अट्ठस्स अरिहे सवणयाए तो ण तुब्भे मम एयमट्ठं जहाभूयमवितहं असदिद्धं परिकहेह, जाण अहं तस्स अट्ठस्स अतगमणं करोमि! तएण से सेणिए राया अभयं कुमार एवं वयासी–णत्थि ण पुत्ता! से केइ अट्ठे जस्स णं तुमं अणरिहे सवणाए एवं खलु पुत्ता! तव चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स ओरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाण जाव उयरवलिमंसेहिं सोल्लेहि य जाव दोहलं विणेंति।

तएणं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का जाव झियायइ। तएणं अहं पुत्ता! तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहुहिं आएहि य जाव ठिइं वा अविंदमाणे ओहय० जाव झियामि! तएणं से अभए कुमारे सेणिय राय एवं वयासी–माणं ताओ! तुब्भे ओहय० जाव झियायह, अहं ण तह जइहामि, जहाणं मम चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ–त्ति कट्टु सेणियं राय ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता जेणेव सए गिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अब्भितरए रहस्सिए ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं

मम क्षुल्लमातुश्चेल्लनाया देव्यास्तस्य दोहदस्य सपत्तिर्भविष्यतीति कृत्वा श्रेणिक राजान ताभिरिष्टाभिर्यावद् वल्गुभिः समाश्वासयति, समाश्वास्य यत्रैव स्वक गृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आभ्यन्तरान् राहस्यिकान् स्थानीयान् पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय देवानुप्रिया ! सूनात आर्द्र मास रुधिर वस्तिपुटक च गृह्णीत ।

ततः खलु ते स्थानीयाः पुरुषा अभयेन कुमारेण एवमुक्ताः सन्तः हृष्टाः करतल० यावद् प्रतिश्रुत्य अभयस्य कुमारस्यान्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सूना तत्रैवोपागच्छन्ति, आर्द्र मास रुधिर वस्तिपुटक च गृह्णन्ति, गृहीत्वा यत्रैव अभयः कुमारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतल० तमार्द्र मास रुधिर वस्तिपुटक च उपनयन्ति ॥ ३० ॥

टीका—'इम च ण' इत्यादि-यथाभूतमवितथमसदिग्धमित्येतानि पदानि पूर्वमेव व्याख्यातानि । राहस्यिकान्-गुप्तविचारकान स्थानीयान्=गौरवशालिनः स्वभृत्यान् , सूनातः=अमारिघोषितातिरिक्तवधस्थानात् आर्द्र मास रुधिर वस्तिपुटक शोणितयुक्तमुदरान्तर्वर्त्तिभाग ('कलेजा' इति भाषायाम्) गृह्णीत= आनयतेत्यर्थः । शेष स्पष्टम् ॥ ३० ॥

आर्तध्यानको छोडें मैं शीघ्र ऐसा उपाय करूँगा जिससे मेरी माताका दोहद (दोहला) पूर्ण होजाय। इस तरह विनययुक्त मधुर वचनोंसे अपने पिताका मन सतुष्ट करके अभयकुमार अपने महल आये। महल आकर उनने अपने गुप्त पुरुषोंको बुलाये और कहा कि-हे देवानुप्रियो! तुम लोग अमारि-घोषणाकी सीमाके बाहरके वधस्थानसे, वस्तिपुटके साथ गीला मांस लाओ। इसके बाद उन राजपुरुषोंने उनकी आज्ञाका यथावत् पालन किया ॥ ३० ॥

એવા વચન સાભળી અભયકુમાર બોલ્યા-હે તાત ! આપ આર્તધ્યાન છોડો, હુ જલદી એવો ઉપાય કરીશ કે જેથી મારી માતાનો દોહદ પૂર્ણ થઈ જશે

આ પ્રમાણે વિનય વાળા મધુર વચનોથી પોતાના પિતાનુ મન સતુષ્ટ પમાડી અભયકુમાર પોતાને મહેલ ગયા ત્યાં આવીને તેણે અગત ગુપ્ત પુરૂષોને બોલાવીને કહ્યુ કે-હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો અમારિ ઘોષણા કરેલી સીમા (રાજ્યની અમુક સીમાની અદર હિંસા ન કરવી એવી ઘોષણા-જાહેરાતવાળી જગ્યા) થી બહાર કસાઈખાનામાથી બસ્તીપુટ સાથે લીલુ (તાજુ) માસ લઈ આવો

ત્યાર પછી તે રાજપુરૂષોએ તેમની આજ્ઞાનુ કહ્યા પ્રમાણે પાલન કર્યું (૩૦)

ततः खलु स श्रेणिको राजा अभयकुमारमेवमवादीत्-नास्ति खलु पुत्र! स कोऽप्यर्थः यस्य खलु त्वमनर्हः श्रवणताये। एवं खलु पुत्र! तव क्षुल्लकमातुश्चेल्लनाया देव्यास्तस्योदारस्य यावत् महास्वप्नस्य त्रिषु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु यावत् उदरवलिमांसैः शूलकैश्च यावत् दोहदं विनयन्ति। ततः खलु सा चेल्लना देवी तस्मिन् दोहदे अविनीयमाने शुष्का यावद् ध्यायति। ततः खल्वहं पुत्र! तस्य दोहदस्य सम्पत्तिनिमित्तं बहुभिरायैरुपायैश्च यावत् स्थितिं वा अविन्दन् अपहत० यावद् ध्यायामि।

ततः खलु सः अभय कुमारः श्रेणिक राजानमेवमवादीत्-मा खलु तात! यूयम् अपहत० यावद् ध्यायत, अहं खलु तथा यतिष्ये यथा खलु

योग्य मुझे समझते हैं तो जैसी हो वैसी यथार्थरूपसे निःसकोच होकर मुझे कहिये, जिससे मैं उसके निराकरणका प्रयत्न करूँ।

अभयकुमारकी ऐसी विनययुक्त वाणी सुनकर राजा बोले-हे पुत्र! ऐसी कोई बात नहीं है जो तुझसे छिपाई जाय-तेरी छोटी माता चेलना रानीको महास्वप्नके तीसरे महिनेके अन्तमें दोहद (दोहला) उत्पन्न हुआ है कि-'आपके उदरवलिके मांसको शूला (पका) कर और तल-भूनकर मदिराके साथ आस्वादन करूँ।'

इस दोहद (दोहला) के पूर्ण न होनेके कारण वह महादुःखित और कृशकाय होकर आर्तध्यान कर रही है। हे पुत्र! इस दोहद (दोहला) को पूर्ण करनेके लिए अनेक उपाय सोचे परन्तु कोई उपाय पूरा नहीं दिखायी देता एतदर्थ आर्तध्यान करता हुआ बैठा हूँ। अपने पिताके मुखसे ऐसे वचन सुनकर, अभयकुमार बोले-हे तात! आप

જતા હો તો જે હોય તે યથાર્થ રૂપે નિસકોચ થઇ મને કહો જેથી હું તેનું નિરાકરણ કરવા પ્રયત્ન કરૂં

અભયકુમારની એવી વિનયયુકત વાણી સાભળી રાજા બોલ્યા—હે પુત્ર! એવી કોઈ વાત નથી કે જે તારથી છાની રખાય—તારી નાની માતા ચેલના રાણીને મહા સ્વપ્નના ત્રીજા માસને અંતે દોહદ (ઇચ્છા) ઉત્પન્ન થયો છે કે-'તમારા ઉદરબલિ-માંસને પકાવી તળી ભુંજી (શેકી) મદિરાની સાથે આસ્વાદ કરૂં' આ દોહદ પુરો ન થવાને કારણે તે મહાદુઃખિત તથા કૃશકાય થઇ આર્તધ્યાન કરી રહી છે, હે પુત્ર! તે દોહદને પૂર્ણ કરવા માટે અનેક ઉપાય વિચારી જોયા પણ કોઇ ઉપાય પૂરો થાય તેમ દેખાતો નથી. એ માટે આર્તધ્યાન કરતો બેઠો છું પોતાના પિતાના મુખેથી

मम क्षुल्लमातुश्चेल्लनाया देव्यास्तस्य दोहदस्य सपत्तिर्भविष्यतीति कृत्वा श्रेणिक राजान ताभिरिष्टाभिर्यावद् वल्गुभिः समाश्वासयति, समाश्वास्य यत्रैव स्वक गृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आभ्यन्तरान् राहस्यिकान स्थानीयान् पुरुषान शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय देवानुप्रिया ! सूनात आर्द्र मास रुधिर बस्तिपुटक च गृह्णीत।

ततः खलु ते स्थानीयाः पुरुषा अभयेन कुमारेण एवमुक्ता सन्तः हृष्टाः करतल० यावद् प्रतिश्रुत्य अभयस्य कुमारस्यान्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव शूना तत्रैवोपागच्छन्ति, आर्द्र मास रुधिर बस्तिपुटक च गृह्णन्ति, गृहीत्वा यत्रैव अभयः कुमारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतल० तमार्द्र मास रुधिर बस्तिपुटक च उपनयन्ति ॥ ३० ॥

टीका—'इम च ण' इत्यादि-यथाभूतमवितथमसदिग्धमित्येतानि पदानि पूर्वमेव व्याख्यातानि। राहस्यिकान-गुप्तविचारकान स्थानीयान्=गौरवशालिनः स्वभृत्यान्, सूनातः=अमारिघोषितातिरिक्तवधस्थानात् आर्द्र मास रुधिर बस्ति पुटक शोणितयुक्तमुदरान्तर्वर्त्तिभाग ('कलेजा' इति भाषायाम्) गृह्णीत= आनयतेत्यर्थः। शेष स्पष्टम् ॥ ३० ॥

आर्तध्यानको छोडें मैं शीघ्र ऐसा उपाय करूँगा जिससे मेरी माताका दोहद (दोहला) पूर्ण होजाय। इस तरह विनययुक्त मधुर वचनोंसे अपने पिताका मन सतुष्ट करके अभयकुमार अपने महल आये। महल आकर उनने अपने गुप्त पुरुषोंको बुलाये और कहा कि-हे देवानु-प्रियो! तुम लोग अमारि-घोषणाकी सीमाके बाहरके वधस्थानसे, बस्तिपुटके साथ गीला मांस लाओ। इसके बाद उन राजपुरुषोंने उनकी आज्ञाका यथावत् पालन किया ॥ ३० ॥

એવા વચન સાભળી અભયકુમાર બોલ્યા-હે તાત ! આપ આર્તધ્યાન છોડો, હુ જલદી એવો ઉપાય કરીશ કે જેથી મારી માતાનો દોહદ પૂર્ણ થઈ જશે

આ પ્રમાણે વિનય વાળા મધુર વચનોથી પોતાના પિતાનુ મન સતુષ્ટ પમાડી અભયકુમાર પોતાને મહેલ ગયા ત્યાં આવીને તેણે અગત ગુપ્ત પુરૂષોને બોલાવીને કહ્યુ કે-હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો અમારિ ઘોષણા કરેલી સીમા (રાજ્યની અમુક સીમાની અદર હિંસા ન કરવી એવી ઘોષણા-જાહેરાતવાળી જગ્યા) થી બહાર કસાઈખાનામાથી બસ્તીપુટ સાથે લીલુ (તાજુ) માસ લઈ આવો

ત્યાર પછી તે રાજપુરૂષોએ તેમની આજ્ઞાનુ કહ્યા પ્રમાણે પાલન કર્યુ (૩૦)

मूलम्–तएणं से अभए कुमारे त अल्लं मंसं रुहिरं कप्पणीकप्पिय करेइ, करित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सेणियं राय रहसिगय सयणिज्जंसि उत्ताणय निवज्जावेइ, निवज्जावित्ता, सेणियस्स उदरवलीसु त अल्लं मस रुहिरं विरवेइ, विरवित्ता, वत्थिपुडएण वेढेइ, वेढित्ता सवतीकरणेण करेइ, करित्ता चेल्लण देवि उप्पिंपासाए अवलोयणवरगय ठवावेइ, ठवावित्ता चेल्लणाए देवीए अहे सपक्ख सपडिदिसि सेणिय राय सयणिज्जंसि उत्ताणगं निवज्जावेइ, सेणियस्स रन्नो उदरवलिमंसाइं कप्पणीकप्पियाइं करेइ, करित्ता से य भायणंसि पक्खिवति ।

तएण से सेणिए राया अलियमुच्छिय करेइ करित्ता मुहुत्तंतरेण अन्नमन्नेणं सद्धिं संलवमाणे चिट्ठइ ।

तएणं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो उदरवलिमसाइ गिण्हेइ, गिण्हित्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणाए देवीए उवणेइ ।

तएण सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रन्नो तेहिं उदरवलिमसेहि सोल्लेहि जाव दोहल विणेइ ।

तएणं सा चेल्लणा देवी सपुण्णदोहला एव संमाणियदोहला विच्छिन्नदोहला त गब्भं सुह सुहेणं परिवहइ ॥ ३१ ॥

छाया–तत' खलु सः अभय. कुमारस्तमार्द्रं मास रुधिर कल्पनीकल्पित करोति, कृत्वा यत्रैव श्रेणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रेणिक

राजान रहसिगत शयनीये उत्तानक निपादयति, निपाद्य श्रेणिकस्योदरवलिषु तदार्द्र मास रुधिर विरावयति, विराव्य, बस्तिपुटकेन वेष्टयति, वेष्टयित्वा स्रवन्तीकरणेन करोति, कृत्वा चेल्लना देवीमुपरिमासादे अवलोकनवरगता स्थापयति, स्थापयित्वा चेल्लनाया देव्या अधः सपक्ष समतिदिक् श्रेणिकं राजानं शयनीये उत्तानक निपादयति, श्रेणिकस्य राज्ञ उदरवलिमासानि कल्पनीकल्पितानि करोति, कृत्वा तच्च भाजने प्रक्षिपति ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा अलीकमूर्छां करोति, कृत्वा मुहूर्तान्तरेण अन्योऽन्येन सार्द्ध सलपन् तिष्ठति। ततः खलु स. अभयकुमारः श्रेणिकस्य राज्ञः उदरवलिमासानि गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चेल्लनाया देव्या उपनयति। तत. खलु सा चेल्लना देवी श्रेणिकस्य राज्ञस्तैरुदरवलिमासैः शूलैर्यावद् दोहद विनयति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी सम्पूर्णदोहदा एव समानितदोहदा विच्छिन्नदोहदा त गर्भ सुख-सुखेन परिवहति ॥ ३१ ॥

टीका-'तएण से' इत्यादि-ततः=तदनन्तर सः=अभयः कुमारः तद्= उपनीतम्-आर्द्रम् मास रुधिरं कल्पनीकल्पित-कल्पनी=कर्त्तरिका 'कतरणी' इति भाषायाम्, तया कल्पित = कर्तित करोति, कल्पशब्दोऽत्र छेदनार्थकः, उक्तश्च—'सामर्थ्ये वर्णनाया च, छेदने करणे तथा ।
औपम्ये चाधिवासे च, कल्प-शब्द विदुर्बुधा' ॥ १ ॥'

'तएण से' इत्यादि-उसके बाद अभयकुमारने एकान्त स्थानमें राजाको सीधा सुलाकर उनके पेटपर उस मास-लोथडेको रक्खा, फिर उसे बस्तिचर्मसे बाधा, वह ऐसा प्रतीत होता था जैसे उससे रक्त झरता हो। तत्पश्चात् रानीको ऊपर-महलमें बुलवाई और उस दृश्यको देख सके ऐसे योग्य सुविधाजनक स्थानपर बैठाई बाद राजाको जिसे रानी ठीक तरहसे देख सके ऐसे तथा कुछ अन्धकारवाले स्थानपर सुलाया,

---

'तएण से' ઇત્યાદિ પછી અભયકુમારે એકાંત સ્થાનમા રાજાને સીધા (ચીતા) સુવડાવી તેના પેટ ઉપર તે માંસના લોથ ને રાખ્યો પછી તેને બસ્તીચર્મથી બાધ્યો તે એવુ લાગતુ હતુ કે જાણે તેમાથી લોહી ઝરતુ હોય ત્યાર પછી રાણીને ઉપર-મહેલમા બોલાવી તથા તે આ દેખાવ જોઈ શકે એવા યોગ્ય સુવિધાજનક સ્થાને બેસાડી પછી રાજાને જેમ રાણી બરાબર જોઈ શકે તેવા અને થોડા અંધકારવાળા સ્થાને સુવાડયા પછી

कृत्वा यत्रैव श्रेणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रेणिक राजान रहसिगतम्=एकान्तेस्थित शयनीये=शय्यायाम् उत्तानक=उत्तान निषादयति=शाययति, निपात्य=शाययित्वा श्रेणिकस्योदरवलिषु=उदरभागेषु तद्=उपनीतम् आर्द्र मास रुधिर च विरावयति=धातूनामनेकार्थत्वादुपसर्गवलाद्वा स्थापयती त्यर्थ., विराव्य=स्थापयित्वा बस्तिपुटकेन वेष्टयति, वेष्टयित्वा स्रवन्तीकरणेन करोति=स्यन्दमानीकरोति, कृत्वा उपरि प्रासादे चेल्लना देवीम् अवलोकन वरगताम्=सम्यङ्निरीक्षणपरा स्थापयति, यथा सा सम्यग् द्रष्टु शक्नुयात्तथा प्रासादोपर्युपवेशयति, स्थापयित्वा, चेल्लनाया देव्या अधः=नीचै सपक्ष=समा नत्वामुदक्षिणपार्श्व सप्रतिदिक्=समानप्रतिदिग्भाग सर्वथा चेल्लनासमुख यथा स्यात्तथा श्रेणिक राजान शयनीये उत्तानक निपादयति=किञ्चिदन्धकारावृतप्रदेशे शाययति । श्रेणिकस्य राज्ञ उदरवलिमासानि, कल्पनीकल्पितानि=शस्त्रकर्तिता नीव करोति, कृत्वा तच=मास रुधिर च भाजने प्रक्षिपति=निदधाति ।

तत. खलु स श्रेणिको राजा अलीकमूर्च्छा=कपटमूर्च्छा करोति, कृत्वा मुहूर्तान्तरेण अन्योऽन्येन=परस्परेण सार्द्ध सलपन्=वार्तालाप कुर्वन् तिष्ठति ।

ततः खलु स अभयकुमार. श्रेणिकस्य राज्ञः उदरवलिमासानि गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च चेल्लनाया देव्याः उपनयति=समीपे स्थापयति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी श्रेणिकस्य राज्ञस्तैरुदरवलिमासैः शूलैः=पक्वै , यावद् दोहद विनयति=पूरयति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी सम्पूर्णदोहदा=सम्पूर्णमनोरथा एव सम्मानितदोहदा=आदृतदोहदा, विच्छिन्नदोहदा=इष्टवस्तुप्राप्त्याऽन्यवस्त्वभिलापरहिता त गर्भ सुख सुखेन परिवहति=धारयति ॥ ३१ ॥

फिर राजाके पेटपर बँधे हुए उस मासको कतरनी (कैंची) से काट-काटकर बर्तनमें रख दिया, कुछ देर तक राजा झूठी मूर्छामें पडे रहे, और बाद आपसमे बात-चीत करने लगे ।

इस प्रकार अभयकुमारने रानीका दोहद पूरा किया । रानी अपने दोहदके पूर्ण होनेपर सुखपूर्वक गर्भको धारण करने लगी ॥३१॥

રાજાના પેટ ઉપર બાંધેલુ તે માસ કાતરથી કાપી-કાપીને વાસણમા રાખી દીધુ થોડા વખત સુધી રાજા ખોટી મૂર્છામા પડયા રહ્યા અને પછી આપસમા વાત કરવા લાગ્યા આવી રીતે અભયકુમારે રાણીનો દોહદ (ઇચ્છા) પુરો કર્યો રાણી પોતાનો દોહદ પુરો થવાથી ગર્ભને ધારણ કરતી સુખ પૂર્વક રહેવા લાગી (૩૧)

मूलम्—तए ण तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे जाव समुपज्जित्था, जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएण चेव पिउणो उदरवलिमसाणि खाइयाणि त सेय खलु मम एयं गब्भं साडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, एव सपेहेइ सपेहित्ता त गब्भं बहूहिं गब्भसाडणेहि य गब्भपाडणेहि य गब्भगालणेहि य गब्भविद्धंसणेहि य इच्छइ साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धसित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा विद्धंसइ वा ॥ ३२ ॥

छाया-तत॰ खलु तस्याश्चेल्लनाया देव्या अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्र कालसमये अयमेतद्रूपो यावत् समुदपद्यत-यदि तावत् अनेन दारकेण गर्भगतेन चैव पितुरुदरवलिमासानि खादितानि तत् श्रेयः खलु मम एत गर्भं शातयितु वा पातयितु वा गालयितु वा विध्वसयितु वा। एव समेक्षते, समेक्ष्य त गर्भं बहुभिर्गर्भशातनैश्च गर्भपातनैश्च गर्भगालनैश्च गर्भविध्वसनैश्च इच्छति शातयितु वा पातयितु वा गालयितु वा विध्वसयितु वा, नो चैव खलु स गर्भ॰ शीर्यते वा पतति वा गलति वा विध्वसते वा ॥ ३२ ॥

टीका—'तएण तीसे' इत्यादि—तत'=तदनन्तरम् शातयितुम्=औषधैर्विशीर्णयितु, पातयितु=गर्भाशयाद्बहिष्कर्तुम्, गालयितु=रुधिरादिरूप कर्तुम्,

---

'तएण तीसे' इत्यादि—

एक समय रानी रातको सोचने लगी कि—इस बालकने गर्भमें आते ही अपने पिताके कलेजेका मास खाया, इस लिये मुझे उचित है कि इस गर्भको सडानेके लिए, गिरानेके लिए और विध्वस करनेके लिए कुछ उपाय करू। ऐसा विचारकर रानीने औषधि आदिके

'तएण तीसे' ઇત્યાદિ

એક સમય રાણી રાતમા વિચાર કરવા લાગી કે આ બાળકે ગર્ભમા આવતાજ પોતાના બાપના કલેજાનું માસ ખાધુ આથી મારે માટે યોગ્ય છે કે આ ગર્ભને સડાવવા માટે—પાડી નાખવા માટે—ગાળવા માટે અને નાશ કરવા માટે કોઈ ઉપાય

कृत्वा यत्रैव श्रेणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रेणिक राजान रहसिगतम्=एकान्तेस्थित शयनीये=शय्यायाम् उत्तानक=उत्तान निषादयति=शाययति, निषाद्य=शाययित्वा श्रेणिकस्योदरवल्लिषु=उदरभागेषु तद्=उपनीतम् आर्द्रं मास रुधिर च विरावयति=धातूनामनेकार्थत्वादुपसर्गवलाद्वा स्थापयतीत्यर्थः, विराव्य=स्थापयित्वा वस्तिपुटकेन वेष्टयति, वेष्टयित्वा स्रवन्तीकरणेन करोति=स्यन्दमानीकरोति, कृत्वा उपरि प्रासादे चेल्लना देवीम् अवलोकनवरगताम्=सम्यङ्निरीक्षणपरा स्थापयति, यथा सा सम्यग् द्रष्टुं शक्नुयात्तथा प्रासादोपर्युपवेशयति, स्थापयित्वा, चेल्लनाया देव्या अधः=नीचैः सपक्ष=समानतामुदक्षिणपार्श्वं सप्रतिदिक्=समानप्रतिदिग्भाग सर्वथा चेल्लनासमुख यथा स्यात्तथा श्रेणिक राजान शयनीये उत्तानक निषादयति=किञ्चिदन्धकाराहतप्रदेशे शाययति । श्रेणिकस्य राज्ञ उदरवलिमासानि, कल्पनीकल्पितानि=शस्त्रकर्तितानीव करोति, कृत्वा तच्च=मास रुधिर च भाजने प्रक्षिपति=निदधाति ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा अलीकमूर्च्छां=कपटमूर्च्छां करोति, कृत्वा मुहूर्तान्तरेण अन्योऽन्येन=परस्परेण सार्द्धं सलपन्=वार्तालाप कुर्वन् तिष्ठति ।

ततः खलु स अभयकुमारः श्रेणिकस्य राज्ञः उदरवलिमासानि गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च चेल्लनाया देव्या उपनयति=समीपे स्थापयति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी श्रेणिकस्य राज्ञस्तैरुदरवलिमासैः शूलैः=पक्वैः, यावद् दोहद विनयति=पूरयति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी सम्पूर्णदोहदा=सम्पूर्णमनोरथा एव सम्मानितदोहदा=आदृतदोहदा, विच्छिन्नदोहदा=इष्टवस्तुप्राप्त्याऽन्यवस्त्वभिलाषरहिता त गर्भं सुख सुखेन परिवहति=धारयति ॥ ३१ ॥

फिर राजाके पेटपर बँधे हुए उस मासको कतरनी (कैंची) से काट-काटकर बर्तनमें रख दिया, कुछ देर तक राजा झूठी मूर्छामें पडे रहे, और बाद आपसमे बात-चीत करने लगे।

इस प्रकार अभयकुमारने रानीका दोहद पूरा किया। रानी अपने दोहदके पूर्ण होनेपर सुखपूर्वक गर्भको धारण करने लगी ॥३१॥

રાજાના પેટ ઉપર બાંધેલુ તે માસ કાતરથી કાપી-કાપીને વાસણમા રાખી દીધુ થોડા વખત સુધી રાજા ખોટી મૂર્છામા પડયા રહ્યા અને પછી આપસમા વાત કરવા લાગ્યા આવી રીતે અભયકુમારે રાણીનો દોહદ (ઇચ્છા) પુરો કર્યો રાણી પોતાનો દોહદ પુરો થવાથી ગર્ભને ધારણ કરતી સુખ પૂર્વક રહેવા લાગી (૩૧)

इति आर्तवशार्ता सा चासौ दु:खेनार्ता=सा तथा—आर्तध्यानविवशीभूता दुःखिता सती त गर्भं परिवहति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु यावत् सुकुमार सुरूप दारक पुत्र प्रजाता=प्रजनितवती ॥ ३३ ॥

मूलम्—तएणं तीसे चेल्लणाए देवीए इमे एयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-जइ ताव इमेण दारएणं गब्भगएण चेव पिउणो उदरवलिमसाइं खाइयाइ, तं न नज्जइ ण एसदारए सवड्ढमाणे अम्ह कुलस्स अंतकरे भविस्सइ, तं सेय खलु अम्ह एयं दारगं उक्कुरुडियाए उज्झावित्तए एव संपेहेइ, संपेहित्ता दास-चेडिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—गच्छ ण तुम देवाणु-प्पिए ! एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि ।

तए णं सा दासचेडी चेल्लणाए देवीए एव वुत्ता समाणी करयल० जाव कट्टु चेल्लणाए देवीए एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता त दारगं करतलपुडेण गिण्हइ गिण्हित्ता, जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त दारग एगते उक्कुरुडियाए उज्झाइ । तए णं तेणं दारएणं एगंते उक्कु-रुडियाए उज्झितेण समाणेण सा असोगवणिया उज्जोविया यावि होत्था ।

तएणं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता, त दारग एगंते उक्कुरुडियाए उज्झियं पासेइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव मिसि-मिसेमाणे तं दारगं करतलपुडेणं गिण्हइ गिण्हित्ता, जेणेव

पालन करने लगी, और फिर नौ मास बीतनेपर सुकुमार एव सुन्दर पुत्रको जन्म दिया ॥३३॥

થઇ અને આર્તધ્યાનવશ દુખી થઇને ગર્ભનું પાલન કરવા લાગી તથા નવ માસ વીત્યા પછી સુકુમાર અને સુંદર પુત્રને જન્મ આપ્યો (૩૩)

विध्वसयितु=सर्वथा नाशयितुम्, एवम्=उक्तप्रकारेण समेक्षते=विचारयति, अन्यत् सर्वं सुबोधम् ॥ ३२ ॥

मूलम्—तए णं सा चेल्लणा देवी तं गब्भं जाहे नो संचाएइ बहूहिं गब्भसाडणेहि य जाव गब्भविद्धंसणेहि य साडित्तए वा जाव विद्धंसित्तए वा, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा अकामिया अवसवसा अट्टवसट्टदुहट्टा तं गब्भं परिवहइ।

तए णं सा चेल्लणा देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव सोमालं सुरूवं दारयं पयाया ॥ ३३ ॥

छाया—ततः खलु सा चेल्लना देवी तं गर्भं यदा नो शक्नोति बहुभिर्गर्भशातनैश्च यावद् गर्भविध्वसनैश्च शातयितु वा यावद् विध्वसयितु वा तदा श्रान्ता तान्ता परितान्ता निर्विण्णा सती अकामिका अपस्ववशा आर्तवशार्तदुःखार्ता तं गर्भं परिवहति।

ततः खलु सा चेल्लना देवी नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु यावत् सुकुमारं सुरूपं दारकं प्रजाता ॥ ३३ ॥

टीका—'तएण सा' इत्यादि—ततः=गर्भविध्वसनप्रयासवैफल्यानन्तरं सा चेल्लना देवी यदा तं गर्भं नाशयितु नो शक्नोति तदा श्रान्ता=ग्लानिं प्राप्ता, तान्ता=खेदं प्राप्ता, परितान्ता=विशेषतः खिन्ना, निर्विण्णा=अतिशयितखेदापन्ना अकामिका=स्वकार्यसम्पादनाऽसमर्थतया वाञ्छारहिता, अत एव अपस्ववशा=पराधीना आर्तवशार्तदुःखार्ता=आर्तवशम्=आर्तध्यानवश्यताम् ऋता=गता (प्राप्ता)

द्वारा वैसा ही उपाय किया, परन्तु वह गर्भ न सड सका, न गिर सका न गल सका और न उसका किसी प्रकार नाश हो सका ॥३२॥

'तएण सा' इत्यादि—बादमें रानी अपने प्रयासके विफल होनेके ग्लानिको प्राप्त हुई, खेदको प्राप्त हुई, अपने इच्छित कार्यके विफल होनेसे असमर्थ हुई और आर्तध्यान वश दुःखी होकर गर्भका

કરૂ એવા વિચાર કરી રાણીએ ઔષધી આદિથી એવાજ ઉપાય કર્યા પરંતુ તે ગર્ભ ન સડયો, ન પડયો, ન ગળ્યો કે ન કોઇ પ્રકારે તેનો નાશ થઇ શકયો, (૩૨)

'तएण सा' ઇત્યાદિ. પછી રાણી પોતાના પ્રયાસમા નિષ્ફલ જવાથી અફસોસ કરવા લાગી ખેદ યુક્ત થઇ અને ધારેલું કાર્ય આમ વિફલ થવાથી પોતે અસમર્થ

गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चेल्लना देवीमु-च्चावचाभिराक्रोशनाभिराक्रोशति, आक्रुश्य उच्चावचाभिर्निर्भर्त्सनाभिर्निर्भर्त्सयति निर्भर्त्स्य, एवमुद्धर्षणाभिरुद्धर्षयति, उद्धर्ष्य एवमवादीत्–किमर्थं खलु त्वं मम पुत्रमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झयसि ? इति कृत्वा चेल्लना देवीमुच्चाव-चशपथशापिता करोति, कृत्वा एवमवादीत्–त्वं खलु देवानुप्रिये ! एनं दारक-मनुपूर्वेण संरक्षन्ती संगोपयन्ती संवर्द्धय।

ततः खलु सा चेल्लना देवी श्रेणिकेन राज्ञा एवमुक्ता सती लज्जिता व्रीडिता विड्डा करतलपरिगृहीत० श्रेणिकस्य राज्ञो विनयेन एतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य तं दारकमनुपूर्वेण संगोपयन्ती संवर्धयति ॥ ३४ ॥

टीका–'तएणं तीसे' इत्यादि–ततः=तत्पश्चात् पुत्रजन्मानन्तरं तस्याः चेल्लनाया देव्या अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणलक्षणं यावत् पदेन "अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, कप्पिए, मणोगए संकप्पे" एतेषां संग्रहः। एतेषां व्या-ख्या प्रागुक्ता, समुदपद्यत=जातः–यदि तावत् अनेन दारकेण=पुत्रेण गर्भ-गतेनैव पितुरुदरवलिमांसानि खादितानि, मया तन्न ज्ञायते खलु एष दारकः संवर्द्धमानः=वृद्धिं प्राप्तः सन् प्रौढावस्थायाम् अस्माकं कुलस्य=वंशस्य अन्तकरः= नाशको भविष्यति तत्=तस्मात्कारणात् खलु=निश्चयेन एकान्ते=निर्जने स्थले एनं दारकम् उत्कुरुटिकायां=कचवरपुञ्जस्थाने 'उकरडी' इति भाषायाम् उज्झितुं=त्यक्तुमस्माकं श्रेयः=कल्याणकारकम् ।

एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य दासचेटीं शब्द-यति=आह्वयति शब्दयित्वा एवम्=वक्ष्यमाणम् अवादीत्–हे देवानुप्रिये ! त्वं खलु गच्छ एनं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झ=प्रक्षिप ।

'तएणं तीसे' इत्यादि—बाद रानीके मनमें ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि इस बालकने गर्भमें आते ही पिताकी उदरवलिका मांस खाया। यदि यह बडा होकर समर्थ बनेगा तो न जाने हमारे वंशका किस प्रकार नाश करेगा ? इस लिये उचित है कि इसे एकान्त स्थान जहाँ कोई न देख सके ऐसी उकरडीपर फिकवा दूँ।

'तएणं तीसे' ઇત્યાદિ પછી રાણીના મનમાં એવા વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે– આ બાળકે ગર્ભમાં આવતાં જ બાપની ઉદરવલીનું માંસ ખાધું જો મોટો થતાં સમર્થ બનશે તો ન જાણે ? અમારા વંશનો કયા પ્રકારે નાશ કરશે મને ઉચિત છે કે આને એકાંત સ્થાન, જ્યાં કોઈ જોઈ ન શકે એવા ઉકરડા ઉપર ફેંકાવી દેવો.

चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणं देविं उच्चावयाहिं आओसणाहिं, आओसइ आओसित्ता उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छेइ निब्भच्छित्ता एवं उद्धंसणाहिं उद्धंसेइ, उद्धंसित्ता एवं वयासी—किस्स णं तुमं मम पुत्तं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेसि ? त्तिकट्टु चेल्लणं देविं उच्चावयसवहसावियं करेइ करित्ता, एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिए ! एयं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेहि ।

तएणं सा चेल्लणा देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी लज्जिया विलिया विड्डा करयलपरिग्गहियं० सेणियस्स रन्नो विणएणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, तं दारयं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढइ ॥ ३४ ॥

छाया—ततः खलु तस्याश्चेल्लनाया देव्या अयमेतद्रूपो यावत् समुदपद्यत—यदि तावद् अनेन दारकेण गर्भगतेन चैव पितुरुदरवलिमांसानि खादितानि तन्न ज्ञायते खलु एष दारकः संवर्द्धमानः अस्माकं कुलस्यान्तकरो भविष्यति तच्छ्रेयः खलु अस्माकम् एनं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झितुम्, एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य दासचेटीं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छ खलु त्वं देवानुप्रिये ! एनं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झ ।

ततः खलु सा दासचेटी चेल्लनया देव्या एवमुक्ता सती करतल० यावत् कृत्वा चेल्लनाया देव्या एनमर्थं विनयेन प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य तं दारकं करतलपुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैवाशोकवनिका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झति ।

ततः खलु तेन दारकेण एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झितेन सता साऽशोकवनिका उद्योतिता चाप्यभवत् ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् यत्रैवाशोकवनिका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झितं पश्यति दृष्ट्वा आशुरक्तः, यावद् मिसिमिसीकुर्वन् तं दारकं करतलपुटेन गृह्णाति,

लया ज्वलन् सन् त दारक करतलपुटेन गृह्णाति गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी तत्रैवोपागच्छति उपागत्य चेल्लना देवीम् उच्चावचाभिः=नानाप्रकाराभिः आक्रोशनाभि'=मानसिककोपैः आक्रोशति=तिरस्कारपूर्वक क्रुध्यति, आक्रुश्य=प्रकुप्य उच्चावचाभिः=नानाविधाभिः भर्त्सनाभिः=दुर्वचनापमानैः निर्भर्त्सयति=परुषवचनैरपमानयति, निर्भर्त्स्य एवम्=अनेन प्रकारेण उद्धर्षणाभिः=तर्जन्यादिदर्शनपूर्वकतिरस्कारैः, उद्धर्षयति=तिरस्करोति, उद्धर्ष्य एवम्=अनुपदवक्ष्यमाणम् अवादीत्–हे देवि ! त्व किमर्थं खलु मम पुत्रमेकान्ते उत्कुरुटिकाया दासचेट्या समुज्झयसि ?, इति कृत्वा=उक्तरीत्या आक्रोशनादिक विधाय चेल्लना देवीम् उच्चावचशपथशापिता = नानाप्रकारकदेवगुरुधर्मादिशपथैः शापिता = प्रतिज्ञापिता करोति, कृत्वा, एवम्=अमुना प्रकारेण अवादीत्–हे देवानुप्रिये ! त्वम् एन दारक अनुपूर्वेण=क्रमेण सरक्षन्ती आपद्भ्यः, सगोपयन्ती=वस्त्राच्छादनगर्भगृहप्रवेशनादिभि' क्षेम प्रापयन्ती सवर्द्धय स्तन्यपानादिना वृद्धिं प्रापय। ततः=

हुए और क्रोधसे जलते हुए वे उस बालकको हाथमें लेकर चेलना रानीके पास पहुँचे, और अनेक प्रकारके आक्रोश शब्दोंसे रानीका तिरस्कार किया, अनेक प्रकारके कठोर शब्दोंसे भर्त्सना की, तर्जनी आदि अगुली दिखाकर बहुत अपमान किया और बोले–हे रानी ! किस लिये तूने मेरे इस बालकको दासी द्वारा उकरडीपर फिकवा दिया। इस तरह चेल्लना रानीको उलाहना देकर देव, गुरु, धर्म आदिकी शपथ देकर इस प्रकार बोले–हे देवानुप्रिये ! तुम इस बालककी आपत्तिसे रक्षा करो और वस्त्रसे ढांककर प्रसूतिगृहमें ले जाओ जिस प्रकार यह सुखी रहे वैसा प्रयत्न करो और स्तनपान आदि कराकर इसका अच्छी तरह पालन–पोषण करो ।

તેઓ તે બાળકને હાથમા ઉપાડી લઈને ચેલના રાણીની પાસે પહોચ્યા અને અનેક પ્રકારના આક્રોશ શબ્દોથી રાણીનો તિરસ્કાર કર્યો અનેક પ્રકારના કઠોર શબ્દોથી અનાદર કરી તર્જની આગળી દેખાડી બહુ અપમાન કર્યું અને કહ્યુ–હે રાણી ! શા માટે તે મારા આ બાળકને દાસી દ્વારા ઉકરડીએ ફેકાવી દીધો આવી રીતે ચેલના રાણીને ઠપકો આપી દેવ, ગુરૂ, ધર્મ આદિના સોગદ આપી–આ પ્રમાણે બોલ્યા–હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ બાળકની આપત્તિથી રક્ષા કરો અને વસ્ત્રથી ઢાકી પ્રસૂતિગૃહમા લઈ જાઓ. જેવી રીતે આ સુખી રહે તેવા પ્રયત્ન કરો તથા સ્તન–પાન આદિ કરાવી તેનુ સારી રીતે પાલન–પોષણ કરો

ततः=चेल्लनया देव्यैवमुक्ता सती सा दासचेटी 'तथाऽस्तु' इतिकृत्वा करतलपरिगृहीतमञ्जलिपुटं मस्तके कृत्वा=निधाय चेल्लनाया देव्या एनम्=अर्थम्=निदेशम् प्रतिशृणोति=स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य तं दारकं करतलपुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव अशोकवनिका=अशोकवाटिका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झति=प्रक्षिपति ।

ततः खलु तेन दारकेण एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झितेन सता साऽशोकवनिका उद्योतिता=प्रकाशिता चाऽप्यभवत् ।

ततः=दारकप्रक्षेपणानन्तरं स श्रेणिको राजा अस्याः कथायाः=दारकप्रक्षेपणवृत्तान्तस्य लब्धार्थः=ज्ञातसमाचारः सन् यत्रैवाशोकवनिका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झितं पश्यति, दृष्ट्वा च-आशुरक्तः आशु=शीघ्रं रक्तः=कोपेनाऽरुणनयनः यावत् मिसिमिसन्=क्रोधज्वा

ऐसा अपने मनमें विचारकर दासीको बुलवाया और उससे कहा-हे देवानुप्रिये! इसको छिपाकर लेजा और एकान्त उकरडीपर डाल आ।

इस तरह चेलना रानीकी आज्ञा पाकर दासीने उस बालकको हाथोंसे उठाया और अशोकवाटिकामें जाकर एकान्त स्थानमें उकरडीपर डाल दिया। वह बालक बडा तेजस्वी था इस कारण उससे अशोकवाटिका प्रकाशयुक्त हो गयी।

पश्चात् राजा श्रेणिकको किसी तरह विदित हुआ कि रानी चेलनाने जन्मते बालक (नवजात शिशु)को कहीं फिकवा दिया है, तब राजा ढूंढते हुए अचानक अशोकवाटिकामें आये और उकरडीपर पडे हुए बालकको देखा। उसे देखकर राजा उसी समय बडे क्रुद्ध

એવો પોતાના મનમા વિચાર કરી દાસીને બોલાવી, અને તેને કહ્યુ—હે દેવાનુપ્રિયે! આને સતાડીને લઇ જા અને એકાત ઉકરડે નાખી દે

આવી રીતે ચેલ્લના રાણીની આજ્ઞા થતા દાસીએ તે બાળકને હાથ વડે ઉપાડીને અશોકવાટિકામા જઇને એકાત સ્થાનમા ઉકરડે ફેકી દીધો તે બાળક બહુ તેજસ્વી હતો આ કારણે તેનાથી અશોક—વાટિકા પ્રકાશયુકત બની ગઇ

પછી રાજા શ્રેણિકના જાણવામા કોઇ રીતે આવ્યુ કે રાણી ચેલ્લનાએ જન્મતા (નવજાત શિશુ) બાળકને કયાક ફેકાવી દીધો છે ત્યારે રાજા પોતે તપાસ કરવા માટે ગયા—ક્રમથી તપાસ કરતા અશોકવાટિકામા આવ્યા અને ઉકરડા ઉપર પડેલા બાળકને દીઠો તેને જોઇને તેજ વખતે રાજા બહુ ગુસ્સે થયા અને ક્રોધમા બળતા થકા

लया ज्वलन् सन् त दारक करतलपुटेन गृह्णाति गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी तत्रैवोपागच्छति उपागत्य चेल्लना देवीम् उच्चावचाभिः=नानाप्रकाराभिः आ-क्रोशनाभिः=मानसिककोपैः आक्रोशति=तिरस्कारपूर्वक क्रुध्यति, आक्रुश्य=प्रकुप्य उच्चावचाभिः=नानाविधाभिः भर्त्सनाभिः=दुर्वचनापमानैः निर्भर्त्सयति=परुषवच-नैरपमानयति, निर्भर्त्स्य एवम्=अनेन प्रकारेण उद्धर्षणाभिः=तर्जन्यादिदर्शनपूर्व-कतिरस्कारैः, उद्धर्षयति=तिरस्करोति, उद्धर्ष्य एवम्=अनुपदवक्ष्यमाणम् अवा-दीत्-हे देवि ! त्व किमर्थ खलु मम पुत्रमेकान्ते उत्कुरुटिकाया दासचेट्या समुज्झयसि ?, इति कृत्वा=उक्तरीत्या आक्रोशनादिक विधाय चेल्लना देवीम् उच्चावचशपथशापिता = नानाप्रकारकदेवगुरुधर्मादिशपथैः शापिता = प्रतिज्ञापिता करोति, कृत्वा, एवम्=अमुना प्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिये ! त्वम् एन दारक अनुपूर्वेण=क्रमेण सरक्षन्ती आपद्भ्यः, सगोपयन्ती=वस्त्राच्छादनगर्भगृह-प्रवेशनादिभि क्षेम प्रापयन्ती सवर्द्धय स्तन्यपानादिना वृद्धिं प्रापय। तत=

हुए और क्रोधसे जलते हुए वे उस बालकको हाथमें लेकर चेलना रानीके पास पहुँचे, और अनेक प्रकारके आक्रोश शब्दोंसे रानीका तिरस्कार किया, अनेक प्रकारके कठोर शब्दोंसे भर्त्सना की, तर्जनी आदि अगुली दिखाकर बहुत अपमान किया और बोले-हे रानी ! किस लिये तूने मेरे इस बालकको दासी द्वारा उकरडीपर फिकवा दिया। इस तरह चेल्लना रानीको उलाहना देकर देव, गुरु, धर्म आदिकी शपथ देकर इस प्रकार बोले-हे देवानुप्रिये ! तुम इस बालककी आपत्तिसे रक्षा करो और वस्त्रसे ढांककर प्रसूतिगृहमें ले जाओ जिस प्रकार यह सुखी रहे वैसा प्रयत्न करो और स्तनपान आदि कराकर इसका अच्छी तरह पालन-पोषण करो ।

તેઓ તે બાળકને હાથમા ઉપાડી લઈને ચેલના રાણીની પાસે પહોચ્યા અને અનેક પ્રકારના આક્રોશ શબ્દોથી રાણીનો તિરસ્કાર કર્યો અનેક પ્રકારના કઠોર શબ્દોથી અનાદર કરી તર્જની આગળી દેખાડી બહુ અપમાન કર્યું અને કહ્યુ-હે રાણી ! શા માટે તે મારા આ બાળકને દાસી દ્વારા ઉકરડીએ ફેકાવી દીધો આવી રીતે ચેલના રાણીને ઠપકો આપી દેવ, ગુરૂ, ધર્મ આદિના સોગદ આપી-આ પ્રમાણે બોલ્યા-હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ બાળકની આપત્તિથી રક્ષા કરો અને વસ્ત્રથી ઢાકી પ્રસૂતિગૃહમા લઇ જાઓ. જેવી રીતે આ સુખી રહે તેવા પ્રયત્ન કરો. તથા સ્તન-પાન આદિ કરાવી તેનુ સારી રીતે પાલન-પોષણ કરો

श्रेणिकराजनिदेशानन्तर 'खलु' वाक्यालङ्कारार्थः, सा=श्रेणिकराजमहिषी 'चेल्लना' देवी श्रेणिकेन राज्ञा एवम्=पूर्वोक्तप्रकार प्रतिपालननिदेशम् उक्ता=निवेदिता सती 'लज्जिता, स्वतः, व्रीडिता परतः, विड्डा=उभयतो लज्जिता, देशी शब्द., एते समानार्थका', यद्वा-'व्यलीके' ति छाया व्यलीका=पति-प्रतिकूलाचरणेन सापराधा करतलपरिगृहीत शिर आवर्त्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा श्रेणिकस्य राज्ञो=राजसम्बन्धिनम् एतम्=दारकपरिपालननिदेशरूपम्-अर्थम्=पुत्ररक्षणनिदेश प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, स्वीकृत्य त दारक=अनुपूर्वेण=यथावत् सरक्षन्ती सगोपयन्ती सवर्द्धयति=पालनपोषणादिना वृद्धिं नयति ॥ ३४ ॥

मूलम्-तए णं तस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्झमाणस्स अग्ग गुलियाए कुक्कुडपिच्छएणं दूमिया यावि होत्था, अभिक्खण अभिक्खण पूय च सोणिय च अभिनिस्सवइ । तए णं से दारए वेयणाभिभूए समाणे महया महया सद्देण आरसइ । तएण सेणिए राया तस्स दारगस्स आरसितसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त दारग करतलपुडेण गिण्हइ गिण्हित्ता त अग्ग गुलिय आसयसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता पूय च सोणिय च

इस प्रकार राजाके कहनेपर रानी. अपने इस अकर्तव्यपर स्वतः लज्जित हुई, 'राजा मेरे इस अकर्तव्य कर्मसे अपने मनमें क्या समजे होंगे?' ऐसा विचार कर राजासे लज्जित हुई, इस प्रकार रानी चेलना दोनों ही ओरसे बडी ही लज्जित हुई । पतिके प्रतिकूल आचरणसे रानीको अतिशय खेद और पश्चात्ताप हुआ । बाद वह हाथ जोडकर सविनय पुत्रपालनरूप राजाकी आज्ञाको स्वीकार कर बालकका भलीभाँति पालन करने लगी ॥ ३४ ॥

આ પ્રકારે રાજાના કહેવાથી રાણી પોતાના આ દુષ્કૃત્યથી સ્વત લજ્જિત થઈ, 'રાજા મારા આ દુષ્કૃત્યથી પોતાના મનમા શુ સમજ્યા હશે' એમ વિચારીને રાજાથી લજ્જા પામી, આ પ્રમાણે બન્ને પ્રકારે બહુ લજ્જિત થઈ પતિના વિરૂદ્ધ આચરણથી રાણીને અતિશય ખેદ અને પશ્ચાત્તાપ થયો બાદ હાથ જોડીને સવિનય પુત્રપાલન રૂપ રાજાની આજ્ઞાનો સ્વીકાર કરી બાળકનું સારી રીતે પાલન કરવા લાગી. (૩૪)

आसएणं आमुसइ । तए ण से दारए निव्वुए निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठइ । जाहे वि य णं से दारए वेयणाए अभिभूए समाणे महया महया सद्देणं आरसइ ताहे वि य णं सेणिए राया जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, तं दारगं करतलपुडेणं गिण्हइ, तं चेव जाव निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठइ ।

तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो तइए दिवसे चदसूरदसणिय करेंति, जाव सपत्ते वारसाहे दिवसे अयमेयारूव गुणनिप्फन्न नामधिज्ज करेंति, जम्हाण अम्ह इमस्स दारगस्स एगते उक्कुरुडियाए पज्झिज्जमाणस्स अगुलिया कुक्कुडपिच्छएण दूमिया, त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज्ज 'कूणिए'। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्ज करेंति 'कूणिय'त्ति ॥ ३५ ॥

छाया—तत खलु तस्य दारकस्य एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झ्यमानस्याऽग्राङ्गुलिका कुक्कुटपिच्छकेन दूना चाऽप्यभूत्, अभीक्ष्णमभीक्ष्ण पूय च शोणित चाभिनिस्स्रवति । तत खलु स दारको वेदनाभिभूत• सन् महता महता शब्देन आरसति । तत खलु श्रेणिको राजा तस्य दारकस्याऽऽरसितशब्द श्रुत्वा निशम्य यत्रैव स दारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, त दारक करतलपुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा तामग्राङ्गुलिकामास्ये प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य, पूय च शोणित चास्येन आमृशति । ततः खलु स दारको निवृतो निर्वेदनस्तूष्णीक सतिष्ठते । यदपि च खलु स दारको वेदनयाऽभिभूत सन् महता–महता शब्देन आरसति तदाऽपि च खलु श्रेणिको राजा यत्रैव स दारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त दारक करतलपुटेन गृह्णाति, तदेव यावत् निर्वेदनस्तूष्णीकः सतिष्ठते ।

तत खलु तस्य दारकस्याम्बापितरौ तृतीये दिवसे चन्द्रसूर्यदर्शन कारयत यावत् समाप्ते द्वादशाहे दिवसे इममेतद्रूप गुणनिष्पन्न नामधेय कुरुतः यस्मात् खलु अस्माकमस्य दारकस्य एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्झ्यमानस्याङ्गुलिका कुक्कुटपिच्छकेन दूमिता (कूणिता) तद् भवतु खलु अस्माकमस्य दारक-

स्य नामधेय 'कूणिकः'। ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ नामधेय कुरुतः 'कूणिकः' इति ॥ ३५ ॥

टीका—'तएण तस्स' इत्यादि—ततः=गृहसमानयनानन्तर तस्य दारकस्य एकान्ते—उत्कुरुटिकायाम् उज्झ्यमानस्य अग्राङ्गुलिका कुक्कुटपिच्छकेन=पिच्छ एव पिच्छकः=चञ्चु, कुक्कुटस्य पिच्छकः कुक्कुटपिच्छकः, तेन=कुक्कुट चञ्चुना, दूना=परितापिता दष्टेति यावदिति च अभूत्। तेनाङ्गुलितोऽभीक्ष्ण मभीक्ष्ण=पुन पुनः पूय=दूषितदुर्गन्धशोणितम्—'पीप'—इति भाषायाम्-शोणित =रक्त च अभिनिस्रवति। तत. = तस्मात् = पूयशोणिताभिस्रावात् स दारको वेदनाभिभूतः=तीव्रदुःखपीडित. सन् महता—महता=उच्चैरुच्चैः शब्देन=चीत्कारेण आरसति=विलपति। तत. खलु श्रेणिको राजा तस्य दारकस्य आरसित-शब्दम् = आर्तनाद श्रुत्वा निशम्य = हृदयेनावधार्य यत्रैव स दारकस्तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य त दारक करतलपुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा ताम्—कुक्कुट-दष्टामग्राङ्गुलिकाम्=अङ्गुल्या अग्रभागम् आस्ये=स्वमुखे प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य-पूय शोणित च आस्येन=मुखेन आमृशति=चोपयति। ततः=तस्माच्चोषणात् खलु स दारको निवृत्त =शान्तः निर्वेदनः=वेदनारहित तूष्णीक =समौनः सतिष्ठते=आस्ते। एव यदा यदा स आर्तस्वरेण रौति तदा तदा श्रेणिक एवमेव करोति।

'तएण तस्स' इत्यादि—

एकान्त उकरडीपर डाले हुए उस बालककी अगुलीके अग्र भागको कुक्कुट (मुर्गे)ने काट खाया जिससे उसकी अगुली पक गयी और उससे बारबार रक्त और पीप बहने लगा, इससे उसको बडी वेदना होती थी और आर्तस्वरसे रुदन करता था। उसका आर्तनाद सुनकर राजा उसके पास आता था और बालकको उठाकर उसकी अगुली अपने मुहमें लेकर झरते हुए शोणित और पीपको चूस २ कर थूकता था जिससे उस बालकको वेदना कम होती थी

'तएण तस्स' ઇત્યાદિ

એકાન્ત ઉકરડી ઉપર નાખી દીધેલ તે છોકરાની આગળીના આગલા ભાગને કુકડો કરડી ગયો જેથી તેની આગળી પાકી ગઈ તથા તેમાથી વાર વાર લોહી અને પરૂ વહેવા લાગ્યુ આથી તેને બહુ વેદના થતી હતી અને તેથી તે આર્તસ્વરથી રુદન કરતો હતો.

તેનો આર્તનાદ સાભળી રાજા તેની પાસે આવતો અને બાળકને ઉપાડીને તેની આગળી પોતાના મોમા લઈને ઝરતા લોહી અને પરૂને ચુસી-ચુસીને થૂકી નાખતો હતો જેથી તે બાળકની વેદના ઓછી થતી હતી અને તે શાત (રડતો બધ) થઈ

ततः=अङ्गुलीपीडाशमनानन्तर तस्य दारकस्य मातापितरौ तृतीये दिवसे चन्द्रसूर्यदर्शन कारयतः कारितवन्तौ यावत् सम्प्राप्ते द्वादशे दिवसे एतद्रूप गुण-निष्पन्न नामधेय कुरुत -यस्मात् खलु उत्कुरुटिकाया पतितस्यास्य दारकस्याङ्गुलिका कुक्कुटपिच्छकेन दूमिता=पीडिताऽतः कूणिता-सकुचिता जाता तत्=तस्मात्कारणाद् भवतु अस्य दारकस्य नाम 'कूणिक' इति, तदनु मातापितरौ तस्य दारकस्य नाम कुरुतः 'कूणिक' इति ॥ ३५ ॥

मूलम्—तएणं तस्स कूणियस्स अणुपुव्वेण ठिइवडियं च जहा मेहस्य जाव उप्पिं पासायवरगए विहरइ, अट्ठओ दाओ ॥३६॥

छाया—ततः खलु तस्य कूणिकस्यानुपूर्वेण स्थितिपतित च यथा मेघस्य यावत् उपरि प्रासादवरगतो विहरति । अष्ट दाया' ॥ ३६ ॥

और वह चुप होजाता था। जब कभी भी यह बालक वेदनासे छटपटाने लगता था तभी राजा श्रेणिक आकर उसकी वेदना उसी प्रकारसे शान्त करता था।

बाद माता पिताने तीसरे दिन उस बालकको चन्द्र सूर्यका दर्शन कराया। यावत बारहवें दिन बडे उत्सवके साथ उस बालकका नाम रखते हुए बोले कि-उकरडीपर डाले हुए हमारे इस बालककी अंगुली मुर्गेके काट खानेसे कूणित-सकुचित होगई इस कारणसे इस बालकका गुण-निष्पन्न नाम 'कूणिक' रक्खा जाय, ऐसा सोच-कर माता-पिताने उसका नाम 'कूणिक' रक्खा। ॥ ३५ ॥

'तएण तस्स' इत्यादि—

नामकरणके बाद कूणिकका कुलपरम्परागत उत्सव-विवाहादि

જતો હતો. જ્યારે જ્યારે તે બાળક વેદનાથી તડફડવા લાગતો ત્યારે ત્યારે રાજા શ્રેણિક આવીને તેની વેદના તેજ રીતે શાંત કરતા હતા

બાદ માતા પિતાએ ત્રીજે દિવસે તે બાળકને ચંદ્ર સૂર્યના દર્શન કરાવ્યા પછી બારમે દિવસ મોટા ઉત્સવથી તે બાળકનું નામ પાડતા બોલ્યા કે-ઉકરડી ઉપર નાખી દીધેલા અમારા આ બાલકની આગળી કુકડાના કરડી ખાવાથી કુણિક (સંકુચિત) થઇ ગઇ તેથી આ બાળકનું ગુણનિષ્પન્ન (ગુણ દર્શાવતુ) નામ 'કૂણિક' રાખવું જોઇએ આવુ વિચારી માતા પિતાએ તેનું નામ 'કૂણિક' રાખ્યું (૩૫)

'तएण तस्स' ઇત્યાદિ

નામકરણ પછી કૂણિકના કુલપરંપરાનુસાર ઉત્સવ-વિવાહ આદિ કાર્ય મેઘ-

टीका—'तएण तस्स' इत्यादि'। ततः=नामकरणानन्तर तस्य कूणिकस्य अनुपूर्वेण=अनुक्रमेण स्थितिपतित=कुलक्रमागतम् उत्सवादिकम् यथा मेघस्य=मेघकुमारस्येव करोति यावत् अष्टाष्ट दायाः= श्वशुरेण जामात्रे दीयमानाः पदार्थाः 'दहेज' इति भाषायाम् ॥ ३६ ॥

मूलम्—तएण तस्स कूणियस्स कुमारस्स अन्नया पुव्वरत्ता० जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो सचाएमि सयमेव रज्जसरिं करेमाणे पालेमाणे विहरित्तए, त सेय मम खलु सेणियं रायं निलयबंधणं करेत्ता अप्पाण महया—महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावित्तए त्तिकट्टु एव सपेहित्ता सेणियस्स रन्नो अतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे२ विहरइ ।

तएणं से कूणिए कुमारे सेणियस्स रन्नो अंतर वा जाव मम्म वा अलभमाणे अन्नया कयाइ कालादीए दस कुमारे नियघरे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो सचाएमो सयमेव रज्जसिरि करेमाणा पालेमाणा विहरित्तए, त सेय देवाणुप्पिया ! अम्ह सेणिय राय नियलबधणं करेत्ता रज्जं च रट्ठ च बल च वाहणं च कोस च कोट्ठागार च जयवण च एक्कारसभाए विरिंचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणाणं जाव विहरित्तए ।

वार्य मेघ कुमारके समान हुए । श्वसुरकी ओरसे आठ—आठ दहेज वस्तुएं आयी और श्रेष्ठ प्रासादपर पूर्वपुण्योपार्जित मनुष्यसम्बन्धी पाँचों इन्द्रियोंके सुखका अनुभव करने लगे ॥ ३६ ॥

કુમાર સમાન થયા શ્વશુરના તરફથી આઠ—આઠ દહેજ વસ્તુ આવી અને ઉત્તમ મહેલમાં પૂર્વપુણ્યોપાર્જિત મનુષ્યસંબંધી પાંચે ઈન્દ્રિયોના સુખનો અનુભવ કરવા લાગ્યા (૩૬)

तएणं ते कालादीया दस कुमारा कूणियस्स कुमारस्स एयमट्ठ विणएण पडिसुणेंति । तएणं से कूणिए कुमारे अन्नया कयाइ सेणियस्स रन्नो अंतर जाणाइ, जाणित्ता सेणिय रायं नियलबधणं करेइ, करित्ता अप्पाणं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावेइ । तएणं से कूणिए कुमारे राया जाए महया० ।३७।

छाया--ततः खलु तस्य कूणिकस्य कुमारस्य अन्यदा पूर्वरात्रा० यावत्समुदपद्यत-एव खलु अह श्रेणिकस्य राज्ञो व्याघातेन न शक्नोमि स्वय मेव राज्यश्रिय कुर्वन् पालयन् विहर्तु, तच्छ्रेयो मम खलु श्रेणिक राजान निगडबन्धन कृत्वा आत्मान महता-महता राज्याभिषेकेणाभिषेचयितुम्, इति कृत्वा एव सप्रेक्षते, सप्रेक्ष्य श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तराणि च छिद्राणि च विर-हान् च प्रतिजाग्रद् विहरति ।

ततः खलु स कूणिकः श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तर वा यावत् मर्म वा अलभमानः अन्यदा कदाचित् कालादिकान दशकुमारान् निजगृहे शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एव खलु देवानुप्रिया ! वय श्रेणिकस्य राज्ञो व्या घातेन नो शक्नुम स्वयमेव राज्यश्रिय कुर्वन्त० पालयन्तो विहर्तुम्, तच्छ्रेयो देवानुप्रियाः ! अस्माक श्रेणिक राजान निगडबन्धन कृत्वा राज्य च राष्ट्र च बल च वाहन च कोश च कोष्ठागार च जनपद च एकादशभागान् विभज्य स्वयमेव राज्यश्रिय कुर्वाणाना पालयता यावद् विहर्तुम् ।

ततः खलु ते कालादिका दशकुमाराः कूणिकस्य कुमारस्यैतमर्थं विनयेन प्रतिशृण्वन्ति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमारः अन्यदा कदाचित् कूणिकस्य राज्ञो-ऽन्तर जानाति, ज्ञात्वा श्रेणिक राजान निगडबन्धन करोति, कृत्वा आत्मान महता महता राज्याभिषेकेणाभिषेचयति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमारो राजा जातो महा० ॥ ३७ ॥

टीका-'ततः खलु तस्ये' त्यादि-अन्यदा तस्य कूणिक-कुमारस्य

'तएण तस्स' इत्यादि—

बाद एक समय कूणिककुमार रात्रिके पिछले पहरमें विचार

'तएण तस्स' ઇત્યાદિ

પછી એક સમય કૂણિક કુમાર રાત્રિના પાછલા પહોરમાં વિચાર કરવા લાગ્યા

टीका-'तएण तस्स'- इत्यादि । ततः=नामकरणानन्तर तस्य कूणिकस्य अनुपूर्वेण=अनुक्रमेण स्थितिपतित=कुलक्रमागतम् उत्सवादिकम् यथा मेघस्य= मेघकुमारस्येव करोति यावत् अष्टाष्ट दायाः= श्वशुरेण जामात्रे दीयमानाः पदार्था. 'दहेज' इति भाषायाम् ॥ ३६ ॥

मूलम्-तएणं तस्स कूणियस्स कुमारस्स अन्नया पुव्वरत्ता० जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो सचाएमि सयमेव रज्जसरिं करेमाणे पालेमाणे विहरित्तए, त सेय मम खलु सेणियं रायं निलयबंधण करेत्ता अप्पाण महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावित्तए त्तिकट्टु एव सपेहित्ता सेणियस्स रन्नो अतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे२ विहरइ ।

तएणं से कूणिए कुमारे सेणियस्स रन्नो अंतर वा जाव मम्म वा अलभमाणे अन्नया कयाइ कालादीए दस कुमारे नियघरे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो सचाएमो सयमेव रज्जसिरि करेमाणा पालेमाणा विहरित्तए, त सेय देवाणुप्पिया ! अम्ह सेणिय राय नियलबधणं करेत्ता रज्जं च रट्ठ च बल च वाहणं च कोस च कोट्ठागार च जयवण च एक्कारसभाए विरिंचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणाणं जाव विहरित्तए ।

कार्य मेघ कुमारके समान हुए । श्वसुरकी ओरसे आठ-आठ दहेज वस्तुएं आयी और श्रेष्ठ प्रासादपर पूर्वपुण्योपार्जित मनुष्यसम्बन्धी पाँचों इन्द्रियोंके सुखका अनुभव करने लगे ॥ ३६ ॥

કુમાર સમાન થયા શ્વશુરના તરફથી આઠ-આઠ દહેજ વસ્તુ આવી અને ઉત્તમ મહેલમાં પૂર્વપુણ્યોપાર્જિત મનુષ્યસંબંધી પાંચે ઇન્દ્રિયોના સુખનો અનુભવ કરવા લાગ્યા (૩૬)

जाव सव्वालंकार–विभूसिए चेल्लणाए देवीए पायवंदए हव्व-मागच्छइ। तएणं से कूणिए राया चेल्लण देविं ओहय० जाव झियायमाणि पासइ, पासित्ता, चेल्लणाए देवीए पायग्गहण करेइ, करित्ता चेल्लण देविं एवं वयासी–कि णं अम्मो! तुम्हं न तुट्ठी वा न ऊसए वा न हरिसे वा नाणदे वा, जं णं अहं सयमेव रज्जसिरि जाव विहरामि ?॥ ३८॥

छाया–ततः खलु स कूणिको राजा अन्यदा कदाचित् स्नातः यावत् सर्वालङ्कारविभूषितश्चेलनाया देव्याः पादवन्दको हव्यमागच्छति।

ततः खलु स कूणिको राजा चेल्लना देवीम् अपहत० यावद् ध्यायन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा चेल्लनाया देव्याः पादग्रहण करोति, कृत्वा, चेल्लना देवीमेव-मवादीत्–किं खलु अम्ब! तव न तुष्टिर्वा नोत्सवो वा न हर्षो वा नानन्दो वा ? यत्खलु अह स्वयमेव राज्यश्रिय यावद् विहरामि॥ ३८॥

टीका–'तएण से' इत्यादि–ततःराज्यप्राप्त्यनन्तर स कूणिको राजा अन्यदा कदाचित्=कस्मिंश्चित्समये स्नातः यावत् सर्वालङ्कारविभूषितः चेल्लनाया देव्याः=निजमातुः पादवन्दक=चरणौ वन्दितु सहर्ष ससम्भ्रम हव्य=शीघ्रम् आगच्छति।

ततः=आगमनानन्तर खलु=निश्चयेन स कूणिको राजा निजमातर

बाद एक समय मौका पाकर कूणिकने राजा श्रेणिकको बन्धनमे डाल दिया और राज्याभिषेक कराकर अपने आप राजा बन गये॥३७॥

'तएण से' इत्यादि–

इसके अनन्तर एक दिन वह राजा कूणिक सभी प्रकारके वस्त्र और अलङ्कारोसे सज्जित होकर अपनी माता चेल्लना देवीके चरण वन्दनके लिये हर्ष एव उत्सुकताके साथ जल्दी २ आये, और

પછી એક સમય તક જોઈને કૂણિક રાજા શ્રેણિકને બધનમા નાખી દીધો અને રાજ્યાભિષેક કરાવી પોતે રાજા બની બેઠો (૩૭)

'तएण से' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી એક દિવસ તે રાજા કૂણિક તમામ પ્રકારના વસ્ત્ર અને અલકા રોથી સજ્જિત થઇ પોતાની માતા ચેલ્લના દેવીના ચરણ-વદન માટે હર્ષ અને

पूर्वरात्रापररात्रावसरे यावत् विचारो जातः–एव खलु श्रेणिकभूपस्य व्याघातेन=प्रतिबन्धेन राज्यश्रिय कुर्वन् पालयन् स्वयमेव=स्वतन्त्रः विहर्तुं=विचरितु अह नो शक्नोमि तत्=तस्मात् कारणात् 'श्रेणिकराजस्य-निगडबन्धन कृत्वा विशाल-राज्याभिषेकेणात्मानमभिषेचयितु मम श्रेयः' इति कृत्वा=इति सकल्प विधाय एवम्=अनेन प्रकारेण सप्रेक्षते=विचारयति. सप्रेक्ष्य श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तराणि=अवकाशान् छिद्राणि=दूषणानि विरहान्=एकान्तानि च प्रतिजाग्रत=अन्वेषयन्, विहरति । तदनु श्रेणिकभूपस्य मर्म=गुप्तत्रुटिं राज्य=शासन राज्यलक्ष्मी वा राष्ट्र=देश बल=सैन्य वाहन=यान रथादिकम् कोश=भाण्डागार, कोष्ठागार=धान्यगृह, जनपद=स्वदेशम्, अन्यत्सर्व सुगमम् ॥ ३७ ॥

मूलम्–तए णं से कूणिए राया अन्नया कयाइं ण्हाए

करने लगे कि–श्रेणिक राजाका राज्यशासनरूप प्रतिबन्ध होनेके कारण मैं सुखपूर्वक राज्यलक्ष्मीका उपभोग नहीं कर सकता हुँ इस लिए मुझे उचित है कि इस श्रेणिक राजाको कीसी तरह बन्धनमे डाल दूँ और स्वय राजा बनकर राज्यलक्ष्मीका उपभोग करूँ। ऐसा विचार कर राजाका छिद्र देखने लगे। श्रेणिक राजाका कोइ छिद्र, दूषण और मर्म हाथ नहीं आनेपर एक समय काल आदि दस कुमारोको अपने घरमें बुलाकर सलाह करने लगे–बोले कि हम लोग राजाके कारण ही राज्यश्रीका उपभोग नही कर सकते इस लिए किसी तरह राजाको बन्धनमे डालकर हम लोग राज्य–राष्ट्र, सेना, वाहन, कोश, कोष्ठागार और स्वदेश इनके ग्यारह भाग करके स्वय राज्य-श्रीका उपभोग करे। इस बातको सभी कुमारोंने स्वीकार कर लिया।

કે શ્રેણુક રાજાનું રાજ્ય શાસનરૂપ પ્રતિબંધ હોવાને કારણે સુખ–પૂર્વક રાજ્યલક્ષ્મીનો ઉપભોગ હુ કરી શકતો નથી માટે મને ઉચિત છે કે આ શ્રેણિક રાજાને કોઈ પણ રીતે બંધનમા નાખી દઉં અને હુ પોતે રાજા બનીને રાજ્યલક્ષ્મીનો ઉપભોગ કરૂ એમ વિચાર કરી રાજાના છિદ્ર જોવા મડયો. શ્રેણિક રાજાનુ કોઈ છિદ્ર દૂષણ અને મર્મ હાથ ન આવવાથી એક સમય કાલ આદિ દશ કુમારોને પોતાના ઘરમા બોલાવી સલાહ કરવા લાગ્યો કહ્યુ કે–આપણે રાજાના કારણેથીજ રાજ્યશ્રીનો ઉપભોગ કરી શકત નથી આથી કેઈ પણ રીતે રાજાને બંધનમા નાખી આપણે રાજ્ય, રાષ્ટ્ર, સેના, વાહન, ખજાનો, કોઠાર તથા દેશ એના અગીયાર ભાગ કરીને આપણે પોતેજ રાજ્યશ્રીનો ઉપભોગ કરીએ આ વાતનો બધા કુમારોએ સ્વીકાર કરી લીધો.

जाव सव्वालंकार–विभूसिए चेल्लणाए देवीए पायवंदए हव्व-मागच्छइ। तएणं से कूणिए राया चेल्लणं देविं ओहय० जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता, चेल्लणाए देवीए पायग्गहणं करेइ, करित्ता चेल्लणं देविं एवं वयासी–किं णं अम्मो! तुम्हं न तुट्ठी वा न ऊसए वा न हरिसे वा णाणदे वा, जं णं अहं सयमेव रज्जसिरिं जाव विहरामि?॥ ३८॥

छाया–ततः खलु स कूणिको राजा अन्यदा कदाचित् स्नातः यावत् सर्वालङ्कारविभूषितश्चेलनाया देव्याः पादवन्दको हव्यमागच्छति।

ततः खलु स कूणिको राजा चेल्लनां देवीम् अपहत० यावद् ध्यायन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा चेल्लनाया देव्याः पादग्रहणं करोति, कृत्वा, चेल्लनां देवीमेव मवादीत्–किं खलु अम्ब! तव न तुष्टिर्वा नोत्सवो वा न हर्षो वा नानन्दो वा? यत्खलु अहं स्वयमेव राज्यश्रियं यावद् विहरामि॥ ३८॥

टीका–'तएणं से' इत्यादि–ततः=राज्यप्राप्त्यनन्तरं स कूणिको राजा अन्यदा कदाचित्=कस्मिंश्चित्समये स्नातः यावत् सर्वालङ्कारविभूषितः चेल्लनाया देव्याः=निजमातुः पादवन्दकः=चरणौ वन्दितुं सहर्षं ससम्भ्रमं हव्यं=शीघ्रम् आगच्छति।

ततः=आगमनानन्तरं खलु=निश्चयेन स कूणिको राजा निजमातरं

बाद एक समय मौका पाकर कूणिकने राजा श्रेणिकको बन्धनमें डाल दिया और राज्याभिषेक कराकर अपने आप राजा बन गये॥३७॥

'तएणं से' इत्यादि–

इसके अनन्तर एक दिन वह राजा कूणिक सभी प्रकारके वस्त्र और अलङ्कारोंसे सज्जित होकर अपनी माता चेल्लना देवीके चरण वन्दनके लिये हर्ष एवं उत्सुकताके साथ जल्दी २ आये, और

પછી એક સમય તક જોઈને કૂણિક રાજા શ્રેણિકને બંધનમાં નાખી દીધો અને રાજ્યાભિષેક કરાવી પોતે રાજા બની બેઠો (૩૭)

'तएणं से' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી એક દિવસ તે રાજા કૂણિક તમામ પ્રકારના વસ્ત્ર અને અલંકારોથી સજ્જિત થઈ પોતાની માતા ચેલ્લના દેવીના ચરણ-વંદન માટે હર્ષ અને

पूर्वरात्रापररात्रावसरे यावत् विचारो-जातः-एव खलु श्रेणिकभूपस्य व्याघातेन=प्रतिबन्धेन राज्यश्रिय कुर्वन् पालयन् स्वयमेव=स्वतन्त्रः विहर्तु=विचरितु अह नो शक्नोमि तत्=तस्मात् कारणात् 'श्रेणिकराजस्य निगडबन्धन कृत्वा विशाल राज्याभिषेकेणात्मानमभिषेचयितु मम श्रेयः' इति कृत्वा=इति सकल्प विधाय एवम्=अनेन प्रकारेण सम्प्रेक्षते=विचारयति, सम्प्रेक्ष्य श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तराणि=अवकाशान छिद्राणि=दूषणानि विरहान्=एकान्तानि च प्रतिजाग्रत=अन्वेषयन्, विहरति । तदनु श्रेणिकभूपस्य मर्म=गुप्तत्रुटिं राज्य=शासन राज्यलक्ष्मी वा राष्ट्र=देश बल=सैन्य वाहन=यान रथादिकम् कोश=भाण्डागार, कोष्ठागार=धान्यगृह, जनपद=स्वदेशम्, अन्यत्सर्व सुगमम् ॥ ३७ ॥

मूलम्—तए णं से कूणिए राया अन्नया कयाइं ण्हाए

करने लगे कि-श्रेणिक राजाका राज्यशासनरूप प्रतिबन्ध होनेके कारण मैं सुखपूर्वक राज्यलक्ष्मीका उपभोग नहीं कर सकता हुँ इस लिए मुझे उचित है कि इस श्रेणिक राजाको कीसी तरह बन्धनमे डाल दूँ और स्वय राजा बनकर राज्यलक्ष्मीका उपभोग करूँ। ऐसा विचार कर राजाका छिद्र देखने लगे । श्रेणिक राजाका कोइ छिद्र, दूषण और मर्म हाथ नहीं आनेपर एक समय काल आदि दस कुमारोको अपने घरमें बुलाकर सलाह करने लगे-बोले कि हम लोग राजाके कारण ही राज्यश्रीका उपभोग नही कर सकते इस लिए किसी तरह राजाको बन्धनमे डालकर हम लोग राज्य-राष्ट्र, सेना, वाहन, कोश, कोष्ठागार और स्वदेश इनके ग्यारह भाग करके स्वय राज्य-श्रीका उपभोग करे। इस बातको सभी कुमारोंने स्वीकार कर लिया।

કે શ્રેણિક રાજાનું રાજ્ય શાસનરૂપ પ્રતિબંધ હોવાને કારણે સુખ-પૂર્વક રાજ્યલક્ષ્મીનો ઉપભોગ હું કરી શકતો નથી માટે મને ઉચિત છે કે આ શ્રેણિક રાજાને કોઈ પણ રીતે બંધનમાં નાખી દઉં અને હું પોતે રાજા બનીને રાજ્યલક્ષ્મીનો ઉપભોગ કરૂં એમ વિચાર કરી રાજાના છિદ્ર જોવા મંડયો. શ્રેણિક રાજાનું કોઈ છિદ્ર દૂષણ અને મર્મ હાથ ન આવવાથી એક સમય કાલ આદિ દશ કુમારોને પોતાના ઘરમાં બોલાવી સલાહ કરવા લાગ્યો કહ્યું કે-આપણે રાજાના કારણેજ રાજ્યશ્રીનો ઉપભોગ કરી શકતા નથી આથી કોઈ પણ રીતે રાજાને બંધનમાં નાખી આપણે રાજ્ય, રાષ્ટ્ર, સેના, વાહન, ખજાનો, કોઠાર તથા દેશ એના અગીયાર ભાગ કરીને આપણે પોતેજ રાજ્યશ્રીનો ઉપભોગ કરીએ આ વાતનો બધા કુમારોએ સ્વીકાર કરી લીધો.

बहुपडिपुन्नाणं मम अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव अगपडिचारियाओ निरवसेसं भाणियव्व जाव जाहे वि य णं तुम वेयणाए अभिभूए महया जाव तुसिणीए संचिट्ठसि, एव खलु तव पुत्ता ! सेणिए राया अच्चतनेहाणुरागरत्ते ।

तएणं से कूणिए राया चेल्लणाए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चेल्लणं देविं एव वयासी--दुट्ठु णं अम्मो ! मए कय, सेणिय राय पियं देवय गुरुजणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं निलयवघणं करतेणं, त गच्छामि ण सेणियस्स रन्नो सयमेव नियलाणि छिंदामि त्तिकट्टु परसुहत्थगए जेणेव चारगसाला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

तएणं सेणिए राया कूणिय कुमार परसुहत्थगयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता एव वयासी–एसणं कूणिए कुमारे अपत्थियपत्थिए जाव सिरिहिरिपरिवज्जिए परसुहत्थगए इह हव्वमागच्छइ । त न नज्जइ णं ममं केणइ कुमारेणं मारिस्सइ त्तिकट्टु भीए जाव सजायभए तालपुडग विस आसगंसि पक्खिवइ ।

तएण से सेणिए राया तालपुडगविसे आसगंसि पक्खित्ते समाणे मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि निप्पाणे निच्चिट्ठे जीवविप्पजढे ओइन्ने । तएणं से कूणिए कुमारे जेणेव चारगसाला तेणेव उवागए, सेणिय राय निप्पाणं निच्चिट्ठ जीवविप्पजढं ओइन्न पासइ, पासित्ता, महया पिइसोएणं अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलंसि सव्वंगेहिं सनिवडिए ।

तएणं से कूणिए कुमारे मुहुत्ततरेण आसत्थे समाणे रोयमाणे, कंदमाणे, सोयमाणे, विलवमाणे, एवं वयासी–अहो

चेल्लना देवीम् अपहतमनःसङ्कल्पा यावत् ध्यायन्तीम्=आर्तध्यान कुर्वन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा चेल्लनायाः देव्याः पादग्रहणं करोति=चरणौ वन्दते, कृत्वा=चरणवन्दन विधाय-चेल्लना देवीमेवमवादीत्—हे अम्ब ! किं खलु=किमर्थं तव न तुष्टिः= न सन्तोषः वा=अथवा नोत्सव =न चित्तोल्लासः, वा न हर्षः=न प्रमोदः, नानन्दः=न सुखम्, यदह खलु स्वयमेव महता राज्याभिषेकेण विशालराज्य-श्रिय कुर्वन्=पालयन् विहरामि=विचरामि ॥ ३८ ॥

मूलम्—तएणं सा चेल्लणा देवी कूणियं रायं एव वयासी—कहण्ण पुत्ता ! मम तुट्ठी वा उस्सए वा हरिसे वा आणंदे वा भविस्सइ ? ज णं तुम सेणियं राय पिय देवय गुरुजणग अच्चतनेहाणुरागरत्त नियलबधणं करित्ता अप्पाण महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावेसि ।

तएण से कूणिए राया चेल्लणं देवि एव वयासी—घाएउकामेण अम्मो ! मम सेणिए राया, एव मारेउ, बधिउ, निच्छुभिउकामए णं अम्मो ! मम सेणिय राया, तं कहण्ण अम्मो मम सेणिए राया अच्चतनेहाणुरागरत्ते ? ।

तएण सा चेल्लणा देवी कूणिय कुमार एव वयासी—एव खलु पुत्ता ! तुमसि मम गब्भे आभूए समाणे तिण्ह मासाण

उन्होने अपनी माताको दीन हीन अवस्थामें आर्तध्यान करती हुई देखा । वह आर्तध्यान करती हुई चेल्लना देवीको चरणवन्दन करके बोले—हे जननि ! मै अपने तेज-प्रतापसे महाराज्याभिषेकके साथ इस विशाल राज्यश्रीका उपभोग करता हूँ तो क्या इसे देखकर तुम्हे सन्तोष नही हो रहा है, तुम्हारे चित्तमें न उल्लास है, न प्रमोद है और न सुख ही, इसका क्या कारण है ? ॥ ३८ ॥

ઉત્સુકતાની સાથે જલદી-જલદી આવ્યો અને તેણે પોતાની માતાને દીન હીન અવસ્થામા આર્તધ્યાન કરતી જોઈ તે આર્તધ્યાન કરતી ચેલ્લના દેવીના ચરણ વદન કરીને બોલ્યો હે જનની ! હુ પોતાના તેજ પ્રતાપથી મહારાજ્યાભિષેકપૂર્વક આ વિશાલ રાજ્યશ્રીનો ઉપયોગ કરી રહ્યો છુ, તો શુ આ જોઈને તને સતોષ થતો નથી ? તારા મનમા નથી ઉલ્લાસ, નથી પ્રમોદ કે નથી સુખ. આનુ શુ કારણ છે ? (૩૮)

बहुपडिपुन्नाणं मम अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए-धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव अगपडिचारियाओ निरवसेसं भाणियव्व जाव जाहे वि य णं तुम वेयणाए अभिभूए महया जाव तुसिणीए संचिट्ठसि, एव खलु तव पुत्ता ! सेणिए राया अच्चतनेहाणुरागरत्ते ।

तएणं से कूणिए राया चेल्लणाए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चेल्लणं देविं एव वयासी-दुट्ठु णं अम्मो ! मए कय, सेणिय राय पियं देवय गुरुजणगं अच्चंतनेहाणु-रागरत्तं निलयवधणं करतेणं, त गच्छामि णं सेणियस्स रन्नो सयमेव नियलाणि छिंदामि त्तिकट्टु परसुहत्थगए जेणेव चार-गसाला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

तएणं सेणिए राया कूणिय कुमार परसुहत्थगयं एज्ज-माणं पासइ, पासित्ता एव वयासी-एसणं कूणिए कुमारे अप-त्थियपत्थिए जाव सिरिहिरिपरिवज्जिए परसुहत्थगए इह हव्व-मागच्छइ । त न नज्जइ णं मम केणइ कुमारेण मारिस्सइ त्तिकट्टु भीए जाव सजायभए तालपुडग विस आसगंसि पक्खिवइ ।

तएण से सेणिए राया तालपुडगविसे आसगंसि पक्खित्ते समाणे मुहुत्ततरेणं परिणममाणंसि निप्पाणे निच्चिट्ठे जीववि-प्पजढे ओइन्ने। तएण से कूणिए कुमारे जेणेव चारगसाला तेणेव उवागय, सेणिय राय निप्पाणं निच्चिट्ठ जीवविप्पजढ ओइन्न पासइ, पासित्ता, महया पिइसोएण अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि सव्वगेहिं संनिवडिए ।

तएणं से कूणिए कुमारे मुहुत्ततरेण आसत्थे समाणे रोयमाणे, कंदमाणे, सोयमाणे, विलवमाणे, एवं वयासी-अहो

णं मए अधन्नेणं अपुन्नेणं अकयपुन्नेणं दुट्ठु कय सेणियं राय पियं देवयं अच्चंतनेहाणुरागरत्त नियलबंधणं करंतेणं, मम मूलागं चेव ण सेणिए राया कालगए-त्तिकट्टु ईसर-तलवर जाव सधिवाल-सद्धिं सपरिवुडे रोयमाणे२ इड्ढि सक्कारसमुदएणं सेणियस्स रन्नो नीहरणं करेइ, करित्ता बहूइं लोइयाइ मय-किच्चाइ करेइ। तएणं से कूणिए कुमारे एएणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेण अभिभूइ समाणे अन्नया कयाइ अंतेउरपरिढालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए रायगिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवा-गच्छइ। तत्थवि णं विउलभोगसमिइसमन्नागए कालेणं अप्प-सोए जाए यावि होत्था।

तए णं से सेणिए राया अन्नया कयाइ कालादीए दस-कुमारे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, रज्जं च जाव जणवयं च एक्कारस-भाए विरिंचइ, विरिंचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥ ३९ ॥

छाया-तत खलु सा चेल्लना देवी कूणिक राजानमेवमवादीत्-कथ खलु पुत्र ! मम तुष्टिर्वा उत्सवो वा हर्षो वा आनन्दो वा भविष्यति यत्खलु त्व श्रेणिक राजान प्रिय दैवत गुरुजनकमत्यन्तस्नेहानुरागरक्त निगडबन्धन कृत्वा आत्मान महता२ राज्याभिषेकेण अभिषेचयसि।

'तएण सा' इत्यादि—

कूणिकके ऐसे वचन सुनकर रानी चेल्लनाने राजा कूणिकको इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया-हे पुत्र! तुम्हारे इस राज्याभिषेकसे मुझे सन्तोष अथवा चित्तमें उल्लास प्रमोद एव सुख किस प्रकार

'तएण सा' ઇત્યાદિ

કૂણિકના એવા વચન સાંભળીને રાણી ચેલ્લનાએ રાજા કૂણિકને આવી રીતે કહેવું શરૂ કર્યું -હે પુત્ર! તા। આ રાજ્યાભિષેકથી મને સતોષ અથવા મનમા ઉલ્લાસ, પ્રમોદ એટલે સુખ કેવી રીતે-થાય? કેમકે તુ, અત્યત સ્નેહ તથા અનુરાગયુક્ત, દેવ

ततः खलु स कूणिको राजा चेल्लना देवीमेवमवादीत्–घातयितुकामः खलु अम्ब ! मम श्रेणिको राजा, एव मारयितु, बन्धयितु, निःक्षोभयितुकामः खलु अम्ब ! मम श्रेणिको राजा, तत्कथं खलु अम्ब ! मम श्रेणिको राजाऽत्यन्तस्नेहानुरागरक्तः ? ।

तत खलु सा चेल्लना देवी कूणिक कुमारमेवमवादीत्–एव खलु पुत्र ! त्वयि मम गर्भे आभूते सति त्रिषु मासेषु बहुमतिपूर्णेषु ममायमेतद्रूपो दोहदः प्रादुर्भूतः–धन्याः खलु ता अम्बाः यावत् अङ्गप्रतिचारिकाः, निरवशेषं

हो ? जब कि तुम अत्यन्त स्नेह और अनुरागसे युक्त, देव गुरुजन सदृश अपने पिता, प्रिय राजा श्रेणिकको बन्धनमें डालकर विशाल राज्य सुखका उपभाग करते हो ।

यह सुनकर राजा कूणिकने चेल्लना देवीसे इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया–हे माता ! यह राजा श्रेणिक जो मेरी घात चाहनेवाला है एव मेरा मरण और बन्धन चाहनेवाला है तथा मेरे मनको दु ख देनेवाला है वह मुझपर अत्यन्त स्नेह और अनुरागसे अनुरक्त कैसे हो सकता है ?

कूणिकके इस प्रकार कहनेपर चेल्लना देवीने उससे कहा–हे पुत्र ! सुन–जब तू मेरे गर्भमें आया उसके तीन महीने पूर्ण होते मुझे इस प्रकारका दोहद (दोहला) उत्पन्न हुआ कि–

वे माताएँ धन्य हैं जो अपने पतिके उदरवलिमासको तल–भूनकर मदिराके साथ खाती हुई यावत् अपने दोहद (दोहला)को

અને ગુરૂજન સમાન પોતાના પ્રિય રાજા શ્રેણિકને બધનમા નાખી આ વિશાલ રાજ્ય સુખનો ઉપભોગ કરે છે

આ સાભળી રાજા કૂણિકે ચેલ્લના દેવીને આ પ્રમાણે કહેવા માડયુ–હે માતા ! આ રાજા શ્રેણિક જ મારો ઘાત ચાહે છે અને મારૂ મરણ તથા બધન ચાહવાવાળો છે તથા મારા મનને દુ ખ દેનારો છે તે મારા ઉપર અત્યત સ્નેહ તથા અનુરાગથી અનુરકત કેમ હોઈ શકે ?

કૂણિકના આ પ્રકારે કહેવાથી ચેલ્લના દેવીએ તેને કહ્યુ —

હે પુત્ર ! સાભળ–જ્યારે તુ મારા ગર્ભમા આવ્યો ત્યારથી ત્રણ મહિના પૂરા થતા મને એવી જાતનો દોહદ (તીવ્ર ઇચ્છા) ઉત્પન્ન થયો કે —

“ તે માતાને ધન્ય છે કે જે પોતાના પતિના ઉદરવલિ માસને તળી ભૂજીને મદિરાની સાથે ખાતા પોતાનો દોહદ સપૂર્ણ રીતે પૂરો કરે છે હુ પણ જો રાજા

भणितव्य यावत् यदापि च खलु त्वं वेदनयाऽभिभूतो महता यावत् तूष्णीकः संतिष्ठसे, एवं खलु तव पुत्र ! श्रेणिको राजाऽत्यन्तस्नेहानुरागरक्तः ।

पूर्ण करती हैं । मैं भी यदि राजा श्रेणिकके उदरवलिका मांस खाऊँ तो बडा अच्छा हो ।" इस प्रकार दोहद होनेपर मैं दिन-रात आर्त ध्यान करने लगी और दोहदके पूरे न होनेके कारण सूखकर पीली पड गई । जब तुम्हारे पिताको यह खबर दासियों द्वारा ज्ञात हुई तो उन्होंने मुझसे मेरे दोहदका वृत्तान्त सुनकर अभयकुमार द्वारा उसकी पूर्ति की । दोहद (दोहला) पूर्ण होनेके बाद मैने विचार किया कि इस बालकने गर्भमे आते ही अपने पिताका मास खाया तो जन्म लेकर न जाने क्या करेगा? इस लिए इस गर्भको किसी भी उपायसे नष्ट कर डालू, परन्तु वह गर्भ नष्ट न हो सका और तू पैदा हुआ, तेरा जन्म होनेपर मैंने तुझे दासीके द्वारा एकान्त स्थान उकरडीपर फिकवा दिया । पश्चात् यह वृत्तान्त तेरे पिता राजा श्रेणिकको मालूम हुआ, उन्होंने तेरी खोज की और खोजकर तुझे मेरे पास ले आये । उन्होंने तेरा परित्याग करनेके कारण मेरी कडी भर्त्सना की और मुझे शपथ देकर कहा कि-तुम इस बच्चेका अच्छी तरह पालन पोषण करो । उकरडीपर पडे हुए तेरी अगुलीके अग्र भागको मुर्गेने काट लिया जिससे तुझे बडी वेदना होती थी, तू

શ્રેણિકનુ ઉદરવલિનુ માસ ખાઉ તો બહુ સારૂ થાય " આ પ્રકારનો દોહર થવાથી હુ દિન-રાત આર્તધ્યાન કરવા લાગી અને દોહદ પૂરો ન થવાથી સુકાઇને પીળી પડી ગઇ જ્યારે તારા પિતાને આ ખબર દાસીઓ દ્વારા જાણવામા આવી ત્યારે તેમણે મારા મોઢેથી મારા દોહદનુ વૃત્તાત સાભળીને તે અભયકુમાર દ્વારા પરિપૂર્ણ કર્યા દોહદ પૂરો થયા પછી મે વિચાર કર્યો કે આ બાળકે ગર્ભમા આવતા જ પોતાના પિતાનુ માસ ખાધુ તો જન્મ લઇને તો ખબર નહિ કે તે શુ કરશે? માટે આ ગર્ભને કોઇ પણ ઉપાયથી નાશ કરી નાખુ પણ તે ગર્ભનો નાશ ન થઇ શકયો અને તુ પેદા થયો તારો જન્મ થયા પછી મે તને દાસી મારફત એકાત-સ્થાન ઉકરડે ફેકાવી દીધો. પછી આ હકીકતની તારા પિતા રાજા શ્રેણિકને ખબર પડી તેમણે તારી તપાસ કરી અને તને શાધીને રાજા મારી પાસે લાવ્યા તેમણે મારો પરિત્યાગ કરવા માટે મને બહુ ઠપકો આપ્યો અને મને સોગદ આપીને કહ્યુ કે-'આ બાળકનુ સારી રીતે પાલન પોષણ કરો ' તુ ઉકરડે પડયો હતો ત્યારે તારી આગળીના આગલા ભાગને કુકડો કરડયો

ततः खलु स कूणिको राजा चेल्लनाया देव्या अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य चेल्लना देवीमेवमवादीत्-दुष्ठु खलु अम्ब ! मया कृत श्रेणिकं राजान प्रिय दैवत गुरुजनकमत्यन्तस्नेहानुरागरक्त निगडबन्धन कुर्वता, तद् गच्छामि खलु श्रेणिकस्य राज्ञः स्वयमेव निगडानि छिनद्मि, इति, कृत्वा परशुहस्तगतो यत्रैव चारकशाला तत्रैव प्रधारयति गमनाय ।

दिन-रात कष्टसे चिल्लाता रहता था, उस समय तेरे पिता तेरी कटी हुई अगुलीको अपने मुहमें लेकर पीप और शोणितको चूसकर थूक देते थे, तब तुझे शांति होती थी और तू चूप होजाता था। जब कभी भी तुझे पीडा होती थी तब तेरे पिता इसी तरह किया करते थे, और तू शाति पानेके कारण चुप होजाता था। हे पुत्र ! इस कारण मैं कहती हूँ कि तेरे पिता राजा श्रेणिक तुझपर अत्यन्त स्नेह और अनुरागसे युक्त है ।

वह कूणिक राजा चेल्लना रानीके मुँहसे इस प्रकार वृत्तान्त सुनकर कहने लगे-हे माता ! मैंने सभी प्रकारके हित करनेवाले इष्ट-देवता स्वरूप परमोपकारक अत्यन्त स्नेह-अनुरागसे युक्त अपने पिता राजा श्रेणिकको बन्धनमें डाला यह उचित नहीं किया सो मैं स्वय जाकर उनके बन्धनको काटता हू, ऐसा कहकर कुठार हाथमें लेकर जहाँ कारागार था वहा जानेके लिए चला ।

હતો જેથી તને બહુ વેદના થતી હતી અને તુ તે કષ્ટથી દિવસ રાત બહુ રડયાજ કરતો હતો તે સમયે તારા પિતા તારી કપાયેલી આગળીને પોતાના મોમા લઇ પરૂ અને લોહી જે નીકળતુ હતુ તે ચૂસીને થૂકી દેતા હતા ત્યારે તને શાતિ થતી હતી અને તુ છાનો રહી જાતો હતો જ્યારે વળી પાછી પીડા થતી ત્યારે તારા પિતા એવીજ રીતે કરતા હતા અને તુ શાંત મળવાથી છાનો રહી જાતો હતો હે પુત્ર ! આ કારણથી હુ કહુ છુ કે તારા પિતા રાજા શ્રેણિક તારા પર બહુ સ્નેહ અને અનુરાગ રાખતા હતા

તે કૂણિક રાજા ચેટલના રાણીના મોઢેથી આ પ્રમાણે હકીકત સાભળી કહેવા લાગ્યા-હે માતા ! મે સર્વ પ્રકારે હિત કરવાવાળા, ઇષ્ટદેવ સ્વરૂપ પરમ ઉપકારક, બહુજ સ્નેહભાવ રાખવાવાળા મારા પિતા રાજા શ્રેણિકને બધનમા નાખ્યા તે વાજબી ન કર્યું તેથી હુ પોતે જઇને તેમના બધન કાપી નાખુ છુ એમ કહી કુહાડી હાથમા લઇ જ્યા કેદખાનુ હતુ ત્યા ગયા

भणितव्य यावत् यदापि च खलु त्व वेदनयाऽभिभूतो महता यावत् तूष्णीकः सतिष्ठसे, एव खलु तत्र पुत्र! श्रेणिको राजाऽत्यन्तस्नेहानुरागरक्तः ।

पूर्ण करती हैं । मै भी यदि राजा श्रेणिकके उदरवलिका मांस खाउँ तो बडा अच्छा हो ।" इस प्रकार दोहद होनेपर मैं दिन–रात आर्त ध्यान करने लगी और दोहदके पूरे न होनेके कारण सूखकर पीली पड गई । जब तुम्हारे पिताको यह खबर दासियों द्वारा ज्ञात हुई तो उन्होंने मुझसे मेरे दोहदका वृत्तान्त सुनकर अभयकुमार द्वारा उसकी पूर्ति की । दोहद (दोहला) पूर्ण होनेके बाद मैंने विचार किया कि इस बालकने गर्भमे आते ही अपने पिताका मास खाया तो जन्म लेकर न जाने क्या करेगा? इस लिए इस गर्भको किसी भी उपायसे नष्ट कर डालू, परन्तु वह गर्भ नष्ट न हो सका और तू पैदा हुआ, तेरा जन्म होनेपर मैंने तुझे दासीके द्वारा एकान्त स्थान उकरडीपर फिकवा दिया । पश्चात् यह वृत्तान्त तेरे पिता राजा श्रेणिकको मालूम हुआ, उन्होंने तेरी खोज की और खोजकर तुझे मेरे पास ले आये । उन्होंने तेरा परित्याग करनेके कारण मेरी कडी भर्त्सना की और मुझे शपथ देकर कहा कि–तुम इस बच्चेका अच्छी तरह पालन पोषण करो । उकरडीपर पडे हुए तेरी अगुलीके अग्र भागको मुर्गेने काट लिया जिससे तुझे बडी वेदना होती थी, तू

શ્રેણિકનુ ઉદરવલિનુ માસ ખાઉ તો બહુ સારૂ થાય " આ પ્રકારનો દોહદ થવાથી હું દિન–રાત આર્તધ્યાન કરવા લાગી અને દોહદ પૂરો ન થવાથી સુકાઈને પીળી પડી ગઈ જ્યારે તારા પિતાને આ ખબર દાસીઓ દ્વારા જાણવામા આવી ત્યારે તેમણે મારા મોઢેથી મારા દોહદનુ વૃત્તાત સાભળીને તે અભયકુમાર દ્વારા પરિપૂર્ણ કર્યા દોહદ પૂરો થયા પછી મે વિચાર કર્યો કે આ બાળકે ગર્ભમા આવતા જ પોતાના પિતાનુ માસ ખાધુ તો જન્મ લઇને તો ખબર નહિ કે તે શુ કરશે? માટે આ ગર્ભને કોઇ પણ ઉપાયથી નાશ કરી નાખુ પણ ત ગર્ભનો નાશ ન થઇ શકયો અને તુ પેદા થયો તારો જન્મ થયા પછી મે તને દાસી મારફત એકાત–સ્થાન ઉકરડે ફેકાવી દીધો પછી આ હકીકતની તારા પિતા રાજા શ્રેણિકને ખબર પડી તેમણે તારી તપાસ કરી અને તને શોધીને રાજા મારી પાસે લાવ્યા તેમણે મારો પરિત્યાગ કરવા માટે મને બહુ ઠપકો આપ્યો અને મને સોગદ આપીને કહ્યુ કે–'આ બાળકનુ સારી રીતે પાલન પોષણ કરો ' તુ ઉકરડે પડયો હતો ત્યારે તારા આગળીના આગલા ભાગને કુકડા કરડયો

ततः खलु स कूणिकः कुमारो मुहूर्तान्तरेण आस्वस्थः सन् रुदन् क्रन्दन् शोचन् विलपन् एवमवादीत्–अहो ! खलु मया अधन्येन अपुण्येन अकृतपुण्येन दुष्ठु कृत श्रेणिक राजान प्रिय दैवतमत्यन्तस्नेहानुरागरक्त निगड-बन्धन कुर्वता, मम मूलक चैव खलु श्रेणिको राजा कालगतः, इति कृत्वा ईश्वर-तलवर-यावत्-सन्धिपालैः सार्द्ध सपरिवृतो रुदन् ४ (क्रन्दन् शोचन् विलपन्) महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन श्रेणिकस्य राज्ञो नीहरण करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमार एतेन महता मनोमानसिकेन दुःखेनाभिभूत' सन् अन्यदा कदाचित् अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः समाण्डामत्रोप-

---

मरणजन्य असहनीय कष्टसे आक्रान्त हो तीक्ष्ण कुठारसे कटे हुए कोमल चम्पक वृक्षकी तरह भूमिपर धडामसे गिर पडा ।

इसके अनन्तर वह कूणिककुमार कुछ समय बाद मूर्छारहित हुआ, मूर्छाके हट जानेपर वह रोता हुआ करुण शब्दसे आर्तनाद और विलाप करता हुआ इस प्रकार बोला–मैं अभागा हूँ, पापी हूँ, पुण्यहीन हूँ, जो कि मैंने बुरा कार्य किया, देवगुरुजनके समान परम उपकारी और स्नेह-ममतासे अनुरक्त अपने पिता श्रेणिक राजाको बन्धनमें डाला और मेरे ही कारण इनकी मृत्यु हुई । ऐसा कहकर अपने कुटुम्बके साथ रुदन करता हुआ बडे समारोहके साथ राजाकी अन्तिम लौकिक क्रिया की । उसके बाद वह कूणिक राजगृहमें अपने पिताकी उपभोग सामग्रियोंको देख-देखकर अत्यन्त दुःखी

न थाय એવા દુ ખથી રૂદન કરતા થકા તીક્ષ્ણધાર વાળી કુહાડીથી કાપેલા કોમળ ચ પક વૃક્ષની પેઠે જમીન ઉપર ધડાગ પડી પડ્યા

ત્યાર પછી તે કૂણિક કુમાર થોડા સમય પછી મૂર્છારહિત થયા મૂર્છા હટી ગયા પછી તે રૂદન કરતા કરૂણ શબ્દથી આર્તનાદ કરતા શાક અને વિલાપ કરતા કરતા આ પ્રમાણે બોલ્યા–હુ અભાગી છુ પાપી છુ, પુણ્યહીન છુ, જેથી મે ખરાબ કાર્ય કર્યુ દેવ ગુરૂજન સમાન પરમ ઉપકારી અને સ્નેહ મમતાથી લાગણી રાખનાર પોતાના પિતા શ્રેણિક રાજાને બ ધનમા (કેદખાનામા) નાખ્યા અને મારાજ કારણથી એનુ મૃત્યુ થયુ એમ કહીને પોતાના કુટુ બીઓની સાથે રૂદન કરતા થકા બહુ સમારોહપૂર્વક રાજા શ્રેણિકની અ તિમ લૌકિક ક્રિયા કરી

ત્યાર પછી ત કૂણિક રાજગૃહમા પોતાના પિતાની ઉપભોગ સામગ્રીઓ ને

ततः खलु श्रेणिको राजा कूणिकं कुमारं परशुहस्तगतमेजमानं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-एष खलु कूणिकः कुमारः अप्रार्थितप्रार्थितो यावत्, श्रीही-परिवर्जितः परशुहस्तगत इह हव्यमागच्छति, तन्न ज्ञायते खलु मा केनापि कुमारेण (कुत्सितमारेण) मारयिष्यतीति, कृत्वा भीतो यावत् सजातभयस्तालपुटकं विषमास्ये प्रक्षिपति ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा तालपुटकविषे आस्ये प्रक्षिप्ते सति मुहूर्त्तान्तरेण परिणम्यमाने निष्प्राणो निश्चेष्टो जीवविप्रत्यक्तोऽवतीर्णः ।

ततः खलु स कूणिकः कुमारो यत्रैव चारकशाला तत्रैवोपागतः, उपागत्य श्रेणिकं राजानं निष्प्राणं निश्चेष्टं जीवविप्रत्यक्तमवतीर्णं पश्यति दृष्ट्वा महता पितृशोकेन आक्रान्तः सन् परशुनिकृत्त इव चम्पकवरपादपः 'धस' इति धरणी-तले सर्वाङ्गं संनिपतितः ।

उसके बाद राजा श्रेणिकने, हाथमें कुठार लिए हुए कूणिक कुमारको आते हुए देखकर उनके मुँहसे सहसा ये शब्द निकल पडे कि-यह कूणिककुमार अनुचितको चाहनेवाला कर्तव्यहीन यावत् लज्जावर्जित हाथमे कुठार लिए हुए जल्दीसे आ रहा है, न जाने किस प्रकार यह मुझे बुरी तरह मारेगा, इस बातसे डरकर राजा श्रेणिकने अपनी अगूठीमे रहे हुए तालपुट विषको अपने मुखमें रख लिया । मुँहमे रखनेके बाद वह विष क्षणमात्रमें सारे शरीरमे फैल गया और राजा प्राण एव चेष्टासे रहित हो मृत्युको प्राप्त हो गया।

इसके बाद कूणिककुमार कारागारमे आया और आकर प्राण एव चेष्टासे रहित-मरेहुए-राजा श्रेणिकको देखा । देखकर पिताके

ત્યાર પછી રાજા શ્રેણિકે હાથમા કુહાડી લઇને કૂણિક કુમારને આવતો જોયો જોઇને તેના મોઢેથી તુરત આવા શબ્દો નીકળી પડયા કે-'આ કૂણિક કુમાર અનુ-ચિત ચાહવાવાળો કર્તવ્યહીન નિર્લજ્જ થઇને કુહાડી લઇ જલ્દી અહીં આવે છે. ખબર નથી પડતી કે તે મને કેવી રીતે ખરાબ રીતે મારી નાખશે આ વાતથી ડરી જઇને રાજા શ્રેણિકે પોતાની અગુઠીમા રહેલ તાલપુટ ઝેર પોતાના મોઢામા મૂકયુ મોઢામા મૂકયા પછી તે ઝેર એક પળ માત્રમા આખા શરીરમા ફેલાઇ ગયુ અને રાજા પ્રાણથી અને હલન-ચલનથી રહિત થઇ મૃત્યુ પામ્યા

ત્યાર પછી કૂણિક કુમાર કેદખાનામા આવ્યા અને આવીને રાજા શ્રેણિકને પ્રાણ અને હલન-ચલનથી રહિત-મરેલા જોયા, જોઇને પિતાના મરણજન્ય સહન

ततः खलु स कूणिकः कुमारो मुहूर्तान्तरेण आस्वस्थः सन् रुदन् क्रन्दन् शोचन् विलपन् एवमवादीत्–अहो! खलु मया अधन्येन अपुण्येन अकृतपुण्येन दुष्ठु कृत श्रेणिक राजान प्रिय दैवतमत्यन्तस्नेहानुरागरक्त निगड-बन्धन कुर्वता, मम मूलक चैव खलु श्रेणिको राजा कालगतः, इति कृत्वा ईश्वर–तलवर–यावत्–सन्धिपालैः सार्द्ध सपरिवृतो रुदन् ४ (क्रन्दन् शोचन् विलपन) महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन श्रेणिकस्य राज्ञो नीहरण करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमार एतेन महता मनोमानसिकेन दु'खे-नाभिभूत' सन् अन्यदा कदाचित अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः सभाण्डामत्रोप-

---

मरणजन्य असहनीय कष्टसे आक्रान्त हो तीक्ष्ण कुठारसे कटे हुए कोमल चम्पक वृक्षकी तरह भूमिपर धडामसे गिर पडा ।

इसके अनन्तर वह कूणिककुमार कुछ समय बाद मूर्छारहित हुआ, मूर्छाके हट जानेपर वह रोता हुआ करुण शब्दसे आर्तनाद ओर विलाप करता हुआ इस प्रकार बोला–मै अभागा हूँ, पापी हूँ, पुण्यहीन हूँ, जो कि मैंने बुरा कार्य किया, देवगुरुजनके समान परम उपकारी और स्नेह–ममतासे अनुरक्त अपने पिता श्रेणिक राजाको बन्धनमें डाला और मेरे ही कारण इनकी मृत्यु हुई । ऐसा कहकर अपने कुटुम्बके साथ रुदन करता हुआ बडे समारोहके साथ राजा-की अन्तिम लौकिक क्रिया की । उसके बाद वह कूणिक राजगृहमें अपने पिताकी उपभोग सामग्रियोंको देख–देखकर अत्यन्त दुःखी

न थाय એવા દુ ખથી રૂદન કરતા થકા તીક્ષ્ણધાર વાળા કુહાડીથી કાપેલા કોમળ ચ પક વૃક્ષની પેઠે જમીન ઉપર ધડાગ પડી પડયા

ત્યાર પછી તે કૂણિક કુમાર થોડા સમય પછી મૂર્છારહિત થયા મૂર્છા હટી ગયા પછી તે રૂદન કરતા કરૂણ શબ્દથી આર્તનાદ કરતા શાક અને વિલાપ કરતા કરતા આ પ્રમાણે બોલ્યા–હુ અભાગી છુ પાપી છુ, પુણ્યહીન છુ, જેથી મે ખરાબ કાર્ય કર્યું દેવ ગુરૂજન સમાન પરમ ઉપકારી અને સ્નેહ મમતાથી લાગણી રાખનાર પોતાના પિતા શ્રેણિક રાજાને બધનમા (કેદખાનામા) નાખ્યા અને મારાજ કારણથી એનુ મૃત્યુ થયુ એમ કહીને પોતાના કુટુ બીઓની સાથે રૂદન કરતા થકા બહુ સમારોહપૂર્વક રાજા શ્રેણિકની અ તિમ લૌકિક ક્રિયા કરી

ત્યાર પછી ત કૂણિક રાજગૃહમા પોતાના પિતાની ઉપભોગ સામગ્રીઓ ને

ततः खलु श्रेणिको राजा कूणिकं कुमार परशुहस्तगतमेजमान पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्–एष खलु कूणिकः कुमार· अप्रार्थितप्रार्थितो यावत् श्रीह्री-परिवर्जितः परशुहस्तगत इह हव्यमागच्छति, तन्न ज्ञायते खलु मा केनापि कुमारेण (कुत्सितमारेण) मारयिष्यतीति, कृत्वा भीतो यावत् सजातभयस्ताल-पुटक विषमास्ये प्रक्षिपति ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा तालपुटकविषे आस्ये प्रक्षिप्ते सति मुहूर्त्तान्तरेण परिणम्यमाने निष्प्राणो निश्चेष्टो जीवविप्रत्यक्तोऽवतीर्णः ।

ततः खलु स कूणिकः कुमारो यत्रैव चारकशाला तत्रैवोपागतः, उपा-गत्य श्रेणिक राजान निष्प्राण निश्चेष्ट जीवविप्रत्यक्तमवतीर्णं पश्यति दृष्ट्वा महता पितृशोकेन आक्रान्तः सन् परशुनिकृत्त इव चम्पकवरपादपः 'धस' इति धरणी-तले सर्वाङ्गः सनिपतितः ।

उसके बाद राजा श्रेणिकने, हाथमें कुठार लिए हुए कूणिक कुमारको आते हुए देखकर उनके मुँहसे सहसा ये शब्द निकल पडे कि–यह कूणिककुमार अनुचितको चाहनेवाला कर्तव्यहीन यावत् लज्जावर्जित हाथमे कुठार लिए हुए जल्दीसे आ रहा है, न जाने किस प्रकार यह मुझे बुरी तरह मारेगा, इस बातसे डरकर राजा श्रेणिकने अपनी अगूठीमे रहे हुए तालपुट विषको अपने मुखमें रख लिया । मुँहमें रखनेके बाद वह विष क्षणमात्रमें सारे शरीरमें फैल गया और राजा प्राण एव चेष्टासे रहित हो मृत्युको प्राप्त हो गया ।

इसके बाद कूणिककुमार कारागारमे आया और आकर प्राण एव चेष्टासे रहित–मरेहुए–राजा श्रेणिकको देखा । देखकर पिताके

ત્યાર પછી રાજા શ્રેણિકે હાથમા કુહાડી લઈને કૂણિક કુમારને આવતો જોયો જોઇને તેના મોઢેથી તુરત આવા શબ્દો નીકળી પડયા કે–'આ કૂણિક કુમાર અનુચિત ચાહવાવાળો કર્તવ્યહીન નિર્લજ્જ થઈને કુહાડી લઈ જલ્દી અહીં આવે છે. ખબર નથી પડતી કે તે મને કેવી રીતે ખરાબ રીતે મારી નાખશે આ વાતથી ડરી જઇને રાજા શ્રેણિકે પોતાની અગુઠીમા રહેલ તાલપુટ ઝેર પોતાના મોઢા મૂકયુ મોઢા મૂકયા પછી તે ઝેર એક પળ માત્રમા આખા શરીરમા ફેલાઇ ગયુ અને રાજા પ્રાણથી અને હલન–ચલનથી રહિત થઇ મૃત્યુ પામ્યા

ત્યાર પછી કૂણિક કુમાર કેદખાનામા આવ્યા અને આવીને રાજા શ્રેણિકને પ્રાણ અને હલન–ચલનથી રહિત–મરેલા જોયા, જોઇને પિતાના મરણજન્ય સહન

ततः खलु स कूणिकः कुमारो मुहूर्तान्तरेण आस्वस्थः सन् रुदन् क्रन्दन् शोचन् विलपन् एवमवादीत्–अहो ! खलु मया अधन्येन अपुण्येन अकृतपुण्येन दुष्ठु कृत श्रेणिक राजान प्रिय दैवतमत्यन्तस्नेहानुरागरक्त निगड-बन्धन कुर्वता, मम मूलक चैव खलु श्रेणिको राजा कालगतः, इति कृत्वा ईश्वर–तलवर–यावत्–सन्धिपालैः सार्द्ध सपरिवृतो रुदन् ४ (क्रन्दन् शोचन् विलपन्) महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन श्रेणिकस्य राज्ञो नीहरण करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमार एतेन महता मनोमानसिकेन दुःखेनाभिभूतः सन् अन्यदा कदाचित् अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः सभाण्डामत्रोप-

मरणजन्य असहनीय कष्टसे आक्रान्त हो तीक्ष्ण कुठारसे कटे हुए कोमल चम्पक वृक्षकी तरह भूमिपर धडामसे गिर पडा ।

इसके अनन्तर वह कूणिककुमार कुछ समय बाद मूर्छारहित हुआ, मूर्छाके हट जानेपर वह रोता हुआ करुण शब्दसे आर्तनाद ओर विलाप करता हुआ इस प्रकार बोला–मैं अभागा हूँ, पापी हूँ, पुण्यहीन हूँ, जो कि मैंने बुरा कार्य किया, देवगुरुजनके समान परम उपकारी और स्नेह–ममतासे अनुरक्त अपने पिता श्रेणिक राजाको बन्धनमें डाला और मेरे ही कारण इनकी मृत्यु हुई । ऐसा कहकर अपने कुटुम्बके साथ रुदन करता हुआ बडे समारोहके साथ राजाकी अन्तिम लौकिक क्रिया की । उसके बाद वह कूणिक राजगृहमें अपने पिताकी उपभोग सामग्रियोंको देख–देखकर अत्यन्त दुःखी

ન થાય એવા દુ ખથી રૂદન કરતા થકા તીક્ષ્ણધાર વાળા કુહાડીથી કાપેલા કોમળ ચ પક વૃક્ષની પેઠે જમીન ઉપર ધડાગ પડી પડયા

ત્યાર પછી તે કૂણિક કુમાર થોડા સમય પછી મૂર્છારહિત થયા મૂર્છા હટી ગયા પછી તે રૂદન કરતા કરૂણ શબ્દથી આર્તનાદ કરતા શોક અને વિલાપ કરતા કરતા આ પ્રમાણે બોલ્યા–હુ અભાગી છુ પાપી છુ, પુણ્યહીન છુ, જેથી મે ખરાબ કાર્ય કર્યું દેવ ગુરૂજન સમાન પરમ ઉપકારી અને સ્નેહ મમતાથી લાગણી રાખનાર પોતાના પિતા શ્રેણિક રાજાને બ ધનમા (કેદખાનામા) નાખ્યા અને મારાજ કારણથી એનુ મૃત્યુ થયુ એમ કહીને પોતાના કુટુ બીઓની સાથે રૂદન કરતા થકા બહુ સમારોહપૂર્વક રાજા શ્રેણિકની અ તિમ લૌકિક ક્રિયા કરી

ત્યાર પછી ત કૂણિક રાજગૃહમા પોતાના પિતાની ઉપભોગ સામગ્રીઓ ને

तस्मिन्नाश्रमे कश्चित्तापसो मास मास तपसा क्षपयन् पारणा कुर्वाण आसीत्। राजा त तपस्विन विलोक्य समतुष्यत्, तापस च स्वभवने पारणा कर्तुं प्रार्थयत्। तापसेनोक्तम्-पारणाया पञ्च दिनानि साम्प्रतमवशिष्यन्ते पञ्चदिवसानन्तर पारणायै तव राजधानीमागमिष्यामि, हे राजन्! ममाय नियमो यत्-'पारणादिने एकस्मिन्नेव गृहे भिक्षामाचरामि,' यद्येकत्र भैक्ष्य न लभे तदा मास क्षपयामि' इति तापसनियम श्रुत्वा श्रेणिको राजा निजराजधानीमागमत्।

ततः पञ्चसु दिवसेषु व्यतीतेषु पारणाऽहे तापस' श्रेणिकराज-द्वारमागतः। तस्मिन् दिने राज्ञो महत्या शिरोवेदनया राजभवन व्याकुलमासो

तापस मास-मासके उपवाससे पारणा करता था। राजा उस तापसको देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ, और उससे प्रार्थना की-हे महात्मन्! आप मेरे यहाँ पारणा करनेके लिये पधारे। राजाकी ऐसी प्रार्थना सुनकर तापस बोला—

हे राजन्! अभी मेरे पारणेमें पाँच दिन घटते (अवशिष्ट) हैं उनके पूर्ण होजानेपर मै तुम्हारे यहाँ पारणेके लिये आऊँगा परन्तु मेरा एक नियम है उसको ध्यानमें रखना-पारणेके दिन केवल एकही घर भिक्षाके लिए जाता हूँ। यदि वहा भिक्षा नही मिली तो फिर मासक्षपण (खमण) के बाद ही पारणा करता हूँ। राजा उस तापसके इस नियमको सुनकर अपनी राजधानीको लौट गया।

उसके पाच दिन बीत जानेके पश्चात् वह तापस पारणेके दिन, राजा श्रेणिकके द्वारपर आया। उस दिन राजाके सिरमें असह्य वेदना थी जिससे समूचा राजभवन व्याकुल था, इसलिये उस

કરી પારણા કરતા હતા રાજા તે તાપસને જોઇને અત્યત ખુશી થયા અને તેઓને પ્રાથના કરી-હે મહાત્મન્! આપ મારે ત્યા પારણા કરવાને પધરો ' રાજાની એવી પ્રાર્થના સાભળી તાપસ બોલ્યો —

હે રાજન્! હજી મારે પારણા કરવાને પાચ દિવસ અવશિષ્ટ (બાકી) છે તે પૂરા થઇ ગયા પછી હુ તારે ત્યા પારણા માટે આવીશ પરતુ મારો એક નિયમ છે તે ધ્યાનમા રાખજે-હુ પારણાને દિવસ માત્ર એકજ ઘેર ભિક્ષાને માટે જાઉ છુ જો ત્યા ભિક્ષા ન મળે તો વળી પાછો ફરીને માસ ખમણ પછીજ પારણા કરૂ છુ રાજા તે તાપસનો આ નિયમ સાભળીને પોતાની રાજધાનીએ પાછો ગયો

તેને પાચ દિવસ વીતી ગયા પછી તે તાપસ પારણાને દિવસ રાજા શ્રેણિકના દ્વાર આવ્યો. તે દિવસ રાજાના માથામા અસહ્ય વેદના થતી હતી જેથી આખુ રાજભવન-

दिति तापस सत्कर्तुं कोऽपि नाशकत् । तापसस्तादृश राजभवन निरीक्ष्य ततः परावृत्तो द्वितीय मास क्षपयितु प्रारभत । शिरोवेदनाया शान्ताया राजा तापसमुपागच्छत् तापसश्च स्वनियम राजान श्रावितवान् । भूपः पुनः पारणार्थं तापस प्रार्थितवान् । पारणादिने श्रेणिकराजधानीमसौ तापस आगतः । तस्मिन् दिने राजभवन वह्निप्रदीप्तमासीदिति तापसागमन राज्ञा विस्मृतम् अतस्तापसः परावृतत् । ततस्तृतीय मास स क्षपयितु प्रारभत । वह्नौ शान्ते राजा तापस-

तापसका किसीने सत्कार नही किया। तापस इस प्रकार राजमहलको व्याकुल देखकर लौट गया और पुनः एक मासका उपवास करने लगा।

जब राजाने शिरवेदनासे छुटकारा पाया तब वह पुन उसी तापसके पास गया, और उसे पारणेके लिए अपने यहा आनेकी सविनय प्रार्थना की। तापसने राजाकी प्रार्थनाको सुनकर फिर अपने उस नियमको दोहराया और बादमें राजाके यहा पारणाके लिये आना स्वीकार कर लिया। पारणाके दिन वह तापस फिर राजाके यहा आया, परन्तु सयोगसे उस दिन राजभवनमे आग लग गयी, और राजा 'आज तापसका पारणा दिन है' यह भूल गया। तापस राजभवनको आगकी लपटोंसे जलता हुआ देखकर लौट गया और फिर तीसरे महीनेका उपवास करने लगा। आगके शान्त होजानेपर राजाको स्मरण हुआ कि मैने तापसको पारणाके लिये आज बुलाया था परन्तु राजभवनमें आग लग जानेसे मैं उसे भूल गया, बेचारा

વ્યાકુળ હતુ આથી ત તાપસને કોઈએ સ કાર ન કર્યો તાપસ આ પ્રમાણે રાજમહેલને અસ્થિર (વ્યસ્ત) જોઈ પાછા ફર્યો અને ફરી તે એક માસના ઉપવાસ કરવા લાગ્યો

જ્યારે રાજાને માથાનો દુ ખાવો મટી ગયો ત્યારે તે ફરીને તેજ તાપસની પાસે ગયો અને તેને પારણા માટે પોતાને ત્યા આવવાની સવિનય પ્રાર્થના કરી તાપસે રાજાની પ્રાર્થનાને સાભળી ફરીને પોતાનો તે નિયમ બીજી વાર કહ્યો અને પછી રાજાને ત્યા પારણા માટે આવવાનો સ્વીકાર કર્યો

પારણાને દિવસ તે તાપસ પાછો રાજાને ત્યા આવ્યો પરતુ સયોગવશાત્ તે દિવસ રાજભવનમા આગ લાગી ગઈ તથા રાજા 'આજે તાપસનો પારણાનો દિવસ છે' એ ભૂલી ગયો તાપસે રાજભવનને આગની જવાળાઓથી બળતુ જોયુ અને જોઈને પાછો ફરી ગયો અને પાછા ત્રીજા મહિનાના ઉપવાસ કરવા લાગ્યો આગ શાત થઈ ગયા પછી રાજાને યાદ આવ્યુ કે—મે તાપસને પારણા માટે આજે બોલાવ્યા હતા પરતુ રાજભવનમા આગ લાગી જવાથી હુ તે ભૂલી ગયો બિચારા તપસ્વી

तस्मिन्नाश्रमे कश्चित्तापसो मास मास तपसा क्षपयन् पारणा कुर्वाण आसीत् । राजा त तपस्विन विलोक्य समतुष्यत्, तापस च स्वभवने पारणा कर्तु प्रार्थयत् । तापसेनोक्तम्–पारणाया पञ्च दिनानि साम्प्रतमवशिष्यन्ते पञ्चदिवसानन्तर पारणायै तव राजधानीमागमिष्यामि, हे राजन ! ममाय नियमो यत्–'पारणादिने एकस्मिन्नेव गृहे भिक्षामाचरामि, यद्येकत्र भैक्ष्य न लभे तदा मास क्षपयामि' इति तापसनियम श्रुत्वा श्रेणिको राजा निजराजधानीमागमत् ।

ततः पञ्चसु दिवसेषु व्यतीतेषु पारणाऽहे तापसः श्रेणिकराज–द्वार मागतः । तस्मिन् दिने राज्ञो महत्या शिरोवेदनया राजभवन व्याकुलमासी

तापस मास–मासके उपवाससे पारणा करता था । राजा उस तापस-को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ, और उससे प्रार्थना की–हे महात्मन् ! आप मेरे यहाँ पारणा करनेके लिये पधारे । राजाकी ऐसी प्रार्थना सुनकर तापस बोला—

हे राजन् ! अभी मेरे पारणेमें पाँच दिन घटते (अवशिष्ट) हैं उनके पूर्ण होजानेपर मै तुम्हारे यहाँ पारणेके लिये आऊँगा परन्तु मेरा एक नियम है उसको ध्यानमें रखना–पारणेके दिन केवल एकही घर भिक्षाके लिए जाता हूँ । यदि वहा भिक्षा नही मिली तो फिर मासक्षपण (खमण) के बाद ही पारणा करता हूँ । राजा उस तापसके इस नियमको सुनकर अपनी राजधानीको लौट गया ।

उसके पाच दिन बीत जानेके पश्चात् वह तापस पारणेके दिन, राजा श्रेणिकके द्वारपर आया । उस दिन राजाके सिरमें असह्य वेदना थी जिससे समूचा राजभवन व्याकुल था, इसलिये उस

કરી પારણા કરતા હતા રાજા તે તાપસને જોઈને અત્યત ખુશી થયા અને તેઓને પ્રાથના કરી–હે મહાત્મન્ ! આપ મારે ત્યા પારણા કરવાને પધરો ' રાજાની એવી પ્રાર્થના સાભળી તાપસ બોલ્યો —

હે રાજન્ ! હજી મારે પારણા કરવાને પાચ દિવસ અવશિષ્ટ (બાકી) છે તે પૂરા થઇ ગયા પછી હુ તારે ત્યા પારણા માટે આવીશ પરતુ મારો એક નિયમ છે તે ધ્યાનમા રાખજે–હુ પારણાને દિવસ માત્ર એકજ ઘેર ભિક્ષાને માટે જાઉ છુ જો ત્યા ભિક્ષા ન મળે તો વળી પાછો ફરીને માસ ખમણ પછીજ પારણા કરૂ છુ રાજા તે તાપસનો આ નિયમ સાભળીને પોતની રાજધાનીએ પાછો ગયો

તેને પાચ દિવસ વીતી ગયા પછી તે તાપસ પારણાને દિવસ રાજા શ્રેણિકના દ્વારે આવ્યો. તે દિવસ રાજાના માથામા અસહ્ય વેદના થતી હતી જેથી આખુ રાજભવન

इद च कुगुरुसेवाफलम् अत. कुगुरु विहाय सुगुरु. सेवनीयः । कुगुरुसेवनेन न मोक्षमार्गज्ञान न वा भवभ्रमणनिवृत्ति. । कुगुरोः सम्यक् सेवनेऽपि नाऽऽत्मकल्याणम् । उक्तश्च—

नाऽऽम्र सुपिक्तोऽपि ददाति निम्वक',
पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।
दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रिय,
धर्म शिव वा कुगुरुर्न सश्रितः ॥ १ ॥

इति कूणिकस्य श्रेणिकघातकत्वे कारणविवरणम् ॥ सू० ३९ ॥

यह कुगुरुसेवाका फल है, इस लिये कुगुरुका छोडकर सद्गुरुकी सेवा करनी चाहिए। कुगुरुकी सेवासे न मोक्षमार्गका ज्ञान होता है न भवभ्रमण हो मिटता है। कुगुरुको अच्छी तरह सेवा करे तो भी आत्मकल्याण नहीं हो सकता। कहा भी है:-

"नाऽऽम्र सुपिक्तोऽपि ददाति निम्वक,
पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।
दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रिय,
धर्म शिव वा कुगुरुर्न सश्रित. ॥ १ ॥

अर्थात्—नीमको चाहे कीतना भी सींचो तोभी उसमें आमका फल नहीं आसकता। अच्छीसे अच्छी वस्तु खिलानेपर भी वन्ध्या गौ दूध नहीं दे सकती। दरिद्र राजाकी चाहे कितनी भी सेवा की

તથા તેનો પુત્ર થઇને જન્મ્યો અને 'કૂણિક કુમાર' ના નામથી પ્રસિદ્ધ થયો નિદાન (નિયાણા) ના પ્રભાવથી તે શ્રેણિકનો ઘાતક થયો

આ કુગુરુસેવાનુ ફલ છે આથી કુગુરુને છોડીને સદ્ગુરુની સેવા કરવી જોઈએ કુગુરુની સેવાથી નથી મોક્ષમાર્ગનુ જ્ઞાન થતુ કે નથી ભવભ્રમણ પણ મટતુ કુગુરુની સારી રીતે સેવા કરીયે તો પણ આત્મકલ્યાણ થઈ શકતુ નથી કહ્યુ પણ છે કે—

नाऽऽम्र सुपिक्तोऽपि ददाति निम्बक',
पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।
दु स्थो नृपो नैव सुसेवित श्रिय,
धर्म शिव वा कुगुरुर्न सश्रित. ॥ १ ॥

અર્થાત્—લીંબડાને ગમે તેટલુ પાણી પાઓ તો પણ તેમા આંબાનુ ફલ ન આવી શકે સારામા સારી વસ્તુ ખવરાવવાથી પણ વંધ્યા ગાય દૂધ ન આપી શકે દરિદ્ર રાજાની ગમે તેટલી પણ સેવા કરવામા આવે તો પણ તે ધન ન આપી શકે

फल तदाऽहं जन्मान्तरेऽस्य राज्ञो दुःखदो भवेयम्' इति विचार्य परभवदुःखदायकनिदानं कृतवान् ।

ततो राजा तापसनिकटमागतः । तत्र तापस उवाच–हे राजन् ! भूयो भूयो मां निमन्त्र्य त्वं विस्मरसि, 'अथ सर्वथा यावज्जीवं चतुर्विधाऽऽहारं परित्यज्य परभवे तव दुःखदो भवेयम्' एतादृशं प्रतिज्ञातवानस्मि ।

राजा भृशं प्रार्थयामास परञ्च तापसो न शान्तकोपोऽभवत् । राजा विवशतया तापसाश्रमान्निवृत्य स्वभवनमुपागतो राज्यकार्ये लग्नः । असौ तापसः कालावसरे कालं कृत्वा तस्यैव राज्ञश्चेल्लनादेवीगर्भतः पुत्रत्वेनोदपद्यत । प्रादुर्भूय 'कूणिककुमार' इति विख्यातः । निदानप्रभावात् श्रेणिकराजस्य घातकोऽभूत् ।

भी मेरी तपश्चर्याका फल हो तो मै चाहता हूँ कि–इस राजा श्रेणिकको अगले जन्ममें दुःखदायी होऊँ' ऐसा विचारकर जन्मातरमे दुःख देनेवाला निदान (नियाणा) किया ।

उसके बाद राजा तापसके पास आया । तापसने राजासे कहा–हे राजन् ! तू मुझे बार२ न्यौता देकर भूल जाता है, आज मैंने ऐसी प्रतिज्ञा करली है कि–'यावज्जीव चारों प्रकारके आहारको त्याग कर परभवमें तुम्हारे लिये दुःखदायी बनूँ' ।

राजाने तापससे बहुत प्रार्थना की परन्तु उसका कोप शान्त नही हुआ । राजा हारकर तापसके आश्रमसे अपनी राजधानीमे आया और राजकाजमें सलग्न हो गया । वह तापस कालान्तरसे मरकर उसकी रानी चेल्लनाके गर्भमें आया और उसका पुत्र होकर पैदा हुआ और 'कूणिककुमार' के नामसे प्रसिद्ध हुआ । निदान (नियाणा) के प्रभावसे वह श्रेणिकका घातक हुआ ।

કોતરા) ની બરાબર પણ મારી તપશ્ચર્યાનુ ફળ હોય તો હુ ઇચ્છુ છુ કે–'હુ આ રાજા શ્રેણિકને જન્માતરમા દુખદાયી થાઉ' આમ વિચાર કરી જન્માતરમા દુખ દેવાવાળો થવા નિદાન (નિયાણુ) કર્યું

ત્યાર પછી રાજા તાપસની પાસે આવ્યા તાપસે રાજાને કહ્યુ–હે રાજન્! તુ મને વારે વારે નિમત્રણ દઈને ભૂલી જાય છે આજ મે એવી પ્રતિજ્ઞા કરી છે કે–'જ્યા સુધી જીવુ ત્યા સુધી ચારે પ્રકારના આહારનો ત્યાગ કરી પરભવમા તમને દુખદાયી થાઉ'

રાજાએ તાપસને બહુ પ્રાર્થના કરી પણ તેનો કોપ શાત થયો નહિ રાજા હારી જઇને તાપસના આશ્રમેથી પોતાની રાજધાનીમા આવીને રાજકાર્યમા કામે લાગી ગયો તે તાપસ કાલાતરે મરી ગયા પછી તેની રાણી ચેલ્લનાના ગર્ભમા આવ્યો.

इद च कुगुरुसेवाफलम् अत' कुगुरु विहाय सुगुरु. सेवनीयः । कुगुरुसेवनेन न मोक्षमार्गज्ञान न वा भवभ्रमणनिवृत्तिः । कुगुरोः सम्यक् सेवनेऽपि नाऽऽत्मकल्याणम् । उक्तश्च—

नाऽऽम्र सुपिक्तोऽपि ददाति निम्बक',
पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।
दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रिय,
धर्म शिव वा कुगुरुर्न सश्रितः ॥ १ ॥

इति कूणिकस्य श्रेणिकघातकत्वे कारणविवरणम् ॥ सू० ३९ ॥

यह कुगुरुसेवाका फल है, इस लिये कुगुरुका छोडकर सद्-गुरुकी सेवा करनी चाहिए। कुगुरुकी सेवासे न मोक्षमार्गका ज्ञान होता है न भवभ्रमण ही मिटता है। कुगुरुकी अच्छी तरह सेवा करे तो भी आत्मकल्याण नहीं हो सकता। कहा भी है:-

"नाऽऽम्र सुपिक्तोऽपि ददाति निम्बक,
पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।
दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रिय,
धर्म शिव वा कुगुरुर्न सश्रितः ॥ १ ॥

अर्थात्—नीमको चाहे कीतना भी सींचो तोभी उसमें आमका फल नहीं आसकता। अच्छीसे अच्छी वस्तु खिलानेपर भी वन्ध्या गौ दूध नहीं दे सकती। दरिद्र राजाकी चाहे कितनी भी सेवा की

તથા તેનો પુત્ર થઇને જન્મ્યા અને કૂણિક કુમાર' ના નામથી પ્રસિદ્ધ થયો. નિદાન (નિયાણુ) ના પ્રભાવથી તે શ્રેણિકનો ઘાતક થયો.

આ કુગુરૂસેવાનુ ફલ છે આથી કુગુરૂને છોડીને સદ્ગુરૂની સેવા કરવી જોઈએ. કુગુરૂની સેવાથી નથી મોક્ષમાર્ગનુ જ્ઞાન થતુ કે નથી ભવભ્રમણ પણ મટતુ કુગુરૂની સારી રીતે સેવા કરીયે તો પણ આત્મકલ્યાણ થઈ શકતુ નથી કહ્યુ પણ છે કે—

નાऽऽम्र सुपिक्तोऽपि ददाति निम्बक,
पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।
दु.स्थो नृपो नैव सुसेवित. श्रिय,
धर्म शिव वा कुगुरुर्न सश्रित. ॥ १ ॥

અર્થાત્—લીંબડાને ગમે તેટલુ પાણી પાઓ તો પણ તેમા આંબાનુ ફલ ન આવી શકે સારામા સારી વસ્તુ ખવરાવવાથી પણ વધ્યા ગાય દૂધ ન આપી શકે દરિદ્ર રાજાની ગમે તેટલી પણ સેવા કરવામા આવે તો પણ તે ધન ન આપી શકે

मूलम्—तत्थ णं चंपाए नयराए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कूणियस्स रन्नो सहोयरे कणीयसे भाया वेहल्ले नामं कुमारे होत्था सोमाले जाव सुरूवे । तएणं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स सेणिएण रन्ना जीवतएणं चेव सेयणए गधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे पुव्वदिन्ने ।

तए ण से वेहल्ले कुमारे सेणएणं गधहत्थिणा अतेउरपरियालसपरिवुडे चप नगरि मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता अभिक्खणं २ गंग महानइ मज्जणयं ओयरइ ।

तएण सेयणए गधहत्थी देवीओ सोंडाए गिण्हइ, गिण्हित्ता अप्पेगइयाओ पुट्ठे ठवेइ, अप्पेगइयाओ खंधे ठवेइ, एवं अप्पेगइयाओ कुंभे ठवेइ, अप्पेगइयाओ सीसे ठवेइ, अप्पेगइयाओ दतमुसले ठवेइ, अप्पेगइयाओ सोंडाए गहाय उड्ढं वेहास उ विहइ, अप्पेगइयाओ सोंडागयाओ अदोलावेइ अप्पेगइयाओ दंततरेसु नीणेइ, अप्पेगइयाओ सीभरेणं ण्हाणेइ, अप्पेगइयाओ अणेगेहि कीलावणेहिं कीलावेइ ।

तएणं चंपाए नयरीए सिघाडगतिगचउक्कचच्चरमहापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु

जाय किन्तु वह धन नहीं देसकता, वैसेही कुत्सित गुरुकी सेवामें न श्रुतचारित्रलक्षण धर्मकी प्राप्ति होती है और न मोक्षकी प्राप्ति हो सकती है।

'कूणिक श्रेणिकका घातक क्यों हुआ ?' इसका विवरण उपरोक्त लिखे अनुसार है ॥ सू० ३९ ॥

એવાજ રીતે કુત્સિત (અયોગ્ય) ગુરૂની સેવાથી નથી તો શ્રુતચારિત્રલક્ષણ ધર્મની પ્રાપ્તિ થાતી કે નથી મોક્ષની પ્રાપ્તિ થઈ શકતી

'કૂણિક, શ્રેણિકનો ઘાતક કેમ થયો? તેનુ વિવરણ ઉપર કહ્યા પ્રમાણે છે (સૂ૦૩૯)

देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे एयणएणं गधहत्थिणा अतेउर० त चेव जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ, तं एस ण वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफल पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया ।

तएण तीसे पउमावईए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—'एवं खलु वेहल्ले कुमारे सेयणएण गधहत्थिणा जाव अणेगेहि कीलावणएहि कीलावेइ त एस ण वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफल पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया, त किं अम्ह रज्जेण वा जाव जणवएण वा जइ ण अम्ह सेयणगे गधहत्थी नत्थि ? त सेय खलु मम कणिय राय एयमट्ठ विन्नवित्तए' त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहित्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० जाव एव वयासी—एव खलु सामी ! वेहल्ले कुमारे सेयणएण गधहत्थिणा जाव अणगेहिं कीलावणएहि कीलावेइ, त किण्ण सामी ! अम्ह रज्जेण वा जाव जणवएण वा जइण अम्ह सेयणए गधहत्थी नत्थि ? ।

तएण से कणिए राया पउमावईए देवीए एयमट्ठ नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए सचिट्ठइ । तएण सा पउमावई देवी अभिक्खणं२ कणिय गय एयमट्ठ विन्नवेइ ।

तएण से कूणिए राया पउमावईए देवीए अभिक्खणं२ एयमट्ठ विन्नविज्जमाणे अन्नया कयाइ वेहल्ल कुमार सद्दावेइ सद्दावित्ता सेयणग गधहत्थि अट्ठारसवक च हार जायइ ।

तएण से वेहल्ले कुमारे कूणिय रायं एवं वयासी—एव खलु सामी! सेणिएणं रन्ना जीवंतेणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे दिन्ने, त जइ ण सामी! तुब्भे मम रज्जस्स य रट्ठस्स य जणवयस्स य अद्धं दलह तो ण अहं तुब्भं सेयणग गंधहत्थिं अट्ठारसवकं च हार दलयामि।

तएणं से कूणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एवमट्ठ नो आढाइ, नो परिजाणइ, अभिक्खणं२ सेयणग गंधहत्थिं अढार सवकं च हार जायइ।

तएण तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स कूणिएणं रन्ना अभिक्खणं२ सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवकं च हार (जाएमाणस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पज्जित्था) एव खलु अक्खिविउकामे णं गिण्हिउकामे णं उद्दालेउकामे ण मम कूणिए राया सेयणग गधहत्थिं अट्ठारसवंक च हार त जाव ममं कूणिय राया [नो जाणइ] ताव [सेय मे] सेयणग गधहत्थि अट्ठारसवक च हार गहाए अतेउरपरियालसपरिवुडस्स सभडमत्तोवगरणमायाए चंपाओ नयरीओ पडिनिक्खमित्ता वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयरायं उवसपज्जित्ताण विहरित्तए। एव सपेहेइ, संपेहित्ता कूणियस्स रन्नो अतराणि जाव पडिजागरमाणे२ विहरइ।

तएण से वेहल्ले कुमारे अन्नया कयाइ कणियस्स रन्नो अतर जाणइ जाणित्ता, सेयणगं गधहत्थिं अट्ठारसवंक च हार गहाय अतेउरपरियालसपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए चपाओ नयरीओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वेसाली नयरी

तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वेमालीए नयरीए अज्जग चेडय रायं उवसपज्जित्ता णं विहरइ ॥ ४० ॥

छाया—तत्र खलु चम्पाया नगर्यां श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रश्चेल्लनाया देव्या आत्मजः श्रेणिकस्य राज्ञः सहोदरः कनीयान् भ्राता वैहल्यो नाम कुमार आसीत् सुकुमारयावत्सुरूपः ।

ततः खलु तस्य वैहल्यस्य कुमारस्य श्रेणिकेन राजा जीवता चैव सेचनको गन्धहस्ती अष्टादशवक्रो हारश्च पूर्वदत्त । ततः खलु स वैहल्यः कुमारः सेचनकेन गन्धहस्तिना अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतश्चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य अभीक्ष्णं गङ्गा महानदीं मज्जनकम् अवतरति । ततः खलु सेचनको गन्धहस्ती देवीः शुण्डया गृह्णाति, गृहीत्वा अप्येकिकाः पृष्ठे स्थापयति, अप्येकिकाः स्कन्धे स्थापयति, अप्येकिकाः कुम्भे स्थापयति

'तत्थ णं चपाए' इत्यादि—

उस चम्पानगरीमें श्रेणिक राजाका पुत्र, रानी चेल्लनाका आत्मज, राजा कूणिकका सहोदर छोटा भाई वैहल्य नामका कुमार था, जो कि सुकुमार यावत् सुरूप था ।

उस वैहल्य कुमारको राजा श्रेणिकने अपनी जीवितावस्थामें ही सेचनक नामका गन्ध हाथी और अट्ठारह लडोवाला हार दिया। एक दिन वह वैहल्य कुमार सेचनक गंध हाथीपर चढकर अपने अन्तःपुर परिवारके साथ चम्पानगरीके मध्यसे निकला, निकलकर गगानदीमें बारबार स्नान करनेके लिए अवतरित हुआ। तत्पश्चात् वह सेचनक हाथी वैहल्यकी रानीयोंको अपनी सुडसे पकडकर

'तत्थाण चपाए' ઇત્યાદિ

તે ચ પાનગરીમા શ્રેણિક રાજાનો પુત્ર, રાણી ચેટલનાનો આત્મજ (દીકરો) રાજા કૂણિકનો સહોદર નાનોભાઇ વૈહલ્ય નામે કુમાર હતો કે જે સુકુમાર અને સુરૂપ હતો

તે વૈહલ્ય કુમારને રાજા શ્રેણિકે પોતાની જીવિત અવસ્થામા સેચનક નામનો ગ ધહાથી તથા અઢાર સરવાળો હાર દીધો હતો એક દિવસ તે વૈહલ્યકુમાર સેચનક ગ ધહાથી ઉપર ચડીને પોતાના અ ત પુર પરિવાર સાથે ચ પાનગરીના મધ્યભાગમા થઇને નીકળ્યો, નીકળીને વાર વાર ગ ગાનદીમા સ્નાન કરવા માટે ઉતર્યો ત્યાર પછી તે સેચનક હાથી વૈહલ્યની રાણીઓને પોતાની સૂઢમા પકડીને તેમાથી કોઇ–કને પોતાની પીઠ

तएण से वेहल्ले कुमारे कूणिय रायं एवं वयासी–एव खलु सामी! सेणिएणं रन्ना जीवतेणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवके य हारे दिन्ने, त जइ ण सामी! तुब्भे मम रज्जस्स य रट्ठस्स य जणवयस्स य अद्धं दलह तो ण अहं तुब्भं सेयणग गंधहत्थिं अट्ठारसवकं च हारं दलयामि।

तएणं से कूणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एवमट्ठ नो आढाइ, नो परिजाणइ, अभिक्खणं२ सेयणग गधहत्थिं अढारसवकं च हार जायइ।

तएण तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स कूणिएणं रन्ना अभिक्खण२ सेयणग गंधहत्थि अट्ठारसवकं च हार (जाएमाणस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पज्जित्था) एव खलु अक्खिविउकामे णं गिण्हिउकामे णं उद्दालेउकामे ण मम कूणिए राया सेयणग गधहत्थिं अट्ठारसवक च हार त जाव ममं कूणिय राया [नो जाणइ] ताव [सेयं मे] सेयणगं गध-हत्थि अट्ठारसवक च हार गहाए अतेउरपरियालसपरिवुडस्स सभडमत्तोवगरणमायाए चपाओ नयरीओ पडिनिक्खमित्ता वेसा-लीए नयरीए अज्जग चेडयराय उवसपज्जित्ताण विहरित्तए। एव सपेहेइ, संपेहित्ता कूणियस्स रन्नो अतराणि जाव पडि-जागरमाणे२ विहरइ।

तएण से वेहल्ले कुमारे अन्नया कयाइ कणियस्स रन्नो अतर जाणइ जाणित्ता, सेयणग गधहत्थिं अट्ठारसवक च हार गहाय अंतेउरपरियालसपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए चपाओ नयरीओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वेसाली नयरी

गन्धहस्तिना यावद् अनेकैः क्रीडनकैः क्रीडयति तदेष खलु वैहल्ल्यः कुमारो राज्यश्रीफल प्रत्यनुभवन् विहरति नो कूणिको राजा, तत्किमस्माकं राज्येन वा, यावज्जनपदेन वा यदि खलु अस्माक सेचनको गन्धहस्ती नास्ति ?, तच्छ्रेयः खलु मम कूणिक राजानमेतमर्थं विज्ञपयितुम् ।

इति कृत्वा एव समेक्षते, संप्रेक्ष्य यत्रैव कूणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतल० यावदेवमवादीत्-एव खलु स्वामिन् ! वैहल्ल्यः कुमारः सेचनकेन गन्धहस्तिना यावद् अनेकैः क्रीडनकैः क्रीडयति, तत्किं खलु स्वामिन् ! अस्माकं राज्येन वा यावत् जनपदेन वा, यदि खलु अस्माकं सेचनको गन्धहस्ती नास्ति ? ।

अन्त पुर परिवारसे साथ अनेक प्रकारकी क्रीडा करता है । वास्तविक राज्यश्रीका उपभोग तो वैहल्यकुमार ही करता है, न कि राजा कूणिक।

उसके बाद जब यह वृत्तान्त रानी पद्मावतीको मिला तो उसके मनमें ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि-'वैहल्यकुमार सेचनक हाथीके द्वारा अनेक प्रकारकी क्रीडा करता है इसलिए वही राज्य-लक्ष्मी फलका उपभोग करता हुआ रहता है, न कि कूणिक राजा, इस लिये हमें इस राज्यसे और जनपदसे क्या लाभ ? यदि हमारे पास सेचनक हाथी नहीं है इसलिए यही अच्छा है कि कूणिक राजासे कहूँ कि वे वैहल्यसे वह सेचनक हाथी लेलें' । ऐसा विचारकर जहाँ कणिक राजा था वहाँ गयी, और जाकर हाथ जोडकर इस प्रकार बोली-हे स्वामिन् ! वैहल्यकुमार सेचनक गन्ध-हस्तीके द्वारा अनेक प्रकारकी क्रीडा करता है, हे स्वामिन् ! यदि

વૈહલ્લ્ય કુમાર સેચનક ગધ હાથી દ્વારા અત પુર પરિવાર સહિત અનેક પ્રકારના ક્રીડા કરે છે ખરી રીતે રાજ્યશ્રીનો ઉપયોગ તો વૈહલ્લ્ય કુમારજ કરે છે-નહિ કે રાજા કૂણિક'

ત્યાર પછી જ્યારે આ હકીકત રાણી પદ્માવતીના જાણવામા આવી ત્યારે તેના મનમા એવો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે-વૈહલ્લ્યકુમાર સેચનક હાથી દ્વારા અનેક પ્રકારની ક્રીડા કરે છે માટે તેજ રાજ્યલક્ષ્મીના ફલનો ઉપભોગ કરતો રહે છે નહિ કે કૂણિક રાજા, માટે અમને આ રાજ્યથી કે જનપદથી શુ લાભ જો અમારી પાસે સેચનક હાથી ન હોય તો ?, તેથી કૂણિક રાજાને કહુ કે વૈહલ્લ્ય પાસેથી તે સેચનક હાથી લઈ લે એજ સારૂ છે એમ વિચાર કરી જ્યા કૂણિક રાજા હતા ત્યા ગઈ અને જઈને હાથ જોડી આ પ્રકારે બોલી-હે સ્વામી ! વૈહલ્લ્યય કુમાર સેચનક ગધ હાથી

अप्येकिकाः शीर्षे स्थापयति, अप्येकिकाः दन्तमुशले स्थापयति, अप्येकिकाः शुण्डया गृहीत्वा उर्ध्वं वैहायसमुद्वहते, अप्येकिकाः शुण्डागता आन्दोलयति, अप्येकिकाः दन्तान्तरेषु नयति, अप्येकिकाः शीकरेण स्नपयति, अप्येकिका अनेकैः क्रीडनकै क्रीडयति ।

ततः खलु चम्पाया नगर्यां शृङ्गाटक-त्रिक-चतुष्क-चत्वर-महापथ-पथेषु बहुजनोऽन्योऽन्यस्य एवमाख्याति यावत् प्ररूपयति-एव खलु देवानुप्रियाः ! वैहल्ल्यः कुमारः सेचनकेन गन्धहस्तिनाऽन्तपुर० तदेव यावद् अनेकैः क्रीडनकै० क्रीडयति तदेव खलु वैहल्ल्य कुमारो राज्यश्रीफल प्रत्यनुभवन् विहरति नो कूणिको राजा ।

ततः खलु तस्याः पद्मावत्या देव्या अस्याः कथायाः लब्धार्थायाः सत्या अयमेतद्रूपो यावत् समुदपद्यत-'एव खलु वैहल्ल्य' कुमार सेचनकेन

उनमेंसे किसी एकको पीठपर रखता है तो किसीको अपने कधेपर, किसीको कुम्भस्थलपर रखता है तो किसीको अपने सिरपर, एव किसीको अपने दन्ताशूलपर रखता है, और किसीको सूडसे पकडकर उपर आकाशमें लेजाता है। इसी तरह किसी एकको सूडमें दबाकर, झुलाता है, किसी एकको अपने दन्ताशूलके बीचमे अधरसे रखलेता है। तथा किसी एकको अपनी सूडसे निकलते हुए फुहारोंसे स्नान कराता है। एव किसी एकको अनेक प्रकारकी क्रीडाओंसे सन्तुष्ट करता है।

यह वृत्तान्त नगर भरमें फैल गया, तथा बहुतसे मनुष्य गलियो, सडको आदि स्थान-स्थानपर आपसमे इस प्रकार वार्तालाप करने लगे-हे देवानुप्रियो! वैहल्यकुमार सेचनक गधहस्तीके द्वारा

ઉપર રાખે તો કોઇને કાંધ ઉપર, કોઇને કુંભસ્થળ ઉપર રાખે તો કોઇને પોતાના માથા ઉપર અને એ પ્રમાણે કોઇને પોતાના દંતશૂળ ઉપર રાખે તો કોઇને સૂંઢથી પકડીને ઉપર આકાશમા લઇ જાય આવી રીતે કોઇ એકને સૂંઢમા દબાવીને હીંચકા ખવરાવે કોઇને પોતાના દંતશૂળની વચમા અધરથી રાખી લે તથા તથા કોઇ-એકને પોતાની સૂંઢમાથી નીકળતા ફુવારા વડે સ્નાન કરાવે, તેમજ કોઇને અનેક પ્રકારના ક્રીડાઓથી સંતુષ્ટ કરે છે

આ હકીકત આખા ગામમા ફેલાઇ ગઇ તથા ઘણા મનુષ્યો ગલિઓ સડકો આદિ અનેક ઠેકાણે ઠેકાણે પોત પોતામા આવી રીતે વાર્તાલાપ કરવા લાગ્યા-'હે દેવાનુપ્રિયો!

हारो दत्तः, तद् यदि खलु स्वामिन् ! यूय मम राज्यस्य च यावत् जनपदस्य च अर्द्धं दत्त तदा खल्वह युष्मभ्य सेचनक गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्र च हार ददामि ।

ततः खलु स कूणिको राजा वैहल्लयस्य कुमारस्य एतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति, अभीक्ष्ण २ सेचनक गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्र च हार याचते ।

ततः खलु तस्य वैहल्लयस्य कुमारस्य कूणिकेन राज्ञा अभीक्ष्ण २ सेचनक गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्र च हार [याच्यमानस्य सतोऽयमेतद्रूप आध्यात्मिकः ४ समुदपद्यत] एव खलु आक्षेप्तुकाम खलु, ग्रहीतुकामः खलु, आच्छेतुकामः खलु मा कूणिको राजा सेचनक गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्र च हारम् तद् यावन्मा कूणिको राजा [ना जानाति] तावत् [श्रेयो मम] सेचनक गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्र च हार गृहीत्वान्तःपुरपरिवारसपरिवृतस्य सभा-

---

दिया है, सो यदि आप उसे लेना चाहते हैं तो मुझे भी राज्य और जनपदका आधा भाग दीजिये फिर मै भी आपके लिये इन दोनोंको देदूँगा । परन्तु राजा कूणिकने वैहल्लयकुमारकी इस बातको पसन्द नहीं किया, न कभी इसको अच्छी तरह सोचाही, परन्तु बार-बार अपनी माँगको दोहराता रहा ।

तदन्तर कूणिक राजा द्वारा बार २ हाथी और हार माँगनेपर वैहल्य अपने मनमें सोचता है कि कूणिक राजा मेरे पर मिथ्यादोष लगा कर मेरा सेचनक गधहाथी और हार मुझसे छीन लेना चाहता है, इसलिये उचित है कि जबतक कूणिक मुझसे हाथी और हार

તથા અઢાર સરવાળો હાર દીધો છે જો તે આપ લેવા ચાહો છો તો મને પણ રાજ્ય તથા જન પદનો અરધો ભાગ આપો પછી હુ પણ આપને આ બન્ને આપીશ પરંતુ રાજા કૂણિક વૈહલ્લ્ય કુમારની આ વાત પસંદ કરી નહિ ન તો કદી એ વાતનો ઠીક રીતે વિચાર કરી જોયો માત્ર વારવાર પોતાની માગણીજ કર્યા કરી

ત્યાર પછી કૂણિક રાજા તરફથી વારવાર હાથી તથા હારની માગણી થતા વૈહલ્લ્ય પોતાના મનમા વિચાર કરે છે કે આ કૂણિક રાજા મારા ઉપર ખોટો દોષ લગાડીને મારો સેચનક ગંધ હાથી અને હાર મારી પાસેથી પડાવી લેવા માગે છે માટે મને વાજબી છે કે જ્યા સુધી કૂણિક મારી પાસેથી તે હાથી અને હાર ન પડાવી લીએ તે પહેલાજ સેચનક ગંધ હાથી તથા અઢાર સરવાળો હાર તથા અંત પુર

ततः खलु स कूणिको राजा पद्मावत्या देव्या एतमर्थं नो आद्रियते, नो परिजानाति, तूष्णीकः संतिष्ठते ।

ततः खलु सा पद्मावती देवी अभीक्ष्ण२ कूणिकं राजानमेतमर्थं विज्ञपयति ।

ततः खलु स कूणिको राजा पद्मावत्या देव्या अभीक्ष्ण२ एतमर्थं विज्ञाप्यमानः अन्यदा कदाचित् वैहल्ल्यं कुमारं शब्दयति शब्दयित्वा सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं हारं याचते ।

ततः खलु स वैहल्ल्यः कुमारः कूणिकं राजानमेवमवादीत्-एवं खलु स्वामिन् ! श्रेणिकेन राज्ञा जीवता चैव सेचनको गन्धहस्ती अष्टादशवक्रश्च

हमारे पास सेचनक गन्ध हाथी नहीं है तो इस राज्य और जनपदसे क्या लाभ ? ।

यह सुनकर राजा कूणिकने पद्मावती देवीके इस विचारका आदर नहीं किया और न उस बातकी ओर ध्यान दिया, केवल चुपचाप रह गया।

परन्तु उस राजा कूणिकने रानी पद्मावतीके द्वारा बारबार विज्ञापित होनेके कारण एक समय कुमार वैहल्ल्यको अपने यहाँ बुलाया, बुलाकर उससे सेचनक गन्ध हाथी और अट्ठारह लडीवाला हार मागा ।

कूणिकका ऐसा अभिप्राय जानकर वैहल्ल्यकुमारने इस प्रकार कहना आरम्भ किया-हे स्वामिन् ! राजा श्रेणिकने अपनी जीवितावस्थामें ही मुझे सेचनक गन्ध हाथी और अट्ठारह लडीवाला हार

દ્વારા અનેક પ્રકારની ક્રીડા કરે છે હે સ્વામી ! જો આપણી પાસે સેચનક ગંધ હાથી ન હોય તો આ રાજ્ય અને જનપદથી શું લાભ ?

આ સાંભળી રાજા કૂણિકે પદ્માવતી દેવીના આ વિચારનો આદર કર્યો નહિ કે ન તે વાત તરફ ધ્યાન દીધું માત્ર ચુપાચુપ રહ્યા.

ત્યાર પછી તે રાજા કૂણિકે રાણી પદ્માવતીના મારફત વારવાર વિજ્ઞાપન કરવામાં આવતું તેથી એક વખત વૈહલ્ય કુમારને પોતાને ત્યાં બોલાવ્યો અને તેની પાસેથી સેચનક ગંધ હાથી તથા અઢાર સરવાળો હાર માગ્યો.

કૂણિકનો એવો અભિપ્રાય જાણીને વૈહલ્ય કુમારે આ પ્રકારે કહેવા માંડયું— હે સ્વામિન્ ! શ્રેણિક રાજાએ પોતાની જીવિત અવસ્થામાં જ મને સેચનક ગંધ હાથી

मूलम्—तएणं से कूणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—एवं खलु वेहल्ले कुमारे मम असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जाव अज्जयं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं सेयं खलु मम सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं आणेउं दूयं पेसित्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! वेसालिं नयरिं, तत्थ णं तुमं मम अज्जं चेडगं रायं करतल० वद्धावेत्ता एवं वयाहि—एवं खलु सामी! कूणिए राया विन्नवेइ—एस णं वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय इह हव्वमागए, तए णं तुब्भे सामी! कूणियं रायं अणुगिण्हमाणा सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं च पेसेह।

तए णं से दूए कूणिएणं० करतल० जाव पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जहा चित्तो जाव वद्धावित्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी! कूणिए राया विन्नवेइ—एस णं वेहल्ले कुमारे तहेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं कुमारं च पेसेह।

तए णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासी—जह चेव णं देवाणुप्पिया! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए तहेव णं वेहल्ले वि कुमारे सेणि-

---

हाथी, अठारह लडीवाला हार ओर सभी प्रकारकी गृहसामग्री लेकर चम्पानगरीस निकल वैशालीनगरीमें आर्य चेटकके पास पहुँचकर रहने लगा ॥ ४० ॥

પ્રકારની ગૃહ સામગ્રી લઈને ચંપાનગરીથી નીકળી વૈશાલી નગરીમા આર્ય ચેટકની પાસે પહોંચી રહેવા લાગ્યો. (૪૦)

ण्डामत्रोपकरणमादाय चम्पाया नगर्याः प्रतिनिष्क्रम्य वैशाल्यां नगर्यामार्यक चेटकराजमुपसम्पद्य विहर्तुम् । एवं सम्प्रेक्ष्य कूणिकस्य राज्ञोऽन्तराणि यावत् प्रतिजाग्रत् २ विहरति ।

ततः खलु स वैहल्य कुमारः अन्यदा कदाचित् कूणिकस्य राज्ञोऽन्तरं जानाति, ज्ञात्वा सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं गृहीत्वा अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः सभाण्डामत्रोपकरणमादाय चम्पातो नगरीतः प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव वैशाली नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वैशाल्यां नगर्यामार्यकं चेटकमुपसम्पद्य विहरति ॥ ४० ॥

टीका—'तत्थ णं चंपाए' इत्यादि—सहोदरः=एकमातृकः । कनीयान्=लघुभ्राता । अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः=अन्तःपुर=राज्ञी, परिवार=खड्गरत्नादि कोशो दासदास्यादिसेवकवर्गश्च, तैः संपरिवृतः=युक्तः वैहायस–विहाय एव वैहायसम्=गगनम्, शीकरैः=पवनमथितजलकणैः 'फुहारा' इति भाषायाम्, शृङ्गाटक त्रिक–चतुष्क–चत्वर–महापथ–पथेषु–शृङ्गाटकः=जलफलं 'सिंगाडा' इति भाषायाम्, तद्वत् त्रिकोणस्थानं, त्रिकं=त्रिपथम्, चतुष्कम्=चतुष्पथम्, महापथो=राजमार्गः, पन्थाः=सामान्यमार्गः, तेषु । एष–कूणिको राजा माम् आक्षेप्तुकाम राज्यभागस्याऽदित्सया मयि मृषादोषमारोपयितुकाम । सेचनकं गन्धहस्तिनं ग्रहीतुकामः=बलादादातुकाम । अष्टादशवक्रं हारं च 'उद्दालेउकामे' आच्छेत्तुकामः=मम-हस्तादाकष्टुकाम अस्ति । शेषं सुगमम् ॥ ४० ॥

न छीने उसके पहले ही सेचनक गंधहाथी और अठारह लडीवाला हार तथा अन्तःपुर परिवारके साथ सभी गृहोपकरण लेकर चम्पा नगरीसे निकलकर अपने नाना चेटक राजाके पास वैशालीनगरीमें जाकर रहूँ । ऐसा विचार करनेके पश्चात् वह वैहल्यकुमार राजा कूणिककी अनुपस्थितिकी ताकमें रहता है ।

उसके बाद वह वैहल्यकुमार एक समय कूणिक राजाकी अनुपस्थितिका मौका पाकर अपने अंतःपुर परिवारके साथ सेचनक

પરિવાર સહિત ઘરની તમામ વસ્તુઓ લઈને ચંપા નગરીથી નીકળીને મારા નાના ચેટક રાજાની પાસે વૈશાલી નગરીમાં જઈને રહું એમ વિચાર કરીને પછી તે વૈહલ્ય કુમાર રાજા કૂણિકની અનુપસ્થિતિ–ગેરહાજરીની રાહ જોતો રહ્યા કરે છે

ત્યાર પછી તે વૈહલ્ય કુમાર એક સમય કૂણિક રાજાની ગેરહાજરી જોઈ પોતાના અંતઃપુર પરિવારની સાથે સેચનક હાથી, અઢાર સેરવાળો હાર અને તમામ

सपद्य खलु विहरति, तच्छ्रेयः खलु मम सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारम् आनेतुं दूतं प्रेषयितुम्, एवं समेक्षते संप्रेक्ष्य दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–गच्छ खलु त्वं देवाणुप्रिय ! वैशाली नगरी, तत्र खलु त्वं मम आर्यं चेटकं राजानं करतल० वर्द्धयित्वा एवं वद–'एवं खलु स्वामिन् ! कूणिको राजा विज्ञापयति–एष खलु वैहल्ल्य कुमारः कूणिकस्य राज्ञः असंविदितेन सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं गृहीत्वा इह हव्य मागतः, ततः खलु यूयं स्वामिन् ! कूणिकं राजानमनुगृह्णन्तः सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं कूणिकस्य राज्ञः प्रत्यर्पयत, वैहल्ल्यं कुमारं च प्रेषयत ।

ततः खलु स दूतः कूणिकेन० करतल० यावत् प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यथा चित्तो यावद् वर्द्धयित्वा एवमवादीत्–

आर्य चेटकके पास जाकर रहने लगा है, इस कारण मुझे उचित है कि दूत भेजकर सेचनक गंध हाथी और अठारह लडीवाला हार मगाऊँ ऐसा विचारकर दूतको बुलाता है और बुलाकर इस प्रकार कहता है —

हे देवानुप्रिय ! वैशालीनगरीमें मेरे नाना चेटकके पास तुम जओ उनके पास जाकर हाथ जोड जय–विजय शब्दके साथ राजाको बधाकर इस प्रकारसे कहो–हे स्वामिन् राजा कूणिक इस प्रकार विज्ञप्ति करते हैं कि मुझसे बिना कुछ कहे ही वैहल्य कुमार सेचनक गन्ध हाथी और अठारह लडीवाला हार लेकर आपके यहाँ जल्दीसे चला आया है, सो आप वैहल्ल्यकुमारको सेचनक हाथी और अठारह लडीवाले हारके सहित कृपा करके हमारे पास भेजदें । इसके बाद वह दूत राजा कूणिकके द्वारा कहे हुए वचनोंको स्वीकारकर अपने

ગૃહસામગ્રી લઈને રાજા આર્ય ચેટકની પાસે જઈને રહ્યો છે આ કારણથી મારે માટે યોગ્ય છે કે દૂત મોકલીને સેચનક ગંધ હાથી અને અઢાર સરનો હાર મંગાવી લઉં એવો વિચાર કરી દૂતને બોલાવી આમ તેને કહે છે– હે દેવાનુપ્રિય ! વૈશાલી નગરીમાં મારા નાના ચેટકની પાસે તું જા તેની પાસે જઈ હાથ જોડીને જય–વિજય શબ્દથી રાજાને વધાવીને આ પ્રકારે કહે જે–હે સ્વામિન્ ! રાજા કૂણિક આ પ્રકારે વિજ્ઞપ્તિ કરે છે કે–મને કાંઈ કહ્યા વગર જ કુમાર વૈહલ્ય સેચનક ગંધ હાથી અને અઢાર સરવાળો હાર લઈને આપની પાસે જલ્દીથી ચાલ્યો આવેલો છે માટે આપ વૈહલ્ય કુમારને સેચનક ગંધ હાથી અને અઢાર સરના હાર સહિત કૃપા કરીને મારી પાસે મોકલી આપો ત્યાર પછી તે દૂત રાજા કૂણિક દ્વારા કહેલા વચનોનો

थस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए, सेणिएणं रन्ना जीवतेणं चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणगे गंधहत्थी अट्ठारसवंके हारे पुव्वदिन्ने, तं जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज्जस्स य रट्ठस्स य जणवयस्स य अद्धं दलयइ तो णं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामि, वेहल्लं च कुमारं पेसेमि। तं दूयं सक्कारेइ संमाणेइ पडिविसज्जेइ।

तएणं से दूए चेडएणं रन्ना पडिविसज्जिए समाणे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दूरुहइ, दूरुहित्ता वेसालिं नगरिं मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुहेहिं वसहिपायरासेहिं जाव वद्धावित्ता एवं वयासी–एवं खलु सामी! चेडए राया आणवेइ–जह चेव णं कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए तं चेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं च कुमारं पेसेमि, तं न देइ सामी! चेडए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं नो पेसेइ ॥ ४१ ॥

छाया—ततः खलु स कूणिको राजा अस्याः कथायाः लब्धार्थः सन् 'एवं खलु वैहल्यः कुमारो मम असंविदितेन सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं गृहीत्वा अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतो यावद् आर्यकं चेटकं राजानमुप-

'तएणं से कूणिए' इत्यादि—

उसके बाद जब यह समाचार राजा कूणिकको ज्ञात हुआ तो उसने विचार किया कि वैहल्यकुमार मुझसे बिना कुछ कहे-सुने अपने अन्तःपुर परिवारके सहित, सेचनक गंधहस्ती अठारह लडीवाला हार और सभी प्रकारकी गृहसामग्रियों को लेकर राजा

'तएणं से कूणिए' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી જ્યારે આ સમાચારની રાજા કૂણિકને ખબર પડી ત્યારે તેણે વિચાર કર્યો કે વૈહલ્ય કુમાર મને કંઈ પણ કહ્યા–સાંભળ્યા વગર જ પોતાના અંતઃપુર પરિવાર સહિત સેચનક ગંધ હાથી, અઢાર સરનો હાર અને તમામ પ્રકારની

सेचनक गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्र च हार कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्पयामि, वैहल्ल्य च कुमार प्रेषयामि । त दूत सत्करोति सम्मानयति प्रतिविसर्जयति ।

ततः खलु स दूतः चेटकेन राज्ञा प्रतिविसर्जितः सन् यत्रैव चतुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चतुर्घण्टमश्वरथ दूरोहति, दूरुह्य वैशालीं नगरी मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य शुभैर्वसतिप्रातराशैर्यावद् वर्धयित्वा एवमवादीत्–एव खलु स्वामिन् ! चेटको राजा आज्ञापयति–यथैव खलु कूणिको राजा श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः, चेल्लनाया देव्या आत्मजः मम नप्तकः, तदेव भणितव्य यावद् वैहल्ल्य च कुमार प्रेषयामि । तन्न ददाति खलु स्वामिन् !

श्रेणिक राजाने अपनी जीवितावस्थामे ही कुमार वैहल्यको सेचनक गधहाथी और अठारह लडीवाला हार दिया था। तो भी यदि राजा कूणिक हाथी और हार लेना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह भी वैहल्यकुमारको राज्य राष्ट और जनपदका आधा भाग देदे। एसा होनेपर मैं हाथी और हारके साथ कुमार वैहल्ल्यको भेज सकता हूँ। इस प्रकार कहनेके बाद राजा चेटकने उस दूतका आदर सत्कारकर उसे विसर्जित (विदा) किया। चेटक राजासे विसर्जित वह दूत जहाँपर चार घण्टावाला रथ था वहाँ आया, आकर उस रथपर चढा और वैशाली नगरीके मध्यसे निकला। निकलकर अच्छी २ वस्तियोंमें विश्राम तथा प्रातःकालिक भोजन करता हुवा सुख-शांतिपूर्वक चम्पानगरीमें पहुँचा। पहुँचकर राजा कूणिकके पास जा हाथ जोड जय-विजय शब्दके साथ राजाको वधाकर इस प्रकार बोला'–

શ્રેણિક રાજાએ પોતાની જીવિત અવસ્થામા જ કુમાર વૈહલ્લ્યને સેચનક ગધ હાથી તથા અઢાર સરનો હાર દીધો હતો છતા પણ જો રાજા કૂણિક હાથી તથા હાર લેવા ચાહતા હોય તો તેણે પણ વૈહલ્લ્ય કુમારને રાજ્ય રાષ્ટ્ર અને જનપદમા અરધો ભાગ દેવો જોઈએ અને એમ થાય તો હુ હાથી તથા હારની સાથે કુમાર વૈહલ્લ્યને મોકલી શકુ છુ આ પ્રકારે કહ્યા પછી રાજા ચેટકે તે દૂતનો આદર સત્કાર કરી તેને વિદાય આપી ચેટક રાજા પાસેથી વિદાય લઇ તે દૂત જ્યા ચાર ઘટવાળો રથ હતો ત્યા આવ્યો આવીને તે રથ ઉપર ચડીને વૈશાલી નગરીની મધ્યમા થઇને નીકળ્યો સારી સારી વસ્તીમા વિશ્રામ તથા સવારનુ ભોજન કરતો થકો સુખ શાતિપૂર્વક ચપાનગરીમા પહોચ્યો પછી રાજા કૂણિક પાસે જઈ પહોચી હાથ જોડી જય વિજય શબ્દની સાથે રાજા કૂણિકને વધાવીને આ પ્રકારે કહ્યુ —

एव खलु स्वामिन ! कूणिको राजा विज्ञापयति-एष खलु वेहल्ल्यः कुमार स्तथैव भणितव्य यावद् वेहल्ल्य कुमार मेपयत ।

ततः खलु स चेटको राजा त दूतमेवमवादीत् यथैव खलु देवानुप्रिय ! कूणिको राजा श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः, चेल्लनाया. देव्या आत्मजः, मम नप्तकः, तथैव खलु वेहल्ल्योऽपि कुमारः श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः, चेल्लनाया देव्या' आत्मजो, मम नप्तकः, श्रेणिकेन राज्ञा जीवता चैव वेहल्ल्याय कुमाराय सेचनको गन्धहस्ती अष्टादशवक्रो हारः पूर्वंवितीर्णः, तद् यदि खलु कूणिको राजा वेहल्ल्याय राज्यस्य च राष्ट्रस्य च जनपदस्य चार्द्धं ददाति तदा खलु

घर आया और चार घटावाले रथमें बैठ रवाना हुवा। वह वैशाली पहुँचकर आर्य चेटकको हाथ जोड जय विजयके साथ बधाकर परदेशी राजाके चित्त प्रधानके समान इस प्रकार कहता है'-

हे स्वामिन् ! राजा कूणिक इस प्रकार विज्ञप्ति करते हैं कि-मेरा छोटा भाई वेहल्ल्यकुमार मुझसे बिना कुछ कहे ही सेचनक गधहाथी और अठारह लडीवाला हार लेकर आपके पास चला आया है इसलिये आप इसे हाथी और हारके साथ मेरे पास भेजदें।

यह सुनकर चेटक राजाने उस दूतको इस प्रकार उत्तर दिया हे देवानुप्रिय ! जिस प्रकार राजा कूणिक, श्रेणिक राजाका पुत्र, चेल्लना रानीका आत्मज और मेरा दौहित्र है उसी प्रकार कुमार वेहल्ल्य भी श्रेणिक राजाका पुत्र, रानी चेल्लनाका आत्मज और मेरा दौहित्र है।

સ્વીકાર કરી પોતાને ઘેર આવ્યો અને ચાર ઘટાવાળા રથમા બેસી રવાના થયો તે વૈશાલી પહોચી ને આર્ય ચેટકને હાથ જોડી જય-વિજય પૂર્વક વધાવીને પરદેશી રાજાના પ્રધાન ચિત્તની પેઠે આ પ્રમારે કહે છે-

હે સ્વામિન્! રાજા કૂણિક આ પ્રકારે વિજ્ઞપ્તિ કરે છે કે-મારો નાનો ભાઈ વેહલ્લ કુમાર મને કઈ પણ કહ્યા વગર જ સેચનક ગંધ હાથી અને અઢાર સર વાળો હાર લઈ આપની પાસે ચાલ્યો આવ્યો છે માટે આપ તેને હાથી અને હાર સાથે મારી પાસે મોકલી આપો.

આ સાભળી ચેટક રાજાએ તે દૂતને આ પ્રકારે ઉત્તર દીધો-હે દેવાનુપ્રિય જે પ્રકારે રાજા કૂણિક શ્રેણિક રાજાનો પુત્ર ચેલનના રાણીનો આત્મજ તથા મારો દૌહિત્ર છે તેજ પ્રકારે કુમાર વેહલ્લ પણ શ્રેણિક રાજાનો પુત્ર રાણી ચેલ્લનાનો દીકરો અને મારા દૌહિત્ર છે

मलोपयन्तः सेचनकं गन्धहस्तिनम्, अष्टादशवक्रं च हारं कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्पयत, वैहल्यं कुमारं प्रेषयत ।

ततः खलु स दूतः कूणिकस्य राज्ञस्तस्तथैव यावद् वर्धयित्वा एवमवादीत्–एवं खलु स्वामिन् ! कूणिको राजा विज्ञापयति–यानिकानीति यावत् वैहल्यं कुमारं प्रेषयत ।

ततः खलु स चेटको राजा तं दूतमेवमवादीत्–यथा चैव खलु देवानुप्रिय ! कूणिको राजा श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः चेल्लनाया देव्या आत्मजः,

---

एक सेचनक गन्धहाथी, दूसरा अठारह लडोवाला हार । हे स्वामिन् ! राजकुलकी परम्परागत स्थितिका नाश जिससे न हो इसलिये आप हाथी और हार मुझे अर्पित करदें और वैहल्य कुमारको भेजदें ।

उसके बाद वह दूत कूणिक राजाकी इस विज्ञप्तिको स्वीकार कर अपने घर आया, और वहाँसे वैशालीनगरीमें जाकर राजा चेटकके सम्मुख उपस्थित हुआ । तथा उन्हे हाथ जोड जय विजय शब्दके साथ वधाकर, राजा कूणिककी विज्ञापना को इस प्रकार सुनायी–हे स्वामिन् ! राजा कूणिककी यह विज्ञापना है कि–जो कुछ भी रत्न उत्पन्न होता है उसपर राजकुलका अधिकार होता है । ये दोनों रत्न श्रेणिक राजाके राज्यकालमें उत्पन्न हुए हैं, इसलिये हे स्वामिन् ! जिससे राजकुलकी परम्परागत स्थिति विनष्ट न हो यह ध्यानमें लेकर हाथी और हारको देदें तथा वैहल्यकुमारको भी कूणिक राजाके पास भेजदें ।

અને બીજુ અઢારસરનો હાર, હે સ્વામિન્ ! રાજકુલની પરંપરાગત સ્થિતિનો નાશ જેથી ન થાય તે માટે આપ હાથી અને હાર મને અર્પિત કરો અને વૈહલ્ય કુમારને મોકલી દો.

ત્યાર પછી તે દૂત કૂણિક રાજાની આ વિજ્ઞપ્તિનો સ્વીકાર કરી પોતાને ઘેર આવ્યો અને ત્યાથી વૈશાલી નગરીમા જઈ રાજા ચેટકની સમ્મુખ ઉપસ્થિત થયો અને તેમને હાથ જોડી જય વિજય શબ્દથી વધાવી રાજા કૂણિકની વિજ્ઞાપનાને આ પ્રકારે સંભળાવી–હે સ્વામિન્ ! રાજા કૂણિકની એમ વિજ્ઞાપના છે કે જે કંઈ પણ રત્ન ઉત્પન્ન થાય તે તેના ઉપર રાજકુલનો અધિકાર હોય છે આ બે રત્નો શ્રેણિક રાજાના રાજ્ય કાલમા ઉત્પન્ન થયા છે માટે હે સ્વામિન્ ! જેથી રાજકુલની પરંપરાગત સ્થિતિ વિનષ્ટ ન થાય તે ધ્યાનમા લઈ હાથી તથા હારને અર્પણ કરો અને મોકલી આપો.

जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु चेडगं रायं एवं वदाहि-हं भो चेडगराया ! अपत्थियपत्थया ! दुरंत जाव-परिवज्जिया ! एस णं कूणिए राया आणवेइ-पच्चप्पिणाहि णं कूणियस्स रन्नो सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं वेहल्लं च कुमारं पेसेहि, अहवा जुद्धसज्जा चिट्ठाहि, एस णं कूणिए राया सबले सवाहणे सखंधावारे णं जुद्धसज्जे इह हव्वमागच्छइ ॥ ४२ ॥

छाया-ततः खलु स कूणिको राजा द्वितीयमपि दूतं शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं देवानुप्रिये ! वैशालीं नगरीं, तत्र खलु त्वं मम आर्यकं चेटकं राजानं यावद् एवं वद-एवं खलु स्वामिन् ! कूणिको राजा विज्ञपयति-यानि कानि रत्नानि समुत्पद्यन्ते सर्वाणि तानि राजकुलगामीनि, श्रेणिकस्य राज्ञो राज्यश्रियं कुर्वतः पालयतो द्वे रत्ने समुत्पन्ने, तद्यथा-सेचनको गन्धहस्ती, अष्टादशवक्रो हारः, तत्खलु यूयं स्वामिन् ! राजकुलपरम्परागतां स्थितिं

'तएणं से कूणिए' इत्यादि-

इसके बाद कूणिक राजाने दूसरी बार फिर दूतको बुलाया और कहा-हे देवानुप्रिय ! वैशालीनगरीमें जाओ, वहाँ जाकर मेरे नाना राजा चेटकको हाथ जोड कर जय विजय शब्दके साथ उन्हें बधाकर इस प्रकार कहना कि-हे स्वामिन् ! राजा कूणिक की यह विज्ञापना है कि जो कुछ भी रत्न पैदा होता है उसपर राजकुलका ही अधिकार है। श्रेणिक राजाके राज्यकालमें दो रत्न उत्पन्न हुए,

---

'तएणं से कूणिए' ઇત્યાદિ

આ પછી કૂણિક રાજાએ બીજી વાર પાછો દૂતને બોલાવ્યો અને કહ્યુ-હે દેવાનુપ્રિય ! વૈશાલી નગરીમાં જઈને મારા નાના રાજા ચેટકને હાથ જોડીને જય વિજય શબ્દો સાથે વધાવી આ પ્રકારે કહેજે કે-હે સ્વામિન્ ! રાજા કૂણિકની એવી વિજ્ઞાપના છે કે જે કંઈ પણ રત્ન પેદા થાય છે તેના ઉપર રાજકુલનોજ અધિકાર છે શ્રેણિક રાજાના રાજ્ય કાલમાં બે રત્ન ઉત્પન્ન થયા છે-એક સેચનક ગંધહાથી

मलोपयन्तः सेचनकं गन्धहस्तिनम्, अष्टादशवक्रं च हारं कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्पयत, वैहल्ल्यं कुमारं प्रेषयत ।

ततः खलु स दूतः कूणिकस्य राज्ञस्तस्तथैव यावद् वर्धयित्वा एवमवादीत्–एवं खलु स्वामिन् ! कूणिको राजा विज्ञापयति–यानिकानीति यावत् वैहल्यं कुमारं प्रेषयत ।

ततः खलु स चेटको राजा तं दूतमेवमवादीत्–यथा चैव खलु देवानुप्रिय ! कूणिको राजा श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः चेल्लनाया देव्या आत्मजः,

---

एक सेचनक गन्धहाथी, दूसरा अठारह लडोवाला हार । हे स्वामिन् ! राजकुलकी परम्परागत स्थितिका नाश जिससे न हो इसलिये आप हाथी और हार मुझे अर्पित करदें और वैहल्ल्य कुमारको भेजदें ।

उसके बाद वह दूत कूणिक राजाकी इस विज्ञप्तिको स्वीकार कर अपने घर आया, और वहाँसे वैशालीनगरीमें जाकर राजा चेटकके सम्मुख उपस्थित हुआ । तथा उन्हे हाथ जोड जय विजय शब्दके साथ बधाकर, राजा कूणिककी विज्ञापना को इस प्रकार सुनायी–हे स्वामिन् ! राजा कूणिककी यह विज्ञापना है कि–जो कुछ भी रत्न उत्पन्न होता है उसपर राजकुलका अधिकार होता है । ये दोनों रत्न श्रेणिक राजाके राज्यकालमें उत्पन्न हुए हैं, इसलिये हे स्वामिन् ! जिससे राजकुलकी परम्परागत स्थिति विनष्ट न हो यह ध्यानमें लेकर हाथी और हारको देदें तथा वैहल्ल्यकुमारको भी कूणिक राजाके पास भेजदें ।

અને બીજુ અઢારસરનો હાર, હે સ્વામિન્ ! રાજકુલની પરંપરાગત સ્થિતિનો નાશ જેથી ન થાય તે માટે આપ હાથી અને હાર મને અર્પિત કરો અને વૈહલ્ય કુમારને મોકલી દો.

ત્યાર પછી તે દૂત કૂણિક રાજાની આ વિજ્ઞપ્તિનો સ્વીકાર કરી પોતાને ઘેર આવ્યો અને ત્યાંથી વૈશાલી નગરીમા જઈ રાજા ચેટકની સન્મુખ ઉપસ્થિત થયો. અને તેમને હાથ જોડી જય વિજય શબ્દથી વધાવી રાજા કૂણિકની વિજ્ઞાપનાને આ પ્રકારે સંભળાવી–હે સ્વામિન્ ! રાજા કૂણિકની એમ વિજ્ઞાપના છે કે જે કંઈ પણ રત્ન ઉત્પન્ન થાય તે તેના ઉપર રાજકુલનો અધિકાર હોય છે આ બે રત્નો શ્રેણિક રાજાના રાજ્ય કાલમા ઉત્પન્ન થયા છે માટે હે સ્વામિન્ ! જેથી રાજકુલની પરંપરાગત સ્થિતિ વિનષ્ટ ન થાય તે ધ્યાનમા લઈ હાથી તથા હારને અર્પણ કરો અને વૈહલ્ય કુમારને પણ કૂણિક રાજાની પાસે મોકલી આપો.

यथा प्रथम यावद् वैहल्ल्य च कुमार प्रेषयामि । त दूत सत्करोति सम्मानयति प्रतिविसर्जयति ।

ततः खलु स दूतो यावत् कूणिकस्य राज्ञो० वर्धयित्वा एवमवादीत्–चेटको राजा आज्ञापयति–यथा चैव खलु देवानुप्रिय ! कूणिको राजा श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः चेल्लनाया देव्या आत्मजः यावद् वैहल्य कुमार प्रेषयामि, तन्न ददाति खलु स्वामिन् ! चेटको राजा सेचनक गन्धहस्तिनम् अष्टादश वक्र च हार, वैहल्ल्य कुमार नो प्रेषयति ।

दूत द्वारा राजा कूणिककी ऐसी विज्ञप्ति सुनकर राजा चेटकने दूतसे इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया–हे देवानुप्रिय ! जिस प्रकार राजा कूणिक श्रेणिक राजाका पुत्र है, चेल्लना देवीका आत्मज है और मेरा दौहित्र है उसी प्रकार कुमार वैहल्ल्य भी श्रेणिक राजाका पुत्र–चेल्लना देवीका आत्मज और मेरा दौहित्र है, राजा श्रेणिकने अपनी जीवितावस्थामें ही सेचनक गन्धहाथी और अठारह लडीवाला हार कुमार वैहल्यको प्रेमसे दिया है अत. इनपर राज कुलका अधिकार नहीं है तो भी यदि राजा कूणिक हाथी और हार लेना चाहता है तो उसे चाहिये कि राज्य राष्ट्र और जनपदका आधा भाग कुमार वैहल्यको देदे । ऐसा करनेपर मैं हाथी और हारके साथ वैहल्यको भेज दूगा। ऐसा कहकर राजा चेटकने उस दूतका आदर सत्कार किया और उसे विसर्जित कर दिया । वह दूत वैशालीनगरीसे चलकर राजा कूणिकके पास आया और हाथ

દૂત દ્વારા રાજા કૂણિકની એવી વિજ્ઞપ્તિ સાભળી રાજા ચેટકે દૂતને આ પ્રકાર કહેવાનુ શરૂ કર્યું –હે દેવાનુપ્રિય ! જેવી રીતે રાજા કૂણિક શ્રેણિક રાજાનો પુત્ર છે ચેલ્લના દેવીનો આત્મજ છે તથા મારો દૌહિત્રો છે તેજ પ્રકારે કુમાર વૈહલ્લ્ય પણ શ્રેણીક રાજાનો પુત્ર છે ચેલ્લના દેવીનો આત્મજ તથા મારો દૌહિત્રો છે રાજા શ્રેણિકે પોતાની જીવિત અવસ્થામાજ સેચનક ગધહાથી તથા અઢાર સરવાળો હાર કુમાર વૈહલ્યને પ્રેમથી દીધેલો હોવાથી તેના ઉપર રાજકુલનો અધિકાર નથી તેમ છતા પણ જો રાજા કૂણિક હાથી અને હાર લેવા ચાહતા હોય તો તેમણે પણ રાજ્ય રાષ્ટ્ર તથા જનપદમા અરધો ભાગ કુમાર વૈહલ્યને આપવો જોઈએ એવુ કરવાથી હુ હાથી તથા હારની સાથે કુમાર વૈહલ્લ્યને મોકલી આપીશ એમ કહીને રાજા ચેટકે દૂતનો આદર સત્કાર કર્યો તથા તેને વિદાય આપી આ દૂત વૈશાલી નગરીથી નીકળી

ततः खलु स कूणिको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरक्तः यावन्मिसिमिसी-कुर्वन् तृतीय दूत शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व देवानुप्रिय! वैशाल्या नगर्यां चेटकस्य राज्ञो वामेन पादेन पादपीठमाक्राम, आक्रम्य कुन्ताग्रेण लेख प्रणायय, प्रणाय्य

जोड जय विजय शब्दके साथ उन्हें बधाकर इस प्रकार कहना आरम्भ किया-हे स्वामिन्। राजा चेटकने इस प्रकार उत्तर दिया कि-जिस प्रकार राजा कूणिक राजा श्रेणिकके पुत्र चेलना देवीके आत्मज और मेरा दौहित्र है उसी प्रकार कुमार वेहल्ल्य भी है। राजा श्रेणिकने अपनी जीवितावस्थामें ही सेचनक गधहाथी और अठारह लडीवाला हार वेहल्ल्य कुमारको प्रेमसे दिया है अत' इसपर राजकुलका अधिकार नहीं है, फिर भी यदि वह कुमार वेहल्ल्यके लिये अपने राज्य राष्ट्र और जनपदका आधा भाग देदे तो मैं हाथी और हार उसको देदूगा तथा वेहल्ल्य कुमारको भी भेज दूँगा। इसलिये हे स्वामिन्। राजा चेटकने न तो सेचनक गधहाथी और अठारह लडीवाला हार ही दिया और न कुमार वेहल्ल्यको भेजा।

उस दूतके मुखसे इस प्रकारका वचन सुनकर राजा कूणिक सहसा क्रोधसे जलने लगा और उसने तीसरी बार दूतको बुलाकर

રાજા કૂણિકની પાસે આવ્યો અને હાથ જોડી જય વિજય શબ્દથી તેને વધાવી આમ કહેવા લાગ્યો -

હે સ્વામિન્! રાજા ચેટકે એવા પ્રકારનો જવાબ દીધો કે જે પ્રકારે રાજા કૂણિક રાજા શ્રેણિકનો પુત્ર ચેલના દેવીનો આત્મજ તથા મારો દૌહિત્રો છે તે જ પ્રકારે વેહલ્લ્ય પણ છે રાજા શ્રેણીકે પોતાની હૈયાતીમાજ સેચનક ગધહાથી અને અઢાર સરનો હાર વેહલ્લ્ય કુમારને પ્રેમથી આપેલ હોવાથી તેના ઉપર રાજકુલનો અધિકાર નથી તેમ છતા પણ જો કુમાર વેહલ્લ્ય માટે પોતાના રાજ્ય રાષ્ટ્ર તથા જનપદનો અરધો ભાગ તે આપે તો હુ સેચનક ગધહાથી તથા અઢાર સરનો હાર તેને આપી દઇશ તથા વેહલ્લ્ય કુમારને પણ મોકલી દઇશ માટે હે સ્વામિન્! રાજા ચેટકે નથી દીધો સેચનક ગધહાથી કે નથી દીધો અઢાર સરનો હાર અને નથી મોકલ્યા કુમાર વેહલ્લ્યને

તે દૂતના મોઢેથી એવા વચન સાભળીને રાજા કૂણિક તરત ક્રોધથી આગની જેમ ગરમ થઇ ગયો અને તેણે ત્રીજી વાર દૂતને બોલાવીને કહ્યુ-હે દેવાનુપ્રિય!

स्सेहि, तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिंतो २ नयरेहितो पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता ममं अंतियं पाउब्भवह ।

तए ण ते कालाईया दस कुमारा कूणियस्स रन्नो एयम सोच्चा सएसु सएसु रज्जेसु पत्तेय२ ण्हायाजाव तिहि मणु स्सकोडीहि सद्धिं सपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेण सएहिंतो२ नयरेहिंतो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अगा जण- वए जेणेव चपा नयरी जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागया करयल० जाव वद्धावेंति ।

तएणं से कूणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेह हय गय-रह-चाउरगिणिं सेण सनाहेह, मम एय- माणत्तियं पच्चप्पिणह, जाव पच्चप्पिणति ।

तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवा- गच्छइ जाव पडिनिग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव नरवई दुरूढे ।

तए ण से कूणिए राया तिहि दतिसहस्सेहि जाव रवेणं चंप नयरिं मज्झ–मज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कालादीया दस कुमारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काला- इएहिं दसहि कुमारेहिं सद्धिं एगओ मेलायति ।

तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दतिसहस्सेहि तेत्ती- साए आससहस्सेहिं, तेत्तीसाए रहसहस्सेहि, तेत्तीसाए मणु स्सकोडीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं सुभेहिं वसहिपायरासेहिं नाइविप्पगिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे२ अग-

जणवयस्स मज्झ-मज्झेणं जेणेव विदेहे जणवए जेणेव वेसाली नयरी तेणेव पहारित्थ गमणाए ॥ ४३ ॥

छाया-ततः खलु स दूतः करतल० तथैव यावद् यत्रैव चेटको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतल० यावद् वर्धयति, वर्धयित्वा एवमवादीत्-एषा खलु स्वामिन्! मम विनयप्रतिपत्तिः, इदानीं कूणिकस्य राज्ञः आज्ञप्ति० चेटकस्य राज्ञो वामेन पादेन पादपीठमाक्रामति, आक्रम्य आशुरक्त० कुन्ताग्रेण लेख प्रणाययति तदेव सबलस्कन्धावार खलु इह हव्यमागच्छति।

'तएण से दूए' इत्यादि-राजा कूणिकके ऐसा कहनेपर उस दूतने राजाकी आज्ञाको हाथ जोडकर स्वीकार की और पहिलेके ही समान राजा चेटकके पास आया, आकर हाथ जोड जय विजय शब्दके साथ वधाकर इस प्रकार कहा कि-हे स्वामिन्! यह मेरा विनय है, और अब जो राजा कूणिककी आज्ञा है वह कहता हूँ, ऐसा कहकर अपने बाये पैरसे राजा चेटकके सिंहासनके पादपीठको ठोकर लगाता है और कोपसे आरक्त हो भालेकी नोकसे पत्र देकर कूणिकका सन्देश सुनाता है।

रे मृत्युको चाहनेवाले-निर्लज्ज! बुरे परिणामवाले मूर्ख राजा चेटक! वह कूणिक राजा तुझे आज्ञा देता है कि सेचनक गधहाथी और अठारह लडीवाला हार मुझे अर्पित करे, व कुमार वैहल्यका मेरे पास भेजदे, नहीं तो सग्रामके लिए तैयार होजा, राजा कूणिक सेना वाहन और शिबिरके साथ युद्धके लिए तत्पर होकर शीघ्र आरहा है।

तएण से दूए' ઇત્યાદિ

રાજા કૂણિકના કહેવા પછી તે દૂત રાજાની આજ્ઞાને હાથ જોડી સ્વીકાર કરી અને પહેલાની પેઠેજ રાજા ચેટકની પાસે આવ્યો આવીને હાથ જોડી જય વિજય શબ્દથી વધાવી આ પ્રકારે કહ્યુ કે-હે સ્વામિન્! આ મારી તરફનો વિનય છે અને હવે જે રાજા કૂણિકની આજ્ઞા છે તે કહુ છુ એમ કહીને પોતાના ડાબા પગથી રાજા ચેટકના સિંહાસનની પાસે રહેલા પાદપીઠને ઠોકર મારી દે છે તથા કોપથી લાલચોળ થઇ જઈ ભાલાની અણીથી પત્ર આપીને કૂણિકનો સદેશો સભળાવે છે-રે મૃત્યુને ચાહનારા નિર્લજ્જ, ખરાબ પરિણામવાળા મૂર્ખ રાજા ચેટક! તને કૂણિક રાજા આજ્ઞા દે છે કે-સેચનક ગધહાથી અને અઢાર સરવાળો હાર મને આપીદે અને કુમાર વૈહલ્યને મારી પાસે મોકલી દે અગર જો તેમ નહિ તો સગ્રામ માટે તૈયાર થઇ જા રાજા કૂણિક સેના, વાહન તથા શિબિરની સાથે યુદ્ધ માટે તત્પર થઇ તુરત આવી રહ્યા છે

ततः खलु स चेटको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरक्तः यावत् संहृत्य एवमवादीत्–नार्पयामि खलु कूणिकस्य राज्ञः सेचनकमष्टादशवक्रं हारं वेहल्यं च कुमारं नो प्रेषयामि, एष खलु युद्धसज्जोऽस्मि । तं दूतमसत्कारितमसम्मानितमपद्वारेण निष्कासयति ।

ततः खलु स कूणिको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरक्तः कालादीन् दशकुमारान् शब्दयित्वा एवमवादीत्–एवं खलु देवानुप्रियाः ! वेहल्यः कुमारो मम असंविदितं खलु सेचनकं गन्धहस्तिनम्

वह चेटक राजा उस दूतके मुँहसे इस प्रकारका सन्देश सुनकर कोपसे आरक्त हो उठा और आँखे तरेरकर इस प्रकार कहने लगा–रे दूत ! मैं कूणिकको न तो सेचनक गंधहाथी और अठारह लडीवाला हार ही दे सकता हूँ, और न कुमार वेहल्ल्यको ही भेज सकता हूँ, तू जा और कह दे जो कूणिकको करना हो सो करे, युद्धके लिए मै तैयार हूँ। ऐसा कहकर वह उस दूतको अपमानित (काला मुँहकर गधेपर बैठा) कर नगरके पिछले द्वारसे निकाल देता है ।

दूत वहाँसे चलकर वापस अपने राजा कूणिकके पास आया और उनको सारा वृत्तान्त सुनाया ।

कूणिक, दूतके मुखसे राजा चेटकका संवाद सुन कोपारक्त हो काल आदि दस कुमारोंको बुलवाता है और उन्हें बुलवाकर इस प्रकार कहता है–हे देवानुप्रियों ! वेहल्ल्य कुमार मुझसे विना कुछ

તે ચેટક રાજા તે દૂતના મોઢેથી આ પ્રકારનો સંદેશો સાભળીને કોપથી લાલચોળ થઈ ગયો તથા આખો કાઢી આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો–રે દૂત ! હું કૂણિકને ન તો સેચનક ગંધહાથી કે અઢાર સરવાળો હાર દઈ શકીશ કે ન તો કુમાર વૈહલ્યને પણ મોકલી શકીશ માટે તુ જા અને કહી દે કૂણિકને જે કરવું હોય તે કરે યુદ્ધ માટે હું તૈયાર છુ એમ કહીને તે દૂતને અપમાનિત કરી (મોઢું કાળુ કરી ગધેડા પર બેસાડી) નગરના પાછલા દરવાજેથી કાઢી મૂકે છે

દૂત ત્યાથી ચાલીને પાછો પોતાના રાજા કૂણિકની પાસે આવ્યો અને તેને સર્વ હકીકત સંભળાવી

કૂણિક દૂતના મોઢેથી રાજા ચેટકનો સંવાદ સાભળી કોપથી રક્ત થઈ કાલ આદિ દશ કુમારોને બોલાવે છે તથા તેમને બોલાવીને આ પ્રકારે કહે છે–હે દેવાનુપ્રિયો ! વૈહલ્ય કુમાર મને કાંઈ પણ કહ્યા વગરજ સેચનક ગંધહાથી અને અઢાર

अष्टादशवक्र हारम् अन्तपुर सभाण्ड च गृहीत्वा चम्पातो निष्कामति, निष्क्रम्य वैशालीम् आर्यक चेटकराजम् उपसपद्य विहरति। ततः खलु मया सेचनकस्य गन्धहस्तिन' अष्टादशवक्रस्य हारस्य अर्थाय दूता प्रेपिता', ते च चेटकेन राज्ञा अनेन कारणेन प्रतिषिद्धाः, अथोत्तर च खलु मम तृतीयो दूतः असत्कारितः, तम् अपद्वारेण निष्कासयति, तच्छ्रेय' खलु देवानुप्रियाः! अस्माक चेटकस्य राज्ञ युक्त ग्रहीतुम्।

तत. खलु कालादिका दश कुमाराः कूणिकस्य राज्ञ एतमर्थं विनयेन प्रतिशृण्वन्ति।

तत खलु स कूणिको राजा कालादीन् दश कुमारान् एवमवादीत्–

कहे हो सेचनक गधहाथी, अठारह लडीवाला हार, एव अपने अन्त.पुर परिवारके सहित सभी प्रकारकी गृहसामग्रियाँ लेकर चम्पानगरीसे निकल गया और निकलकर वैशालीनगरीमें राजा चेटकके पास जाकर रहने लगा है। इस समाचारको पाकर मैने हाथी और हारके लिए अपने दो दूतो को दो बार भेजे लेकिन राजा चेटकने हमारी बातको स्वीकार नही किया. फिर मैने तीसरे दूतको भेजा, परन्तु राजा चेटकने उसका अपमान कर उसे अपद्वारसे निकाल दिया। इसलिये हे–देवानुप्रियो! हम लोगोंको चाहिये कि हम राजा चेटकका निग्रह करे।

यह सुनकर वे काल आदि दस कुमारोने राजा कूणिककी इस बातको स्वीकार किया।

उसके बाद वह कूणिक राजा काल आदि दस कुमारोंको इस

નરનો હાર અને પોતાના અત પુર પરિવાર સહિત તમામ જાતની ગૃહસામગ્રી લઈને ચપાનગરીથી નીકળી ગયો અને જઈને વૈશાલી નગરીમા રાજા ચેટકની પાસે રહેવા લાગ્યો આ સમાચાર જાણીને હાથી તથા હાર માટે મે મારા બે દૂતોને બે વાર મોકલ્યા પણ રાજા ચેટકે મારી વાતનો સ્વીકાર કર્યો નથી પછી મે ત્રીજા દૂતને મોકલાવ્યો પણ રાજા ચેટકે તેનું અપમાન કરી તેને પાછલે દરવાજેથી કાઢી મૂક્યો. માટે હે દેવાનુપ્રિયો! આપણા માટે આવશ્યક છે કે રાજા ચેટકનો નિગ્રહ કરવો

આ સાભળી તે કાલ આદિ દશ કુમારોએ રાજા કૂણિકની આ વાતનો સ્વીકાર કર્યો

ત્યાર પછી તે કૂણિક રાજા કાલ આદિ દશ કુમારોને આ પ્રમાણે કહે છે–

ततः खलु स चेटको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरक्तः यावत् संहृत्य एवमवादीत्–नार्पयामि खलु कूणिकस्य राज्ञः सेचनकमष्टादशवक्रं हारं वैहल्यं च कुमारं नो प्रेषयामि, एष खलु युद्धसज्जस्तिष्ठामि । तं दूतमसत्कारितमसम्मानितमपद्वारेण निष्कासयति ।

ततः खलु स कूणिको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरक्तः कालादीन् दशकुमारान् शब्दयित्वा एवमवादीत्–एवं खलु देवानुप्रियाः ! वैहल्यः कुमारो मम असंविदितः खलु सेचनकं गन्धहस्तिनम्

वह चेटक राजा उस दूतके मुँहसे इस प्रकारका सन्देश सुनकर कोपसे आरक्त हो उठा और आँखे तरेरकर इस प्रकार कहने लगा–रे दूत ! मैं कूणिकको न तो सेचनक गंधहाथी और अठारह लडीवाला हार ही दे सकता हूँ, और न कुमार वेहल्लयको ही भेज सकता हूँ, तू जा और कह दे जो कूणिकको करना हो सो करे, युद्धके लिए मै तैयार हूँ। ऐसा कहकर वह उस दूतको अपमानित (काला मुँहकर गधेपर बैठा) कर नगरके पिछले द्वारसे निकाल देता है ।

दूत वहाँसे चलकर वापस अपने राजा कूणिकके पास आया और उनको सारा वृत्तान्त सुनाया ।

कूणिक, दूतके मुखसे राजा चेटकका संवाद सुन कोपारक्त हो काल आदि दस कुमारोंको बुलवाता है और उन्हें बुलवाकर इस प्रकार कहता है–हे देवानुप्रियों ! वेहल्लय कुमार मुझसे बिना कुछ

તે ચેટક રાજા તે દૂતના મોઢેથી આ પ્રકારનો સંદેશો સાંભળીને કોપથી લાલચોળ થઈ ગયો તથા આંખો કાઢી આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો–રે દૂત ! હું કૂણિકને ન તો સેચનક ગંધહાથી કે અઢાર સરવાળો હાર દઈ શકીશ કે ન તો કુમાર વેહલ્લયને પણ મોકલી શકીશ માટે તું જા અને કહી દે કૂણિકને જે કરવું હોય તે કરે યુદ્ધ માટે હું તૈયાર છું એમ કહીને તે દૂતને અપમાનિત કરી (મોઢું કાળું કરી ગધેડા પર બેસાડી) નગરના પાછલા દરવાજેથી કાઢી મૂકે છે

દૂત ત્યાંથી ચાલીને પાછો પોતાના રાજા કૂણિકની પાસે આવ્યો અને તેને સર્વ હકીકત સંભળાવી

કૂણિક દૂતના મોઢેથી રાજા ચેટકનો સંવાદ સાંભળી કોપથી રક્ત થઈ કાલ આદિ દશ કુમારોને બોલાવે છે તથા તેમને બોલાવીને આ પ્રકારે કહે છે–હે દેવાનુપ્રિયો ! વેહલ્લય કુમાર મને કાંઈ પણ કહ્યા વગરજ સેચનક ગંધહાથી અને અઢાર

अष्टादशवक्र हारम् अन्तपुर सभाण्ड च गृहीत्वा चम्पातो निष्क्रामति, निष्क्रम्य वैशालीम् आर्यक चेटकराजम् उपसपद्य विहरति। ततः खलु मया सेचनकस्य गन्धहस्तिनः अष्टादशवक्रस्य हारस्य अर्थाय दूता प्रेषिता', ते च चेटकेन राज्ञा अनेन कारणेन प्रतिषिद्धा', अथोत्तर च खलु मम तृतीयो दूतः असत्कारितः, तम् अपद्वारेण निष्कासयति, तच्छ्रेयः खलु देवानुप्रियाः! अस्माक चेटकस्य राज्ञ युक्त ग्रहीतुम्।

तत. खलु कालादिका. दश कुमारा. कूणिकस्य राज्ञः एतमर्थं विनयेन प्रतिशृण्वन्ति।

तत खलु स कूणिको राजा कालादीन् दश कुमारान् एवमवादीत्—

कहे ही सेचनक गधहाथी, अठारह लडीवाला हार, एव अपने अन्त.पुर परिवारके सहित सभी प्रकारकी गृहसामग्रियाँ लेकर चम्पानगरीसे निकल गया और निकलकर वैशालीनगरीमे राजा चेटकके पास जाकर रहेने लगा है। इस समाचारको पाकर मैने हाथी और हारके लिए अपने दो दूतो को दो बार भेजे लेकिन राजा चेटकने हमारी बातको स्वीकार नही किया, फिर मैने तीसरे दूतको भेजा, परन्तु राजा चेटकने उसका अपमान कर उसे अपद्वारसे निकाल दिया। इसलिये हे-देवानुप्रियो! हम लोगोको चाहिये कि हम राजा चेटकका निग्रह करे।

यह सुनकर वे काल आदि दस कुमारोने राजा कूणिककी इस बातको स्वीकार किया।

उसके बाद वह कूणिक राजा काल आदि दस कुमारोंको इस

સરનો હાર અને પોતાના અત પુર પરિવાર સહિત તમામ જાતની ગૃહસામગ્રી લઈને ચપાનગરીથી નીકળી ગયો અને જઈને વૈશાલી નગરીમા રાજા ચેટકની પાસે રહેવા લાગ્યો આ સમાચાર જાણીને હાથી તથા હાર માટે મે મારા બે દૂતોને બે વાર મોકલ્યા પણ રાજા ચેટકે મારી વાતનો સ્વીકાર કર્યો નથી પછી મે ત્રીજા દૂતને મોકલાવ્યો પણ રાજા ચેટકે તેનું અપમાન કરી તેને પાછલે દરવાજેથી કાઢી મૂક્યો માટે હે દેવાનુપ્રિયો! આપણા માટે આવશ્યક છે કે રાજા ચેટકનો નિગ્રહ કરવો.

આ સાભળી તે કાલ આદિ દશ કુમારોએ રાજા કૂણિકની આ વાતનો સ્વીકાર કર્યો

ત્યાર પછી તે કૂણિક રાજા કાલ આદિ દશ કુમારોને આ પ્રમાણે કહે છે—

ततः खलु स चेटको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरक्तः यावत् संहृत्य एवमवादीत्-नार्पयामि खलु कूणिकस्य राज्ञः सेचनकमष्टादशवक्र हारं वैहल्यं च कुमारं नो प्रेषयामि, एष खलु युद्धसज्जस्तिष्ठामि । तं दूतमसत्कारितमसम्मानितमपद्वारेण निष्कासयति ।

ततः खलु स कूणिको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरक्तः कालादीन् दशकुमारान् शब्दयित्वा एवमवादीत्-एवं खलु देवानुप्रियाः ! वैहल्यः कुमारो मम असंविदितं खलु सेचनकं गन्धहस्तिनम्

वह चेटक राजा उस दूतके मुँहसे इस प्रकारका सन्देश सुनकर कोपसे आरक्त हो उठा और आँखे तरेरकर इस प्रकार कहने लगा-रे दूत ! मैं कूणिकको न तो सेचनक गंधहाथी और अठारह लडीवाला हार ही दे सकता हूँ, और न कुमार वैहल्यको ही भेज सकता हूँ, तू जा और कह दे जो कूणिकको करना हो सो करे, युद्धके लिए मै तैयार हूँ। ऐसा कहकर वह उस दूतको अपमानित (काला मुँहकर गधेपर बैठा) कर नगरके पिछले द्वारसे निकाल देता है ।

दूत वहाँसे चलकर वापस अपने राजा कूणिकके पास आया और उनको सारा वृत्तान्त सुनाया ।

कूणिक, दूतके मुखसे राजा चेटकका संवाद सुन कोपारक्त हो काल आदि दस कुमारोंको बुलवाता है और उन्हें बुलवाकर इस प्रकार कहता है-हे देवानुप्रियों ! वैहल्य कुमार मुझसे बिना कुछ

તે ચેટક રાજા તે દૂતના મોઢેથી આ પ્રકારનો સંદેશો સાંભળીને કોપથી લાલચોળ થઈ ગયો તથા આંખો કાઢી આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો-રે દૂત ! હું કૂણિકને ન તો સેચનક ગંધહાથી કે અઢાર સરવાળો હાર દઈ શકીશ કે ન તો કુમાર વૈહલ્યને પણ મોકલી શકીશ માટે તુ જા અને કહી દે કૂણિકને જે કરવું હોય તે કરે યુદ્ધ માટે હું તૈયાર છુ એમ કહીને તે દૂતને અપમાનિત કરી (મોઢું કાળું કરી ગધેડા પર બેસાડી) નગરના પાછલા દરવાજેથી કાઢી મૂકે છે

દૂત ત્યાંથી ચાલીને પાછો પોતાના રાજા કૂણિકની પાસે આવ્યો અને તેને સર્વ હકીકત સંભળાવી

કૂણિક દૂતના મોઢેથી રાજા ચેટકનો સંવાદ સાંભળી કોપથી રક્ત થઈ કાલ આદિ દશ કુમારોને બોલાવે છે તથા તેમને બોલાવીને આ પ્રકારે કહે છે-હે દેવાનુપ્રિયો ! વૈહલ્ય કુમાર મને કાંઈ પણ કહ્યા વગરજ સેચનક ગંધહાથી અને અઢાર

ततः खलु स कूणिको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! आभिषेक्यं हस्तिरत्नं प्रतिकल्पयत, हय-गज-रथ-चतुरङ्गिणीं सेनां सनह्यत ममैतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत यावत् प्रत्यर्पयन्ति ।

ततः खलु स कूणिको राजा यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति यावत् प्रतिनिर्गत्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यावत् नरपतिर्दूरूढः ।

ततः खलु स कूणिको राजा त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावत् रवेण चम्पा नगरीं मध्य-मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव कालादिका दश कुमारास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कालादिकैर्दशभिः कुमारैः सार्द्धमेकतो मिलति ।

काल आदि दस कुमारोंके आनेके बाद वह कूणिक राजा अपने कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलाता है और बुलाकर इस प्रकार कहता है-हे देवानुप्रियों ! शीघ्रातिशीघ्र आभिषेक्य (पट्ट) हाथीको सजाओ तथा घोडे, हाथी, रथ और चतुरङ्गिणी सेनाको सनद्ध करो । मेरी आज्ञानुसार तैयारी कर मुझे सूचित करो । राजा कूणिककी इस आज्ञाको सुनकर उन्होंने राजाके कथनानुसार सभी कार्य करके राजाको सूचित किया ।

उसके बाद वह कूणिक राजा जहाँ स्नानगृह था वहाँ आया, और स्नानादि कृत्योंसे निवृत्त हो, वहासे निकलकर जहाँ बाहरी सभामण्डप था वहाँ पहुँचा । और वहाँ आकर वह राजा सभी प्रकारसे सुसज्जित हो अपने आभिषेक्य हाथी पर चढा ।

उसके बाद वह कूणिक राजा तीन २ हजार हाथी घोडे रथ

કાલ આદિ દશ કુમારો આવ્યા પછી કૂણિક રાજા પોતાના કૌટુમ્બિક પુરૂષોને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા-હે દેવાનુપ્રિયો ! એકદમ જલદીથી આભિષેક્ય (પટ્ટ) હાથીને સજાવો તથા ઘોડા હાથી રથ અને ચતુરંગિણી સેનાને તૈયાર કરો મારી આજ્ઞા પ્રમાણે તૈયારી કરી મને ખબર આપો રાજા કૂણિકની આ આજ્ઞાને સાભળી તેઓએ રાજાના કહેવા પ્રમાણે બધા કાર્ય કરી રાજાને ખબર આપી

ત્યાર પછી તે કૂણિક રાજા જ્યા સ્નાનગૃહ હતુ ત્યા આવ્યા અને સ્નાન આદિ કૃત્યોથી નિવૃત્ત થઇ ત્યાથી નીકળી જ્યા બહારનો સભામંડપ હતો ત્યા પહોચ્યા અને ત્યા આવીને તે રાજા તમામ પ્રકારે સુસજ્જિત થઇને પોતાના આભિષેક્ય હાથી ઉપર બેઠા

ત્યાર પછી તે કૂણિક રાજા ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી ઘોડા રથ તથા ત્રણ કરોડ

गच्छत खलु यूय देवानुप्रियाः! स्वकेषु राज्येषु प्रत्येक प्रत्येक स्नाता यावत् प्रायश्चित्ताः हस्तिस्कन्धवरगताः प्रत्येक प्रत्येक त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः, एव त्रिभी रथसहस्रैः, त्रिभिरश्वसहस्रैः, तिसृभिर्मनुष्यकोटिभिः सार्द्ध सपरिवृताः सर्वर्द्धया यावद्-रवेण स्वकेभ्य' स्वकेभ्यो नगरेभ्य. प्रतिनिष्कामत, प्रति निष्क्रम्य ममान्तिक प्रादुर्भवत।

ततः खलु ते कालादिका दशकुमारा. कूणिकस्य राज्ञ एतमर्थ श्रुत्वा स्वकेषु स्वकेषु प्रत्येक प्रत्येक स्नाता यावत् तिसृभिर्मनुष्यकोटिभि' सार्द्ध सपरिवृता. सर्वर्द्धया यावद् रवेण स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो नगरेभ्यः प्रतिनिष्का मन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव अङ्गा जनपदा, यत्रैव चम्पानगरी, यत्रैव कूणिको राजा तत्रैवोपागता. करतल० यावद् वर्धयन्ति।

प्रकार कहता है-हे देवानुप्रियो! तुम लोग अपने२ राज्यमें जाओ। वहाँ जाकर स्नान और मागलिक कृत्यकर हाथीपर चढ, तुममेंसे हरेक कुमार तीन२ हजार हाथी, तीन२ हजार रथ, तीन२ हजार घोडे, एव तीन२ करोड सैनिकोंके सहित सभी प्रकारकी सामग्रियोंसे युक्त हो सज-धजकर बाजे-गाजे सहित अपने२ नगरोंसे निकलो और मेरे पास आओ।

यह सुनकर वे काल आदि दस कुमार अपने २ राज्यमें गये वहाँ जाकर कूणिकके निर्देशानुसार सभी प्रकारकी सामग्रीयोंसे युक्त हो अपने २ नगरसे निकले। और अग देश चम्पानगरीमें राजा कूणिकके पास आए और हाथ जोड जय विजयके साथ राजाको वधाये।

હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો પોત-પોતાના રાજ્યમા જાઓ ત્યા જઇને સ્નાન તથા માગલિક કર્મ કરી હાથી ઉપર ચડી તમારામાના દરેક કુમાર ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી, ત્રણ-ત્રણ હજાર રથ, ત્રણ-ત્રણ હજાર ઘોડા અને ત્રણ ત્રણ કરોડ સૈનિકો સાથે તમામ પ્રકારની સામગ્રી લઈ તૈયાર થઇ વાજતે ગાજતે પોતપોતાના નગરોમાથી નીકળી મારી પાસે આવો.

આ સાભળી તે કાલ આદિ દશ કુમારો પોતપોતાના રાજ્યમા ગયા ત્યા જઇને કૂણિકના કહ્યા પ્રમાણે તમામ પ્રકારની તૈયારી કરી અને સર્વ પ્રકારની સામગ્રી લઇને પોતપોતાના નગરોમાથી નીકળ્યા અને અગ દેશના ચપા નગરીમા રાજા કૂણિકની પાસે આવ્યા ત્યાં આવીને હાથ જોડી જય વિજય શબ્દોથી રાજાને વધાવ્યા

अट्ठारसवकं च हारं गहाय इहं हव्वमागए, तए णं कूणिएणं सेयणगस्स अट्ठारसवकस्स य अट्ठाए तओ दूया पेसिया, ते य मए इमेण कारणेण पडिसेहिया ।

तए णं से कूणिए मम एयमट्ठं अपडिसुणमाणे चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडे जुज्झसज्जे इह हव्वमागच्छइ, तं किं नु देवाणुप्पिया ! सेयणगं अट्ठारसवकं च कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामो ? वेहल्लं कुमारं पेसेमो ? उदाहु जुज्झित्था ? तए णं नवमल्लइ-नवलेच्छइ-कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो चेडगं रायं एवं वयासी-न एयं सामी ! जुत्तं वा पत्तं वा रायसरिसं वा जन्नं सेयणगं अट्ठारसवंकं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणिज्जइ, वेहल्ले य कुमारे सरणागए पेसिज्जइ, तं जइ णं कूणिए राया चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुज्झसज्जे इह हव्वमागच्छइ । तो णं अम्हे कूणिएणं रण्णा सद्धिं जुज्झामो ।

तए णं से चेडए राया ते नवमल्लइ-नवलेच्छइ-कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाओ एवं वयासी-जइणं देवाणुप्पिया ! तुब्भे कूणिएणं रन्ना सद्धिं जुज्झइ, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! । सएसु२ रज्जेसु ण्हाया जहा कालादीया जाव जएणं विजएणं वद्धावेति ।

तए णं से चेडए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-आभिसेक्कं जहा कूणिए जाव दुरूढे ।

तएणं से चेडए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं जहा कूणिए जाव वेसालिं नयरिं मज्झं-मज्झेणं निगच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव ते नवमल्लई-नवलेच्छई-कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो तेणेव उवागच्छइ ।

ततः खलु स कूणिको राजा त्रयस्त्रिंशता: दन्तिसहस्रै', यत्र त्रिंशता ऽश्वसहस्रै', त्रयस्त्रिंशता रथसहस्रैः, त्रयस्त्रिंशता मनुष्यकोटिभिः सार्द्धं सपरिवृत. सर्वद्धर्या यावद् रवेण शुभैर्वसतिप्रातराशैः=नातिविप्रकृष्टैरन्तरावासैः वसन्२ अङ्गजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव विदेहो जनपद यत्रैव वैशाली नगरी तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ॥ ४३ ॥

टीका—'तएण से दूए' इत्यादि—अपद्वारेण लघुद्वारेण, गुप्तद्वारेण वा गृहपश्चाद्भागेनेत्यर्थः । दूरुढ=आरूढः, युक्तम्=उचित योग्यमिति यावत्, शेष सुगमम् ॥ ४३ ॥

मूलम्—तएणं से चेडए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे नवमल्लइ-नवलेच्छइ-कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदित्ते णं सेयणग गन्धहत्थि

और तीन करोड सैनिकोंके सहित सभी रणसामग्रीयोंके साथ चम्पा नगरीके मध्यसे होकर निकला, निकलकर जहाँ काल आदि दस कुमार थे वहाँ आया, और काल आदि दस कुमारोसे मिला ।

उसके बाद वह कूणिक राजा तेतीस हजार घोडे, तेतीस हजार रथ ओर तेतीस करोड सैनिकोसे घिरा हुआ सभी तरहकी सामग्री युक्त बाजे-गाजेके साथ शुभ स्थानोमे खान-पान करता हुआ थोडी २ दूर पर डेरा डालकर विश्राम करता हुआ अङ्ग देशके बीचो-बीचसे जहाँ विदेह देश था, जहा वैशाली नगरी थी वहीं पर जानेका निश्चय किया ॥ ४३ ॥

सनिको सहित तमाम युद्धनी सामग्रीओ साथे चपा नगरीना मध्यभागमा थईने नीकळ्या अने त्याथी नीकळी ज्या काल आदि दश कुमारो हता त्या आव्या अने काल आदि दश कुमारोने मळ्या

त्यार पछी ते कूणिक राजा तेत्रीस हजार हाथी, तेत्रीस हजार घोडा तेत्रीस हजार रथ तथा तेत्रीस करोड सैनिकोथी घेरायला अने तमाम जातनी युद्ध सामग्री युक्त थई वाजते गाजते शुभ स्थानोमा खान-पान करता थोडे थोडे दूर पर मुकाम करता करता विश्राम लेता थका अग देशनी वच्चो-वच्च थईने ज्या विदेह देश हतो ज्या वैशाली नगरी हती त्या जवानो निश्चय कर्यो (४३)

मागतः, ततः खलु कूणिकेन सेचकस्य अष्टादशवक्रस्य चार्थाय त्रयो दूताः प्रेषिताः, ते च मयाऽनेन कारणेन प्रतिषिद्धाः । ततः खलु स कूणिको मम एतमर्थमप्रतिशृण्वन् चातुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं सपरिवृतः युद्धसज्ज इह हव्यमागच्छति तत् किं नु देवानुप्रिया ! सेचनकमष्टादशवक्रं च कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्पयामः, वैहल्ल्यं कुमारं प्रेषयामः, उताहो ! युध्यामहे ? ।

ततः खलु नवमल्लकि–नवलेच्छकि–काशी–कोशलका अष्टादशापि गणराजाश्चेटकं राजानमेवमवादिषुः–नैतत् स्वामिन् ! युक्तं वा, प्राप्तं वा राजसदृशं वा यत्खलु सेचनकमष्टादशवक्रं कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्प्यते, वैहल्ल्यश्च कुमारः शरणागतः प्रेष्यते, तद् यदि खलु कूणिको राजा चातुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं

आया । इसका समाचार पाकर कूणिकने मेरे पास तीन दूत भेजे, परन्तु मैंने उन दूतोंको कारण बताकर मना कर दिया । उसके बाद कूणिकने मेरी बातको न मानकर चतुरङ्गिणी सेनाके साथ लडाईके लिये तैयार होकर यहाँ आ रहा है । तो क्या हे देवानुप्रियो ! सेचनक गंधहाथी और अठारह लडीवाला हार राजा कूणिकको देदें और वैहल्ल्यकुमारको उसके पास भेजदें अथवा उससे लडें ?

उसके बाद वे अठारहों गणराजाओंने हाथ जोडकर इस प्रकार कहा—हे स्वामिन् ! न यह युक्त है, न ऐसा करनेकी आवश्यकता है, न यह राजकुलको उचित ही है, जो आप सेचनक गन्धहाथी और अठारह लडीवाला हार राजा कूणिकको अर्पित करें और शरणमें आए हुए कुमार वैहल्ल्यको लौटादें । हे स्वामिन ! यदि

કૂણિકે મારી પાસે ત્રણ દૂત મોકલ્યા પણ મે તે દૂતોને કારણ બતાવી ના પાડી દીધી ત્યાર પછી કૂણિકે મારી વાત ને નહિ માનીને ચતુરંગિણી સેના સાથે લડાઈ માટે તૈયાર થઇને અહીં આવી રહ્યો છે તો શું હે દેવાનુપ્રિયો ! સેચનક ગંધહાથી અને અઢાર સરનો હાર રાજા કૂણિકને આપી દેવો અને વૈહલ્ય કુમારને તેની પાસે મોકલી દેવો કે તેની સાથે લડાઇ કરવી ?

ત્યાર પછી તે અઢારે ગણ રાજાઓએ હાથ જોડીને આ પ્રમાણે કહ્યું—હે સ્વામિન્ ! નથી તો આ વાજબી કે નથી આવી રીતે કરવાની આવશ્યકતા વળી આ પ્રમાણે કરવું રાજકુલને ઉચિત પણ નથી કે આપ સેચનક ગંધ હાથી તથા અઢાર સરવાળો હાર રાજા કૂણિકને અર્પણ કરી દીઓ અને શરણે આવેલા કુમાર વૈહલ્યને પાછો મોકલી દીઓ. હે સ્વામિન્ ! જો રાજા કૂણિક ચતુરંગિણી સેના લઇને

तएणं से चेडए राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं, सत्तावन्नाए आससहस्सेहिं, सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीएहि सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं सुभेहिं वसहिपायरासेहिं नातिविप्पगिट्ठेहिं अंतरेहिं वसमाणे२ विदेहं जणवयं मज्झ-मज्झेणं जेणेव देसपते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंधावारनिवेसणं करेइ, कूणिय राय पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे चिट्ठइ ।

तएणं से कूणिए राया सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव देसपते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेडयस्स रन्नो जोयणंतरियं खंधावारनिवेसं करेइ ।

तए ण से दोन्नि वि रायाणो रणभूमि सज्जावेंति, सज्जावित्ता रणभूमिं जयंति ॥ ४४ ॥

छाया—ततः खलु स चेटको राजा अस्याः कथायाः लब्धार्थः सन् नवमल्लकि-नवलेच्छकि-काशी-कौशलकान् अष्टादशापि गणराजान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एवं खलु देवानुप्रियाः ! वैहल्यः कुमारः कूणिकस्य राज्ञः असंविदितेन सेचनकं गन्धहस्तिनमष्टादशवक्रं च हारं गृहीत्वा इह हव्य

'तएण से चेडए' इत्यादि-

उसके बाद उस चेटक राजाने कूणिककी चढाईके समाचार सुनकर काशी और कोशल देशके नौ मल्लकी-नौ लेच्छकी इन अठारहो गणराजाओंको बुलाकर उनसे इस प्रकार कहना आरम्भ किया-

हे देवानुप्रियों ! वैहल्यकुमार राजा कूणिकसे डरकर सेचनक गन्धहाथी ओर अठारह लडीवाला हार लेकर मेरे पास चला

'तएण से चेडए' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે ચેટક રાજાએ કૂણિકની ચડાઈના સમાચાર સાભળી તેણે કાશી તથા કોશલ દેશના નવ મલ્લકી અને નવ લેચ્છકી એમ અઢાર ગણરાજાઓને બોલાવી તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા

હે દેવાનુપ્રિયો! વૈહલ્ય કુમાર રાજા કૂણિકથી ડરીને સેચનક ગધહાથી તથા અઢાર સરવાળો હાર લઈને મારી પાસે આવ્યો

ततः खलु स चेटको राजा त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यथा कूणिको यावद् वैशालीं नगरी मध्य-मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ते नवमल्लकी-नवलेच्छकी-काशी-कौशलका अष्टादशापि गणराजास्तत्रैवोपागच्छति।

ततः खलु स चेटको राजा सप्तपञ्चाशता दन्तिसहस्रै', सप्तपञ्चाशता अश्वसहस्रैः, सप्तपञ्चाशता रथसहस्रैः, सप्तपञ्चाशता मनुस्यकोटिभि , सार्द्धं सपरिवृतः सर्वद्धर्या यावद् रवेण शुभैर्वसतिभातराशैर्नातिविप्रकृष्टैरन्तरैर्वसन् २ विदेह जनपद मध्य-मध्येन यत्रैव देशमान्तस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्कन्धावारनिवेशन करोति, कृत्वा कूणिक राजान प्रतिपालयन् युद्धसज्जस्तिष्ठति।

तत खलु स कूणिको राजा सर्वद्धर्या यावद् रवेण यत्रैव देशप्रान्तस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चेटकस्य राज्ञो योजनान्तरितं स्कन्धावारनिवेश करोति।

आज्ञा देता है। कूणिकके समान वह भी अपने पट्टहाथीपर चढता है।

वहाँसे वह चेटक राजा तीन २ हजार हाथी, घोडे, रथ और तीन करोड सैनिकोंके साथ कूणिकके समान ही अपनी वैशालीनगरीके बीचो-बीच होकर जहाँ वे अठारहों गणराजा थे वहाँ आया।

और वहाँ चेटक राजा सत्तावन हजार हाथी, सत्तावन हजार घोडे, सत्तावन हजार रथ, ओर सत्तावन कोटि सैनिकोंसे परिवेष्ठित हो सभी प्रकारके साज-बाज और बाजे-गाजेके साथ अच्छे स्थानोंमें प्रातःकालिक भोजन करते हुए थोडी २ दूरपर डेरा डालकर विश्राम करते हुए विदेह देशके बीचो-बीचसे होते हुए जहाँ देशका प्रान्त-सीमाभाग था वहाँ आया। वहाँ आकर अपने शिविर तैयार करवाया और लडाईके लिये राजा कूणिककी प्रतीक्षा करने लगा।

त्याथी ते चेटक राजा त्रण त्रण हजार हाथी घोडा रथ अने त्रण करोड सैनिको साथे कूणिकनी पेठेज पोतानी वैशाली नगरीनी वचमा थईने ज्या ते अढार गण राजाओ हता त्या आव्या

अने त्या ते चेटक राजा सत्तावन हजार हाथी सत्तावन हजार घोडा सत्तावन हजार रथ तथा सत्तावन करोड सैनिकोथी घेराईने तमाम प्रकारना साज बाज अने वाजा गाजानी साथे साग सारा स्थानोमा प्रात कालिक भोजन करता थका, थोडे थोडे दूर मुकाम करता थका, विश्राम लेता थका, विदेह देशनी वच्चो-वच्च थईने ज्या देशनी सरहद हती त्या आव्या त्या आवीने पोतानी छावणी तैयार करावी अने लडाई माटे राजा कूणिकनी राह जोवा लाग्या

सपरिवृतो युद्धसज्ज इह हव्यमागच्छति तदा खलु वयं कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं युध्यामहे ।

ततः खलु स चेटको राजा तान् नवमल्लकि-नवलेच्छकि-काशीकोशलकान् अष्टादशापि गणराजान् एवमवादीत्=यदि खलु देवानुप्रियाः! यूयं कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं युध्यध्वं, तद्गच्छत खलु देवानुप्रियाः! स्वकेषु स्वकेषु राज्येषु, स्नाता यथा कालादिका यावद् जयेन विजयेन वर्द्धयन्ति ।

ततः खलु स चेटको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-आभिषेक्यं यथा कूणिको यावद् दूरूढः ।

राजा कूणिक चतुरङ्गिणी सेनाके साथ लडाइके लिये तैयार हो आ रहा है तो हम लोग भी लडनेके लिए तैयार है ।

उन राजाओंकी ऐसी बातें सुनकर राजा चेटकने उन अठारहों राजाओंसे इस प्रकार कहा-यदि हे देवानुप्रियो! तुम लोग कूणिकसे लडना चाहते हो तो अपने २ राज्यमे जाओ और वहाँ जाकर स्नान आदि क्रिया करके लडनेके लिए काल आदि कुमारोंके समान तुम भी सेना आदिसे सज्ज हो यहाँ आओ । राजा चेटककी आज्ञा पाकर वे गणराजा अपने २ राज्यमे जाकर वहाँसे सभी प्रकारकी सैन्य सामग्रियोसे युक्त हो राजा चेटककी सहायताके लिये वैशाली नगरीमे आते हैं और राजा चेटकको जय विजयके साथ बधाते हैं।

उसके बाद वह चेटक राजा अपने कौटुम्बिक पुरुषोको बुलवाता है और उनसे अपना आभिषेक्य हाथीको सज्जित करके लानेकी

લડાઈ માટે તૈયારી કરીને આવે છે તો અમે લોકો પણ લડવા માટે તૈયાર છીએ

તે રાજાઓની એ પ્રમાણે વાતો સાભળી રાજા ચેટકે તે અઢારે રાજાઓને આ પ્રકારે કહ્યુ–હે દેવાનુપ્રિયો! જો તમે લોકો કૂણિક સાથે લડવા ચાહતા હો તો પોતપોતાના રાજ્યમા જાઓ અને ત્યા જઈ સ્નાન આદિ વગેરે ક્રિયા કરી લડવા માટે કાલ આદિ કુમારોની સમાન તમે પણ સેના આદિથી સજ્જ થઈ અહીં આવો રાજા ચેટકની આજ્ઞા સાભળી તે ગણુરાજાઓ પોતપોતાના રાજ્યમા જઈ અને ત્યાથી સર્વ પ્રકારની સૈન્ય સામગ્રીથી યુકત થઈ રાજા ચેટકને સહાયતા કરવા માટે વૈશાલી નગરીમા આવે છે અને રાજા ચેટકને જય વિજયના શબ્દ સાથે વધાવે છે

ત્યાર પછી તે ચેટક રાજા પોતાના કૌટુમ્બિક પુરૂષોને બોલાવે છે અને તેમને પોતાનો આભિષેકય (પટ્ટ) હાથી સજ્જ કરી લાવવા આજ્ઞા આપે છે કૂણિકની પેઠે તે પણ પોતાના પટ્ટ હાથી પર બેસે છે

पायत्तिया पायत्तिएहिं, अन्नमन्नेहिं सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था।

तएण ते दोण्ह वि रायाणं अणीया णियगसामीसासणाणुरत्ता महतं जणक्खय जणवह जणप्पमद्द जणसवट्टकप्प नच्चंतकवधवारभीम रुहिरकद्दमं करेमाणा अन्नमन्नेण सद्धि जुज्झति।

तएण से काले कुमारे तिहिं दतिसहस्सेहिं जाव मणुस्सकोडीहिं गरुलवूहेणं एक्कारसमेणं खंधेणं कूणियरहमुसल सगामं संगामेमाणे हयमहियजहा भगवया कालीए देवीए परिकहिय जाव जीवियाओ ववरोविए।

तं एय खलु गोयमा! काले कुमारे एरिसएहि आरभेहिं जाव एरिसएण असुभकडकम्मपब्भारेण कालमासे काल किच्चा चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरए नेरइयत्ता उववन्ने।

काले ण भंते! कुमारे चउत्थीए पुढवीए अणतर उवट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?। गोयमा। महाविदेहे वासे जाइ कुलाइं भवति अड्ढाइ जहा दढप्पइन्नो जाव सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ जाव अतं काहिइ। तं एव खलु जवू! समणेण भगवया जाव सपत्तेण निरयावलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ ४५ ॥

॥ पढमं अज्झयणं समत्त ॥ १ ॥

छाया—तत खलु म कूणिकस्त्रयस्त्रिंशता दन्तिसहस्रैर्यावन्मनुष्यकोटिभि' गरुडव्यूह रचयति, रचयित्वा गरुडव्यूहेन रथमुशल सङ्ग्राममुपायात।

तत' खलु स चेटको राजा सप्तपञ्चाशता दन्तिसहस्रैर्यावत् सप्तपञ्चाशता मनुष्यकोटिभि' शकटव्यूह रचयति, रचयित्वा शकटव्यूहेन रथमुशल सग्राममुपायातः।

ततः खलु तौ द्वावपि राजानौ रणभूमिं सज्जयत, सज्जयित्वा रणभूमिं यातः ॥ ४३ ॥

टीका—'तएण से चेडए, इत्यादि–नवमल्लकिन.=काशीदेशस्थगणराजा, नवलेच्छकिन.=कोशलदेशस्थगणराजाः, तान्। युक्तम्=योग्यमिति, प्राप्तम्= अधिकारोचित, राजसदृशम्=राजवशीयानुरूप यत्=यन्निश्चयेन। प्रतिपालयन्= प्रतीक्षमाण'। शेष सुगमम् ॥ ४४ ॥

मूलम्—तएण से कूणिए तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं जाव मणुस्सकोडीहि गरुलवूह रइए, रइत्ता गरुलवूहेण सगाम उवायाए। तएण से चेडए राया सत्तावन्नाए दतिसहस्सेहिं जाव सत्तावन्नाए मणुस्सकोडोहि सगडवूह रएइ, रइत्ता सगड-वूहेण रहमुसल सगाम उवायाए। तएण ते दोण्ह वि राईणं अणीया सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा मगतिएहि फलएहिं निक्कट्ठाहि असीहिं, असगएहि तोणेहिं, सजीवेहि धणूहि, समु-क्खित्तेहिं सरेहि, समुल्लालिताहिं डावाहिं, ओसारियाहिं उरु-घंटाहिं, छिप्पतूरेण वज्जमाणेण, महया उक्किट्ठसीहनायवोलकल-कलरवेण समुद्दरवभूय पिव करेमाणा सव्विड्ढीए जाव रवेण हयगया हयगएहिं, गयगया गयगएहिं, रहगया रहगएहिं,

---

उसके बाद वह कूणिक राजा भी उसी तरह वहाँ आया जहाँ देशका अतिम भाग था। और महाराजा चेटकके शिबिरसे एक योजन दूर अपना शिबिर बनवाया।

उसके बाद उन दोनों राजाओंने रणभूमिको सज्जित की और लडाईके लिए वहाँ आये। ॥ ४४ ॥

ત્યાર પછી તે કૂણિક રાજા પણ તેજ રીતે ત્યાં આવ્યા કે જ્યાં દેશના પ્રદેશનો અંતિમ છેડો હતો, અને મહારાજા ચેટકની છાવણીથી એક યોજન છેટે પોતાની છાવણી નખાવી.

ત્યાર પછી તે બેઉ રાજાઓએ રણભૂમિ સજ્જિત કરી અને યુદ્ધ કરવા ત્યાં આવ્યા (૪૪)

टीका—'तएण से कूणिए' इत्यादि—ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोः अनीके=सैन्ये सन्नद्ध०=सुसज्जित० यावत्-गृहीतायुधप्रहरणे=गृतशस्त्रास्त्रे मङ्गतिकै'= हस्तपाशिफलकविशेषैः 'ढाल' इति भाषाप्रसिद्धैः, अंशगतैः=स्कन्धस्थितैः तूणीः- शरधानीभिः 'भाता' इति भाषायाम् सजीवैः=ज्यासहितैः समत्यञ्चैः धनुर्भिः= चापैः, समुत्क्षिप्तैः=प्रक्षिप्तैः शरैः=बाणैः, समुल्लालिताभिः = आस्फालिताभिः डावाभिः=वामभुजाभिः, अवसारिताभिः=दूरीकृताभिः उरुघण्टाभिः = विशाल-

चेटक राजा भी सतावन २ हजार हाथी, घोडे, रथ सब सतावन करोड (उस कालकी एक संख्या) सैनिकोंका शकटव्यूह बनाया और उसके साथ रथमुशल सग्राममें आया ।

उसके बाद दोनों राजओंकी सेना अस्त्र शस्त्रसे सज्जित हो अपने २ हाथोमें थामी हुई ढालोंसे, खींची हुई तलवारोंसे, कंधोंपर रखे हुए तूणीरोंसे, चढे हुए धनुषोंसे, छोडे हुए बाणोंसे, अच्छी तरह फटकारते हुए डाबी भुजाओंसे, दूरपर टागी हुइ विशाल घण्टाओंसे, अत्यन्त शीघ्रतासे बजाये जाते हुए भेरी आदि बाजोंसे, भयंकर सिंह नादके सदृश कोलाहलसे, समुद्रकी वेलाकी आवाजके समान आवाज करती हुई, तथा सभी युद्ध सामग्रियोंसे युक्त थी, वहा भीषण हुङ्कार करते हुए घुडसवार घुडसवारोंसे, हाथीवाले हाथीवालोंसे, रथ रथिकोंसे पैदल पैदलसे, इस प्रकार एक दूसरेके साथ युद्ध करनेके लिये सनद्ध हो गये ।

ચેટક રાજા પણ સત્તાવન સત્તાવન હજાર હાથી, ઘોડા, રથ અને સત્તાવન કરોડ (તે સમયના એક સંખ્યા) સૈનિકોનો શકટવ્યૂહ બનાવી તેની સાથે રથમુશલ સંગ્રામમાં આવ્યા.

ત્યાર પછી બન્ને રાજાઓની સેના અસ્ત્ર શસ્ત્રથી સજ્જિત થઈ પોત પોતાના હાથમાં પકડેલી ઢાલોથી, ખેંચેલી તલવારોથી, કાંધ ઉપર રાખેલા તૂણીરોથી, ચડાવેલા ધનુષ્યોથી, છોડેલા બાણોથી, સારી રીતે ફટકારતા ડાબી ભુજાઓથી, છેટે ટાંગેલી વિશાળ ઘંટાઓથી, અત્યંત શીઘ્રતાથી બજાવાતા ભેરી આદિ વાજાઓથી, સિંહનાદ જેવા કોલાહલથી સમુદ્રની છોળોના જેવા અવાજ કરતી, તથા સંગ્રામ યુદ્ધસામગ્રીથી યુક્ત હતી ત્યાં ભીષણ હુંકાર કરતા ઘોડેસ્વારો ઘોડેસ્વારોની સાથે, હાથીવાળાઓ હાથીવાળાઓની સાથે, પાયદળ લશ્કર પાયદળની સાથે, આ પ્રકારે એક બીજા સાથે યુદ્ધ કરવા માટે તૈયાર થઈ ગયા.

ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोरनीके सन्नद्ध-यावद्-गृहीतायुधप्रहरणे मङ्गतिकैः फलकैः निष्कासितैरसिभिः अंशगतैस्तूणैः, सजीवैर्धनुर्भिः, समुत्क्षिप्तैः शरैः, समुल्लालिताभिः डावाभिः, अवसारिताभिः उरुघण्टाभिः, क्षिप्रतूरेण वाद्यमानेन महता उत्कृष्टसिंहनादबोलकलकलरवेण समुद्ररवभूतमिव कुर्वाणे सर्वर्द्ध्या यावद् रवेण हयगता हयगतैः, गजगता गजगतैः, रथगता रथगतैः, पदातिकाः पदातिकैः, अन्योन्यैः सार्द्धं सम्प्रलग्नाश्चाऽप्यभूवन् ।

ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोरनीके निजकस्वामिशासनानुरक्ते महान्तं जनक्षयं जनवधं जनप्रमर्दं जनसंवर्तकल्पं नृत्यत्कबन्धवारभीमं रुधिरकर्दमं कुर्वाणे अन्योऽन्येन सार्द्धं युध्येते ।

ततः खलु स कालः कुमारस्त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यावन्मनुष्यकोटिभिर्गरुडव्यूहेन एकादशेन स्कन्धेन कूणिकरथमुसलं संग्रामं संग्रामयन् हतमथितयथा भगवता काल्यै देव्यै परिकथितं यावज्जीविताद् व्यपरोपितः ।

तदेतत् खलु गौतम ! कालः कुमार ईदृशैरारम्भैः यावद् ईदृशेन अशुभकृतकर्मप्राग्भारेण कालमासे कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यां हे माभे नरके नैरयिकतयोपपन्नः ।

कालः खलु भदन्त ! कुमारश्चतुर्थ्याः पृथिव्या अनन्तरमुद्धृत्य कुत्र गमिष्यति ? कुत्रोत्पत्स्यते ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे यानि कुलानि भवन्ति आढ्यानि यथा दृढप्रतिज्ञो यावत् सेत्स्यति भोत्स्यते यावद् अन्तं करिष्यति ।

तदेवं खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता यावत्सम्प्राप्तेन निरयावलिकानां प्रथमाध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः । इति ब्रवीमि ॥ ४५ ॥

॥ प्रथममध्ययनं समाप्तम् ॥१॥

'तएण से कूणिए' इत्यादि—

उसके बाद वह कूणिक तेंतीस २ हजार हाथी, घोडे, और रथ तथा तेंतीस करोड (उस समयकी एक संख्या) सैनिकोंका गरुडव्यूह बनाया और गरुडव्यूहके साथ रणभूमिमें रथमुशल संग्राम करनेके लिए आया ।

'तएण कूणिए' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે કૂણિકે તેત્રીસ હજાર હાથી, ઘોડા અને રથ તથા તેત્રીસ કરોડ (તે સમયની એક સંખ્યા) સૈનિકોનો ગરૂડવ્યૂહ બનાવ્યો અને ગરૂડવ્યૂહ સાથે રણભૂમિમાં રથમુશલ સંગ્રામ કરવા માટે આવ્યા

रुकबन्धवारभीम=नटच्छिरोरहितशरीरसमूहभयानक रुधिरकर्दम=शोणितपङ्क कुर्वाणे अन्योऽन्येन=परस्परेण सार्द्धं=सह युध्येते संग्राम कुर्वाते स्म । अशुभकृतकर्म प्राग्भारेण=प्राणिसंहाररूपपापसम्पादितनरकयोग्यकर्मपुञ्जेन, शेष सुगमम् 'इति ब्रवीमि' इतिपूर्ववत् ॥ ४५ ॥

॥ इति निरयावलिकासूत्रे प्रथममध्ययन समाप्तम् ॥

हे गौतम! वह काल कुमार इस प्रकारके आरम्भोंसे तथा इस प्रकारके अशुभ कर्मोंके सचयसे कालमासमें काल करके चौथी पङ्कप्रभा नामक पृथ्वी (नरक) में हेमाभ नामक नरकावासमें नैरयिक होकर उत्पन्न हुआ ।

हे भदन्त! काल कुमार चौथी पृथ्वी (नरक) से निकलकर कहाँ जायगा? और कहाँ उत्पन्न होगा? हे गौतम! काल कुमार महाविदेहक्षेत्रमें जाकर आढय (ऋद्धि-सम्पत्तिसे भरपूर) कुलमें उत्पन्न होगा। और दृढप्रतिज्ञके समान ही सिद्ध होगा, बुद्ध होगा, मुक्त होगा और सब दुःखोंका अन्त करेगा।

हे जम्बू! इस प्रकार सिद्धगति स्थानको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने निरयावलिकाके प्रथम अध्ययनका यह भाव प्ररूपित किया है, अर्थात् भगवानके मुखसे जैसा मैंने सुना वैसा ही तुम्हें कहता हूँ ॥ ४५ ॥

॥ श्री निरयावलिका सूत्रका प्रथम अध्ययन समाप्त ॥१॥

હે ગૌતમ! તે કાલકુમાર આવા પ્રકારના આરંભોથી તથા આવા પ્રકારના અશુભ કાર્યોના સંચયથી કાળને વખતે કાલ કરીને ચોથી પંકપ્રભા નામની પૃથ્વી (નરક) મા હેમાભ નામે નરકવાસમા નૈરયિક થઈ ઉત્પન્ન થયા

હે ભદન્ત! કાલકુમાર ચોથી પૃથ્વી (નરક) માથી નીકળી ક્યા જશે? અને ક્યા ઉત્પન્ન થશે? હે ગૌતમ! કાલકુમાર મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જઈ આઢય (ઋદ્ધિ-સમ્પત્તિથી ભરપૂર) કુળમા ઉત્પન્ન થશે, અને દૃઢપ્રતિજ્ઞની પેઠેજ સિદ્ધ થશે, બુદ્ધ થશે, મુકત થશે અને તમામ દુઃખોના અત કરશે

હે જમ્બૂ! આ પ્રકારે સિદ્ધગતિ સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે નિરયાવલિકાના પ્રથમ અધ્યયનનો આ ભાવ પ્રરૂપિત કર્યો છે અર્થાત્ ભગવાનના મુખેથી જેમ મે સાભળ્યુ તેમ મે તમને કહ્યુ છે (૪૫)

શ્રી નિરયાવલિકા સૂત્રનુ પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત (૧)

घण्टाभिः क्षिप्रतूरेण=अतिशीघ्रेण वाद्यमानेन तूर्येण महता=विशालेन उत्कृष्टसिंह-नाद-बोल-कलकल-रवेण उत्कृष्टः=भयङ्करः सिंहनादः=सिंहगर्जनवत् बोल =कोलाहल, कलकलः=व्याकुल, श्रोतुर्महाभयजनको यो रवः=शब्दस्तेन समुद्ररवभूतमिव=वेलाकुलजलनिधिप्रचण्ड भूतसदृश शब्द कुर्वाणे सर्वर्द्ध्या=सकलयुद्धसामग्र्या युक्ते आस्ता, तत्र यावत् रवेण चीत्कारादिभयानकशब्देन हयगता =अश्वारूढाः हयगतैः=अश्वारूढैः सह, गजगताः=गजारूढाः गजगतै =गजारूढै सह रथगताः=रथारूढा रथगतै=रथारूढै सह, पदातिकाः=पादचारिणः पदातिकैः=पादचारिभि सह, अन्योऽन्यैः=परस्परै- सार्द्धं=सह सप्रलग्ना=योद्धु सम्मिलिता चकार शस्त्रादिजनितप्रहारादिसमुच्चायक ' अपि=निश्चये अभूवन्=जाता ।

ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोरनीके निजकस्वामिशासनानुरक्ते=स्वस्वामिनिदेशपरायणे महान्त विशाल जनक्षय=जननाश जनवध=जनताडन मुशलादिना, जनप्रमर्द=गदादिना भटाना चूर्णीकरम् जनसंवर्तकल्प=प्रजासंहारसदृश नृत्य

उसके बाद उन दोनों राजाओंके योद्धा अपने २ स्वामीकी आज्ञामें अनुरक्त हो अत्यधिक मनुष्योंका क्षय, मनुष्योका वध, मनुष्योका मर्दन, एव मनुष्योंका सहार करते हुए तथा नाचते हुए धडोंके समूहसे भयकर और शोणितसे भूमिको कीचडमयी बनाते हुए एक दूसरेके साथ लडने लगे ।

उसके बाद वह काल कुमार तीन २ हजार हाथी, घोडे और रथ, तथा तीन करोड मनुष्योके साथ गरुडव्यूहके अपने ग्यारहवें स्कन्ध अर्थात भागके द्वारा रथमुशल सग्राम करता हुआ सैनिकोंका सहार हो जानेके बाद जिस प्रकार भगवानने काली देवीको कहा है उसी प्रकार वह मारा गया ।

ત્યાર પછી તે બન્ને રાજાઓના યોદ્ધાઓ પોતપોતાના સ્વામીની આજ્ઞાને અનુસરતા થઈને ઘણા મનુષ્યોનો નાશ, મનુષ્યોનો વધ, મનુષ્યોના મર્દન અર્થાત્ મનુષ્યોનો સહાર કરતા કરતા તથા નાચતા થડ઼ો ધડોના સમૂહથી ભયકર અને લોહીથી રણભૂમિને કીચડવાળી બનાવતા એકબીજા સાથે લડવા લાગ્યા

ત્યાર પછી તે કાલકુમાર ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી ઘોડા અને રથ તથા ત્રણ કરોડ મનુષ્યોની સાથે ગરૂડવ્યૂહના પોતાના અગીયારમા સ્કધ અર્થાત્ ભાગ દ્વારા રથ મુશલ સગ્રામ કરતા કરતા સૈનિકોનો સહાર થઈ ગયા પછી, જેવી રીતે ભગવાને કાલી દેવીને કહ્યુ, તે પ્રકારે તે માર્યા ગયા.

खलु सुकालया देव्याः पुत्रः सुकालो नाम कुमारोऽभूत्, सुकुमारः । ततः खलु स सुकालः कुमारः अन्यदा कदाचित् त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यथा कालः कुमारः, निरवशेषं तदेव यावन्महाविदेहे वर्षेऽन्तं करिष्यति ॥ १ ॥

॥ द्वितीयमध्ययनं समाप्तम् ॥ २ ॥

निरयावलिका सूत्रका द्वितीय अध्ययन

'जइ णं भंते' इत्यादि—

हे भदन्त ! सिद्धि स्थानको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने निरयावलिकाके प्रथम अध्ययनका पूर्वोक्त अर्थ कहा है ।

तो हे भगवन् ! फिर द्वितीय अध्ययनमें उन्होंने किस भावका निरूपण किया है ?

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें चम्पा नामकी नगरी थी । उस नगरीमें पूर्णभद्र नामका चैत्य था । और उस नगरीका राजा कूणिक था । उसकी रानी पद्मावती थी । उस चम्पानगरीमें श्रेणिक राजाकी पत्नी राजा कूणिककी छोटी माता सुकाली नामकी रानी थी जो अत्यन्त सुकुमार थी । उस सुकाली देवीका पुत्र सुकाल नामक कुमार था जो अत्यन्त सुकुमार था । उसके बाद वह सुकाल कुमार किसी एक समयमे तीन २ हजार हाथी, घोडे, रथ तथा तीन करोड पैदल सैनिकोंके साथ राजा कूणिकके रथमुशल संग्राममें लडनेके लिये गया और वह काल कुमारके समान ही अपनी सभी सेनाके नष्ट

નિરયાવલિકા સૂત્રનુ દ્વિતીય અધ્યયન

'जइ णं भंते' ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત ! સિદ્ધિ સ્થાનને પ્રાપ્ત થયેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે નિરયાવલિકાના પ્રથમ અધ્યયનનો પૂર્વોક્ત અર્થ બતાવ્યો છે તો હે ભગવન્ ! પછી દ્વિતીય અધ્યયનમા તેમણે ક્યા ભાવનુ નિરૂપણ કર્યુ છે ?

હે જમ્બૂ ? તે કાલ તે સમયે ચપા નામની નગરી હતી તે નગરીમા પૂર્ણભદ્ર નામનો ચૈત્ય હતો અને તે નગરનો રાજા કૂણિક હતો તેની રાણી પદ્માવતી હતી તે ચપા નગરીમા શ્રેણિક રાજાની પત્ની રાજા કૂણિકની નાની માતા સુકાલી નામની રાણી હતી જે અત્યત સુકુમાર હતી તે સુકાલી દેવીનો પુત્ર સુકાલ નામનો કુમાર હતો જે અત્યત સુકુમાર હતો ત્યાર પછી તે સુકાલ કુમાર કોઇ એક સમયમા ત્રણુ ત્રણુ હજાર હાથી ઘોડા રથ તથા ત્રણુ કરોડ પાયદળ સૈનિકો સાથે રાજા કૂણિકના રથમુશલ સગ્રામમા લડવા માટે ગયો અને તે કાલકુમારની સમાન જ પોતાની તમામ

अथ द्वितीयमध्ययनम् ।

मूलम्—जइ ण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं निरयावलियाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएण चंपा नाम नगरी होत्था। पुन्नभद्दे चेइए। कोणिए राया। पउमावई देवी। तत्थ ण चंपाए नयरीए सेणियस्य रन्नो भज्जा कोणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था, सुकुमाला। तीसे ण सुकालीए देवीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे होत्था, सुकुमाले। तएण से सुकाले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं दंतिसहस्सेहिं जहा कालो कुमारो निरवसेसं त चेव जाव माहविदेहे वासे अंतं काहिइ ॥ १ ॥

॥ बीय अज्झयण समत्तं ॥ २ ॥

एव सेसा वि अट्ठ अज्झयणा नेयव्वा पढमसरिसा, णवर मायाओ सरिसणामाओ ॥ १० ॥ निक्खेवो सव्वेसिं जाणियव्वो तहा ॥

निरयावलियाओ समत्ताओ ।

॥ पढमो वग्गो समत्तो ॥ १ ॥

छाया—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन निरयावलिकाना प्रथमस्याध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य निरयावलिकाना श्रमणेन भगवता यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एवं खलु जम्बूः तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी अभूत्। पूर्णभद्रश्चैत्यः। कूणिको राजा। पद्मावती देवी। तत्र खलु चम्पाया नगर्या श्रेणिकस्य राज्ञो भार्या कूणिकस्य राज्ञ क्षुल्लमाता सुकाली नाम देव्यभूत्, सुकुमारा। तस्याः

एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया जाव संपत्तेणं कप्पवडिसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तजहा—पउमे १ महापउमे २ भद्दे ३ सुभद्दे ४ पउमभद्दे ५ पउमसेणे ६ पउमगुम्मे ७ नलिणिगुम्मे ८ आणंदे ९ नदणे १०। जइण भंते ! समणेणं जाव सपत्तेण कप्पवडिसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स कप्पवडिंसियाण भगवया जाव सपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? ! एव खलु जंबू ! तेण कालेण तेणं समएणं चंपा नाम नयरी होत्था ! पुन्नभद्दे चेइए। कूणिए राया । पउमावई देवी। तत्थ ण चपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था, सुकुमाल० । तीसेण कालीए देवीए पुत्ते काले नाम कुमारे होत्था, सुकुमाल० । तस्स णं कालस्स पउमावई नामं देवी होत्था, सोमाल० जाव विहरइ ।

तए ण सा पउमावई देवी अन्नया कयाइ तसि तारिसगसि वासघरसि अब्भितरओ सचित्तकम्मे जाव सीह सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा । एव जम्मण जहा महाबलस्स, जाव नामधिज्ज, जम्हाणं अम्ह इमे दारए कालस्स कुमारस्स पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए त होउ णं अम्ह इमस्स दारगस्स नामधिज्ज पउमे सेस जहा महब्बलस्स अट्ठओ दाओ जाव उप्पिंपासायवरगए विहरइ ॥ १ ॥

एव शेषाण्यप्यष्टाध्ययनानि ज्ञातव्यानि प्रथमसदृशानि । नवर मातरः सदृशनाम्न्यः ॥ १० ॥ निक्षेपः सर्वेषां भणितव्यस्तथा ॥

निरयावलिकाः समाप्ताः । ॥ प्रथमो वर्गः समाप्तः ॥ १ ॥

टीका—'जइण भते' इत्यादि । सदृशनाम्न्यः=पुत्रसदृशनाम्न्यः । शेष निगदसिद्धम् ॥

॥ इति निरयावलिकासूत्रे टीकाया प्रथमो वर्गः समाप्त. ॥ १ ॥

॥ अथ कल्पावतसिका नाम द्वितीयो वर्गः ॥

मूलम्—जइणं भंते ! समणेण भगवया जाव सपत्तेण उवगाण पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाण अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स ण भते ! वग्गस्स कप्पवर्डिसियाण समणेणं जाव सपत्तेण कइ अज्झयणा पन्नत्ता ? ।

हो जानेके बाद मारा गया। मरकर काल कुमारके समान ही नरकमें गया और वहाँसे निकलकर महाविदेह क्षेत्रमे जन्म लेकर काल कुमारके समान सिद्ध होगा यावत् सब दुःखोंका अन्त करेगा।

। द्वितीय अध्ययन समाप्त हुआ ।

इसी प्रकार-प्रथम अध्ययनके सदृश शेष आठ अध्ययनोंको भी जानना चाहिये। विशेष इतना ही है कि माताओंका नाम कुमारोंके नामके समान हैं ॥ १० ॥

सभीका निक्षेप अर्थात् उपसहार पहिले अध्ययनके समान ही समझना चाहिये। इति। निरयावलिका समाप्त हुई।

निरयावलिकानामक प्रथम वर्ग समाप्त ॥१॥

सेना नष्ट थई गया बाद मार्यो गयो मरीने कालकुमारनी पेठे ज नरकमा गयो अने त्याथी नीकळी महाविदेह क्षेत्रमा जन्म लइ कालकुमारनी जेम सिद्ध थशे अने तमाम दु खनो अत करशे

द्वितीय अध्ययन समाप्त थयु

आ प्रकारे—प्रथम अध्ययनना जेम बाकीना आठ अध्ययनोने पण जाणवा जोईए विशेष एटलु ज छे के माताओना नाम कुमारोना नामना जेवाज छे

बधानो निक्षेप अर्थात् उपसहार पहेला अध्ययनना समानज समजी लेवो जोईए इति निरयावलिका समाप्त थई

निरयावलिका नामके प्रथम वर्ग समाप्त (१)

अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य कल्पावतंसिकानां श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एवं खलु जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी आसीत् । पूर्णभद्रं चैत्यं, कूणिको राजा, पद्मावती देवी । तत्र खलु चम्पायां नगर्यां श्रेणिकस्य राज्ञो भार्या कूणिकस्य राज्ञो लघुमाता काली नाम देवी आसीत् । सुकुमार० । तस्याः खलु देव्याः पुत्रः कालो नाम कुमार आसीत् । सुकुमार० । तस्य खलु कालस्य कुमारस्य पद्मावती नाम देवी अभवत् । सुकुमार० यावत् विहरति ।

ततः खलु सा पद्मावती देवी अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशे वासगृहे अभ्यन्तरतः सचित्रकर्मणि यावत् सिंह स्वप्ने दृष्ट्वा खलु प्रतिबुद्धा । एवं

अध्ययनोंका निरूपण किया है । उसके प्रथम अध्ययनमें किस भावका निरूपण किया है ?

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें चम्पा नामकी नगरी थी । वहाँ पूर्णभद्र चैत्य था । उसनगरीमें कूणिक राजा राज्य करता था उसके पद्मावती नामकी रानी थी । उस चम्पानगरीमें राजा श्रेणिककी पत्नी महाराज कूणिककी छोटी माता काली नामकी रानी थी जो अत्यन्त सुकुमार थी । उस रानीके एक कालकुमार नामका पुत्र था । उस कालकुमारकी पत्नी पद्मावती देवी जो अत्यन्त सुरूपा थी, वह पूर्वोपार्जित पुण्यसे मिले हुए मनुष्य सुखका अनुभव करती रहती थी ।

उसके बाद एक दिन वह पद्मावती देवी अपने अत्युत्तम वासगृहमें सोयी हुई थी । उसके वासगृहकी दिवालें अत्यन्त मनो-

---

નિરૂપણ કર્યું છે તેના પ્રથમ અધ્યયનમા કયા ભાવનુ નિરૂપણ કર્યું છે ?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ ! તે કાલે તે સમયે ચપા નામની નગરી હતી, તેમા પૂર્ણભદ્ર ચૈત્ય હતો તે નગરીમા કૂણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા તેમને પદ્માવતી નામની રાણી હતી, તે ચપાનગરીમા રાજા શ્રેણિકની પત્ની મહારાજ કૂણિકની નાની માતા કાલી નામની રાણી હતી જે અત્યત સુકુમાર હતી તે રાણીને એક કાલકુમાર નામનો પુત્ર હતો, તે કાલકુમારની પત્ની પદ્માવતી દેવી જે બહુ સ્વરૂપવાન હતી તે, પૂર્વ ઉપાર્જીત પુણ્યથી મળેલા મનુષ્ય સુખનો અનુભવ કરતી રહેતી હતી

ત્યાર પછી એક દિવસ તે પદ્માવતી દેવી પોતાના અતિ ઉત્તમ વાસગૃહમા સૂતી હતા તે વાસગૃહની ભીંતો અત્યત મનોહર ચિત્રોથી - ચીતરાયેલી હતી તે

छाया-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् समाप्तेन उपाङ्गाना प्रथमस्य वर्गस्य निरयावलिकानामयमर्थः प्रज्ञप्त, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य कल्पावतंसिकाना श्रमणेन यावत् समाप्तेन कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ?

एव खलु जम्बू. ! श्रमणेन भगवता यावत् समाप्तेन कल्पावतंसिकाना दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-पद्म १ महापद्मः २ भद्र ३ सुभद्रः ४ पद्मभद्रः ५ पद्मसेनः ६ पद्मगुल्म ७ नलिनीगुल्मः ८ आनन्दः ९ नन्दन १०। यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् समाप्तेन कल्पावतंसिकाना दश

कल्पावतंसिका नामक द्वितीय वर्ग।

'जइण भंते' इत्यादि—

हे भदन्त ! यदि मोक्षप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने निरयावलिका नामक उपाङ्गके प्रथम वर्गमें पूर्वोक्त अभिप्रायका वर्णन किया है तो इसके बाद भगवानने द्वितीय वर्ग-कल्पावतंसिकामें कितने अध्ययनोंका वर्णन किया है ?

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीरने कल्पावतंसिकामें दस अध्ययनोंका निरूपण किया है उनके नाम इस प्रकार हैं—

(१) पद्म (२) महापद्म (३) भद्र (४) सुभद्र (५) पद्मभद्र (६) पद्मसेन (७) पद्मगुल्म (८) नलिनीगुल्म (९) आनन्द और (१०) नन्दन।

श्री जम्बू स्वामी पूछते हैं —

हे भगवन् ! श्रमण भगवान महावीरने कल्पावतंसिकामें दस

કલ્પાવતંસિકા નામનો દ્વિતીય વર્ગ

'जइण भंते' ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત ! જો મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણભગવાન મહાવીરે નિરયાવલિકા નામે ઉપાંગના પ્રથમ વર્ગમા પૂર્વોકત અભિપ્રાયનું વર્ણન કર્યું છે તો ત્યાર પછી તેમણે બીજા વર્ગ કલ્પવતંસિકામા કેટલા અધ્યયનોનુ વર્ણન કર્યુ છે ?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવતંસિકામા દશ અધ્યયનનોનુ નિરૂપણ કર્યું છે તેમના નામ આ પ્રમાણે છે —

(૧) પદ્મ (૩) મહાપદ્મ (૩) ભદ્ર (૪) સુભદ્ર (૫) પદ્મભદ્ર (૬) પદ્મસેન (૭) પદ્મગુલ્મ (૮) નલિનીગુલ્મ (૯) આનંદ અને (૧૦) નંદન

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે —

હે ભગવન્ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવતંસિકામાં દશ અધ્યયનોનું

अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरइ । तएणं से पउमे अणगारे तेण ओरालेणं जहा मेहो तहेव धम्मजागरिया चिंता एव जहेव मेहो तहेव समणं भगवं आपुच्छित्ता विउले जाव पाओवगए समाणे तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइ, बहुपडिपुण्णाइं पंच वासाइ सामन्नपरियाए, मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ० आणुपुव्वीए कालगए । थेरा ओइन्ना भगव गोयमो पुच्छइ, सामी कहेइ जाव सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय० उड्ढ चंदिम० सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, दो सागराइ । से णं भंते पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण पुच्छा, गोयमा ! महाविदेहे वासे जहा दढपइन्नो जाव अंतं काहिइ । त एव खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ २ ॥

॥ पढममज्झयणं समत्त ॥

छाया-स्वामी समवसृतः । परिषत् निर्गता । कूणिको निर्गतः । पद्मोऽपि यथा महाबलो निर्गतस्तथैव अम्बापित्रा पृच्छना यावत् प्रव्रजितोऽनगारो जातो यावत् गुप्तब्रह्मचारी ।

'सामी समोसरिए' इत्यादि—

भगवान महावीर प्रभु पधारे, परिषद धर्म श्रवण करनेके लिये निकली। कूणिक राजा भी धर्मोपदेश सुननेके लिए निकला, कुमार पद्म भी महाबलके समान भगवानके पास गया। वहाँ भगवानके

'सामी समोसरिए' ઇત્યાદિ

ભગવાન મહાવીર પ્રભુ પધાર્યા પરિષદ્ ધર્મ શ્રવણુ કરવા માટે નિકળી કૂણિક રાજા પણુ ધર્મોપદેશ સાભળવા માટે નિકળ્યા કુમાર પદ્મ પણુ મહાબલની પેઠે ભગ

जन्म यथा महाबलस्य यावत् नामधेय, यस्मात् खलु अस्माकमय दारक॰ कालस्य कुमारस्य पुनः पद्मावत्या देव्या आत्मजः तद् भवतु खलु अस्माकम् अस्य दारकस्य नामधेय पद्मः । शेष यथा महाबलस्य अष्ट दायाः यावत् उपरि प्रासादवरगतो विहरति ॥ १ ॥

टीका–'जइण भते' इत्यादि–कूणिकराजलघुभ्रातुः कालकुमारस्य पद्मावती नाम भार्या अन्यदा कदाचित् अभ्यन्तरत अभ्यन्तरभागे सचित्रकर्मणि=विचित्रचित्रकर्मयुक्ते तस्मिन तादृशे वासगृहे=निजप्रासादे सुप्तजाग्रदवस्थाया तन्द्राया स्वप्ने सिंह दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा=जागरिता । शेष सुगमम् ॥ १ ॥

मूलम्–सामी समोसरिए । कूणिए निग्गए । पउमेवि जहा महब्बले निग्गए तहेव अम्मापिइ–आपुच्छणा जाव पव्वइए अणगारे जाए जाव गुत्तबंभयारी ।

तएणं से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइ एकारस अंगाइ

हुए चित्रोंसे चित्रित थी । उस घरमें अपनी कोमल शय्यापर सोती हुई उस रानीने स्वप्नमें सिंहको, देखा । स्वप्न देखनेके बाद जाग गयी । बादमें उसे स्वप्न दर्शनके अनुसार शुभ लक्षणवाला पुत्र हुआ । उसका जन्मसे लेकर नामकरण पर्यन्त सभी कृत्य महाबल कुमारके सदृश जानना । यह काल कुमारका पुत्र और पद्मावती देवीका अङ्गजात होनेसे उसका नाम पद्म रखा गया । इसके बादका सभी वृत्तान्त महाबलके सदृश जानना चाहिये । उसे आठ २ दहेज मिला । वह अपने ऊपरी महलमें सभी प्रकारके मनुष्यसम्बन्धी सुखोंका अनुभव करता हुआ निवास करता था ॥ १ ॥

घरमा पोतानी કોમલ શય્યામા સૂતેલી તે રાણીએ સ્વપ્નામા સિંહને જોયો સ્વપ્ન દીઠા પછી તે જાગી ગઈ પછી તેને સ્વપ્નદર્શનને અનુસરીને શુભ લક્ષણવાળો પુત્ર થયો તેના જન્મથી માડી નમિકરણ સુધીના કર્મો મહાબલ કુમારના જેવાજ જાણવા તે કાલકુમારનો પુત્ર તથા પદ્માવતી દેવીની કૂખે જન્મેલો હોવાથી તેનુ નામ પદ્મ રાખવામા આવ્યુ ત્યાર પછીનો સર્વ વૃત્તાન્ત મહાબલની પેઠે જાણવો જોઈએ તેને આઠ આઠ દહેજ મળ્યા અને તે પોતાના ઉપરા મહેલમા તમામ પ્રકારના મનુષ્યસબધી સુખો ભોગવતો તેમા રહેતો હતો ॥ ૧ ॥

अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरइ । तएणं से पउमे अणगारे तेण ओरालेण जहा मेहो तहेव धम्म-जागरिया चिंता एव जहेव मेहो तहेव समणं भगवं आपुच्छित्ता विउले जाव पाओवगए समाणे तहारूवाणं थेराणं अतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अगाइ, बहुपडिपुण्णाइ पञ्च वासाइ सामन्नपरियाए, मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ० आणु-पुव्वीए कालगए । थेरा ओइन्ना भगव गोयमो पुच्छइ, सामी कहेइ जाव सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय० उड्ढ चंदिम० सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, दो सागराइ । से णं भते पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण पुच्छा, गोयमा ! महाविदेहे वासे जहा दढपइन्नो जाव अतं काहिइ । त एव खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ २ ॥

॥ पढममज्झयणं समत्त ॥

छाया-स्वामी समवसृतः । परिषत् निर्गता । कूणिको निर्गतः । पद्मोऽपि यथा महाबलो निर्गतस्तथैव अम्बापित्रा पृच्छना यावत् प्रव्रजितोऽनगारो जातो यावत् गुप्तब्रह्मचारी ।

'सामी समोसरिए' इत्यादि—

भगवान महावीर प्रभु पधारे, परिषद धर्म श्रवण करनेके लिये निकली । कूणिक राजा भी धर्मोपदेश सुननेके लिए निकला, कुमार पद्म भी महाबलके समान भगवानके पास गया । वहाँ भगवानके

'सामी समोसरिए' ઇત્યાદિ

ભગવાન મહાવીર પ્રભુ પધાર્યા પરિષદ્ ધર્મ શ્રવણ કરવા માટે નિકળી કૂણિક રાજા પણ ધર્મોપદેશ સાંભળવા માટે નિકળ્યા કુમાર પદ્મ પણ મહાબલની પેઠે ભગ-

ततः खलु स पद्मोऽनगारः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि अधीते। अधीत्य बहुभिः चतुर्थषष्ठाष्टम० यावद् विहरति। ततः स पद्मोऽनगारो तेन उदारेण यथा मेघस्तथैव धर्मजागरिका, चिन्ता, एव यथैव मेघस्तथैव श्रमण भगवन्तमापृच्छय विपुले यावत् पादपोगतः सन् तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि, बहुप्रतिपूर्णानि पञ्च वर्षाणि श्राम

उपदेशसे उसे वैराग्य हो गया। उसने महाबलके समान ही माता पितासे प्रव्रज्याकी अनुमति माँगी। तथा अन्तमें उसने प्रव्रज्या लेली और अनगार हो गया यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हो गया।

उसके बाद वे पद्म अनगारने श्रमण भगवान महावीरके तथारूप स्थविरोंके समीप सामायिक आदि ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया। और बहुत सी चतुर्थ षष्ठ आदि तपस्या की। अनन्तर वे पद्म अनगार उदार–कठिन तपश्चर्या करनेसे तप. कर्मके आराधनके कारण उनका शरीर शुष्क–रूक्ष हो गया। मास शोणितके सूख जानेके कारण इतने कृश हो गये कि उनके शरीरमें हड्डी और चमडा मात्र रह गया और उनकी सभी नसें दिखाई देने लगी। इसका विशेष वर्णन मेघकुमारके समान जानना। मेघ कुमारके समान ही इनने धर्म जागरणा की और विपुल गिरि पर जाने आदिका विचार किया और मेघकुमारके समान ही विपुल गिरिपर जानेके

वाननी पासे गया त्यां भगवानना उपदेशथी तेने वैराग्य थइ गयो. तेणे महाबलनी पेठेज माता पिता पासे प्रव्रज्यानी रजा मागी तथा छेवटे तेणे प्रव्रज्या (दीक्षा) लीधी अने अनगार (गृहत्यागी) थइ गुप्त ब्रह्मचारी थइ गया.

त्यार पछी ते पद्म अनगारे (गृहत्यागी) श्रमण भगवान महावीरना तथारूप स्थविरोना पासे सामायिक आदि अगीयार अंगोनुं अध्ययन कर्युं अने बहु रीतनी चतुर्थ तथा छठ आदि (१–२ उपवास) तपस्या करी पछी ते पद्म अनगार उदार कठिन तपस्या करवाथी तप कर्मनुं आराधन करवाना कारणे तेमनुं शरीर सूकाई गयुं, रूक्ष थइ गयुं लोही मांस सूकाई जवाना कारणे एटला कृश (नबळा) थइ गया के तेमना शरीरमां हाडकां तथा चाम। मात्र रही गया अने तेमनी बधी नसो देखावा लागी आनुं विशेष वर्णन मेघकुमारना जेवुं जाणवुं मेघकुमारनी पेठेज तेमणे धर्म जागरण करी तथा विपुलगिरि उपर जवा आदिनो विचार कर्यो तथा मेघकुमारनी पेठेज

यपर्याय'। मासिक्या संलेखनया षष्टि भक्तानि० आनुपूर्व्या कालगतः। स्थविरा अवतीर्णा भगवान गौतमः पृच्छति, स्वामी कथयति यावत् षष्टि भक्तानि अनशनेन छित्वा आलोचित० ऊर्ध्वं चन्द्रमः० सौधर्मे कल्पे देवत्वेन उपपन्नः। द्वौ सागरौ। स खलु भदन्त ! पद्मो देवस्ततो देवलोकाद् आयुः क्षयेण पृच्छा गौतम ! महाविदेहे वर्षे यथा दृढप्रतिज्ञो यावदन्त करिष्यति।

लिये भगवानसे पूछा। पूछकर स्वयं पुनः पञ्च महाव्रत ग्रहण किया। गौतम आदि श्रमण निर्ग्रंथोंको खमाकर स्थविरोंके साथ धीरे २ विपुल गिरि पर चढे। और वहाँ सविधि पादपोपगमन संथारा स्वीकारकर कालकी इच्छा नहीं करते हुए रहने लगे। और वे पद्म अनगारने स्थविरोंके समीप ग्यारह अङ्गोका अध्ययन किया और पूरे पाँच वर्षकी दीक्षापर्याय पाली।

एक मासकी संलेखनासे साठ भक्तका छेदनकर अनुक्रमसे कालको प्राप्त हो गये। उनके कालप्राप्त करनेके बाद स्थविर उन पद्म अनगारके भाण्डोपकरण लेकर भगवानके पास आये उनके आनेके बाद गौतमने भगवानसे पूछा–हे भगवन ! ये पद्म अगनार काल करके कहाँ गये ?

भगवानने कहा–हे गौतम ! पद्म अनगार पूर्वोक्त प्रकारसे एक महीनेका सन्थारा कर और आलोचित प्रतिक्रान्त होकर अर्थात आत्म-

---

विपुल गिरिपर જવા માટે ભગવાનને પૂછયુ પૂછીને પોતે ફરીને પચ મહાવ્રત ગ્રહણ કર્યા ગૌતમ આદિ શ્રમણ નિર્ગ્રન્થોનો તથા નિર્ગ્રન્થીઓને ખમાવીને સ્થવિરોની સાથે ધીરે ધીરે વિપુલગિરિ પર ચડયા અને ત્યા વિધીસર પાદપોપગમન સથારો સ્વીકાર કરી મ ણની ઈચ્છા વગર રહેવા લાગ્યા તથા તે પદ્મ અનગાર સ્થવિરોની પાસે અગીયાર અ ગોનુ અધ્યયન કર્યું અને પૂરા પાચ વર્ષની દીક્ષા પર્યાય પાળી

એક મહિનાની સલેખનાથી સાઠ ભકતનુ છેદન કરી અનુક્રમે કાલને પ્રાપ્ત થયા તેમના કાલ પ્રાપ્ત કર્યા પછી સ્થવિર લોક તે પદ્મ અનગારના ભાંડોપકરણ લઇને ભગવાનની પાસે આવ્યા તેના આવ્યા પછી ગૌતમે ભગવાનને પૂછયુ–હે ભગવન્ ! આ પદ્મ અનગાર કાલ કરીને કયા ગયા ?

ભગવાને કહ્યુ–હે ગૌતમ ! પદ્મ અનગાર પૂર્વોકત પ્રકારે એક મહિનાનો સથારો કરી તથા આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત થઈ અર્થાત્ આત્મશુદ્ધિ કરી કાલને અવસરે કાલ પ્રાપ્ત

तदेव खलु जम्बूः ! श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कल्पावतंसिकाना प्रथमस्या ध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । इति ब्रवीमि ॥ २ ॥

॥ प्रथममध्ययन समाप्तम् ॥

टीका—'सामी' इत्यादि–स्थविरा अवतीर्णा'=विपुलगिरितोऽधस्तादा गताः । शेष सुगमम् ॥ २ ॥

॥ प्रथममध्ययन समाप्तम् ॥

मूलम्—जइण भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेण कप्प-वडिंसियाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्टे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेणं कालेण २ चपा नाम नयरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए, कूणिए राया, पउमावईदेवी । तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणि-

---

शुद्धि करके काल अवसर काल प्राप्त होकर चन्द्रमासे उपर सौधर्म कल्पमे दो सागरकी स्थितिवाले देवपनेमे उत्पन्न हुए ।

हे भदन्त ! वह पद्म देव देवसम्बन्धी आयु भव स्थितिके क्षय होजानेके बाद, देवलोकसे चवकर कहॉ जायगा ।

हे गौतम वह देवलोकसे चवकर महाविदेह क्षेत्रमे दृढ प्रतिज्ञके समान समृद्ध कुलमे जन्म लेकर सिद्ध होगा और सब दुःखोका अन्त करेगा ।

हे जम्बू ! इस प्रकार मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने कल्पावतसिकाके प्रथम अध्ययनका यह भाव निरूपण किया है । ॥२॥

। प्रथम अध्ययन समाप्त ।

थई ચન્દ્રમાની ઉપર સૌધર્મ કલ્પમા બે સાગરની સ્થિતિવાળા દેવપણે ઉત્પન્ન થયા

હે ભદન્ત ! તે પદ્મદેવ દેવ સબધી આયુ, ભવ સ્થિતિનો ક્ષય થઇ ગયા પછી દેવલોકથી ચ્યવીને ક્યા જશે ?

હે ગૌતમ ! તે દેવલોકથી ચ્યવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા દૃઢપ્રતિજ્ઞાની રીતે સમૃદ્ધ કુળમા જન્મ લઇ સિદ્ધ થશે અને તમામ દુખનો અત કરશે

હે જમ્બૂ ! આ પ્રકારે મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવતસિકાના પ્રથમ અધ્યયનનુ આ ભાવ નિરૂપણ કર્યું છે ॥ ૨ ॥

પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત

यस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नाम देवी होत्था । तीसे णं सुकालीए पुत्ते सुकाले नाम कुमारे। तस्स ण सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्था, सुकुमाला ।

तए णं सा महापउमा देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि एवं तहेव महापउमे नामं दारए, जाव सिज्झिहिइ, नवर ईसाणे कप्पे उववाओ उक्कोसट्ठिइओ । त एव खलु जबू ! समणेण भगवया जाव सपणत्ते० । एवं सेसा वि अट्ठ नेयव्वा । मायाओ सरिसनामाओ । कालादीण दसण्हं पुत्ताण आणुपुव्वीए–दोण्ह च पच चत्तारि, तिण्ह तिण्ह च होंति तिन्नेव । दोण्ह च दोण्णि वासा, सेणियनत्तूण परियाओ ॥१॥

उववाओ आणुपुव्वीए, पढमो सोहम्मे बितिओ ईसाणे, तइओ सणकुमारे, चउत्थो माहिंदे, पचमओ बभलोए, छट्ठो लतए, सत्तमओ महासुक्के, अट्ठमओ सहस्सारे, नवमओ पाणए, दसमओ अच्चुए । सव्वत्थ उक्कोसट्ठिई भाणियव्वा, महाविदेहे सिज्झिहिइ १० ॥ ३ ॥

छाया–यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् समाप्तेन कल्पावतंसिकाना प्रथमस्याऽध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः । एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी आसीत्, पूर्णभद्र चैत्य, कूणिको राजा पद्मावती देवी । तत्र खलु चम्पाया नगर्या श्रेणिकस्य राज्ञो भार्या कूणिकस्य राज्ञो लघुमाता सुकाली नाम देवी आसीत् । तस्याः खलु सुकाल्याः पुत्रः सुकालो नाम कुमारः, तस्य खलु सुकालस्य कुमारस्य महापद्मा नाम देवी आसीत्, सुकुमारा ।

ततः खलु सा महापद्मा देवी अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशे एव तथैव महापद्मो नाम दारकः यावत् सेत्स्यति नवरमीशानकल्पे उपपात उत्कृष्टस्थितिकः । एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन भगवता यावत् समाप्तेन । एवं शेषाण्यपि अष्टौ ज्ञातव्यानि, मातरः सदृशनाम्न्यः कालादीनां दशानां पुत्राणामानुपूर्व्या-(व्रतपर्यायः)-

द्वयोश्च पञ्चचत्वारि, त्रयाणां त्रयाणां च भवन्ति त्रीण्येव । द्वयोश्च द्वे वर्षे, श्रेणिकनप्तॄणां पर्यायः ॥ १ ॥

उपपात आनुपूर्व्या-प्रथमः सौधर्मे, द्वितीय ईशाने, तृतीयः सनत्कुमारे, चतुर्थो माहेन्द्रे, पञ्चमो ब्रह्मलोके, षष्ठो लान्तके, सप्तमो महाशुक्रे, अष्टम सहस्रारे, नवमः प्राणते, दशमोऽच्युते । सर्वत्र उत्कृष्टा स्थितिर्भणितव्या, महाविदेहे सेत्स्यति १० ॥ ३ ॥

टीका-'जइण भंते' इत्यादि । मातृनामसदृशनामानः कालादीनां दशानां पुत्राः श्रेणिकपौत्राः पद्मादयः कियन्ति २ वर्षाणि संयमपर्यायं पालयामासुरिति क्रमेण व्रतपर्यायप्रतिपादिका तद्गाथा निगद्यते-'द्वयोश्च'-त्यादि । अस्या

द्वितीय अध्ययन प्रारम्भ ।

'जइण भंते' इत्यादि—

जम्बू स्वामि पूछते है—

हे भदन्त ! मोक्षप्राप्त श्रमण भगवान महावीरने कल्पावतंसिकाके प्रथम अध्ययनके भावोंको पूर्वोक्त प्रकारसे निरूपण किया है तो इसके बाद हे भगवन् ! द्वितिय अध्ययनमें भगवान किन भावोंका निरूपण किया है ?

सुधर्मा स्वामि कहते हैं-

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें चम्पा नामकी नगरी थी।

'जइण भंते' इत्यादि

દ્વિતીય (બીજુ) અધ્યયન આરંભ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે —

હે ભદન્ત ! મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવતંસિકાના પ્રથમ અધ્યયનના ભાવોને પૂર્વોક્ત પ્રકારે નિરૂપણ કર્યાં છે તો ત્યાર પછી હે ભગવન્ બીજા અધ્યયનમાં તેઓએ કયા ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે ?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ ! તે કાળે તે સમયે ચંપા નામે એક નગરી હતી તે નગરીમાં

अयमभिप्रायः—द्वयोः=काल-सुकाल-पुत्रयोः पद्म-महापद्मकुमारयोर्व्रतपर्या पञ्च पञ्च वर्षाणि, त्रयाणां=महाकाल-कृष्ण-सुकृष्णापुत्राणां-भद्र-सुभद्र-पद्म कुमाराणां चत्वारि चत्वारि वर्षाणि व्रतपर्यायः, पुनस्त्रयाणां=महाकृष्ण-वीरकृष्ण रामकृष्णापुत्राणां पद्मसेन-पद्मगुल्म-नलिनीगुल्मकुमाराणां त्रीणि त्रीणि वर्षा व्रतपर्यायः, पुनर्द्वयोः=पितृसेनकृष्ण-महासेनकृष्णपुत्रयोः आनन्द-नन्दनकुमार द्वे द्वे वर्षे। इत्थं श्रेणिकनप्तृणां=श्रेणिकपौत्राणां दशानामपि पर्यायः=सर्व

वहाँ पूर्णभद्र चैत्य था। वहाँका राजा कूणिक था। उसकी रानी नाम पदमावती था। उस चम्पानगरीमे राजा श्रेणिककी रानी म राजा कूणिककी छोटी माता सुकाली नामकी रानी थी। उस सुका रानीका पुत्र सुकाल कुमार था। उस सुकाल कुमारकी पत्नी नाम महापद्मा था, वह अत्यन्त सुकुमार थी।

उसके बाद वह महापद्मा देवी किसी समय एक रातमे श पर सोयी हुई थी। उसने स्वप्नमे सिंहको देखा। और नौ महीने बाद उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम महापद्म रखा गय इस महापद्म अनगारका उत्पत्तिसे लेकर सिद्धि तकका वृत्तान्त पद् अनगारके समान ही जानना चाहिये। अर्थात् देवलोकसे च्यवव महाविदेह क्षेत्रमे सिद्ध होंगे। इतना विशेष है कि ये महापद् अनगार ईशान देवलोकमे उत्कृष्ट स्थितिवाले देव हुए।

हे जम्बू! श्रमण भगवान महावीर प्रभुने इस प्रकार द्वित

पूर्णभद्र चैत्य हतो, त्यानो राजा कोणिक हतो तेनी राणीनु नाम पद्मावती हतु चंपानगरीमां राजा श्रेणिकनी राणी—महाराजा कूणिकनी नानी माता—सुकाली नामे रा हती ते सुकाली राणीनो पुत्र कुमार सुकाल हतो ते सुकाल कुमारनी पत्नीनु न महापद्मा हतु ते बहु सुकुमार हती

त्यार पछी ते महापद्मा देवी कोई समये एक रात्रिमा ज्यारे शय्या पर सु त्यारे तेणे स्वप्नामा सिंहने जोयो अने नव महिना पछी तेने एक पुत्र उत्पन्न थ जेनु नाम महापद्म राखवामा आव्यु आ महापद्म अनगारनी उत्पत्तिथी मांड सिद्धि सुधीनु वृत्तान्त पद्म अनगारना जेवुज जाणी लेवु जोइए अर्थात् देवलो च्यवीने महाविदेहक्षेत्रमा सिद्ध थशे एटलु विशेष छे के ते महापद्म अनगार ईश देवलोकमा उत्कृष्ट स्थितिवाळा देव थया

हे जम्बू! श्रमण भगवान महावीर प्रभुए आ प्रकारे बीजा अध्ययननु निरू कर्यु छे ते जेवु भगवान पासेथी सांभळ्यु छे तेवुज मे तने कह्यु छे (२)

पर्यायो ज्ञातव्यः । आनुपूर्व्या=क्रमेण उपपातः=देवलोकेषु जन्म प्रोच्यते-प्रथमः=पद्मः १ सौधर्मे=सौधर्माख्यप्रथमदेवलोके उत्कृष्टद्विसागरोपमस्थितिको देवो जातः । एव द्वितीयः=महापद्मः २ ईशाने द्वितीये देवलोके उत्कृष्टेन किंचिदधिकद्विसागरोपमस्थितिकोऽभूत् । तृतीयः=भद्रो मुनिः ३ सनत्कुमारे

अध्ययनका निरूपण किया है । वह जैसा भगवानसे सुना है वैसा तुम्हे कहा है ॥ २ ॥

हे जम्बू ! इसी प्रकार शेष आठ अध्ययनोंको जानना चाहिये। काल आदि दस कुमारोंके पुत्रोंकी माताओंके नाम उन पुत्रोंके सदृश है । इन सबका चारित्रपर्याय अनुक्रमसे इस प्रकार है-काल सुकालके पुत्र पद्म महापद्म अनगारने पाँच २ वर्ष दीक्षा प्रर्याय पाली ।

महाकाल, कृष्ण और सुकृष्णके पुत्र भद्र, सुभद्र और पद्म भद्रने चार २ वर्ष, महाकृष्ण, रामकृष्णका पुत्र पद्मसेन पद्मगुल्म और नलिनीगुल्म अनगारोंने तीन २ वर्ष, पितृसेनकृष्ण महासेन कृष्णके पुत्र आनन्द और नन्दनने दो-दो वर्ष संयम पाला । ये दसों श्रेणिक राजाके पोते थे।

अब कौन किस देवलोकमें गये यह क्रमसे कहते है ।

(१) पद्म-सौधर्म नामक प्रथम देवलोकमें उत्कृष्ट दो सागरोपमकी स्थितिवाले, (२) महापद्म-ईशान नामक दूसरे देवलोकमें उत्कृष्ट दो सागरोपम झाझेरी (कुछ अधिक) स्थितिवाले, (३) भद्र-सनत्कुमार

હે જમ્બૂ ! આ પ્રકારે બાકીના આઠ અધ્યયનોને જાણી લેવા જોઇએ કાલ આદિ દશ કુમારોના પુત્રોની માતાઓના નામ તે પુત્રોના જેવા છે તે બધાના ચારિત્રપર્યાય અનુક્રમથી આ પ્રકાર છે —

કાલ સુકાલના પુત્ર પદ્મ મહાપદ્મ અનગારે પાચ પાચ વર્ષ દીક્ષાપર્યાય પાળી મહાકાલ કૃષ્ણ તથા સુકૃષ્ણના પુત્ર ભદ્ર સુભદ્ર અને પદ્મભદ્રે ચાર ચાર વર્ષ, મહાકૃષ્ણ વીરકૃષ્ણ, રામકૃષ્ણના પુત્ર પદ્મસેન પદ્મગુલ્મ અને નલિનીગુલ્મ અનગારોએ ત્રણ ત્રણ વર્ષ, પિતૃસેનકૃષ્ણ, અને મહાસેનકૃષ્ણના પુત્ર આનંદ અને નંદને બે બે વર્ષ સંયમ પાળ્યો આ દશેય શ્રેણિક રાજાના પૌત્ર હતા

હવે કોણ કયા દેવલોકમા ગયા તે ક્રમથી બતાવીએ છીએ —

(૧) પદ્મ-સૌધર્મ નામે પ્રથમ દેવલોકમા ગયા (૨) મહાપદ્મ-ઇશાન નામે બીજા દેવલોકમા ઉત્પન્ન થયા (૩) ભદ્ર-સનત્કુમાર નામે ત્રીજા દેવલોકમા ઉત્પન્ન થયા (૪)

तृतीये देवलोके उत्कृष्टसप्तसागरोपमस्थितिकः, चतुर्थः=सुभद्रो मुनिः ४ माहेन्द्रे चतुर्थे देवलोके उत्कृष्टेन किंचिदधिकसप्तसागरोपमस्थितिकः, पञ्चमः=पद्मभद्रो मुनिः ५ ब्रह्मलोके पञ्चमे देवलोके, उत्कृष्टदशसागरोपमस्थितिकः, षष्ठः=पद्मसेनो मुनिः ६ लान्तके=तदाख्ये षष्ठे देवलोके, उत्कृष्टचतुर्दशसागरोपमस्थितिकः, सप्तमः=पद्मगुल्मो मुनिः ७ महाशुक्रे सप्तमे देवलोके, उत्कृष्टसप्तदशसागरोपम स्थितिकः, अष्टमः=नलिनीगुल्मो मुनिः ८ सहस्रारेऽष्टमे देवलोके, उत्कृष्टदश सागरोपमस्थितिकः, नवमः=आनन्दो मुनिः ९ प्राणते दशमे देवलोके उत्कृष्ट विंशतिसागरोपमस्थितिकः, दशमः=नन्दनो मुनिः १० द्वादशेऽच्युते देवलोके,

नामक तीसरे देवलोकमें उत्कृष्ट सात सागरोपमकी स्थितिवाले, (४) सुभद्र मुनि–माहेन्द्र नामक चतुर्थ देवलोकमे उत्कृष्ट सात सागरोपम झाझेरी स्थितिवाले, (५) पद्मभद्रमुनि–ब्रह्म नामक पञ्चम देवलोकमें उत्कृष्ट दस सागरोपमकी स्थितिवाले, (६) पद्मसेन मुनि–लान्तक नामक छठे देवलोकमे उत्कृष्ट चौदह सागरोपमकी स्थितिवाले, (७) पद्मगुल्म मुनि महाशुक्र नामक सातवें देवलोकमें उत्कृष्ट सतरह १७ सागरोपमकी स्थितिवाले, (८) नलिनीगुल्म मुनि–सहस्रार नामक अष्टम देवलोकमें उत्कृष्ट १९ सागरोपम स्थितिवाले तथा (९) आनन्द मुनि–प्राणत नामक नवमे देवलोकमे उत्कृष्ट २० सागरोपम स्थितिवाले देवपने उत्पन्न हुए (१०) नन्दन मुनि–बारहवें अच्युत नामक देव-

સુભદ્રમુનિ મહેન્દ્ર નામે ચોથા દેવલોકમા ઉત્પન્ન થયા (૫) પદ્મભદ્ર મુનિ-બ્રહ્મ નામે પાચમા દેવલોકમા (૬) પદ્મસેન મુનિ–લાન્તક નામે છઠ્ઠા દેવલોકમા (૭) પદ્મગુલ્મ મુનિ–મહાશુક્ર નામે સાતમા દેવલોકની ઉત્કૃષ્ટથી સત્તરમા સાગરોપમની સ્થિતિવાળા (૮) નલિનીગુલ્મ મુનિ–સહસ્રાર નામના આઠમા દેવલોકમા જઇ ઉત્કૃષ્ટ ૧૯ સાગરોપમ સ્થિતિવાળા દેવપણે ઉત્પન્ન થયા (૯) આનંદ મુનિ પ્રાણત નામે નવમા દેવલોકમા ઉત્કૃષ્ટ ૨૦ સાગરોપમની સ્થિતિવાળા દેવપણે ઉત્પન્ન થયા (૧૦) નંદન મુનિ–બારમા અચ્યુત નામે દેવલોકમા ૨૨ સાગરોપમ સ્થિતિવાળા દેવપણાથી ઉત્પન્ન થયા

તેમની સ્થિતિ નીચે લખ્યા પ્રકારની છે —

પદ્મદેવની ઉત્કૃષ્ટ બે સાગરોપમ સ્થિતિ છે મહાપદ્મની બે સાગરોપમ ઝાઝેરી (કાંઇકઅધિક) છે ભદ્રની સાતસાગરોપમ, સુભદ્રની સાત સાગરોપમ ઝાઝેરી પદ્મભદ્રની દશ સાગરોપમ પદ્મસેનની ચૌદ સાગરોપમ પદ્મગુલ્મની સત્તર સાગરોપમ નલિની

पर्यायो ज्ञातव्यः । आनुपूर्व्या=क्रमेण उपपातः=देवलोकेषु जन्म प्रोच्यते-प्रथमः=पद्मः १ सौधर्मे=सौधर्माख्यप्रथमदेवलोके उत्कृष्टद्विसागरोपमस्थितिको देवो जातः । एवं द्वितीयः=महापद्मः २ ईशाने द्वितीये देवलोके उत्कृष्टेन किंचिदधिकद्विसागरोपमस्थितिकोऽभूत् । तृतीय'=भद्रो मुनिः ३ सनत्कुमारे

अध्ययनका निरूपण किया है । वह जैसा भगवानसे सुना है वैसा तुम्हे कहा है ॥ २ ॥

हे जम्बू ! इसी प्रकार शेष आठ अध्ययनोंको जानना चाहिये। काल आदि दस कुमारोंके पुत्रोंकी माताओंके नाम उन पुत्रोंके सदृष है । इन सबका चारित्रपर्याय अनुक्रमसे इस प्रकार है–काल सुकालके पुत्र पद्म महापद्म अनगारने पाँच २ वर्ष दीक्षा प्रर्याय पाली ।

महाकाल, कृष्ण और सुकृष्णके पुत्र भद्र, सुभद्र और पद्म भद्रने चार २ वर्ष, महाकृष्ण, रामकृष्णका पुत्र पद्मसेन पद्मगुल्म और नलिनीगुल्म अनगारोंने तीन २ वर्ष, पितृसेनकृष्ण महासेन कृष्णके पुत्र आनन्द और नन्दनने दो-दो वर्ष सयम पाला। ये दसों श्रेणिक राजाके पोते थे।

अब कौन किस देवलोकमें गये यह क्रमसे कहते है।

(१) पद्म-सौधर्म नामक प्रथम देवलोकमे उत्कृष्ट दो सागरोपमकी स्थितिवाले, (२) महापद्म-ईशान नामक दूसरे देवलोकमें उत्कृष्ट दो सागरोपम झाझेरी (कुछ अधिक) स्थितिवाले, (३) भद्र-सनत्कुमार

હે જમ્બૂ ! આ પ્રકારે બાકીના આઠ અધ્યયનોને જાણી લેવા જોઇએ કાલ આદિ દશ કુમારોના પુત્રોની માતાઓના નામ તે પુત્રોના જેવા છે તે બધાના ચારિત્રપર્યાય અનુક્રમથી આ પ્રકાર છે —

કાલ સુકાલના પુત્ર પદ્મ મહાપદ્મ અનગારે પાચ પાચ વષ દીક્ષાપર્યાય પાળી મહાકાલ કૃષ્ણ તથા સુકૃષ્ણના પુત્ર ભદ્ર સુભદ્ર અને પદ્મભદ્રે ચાર ચાર વર્ષ, મહાકૃષ્ણ વીરકૃષ્ણ, રામકૃષ્ણના પુત્ર પદ્મસેન પદમગુલ્મ અને નલિનીગુલ્મ અનગારોએ ત્રણ ત્રણ વર્ષ, પિતૃસેનકૃષ્ણ, અને મહાસેનકૃષ્ણના પુત્ર આનદ અને નદને બે બે વર્ષ સયમ પાળ્યો આ દશેય શ્રેણિક રાજાના પૌત્ર હતા

હવે કોણ કયા દેવલોકમા ગયા તે ક્રમથી બતાવીએ છીએ —

(૧) પદ્મ-સૌધર્મ નામે પ્રથમ દેવલોકમા ગયા (૨) મહાપદ્મ-ઇશાન નામે બીજા દેવલોકમા ઉત્પન્ન થયા (૩) ભદ્ર-સનત્કુમાર નામે ત્રીજા દેવલોકમા ઉત્પન્ન થયા (૪)

जोइसराया चदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चदसि सीहासणंसि चउहि सामाणियसाहस्सीहि जाव विहरइ । इम च णं केवलकप्पं जबूद्दीव दीवं विउलेण ओहिणा आभोएमाणे २ पासइ, पासित्ता समणं भगव महावीर जहा सूरियाभे आभिओगे देवे सद्दावित्ता जाव सुरिंदाभिगमणजोग्ग करेत्ता तमाणत्तिय पच्चप्पिणइ । सूसरा घटा, जाव विउव्वणा, नवर (जाणविमाण) जोयणसहस्सविरिथण्ण अद्धत्तेवट्ठिजोयणसमूसिय, महिद्ज्झओ पणुवीस जोयणमूसिओ, सेस जहा सूरियाभस्स जाव आगओ नट्टविही तहेव पडिगओ । भते त्ति भगवं गोयमे समण भगव महावीर, पुच्छा कूडागारसाला, सरीर अणुपविट्ठा पुव्वभवो ।

एव खलु गोयमा ! तेण कालेणं २ सावत्थी नाम नयरी होत्था, कोट्ठए चेइए ! तत्थण सावत्थीए नयरीए अगई नाम गाहावई होत्था, अड्ढ जाव अपरिभूए । तएण से अगई गाहावई सावत्थीए नयरीए बहूण नयरनिगण० जहा आणदो ॥१॥

छाया–यदि खलु भदन्त ? श्रमणेन भगवता यावत् समाप्तेन उपाङ्गाना द्वितीयस्य वर्गस्य कल्पावतसिकानामयमर्थः प्रज्ञप्त , तृतीयस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य उपाङ्गाना पुष्पितानां कोऽर्थः प्रज्ञप्त ?

एव खलु जम्बू ! श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन उपाङ्गाना तृतीयस्य वर्गस्य पुष्पिताना दशा ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा–चन्द्र (१) सूर (२) शुक्र (३) बहुपुत्रिक (४) पूर्ण० (५) मानभद्रश्च (६) दत्त (७) शिव (८) बलेपक (९) अनादृत' (१०) चैव बोद्धव्या. ।

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् समाप्तेन पुष्पिताना दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य पुष्पिताना श्रमणेन यावत् समाप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्त ?

उत्कृष्टद्वाविंशतिसागरोपमस्थितिकश्च देवत्वेनोत्पन्न । सर्वत्र=सर्वेषु देवलोकेषु सर्वेषां देवतयोपपन्नानामुत्कृष्टस्थितिर्भणितव्या । सर्वे महाविदेहे सिद्धा भविष्यन्ति ।

॥ इति कल्पावतंसिका नाम द्वितीयो वर्ग समाप्तः ॥

अथ पुष्पिताख्यस्तृतीयो वर्ग-

मूलम्–जइ ण भंते ! समणेण भगवया जाव सपत्तेण उवंगाण दोचस्स वग्गस्स कप्पवडिंसियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते ?। तच्चस्स ण भंते ! वग्गस्स उवगाण पुप्फियाण के अट्ठे पण्णत्ते ?। एव खलु जंबू ! समणेण जाव सपत्तेण उवगाण तच्चस्स वग्गस्स पुप्फियाण दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–

'१ चंदे २ सूरे ३ सुक्के ४ बहुपुत्तिय ५ पुन्न ६ माणभद्दे य । ७ दत्त ८ सिवे ९ वलेया, १० अणाढिए चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥

जइ ण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण पुप्फियाण दस अज्झयणा पन्नत्ता पढमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाण समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

एवं खलु जंबू ! तेण कालेण २ रायगिहे नाम नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया । तेण कालेण २ सामी समोसढे, परिसा निग्गया । तेण कालेण २ चंदे जोइसिंदे

लोकमें उत्कृष्ट २२ सागरोपमकी स्थितिवाले देवपने उत्पन्न हुए ।

ये सब उत्कृष्ट स्थितिवाले देव हैं और महाविदेह क्षेत्रमें सिद्ध होगे ।

। कल्पावतंसिका नामक द्वितीय वर्ग समाप्त ।

ગુ-મની અઢાર સાગરોપમ આનંદની વીસ સાગરોપમ અને નંદનદેવની બાવીસ સાગરોપમ સ્થિતિ છે

એ બધા ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા દેવ છે અને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં સિદ્ધ થશે

કલ્પાવતંસિકા નામક દ્વિતીય વર્ગ સમાપ્ત

जम्बूद्वीपम्=एतन्नामकं द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप विपुलेन=विशालेन अवधिना=अवधिज्ञानेन आभोगयमानः=अवलोकयन् श्रमण भगवन्त महावीरं पश्यति, दृष्ट्वा यथा सूर्याभः आभियोग्यान्=अभि=मनोऽनुकूलं युज्यन्ते=प्रेष्यकार्ये व्यापार्यन्ते इत्याभियोग्यास्तान् देवान् शब्दयित्वा=आहूय यावत् सुरेन्द्रादि गमनयोग्य कृत्वा तामाज्ञप्तिका प्रत्यर्पयन्ति। सुस्वरा घण्टा यावत् विकुर्वणा नवर (यानविमान)

किया है उसके बाद तृतीय वर्ग स्वरूप पुष्पिता नामक उपाङ्गमें भगवानने कौनसे भाव निरूपण किये है?

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू! मोक्षको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने तृतीय वर्ग स्वरूप पुष्पिता नामक उपाङ्गके दस अध्ययन निरूपण किये हैं। वे इस प्रकार है-(१) चन्द्र (२) सूर (३) शुक्र (४) बहुपुत्रिक (५) पूर्ण (६) मानभद्र (७) दत्त (८) शिव (९) वलेपक और (१०) अनादृत ये दस अध्ययन है।

जम्बू स्वामी पूछते है—

हे भदन्त! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिता नामक उपाङ्गमें दस अध्ययनोका जो निरूपण किया है उन अध्ययनोंमें प्रथम अध्ययनके भावका भगवानने किस प्रकार वर्णन किया है।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते है—

हे जम्बू! उस काल उस समयमें राजगृह नामका नगर था। उसमें गुणशिलक नामका चैत्य था। उस नगरका राजा श्रेणिक था।

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ! મોક્ષપ્રાપ્ત એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે તૃતીય વર્ગ સ્વરૂપ પુષ્પિતા નામે ઉપાંગના દશ અધ્યયન નિરૂપણ કર્યા છે તે આ પ્રકારે છે— (૧) ચન્દ્ર (૨) સૂર (૩) શુક્ર (૪) બહુપુત્રિકા (૫) પૂર્ણ (૬) માનભદ્ર (૭) દત્ત (૮) શિવ (૯) વલેપક અને (૧૦) અનાદૃત એ દશ અધ્યયન છે

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે -

હે ભદન્ત! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતા નામે ઉપાંગના દશ અધ્યયનોનું જે નિરૂપણ કર્યું છે તે અધ્યયનોમાં પ્રથમ અધ્યયનના ભાવનું તેમણે કયા પ્રકારે વર્ણન કર્યું છે?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ! તે કાલ સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ચૈત્ય હતુ તે નગરનો રાજા શ્રેણિક હતો તે કાલે તે સમયે ભગવાન મહાવીર પ્રભુ

एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगर, गुणशिल चैत्य, श्रेणिको राजा। तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्वामी समवसृतः। परिषत् निर्गता। तस्मिन् काले तस्मिन् समये चन्द्रो ज्योतिष्केन्द्रः ज्योतीराज चन्द्रावतसके विमाने सभाया सुधर्माया चन्द्रे सिंहासने चतसृभि॰ सामानिकसाहस्रीभि॰ यावद् विहरति। इम च खलु केवलकल्प जम्बूद्वीप द्वीप विपुलेन अवधिना आभोगयमान॰ २ पश्यति, दृष्ट्वा श्रमण भगवन्त महावीर यथा सूर्याभ॰ आभियोग्यान् देवान् शब्दयित्वा यावत् सुरेन्द्राभिगमनयोग्य कृत्वा तामाज्ञप्तिका प्रत्यर्पयति। सुस्वरा घण्टा यावत् विकुर्वणा नगर (यानविमान) योजनसहस्रविस्तीर्णम् अर्धत्रिषष्टियोजनसमुच्छ्रितम्, महेन्द्रध्वज॰ पञ्चविंशतियोजनमुच्छ्रित॰, शेष यथा सूर्याभस्य यावदागतो नाट्यविधिस्तथैव प्रतिगतः। भदन्त इति भगवान् गौतम॰ श्रमण भगवन्त महावीर, पृच्छा, कुटागारशाला, शरीरमनुप्रविष्टा, पूर्वभव।

एव खलु गौतम! तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'श्रावस्ति॰' नाम नगरी आसीत्, कोष्ठक चैत्यम्। तत्र खलु श्रावस्त्या नगर्याम् अङ्गतिर्नाम गाथापतिरासीत् आढ्यो यावदपरिभूत॰। तत॰ खलु सः अङ्गतिर्गाथापति॰ श्रावस्त्या नगर्या बहूना नगरनिगम॰ यथा आनन्द॰ ॥ १ ॥

टीका-' जइण भते ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये ज्योतिष्केन्द्र =ज्योतिर्देवाधिपति, ज्योतीराज चन्द्रे सिंहासने चतसृभि॰ सामानिकसाहस्रीभिः यावत् विहरति=अवतिष्ठते। इम=प्रत्यक्ष खलु केवलकल्प=सम्पूर्ण

। अथ पुष्पिता नामक तृतीय वर्ग।

' जइण भते ' इत्यादि—

जम्बू स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त! मोक्षको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने कल्पावतसिका नामक द्वितीय वर्ग स्वरूप उपाङ्गमे पूर्वोक्त भावोंका निरूपण

અથ પુષ્પિતા નામક તૃતીય વર્ગ

' જઇણ ભતે ' ઇત્યાદિ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે –

હે ભદન્ત! મોક્ષ ગયેલ એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવતંસિકા નામે દ્વિતીય વર્ગ સ્વરૂપ ઉપાંગમાં પૂર્વોક્ત ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે ત્યાર પછી તૃતીય વર્ગ સ્વરૂપ પુષ્પિતા નામના ઉપાંગમાં ભગવાને કયા કયા ભાવ નિરૂપણ કર્યા છે?

जम्बूद्वीपम्=एतन्नामकं द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप विपुलेन=विशालेन अवधिना=अवधिज्ञानेन आभोगयमानः=अवलोकयन् श्रमण भगवन्त महावीर पश्यति, दृष्ट्वा यथा सूर्याभः आभियोग्यान्=अभि=मनोऽनुकूल युज्यन्ते=प्रेष्यकार्ये व्यापार्यन्ते इत्याभियोग्यास्तान् देवान् शब्दयित्वा=आहूय यावत् सुरेन्द्रादि गमनयोग्य कृत्वा तामाज्ञप्तिका प्रत्यर्पयन्ति। सुस्वरा घण्टा यावत् विकुर्वणा नवर (यानविमान)

किया है उसके बाद तृतीय वर्ग स्वरूप पुष्पिता नामक उपाङ्गमे भगवानने कौनसे भाव निरूपण किये हैं?

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू! मोक्षको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने तृतीय वर्ग स्वरूप पुष्पिता नामक उपाङ्गके दस अध्ययन निरूपण किये हैं। वे इस प्रकार हैं-(१) चन्द्र (२) सूर (३) शुक्र (४) बहुपुत्रिक (५) पूर्ण (६) मानभद्र (७) दत्त (८) शिव (९) वलेपक और (१०) अनादृत ये दस अध्ययन है।

जम्बू स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिता नामक उपाङ्गमें दस अध्ययनोंका जो निरूपण किया है उन अध्ययनोंमें प्रथम अध्ययनके भावका भगवानने किस प्रकार वर्णन किया है।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू। उस काल उस समयमे राजगृह नामका नगर था। उसमें गुणशिलक नामका चैत्य था। उस नगरका राजा श्रेणिक था।

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ! મોક્ષપ્રાપ્ત એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે તૃતીય વર્ગ સ્વરૂપ પુષ્પિતા નામે ઉપાંગના દશ અધ્યયન નિરૂપણ કર્યા છે તે આ પ્રકારે છે— (૧) ચન્દ્ર (૨) સૂર (૩) શુક્ર (૪) બહુપુત્રિકા (૫) પૂર્ણ (૬) માનભદ્ર (૭) દત્ત (૮) શિવ (૯) વલેપક અને (૧૦) અનાદૃત એ દશ અધ્યયન છે

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે-

હે ભદન્ત! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતા નામે ઉપાંગના દશ અધ્યયનોનું જે નિરૂપણ કર્યું છે તે અધ્યયનોમાં પ્રથમ અધ્યયનના ભાવનું તેમણે કયા પ્રકારે વર્ણન કર્યું છે?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ! તે કાલ સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ગુણશિલક નામે ચૈત્ય હતું તે નગરનો રાજા શ્રેણિક હતો તે કાલે તે સમયે ભગવાન મહાવીર પ્રભુ

योजनसहस्रविस्तीर्णम् अर्धत्रिषष्टियोजनसमुच्छ्रितम्, महेन्द्रध्वजः पञ्चविंशतियोजनमुच्छ्रितः, शेषं यथा—सूर्याभदेवस्य भगवद्वन्दने गमनागमनप्रभृति तद्वत् यावत्—

उस काल उस समयमें भगवान महावीर प्रभु वहां पधारे। जनसमुदायरूप परिषद् धर्मकथा सुननेके लिए निकली। उस काल उस समयमे ज्योतिष्कोके इन्द्र, ज्योतिषियोके राजा चन्द्र चन्द्रावतसक विमानके अन्दर सुधर्मा सभामे चन्द्र सिंहासनपर बैठे हुए चार हजार सामानिकोंके साथ यावत् विराजे हुए है।

ज्योतिषियोके इन्द्र चन्द्रमाने इस जम्बूद्वीप नामक सम्पूर्ण मध्य जम्बू द्वीपको विशाल अवधिज्ञानसे अवलोकन करते हुए भगवान महावीरका मध्य जम्बू द्वीपमे देखा और उनका दर्शन करनेके लिए जानेकी इच्छा की, और उन्होंने सूर्याभ देवके-समान ही आभियोग्य (भृत्य) देवोंको बुलाये और उनसे कहा-के देवानुप्रियो! तुम मध्य जम्बूद्वीपमें भगवानके समीप जाओ और वहाँ जाकर संवर्तक-वात आदिकी विकुर्वणा करके कूडा कचडा आदि साफ कर सुगन्ध द्रव्योंसे सुगंधित कर यावत योजन परिमित भूमण्डलको सुरेन्द्र आदि देवोंके जाने आने बैठने आदिके योग्य बनाकर खबर दो। वे आभियोग्य देव उपरोक्त आज्ञानुसार भूमण्डल तैयार कर खबर देते है। फिर चन्द्रदेवने पदातिसेनानायक देवको कहा कि—जाओ और सुखरा नामकी घण्टाको बजाकर सब देवी देवोंको भगवानके पास वन्दनार्थ चलनेके लिये सूचित करो। फिर उस देवने वैसे ही किया।

त्यां पधार्या जनसमुदायरूप परिषद् धर्मकथा सांभळवा नीकळी ते काळे ते समये ज्योतिष्कोना इन्द्र, ज्योतिषिओना राजा चन्द्र, चन्द्रावतंसक विमाननी अंदर सुधर्मा सभामां चन्द्रसिंहासन पर बेठेला चार हजार सामानिकोनी साथे बिराजेला छे

ते ज्योतिषीओना इन्द्र चन्द्रमाए आ जम्बूद्वीप नामना संपूर्ण मध्य जम्बूद्वीपमां जोया अने तेमना दर्शन करवा माटे जवानी इच्छा करी अने त्यारे तेमणे सूर्याभदेवनी पेठेज आभियोग्य (भृत्य) देवोने बोलावीने कह्यु—हे देवानुप्रियो! तमे मध्य जम्बूद्वीपमां भगवाननी पासे जाओ अने त्यां जई संवर्तक पवन आदिनी विकुर्वणा करी कचरो पूंजो वगेरे साफ करी सुगन्ध द्रव्योथी सुगंधित करी यावत् योजनना विस्तारमां भूमंडलने सुरेन्द्र आदि देवोने आववा जवा बेसवा आदि माटे योग्य बनावीने खबर आपो ते आभियोग्य देव उपरोकत आज्ञा अनुसार मंडल तैयार करी खबर दे छे पछी चन्द्रदेवे पदातिसेनाना नायक देवने कह्यु के—जाओ अने सुस्वरा नामनी घंटा वगाडीने सर्व देव देवीओने भगवाननी समीपे वंदना माटे जवा-माटे सूचना करो पछी ते देवे तेमज प्रमाणेज कर्यु

चन्द्रोऽप्यागतः, नाट्यविधिस्तथैव प्रतिगतः । तदनु भदन्त ! इति सम्बोध्य भगवान गौतमः श्रमण भगवन्त प्रति-'हे भन्त ! इति प्राहेत्यादिना गौतमस्य पृच्छा । कूटागारशाला=कूटस्येव-पर्वतशिखरस्येव आकारो यस्याः शालायाः सा कूटागारशाला, एतदृष्टान्तेन सा दिव्या देवर्द्धि शरीर=देवशरीरम् अनुप्रविष्टा=अन्तर्हिता । यथा कस्मिंश्चिदुत्सवे जनसमुदायवासयोग्या शाला वृष्ट्यादिभयभीतो विशाले जनसमूहोऽनुप्रविशति तथैव वैक्रियक्रियया चन्द्रदेवेन विरचितो देवगणो नाट्यकार्य दर्शयित्वा स्वकीय चन्द्रदेवशरीरमेवानुप्रविष्ट ।

सूर्याभके वर्णनसे विशेष केवल इतना ही इसका यानविमान एक हजार योजन विस्तीर्ण था और साढे तीरसठ योजन ऊँचा था। तथा महेन्द्र ध्वज पचीस योजन ऊँचा था, और इसके अतिरिक्त सभी वर्णन सूर्याभके समान समझना चाहिये। जिस प्रकार सूर्याभ देव भगवानके समीप आये, नाट्यविधि की और वापस लौट गये, वैसे ही चन्द्र देवके विषयमे जानना चाहिये। उनके चले जानेके बाद गौतम-स्वामी पूछते है—

हे भन्त ! यह चन्द्रदेव अपनी देवशक्ति देवप्रभावसे सभी देवताओंके द्वारा नाट्य दिखाकर फिर सबको अन्तर्हित कर केवल अकेला ही रह गया यह बडे आश्चर्यकी बात है।

भगवानने कहा-हे गौतम ! जैसे किसी उत्सवमे फैला हुवा जनसमूह वृष्टि आदि के भयसे किसी एक विशाल घरम प्रवेश करता

સૂર્યાભના વર્ણનથી વિશેષ ફક્ત આટલુ જ છે કે આનો યાનવિમાન એક હજાર યોજન વિસ્તીર્ણ હતુ અને સાડા ત્રેસઠ યોજન ઊંચુ હતુ તથા મહેન્દ્ર ધ્વજ પચીસ યોજન ઊંચો હતો અને તે સિવાય બધુ વર્ણન સૂર્યાભના જેવુ જ સમજવુ જોઈએ.

જે પ્રકારે સૂર્યાભ દેવ ભગવાનની પાસે આવ્યા, નાટ્યવિધિ કરી તથા પાછા ગયા એવી જ રીતે ચન્દ્રદેવના વિષયમા જાણવુ જોઈએ

તેમના ચાલ્યા ગયા પછી ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે—

હે ભદન્ત ! આ ચન્દ્રદેવ પોતાની દેવશક્તિના પ્રભાવથી સર્વે દેવતાઓ દ્વારા નાટક દેખાડીને પછી બધાને અન્તર્હિત કરી કેવળ એકલાજ રહી ગયા એ મોટા આશ્ચર્યની વાત છે

ભગવાને કહ્યુ-હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ ઉત્સવમા વિખરેલો જનસમૂહ વરસાદ આદિના ભયથી કોઈ એક વિશાલ ઘરમા પ્રવેશ કરે છે તેવી જ રીતે ચન્દ્રદેવે

हे भदन्त ! पूर्वभवः=चन्द्रस्य प्राक्तन जन्म कीदृशम् आसीत् ?, इति गौतम पृच्छा श्रुत्वा भगवानाह—हे गौतम ! एवं=वक्ष्यमाणरीत्या खलु=निश्चयेन तस्मिन काले तस्मिन समये 'श्रावस्ती' नाम नगर्यभवत्, कोष्ठक चैत्यम् । तत्र खलु श्रावस्त्या नगर्याम् अङ्गतिर्नाम गाथापतिरभवत्—आढ्यो=महान, ऋद्ध्यादिपूर्णो

है उसी प्रकार चन्द्रदेव अपनी वैक्रिय शक्तिसे देवताओंकी रचना कर नाटक दिखा उनको समेट कर अपने ही देवशरीरमें प्रविष्ट कर लिया।

फिर गौतम स्वामीने पूछा हे भदन्त ! चन्द्रदेव पूर्वजन्ममे कौन थे?

गौतमका ऐसा प्रश्न सुनकर भगवानने कहा—हे गौतम ! उस काल उस समयमे श्रावस्ती नामकी नगरी थी। उस नगरीमे कोष्ठक नामक चैत्य था। उस श्रावस्ती नगरीमे अङ्गति नामक एक गाथापति था। वह गाथापति बहुत बडी ऋद्धि आदिसे युक्त था। कीर्तिसे उज्ज्वल था। उसके पास बहुतसे घर, शय्या, आसन, गाडी, घोडे आदि थे। और वह बहुतसा धन तथा बहुत सोना चाँदी आदिका लेन देन करता था। उसके घरमें खाने बाद बहुतसा अन्न पान आदि खाने पीनेका सामान रहता था जो अनाथ-गरीब मनुष्योंको व पशु पक्षियोको दिया जाता था। उसके यहाँ दास दासियाँ बहुतसी थी और बहुतसे गाय, भैंस, भेडें थी। तथा वह अपरिभूत-प्रभावशाली था, यानी उसका कोई पराभव नही कर सकता था।

પોતાની વૈક્રિય શક્તિથી દેવતાઓની રચના કરી નાટક દેખાડી તેઓને સંકેલી લઇ પોતાના દેવશરીરમા પ્રવેશ કરી લીધો

ફરી ગૌતમ સ્વામીએ પૂછ્યુ—હે ભદન્ત! ચન્દ્રદેવ પૂર્વ જન્મમા કોણ હતા ?

ગૌતમનો એવો પ્રશ્ન સાભળી ભગવાને કહ્યુ—હે ગૌતમ ! તે કાલે તે સમયે શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી તે નગરીમા કોષ્ઠક નામ ચૈત્ય હતુ તે શ્રાવસ્તી નગરીમા અંગતિ નામે એક ગાથાપતિ હતો તે ગાથાપતિ બહુ મોટી સમૃદ્ધિવાળો હતો. કીર્તિથી ઉજ્જવળ હતો તેની પાસે ઘણા ઘર, શય્યા, આસન ગાડી, ઘોડા આદિ હતા અને તે બહુ ધન, તથા બહુ સોના ચાંદી આદિનુ લેણ દેણ કરતો હતો તેના ઘરમા ખાવા પીવા પછી પણ ઘણુ અન્ન પાન અને ઘણો ખાવા પીવાનો સમાન રહેતો હતો જે અનાથ-ગરીબ મનુષ્યો તથા પશુ પક્ષીઓને આપી દેવાતો હતો. તેને ત્યા દાસ દાસીઓ ઘણા હતા તથા ગાય ભેંસ ઘેટા પણ બહુ હતા વળી તે અપરિભૂત—પ્રભાવશાળી હતો અર્થાત્ તેનો કોઈ પરાભવ કરી શકતો નહોતો.

त्रा 'जाव' यावत्–'अड्ढे' आढ्यः, इत्यारभ्य 'अपरिभूए'–अपरिभूतः, इत्येतत्पर्यन्तोक्तसमस्तविशेषणविशिष्ट इत्यर्थस्तेन–'दित्ते, वित्थिन्न–विउल–भवण–सयणा–ऽऽसण-जाण–वाहणाइण्णे, बहुधण–बहुजायरूव–रयए, आओग–पओग–संपउत्ते, विच्छड्डियविउलभत्तपाणे, बहु–दासी–दास–गो महिस–गवेलयप्पभूए, बहुजणस्स' इत्येषां समन्वय कर्तव्यः। एतच्छाया च–'दीप्तो विस्तीर्ण–विपुल–भवन–शयना–सन–यान–वाहनाऽऽकीर्णो बहुधन–बहुजातरूप–रजत आयोग प्रयोग संप्रयुक्तो विच्छर्दितप्रचुरभक्तपानो बहुदासी–दास–गो–महिष–गवेलक-प्रभूतो बहुजनस्य' इति।

तत्र दीप्त =कीर्त्या उज्ज्वल', विस्तीर्णानि=विस्ततानि विपुलानि=बहूनि, भवनानि=गेहानि, शयनानि=तल्पानि, गादिइति 'भाषा" प्रसिद्धानि आसनानि=पीठकादीनि, यानानि=गाडीप्रभृतीनि,वाहनानि=अश्वादीनि, तैराकीर्ण'=व्याप्त. समुपेतो वा। बहु=विपुल धन=मणिप्रभृति यस्य स बहुधन., स चासौ,बहु=विपुल जात रूप=सुवर्ण, रजत=रूप्य यस्य स बहुजातरूपरजतश्च। आ=समन्ताद् योजन=द्विगु-

'आढ्य, दीप्त, और अपरिभूत' इन तीन विशेषणोंसे अंगति गाथापतिके लिये दीपकका दृष्टान्त दिया जाता है, वह इस प्रकार है–जैसे दीपक, तेल, बत्ती और शिखा (लौ) से युक्त होकर वायुरहित स्थानमें सुरक्षित रहकर प्रकाशित होता है, वैसे ही अगति गाथापति भी तेल और बत्तीके समान आढ्यता अर्थात् ऋद्धिसे, शिखाकी जगह उदारता गभीरता आदिसे और दीप्तिसे युक्त होकर, वायु रहित स्थानके समान मर्यादाका पालन आदि रूप सदाचारसे तथा पराभवरहितपनसे संयुक्त होकर तेजस्विता धारण करता था। अत. आढ्यता दीप्ति और अपरिभूतता, इन तीनोमें रहनेवाला हेतुताऽवच्छेदक धर्म

'આઢય, દીપ્ત અને અપરિભૂત' એ ત્રણ વિશેષણોથી અગતિ ગાથાપતિને માટે દીપકનુ દૃષ્ટાત કહે છે, તે આ પ્રમાણે–જેમ દીપક, તેલ, દીવેટ અને શિખા (ઝાળ) થી યુકત થઈને વાયુરહિત સ્થાનમા સુરક્ષિત રહી પ્રકાશિત થાય છે તેમ અગતિ ગાથાપતિ પણ તેલ અને દીવેટની પેઠે આઢયતા અર્થાત્ ઋદ્ધિથી, શિખાની જગ્યાએ ઉદારતા ગભીરતા આદિથી અને દીપ્તિથી યુકત થઈને વાયુરહિત સ્થાનની સમાન મર્યાદાના પાલન આદિ રૂપ સદાચારથી તથા પરાભવરહિત પણાથી સયુકત થઈને તેજસ્વિતા ધારણ કરતો હતો એ રીતે આઢયતા દીપ્તિ અને અપરિભૂતતા, એ ત્રણેમા રહેલો હેતુતાવચ્છેદક ધર્મ એક છે, તે કારણથી તૃણારણિમણિ ન્યાયે

णादिना भार्थे रूप्यादीनामधमर्णादिभ्यो नियोजनमायोगस्तस्य, प्र=प्रकर्षेण योजनम्=उपायचिन्तनं प्रयोगः, यद्वा-आयोगेन द्विगुणादिलाभतया प्रयोगः=अधमर्णानां सन्निधे द्रव्यस्य वितरणमायोगप्रयोगः, स संप्रयुक्तः=प्रवर्तितो यन, तस्मिन् वा संप्रयुक्तः=संलग्नो यः स आयोगप्रयोगसंप्रयुक्तः=नीत्या द्रव्योपार्जनप्रवृत्त इत्यर्थः। भक्तं च पानं च भक्तपाने, विपुले च ते भक्तपाने विपुलभक्तपाने, वि=विशेषेण छर्दिते=भोजनावशिष्टे भक्तपाने यस्य-स विच्छर्दितविपुलभक्तपानः, दीनेभ्यो दीयमानविपुलभक्तपान इत्यर्थः। दास्यश्च दासाश्च गावश्च महिषाश्च गवेलकाः=उरभ्राश्चेति दासीदासगोमहिषगवेलकाः, बहवश्च ते दासीदासगोमहिषगवेलका इति बहुदासीदासगोमहिषगवेलकास्ते प्रभूताः=प्रचुरा यस्य स बहुदासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूतः, अत्र गवादिपदं स्त्रीगवादीनामप्युपलक्षकं, यद्वा गोपदस्य=स्त्रीपुंगवयोरविशेषेण वाचकत्वादविरोध एव, महिष-गवेलक-शब्दयोश्च 'पुमान् स्त्रिया' इत्येकशेषान्महिष्यादीनामपि ग्रहणम्। बहुजनस्येति जातिविवक्षयैकवचनं, सम्बन्धसामान्ये च षष्ठी, तेन 'बहुजनै'-रित्यर्थो बोद्धव्यः, अत्र 'अपी' त्यस्ययोजनात् बहुजनैरपीति तत्त्वम्, अपरिभूतः=तत्पराभवरहितः, यद्वा-क्त प्रत्ययार्थस्याऽविवक्षितत्वादपरिभवनीयः-बहुजनैरपि पराभवितुमशक्य इत्यर्थः। एषूक्तविशेषणेषु "अड्ढे, दित्ते अपरिभूए" एभिस्त्रिभिर्विशेषणैरङ्गतिगाथापतौ प्रदीपदृष्टान्तोऽभिप्रेतस्तथाहि-यथा प्रदीपस्तैलवर्तिभ्यां शिखया च सपन्नो निर्वात स्थाने सुरक्षितः प्रकाशमासादयति, एवमयमपि तैलवर्तिस्थानीयया आढ्यताऽपरपर्यायवृद्ध्या शिखास्थानीययोदारता-गम्भीरतादिरूपया दीप्त्या च सपन्नो निर्वातस्थानस्थानीयया सदाचारमर्यादा

एक ही है, इस कारण तृणारणिमणि-न्यायसे प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम शब्दोंमें प्रमाणताके समान प्रत्येक (सिर्फ आढयता, सिर्फ दीप्ति, या सिर्फ अपरिभूतता) को हेतु नही मानना चाहिए।

जिस प्रकार आनन्द गाथापति धन धान्य आदिसे युक्त वाणिज्य ग्राममें निवास करता था। उसी प्रकार अङ्गति गाथापति भी श्रावस्ती नगरीमें निवास करता था।

પ્રત્યક્ષ, અનુમાન અને આગમ શબ્દોમાં પ્રમાણતાની પેઠે પ્રત્યેકને (માત્ર આઢયતા, માત્ર દીપ્તિ, અથવા માત્ર અપરિભૂતત-એ એકને) હેતુ માનવા નહિ.

જે પ્રકારે આનંદ ગાથાપતિ ધનધાન્ય આદિથી યુક્ત વાણિજ્ય ગ્રામમાં નિવાસ કરતા હતા તેવી જ રીતે અંગતિ ગાથાપતિ પણ શ્રાવસ્તી નગરીમાં નિવાસ કરતા હતા.

पालनान्विरूपयाऽपरिभूततया च सपन्न, समुज्ज्वलति-जगत्प्रसिद्धो भवतीति हेतुताऽवच्छेदकधर्मस्याऽऽढ्यता – दीप्त्यपरिभूततैतत्रितयसमुदायनिष्ठस्यैकधर्मस्य सत्त्वात्र तृणारणिमणि-न्यायेन प्रत्यक्षानुमानाऽऽगमशब्देषु प्रत्येक प्रमाजनकत्वमिव प्रत्येकमाढ्यतादीना त्रयाणा समुज्ज्वलनहेतुता, किन्तु प्रकाश प्रति तैलवर्त्यादिसमुदायवत् समुज्ज्वलन प्रति आढ्यतादिसमुदायस्यैव हेतुतेति बोध्यम्।

ततः खलु सोऽङ्गतिर्गाथापतिः श्रावस्त्या नगर्यां यथा वाणिज्यग्रामे आनन्दो नाम गाथापति परिवसति तथैवायमपीत्यर्थ ।

तदेव स्पष्टयति–"नगर–निगम–राइ–सर–तल्वर-माडविय–कोडुंबिय-इब्भ–सेट्ठि–सेणावइ सत्थवाहाण बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य कुडुंबेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य ण कुडुंबस्स मेढी पमाण आहारे, आलंबण, चक्खु, मेढीभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था" एतच्छाया–नगर निगम राजेश्वर तल्वर–माण्डविक–कौटुम्बिकेभ्य. श्रेष्ठि–सेनापति–सार्थवाहाना बहुषु कार्येषु च कारणेषु च मन्त्रेषु च कुटुम्बेषु च गुह्येषु च रहस्येषु च निश्चयेषु च व्यवहारेषु च आपृच्छनीय प्रतिपृच्छनीय, स्वस्यापि च खलु कुटुम्बस्य मेढि, प्रमाणम्, आधार, आलम्बन, चक्षु मेढिभूत, यावत् सर्वकार्यवर्द्धक चापि अभवत् । तत्र–नगरम्=

"पुण्यपापक्रियाविज्ञै,–र्दयादानप्रवर्तकै ।
कलाकलापकुशलै, सर्ववर्णै समाकुलम् ॥
भाषाभिर्विविधाभिश्च, युक्त नगरमुच्यते ।

वह अङ्गति गाथापति राजा ईश्वर यावत् सार्थवाहोंके द्वारा बहुतसे कार्योंमे, कारणो (उपायो) में, मन्त्र (सलाह) मे, कुटुम्बोमें, गुह्योमें, रहस्योमे, निश्चयोमें और व्यवहारोमें एक बार पूछा जाता था। और वह अपने कुटुम्बका भी मेढि, प्रमाण, आधार आलम्बन चक्षु, मेधीभूत यावत् समस्त कार्योंको बढाने वाला था। यहाँ यावत

એ અગતિ ગાથાપતિને, રાજા, ઈશ્વર યાવત્ સાર્થવાહે તરફથી ઘણા કાર્યોમા, કારણો (ઉપાયો) મા, મત્ર (સલાહ)મા, કુટુમ્બોમા, ગુહ્યોમા રહસ્યોમા, નિશ્ચયોમા અને વ્યવહારોમા એક વાર પૂછવામા આવતુ હતુ, વારવાર પણ પૂછવામા આવતુ હતુ અને તે પોતાના કુટુબનો પણ મેધિ પ્રમાણ, આધાર, આલબન, ચક્ષુ, મેધીભૂત, યાવત્ બધા કાર્યોને આગળ વધારનારો હતો

निगमो=व्यापारप्रधानस्थानम्, ईश्वराः=ऐश्वर्यसम्पन्ना, तलवराः=सन्तुष्ट भूपालदत्तपट्टबन्धपरिभूषितराजकल्पाः माण्डविका' = छिन्नभिन्नजनाश्रयविशेषो मण्डवस्तत्राधिकृताः, 'माडम्बिकाः' इति च्छायापक्षे तु ग्रामपञ्चशतीपतय इत्यर्थः, यद्वा-सार्धक्रोशद्वयपरिमितमान्तरैर्विच्छिन्न विच्छिन्न स्थितानां ग्रामाणा मधिपतयः, कौटुम्बिकाः=बहुकुटुम्बप्रतिपालकाः, इभ्या'=इभो=हस्ती तत्प्रमाण द्रव्यमर्हन्तीति, तथा ते च-जघन्य-मध्यमो-त्कृष्टभेदात् त्रिप्रकाराः तत्र हस्ति

शब्दसे राजा, ईश्वर, तलवर, माण्डविक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति और सार्थवाहका ग्रहण होता हैं। माण्डलिक नरेशको राजा, और ऐश्वर्य वालोको ईश्वर कहते हैं। राजा संतुष्ट होकर जिन्हें पट्टबन्ध देता है, वे राजाके समान पट्टबन्धसे विभूषित लोग तलवर कहलाते है। जो बस्ती छिन्न भिन्न हो उसे मण्डव और उसके अधिकारीको माण्डविक कहते हैं। 'माडविय' की छाया यदि 'माडम्बिक' की जाय तो माडम्बिकका अर्थ 'पाँच सौ गाँवोंका स्वामी' होता है। अथवा ढाई ढाई कोसकि दूरीपर जो अलग गाँव बसे हो, उनके स्वामीको 'माडम्बिक' कहते है। जो कुटुम्बका पालन पोषण करते हैं, या जिनके द्वारा बहुतसे कुटुम्बोंका पालन होता है, उन्हें 'कौटुम्बिक' कहते हैं। इभका अर्थ है हाथी, और हाथीके बराबर द्रव्य जिसके पास हो उसे 'इभ्य कहते है। जघन्य मध्यम और उत्कृष्टके भेदसे

અહીં 'जाव' શબ્દથી રાજા, ઈશ્વર, તલવર, માડવિક અથવા માડંબિક, કૌટુમ્બિક, ઇભ્ય, શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ અને સાર્થવાહ, એટલા શબ્દોનું ગ્રહણ થાય છે માંડલિક નરેશને રાજા અને ઐશ્વર્યવાળાઓને ઈશ્વર કહે છે રાજા સંતુષ્ટ થઈને જેને પટ્ટબંધ આપે છે તે રાજાઓના જેવા પટ્ટબંધથી વિભૂષિત લોકો તલવર કહેવાય છે જેની વસતી છિન્ન ભિન્ન હોય તેને મંડવ અને તેના અધિકારને માડવિક કહે છે 'माडविय' ની છાયા જો 'माडम्बिक' કરવામાં આવે તો 'माडम्बिक' નો 'પાંચસો ગામોનો ધણી' એનો અર્થ થાય છે અથવા અઢી અઢી ગાઉને અંતરે જુદા જુદા ગામો વસ્યા હોય તેના ધણીને 'माडम्बिक' કહે છે જે કુટુંબનું પાલન-પોષણ કરે છે અથવા જેનાં દ્વારા ઘણા કુટુંબોનું પાલન થાય છે, તેને કૌટુમ્બિક કહે છે 'इभ' નો અર્થ 'હાથી' છે, અને હાથીના જેટલું દ્રવ્ય જેની પાસે હોય, તેને 'इभ्य' કહે છે જઘન્ય, મધ્યમ અને ઉત્કૃષ્ટના ભેદે કરીને ઇભ્યે

परिमितमणि-मुक्ता-प्रवाल-सुवर्ण-रजतादिद्रव्यराशिस्वामिनो जघन्याः, हस्तिपरिमितवज्र-मणि-माणिक्य-राशिस्वामिनो मध्यमाः, हस्तिपरिमितकेवल वज्रराशिस्वामिन उत्कृष्टाः, श्रेष्ठिनो=लक्ष्मीकृपाकटाक्षप्रत्यक्षलक्ष्यमाण-द्रविणलक्ष लक्षणविलक्षणहिरण्यपट्टसमलङ्कृतमूर्धानो नगरप्रधानव्यवहर्तारः, सेनापतयः= चतुरङ्गसेनानायकाः, सार्थवाहा =गणिम-धरिम-मेय-परिच्छेद्य- रूप-क्रयविक्रेयवस्तुजातमादाय लाभेच्छया देशान्तराणि व्रजतां सार्थं वाहयन्ति=योगक्षेमाभ्यां परिपालयन्ति, दीनजनोपकाराय मूलधनं दत्त्वा तान् समर्द्धयन्तीति तथा,

इभ्य तीन प्रकारके हैं। जो हाथीके बराबर मणि, मुक्ता, प्रवाल (मूँगा) सोना, चाँदी आदि द्रव्य-राशिके स्वामी हों वे जघन्य इभ्य हैं। जो हाथीके बराबर हीरा और माणिककी राशिके स्वामी हों वे मध्यम इभ्य हैं। जो हाथीके बराबर केवल हीरोंकी राशिके स्वामी हों वे उत्कृष्ट इभ्य हैं। लक्ष्मीकी जिसपर पूरी २ कृपा हो और उस कृपा कोरके कारण जिनके लाखोंके खजाने हों, तथा जिनके सिरपर उन्हींका सूचित करने वाले चान्दीका विलक्षण पट्ट शोभायमान हो रहा हो, जो नगरके प्रधान व्यापारी हों, उन्हे श्रेष्ठी कहते हैं। चतुरङ्ग सेनाके स्वामीको सेनापति कहते है। जो गणिम, धरिम, मेय और परिछेद्य रूप खरीदने-वेचनेके योग्य वस्तुओंको लेकर नफाके लिये देशान्तर जाने वालेको साथ ले जाते है, योग (नयी वस्तुकी प्राप्ति) और क्षेम (प्राप्त वस्तुकी रक्षा) के द्वारा उनका पालन करते हैं, गरीबोंकी भलाईके लिये उन्हें पूँजी देकर व्यापार द्वारा धनवान बनाते हैं उन्हे सार्थवाह

ત્રણ પ્રકારના છે હાથીની બરાબર મણિ, મોતી, પરવાળા, સોનુ ચાંદી આદિ દ્રવ્યના ઢગલાના જે સ્વામી હોય તેઓ જઘન્ય ઇભ્ય છે હાથીની બરાબર હીરા અને માણેકના ઢગલાના જે સ્વામી હોય તેઓ મધ્યમ ઇભ્ય છે હાથીની બરાબર કેવળ હીરાના ઢગલાના જે સ્વામી હોય તેઓ ઉત્કૃષ્ટ ઇભ્ય છે જેમની ઉપર લક્ષ્મીની પૂરેપૂરી કૃપા હોય અને એ કૃપાને કારણે જેમની પાસે લાખોના ખજાના હોય તથા જેમને માથે તેમનુ સૂચન કરનારો ચાંદીનો વિલક્ષણ પટ્ટ શોભાયમાન થઇ રહ્યો હોય, જે નગરના મુખ્ય વ્યાપારી હોય, તેને 'श्रेष्ठी' કહે છે ચતુરંગ સેનાને સ્વામીને 'सेनापति' કહે છે ગણિમ, ધરિમ મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ખરીદવા-વેચવા યોગ્ય વસ્તુઓ લઇને નફાને માટે દેશાંતર જનારાઓને જે સાથે લઇ જાય છે યોગ (નવી વસ્તુની પ્રાપ્તિ) અને ક્ષેમ (પ્રાપ્ત વસ્તુનુ રક્ષણ) ની દ્વારા તેમનું પાલન કરે છે, ગરીબોના ભલા માટે તેમને પૂંજી આપીને વેપાર દ્વારા ધનવાન બનાવે છે તેમને '**सार्थवाह**' કહે છે, એક,

तत्र गणिमम्=एक-द्वि-त्रि-चतुरादिसंख्याक्रमेण यद्दीयते, यथा-नालिकेर-पूगीफल-कदलीफलादिकम्, धरिम=तुलाग्रेणोत्तोल्य यद्दीयते, यथा-व्रीहि-यव-लवण-सितादि, मेय=शराव-लघुभाण्डादिनोत्तोल्य यद्दीयते, यथा-दुग्ध-घृत-तैल-प्रभृति, परिच्छेद्य च प्रत्यक्षतो निकषादिपरीक्षया यद्दीयते, यथा-मणि-मुक्ता-प्रवाला-ऽऽभरणादि।

'सार्थवाहाना' मित्यत्र 'कृत्यानां कर्तरि वे' ति कर्तरि षष्ठी, अग्रे तनस्य 'आपृच्छनीयः, परिपृच्छनीयः' इत्यनीयर प्रत्ययस्य योगात्, सार्थवाहैरित्यपि तृतीयान्तेन कर्त्रा व्याख्येयम्।

बहुषु=प्रचुरेषु, अस्य सर्वैरेव सप्तम्यन्तैः सम्बन्धः। कार्येषु=कर्तव्येषु प्रयोजनेष्विति यावत्, कारणेषु=कार्यजातसम्पादकहेतुषु च, मन्त्रेषु=कर्तव्य निश्चयार्थं गुप्तविचारेषु। कुटुम्बेषु=बान्धवेषु, गुह्येषु=लज्जया गोपनीयेषु व्यव

करते हैं। एक, दो, तीन, चार आदि संख्याके हिसाबसे जिनका लेन देन होता है, 'गणिम' कहते हैं, जैसे-नारियल, सुपारी, केला आदि। तराजू पर तोलकर जिसका लेन देन हो, उसे 'धरिम' कहते हैं, जैसे धान, जौ, नमक, शक्कर आदि। सरावा छोटे २ वर्तन आदिसे नाप कर जिसका लेन देन होता है, उसे मेय कहते हैं, जैसे-दूध, घी, तैल आदि। सामने कसौटी आदि पर परीक्षा करके जिसका लेन देन होता है, उसे परिच्छेद्य कहते हैं। जैसे मणि, मोती, मूँगा, गहना आदि।

वह अङ्गति गाथापति, इन राजा, ईश्वर आदिके द्वारा बहुतसे कार्योंमें कार्यको सिद्ध करनेके उपायोंमे, कर्तव्यको निश्चित करनेके गुप्त विचारोंमें, बान्धवोंमें, लज्जाके कारण गुप्त रखे जाने वाले विषयोंमें,

બે, ત્રણ, ચાર આદિ સંખ્યાના હિસાબે જેની લેણુ-દેણુ થાય છે તેને ગણિમ કહે છે જેમકે નાળીએર, સોપારી ઇત્યાદિ, ત્રાજવાથી તોળીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામાં આવે છે તેને ધરિમ કહે છે, જેમકે ધાન્ય, જવ, મીઠું, સાકર ઇત્યાદિ, પાલી કે પવાલુ જેવા માપના વાસણુથી માપીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામા આવે છે તેને મેય કહે છે, જેમકે દૂધ, ઘી, તેલ વગેરે કસોટી આદિથી પરીક્ષા કરીને જેની લેણુ-દેણ કરવામા આવે છે તેને પરિચ્છેદ્ય કહે છે, જેમકે મણિ, મોતી, પરવાળા, ઘરેણુ વગેરે

અંગતિ ગાથાપતિને, એ રાજા, ઇશ્વર, આદિ તરફથી ઘણા કાર્યોમા કાર્યોને સિદ્ધ કરવા માટેના ઉપાયોમા, કર્તવ્યને નિશ્ચિત કરવાના ગુપ્ત વિચારોમા બાંધવોમા, લજ્જાને કારણે ગુપ્ત રખાતા આવતા વિષયોમા, એકાતમા કરવામા આવતા કાર્યોમા,

हारेषु, रहस्येषु=रहसि=एकान्ते भवा रहस्यास्तेषु प्रच्छन्नव्यवहारेष्विति यावत्। निश्चयेषु=पूर्णनिर्णयेषु, व्यवहारेषु=व्यवहारप्रष्टव्येषु, यद्वा-बान्धवादिसमाचरितलोकविपरीतादिक्रियाप्रायश्चित्तेषु, विषयसप्तम्या 'एतेषु विषये' इत्यर्थः। आ=ईषत् सकृदिति यावत्, प्रच्छनीयः=प्रष्टव्यः, परि=सर्वतोभावेन असकृदिति यावत् प्रच्छनीयः=प्रष्टव्यः, स्वस्यापि=स्वकीयस्यापि, च-कारः विषयान्तरपरिग्रहार्थः। खलु=निश्चयेन कुटुम्बस्य=परिवारजनस्य मेढिः=व्रीहि-यव-गोधूमादिकणमर्दनार्थं खले निखाय स्थापितो दार्वादिमयः पशुबन्धनस्तम्भः, यत्र पङ्क्तिशोबद्धा बलीवर्दादयो व्रीह्यादिकणमर्दनाय परितो भ्राम्यन्ति तस्माद

एकान्तमें होने वाले कार्योमे, पूर्ण निश्चयोमे, व्यवहारके लिये पूछे जाने योग्य कार्योमे, अथवा बान्धवो द्वारा किये गये लोकाचारसे विरुद्ध कार्योके प्रायश्चित्तो (दडो) मे, अर्थात् उल्लिखित सब मामलोमे एकबार और बार-बार पूछा जाता था-इन सब बातोमे राजा आदि समस्त बडे बडे आदमी अङ्गतिकी सम्मति लेते थे।

इन सब विशेषणोसे सूत्रकारने यह प्रकट किया है कि अगति गाथापतिको सभी लोग मानते थे, वह अत्यन्त विश्वासपात्र था, विशालबुद्धिशाली था और सबको उचित सम्मति देता था।

धान जौ गेहूँ आदिकी दॉय करने (लाटा-दाने-निकालने) के लिये गढा खोदकर एक लकडी या बॉसका स्तम्भ गाडा जाता है, उसके चारों ओर एक पक्तिमें लाक (नाज) को कुचलनेके लिये बैल घूमते हैं उस स्तम्भको मेधि-मेढी-कहते हैं। बैल आदि उस समय

પૂર્ણ નિશ્ચયોમા વ્યવહારને માટે પૂછવા યોગ્ય કાર્યોમા અથવા બાધવો તરફથી કરવામા આવતા લોકાચારથી વિપરીત કાર્યોના પ્રાયશ્ચિત્તો (દડો) મા અર્થાત્ એવા બધા પ્રકરણોમા એકવાર તથા વારવાર પૂછવામા આવતુ હતુ—એ બધી વાતોમા રાજા વગેરે મોટા મોટા માણસો પણ અગતિની સમતિ લેતા હતા

એ બધા વિશેષણોવડે સૂત્રકારે એમ પ્રકટ કર્યું છે કે અગતિ ગાથાપતિને બધા લોકો માનતા હતા, તે અત્યત વિશ્વાસપાત્ર હતો, વિશાળ બુદ્ધિથી યુક્ત હતો અને બધાને વાજબી સલાહ-સમતિ આપતા હતે

ધાન્ય, જવ, ઘઉં વગેરેને કણુસવામાથી છૂટા કરવાને એક ખાડો ખોદી તેમા એક લાકડાનો ખાભો ખોડવામા આવે-છે અને પછી તેની ચારે બાજુએ એક સાથે કણુસવાને કચરવા માટે બળદ વગેરે ફર્યા કરે છે, એ ખાભાને મેધિ કહે છે બળદ

तत्र गणिमम्=एक-द्वि-त्रि-चतुरादिसंख्याक्रमेण यद्दीयते, यथा-नालिकेर-पूगीफल-कदलीफलादिकम्, धरिम=तुलाग्रेणोत्तोल्य यद्दीयते, यथा-व्रीहि-यव-लवण-सितादि, मेय=शराव-लघुभाण्डादिनोत्तोल्य यद्दीयते, यथा-दुग्ध-घृत-तैल-प्रभृति, परिच्छेद्य च प्रत्यक्षतो निकषादिपरीक्षया यद्दीयते, यथा-मणि-मुक्ता-प्रवाला-ऽऽभरणादि।

'सार्थवाहाना' मित्यत्र 'कृत्यानां कर्तरि वे' ति कर्तरि षष्ठी, अग्रेतनस्य 'आमन्त्रणीयः, परिमन्त्रणीयः' इत्यनीयर प्रत्ययस्य योगात्, सार्थवाहैरित्यपि तृतीयान्तेन कर्त्रा व्याख्येयम्।

बहुषु=प्रचुरेषु, अस्य सर्वैरेव सप्तम्यन्तैः सम्बन्धः। कार्येषु=कर्तव्येषु प्रयोजनेष्विति यावत्, कारणेषु=कार्यजातसम्पादकहेतुषु च, मन्त्रेषु=कर्तव्य निश्चयार्थं गुप्तविचारेषु। कुटुम्बेषु=बान्धवेषु, गुह्येषु=लज्जया गोपनीयेषु व्यव

कहते हैं। एक, दो, तीन, चार आदि संख्याके हिसाबसे जिनका लेन देन होता है, 'गणिम' कहते हैं, जैसे-नारियल, सुपारी, केला आदि। तराजू पर तोलकर जिसका लेन देन हो, उसे 'धरिम' कहते हैं, जैसे धान, जौ, नमक, शक्कर आदि। सरावा छोटे २ वर्तन आदिसे नाप कर जिसका लेन देन होता है, उसे मेय कहते हैं, जैसे-दूध, घी, तैल आदि। सामने कसौटी आदि पर परीक्षा करके जिसका लेन देन होता है, उसे परिच्छेद्य कहते हैं। जैसे मणि, मोती, मूँगा, गहना आदि।

वह अङ्गति गाथापति, इन राजा, ईश्वर आदिके द्वारा बहुतसे कार्योंमें कार्यको सिद्ध करनेके उपायोंमे, कर्तव्यको निश्चित करनेके गुप्त विचारोंमे, बान्धवोंमें, लज्जाके कारण गुप्त रखे जाने वाले विषयोंमें,

બે, ત્રણ, ચાર આદિ સંખ્યાના હિસાબે જેની લેણ-દેણ થાય છે તેને ગણિમ કહે છે જેમકે નાળીએર, સોપારી ઇત્યાદિ, ત્રાજવાથી તોલીને જેની લેણ-દેણ કરવામાં આવે છે તેને ધરિમ કહે છે, જેમકે ધાન્ય, જવ, મીઠું, સાકર ઇત્યાદિ, પાલી કે પવાલુ જેવા માપના વાસણથી માપીને જેની લેણ-દેણ કરવામા આવે છે તેને મેય કહે છે, જેમકે દૂધ, ઘી, તેલ વગેરે કસોટી આદિથી પરીક્ષા કરીને જેની લેણ-દેણ કરવામા આવે છે તેને પરિચ્છેદ્ય કહે છે જેમકે મણિ, મોતી, પરવાળા, ઘરેણું વગેરે

અંગતિ ગાથાપતિને, એ રાજા, ઇશ્વર આદિ તરફથી ઘણા કાર્યોમા કાર્યોને સિદ્ધ કરવા માટેના ઉપાયોમા, કર્તવ્યને નિશ્ચિત કરવાના ગુપ્ત વિચારોમા બાંધવોમા, લજ્જાને કારણે ગુપ્ત રાખવામા આવતા વિષયોમા, એકાંતમા કરવામા આવતા કાર્યોમા,

रज्जुस्तम्भादिवद्विपत्कूपपतज्जनोद्धारकतयाऽवलम्बनम्, आधारो नाम-यमधिष्ठाय जन उन्नतिं गच्छति, स्वल्पाऽवस्थो वा वर्तते सः, यदवलम्बनेन च विपदो विनिवर्तन्ते तदालम्बनमिति तयोर्भेदः, चक्षुः=नेत्र तद्वत् सर्वेषां सकलार्थप्रदर्शकः, यदुक्त-मेधि., प्रमाणम्, आधार., आलम्बन, चक्षुरिति । तदेव स्पष्टप्रतिपत्तये आपम्यवाचिभूतशब्दसम्मेलनेन पुनरावर्तयति-मेथीभूत इत्यादि, यावदिति यावच्छब्देन 'पमाणभूए, आहारभूए, आलंबणभूए' इत्येषां सग्रहो बोध्यस्तत्र-प्रमाणभूत, आधारभूत, आलम्बनभूत चक्षुर्भूतः, इतिच्छाया, पौनरुक्त्यवारण तु मेथिरर्थान्मेथीभूतो मेथिसदृश इति यावत्। प्रमाणमर्थात प्रमाणभूत प्रमाण' सदृश इति यावत । आधारोऽर्थादाधारभूत आधारसदृश इति यावत् । आलम्बनसदृश इति यावत् । चक्षुरर्थाच्चक्षुर्भूतश्चक्षु सदृश इति यावत् इति रीत्या

तथा अङ्गति गाथापति अपने कुटुम्बके भी आधार (आश्रय) थे, तथा आलम्बन थे, अर्थात् विपत्तिमें पडनेवाले मनुष्यको रस्सी या स्तम्भके समान सहारे थे।

अङ्गति अपने कुटुम्बके चक्षु थे, अर्थात् जैसे चक्षु मार्गको प्रकाशित करता है वैसे ही अङ्गति कुटुम्बियोंके भी समस्त अर्थोंके प्रदर्शक (सन्मार्गदर्शक) थे।

दूसरी बार मेथिभूत आदि विशेषण स्पष्ट बोधके लिये हैं। "जाव' शब्दसे प्रमाणभूत, आधारभूत, आलम्बनभूत, चक्षुर्भूत, इनका सग्रह होता है। यहाँ स्पष्टताके लिये 'भूत' शब्द अधिक दिया है, इसका तात्पर्य यह है कि अङ्गति गाथापति मेढी अर्थात् मेढीके सदृश थे, प्रमाण अर्थात् प्रमाणके सदृश थे, आधार अर्थात् आधारके सदृश

અગતિ પોતાના કુટુમ્બનો પણ આધાર (આશ્રય) હતો, તથા આલબન હતો, અર્થાત્ વિપત્તિમાં પડેલા મનુષ્યને દોરડું અથવા થાભલાના જેવા આધાર રૂપ હતો

અગતિ પોતાના કુટુમ્બના ચક્ષુરૂપ હતો, અર્થાત્ જેમ ચક્ષુ માર્ગને પ્રકાશિત કરે છે તેમ અગતિ સ્વકુટુમ્બિઓના પણ બધા અર્થોના પ્રકાશન (સન્માર્ગ દર્શક) હતો

બીજીવાર મેધિભૂત આદિ વિશેષણ સ્પષ્ટ બોધને માટે આપેલા છે 'जाव' શબ્દથી પ્રમાણભૂત, આધારભૂત, આલબનભૂત, ચક્ષુર્ભૂત, એ બધાનો સગ્રહ થાય છે, અહીં સ્પષ્ટતાને માટે 'भूत' શબ્દ વધારે આપ્યો છે એનું તાત્પર્ય એ છે કે અગતિ મેધિ અર્થાત મેધિની સમાન હતો, પ્રમાણ અર્થાત પ્રમાણની સમાન હતો, આધાર

श्यादयमपि मेधिः, अर्थादेतदवलम्बनेनैव सर्वस्यापि कुटुम्बस्यावस्थानमिति। कुटुम्बस्यापीत्यत्रापिशब्दबलान्न केवलं कुटुम्बस्यैव, अपितु सर्वस्यापि जनस्ये त्यवधेयम्। प्रमाण=प्रत्यक्षादिप्रमाणवद्धेयोपादेयप्रवृत्तिनिवृत्तिरूपतया संशयरादि त्येन पदार्थसार्थपरिच्छेदक, आधारः=आधारवत् सर्वेषामाश्रयभूतः, आलम्बन=

उसीपर निर्भर रहते हैं। यदि वह स्तम्भ न हो तो कोई बैल कहीं चला जाय, कोई कहीं–सब व्यवस्था भङ्ग हो जाय। गाथापति अङ्गति अपने कुटुम्बकी मेधि–मेढीके समान थे, अर्थात् कुटुम्ब उन्हीके सहारे था–वेही उसके व्यवस्थापक थे। मूल–पाठमे 'वि' (अपि) शब्द है, उसका तात्पर्य यह है कि वे केवल कुटुम्बके ही आश्रय नहीं थे, अपितु समस्त लोगोंके भी आश्रय थे, जैसा की उपर बताया जा चुका है। आगे जहाँ–जहाँ 'वि' (अपि–भी) आया है वहाँ सर्वत्र यही तात्पर्य समझना चाहिए। अङ्गति गाथापति अपने कुटुम्बके भी प्रमाण थे। अर्थात् जैसे प्रत्यक्ष अनुमान आदि प्रमाण सदेह आदिको दूर करके हेय (त्याग करने योग्य) पदार्थोंसे निवृत्ति और उपादेय (ग्रहण करने योग्य) पदार्थोंको जनाते है, उसी प्रकार अङ्गति भी अपने कुटुम्बियोंको बताते थे कि–अमुक कार्य करने योग्य है, अमुक कार्य करने योग्य नही है यह पदार्थ ग्राह्य–है, यह अग्राह्य है।

વગેરે એ વખતે એ ખાભાને અધારેજ ફર્યા કરે છે જો એ ખાભો ન હોય તો એક બળદ એક બાજુએ ચાલ્યો જાય અને બીજો બીજી બાજુએ ફરે, એ રીતે વ્યવસ્થા ભગ થઇ જાય ગાથાપતિ અગતિ પોતાના કુટુમ્બની મેધિ–મધ્યસ્થ સ્તભ જેવો હતો, અર્થાત્ કુટુમ્બ એને આધારે હતુ, તેજ કુટુમ્બનો વ્યવસ્થાપક હતો મૂળ પાઠમા 'वि' (अपि) શબ્દ છે, તાત્પર્ય એ છે કે તે કેવળ કુટુમ્બનાજ આધાર રૂપ નહોતો, પરતુ બધા લોકોના પણ આશ્રય રૂપ હતો, કે જેમ ઉપર દર્શાવવામા આવેલ છે આગળ પણ જ્યા જ્યા 'वि' अपि–પદ) આવ્યુ છે, ત્યા ત્યા બધે એજ તાત્પર્ય સમજવનુ છે

અગતિ ગાથાપતિ પોતાના કુટુમ્બમા પણ પ્રમાણ રૂપ હતો, અર્થાત્ જેમ પ્રત્યક્ષ અનુમાન આદિ પ્રમાણ, સદેહ આદિને દૂર કરીને હેય (ત્યજવા યોગ્ય) પદાર્થોથી નિવૃત્તિ અને ઉપાદેય (ગ્રહણ કરવા યોગ્ય) પદાર્થોમા પ્રવૃત્તિ કરાવતા તે પદાર્થોને દર્શાવે છે, તેમ અગતિ પણ પોતાના કુટુમ્બિયોને બતાવતો હતો કે– અમુક કાર્ય કરવુ યોગ્ય છે, અમુક કાર્ય કરવુ યોગ્ય નથી, અમુક પદાર્થ ગ્રાહ્ય છે, અમુક પદાર્થ અગ્રાહ્ય છે, ઇત્યાદિ

रज्जुस्तम्भादिवद्विपत्कूपपतज्जनोद्धारकतयाऽवलम्बनम्, आधारो नाम–यमधिष्ठाय जन उन्नतिं गच्छति, स्वरूपाऽवस्थो वा वर्तते सः, यदवलम्बनेन च विपदो विनिवर्तन्ते तदालम्बनमिति तयोर्भेदः, चक्षुः=नेत्र तद्वत् सर्वेषां सकलार्थप्रदर्शकः, यदुक्त–मेधिः, प्रमाणम्, आधारः, आलम्बन, चक्षुरिति । तदेव स्पष्टप्रतिपत्तये औपम्यवाचिभूतशब्दसम्मेलनेन पुनरावर्तयति–मेथीभूत इत्यादि, यावदिति याव-च्छब्देन 'पमाणभूए, आहारभूए, आलंवणभूए' इत्येषां संग्रहो बोध्यस्तत्र–प्रमाणभूत, आधारभूत, आलम्बनभूत चक्षुर्भूतः, इतिच्छाया, पौनरुक्त्यवारण तु मेधिरर्थान्मेथीभूतो मेधिसदृश इति यावत् । प्रमाणमर्थात् प्रमाणभूत प्रमाण' सदृश इति यावत् । आधारोऽर्थादाधारभूत आधारसदृश इति यावत् । आल-म्बनसदृश इति यावत । चक्षुरर्थाचक्षुर्भूतश्चक्षुःसदृश इति यावत् इति रीत्या

तथा अङ्गति गाथापति अपने कुटुम्बके भी आधार (आश्रय) थे, तथा आलम्बन थे, अर्थात् विपत्तिमें पडनेवाले मनुष्यको रस्सी या स्तम्भके समान सहारे थे।

अङ्गति अपने कुटुम्बके चक्षु थे, अर्थात् जैसे चक्षु मार्गको प्रकाशित करता है वैसे ही अङ्गति कुटुम्बियोंके भी समस्त अर्थोंके प्रदर्शक (सन्मार्गदर्शक) थे।

दूसरी वार मेधिभूत आदि विशेषण स्पष्ट बोधके लिये ह। "जाव' शब्दसे प्रमाणभूत, आधारभूत, आलम्बनभूत, चक्षुर्भूत, इनका संग्रह होता हैं। यहाँ स्पष्टताके लिये 'भूत' शब्द अधिक दिया है, इसका तात्पर्य यह है कि अङ्गति गाथापति मेढी अर्थात् मेढीके सदृश थे, प्रमाण अर्थात् प्रमाणके सदृश थे, आधार अर्थात् आधारके सदृश

અંગતિ પોતાના કુટુંબનો પણ આધાર (આશ્રય) હતો, તથા આલંબન હતો, અર્થાત્ વિપત્તિમાં પડેલા મનુષ્યને દોરડું અથવા થાભલાના જેવા આધાર રૂપ હતો

અંગતિ પોતાના કુટુંબના ચક્ષુરૂપ હતો, અર્થાત્ જેમ ચક્ષુ માર્ગને પ્રકાશિત કરે છે તેમ અંગતિ સ્વકુટુમ્બિઓના પણ બધા અર્થોના પ્રકાશન (સન્માર્ગ દર્શક) હતો

બીજીવાર મેધિભૂત આદિ વિશેષણ સ્પષ્ટ બોધને માટે આપેલા છે 'जाव' શબ્દથી પ્રમાણભૂત, આધારભૂત, આલંબનભૂત, ચક્ષુર્ભૂત, એ બધાનો સંગ્રહ થાય છે, અહીં સ્પષ્ટતાને માટે 'भूत' શબ્દ વધારે આપ્યો છે એનું તાત્પર્ય એ છે કે અંગતિ મેધિ અર્થાત મેધિની સમાન હતો, પ્રમાણ અર્થાત પ્રમાણની સમાન હતો, આધાર

समन्वयाद्भवतीति सूक्ष्मचक्षुषाऽन्वेक्षणीयम्, च=चकारो निश्चेत्यर्थे सर्वकार्यवर्धक'=सर्वेषां कार्याणां सम्पादकोऽपि,(एतादृशोऽङ्गतिगाथापतिः)अभवत्=आसीत् ॥१॥

मूलम्—तेण कालेणं २ पासेण अरहा पुरिसा दाणीए आदिगरे जहा महावीरो, नवुस्सेहे सोलसेहि समणसाहस्सीहि, अट्ठतीसा जाव कोट्ठए समोसढे, परिसा निग्गया।

तए णं से अगई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ जहा कत्तिओ सेट्ठी तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ, धम्म सोच्चा निसम्म० ज नवर देवाणुप्पिया! जेट्ठपुत्ते कुडुबे ठावेमि, तए ण अह देवाणुप्पियाण जाव पव्वयामि, जहा गगदत्तो तहा पव्वइए जाव गुत्तवभयारी। तए णं से अगई अणगारे पासस्स अरहओ तहारूवाण थेराण अतिए सामाइय माइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वहूहि चउत्थ जाव भावेमाणे वहूइ वासाइ सामन्नपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए तीस भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता विराहियसामन्ने कालमासे काल किच्चा चदवडिसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए चदे जोइसिंदत्ताए उववन्ने।

तए ण से चदे जोइसिंदे जोइसराया अहुणोववन्ने समाणे पच विहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छइ, तजहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इदियपज्जत्तीए सासोसासपज्जत्तीए भासा मणपज्जत्तीए।

थे, आलम्बनके सदृश थे, चक्षु अर्थात चक्षुके सदृश थे। अङ्गति समस्त कार्योंके सम्पादन करनेवाले भी थे ॥ १ ॥

અર્થાત્ આધારની સમાન હતા, આલંબન અર્થાત્ આલંબનની સમાન હતા અને ચક્ષુ અર્થાત ચક્ષુની સમાન હતા અંગતિ બધા કાર્યોનું સંપાદન કરનાર પણ હતા (૧)

चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं। एवं खलु गोयमा ! चंदस्स जाव जोइसरन्नो सा दिव्वा देविड्ढी०। चंदे णं भंते ! जोइसिंदे जोइसराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ चइत्ता कहिं गच्छिहिइ २ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ५ एवं खलु जम्बू ! समणेणं० निक्खेवओ ॥ २ ॥

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

छाया-तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वः खलु अर्हन् पुरुषादानीय आदिकरो यथा महावीरः, नवहस्तोच्छ्रायः षोडशभिः श्रमणसाहस्रीभिः, अष्टात्रिंशद् यावत् कोष्ठके समवसृतः, परिषत् निर्गता।

ततः खलु सः अङ्गतिर्गाथापतिः अस्याः कथायाः लब्धार्थः सन् हृष्टो यथा कार्तिकश्रेष्ठी तथा निर्गच्छति यावत् पर्युपास्ते, धर्मं श्रुत्वा निशम्य० यत् नवरं देवानुप्रिय ! ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयामि, ततः खलु अहं देवानुप्रियाणां यावत् प्रव्रजामि यथा गङ्गदत्तस्तथा प्रव्रजितो यावद् गुप्तब्रह्मचारी। ततः खलु स अङ्गतिः अनगारः पार्श्वस्य अर्हतः तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य बहुभिश्चतुर्थ० यावद् भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति पालयित्वा अर्धमासिक्या संलेखनया त्रिंशद् भक्तानि अनशनया छित्त्वा विराधितश्रामण्यः कालमासे कालं कृत्वा चन्द्रावतंसके विमाने उपपातसभायां देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते चन्द्रो ज्योतिरिन्द्रतया उपपन्नः।

ततः खलु स चन्द्रो ज्योतिरिन्द्रो ज्योतिराजः अधुनोपपन्नः सन् पञ्चविधया पर्याप्त्या पर्याप्तिभावं गच्छति, तद्यथा-आहारपर्याप्त्या शरीरपर्याप्त्या इन्द्रियपर्याप्त्या श्वासोच्छ्वासपर्याप्त्या भाषामनःपर्याप्त्या।

चन्द्रस्य खलु भदन्त ! ज्योतिरिन्द्रस्य ज्योतीराजस्य कियत्कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! पल्योपमं वर्षशतसहस्राभ्यधिकम्। एवं खलु गौतम ! चन्द्रस्य यावत् ज्योतीराजस्य सा दिव्या देवऋद्धिः०। चन्द्रः खलु भदन्त ! ज्योति

रिन्द्रो ज्योतीराजस्तस्माद्देवलोकादायुःक्षयेण ३ च्युत्वा कुत्र गमिष्यति ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति५ । एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन निक्षेपकः ॥२॥

॥ इति प्रथमाध्ययनम् ॥

टीका–'तेण कालेण' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वः =त्रिविंश. पार्श्वनामा तीर्थङ्कर', अर्हन्=चतुर्विधघातिकर्मनिवारकः केवलज्ञानकेवल दर्शनसम्पन्न', 'पुरुषादानीयः=पुरुषैः=मुमुक्षुभिर्जनैः स्वकल्याणार्थमादीयत इति पुरुषादानीयः, यद्वा-पुरुषाणां मध्ये आदेयवचनत्वात् पुरुषादानीय', आदिकर.= धर्मस्य आदिकर , यथा-महावीरः=चतुर्विंशस्तीर्थङ्कर', तथैव सर्वगुणसम्पन्न, किन्तु पार्श्वप्रभु. नवहस्तोच्छ्राय.=नवहस्तपरिमितशरीर. षोडशभिः श्रमणसाहस्रीभि , अष्टात्रिंशद्भिः श्रमणीसहस्रैश्च युक्तः यावद् ग्रामानुग्राम विहरन् कोष्ठके= कोष्ठनामोद्याने समवसृत =समागतः, परिषत् निर्गता, पार्श्वतीर्थङ्करस्य धर्म देशना श्रुत्वा स्वस्थान गता ।

'तेण कालेण' इत्यादि—उस काल उस समयमें पार्श्व प्रभु तेवीसवें तीर्थङ्कर ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय इन चार घाति कर्मों के निवारक केवलज्ञान, केवलदर्शनसे युक्त, मुमुक्षुजनोंसे सेव्य अथवा पुरुषोके बीचमे उनका वचन आदानीय=ग्राह्य था इसलिये पुरुषादानीय, धर्मके आदिकर भगवान महावीरके समान सभी गुणोसे युक्त नौ हाथ उँचे शरीरवाले सोलह हजार श्रमण और अडतीस हजार श्रमणियोंसे युक्त एक ग्रामसे दूसरे ग्राम तीर्थङ्कर परम्परासे विचरते हुए कोष्ठक नामक उद्यानमे पधारे। जन समुदायरूप परिषद अपने २ स्थानसे धर्मश्रवणके लिये निकली। पार्श्वनाथ भगवानकी धर्मदेशना सुनकर अपने २ स्थान गयी।

'तेण कालेण' ઇત્યાદિ તે કાલે તે સમયે પાર્શ્વ પ્રભુ તેવીસમા તીર્થંકર જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય, મોહનીય તથા અંતરાય એ ચાર ઘાતી કર્મોના નિવારક, કેવલજ્ઞાન કેવલદર્શનથી યુક્ત, મુમુક્ષુ જનોથી સેવ્ય, અથવા પુરૂષોની વચમાં તેમનું વચન આદાનીય=ગ્રાહ્ય હતુ આથી પુરૂષાદાનીય, ધર્મના આદિ કરવાવાળા ભગવાન મહાવીર સમાન સર્વે ગુણોથી યુક્ત, નવ હાથ ઊંચા શરીરવાળા, સોળ હજાર શ્રમણ તથા આડત્રીસ હજાર શ્રમણિયોથી યુક્ત એક ગામથી બીજે ગામ તીર્થંકર પરંપરાથી વિચરતા વિચરતા કોષ્ઠક-નામના ઉદ્યાન (બાગ)માં પધાર્યા જન સમુદાય રૂપ પરિષદ પોત પોતાના સ્થાનથી ધર્મ સાભળવા માટે, નીકળી, પાર્શ્વનાથ ભગવાનની ધર્મ-દેશના સાભળી પોતપોતાને સ્થાને ગઈ

ततः खलु सोऽङ्गतिर्गाथापति. अस्या कथायाः='पुरुषादानीय पार्श्व नाथ. प्रभुश्च कोष्ठके समवसृत' इति वार्तायाः लब्धार्थ'=ज्ञातवृत्तान्त सन् हृष्ट' प्रमुदितः यथा कार्तिकश्रेष्ठी तथा निर्गच्छति, यावत् पर्युपास्ते=पार्श्वनाथ प्रभु सेवते स्म। धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण श्रुत्वा=कर्णपथे कृत्वा, निशम्य=हृदि समवधार्य देवानुप्रिय'=हे भगवन्' यत् नवर=केवल ज्येष्ठपुत्र रक्षकतया कुटुम्बे स्थापयामि, ततः खलु अह देवानुप्रियाणामन्तिके यावत् प्रव्रजामि= सयम गृह्णामि, यथा भगवत्यङ्गोक्तो गङ्गदत्तस्तथा प्रव्रजितो यावच्छब्देन–स हि–'किंपागफलोवम मुणियविसयसोक्ख जलवुब्बुयसमाण कुसग्गविंदुचचल जीविय नाऊणमधुव चइत्ता हिरण्ण विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसखसिलप्पवालरत्तरयणमाइय विच्छड्डइत्ता दाण दाइयाण परिभाइत्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइओ जहा तहा अगईए गिहनायगो परिचइय सव्व पव्वइओ जाओ य पचसमिओ तिगुत्तो अममो अकिंचणो गुत्तिदिओ' इत्येव सग्राह्यम्। एतच्छाया च–स किंपाकफलोपम ज्ञात्वा विषयसौख्य जलबुद्बुदसमान कुशाग्रबिन्दुचञ्चल

उसके बाद वह अङ्गति गाथापति भगवान पार्श्वनाथके आनेका वृत्तात सुनकर हृष्ट होकर कार्तिक सेठके समान निकला। पार्श्वनाथ प्रभुके पास जाकर उसने उनकी सेवा की, और भगवान पार्श्वनाथके द्वारा उपदिष्ट श्रुत चारित्र लक्षण धर्मको सुना, और उसे अपने हृदयमे अवधारित किया। उसके बाद उसने हाथ जोडकर प्रार्थना की–हे भगवन्! मैं अपने बडे लडकेको कुटुम्बका भार देकर बादमे आपके पास सयम ग्रहण करना चाहता हूँ। अनन्तर वह भगवती अङ्गमे उक्त गगदत्तके समान ही विषय सुखको किंपाक फलके सदृश जानकर जीवनको जल बुद्बुद तथा कुशाके अग्र भागमे स्थित जल-

ત્યાર પછી તે અંગતિ ગાથાપતિ ભગવાન પાર્શ્વનાથના આવવાના વૃત્તાન્ત સાભળી હૃષ્ટ થઈ કાર્તિક શેઠની પેઠે નીકળ્યો. પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે જઈ તેણે તેમની સેવા કરી તથા ભગવાન પાર્શ્વનાથ દ્વારા ઉપદિષ્ટ શ્રુતચારિત્ર લક્ષણ ધર્મ સાભળ્યો, અને તે પોતના હૃદયમા ધારણ કર્યો ત્યાર પછી તેણે હાથ જોડીને પ્રાર્થના કરી–હે ભગવન્! હુ મારા મોટા દીકરાને કુટુબનો ભાર સોપી દઈને આપની પાસે સયમ ગ્રહણ કરવા ઇચ્છા રાખુ છુ ત્યાર પછી તે ભગવતીસૂત્રમા કહેલ ગગદત્તની પેઠેજ વિષય સુખને કિંપાક ફળની જેમ સમજી જીવનને પાણીના પરપોટા તથા કુશના અગ્ર ભાગમા રહેલા જલબિંદુ સમાન ચચલ અને અનિત્ય સમજીને તથા

रिन्द्रो ज्योतीराजस्तस्माद्देवलोकादायुःक्षयेण ३ च्युत्वा कुत्र गमिष्यति २? गौतम! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति५। एवं खलु जम्बूः! श्रमणेन निक्षेपकः ॥२॥

॥ इति प्रथमाध्ययनम् ॥

टीका-'तेण कालेण' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वः =त्रिविंशः पार्श्वनामा तीर्थङ्करः, अर्हन्=चतुर्विधघातिकर्मनिवारकः केवलज्ञानकेवल दर्शनसम्पन्नः, पुरुषादानीयः=पुरुषैः=मुमुक्षुभिर्जनैः स्वकल्याणार्थमादीयत इति पुरुषादानीयः, यद्वा-पुरुषाणां मध्ये आदेयवचनत्वात् पुरुषादानीयः, आदिकरः= धर्मस्य आदिकरः, यथा-महावीरः=चतुर्विंशस्तीर्थङ्करः, तथैव सर्वगुणसम्पन्नः, किन्तु पार्श्वप्रभुः नवहस्तोच्छ्रायः=नवहस्तपरिमितशरीरः षोडशभिः श्रमणसाहस्रीभिः, अष्टात्रिंशद्भिः श्रमणीसहस्रैश्च युक्तः यावद् ग्रामानुग्रामं विहरन् कोष्ठके= कोष्ठनामोद्याने समवसृतः=समागतः, परिषत् निर्गता, पार्श्वतीर्थङ्करस्य धर्म देशनां श्रुत्वा स्वस्थानं गता।

'तेण कालेण' इत्यादि—उस काल उस समयमें पार्श्व प्रभु तेवीसवें तीर्थङ्कर ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय ओर अन्तराय इन चार घाति कर्मों के निवारक केवलज्ञान, केवलदर्शनसे युक्त, मुमुक्षुजनोसे सेव्य अथवा पुरुषोके बीचमें उनका वचन आदानीय=ग्राह्य था इसलिये पुरुषादानीय, धर्मके आदिकर भगवान महावीरके समान सभी गुणोंसे युक्त नौ हाथ उँचे शरीरवाले सोलह हजार श्रमण और अडतीस हजार श्रमणियोंसे युक्त एक ग्रामसे दूसरे ग्राम तीर्थङ्कर परम्परासे विचरते हुए कोष्ठक नामक उद्यानमे पधारे। जन समुदायरूप परिषद अपने २ स्थानसे धर्मश्रवणके लिये निकली। पार्श्वनाथ भगवानकी धर्मदेशना सुनकर अपने २ स्थान गयी।

'तेण कालेण' ઇત્યાદિ તે કાલે તે સમયે પાર્શ્વ પ્રભુ તેવીસમા તીર્થંકર જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય, મોહનીય તથા અંતરાય એ ચાર ઘાતી કર્મોના નિવારક, કેવલજ્ઞાન કેવલદર્શનથી યુકત, મુમુક્ષુ જનોથી સેવ્ય, અથવા પુરૂષોની વચમાં તેમનું વચન આદાનીય=ગ્રાહ્ય હતું આથી પુરૂષાદાનીય, ધર્મના આદિ કરવાવાળા ભગવાન મહાવીર સમાન સર્વે ગુણોથી યુકત, નવ હાથ ઊંચા શરીરવાળા, સોળ હજાર શ્રમણ તથા આડત્રીસ હજાર શ્રમણિયોથી યુક્ત એક ગામથી બીજે ગામ તીર્થંકર પરંપરાથી વિચરતા વિચરતા કોષ્ઠક નામના ઉદ્યાન (બાગ)મા પધાર્યા જન સમુદાય રૂપ પરિષદ પોત પોતાના સ્થાનથી ધર્મ સાંભળવા માટે નીકળી, પાર્શ્વનાથ ભગવાનની ધર્મ-દેશના સાંભળી પોતપોતાને સ્થાને ગઇ

विराधना द्विधा-मूलगुणविषया उत्तरगुणविषया च, अत्रोत्तरगुणविषया विराधना पिण्डविशुद्ध्यादयो विज्ञेया', न तु प्रथमा, तत्र कदाचित् द्विचत्वारिंशद्दोषविशुद्धाहारस्य न ग्रहणं कृतम् , कदाचित् ईर्यासमित्यादिसमाराधनेऽनादरः कृतः, कदाचित् अभिग्रहाश्च गृहीता अपि न सम्यक् पालिताः, विभूषार्थमङ्गपादप्रक्षालनादि च कृतम् , इत्यादिरूपेण व्रतविराधना कृता, सा च न गुरु

पालन किया। परन्तु उत्तरगुणकी विराधनाके कारण विराधितचारित्र हो, अर्धमासिकी सलेखनासे अनशनद्वारा तीस भक्तोंका छेदन कर काल मासमें काल करके चन्द्रावतंसक विमानमें उपपात सभामें देवदृष्य वस्त्रोंसे आच्छादित देवशय्यामें वह अङ्गति अनगार [१] आहार-पर्याप्ति [२] शरीर-पर्याप्ति [३] इन्द्रिय-पर्याप्ति [४] श्वासोच्छ्वास-पर्याप्ति भाषामन पर्याप्ति भावको प्राप्त करके ज्योतिषियोंके इन्द्र चन्द्र होकर उत्पन्न हुए।

विराधना दो प्रकारकी है-मूलगुणविराधना और उत्तरगुण-विराधना। उनमे पाच महाव्रतमें दोष लगाना मुलगुणविराधना है। और पिण्डविशुद्धि आदिमें दोष लगाना जैसे-कभी बयालीस दोष सहित आहार पानीका ग्रहण करना कभी ईर्या आदि समितियोंके आराधनमे प्रमाद करना कभी अभिग्रह लेना किन्तु सम्यक्र नहीं पालना तथा विभूषाके लिये शरीर चरण आदिका क्षालन करना, आदि २ उत्तरगुण विषयक विराधना देशविराधना है। अङ्गति

વિરાધનાને કારણે વિરાધિતચારિત્રવાળા થઈ અર્ધમાસિકી સલેખનામા અનશન દ્વારા ત્રીસ ભકતનુ છેદન કરી કાલ માસમા કાલ કરીને ચન્દ્રાવતંસક વિમાનમા ઉપપાત સભામા દેવદૃષ્ય વસ્ત્રોથી આચ્છાદિત (ઢંકાયેલી) દેવશય્યામા તે અગતિ અનગાર (૧) આહાર-પર્યાપ્તિ (૨) શરીર-પર્યાપ્તિ [૩] ઇન્દ્રિય-પર્યાપ્તિ (૪) શ્વાસોચ્છ્વાસ-પર્યાપ્તિ-ભાષામન-પર્યાપ્તિ ભાવને પ્રાપ્ત કરીને જ્યોતિષોના ઇન્દ્ર ચદ્ર બનીને ઉત્પન્ન થયા

વિરાધના બે પ્રકારની છે-મૂલગુણવિરાધના અને ઉત્તરગુણવિરાધના તેમા પાચ મહાવ્રતમા લગાડવો એ મૂલગુણવિરાધના છે અને પિંડ વિશુદ્ધ આદિમા દોષ લગાડવો જેમકે-કોઈવાર બેતાલીસ દોષ સહિત આહાર પાણી લેવા, કોઈવાર ઈર્યા વગેરે સમિતિઓના આરાધનમા પ્રમાદ કરવો, કોઈવાર અભિગ્રહ લેવો પરતુ સમ્યક્ (સારી રીતે) ન પાળવો, તથા વિભૂષા માટે શરીર ચરણ આદિ ધોવા આદિ આદિ ઉત્તરગુણ વિષયક વિરાધના દેશવિરાધના છે અગતિ અનગારે મૂલ ગુણની વિરાધના કરી નહેતી

जीवितं च ज्ञात्वाऽध्रुवं त्यक्त्वा हिरण्यं विपुल–धन–कनक–रत्न–मणि–मौक्तिक–शङ्ख–शिला–प्रवाल–रक्तरत्नादिकं विमुच्य दानं दायिकानां परिभाज्य अगारतः अनगारितां प्रव्रजितः यथा तथा अङ्गतिरपि गृहनायकः परित्यज्य सर्वं प्रव्रजितो जातश्च पञ्चसमितः, त्रिगुप्तः, अममः, अकिञ्चनः गुप्तेन्द्रियः, इति। गुप्तब्रह्मचारी बभूव, ततः खलु अङ्गतिरनगारः पार्श्वस्यार्हतस्तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीत्य च बहुभिः चतुर्थषष्ठाऽष्टम–दशमद्वादशमासार्धमासक्षपणैरात्मानं भावयन्=वासयन् बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं=मुनिव्रतं पालयति पालयित्वा विराधितश्रामण्यः=विराधितमुनिव्रतः,

बिन्दुके समान चचल एव अनित्य समझकर और बहुतसा चांदी धन कनक रत्न मणि मौक्तिक शख रत्न शिला प्रवाल रक्तरत्न आदिको छोडकर और दान देकर तथा सम्पत्तिके भागियोंको सम्पत्तिका भाग देकर घरसे निकल गङ्गदत्तके समान प्रव्रजित हो गये। प्रव्रज्या लेनेपर वे अङ्गति अनगार ईर्या आदि पाँच समितियोंसे समित मन आदि तीन गुप्तिसे गुप्त और ममत्व रहित एव अकिञ्चन-बाह्याभ्यन्तर परिग्रहसे रहित और पाँचो इन्द्रियोंको दमन करनेवाले अनगार हो गये, और गुप्त ब्रह्मचारी बने। उसके बाद अङ्गति अनगारने अर्हत् पार्श्व प्रभुके तथारूप–बहुश्रुत–स्थविरोंके समीप सामायिक आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन किया। अध्ययनके बाद बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम दशम द्वादश मासार्ध मास क्षपण रूप तपसे अपनी आत्माको भावित करते हुए बहुत वर्षों तक चारित्र

ઘણુ ચાદી, ધન, સોનુ, રત્ન, મણિ (ઝવેરાત), મોતી, શખ, શિલા, પ્રવાલ, રક્ત (માણેક) આદિ છોડી દઈને અને દાન દઈને તથા સપત્તિના ભાગીદારોને સપત્તિનો ભાગ આપી પોતાના ઘરથી નીકળી ગગદત્તની પેઠે પ્રવ્રજિત થઈ ગયા પ્રવ્રજ્યા લઈને તે અગતિ અનગાર ઈર્યા આદિ પાચ સમિતિઓથી સમિત મન આદિ ત્રણ ગુપ્તિથી ગુપ્ત તથા મમત્વ રહિત અને અકિંચનબાહ્ય-અભ્યતર પરિગ્રહથી રહિત તથા પાચે ઇન્દ્રિયોનુ દમન કરવાવાળા અનગાર થઈ ગયા તથા ગુપ્ત બ્રહ્મચારી બન્યા ત્યાર પછી અગતિ અનગારે અર્હત પાર્શ્વ પ્રભુના તથારૂપ–બહુશ્રુત–સ્થવિરોની પાસે સામાયિક આદિ અગીયાર અગોનુ અધ્યયન કર્યું અધ્યયન પછી ઘણા ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ, માસાર્ધ (૦ાા માસ) માસ ક્ષમણ રૂપ અનેક તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતાં ઘણા વર્ષો સુધી ચારિત્ર પાલન કર્યું પણ ઉત્તર ગુણની

मूलम्—जइण भंते ! समणेणं भगवया जाव पुप्फियाण पढमस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाण समणेणं भगवया जाव सपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिये राया, समोसरण जहा चंदो तहा सूरोऽवि आगओ जाव नट्टविहिं उवदसित्ता पडिगओ। पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी नगरी, सुपइट्ठे नाम गाहावई होत्था, अड्ढे, जहेव अगती जाव विहरति, पासो समोसढे, जहा अगती तहेव पव्वइए, तहेव विराहियसामन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतकाहिति, एवं खलु जंबू ! समणेणं, निक्खेवओ ॥ २ ॥

॥ वीय अज्झयणं समत्त ॥ २ ॥

छाया—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् पुष्पिताना प्रथमस्य

सुधर्मा स्वामी कहते है—

हे जम्बू ! इस प्रकार मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिताके प्रथम अध्ययनका निरूपण किया है।

इति प्रथम अध्ययन समाप्त हुआ।

द्वितीय अध्ययन.

'जइण भंते' इत्यादि—

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिताके प्रथम अ

સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ ! આ પ્રકારે મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પુષ્પિતાના પ્રથમ અધ્યયનનુ નિરૂપણ કર્યું છે

ઇતિ પુષ્પિતાનુ પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત

દ્વિતીયઅધ્યયન.

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના પ્રથમ અધ્યયનમા પૂર્વોક્ત

समीपे समालोचिता, इत्युक्तरूपेणानालोचितातिचारः सन् कृतानशनोऽपि अर्ध मासिक्या संलेखनोयामनशनया त्रिंशद् भक्तानि छित्वा कालावसरे कालं कृत्वा=मृत्वा चन्द्रावतंसके विमाने उपपातसभायां देवशयनीये=देवशय्यायां देवदूष्यान्तरिते देवदूष्यवस्त्राच्छादितेऽस्य चन्द्रो ज्योतिरिन्द्रतयोपपन्नः=समुदपद्यत-तस्य ज्योतिर्देवे जन्म जातमित्यर्थः । निक्षेपो=निगमनम् । शेषं सुगमम् ॥ २ ॥

॥ इति प्रथममध्ययनं समाप्तम् ॥ १ ॥

अनगारने मूलगुणकी विराधना नहीं की, किन्तु उत्तरगुणकी विराधनाकर आलोचना नहीं की । इसलिये यह ज्योतिषी देव हुआ ।

गोतम स्वामी पूछते है-

हे भदन्त ! ज्योतिषियोंके इन्द्र, ज्योतिषियोंके राजा चन्द्रकी स्थिति कितने कालकी है ?

भगवान कहते है—

हे गौतम ! ज्योतिषोंके इन्द्र चन्द्रकी स्थिति एक पल्योपम और एक लाख वर्षकी है । हे गौतम ! ज्योतिषोंके इन्द्र ज्योतिषोंके राजा चन्द्रको यह दिव्य देव ऋद्धि पूर्व भवमे उपार्जित तप संयमके कारण मीली है ।

हे भदन्त । चन्द्र देव अपना आयुष्यभव तथा अपनी स्थितिके क्षय होजानेके बाद च्यवकर कहाँ जायगा ?

हे गौतम आयु आदि क्षयके बाद यह चन्द्र देव महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेकर सिद्ध होंगे ।

પણ ઉત્તર ગુણની વિરાધના કરી આલોચના કરી નહોતી તે માટે તે જ્યોતિષી દેવ થયા

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે—

હે ભદન્ત ! જ્યોતિષોના ઇન્દ્ર જ્યોતિષોના રાજા ચન્દ્રની સ્થિતિ કેટલા કાલની છે?

ભગવાન કહે છે–

હે ગૌતમ ! ઇન્દ્ર ચન્દ્રની સ્થિતિ એક પલ્યોપમ અને એક લાખ વર્ષની છે હે ગૌતમ ! જ્યોતિષોના ઇન્દ્ર જ્યોતિષોના રાજા ચન્દ્રને આ દિવ્ય દેવઋદ્ધિ પૂર્વભવમા ઉપાર્જિત તપ અને સંયમના કારણથી મળી છે

હે ભદન્ત ! ચન્દ્ર દેવ પોતાનું આયુષ્ય ભવ તથા પોતાની સ્થિતિના ક્ષય થઈ ગયા પછી ચ્યવીને ક્યા જશે

હે ગૌતમ ! આયુ આદિ ક્ષય થઇ ગયા પછી આ ચન્દ્ર દેવ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ લઇને સિદ્ધ થશે

रोए वहिया बहवे अवारामा रोवावित्तए, एव माउलिगा, विल्ला, कविट्ठा, चिंचा, गुप्फारामा रोवावित्तए । एव संपेहेइ सपेहित्ता कल्ल जाव जलते वाणारसीए, नयरीए वहिया अवारामे य जाव पुप्फारामे य रोवावेइ । तएण बहवे अवारामा य जाव पुप्फारामा य अणुपुव्वेण सारक्खिज्जमाणा सगोविज्जमाणा सवड्ढियमाणा आरामा जाया, किण्हा किण्होभासा जाव रम्मा महामेहनिकुरवभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणसिरीया अईव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठति ॥३॥

छाया-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन उत्क्षेपको भणितव्य । राजगृह नगरम् । गुणशिल्क चैत्यम् । श्रेणिको राजा । स्वामी समवसृत । परिषत् निर्गता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुक्रो महाग्रह शुक्रावतसके विमाने शुक्रे सिंहासने चतसृभि सामानिकसाहस्रीभि, यथैव चन्द्रस्तथैवागत, नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगत । भदन्त ! इति कूटाकारशाला । पूर्वभवपृच्छा ।

एव खलु गौतम ! तस्मिन काले तस्मिन समये वाराणसी नाम नगरी अभवत् । तत्र खलु वाराणस्या नगर्या सोमिलो नाम ब्राह्मण परिवसति, आढ्यो यावत् अपरिभूत ऋग्वेद० यावत् सुप्रतिष्ठित । पार्श्व समवसृत० । परिषत् पर्युपास्ते । तत खलु तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य अस्या कथाया लब्धार्थस्य सत अयमेतद्रूप आ यात्मिक ८, यावत् समुदपद्यत-एव खलु पार्श्व अर्हन् पुरुषादानीय पूर्वानुपूर्व्या यावत् आम्रशालवने विहरति, तद् गच्छामि खलु पार्श्वस्य अर्हतोऽन्तिके प्रादुर्भवामि, इमान च खलु एतद्रूपान अर्थान् हेतून यथा प्रक्ष्यामि ।

सोमिलो निर्गत खण्डि ४ विनीतो यावत् एवमवादीत्-यात्रा ते भदन्त !?, यापनीय च ते ? पृच्छा, सरिसवयम , मापा , कुलत्था , एको भवान् , यावत् सबुद्ध श्रावकधर्म प्रतिपद्य प्रतिगत । तत खलु पार्श्व अर्हन् अन्यदा कदाचित् वाराणसीतो नगरीत आम्रशालवनाच्चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य बहिर्जनपदविहार विहरति ।

पासे समोसढे । परिसा पज्जुवासइ । तएण तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए० जाव समुप्पज्जित्था—एव खलु पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्वि जाव अवसालवणे विहरइ, त गच्छामि ण पासस्स अरहओ अतिए पाउब्भवामि । इमाइ च ण एयारूवाइ अट्ठाइ हेऊइं जहा पण्णत्तीए ।

सोमिलो निग्गओ खडियविहुणो जाव एव वयासी—जत्ता ते भते ! ? जवणिज्ज च ते ? पुच्छा, सरिसवया, मासा, कुलत्था, एगे भव, जाव सबुद्धे सावगधम्म पडिवज्जित्ता पडिगए । तए णं पासे अरहा अण्णया कयाइ वाणारसीओ नयरीओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ।

तएण से सोमिले माहणे अण्णया कयाइ असाहुदसणेण य अपज्जुवासणयाए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहि २, सम्मत्तपज्जवेहि परिहायमाणेहि २, मिच्छत्तं च पडिवन्ने ।

तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एव खलु अह वाणारसीए नयरीए सोमिले नाम माहणे अच्चतमाहणकुलप्पसूए । तएण मए वयाइ चिण्णाइ, वेया य अहीया, दारा आहूया, पुत्ता जणिया, इड्ढीओ समाणीयाओ, पसुवधा कया, जन्ना जेट्ठा, दक्खिणा दिन्ना, अतिही पूजिया, अग्गी हूया, जूपा निक्खित्ता, त सेय खलु मम इयाणिं कल्लं जाव जलते वाणारसीए नय-

तचस्सण भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे प-ण्णत्ते ? । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे' इत्यादि । प्रादुर्भवामि=उपस्थितो भवामि, अर्थान्=आत्मकल्याणरूपान् हेतून्=कारणानि, यद्वा-हेतून्=अनुमानस्य पञ्चावयववाक्यरूपान् , यथा प्रज्ञप्त्या=व्याख्या प्रज्ञप्त्या भगवतीसूत्रे तथा विज्ञेयम् । खण्डिकविहीनः=शिष्यरहितः, सोमिलो ब्राह्मणः पार्श्व

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें राजगृह नामक नगर था । गुणशिलक नामका चैत्य था । उस नगरीमें श्रेणिक नामके राजा थे । वहाँ भगवान महावीर प्रभु पधारे । परिषद धर्म कथा श्रवण करनेको निकली ।

उस काल उस समयमें शुक्र महाग्रह शुक्रावतंसक विमानमें शुक्रसिंहासन पर चार हजार सामानिक देवोंके साथ बैठे हुए थे । वह शुक्र महाग्रह चन्द्र ग्रह समान भगवानके पास आये और नाट्यविधि दिखाकर वैसे ही चले गये । गौतमको जिज्ञासा हुई कि हे भदन्त ! यह शुक्र महाग्रह इस प्रकार देवताओंके द्वारा नाट्यविधि दिखाकर सबको अन्तर्हित करके अकेले रह गये यह बडे आश्चर्यकी बात है ।

भगवानने कहा-हे गौतम ! कूटाकारशाला-पर्वत शिखरके समान ऊंचे विशाल मकानमें वर्षा आदिके भयसे बिखरा हुआ जन समूह जिस प्रकार अन्तर्हित होजाता है उसी प्रकार शुक्रकी वैक्रियिकशक्तिसे उत्पन्न देवगण नाटक दिखाकर उनकी देहमें प्रविष्ट हो गये ।

હે જમ્બૂ ! તે કાલે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ ગુણશિલક નામે તેમા ચૈત્ય હતુ તે નગરમા શ્રેણિક નામે રાજા હતા ત્યા ભગવાન મહાવીર પ્રભુ પધાર્યા પરિષદ ધર્મ કથાનુ શ્રવણુ કરવા નીકળી

તે કાલે તે સમયે શુક્ર મહાગ્રહ શુક્રાવતંસક વિમાનમા શુક્ર સિંહાસન ઉપર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે બેઠા હતા તે શુક્ર મહાગ્રહ ચન્દ્રગ્રહની પેઠે ભગવાનની પાસે આવ્યા અને નાટ્ય વિધિ દેખાડીને એમજ ચાલ્યા ગયા

ગૌતમને જીજ્ઞાસા થઈ કે હે ભદન્ત ! આ શુક્ર મહાગ્રહ આ પ્રકારે દેવતાઓ દ્વારા નાટ્ય વિધિ દેખાડી બધાને અન્તર્હિત કરી એકલા રહી ગયા આ બહુ આશ્ચર્યની વાત છે

ભગવાને કહ્યુ —હે ગૌતમ ! કૂટાકારશાળા—પર્વત શિખરની પેઠે ઊંચા વિશાલ મકાનમા વરસાદના ભયથી વિખરાઈ ગયેલા જન સમૂહ જેવી રીતે અન્તર્હિત થઈ જાય છે તેવી જ રીતે શુક્રની વૈક્રયિક શકિતથી ઉત્પન્ન થયેલ દેવગણુ નાટક દેખાડી તેનાજ દેહમા સમાઈ ગયા

ततः स सोमिलो ब्राह्मणः अन्यदा कदाचित् असाधुदर्शनेन च अपर्युपासनतया च मिथ्यात्वपर्यवैः परिवर्धमानैः २, सम्यक्त्वपर्यवैः परिहीयमानैः २ मिथ्यात्वं च प्रतिपन्नः ।

ततः खलु तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये कुटुम्बजागरिका जाग्रतोऽयमेतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत–एवं खलु अहं वाराणस्यां नगर्यां सोमिलो नाम ब्राह्मणोऽत्यन्तब्राह्मणकुलप्रसूतः । ततः खलु मया व्रतानि चीर्णानि वेदाश्चाधीताः, दारा आहूताः, पुत्रा जनिताः, ऋद्धयः समानीताः, पशुवधाः कृताः, यज्ञा इष्टाः, दक्षिणा दत्ता, अतिथयः पूजिताः, अग्नयो हुताः, यूपा निक्षिप्ताः, तच्छ्रेयः खलु ममेदानीं कल्ये यावत् ज्वलति वाराणस्या नगर्या बहिर्बहून् आम्रारामान् रोपयितुम्, एवं मातुलिङ्गान्, बिल्वान्, कपित्थान्, चिञ्चाः, पुष्पारामान् रोपयितुम् । एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य कल्ये यावत् ज्वलति वाराणस्या नगर्या बहिः आम्रारामांश्च यावत् पुष्पारामांश्च रोपयति । ततः खलु बहवः आम्रारामाश्च यावत् पुष्पारामाश्च अनुपूर्वेण संरक्ष्यमाणाः, संगोप्यमानाः, संवर्ध्यमानाः आरामा जाताः कृष्णाः कृष्णावभासाः यावत् रम्या महामेघनिकुरम्बभूताः पत्रिताः पुष्पिताः फलिताः हरितकराराज्यमानश्रीकाः अतीवातीव उपशोभमाना उपशोभमानास्तिष्ठन्ति ॥ ३ ॥

टीका–'जइ णं भंते' इत्यादि । उत्क्षेपकः=प्रारम्भवाक्यं यथा–'जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स पुप्फियाणं अयमट्ठे पण्णत्ते,

---

तृतीय अध्ययन

'जइ णं भंते' इत्यादि––

हे भदन्त ! यावत् सिद्धिगतिस्थानको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिताके द्वितीय अध्ययनमें पूर्वोक्त अर्थोंका निरूपण किया है तो हे भदन्त ! तृतीय अध्ययनमें उन्होंने किन अर्थोंका निरूपण किया है ?

અથ ત્રીજુ અધ્યયન

'જઇ ણં ભંતે' ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત ! એ પ્રમાણે સિદ્ધિ ગતિ સ્થાનને પ્રાપ્ત એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના દ્વિતીય અધ્યયનમાં પૂર્વોકત અર્થોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો હે ભદન્ત ! ત્રીજા અધ્યયનમાં તેમણે કયા અર્થોનું નિરૂપણ કર્યું છે ?

यत्पृष्टवान् तच्छलेनोपहासार्थम्। 'यात्रा' इत्यस्य संयममार्गेषु प्रवृत्तिरिति। 'यापनीयम्' इत्यस्य मोक्षमार्गे गच्छता प्रयोजक इन्द्रियवश्यत्वलक्षणो धर्म इति। 'सरिसवया' इत्यस्य सदृशवयसः सर्षपाश्च भक्ष्या वा अभक्ष्या इति। 'मासा' इत्यस्य माषा पञ्चगुञ्जामानविशेषाः, धान्यविशेषाः 'उडद' इति प्रसिद्धाः, मासा =कालविशेषाश्चेति। 'एगे भवं' इत्यस्य 'एको भवान्' इत्येकत्वाभ्युपगमे आत्मनः कृते श्रोत्रादिज्ञानानामवयवानाञ्चात्मनोऽनेकत्वोपलब्ध्या एकत्वं दूषयिष्यामीत्यभिप्रायकस्य, 'दुवे भवं' इत्यस्य द्वौ भवन्ताविति द्वित्व

भगवानसे प्रश्न किया-हे भदन्त! आपके यात्रा है? आपके यापनीय है? 'सरिसवया, मास और कुलत्थ' भक्ष्य हैं या अभक्ष्य? आप एक है या दो? इत्यादि प्रश्न किया।

यहाँ 'यात्रा' का अर्थ है संयममार्गमे प्रवृत्ति।

'यापनीय' का अर्थ है-मोक्षमार्गमे जानेवालोंके प्रयोजक इन्द्रिय और मनका वश करने रूप धर्म।

'सरिसवया' का अर्थ है-समान अवस्थावाला और सरसो।

'मास' का अर्थ है-मास=काल विशेष, माष=उडद, माष= प्राचीन रीतिसे पाँच गुञ्जावाला मान विशेष।

'एको भवान्' इसका अभिप्राय है-यदि भगवान पार्श्वनाथ आत्माकी एकता मान लेगे तो मैं श्रोत्र आदिके ज्ञान और अवयवोंसे आत्माकी अनेकता सिद्ध करूँगा।

'द्वौ भवन्तौ' इससे यदि दो आत्मा मानेगे तो मैं उसका

હે ભદન્ત! આપને યાત્રા છે ખરી? આપને યાપનીય છે? 'સરિસવયા માસ, અને કુલત્થ' ભક્ષ્ય છે કે અભક્ષ્ય? આપ એક છો કે બે? ઇત્યાદિ પ્રશ્નો કર્યા

અહીં 'यात्रा' નો અર્થ છે સયમ માર્ગમા પ્રવૃત્તિ

'यापनीय' નો અર્થ છે મોક્ષમાર્ગમા જાવાવાળાઓના પ્રયોજક ઇન્દ્રિય અને મનને વશ કરવારૂપી ધર્મ

'सरिसवया' નો અર્થ છે સમાન અવસ્થાવાળા અને સરસો

'मास' નો અર્થ છે માસ=કાલવિશેષ, માસ=અડદ, માસ=પ્રાચીન રીત પ્રમાણે પાચ રતી—ચણોઠીવાલા માનવિશેષ

'एको भवान्' આનો એવો મતલબ છે કે જો ભગવાન પાર્શ્વનાથ આત્માની એકતા માની લેશે હું શ્રોત આદિનુ જ્ઞાન તથા અવયવોથી આત્માની અનેકતા સિદ્ધ કરીશ

'द्वौ भवन्तौ' આથી જો આત્મા બે માનશે તો હું તેનુ પણ ખડન કરીશ

नाथमुपेतः एवं=वक्ष्यमाणम् अवादीत्–हे भदन्त ! ते=तव यात्रा वर्तते ?, ते यापनीय वर्तते किम् ? इति, तथा 'सरिसवया मासा कुलत्था एए भक्खेया वा अभक्खेया' इति, तथा 'एगे भव, दुवे भव' इत्यादि च सोमिलो

गौतम स्वामीने पूछा–हे भगवन् ! यह शुक्र महाग्रह अपने पूर्व जन्ममें कौन थे ?

हे गौतम ! उस काल उस समयमे वाराणसी नामकी नगरी थी । उस नगरीमे सोमिल नामका ब्राह्मण रहता था । वह ब्राह्मण आढय यावत् अपरिभूत था । वह ऋगवेद आदि वेद तथा उनके अङ्ग उपाङ्गमे परिनिष्ठित था । उस नगरीमे भगवान पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर पधारे । परिषद् धर्मकथा सुननेके लिये भगवानके पास गयी ।

भगवानके आनेका वृत्तान्त सुनकर उस वाराणसी नगरीमें रहनेवाले सोमिल ब्राह्मणके हृदयमे इस प्रकार आध्यात्मिक–विचार उत्पन्न हुआ कि मुमुक्षु जनोंके आश्रयणीय अर्हत् पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर तीर्थङ्करोकी मर्यादाको पालन करते हुए यावत् आम्रशाल वनमे पधारे हैं।

इस लिये जाऊँ और भगवान पार्श्वनाथके समीप उपस्थित होऊँ । और उनसे अनेकार्थक शब्दोका अर्थ तथा हेतु=कारण अथवा अनुमानके पञ्चावयव वाक्योंको पूछूं। ऐसा विचार कर शिष्योंको साथलिये बिना अकेला ही भगवानके पास आया और इस प्रकार

ગૌતમે પૂછ્યુ —

હે ભગવન્ ! આ શુક્રમહાગ્રહ તેના પૂર્વજન્મમા કોણ હતા ?

હે ગૌતમ તે કાલે તે સમયે એક વારાણસી નામની નગરી હતી તે નગરીમા સોમિલ નામે બ્રાહ્મણ રહેતો હતો તે બ્રાહ્મણ આઢય યાવત અપરિભુત હતો તે ઋગ્વેદ વગેરે વેદ તથા તેના અગ અને ઉપાગમા પરિનિષ્ઠિત હતો તે નગરીમા ભગવાન પાર્શ્વનાથ તીર્થંકર પધાર્યા પરિષદ ધર્મકથા સાભળવા માટે ભગવાન પાસે ગઈ

ભગવાનના આવવાના સમાચાર સાભળી તે વારાણસી નગરીમા રહેવાવાળા સોમિલ બ્રાહ્મણના હૃદયમા આ પ્રકારનો આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે મુમુક્ષુજનોના આશ્રયણીય અર્હત્ પાર્શ્વનાથ તીર્થંકર તીર્થંકરોની મર્યાદાનુ પાલન કરતા અહીં આમ્રશાલ વનમા પધાર્યા છે

આ માટે હુ જઈને ભગવાન પાર્શ્વનાથની પાસે ઉપસ્થિત થાઉં અને તેમને અનેક અર્થવાળા શબ્દોના અર્થ તથા હેતુ=કારણ અથવા અનુમાનના પચાવયવ વાકયો પૂછુ આવો વિચાર કરી શિષ્યોને પોતાની સાથે લીધા વગર–એકલાજ–ભગવાનની પાસે આવ્યો અને આ પ્રકારે ભગવાનને પ્રશ્ન કર્યો —

तीर्णाः । यूपाः=यज्ञस्तम्भाः निक्षिप्ता=भूमौ निखाताः । हरितकराराज्यमानश्रीकाः=हरितको नीलवर्णो दूर्वादिवनस्पतिः तेन राराज्यमाना=शोशुभ्यमाना श्रीः=छटा येषा ते हरितकराराज्यमानश्रीकाः अत एव अतीवातीव=अत्यन्त भृशम् उपशोभमाना उपशोभमानाः, तिष्ठन्ति=सन्ति, शेष सुगमम् ॥३॥

एक समय मध्यरात्रिमें कुटुम्बजागरणा करते हुए उस सोमिल ब्राह्मणके हृदयमे इस प्रकारका आध्यात्मिक यावत् मनमें सकल्प उत्पन्न हुआ कि मै वाराणसी नगरीका रहेनेवाला अत्यन्त उच्च कुलमे पैदा हुआ ब्राह्मण हूँ। मैने व्रत ग्रहण किये वेद पढे, विवाह किया, पुत्रवान बना, समृद्धियोंको एकत्रित किया, पशुवध किया, यज्ञ किया, दक्षिणा दी, अतिथिकी पूजा की, अग्निमे हवन किया यूप=यज्ञीय स्तम्भ रोपा, इन सभी कार्योंको किया । अब मुझे उचित है कि मै रात बीतने पर प्रातःकालमें वाराणसी नगरीके बाहर बहुतसे आमके बगीचे लगाउँ, एव मातुलिङ्ग=बिजोरा, वेल, कपित्थ, (कविठ), चिञ्चा=इमली और फूलोंका बगीचा लगाउँ, इस प्रकार विचार करता है।

रात बीतने पर सूर्योदय होते ही उसने वाराणसी नगरीके बाहर आमके बगीचेसे लेकर फूलके बगीचा तक लगवाया। और वे बगीचे क्रमसे सरक्षित हो सगोपित हो पूर्णरूपसे बगीचे हो गये। हरे और हरी भरी कान्तिवाले, तथा बरसने वाले नीले मेघ

ઓની પર્યુપાસના ન કરવાથી અને મિથ્યાત્વ પર્યાયના વધવાથી તથા સમ્યક્ત્વ પર્યાયના ઘટવાથી મિથ્યાત્વી થઇ ગયો

એક વખત મધ્યરાત્રિમા કુટુબ જાગરણા કરતા કરતા તે સોમિલ બ્રાહ્મણના હૃદયમા આવા પ્રકારના આધ્યાત્મિક એટલે મનમા સકલ્પ ઉત્પન્ન થયા કે-હુ વારાણસી નગરીમા રહેવાવાળો બહુ ઊચા કુળમા પેદા થયેલો બ્રાહ્મણ છુ, મે વ્રત ગ્રહણ કર્યા છે, વેદ ભણેલો છુ, લગ્ન કરી પુત્રવાન બન્યો, સમૃદ્ધિ એકઠી કરી, પશુવધ કર્યા યજ્ઞ કર્યા, દક્ષિણા આપી, અતિથીની પૂજા કરી, અગ્નિમા હવન કર્યા, યૂપ=યજ્ઞીય કાષ્ઠને ખોડયુ, આ બધા કાર્યો કર્યા હવે મારે માટે યોગ્ય છે કે હુ રાત્રિ પુરી થઇ જ્યારે સવાર પડે ત્યારે વારાણસી નગરીની બહાર ખૂબ આમાના વૃક્ષોનો બગીચો બનાવુ તથા માતુલિંગ=બિજોરા, વેલ, કપિત્થ, ચિંચ=આમલી તથા ફુલોની વાડી બનાવુ આ પ્રકારે વિચાર કરે છે

રાત્રિ વીતી સૂર્યોદય થતા જ તેણે વારાણસી નગરીની બહાર આંબાના બગીચાથી માંડીને ફુલની વાડી સુધી બધુ બનાવ્યુ અને તે બગીચા હળવે હળવે સરક્ષિત અને

स्वीकारे एकत्वविशिष्टस्यार्थस्य द्वित्वेन सहात्यन्तविरोधाद् द्वित्वं दूषयिष्या मीत्यभिप्रायकस्य च एतत्प्रभृतिप्रश्नस्य तत्तदर्थं भगवानस्यार्थं निखिलदोषरहित स्याद्वादपक्षमाश्रित्योत्तरमदात् । एतद्विषय विशेषजिज्ञासाया भगवतीसूत्रस्य-अष्टादशशतकदशमोद्देशकादवगन्तव्यम् । 'अत्यन्तब्राह्मणकुलप्रसूत'=अत्यन्त=निरतिशयित यद् ब्राह्मणकुलं तत्र प्रसूतः=उत्पन्नः विशुद्धब्राह्मणकुलोत्पन्न इति यावत् । दारा =स्त्रिय' आहुता'=परिणयविधिना स्वीकृता', यज्ञा इष्टाः=कृताः, दक्षिणा=यज्ञसमाप्तौ कर्मण साङ्गतासिद्ध्यर्थं देय द्रव्य, दत्ता=ब्राह्मणेभ्यो वि

भी खण्डन करूँगा । क्यों कि जो एक है वह दो कभी हो ही नही सकता ।

इत्यादि सोमिल ब्राह्मणका प्रश्न सुनकर उन प्रश्नोंका उत्तर भगवानने सभी दोषोंसे रहित स्याद्वाद मतका आश्रयण करके दिया।

इसका विस्तृत वर्णन भगवती सूत्र के अठारहवे शतकके दशव उद्देशमे देख लेना चाहिये ।

इस प्रकार छलपूर्वक प्रश्न करनेके बाद वह उचित उत्तर पाकर बोध युक्त हो श्रावक धर्मको स्वीकार कर भगवान पार्श्वप्रभुके समीपसे अपने स्थानपर गया ।

एक समय भगवान पार्श्वप्रभु अर्हत वाराणसी नगरीके आम्र-शाल वन नामक चैत्यसे निकलकर देशमे विहार करने लगे ।

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण एक समय असाधुओंके दर्शनसे तथा सुसाधुओंकी पर्युपासना नही करनेसे एव मिथ्यात्वपर्यायोंके बढने और सम्यक्त्व पर्यायोंके घटनेके कारण मिथ्यात्वी हो गया।

કેમકે જે એક છે તે કદી પણ બે થઇ જ ન શકે

ઇત્યાદિ સોમિલ બ્રાહ્મણના પ્રશ્ન સાભળી તેના જવાબો ભગવાને સર્વ દોષોથી રહિત સ્યાદ્વાદમતનુ આશ્રયણ કરીને આપ્યા

આનુ વિસ્તારપૂર્વકનુ વર્ણન ભગવતી સૂત્રના અઢારમા શતકના દશમા ઉદ્દેશમા જોઇ લવુ જોઇએ

આ પ્રકારે છલપૂર્વક પ્રશ્ન કર્યા પછી તે ઉચિત ઉત્તર પામી બોધયુક્ત થઇ શ્રાવક ધર્મને સ્વીકારીને ભગવાન પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસેથી પોતાને સ્થાને ગયો.

એક વખત ભગવાન પાર્શ્વપ્રભુ અર્હત્ વારાણસી નગરીના આમ્રશાલ વન નામે ચૈત્યમાથી નીકળીને દેશમા વિહાર કરવા લાગ્યા

ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ એક વખત અસાધુઓના દર્શનથી તથા સુસાધુ

तीर्णाः । यूपाः=यज्ञस्तम्भाः निक्षिप्ताः=भूमौ निखाताः । हरितकराराज्यमान श्रीकाः=हरितको नीलवर्णो दूर्वादिवनस्पतिः तेन राराज्यमाना=शोशुभ्यमाना श्रीः=छटा येषा ते हरितकराराज्यमानश्रीकाः अत एव अतीवातीव=अत्यन्त भृशम् उपशोभमाना उपशोभमानाः, तिष्ठन्ति=सन्ति, शेष सुगमम् ॥३॥

एक समय मध्यरात्रिमें कुटुम्बजागरणा करते हुए उस सोमिल ब्राह्मणके हृदयमे इस प्रकारका आध्यात्मिक यावत् मनमें सकल्प उत्पन्न हुआ कि मैं वाराणसी नगरीका रहेनेवाला अत्यन्त उच्च कुलमे पैदा हुआ ब्राह्मण हूँ। मैने व्रत ग्रहण किये वेद पढे, विवाह किया, पुत्रवान बना, समृद्धियोंको एकत्रित किया, पशुवध किया, यज्ञ किया, दक्षिणा दी, अतिथिकी पूजा की, अग्निमे हवन किया यूप=यज्ञीय स्तम्भ रोपा, इन सभी कार्योंको किया । अब मुझे उचित है कि मै रात बीतने पर प्रातःकालमें वाराणसी नगरीके बाहर बहुतसे आमके बगीचे लगाउँ, एव मातुलिङ्ग=बिजोरा, वेल, कपित्थ, (कथिठ), चिञ्चा=इमली और फूलोका बगीचा लगाउँ, इस प्रकार विचार करता है।

रात बीतने पर सूर्योदय होते ही उसने वाराणसी नगरीके बाहर आमके बगीचेसे लेकर फूलके बगीचा तक लगवाया । और वे बगीचे क्रमसे सरक्षित हो सगोपित हो पूर्णरूपसे बगीचे हो गये। हरे और हरी भरी कान्तिवाले, तथा बरसने वाले नीले मेघ

ओनी पर्युपासना न करवाथी अने मिथ्यात्व पर्यायना वधवाथी तथा सम्यक्त्व पर्यायना घटवाथी मिथ्यात्वी थई गयो

एक वखत मध्यरात्रिमा कुटुंब जागरणा करता करता ते सोमिल ब्राह्मणना हृदयमा आवा प्रकारना आध्यात्मिक एटले मनमा सकल्प उत्पन्न थया के-हु वाराणसी नगरीमा रहेवावाळो बहु ऊंचा कुळमा पेदा थयेलो ब्राह्मण छु, मे व्रत ग्रहण कर्या छे, वेद भणेलो छु, लग्न करी पुत्रवान बन्यो, समृद्धि एकठी करी, पशुवध कर्या यज्ञ कर्या, दक्षिणा आपी, अतिथीनी पूजा करी, अग्निमा हवन कर्या, यूप=यज्ञीय काष्ठने खोडयु, आ बधा कार्यो कर्या हवे मारे माटे योग्य छे के हु रात्रि पुरी थई ज्यारे सवार पडे त्यारे वाराणसी नगरीनी बहार खूब आमाना वृक्षोनो बगीचो बनावु तथा मातुलिंग=बिजोरा, वेल, कपित्थ, चिंच=आमली तथा फुलोनी वाडी बनावु आ प्रकारे विचार करे छे

रात्रि वीती सूर्योदय थता ज तेणे वाराणसी नगरीनी बहार आमाना बगीचाथी माडीने फुलनी वाडी सुधी बधु बनाव्यु अने ते बगीचा हळवे हळवे सरक्षित अने

मूलम्—तएणं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अय- मेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणा रसीए णयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चंतमाहणकुलप्पसूए, तए णं मए वयाइं चिण्णाइं जाव जूवा णिक्खित्ता, तए णं मए वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अंबारामा जाव पुप्फा रामा य रोवाविया, तं सेयं खलु मम इयाणिं कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडं घडावित्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्तनाइ० आमंतित्ता तं मित्तनाइणियग० विउलेणं असण० जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्त जाव जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता तं मित्तनाइ जाव आपुच्छित्ता सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूला वाणपत्था तावसा भवंति—तं जहा होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जन्नई सड्ढई थालई हुंबउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा संपक्खालगा दक्खिणकूला उत्तरकूला संख धमा कूलधमा मियलुद्धया हत्थितावसा उद्दंडा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वायुभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकंदमूलतय- पत्तपुप्फफलाहारा जलाभिसेयकढिणगायभूया आयावणाहिं पंच-

---

वृन्दोके समान नीलिमा युक्त, नव पल्लवित, पुष्पित, और फलित होकर वे हरे भरे होनेके कारण अत्यन्त शोभायमान दीखने लगे ॥ ३ ॥

સંગોપિત થઇ પૂર્ણ રૂપમાં બગીચા થઇ ગયા લીલા, લીલીછમ કાન્તિવાળા, પાણીથી ભરેલા મેઘવૃન્દો (વાદળાં) હોય તેવા ઘનીભૂત રંગવાળા, પત્રો તથા પુષ્પોવાળા અને ફળોવાળા હોવાથી તથા હરિયાળા હોવાથી બહુ શોભાયમાન દેખાવા લાગ્યા ॥ ૩ ॥

ग्गितावेहि इगालसोल्लिय कंदुसोल्लिय पिव अप्पाण करेमाणा विहरति। तत्थ ण जे ते दिसापोक्खिया तावसा तेसि अंतिए दिसापोक्खियत्ताए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य ण समाणे इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हिस्सामि कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठ-छट्ठेण अणिक्खित्तेण दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तएत्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते सुबहु लोह जाव दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमण उवसंपज्जित्ताण० विहरइ ॥ ४ ॥

छाया—तत खलु तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्याऽन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये कुटुम्बजागरिकां जाग्रतोऽयमेतद्रूप आध्यात्मिक यावत् समुदपद्यत—एवं खल्वहं वाराणस्यां नगर्यां सोमिलो नाम ब्राह्मण. अत्यन्तब्राह्मणकुलसम्भूत, तत खलु मया व्रतानि चीर्णानि यावद् यूपा निक्षिप्ता। तत खलु मया वाराणस्या नगर्यां बहिर्बहव आम्रारामा यावत् पुष्पारामाश्च रोपितास्तच्छ्रेय खलु ममेदानीं कल्ये यावज्ज्वलति सुबहु लोहकटाहकडुच्छुक ताम्रीय तापसभाण्ड घटयित्वा विपुलमशन पान खाद्य स्वाद्य मित्र ज्ञाति० आमन्त्र्य त मित्र-ज्ञाति निजक० विपुलेन अशन० यावत् सन्मान्य तस्यैव मित्र० यावत् ज्येष्ठपुत्र कुटुम्बे स्थापयित्वा त मित्रज्ञातियावत् आपृच्छ्य सुबहु लोहकटाहकडुच्छुक ताम्रीय तापसभाण्डक गृहीत्वा य इमे गङ्गाकूले वानप्रस्थास्तापसा भवन्ति तद्यथा—होत्रिका, पोत्रिका, यज्ञयाजिन, श्राद्धकिन, स्थालकिन=गृहीतभाण्डा, हुण्डिकाश्रमणा, दन्तोदूखलिका, उन्मज्जका, सम्मज्जका, निमज्जका, सम्प्रक्षालका, दक्षिणकूलका, उत्तरकूलका, शङ्खध्मा, कूलध्मा, मृगलुब्धका, हस्तितापसा, उद्दण्डा, दिशाप्रोक्षिण, वल्कवासस, बिलवासिन., जलवासिन, वृक्षमूलका, अम्बुभक्षिण, वायुभक्षिण, शैवालभक्षिण, मूलाहारा, कन्दाहारा, त्वगाहारा, पत्राहारा', पुष्पाहारा', फलाहारा, बीजाहारा, परिशटितकन्दमूलत्वक्पत्रपुष्पफलाहारा, जलाभिषेककठिनगात्रभूता., आताप-

नाभिः पञ्चाग्नितापैः अङ्गारशौल्यक, कन्दुशौल्यकमिव आत्मान कुर्वाणा विह रन्ति। तत्र खलु ये ते दिशाप्रोक्षकास्तापसास्तेषामन्तिके दिशाप्रोक्षकतया प्रव्रजितुम्। प्रव्रजितोऽपि च खलु सन् इममेतद्रूपमभिग्रहमभिग्रहीष्यामि–कल्पते मे यावज्जीव षष्ठ-षष्ठेनानिक्षिप्तेन दिक्चक्रवालेन तप.कर्मणा ऊर्ध्व बाहू प्रगृह्य २ सूराभिमुखस्याऽऽतापनभूम्यामातापयतो विहर्तुम्।

इति कृत्वा एव सम्प्रेक्षते, सम्प्रेक्ष्य कल्ये यावज्ज्वलति सुबहु लोह० यावत् दिशाप्रोक्षकतापसतया प्रव्रजितः। प्रव्रजितोऽपि च खलु सन् इममेत द्रूपमभिग्रहमभिगृह्य प्रथम षष्ठक्षपणमुपसपद्य खलु विहरति ॥ ४ ॥

टीका–'तएण तस्स' इत्यादि। लोहकटाहकडुच्छुक लोह=लोहनिर्मितम् कटाहो=भाजनविशेषः, कडुच्छुको=दर्वी=परिवेषणाद्यर्थभाजनविशेष', कटाहकडु च्छुकयो. समाहार., कटाहकडुच्छुक लोह च तत् इति कर्मधारये कृते तथा, गङ्गाकूलाः=गङ्गाकूलस्था. गङ्गातीरवासिन इति यावत् 'मञ्चाः क्रोशन्ति' इत्य

'तएण तस्स' इत्यादि–

उसके बाद किसी दूसरे समय कुटुम्बजागरणा करते हुए उस सोमिल ब्राह्मणके हृदयमे इस प्रकार आध्यात्मिक–आत्म सम्बन्धी विचार उत्पन्न हुए कि मैने व्रत आदि किये यावत् स्तम्भ गाडे और मैं वाराणसी नगरीका अत्यन्त उच्च कुल प्रसूत ब्राह्मण हूँ, मैने वारा-णसी नगरीके बाहर बहुतसे आमके बगीचेसे लेकर फूल तकके बगीचे लगवाये अब मुझे उचित है कि रात बीतनेके बाद प्रातःकाल होते ही बहुतसी लोहेकी कडाहियॉ तथा कलछू एव तापसोके लिये तॉबेके बर्तन बनवाकर विपुल अशन पान खाद्य स्वाद्य बनवाकर अपने मित्र ज्ञाति आदियों को आमन्त्रित करू।

'तएण तस्स' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી કોઈ બીજે વખતે કુટુબ જાગરણ કરતા કરતા તે સોમિલ બ્રાહ્મણના હૃદયમા આ પ્રકારને આધ્યાત્મિક–આત્મ વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે મે વ્રત આદિ કર્યા, યગસ્તભ ખોડયો અને હુ વારાસણી નગરીના બહુ ઊચા કુળમા જ મેલો બ્રાહ્મણ છુ મે વારાણસી નગરીની બહાર ઘણા આબાના બગીચાથી માડીને ફુલવાડી સહિત બનાવ્યા છે હવે મારે માટે યોગ્ય છે કે રાત વીતી ગયા પછી પ્રાત કાલ થતાજ ઘણીજ લોઢાની કડાઇઓ, કડછીઓ આદિ તથા તાપસોને માટે તાબાના વાસણ બનાવીને ખૂબ ખાવાપીવાના ખાદ્ય-સ્વાદ્ય પદાર્થો બનાવરાવીને મારા મિત્ર અને જ્ઞાતિબધુઓ આદિને આમત્રણ આપુ

त्रेवात्र गङ्गाकूलपदस्य तत्स्थे लक्षणा बोध्या। यद्वा-गङ्गाकूल वासत्वेनाऽस्या-ऽस्तीति 'अर्श आदित्वादच्प्रत्यये निष्पन्नोऽय' तेन कूलशब्दस्य नपुंसकत्वेऽपि नेह पुंस्त्वानुपपत्ति'। होत्रिकाः=अग्निहोत्रिकाः, पोत्रिकाः=वस्त्रधारिणो वान प्रस्थाः, कौत्रिकाः=भूमिशायिनो वानप्रस्थाः, यज्ञयाजिनः=याज्ञिका, श्राद्धन्नि' श्राद्धाः, स्थालक्निः=भोजनपात्रधारिणः, हुण्डिकाश्रमणा.=वानप्रस्थतापसविशेषा' दन्तोदूखलिकाः=दशनैश्चर्वयित्वा भोजनशीलाः, उन्मज्जकाः=उन्मज्जनमात्रेण ये स्नान्ति-उपरिष्टादेव स्नान कुर्वन्ति ते तथा, सम्मज्जकाः=उन्मज्जनस्यैवासकृत्

अनन्तर वह ब्राह्मण उन वर्तनोको वनवाकर विपुल अशन पान खाद्य स्वाद्य तैयार कराकर अपने मित्र ज्ञाति वन्धुओंको आम त्रित कर और उन्हें जिमाकर तथा उन्हें सम्मानित कर और उन्ही मित्र-ज्ञाति-स्वजन वन्धुओंके सामने अपने ज्येष्ठपुत्रको कुटुम्बका भार देकर, अपने उन सभी मित्र-ज्ञाति-बन्धुओं से पूछकर मै बहुतसी लोहेकी कडाहियों, कलछू और ताम्बेके बने हुए पात्रोंको लेकर जो गगा तीरवासी वानप्रस्थ तापस है जैसे-होत्रिक=अग्निहोत्री, पोत्रिक=वस्त्रधारी वानप्रस्थ, कौत्रिक=भूमिशायी वानप्रस्थ, यज्ञयाजी=यज्ञ करनेवाले, श्राद्धकी=श्राद्ध करनेवाले वानप्रस्थ, स्थाकलिन =पात्र धारण करनेवाले, हुण्डिकाश्रमण=वानप्रस्थ तापस विशेष, दन्तोदूखलिक=दातसे केवल चबाकर खानेवाले, उन्मज्जक=उन्मज्जन मात्रसे स्नान करनेवाले, अर्थात् पानी डालकर स्नान करनेवाले, सम्मज्जक=बार बार हाथसे

પછી તે બ્રાહ્મણે તે પ્રમાણે વાસણ બનાવરાવી ખૂબ ખાનપાન ખાદ્ય-સ્વાદ્ય તૈયાર કરાવી પોતાના મિત્ર અને જ્ઞાતિબંધુઓને આમંત્રણ આપ્યું ને જમાડયા તથા તેમનું સન્માન કરી તે મિત્ર-જ્ઞાતિ-સ્વજન બંધુઓની સામે પોતાના મોટા પુત્રને બોલાવી કુટુંબનો ભાર તેના ઉપર નાખી, પોતાના તે સઘળા મિત્ર-જ્ઞાતિ બંધુઓને પૂછી હું ઘણી લોઢાની કડાઇઓ, કડછીઓ તથા તાંબાના બનેલા વાસણો લઈને જે ગંગા તીરે વસનારા વાનપ્રસ્થ તાપસ છે જેવાકે-होत्रिक=અગ્નિહોત્રી, पौत्रिक= વસ્ત્ર ધારી વાનપ્રસ્થ, कौत्रिक=ભૂમિશાયી વાનપ્રસ્થ, यज्ञयाजी=યજ્ઞ કરવાવાળા,श्राद्धकी= શ્રાદ્ધ કરવાવાળા વાનપ્રસ્થ स्थालकी=પાત્ર ધારણ કરવાવાળા,हुंडिका=શ્રમણ વાન પ્રસ્થ તાપસ વિશેષ दन्तोदूखलिक=દાંતવડે કેવળ ચાવીને ખાવાવાળા, उन्मज्जक= ઉન્મજ્જન માત્રથી સ્નાન કરવાવાળા અર્થાત્ પાણી નાખીને સ્નાન કરવાવાળા, समज्जक= વારંવાર હાથેથી પાણીને ઉછાળીને નહાવાવાળા, निमज्जक=પાણીમાં ડૂબકી મારી નાહ

करणेन ये स्नान्तिहस्तै• पुनः पुनर्जल गृहीत्वा स्नान कुर्वन्ति ते तथा, नम ज्जका'=स्नानार्थ निमग्ना एव जले क्षणमात्र तिष्ठन्ति ते तथा, समक्षालका:= ये गात्र मृत्तिकाघर्षणपूर्वक जलेन प्रक्षालयन्ति ते तथा, दक्षिणकूला:=य गङ्गाया दक्षिणतटवासिनस्ते तथा, उत्तरकूला:=य गङ्गाया उत्तरतटवासिनस्ते तथा, शङ्खध्मा:=शङ्ख ध्मात्वा=नादयित्वा ये भुञ्जते ते तथा, कूलध्मा=कूले=तटे स्थित्वा शब्द कृत्वा ये भुञ्जते ते कूलध्मा, मृगलुब्धका:=मृग हत्वा तेनैव ये अनेकदिवस भोजनतो यापयन्ति त तथा, हस्तितापसा:=हस्तिन मारयित्वा तेनैव चिरकाल भोजनतो यापयन्ति ते तथा, उद्दण्डा=ऊर्ध्वकृतदण्डा एव ये सचरन्ति त तथा, दिशाप्रोक्षिण=उदकेन दिश•प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादिक समुच्चिन्वन्ति ते तथा, वल्कवासस•=वृक्षत्वग्वस्त्रधारिण, बिलवासिन'=भूमिच्छिद्रवासिन•, जलवासिन=जले निषण्णा एव ये तिष्ठन्ति ते तथा, वृक्षमूलका= तरुतले य निवसन्ति त तथा, अम्बुभक्षिण'=जलाहारा, वायुभक्षिण=पवना-

पानीको उछालकर नहानेवाले, निमज्जक=पानीमे डूबकर नहानेवाले, सम्प्रक्षालक=मिट्टीसे शरीरको मलकर नहानेवाले, दक्षिणकूल=गङ्गाके दक्षिण तटपर रहनेवाले, उत्तरकूल=गगाके उत्तर तटपर रहनेवाले, और शङ्खध्मा=शख बजाकर भोजन करनेवाले, कूलध्मा=तटपर स्थित होकर आवाज करते हुए भोजन करनेवाले मृगलुब्धक=मृगको मारकर उसीके मासमे जीवन बीतानेवाले, हस्तितापस=हाथीको मारकर उसके मासमे जीवन बीतानेवाले, उद्दण्ड=दण्डको ऊँचा उठाकर चलनेवाले, दिशाप्रोक्षी=दिशाको जलसे सीचकर उसपर पुष्प फल आदिको चुन कर रखनेवाले, वल्कलवासस=वृक्षकी छालको धारण करनेवाले, बिलवासी= भूमिके नीचेकी खाहमे रहनेवाले, जलवासी=जलमे ही रहनेवाले, वृक्ष-

વાવાળા, सम्प्रक्षालक=માટીથી શરીરને ચોળીને નહાવાવાળા, दक्षिणकूल=ગંગા નદીના દક્ષિણ કિનારે રહેવાવાળા, उत्तरकूल=ગંગા નદીને ઉત્તર કિનારે રહેવાવાળા તથા शङ्खध्मा=શંખ વગાડીને ભોજન કરવાવાળા कूलध्मा=કિનારે ઉપર બેસી રહીને અવાજ કરતા ભોજન કરવાવાળા, मृगलुब्धक=મૃગને મારીને તેના માંસથી જીવન વીતાડવાવાળા, हस्तितापस=હાથીને મારીને તેના માંસથી જીવન વીતાડનારા, उदण्ड= દંડને ઊંચો ઉપાડી ચાલનારા, दिशाप्रोक्षी=દિશાઓને પાણીથી માર્જન કરીને (પાણી છાંટીને) તેના ઉપર પુષ્પફલ વીણીને રાખનારા, वल्कलवासस=વૃક્ષની છાલને ધારણ કરવાવાળા, बिलवासी=ભૂમિની નીચેની ગુફામાં રહેનારા, जलवासी=જલમાંજ રહેનારા

हारा', शेवालभक्षिणः=जलोपरिस्थितहरितवनस्पतिविशेषभोजिनः, मूलाहाराः=मूलकभक्षिणः, कन्दाहाराः=सूरणादिकन्दभक्षिणः, त्वगाहारः=निम्बादित्वग्भक्षिण., पत्राहाराः=बिल्वादिपत्रभक्षिण , पुष्पाहाराः=कुन्दशोभाञ्जनादिपुष्पभक्षिणः, फलाहारा =कदलीफलादिभोजिनः बीजाहारा =कूष्माण्डादिबीजभोजिन , परिशटितकन्दमूलत्वक्पत्रपुष्पफलाहारा =विनष्टकन्दमूलत्वक्पत्रपुष्पफलभोजिनः, जलाभिषेककठिनगात्रभूता =स्नात्वा २ जलाभिषेककठोरशरीरा आतापनाभि पञ्चाग्नितापैश्च अङ्गारशौल्य=अङ्गारे=वह्नौ शूले मास निधाय पक्व, कन्दुशौल्य–कन्दु = तण्डुलादि भर्जनपात्रमात्र शूल च ताभ्या तत्र वा घृतादिना वह्नौ पक्व कन्दुशौल्यम् इव=तद्वद् आत्मान कुर्वाणा विहरन्ति=अवतिष्ठन्ति । 'तत्थण जे'

मूलक=वृक्षके मूलमे रहनेवाले, अम्बुभक्षी=जल मात्रका आहार करनेवाले, वायुभक्षी=वायु मात्रसे जीवीत रहनेवाले, शेवालभाजी=जलमे उत्पन्न शेवाल=सेमारको–खानेवाले, मूलाहार=मूल खानेवाले, कन्दाहार=सूरन आदि कन्दका आहार करनेवाले, त्वगाहार=नीम आदिकी त्वचा खानेवाले, पत्राहार=बीला आदिके पत्तेका आहार करनेवाले, पुष्पाहार=कुन्द सोहजन, गुलाब आदि पुष्पका आहार करनेवाले, फलाहार=केला आदि फल खानेवाले, बीजाहार=कुम्हडा आदिका बीज खानेवाले, सडे हुए कन्द मूल त्वचा, पत्ते फूल और फल खानेवाले, जलके अभिषेकसे कठिन शरीरवाले, सूर्यकी आतापना और पञ्चाग्नितापसे अगार शौल्य=(अगारेमे शूलपर रखकर पकाये हुए मास) एव कन्दुशौल्य=(चावल आदि भुजनेका पात्र=कन्दु, उसमे घृत डालकर शूलपर पकाये

वृक्षमूलक=વૃક્ષના મૂળમા રહેનાવાળા, अम्बुभक्षी=જલમાત્રનોજ આહાર લેનારા, वायुभक्षी=વાયુ માત્રથીજ જીવન જીવનારા, शेवालभोजी=જલના ઉપરના ભાગમા રહેલ લીલી વનસ્પતિ (સેવાળ) ખવાવાળા, मूलाहाराः=મૂળ ખાવાવાળા, कन्दाहारा.=સૂરણ વગેરે કદના આહાર કરનારા, त्वगाहारा.=લીબડા આદિની છાલ ખાવાવાળા, पत्राहाराः=બિલીપત્ર આદિ પત્રોના આહાર કરવાવાળા, फलाहाराः=કેળા વગેરે ફળ ખાવાવાળા, पुष्पाहारा =પુષ્પ-કુદ સરગવા ગુલાબ આદિ ફુલોનો આહાર કરવાવાળા, बीजाहाराः=કોળુ વગેરેના બી ખાવાવાળા, સડી ગયેલા કદમૂળ, છાલ, પાન, ફૂલ તથા ફળ ખાવાવાળા, જલના અભિષેકથી કઠણ શરીરવાળા, સૂર્યની આતાપના અને પચાગ્નિના તાપથી અગારશૌલ્ય=દેવતામા શૂળ ઉપર રાખીને પકાવેલા માસ અને કદુશૌલ્ય–ચોખા વગેરે રાધવાના પાન=કદુ તેમા ઘી નાખીને શૂલ પર પકાવેલા માસની પેઠે

इत्यादि-अनिक्षिप्तेन=अविच्छिन्नेन दिक्चक्रवालेन= तन्नामकेन तथाहि-एकत्र पारणके पूर्वस्या दिशि यानि फलादीनि तान्याहृत्य भुङ्क्ते, द्वितीये पारणे दक्षिणस्या दिशि स्थितानि फलादीनि चाहृत्याश्नातीत्येवं दिक्चक्रवालेन दिङ्मण्डलेन यत्र तपःकर्मणि पारणकरणं भवति तत् तपःकर्म 'दिक्चक्रवाल' कथ्यते तेन तपःकर्मणेति ॥ ४ ॥

हुए मास) के समान अपने शरीरको कष्ट देते हुए विचरते हैं। उनमें जो दिशाप्रोक्षक हैं उनमे प्रव्रजित होनेकी इच्छा रखता हूँ, और प्रव्रजित होकर भी इस प्रकारका अभिग्रह (प्रतिज्ञा) लूगा कि यावज्जिव अन्तर रहित षष्ठ षष्ठ (वेला-वेलारूप) दिक्चक्रवाल तपस्या करता हुआ सूर्यके अभिमुख भुजा उठाकर आतापनभूमिमे आतापना लेता रहूँगा।

इस प्रकार मनमे सोचकर विचार करता है, और विचार करके सूर्योदय होनेपर बहुतसी लोहेकी कडाहियां यावत लेकर दिशा-प्रोक्षक तापसके पास आया ओर दिशा-प्रोक्षक तापस हो गया। तापस होकर वह सोमिल पूर्वोक्त अभिग्रह ग्रहण करके पहला षष्ठ-क्षपण तप स्वीकार कर विचरने लगा।

यहां 'दिक्चक्रवाल' शब्द आया है, इसका अभिप्राय है-तपस्वी तपस्याकी पारणाके लिये अपनी तपोभूमिकी चारों दिशाओंमें फलको इकट्ठा करके रखे। बादमें तपस्याकी पहली पारणामें पूर्व-

પોતાના શરીરને કષ્ટ દેતા જે વિચરે છે તેમા જે દિશાપ્રોક્ષક છે તેઓની પાસે પ્રવ્રજીત બનવાની ઇચ્છા રાખુ છું તથા પ્રવ્રજીત થઈને પણ આ પ્રકારના અભિગ્રહ (પ્રતિજ્ઞા) લઈશ કે-જ્યા સુધી જીવુ ત્યા સુધી અન્તર રહિત છઠ-છઠ (બેલા-બેલારૂપ) દિક્ચક્રવાલ તપસ્યા કરતો સૂર્યની સામે હાથ ઊંચા રાખીને આતાપન ભૂમિમા આતાપના લેતો રહીશ

આમ વિચાર કરે છે વિચાર કરીને સૂર્યોદય થતા ઘણી લોઢાની કડાઇઓ કડછીઓ, તાંબાના તાપસ પાત્રો આદિ લઈને દિશાપ્રોક્ષક તાપસની પાસે આવ્યો અને દિશાપ્રોક્ષક તાપસ થઈ ગયો તાપસ થઈને પણ તે સોમિલ પૂર્વોક્ત અભિગ્રહ બરાબર લઈને પહેલા ષષ્ઠક્ષપણ સ્વીકાર કરીને વિચરવા લાગ્યો

અહીં 'દિક્ચક્રવાલ' શબ્દ આવ્યો છે તેનો અભિપ્રાય એવો છે કે તપસ્વી તપસ્યાનાં પારણા માટે પોતાની તપોભૂમિની ચારે દિશામા ફલ ભેગા કરીને રાખે.

मूलम्—तएण से सोमिले माहणे रिसी पढमछट्ठक्खमण-पारणसि आयावणभूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थ नियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसकाइय गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसि पुक्खेइ, पुक्खित्ता-'पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थिय अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसि, जाणि य तत्थ कदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि ताणि अणुजायउ'-त्ति कट्टु पुरत्थिम दिस पसरइ, पसरित्ता जाणि य तत्थ कदाणि य जाव हरियाणि ण ताइं गिण्हइ, गिण्हित्ता किढिणसकाइय भरेइ, भरित्ता दब्भे य कुसे य पत्तामोड च समिहाकट्ठाणि य गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयग ठवेइ, ठवित्ता वेदि वड्ढेइ वड्ढित्ता उवलेवण-समज्जण करेइ, करित्ता दब्भकलसहत्थगए जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गग महानइ ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जण करेइ, करित्ता जलकिड्डं करेइ, करित्ता जलाभिसेय करेइ, करित्ता आयते चोक्खे परमसुइभूए देव-

---

दिशामे स्थित फलसे पारणा करे। दूसरा पारणा आनेपर दक्षिण दिशामें स्थित फलसे पारणा करे। इसी प्रकार अन्य पारणा आनेपर पश्चिम उत्तर दिशाओंमें स्थित फलका आहार करे। इस प्रकारकी पारणा वाली तपस्याको 'दिक्चक्रवाल' कहते है ॥ ४ ॥

પછી તપસ્યાના પહેલા પારણામા પૂર્વ દિશામાં રાખેલા ફળથી પારણું કરે બીજુ પારણું કરવાનું આવે ત્યારે દક્ષિણ દિશામા રાખેલા ફળથી પારણું કરે આવી રીતે બીજા પારણા આવે ત્યારે પશ્ચિમ-ઉત્તર દિશાઓમા રાખેલા ફળનો આહાર કરે આ પ્રકારના પારણાવાળી તપસ્યાને 'દિક્ ચક્રવાલ' કહે છે (૪)

पिउकयकज्जे दब्भकलसहत्थगए गंगाओ महानईओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए य वेदिं रएइ, रइत्ता सरयं करेइ, करित्ता अरणिं करेइ, करित्ता सरएण अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता अग्गिं संधुक्खेइ, समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालेइ, उज्जालित्ता अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तंगाइं समादहे । तं जहा—"सकत्थं वक्कलं ठाणं, सिज्जं भंडं कमंडलुं । दंडदारुं तहप्पाणं, अह ताइं समादहे ।" महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, चरुं साहेइ, साहित्ता बलिवइस्सदेवं करेइ, करित्ता अतिहिपूयं करेइ, करित्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेइ ॥५॥

छाया—ततः खलु सोमिलो ब्राह्मण ऋषिः प्रथमषष्ठक्षपणपारणे आतापनभूम्या प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य वल्कलवस्त्रनिवसितः यत्रैव स्वकः उटजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य किढिणसाङ्कायिकं गृह्णाति, गृहीत्वा पौरस्त्यां दिशं प्रोक्षति, प्रोक्ष्य "पौरस्त्यायां दिशः सोमो महाराजः प्रस्थाने प्रस्थितमभिरक्षतु सोमिलब्राह्मणर्षिम्, यानि च तत्र कन्दानि च मूलानि च त्वचश्च पत्राणि च पुष्पाणि च फलानि च बीजानि च हरितानि च तानि अनुजानातु," इति कृत्वा पौरस्त्यां दिशं प्रसरति, प्रसृत्य यानि च तत्र कन्दानि च यावत् हरितानि च तानि गृह्णाति किढिणसाङ्कायिकं भरति, भृत्वा दर्भांश्च कुशांश्च पत्रामोटं च समित्काष्ठानि च गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव स्वकः उटजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य किढिणसाङ्कायिकं स्थापयति, स्थापयित्वा वेदीं वर्धयति, वर्धयित्वा उपलेपनसम्मार्जनं करोति, कृत्वा दर्भकलशहस्तगतो यत्रैव गङ्गा महानदीमवगाहते, अवगाह्य जलमज्जनं करोति, कृत्वा जलक्रीडां करोति, कृत्वा जलाभिषेकं करोति, कृत्वा आचान्तः स्वच्छः परमशुचिभूतः देवपितृकृतकार्यः, दर्भकलशहस्तगतो गङ्गातो महानदीतः प्रत्यवतरति, प्रत्यवतीर्य यत्रैव स्वकः उटजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य दर्भैश्च कुशैश्च वालुकया च वेदिं रचयति, रच-

यित्वा शरकं करोति, कृत्वा अरणिं करोति, कृत्वा शरकेणारणिं मथ्नाति मथित्वा अग्निं पातयति, पातयित्वा अग्निं संधुक्षते, संधुक्ष्य समित्काष्ठानि प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य अग्निमुज्ज्वालयति, उज्ज्वाल्य, अग्नेर्दक्षिणे पार्श्वे सप्ताङ्गानि समादधाति, तद्यथा "सकत्थ १ वल्कल २ स्थान ३ शय्याभाण्ड ४ कमण्डलुम् ५ ॥, दारुदण्ड ६ तथाऽऽत्मानम् ७ अथ तानि समादधीत ॥१॥"

ततो मधुना च घृतेन च तण्डुलैश्चाग्निं जुहोति, चरुं साधयति, साधयित्वा बलिवैश्वदेवं करोति, कृत्वाऽतिथिपूजां करोति, कृत्वा ततः पश्चात् आत्मना आहारमाहारयति ॥ ५ ॥

टीका-'तएण से सोमिले' इत्यादि । 'वागलवत्थ नियत्थे' इति, वाल्कलवस्त्रनिवसितः=वल्कलं=वृक्षत्वक् तस्येदं वाल्कलं तच्च वस्त्रं वाल्कलवस्त्रं, तत् निवसितं=परिहितं येन स तथा परिहितवाल्कलवस्त्र इति तदर्थः । आर्षत्वात् निवसितेति निष्ठान्तस्य पूर्वप्रयोगाभावः। उटजः=उटः=तृणपर्णादिस्त-

---

'तएण सोमिले' इत्यादि ।

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि पहला षष्ठ-क्षपण पारणेके दिन आतापन भूमि पर आता है। वहाँ आकर वह वल्कल-वस्त्रधारी तापस जहाँ उसकी कुटी थी वहा आया । और आकर किढिणसकायिक (कावड) लेता है। तथा पूर्व दिशाको जलसे प्रोक्षण (सिंचन) करता है और कहता है-'हे पूर्व दिशाके अधिपति सोम देव' मैं सोमिल ब्राह्मण ऋषि परलोक साधन मार्गमे चलनेके लिये प्रस्थित हूँ, मेरी रक्षा करो, तथा वहाँ जो कुछ कन्द, मूल, त्वचा, पत्र, पुष्प, फल, बीज और हरित वनस्पति हैं उन्हें लेनेकी आज्ञा दो' ऐसा कह कर पूर्व दिशामे जाता है । वहाँ जाकर जो कुछ

'तएण से सोमिले' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિ પહેલા ષષ્ઠક્ષપણના પારણા આવતા આતાપન ભૂમિપર આવે છે ત્યા આવીને તે વલ્કલવસ્ત્ર ધારણ કરી રહેલ તાપસ જ્યા પોતાની પર્ણકુટી હતી ત્યા આવ્યો. ત્યા આવીને પોતાની કાવડ લીધી અને તે લઇને પૂર્વ દિશામા જલથી સિંચન કરે છે અને કહે છે—'હે પૂર્વ દિશાના અધિપતિ સોમ મહારાજ! પરલોકસાધન માર્ગમા જવા માટે પ્રસ્થિત સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિની રક્ષા કરો અને ત્યા જે કાઇ કંદ, મૂળ, છાલ, પાંદડા પુષ્પ, ફલ, બી તથા લીલોતરી વસ્તુ આદિ છે તે લેવાની આજ્ઞા આપો' એમ કહીને પૂર્વ દિશામા જાય છે ત્યા જઈને

स्माज्जात उटजः=तापसाना पर्णशाला, किढिणसाङ्कायिक=किढिण=वंशमयस्ता पसभाजनविशेषः, साङ्कायिक=भारोद्वहनयन्त्र किढिणसाङ्कायिक=कावट 'कावड' इति प्रसिद्धम् , प्रस्थाने=परलोकसाधनमार्गप्रयाणे, प्रस्थित=प्रयातम् फलाद्याह रणार्थं प्रवृत्तमिति यावत् , पत्राऽऽमोट=तरुशाखामोटितपत्रसमूह, वेदिं=अग्नि होत्रपूजादिस्थान वर्धयति=प्रमार्जयति, उपलेपनसम्मार्जनम्=मृत्तिकागोमयादिना भूमिसंस्कार उपलेपनम् सम्मार्जन=तृणादिनिर्मितसम्मार्जन्या भूमित' पिपीलि कादिकाना लघुकाय-जीवानामपसारणम् , देवपितृकृतकार्यः देवाश्च पितरश्च देवपितरस्तेषा कृत=सम्पादित कार्यं पूजनजलाञ्जलिदानप्रभृतिकृत्य येन स तथा, दर्भकलशहस्तगतः=दर्भाः=कुशा. कलशः=घटश्च हस्ते गता. प्राप्ता. यस्य स

वहां कन्द मूल आदि थे उनका ग्रहण करता है और अपना कावड भरता है । बाद इसके दर्भ, कुश पत्रामोट तोडे हुए पत्ते और समित्काष्ठ (हवनके लिये छोटी २ लकडियां)को लेकर जहां अपनी कुटी थी वहा आया और अपनी कावड रक्खी । कावड रखकर वेदी को बढाया अर्थात् वेदी बनानेका स्थान निश्चय किया। बाद उपले पन और पिपीलिका (कीडी मकोडी) आदि लघुकाय जीवोंकी रक्षाके लिये समार्जन करने लगा। अनन्तर दर्भ और कलशको हाथमे लेकर गङ्गाके तटपर आया और गङ्गामे प्रवेश कर स्नान करने लगा । और जलमज्जन-डुबकी लगाना, जलक्रीडा=तैरना, तथा जलाभिषेक करने लगा। बाद आचमन करके स्वच्छ और अत्यन्त शुद्ध हो देवता और पितरोंका कृत्य करके दर्भ और कलश हाथमें लेकर गङ्गा महानदीसे बाहर निकला, ओर अपनी कुटीमे आया। वहाँ आकर

જે કાઈ કદ મૂલ આદિ હતા તે ગ્રહણ કરે છે અને પોતાનો કાવડ ભરે છે પછી તેના દર્ભ, કુશ, પાદડા અને સમિધ (હોમના કાષ્ઠ) એ બધુ લઈ જ્યા પોતાની પર્ણકુટી હતી ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે પોતાની કાવડ રાખી કાવડ રાખીને વેદીને મેટી કરી અર્થાત્ વેદી બનાવવાનું વિસ્તૃત સ્થાન નિશ્ચિત કર્યું પછી ઉપલેપન (લીંપણ) તથા કીડી આદિ લઘુકાય જીવોની રક્ષાને માટે સમાર્જન કરવા લાગ્યો પછી દર્ભ તથા કલશને હાથમા લઈને ગગાને કાઠે આવ્યો અને તેમા પ્રવેશીને સ્નાન કરવા લાગ્યો, તથા જલમજ્જન=ડુબકી લગાવવુ, અને જલાભિષેક કરવા લાગ્યો પછી આચમન કરીને સ્વચ્છ અને અત્યત શુદ્ધ કરીને, દેવતા તથા પિતૃઓના કર્મો કરીને, દર્ભ તથા કલશ હાથમા લઈને, ગગા મહાનદીમાથી બહાર નીકળ્યો અને પોતાની કુટીમા આવ્યો ત્યા આવીને દર્ભ અને કુશને એક તરફ રાખે છે તથા રેતીથી

तथा कुशकलशहस्त इति, शरकेण=निर्मन्थनकाष्ठेन अरणिं=घर्षणीयकाष्ठं मथ्नाति=घर्षयति, अग्निं सन्धुक्षते=फूत्करोति। 'समादहे'=समादधाति=स्थापयति, अत्र लटोऽर्थे लिङ् सार्षत्वात्, तद्यथा=तानि अङ्गानि यथा, चरु=हवनार्थं दुग्धेन सह तण्डुलादिहविर्घृताभिघारितं साधयति=सम्पादयति, रन्धयतीति यावत् ॥५॥

दर्भ और कुश एक तरफ रखता है और वालूसे वेदी बनाता है। बादमें शरक=निर्मन्थन काष्ठ, जो अग्निके लिए घिसा जाता है, अरणि=निर्मथ्यमान काष्ठ, जिसपर अग्नि उत्पन्न करनेके लिए शरक घिसा जाता है, उन्हे तैयार करता है। अनन्तर शरक के द्वारा अरणि का मन्थन करता है, और मन्थन कर उससे अग्नि निकालता है फिर फूककर उसे सुलगाता है। उसमे समिध काष्ठ डालकर उसे प्रज्वलित कर अग्निके दाहिने पार्श्व (जीमणी बाजू) मे सात अङ्गो (वस्तुओ) का स्थापन करता है, वे ये हैं—

(१) सकत्थ तापसोंका एक उपकरण विशेष, (२) वल्कल, (३) स्थान, (४) शय्या भाण्ड, (५) कमण्डल, (६) लकडीका दण्डा तथा (७) आत्मा अर्थात् अपनेको अग्निके दाहिनी तरफ रखे।

इसके अनुसार सब वस्तुओंको यथास्थान रखकर वह मधु घृत और तण्डुलसे हवन करता है। चरु=(घीसे चुपडकर हवनके लिये पकाने योग्य चावल) को सिझाता है। बलि-वैश्वदेव (नित्य यज्ञ) करता है। बादमे अतिथिको भोजन कराकर स्वयं भोजन करता है ॥५॥

वेदी બનાવે છે પછી शरक=निर्मथन કાષ્ઠ, જે અગ્નિ માટે ઘસવામા આવે છે, તે તથા अरणि=નિર્મથ્યમાન કાષ્ઠ, જેના ઉપર અગ્નિ ઉત્પન્ન કરવા માટે 'शरक' ઘસાય છે તે તયાર કરે છે અને શરક દ્વારા અરણીનું મન્થન કરે છે મન્થન કરી તેમાથી અગ્નિ પ્રગટ કરે છે અને ફુંક મારી તેને સળગાવે છે તેમા સમાધીના કાષ્ઠ નાખીને પ્રજવલિત કરે છે અગ્નિ પ્રજવલિત કરીને અગ્નિની જમણી બાજુમા સાત અંગો (વસ્તુઓ) નુ સ્થાપન કરે છે-જેવાકે —

(૧) સકત્થ-તાપસોનુ એક ઉપકરણ વિશેષ, (૨) વલ્કલ, (૩) સ્થાન, (૪) શય્યાભાડ, (૫) કમડળ, (૬) લાકડીનો દંડ તથા (૭) આત્મા અર્થાત્ પોતાને અગ્નિની જમણી બાજુએ રાખે

આ પ્રમાણે બધી વસ્તુઓને યથાસ્થાન રાખી મધ, ઘી તથા ચોખાથી અગ્નિમા હવન કરે છે चरु=ઘીથી ચોપડીને હવનને માટે રાધવાના ચાવલ સીઝાવે છે ચરૂને સિઝાવી बलि वैश्वदेव.(નિત્ય યજ્ઞ) કરે છે પછી અતિથિને જમાડી પોતે ભોજન કરેછે (૫)

मूलम्--तए णं से सोमिले माहणरिसी दोच्चंसि छट्ठक्खमणपारणगंसि तं चेव सव्व भाणियव्व जाव आहारं आहारेइ, नवर इम नाणत्त--दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थिय अभिरक्खउ सोमिल माहणरिसि जाणि य तत्थ कदाणि य जाव अणुजाणउ त्ति कट्टु दाहिण दिसिं पसरइ। एव पच्चत्थिमे णं वरुणे महाराया जाव पच्चत्थिम दिसिं पसरइ। उत्तरेण वेसमणे महाराया जाव उत्तर दिसिं पसरइ। पुव्व दिसागमेणं चत्तारि विदिसाओ भाणियव्वाओ जाव आहार आहारेइ ।

तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अह वाणारसीए नयरीए सोमिले नाम माहणरिसी अच्चंतमाहणकुलप्पसूए, तएण मए वयाइं चिण्णाइ जाव जूवा निक्खित्ता । तएण मए वाणारसीए जाव पुप्फारामा य जाव रोविआ । तएण मए सुवहु लोह० जाव घडावित्ता जाव जेट्ठपुत्त कुडुबे ठावित्ता जाव जेट्ठपुत्त आपुच्छित्ता सुवहु लोह० जाव गहाय मुडे जाव पव्वइए वि य ण समाणे छट्ठ छट्ठेण जाव विहरामि, त सेय खलु मम इयाणि कल्ल पाउ जाव जलते बहवे तावसे दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसगइए य परियाय सगइए य आपुच्छित्ता आसमससियाणि य वहूइ सत्तसयाइ अणुमाणइत्ता वागलवत्थ-

नियत्थस्स किढिणसकाइयगहियसभंडोवगरणस्स कट्ठमुद्दाए मुह वंधित्ता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहस्स महपत्थाण पत्थावेत्तए। एव सपेहेइ, सपेहित्ता कल्ल जाव जलते वहवे तावसे य दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसगइए य तं चेव जाव कट्ठमुद्दाए मुह वंधइ, वंधित्ता अयमेयारूवं अभिग्गह अभिगिण्हइ, जत्थेव णं अह जलसि वा एव थलसि वा दुग्गसि वा निन्नसि वा पव्व-यंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा पक्खलिज्ज वा पवडिज्ज वा, नो खलु मे कप्पइ पच्चुट्ठित्तए त्ति कट्टु अय मेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ, अभिगिण्हित्ता उतराए दिसाए उत्तराभिमुहमहपत्थाणं पत्थिए से सोमिले माहणरिसी पुव्वा-वरण्हकालसमयसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागए, असोगवरपायवस्स अहे किढिणसकाइय ठवेइ, ठवित्ता वेदिं वड्ढइ, वड्ढित्ता उवलेवणसमज्जण करेइ, करित्ता दब्भकलसहत्थ-गए जेणेव गंगा महानई जहा सिवो जाव गंगाओ महानईओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहिं य वालुयाए य वेदि रएइ, रइत्ता सरग करेइ, करित्ता जाव वलिवइस्सदेव करेइ, करित्ता कट्ठमुद्दाए मुह वधइ, तुसिणीए सचिट्ठइ ॥ ६ ॥

छाया–तत खलु स सोमिलो ब्राह्मणऋपिर्द्वितीये षष्ठक्षपणपारणके तदेव सर्व भणितव्य यावद् आहारमाहारयति। नवरमिद नानात्वम्–दक्षिणस्या

'तएण से सोमिले' इत्यादि—

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण ऋपिने द्वितीय छट्ठ (वेला)

तएण से सोमिले ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિએ દ્વિતીય ષષ્ઠ (બેલા) નું પારણું આવતાં પૂર્વોક્ત પ્રકારે બધા કર્મો કર્યાં તથા છેવટે આહાર કર્યો વિશેષ એ છે કે

दिशि यमो महाराजः प्रस्थाने प्रस्थितमभिरक्षतु सोमिल ब्राह्मणर्षिं, याश्च तत्र कन्दाश्च यावद् अनुजानातु, इति कृत्वा दक्षिणा दिश प्रसरति । एवं पश्चिमे खलु वरुणो महाराजो यावत् पश्चिमा दिश प्रसरति। उत्तरे खलु वैश्रवणो महाराजो यावद् उत्तरा दिश प्रसरति। पूर्वदिग्गमेन चतस्रो विदिशो भणितव्या यावद् आहारमाहारयति ।

तनःखलु तस्य सोमिलब्राह्मणर्षेरन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये अनित्यजागरिका जाग्रतोऽयमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत् समुदपद्यत एव

का पारणा आनेपर पूर्वोक्त प्रकारसे सभी कार्य किये और अन्तमें आहार किया। विशेष यह है कि यहा यमकी प्रार्थना करता है-दक्षिण दिशामे महाराज यम परलोक साधक मार्गमे प्रस्थित मुझ सोमिल ब्राह्मण ऋषिकी रक्षा करें, उस दिशामे जो कन्द, मूल, फल फूल आदि हों उन्हे लेनेकी मुझे आज्ञा दें। ऐसा कह कर दक्षिण दिशामे जाता है। इसी प्रकार पश्चिम दिशामें महाराजा वरुण देव परलोक साधक मार्गमे प्रस्थित मुझ सोमिल ब्राह्मण ऋषिकी रक्षा करें, इत्यादि पूर्वोक्त विधिसे पश्चिम दिशा मे जाता है। बाद उत्तर दिशामे जानेके लिये उसी प्रकार महाराज वैश्रवण (कुबेर)-की प्रार्थना की और उत्तर दिशामे गया। इसी प्रकार इसने चारो-पूर्व आदि दिशाके समान चारों विदिशाओं (कोणो) मे भी पूर्वोक्त विधिका आचरण किया, और आहार किया।

उसके बाद एक समय अनित्य जागरणा करते हुए उस सोमिल ब्राह्मण के हृदयमे इस प्रकारका आध्यात्मिक विचार उत्पन्न

'દક્ષિણ દિશામા મહારાજ યમ, પરલોક સાધક માર્ગમા પ્રસ્થિત સોમિલ બ્રાહ્મણની રક્ષા કરો તે દિશામા જે કદ, મૂળ, ફલ, ફુલ વગેરે હોય તે લેવાની આજ્ઞા આપો.' એમ કહીને દક્ષિણ દિશામા જાય છે એજ પ્રકારે પશ્ચિમ દિશામા મહારાજ વરુણ, પરલોક સાધક માર્ગમા પ્રસ્થિત સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિની રક્ષા કરો વગેરે પૂર્વોકત વિધિથી પશ્ચિમ દિશામા જાય છે પછી ઉત્તર દિશામા જવા માટે એજ પ્રકારે મહારાજ વશ્રવણ (કુબેર) ની પ્રાર્થના કરી અને ઉત્તર દિશામા ગયો આવી રીતે તેણે પૂર્વ આદિ ચારે દિશાઓની પેઠે ચારે દિશાઓ (ખૂણા) મા પણ પૂર્વોકત વિધિનું આચરણ કર્યું અને પછી આહાર કર્યો

ત્યાર પછી એક વખત અનિત્ય જાગરણ કરતા કરતા તે સોમિલ બ્રાહ્મણના હૃદયમા એવા પ્રકારનો આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે હુ વારાણસી નગરીનો

खलु अहं वाराणस्यां नगर्यां सोमिलो नाम ब्राह्मणऋषिरत्यन्तब्राह्मणकुलप्रसूतः, ततः खलु मया व्रतानि चीर्णानि यावत् यूपा निक्षिप्ताः, ततः खलु मया वाराणस्यां यावत् पुष्पारामाश्च यावद् रोपिताः, ततः खलु मया सुबहुलोह० यावद् घटयित्वा यावत् ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा यावद् ज्येष्ठपुत्रमापृच्छ्य सुबहुलोह० यावद् गृहीत्वा मुण्डो यावत् प्रव्रजितोऽपि च खलु सन् षष्ठषष्ठेन यावत् विहरामि, तच्छ्रेयः खलु ममेदानीं कल्ये प्रादुर्यावज्ज्वलति बहून् तापसान् दृष्ट-भ्रष्टांश्च पूर्वसङ्गतिकांश्च पर्यायसंगतिकांश्च आपृच्छ्य आश्र-

हुआ कि-मैं वाराणसी नगरीका रहनेवाला अत्यन्त उच्च कुलमें उत्पन्न सोमिल नामका ब्राह्मण ऋषि हूँ। मैंने बहुतसे व्रत किये, तथा यज्ञ आदि करनेसे लेकर यज्ञस्तम्भ तक गाडा। अनन्तर मैंने वाराणसी नगरीके बाहर आमके बगीचेसे लेकर फूल तकके बगीचे लगवाये। बाद मैंने बहुतसी लोहेकि कडाहियाँ कलछू और तापसके लिये उपयुक्त बहुतसे ताम्बेके पात्र बनवाकर और अपने सभी मित्र-ज्ञाति-स्वजन-बन्धुओंको बुलाकर उन्हें भोजन आदिके द्वारा सम्मानित कर उन ज्ञाति बन्धुओंके समक्ष अपने पुत्रको कुटुम्बकी रक्षाके लिये स्थापित कर यावत् उससे सम्मति लेकर उन लोहेकी कडाहियाँ आदि लेकर मुण्ड होकर प्रव्रजित हुआ। और अनन्तर रहित षष्ठ-षष्ठ दिक्चक्रवाल तप करता हुआ विचरण कर रहा हूँ अब मुझे उचित है कि सूर्योदय होते ही बहुतसे दृष्टभ्रष्ट दृष्ट=जो कभी देखे हुए यथार्थ भाव है उनसे भ्रष्ट स्खलित हैं तथा पूर्वसंगतिक-

रहेवावाणो अत्यंत ऊंचा कुळमां जन्मेलो सोमिल नामनो ब्राह्मण ऋषि छुं मे घणां घणां व्रत कर्यां तथा यज्ञ वगेरेथी मांडी यज्ञस्तंभ खोडवा सुधी कर्म कर्यां त्यार पछी मे वाराणसी नगरीनी बहार आमाना बगीचाथी मांडी फुलवाडीना बाग सुधी बनावरावी पछी मे घणी लोढानी कडाईओ, कडछी तथा तापसने माटे उपयोगी एवा घणा तांबाना पात्रो वगेरे वस्तु बनावरावी अने मारा पोताना सघळा मित्र-ज्ञाति-स्वजन-बंधुओने बोलावीने तेमने भोजन वगेरे करावी सन्मानित कर्या ते ज्ञाति बंधुओनी समक्ष मारा पोताना पुत्रने कुटुंबनी रक्षा माटे स्थापित करीने तेनी सम्मति लईने ते लोढानी कडाई वगेरे बधुं लई मुंडित थइ प्रव्रजित थयो अने अनंतरहित छ०-छ० दिक्चक्रवाल तप करतो करतो विचरुं छुं आ माटे मने ए योग्य छे के सूर्योदय थतां ज घणा दृष्टभ्रष्ट=दृष्ट=जे क्यारेक जोवामां आवेला

दिशि यमो महाराजः प्रस्थाने प्रस्थितमभिरक्षतु सोमिल ब्राह्मणर्षिं, याश्च तत्र कन्दाश्च यावद् अनुजानातु, इति कृत्वा दक्षिणा दिश प्रसरति । एव पश्चिमे खलु वरुणो महाराजो यावत् पश्चिमा दिश प्रसरति। उत्तरे खलु वैश्रवणो महाराजो यावद् उत्तरा दिश प्रसरति। पूर्वदिग्गमेन चतस्रो विदिशो भणितव्या यावद् आहारमाहारयति ।

ततःखलु तस्य सोमिलब्राह्मणर्षेरन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकाल समये अनित्यजागरिका जाग्रतोऽयमेतद्रूप आ यात्मिको यावत् समुदपद्यत एव

का पारणा आनेपर पूर्वोक्त प्रकारसे सभी कार्य किये और अन्तमे आहार किया। विशेष यह हैं कि यहा यमकी प्रार्थना करता है-दक्षिण दिशामे महाराज यम परलोक साधक मार्गमें प्रस्थित मुझ सोमिल ब्राह्मण ऋषिकी रक्षा करें, उस दिशामे जो कन्द, मूल, फल फूल आदि हों उन्हे लेनेकी मुझे आज्ञा दें। ऐसा कह कर दक्षिण दिशामें जाता है। इसी प्रकार पश्चिम दिशामे महाराजा वरुण देव परलोक साधक मार्गमे प्रस्थित मुझ सोमिल ब्राह्मण ऋषिकी रक्षा करें, इत्यादि पूर्वोक्त विधिसे पश्चिम दिशा मे जाता है। बाद उत्तर दिशामे जानेके लिये उसी प्रकार महाराज वैश्रवण (कुबेर)-की प्रार्थना की और उत्तर दिशामे गया। इसी प्रकार इसने चारो-पूर्व आदि दिशाके समान चारो विदिशाओं (कोणो) मे भी पूर्वोक्त विधिका आचरण किया, और आहार किया।

उसके बाद एक समय अनित्य जागरणा करते हुए उस सोमिल ब्राह्मण के हृदयमे इस प्रकारका आध्यात्मिक विचार उत्पन्न

'દક્ષિણ દિશામા મહારાજ યમ, પરલોક સાધક માર્ગમા પ્રસ્થિત સોમિલ બ્રાહ્મણની રક્ષા કરો તે દિશામા જે કદ, મૂળ, ફલ, ફુલ વગેરે હોય તે લેવાની આજ્ઞા આપો' એમ કહીને દક્ષિણ દિશામા જાય છે એજ પ્રકારે પશ્ચિમ દિશામા મહારાજ વરુણ, પરલોક સાધક માર્ગમા પ્રસ્થિત સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિની રક્ષા કરો વગેરે પૂર્વોકત વિધિથી પશ્ચિમ દિશામા જાય છે પછી ઉત્તર દિશામા જવા માટે એજ પ્રકારે મહારાજ વૈશ્રવણ (કુબેર) ની પ્રાર્થના કરી અને ઉત્તર દિશામા ગયો આવી રીતે તેણે પૂર્વ આદિ ચારે દિશાઓની પેઠે ચારે દિશાઓ (ખૂણા) મા પણ પૂર્વોકત વિધિનુ આચરણ કર્યું અને પછી આહાર કર્યો

ત્યાર પછી એક વખત અનિત્ય જાગરણ કરતા કરતા તે સોમિલ બ્રાહ્મણના હૃદયમા એવા પ્રકારનો આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે હુ વારાણસી નગરીનો

प्रपतेय वा नो खलु मे कल्पते प्रत्युत्थातुम् , इति कृत्वा इममेतद्रूपमभिग्रह-मभिगृह्णाति, उत्तरस्यां दिशि उत्तराभिमुखमहाप्रस्थानं प्रस्थितः । स सोमिलो ब्राह्मण ऋषिः पूर्वापराह्णकालसमये यत्रैव अशोकवरपादपस्तत्रैवोपागतः । अशोकवरपादपस्याधः किढिणसाङ्कायिकं स्थापयति, स्थापयित्वा वेदिं वर्धयति, उपलेपनसम्मार्जनं करोति, कृत्वा दर्भकलशहस्तगतो यत्रैव गङ्गा महानदी यथा शिवो यावद् गङ्गातो महानदीतः प्रत्युत्तरति, प्रत्युत्तीर्य यत्रैव अशोकवरपादपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य दर्भैश्च कुशैश्च वालुकया च वेदीं रचयति, रचयित्वा शरकं करोति, कृत्वा यावद् बलिवैश्वदेवं करोति, कृत्वा काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, तूष्णीकः संतिष्ठते ॥ ६ ॥

टीका-'तएणं से सोमिले' इत्यादि । पूर्वदिशागमनेन=कन्दमूलाद्यर्थपूर्वदिशागमनेन चतस्रो विदिशो भणितव्या , अयं भावः चतुर्दिक्षु या क्रिया कृता सा क्रिया त्रिदिक्ष्वपि । दृष्टभ्रष्टान्=सम्यक्त्वस्खलितान् पूर्वसङ्गतिकान्=पूर्वस्मिन्

तो मुझे वहासे उठना नही कलपता ' ऐसा विचार करके इस प्रकारका अभिग्रह लेता है । तथा उत्तर दिशाकी ओर महाप्रस्थानके लिए प्रस्थित होता है । फिर वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि अपराह्न काल (दिनके तिसरे प्रहर) में जहा सुन्दर अशोक वृक्ष था वहा आया। और उस अशोक वृक्षके नीचे अपना कावड रक्खा । अनन्तर वेदि=बैठनेकी जगहको साफ किया, साफ करके जहाँ गङ्गा महानदी थी वहा आया । और शिवराजऋषिके समान उस गगा महानदीमे स्नान आदि कृत्यकर वहासे ऊपर आया और जहा अशोक वृक्ष था वहा आकर दर्भ कुश और बालुकासे यज्ञ वेदीकी रचना की । यज्ञ वेदीकी रचना करके शरक और अरणिसे अग्निको प्रज्वलित कर

પ્રસ્ખલિત થાઉ કે પડી જાઉ તો મારે ત્યાથી ઉઠવુ નહિ કલ્પે ' એમ વિચારી એવો અભિગ્રહ લે છે અને ઉત્તર દિશા તરફ મહાપ્રસ્થાન માટે પ્રસ્થિત થાય છે પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિ અપરાહ્ન કાલ (દિવસના ત્રીજાપ્રહર) મા જ્યા સુદર અશોક વૃક્ષ હતુ ત્યા આવ્યો અને તે અશોક વૃક્ષની નીચે પોતાની કાવડ નાખી અનન્તર વેદિ-બેસવાની જગ્યાને સાફ કરી, તે સાફ કરીને જ્યા ગગા મહાનદી હતી ત્યા આવ્યો- અને શિવરાજ ઋષિની પેઠે તે ગગા મહાનદીમા સ્નાન આદિ કર્મ કરી ત્યાથી ઉપર આવ્યો તથા જ્યા અશોક વૃક્ષ હતુ ત્યા આવીને-દર્ભ, કુશ તથા રેતાથી યજ્ઞ વેદીની રચના કરી યજ્ઞ વેદીની રચના કરીને શરક તથા અરણીથી

मसश्रितानि च बहूनि सत्त्वशतानि अनुमान्य वाल्कलवस्त्रनिवासितस्य किढिण सकायिकगृहीतसभाण्डोपकरणस्य काष्ठमुद्रया मुखं बद्ध्वा उत्तरदिशि उत्तराभिमुखस्य महाप्रस्थानं प्रस्थापयितुम्, एवं संप्रेक्ष्य कल्ये यावत् ज्वलति बहून् तापसांश्च दृष्ट-भ्रष्टांश्च पूर्वसङ्गतिकांश्च तदेव यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, बद्ध्वा इममेतद्रूपमभिग्रहमभिगृह्णाति–यत्रैव खलु अहं जले वा, एवं स्थले वा दुर्गे वा निम्ने वा पर्वते वा विषमे वा गर्तायां वा दर्यां वा प्रस्खलेयं वा

पूर्वकालमे जिनसे संगति=मित्रता हुई थी ऐसे, पर्यायसंगतिक=समान तापस पर्यायवालोंको पूछकर, आश्रम संश्रित = आश्रममें रहनेवाले अनेक शत प्राणियोंको वचन आदिसे सन्तुष्ट कर वल्कल वस्त्र पहना हुआ कावडमे अपने भाण्डोपकरणको लेकर तथा काष्टमुद्रासे बाँधकर उत्तराभिमुख होकर उत्तर दिशामें महाप्रस्थान (मरणके लिये जाना) करूँ।

वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि इस प्रकार विचार करता है और सूर्योदय होने पर, अपने विचारके अनुसार सभी दृष्टभ्रष्ट आदि तापस पर्यायवालोंको पूछकर तथा आश्रमस्थ अनेक शत प्राणियोंको वचन आदिसे सन्तुष्टकर अन्तमे काष्ट मुद्रासे अपना मुख बाँधता है, और इस प्रकारका अभिग्रह (प्रतिज्ञा) लेता है कि–जहाँ कहीं भी–चाहे वह जल हो या स्थल हो वा दुर्ग (विकट स्थान) हो, अथवा नीचा प्रदेश हो वा पर्वत हो, विषम भूमि हो, वा गड्ढा हो, वा गुफा हो, इन सबोमेंसे कहीं भी प्रस्खलित होऊँ या गिर पडूँ,

यथार्थ भावोथी भ्रष्ट-स्खलित छे ते तथा पूर्व संगतिक=समान तापस पर्याय वर्तिओने पूछीने, आश्रम संश्रित=आश्रममां रहेवावाळा अनेक सेंकडो प्राणीओने वचन आदिथी संतुष्ट करी वल्कल वस्त्र धारी कावडमां पोताना भांडोपकरण लई तथा काष्ठमुद्राथी मोढाने बांधी उत्तर दिशामां उत्तराभिमुख थईने महाप्रस्थान (मरणने माटे जवुं) करूं.

ते सोमिल ब्राह्मण ऋषि आवो विचार करे छे अने सूर्योदय थतां पोताना विचार प्रमाणे बधा दृष्ट-भ्रष्ट आदि समान तापस पर्यायवर्तिओने पूछीने तथा आश्रममां रहेनारा अनेक सेंकडो प्राणिओने संतुष्ट करी काष्ठमुद्रा वडे पोतानुं मोढुं बांधे छे अने एवो अभिग्रह (प्रतिज्ञा) ले छे के–'ज्यां ज्यां पण ते जल होय के स्थल होय के दुर्ग (विकट स्थान) होय, नीचो प्रदेश होय के पर्वत होय, विषम भूमि होय के खाडो होय के गुफा होय ए बधामांथी गमे ते होय त्यां

गिण्हित्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए ।

तएणं से सोमिले तइयदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, वेइं वड्ढेइ जाव गंगं महानइं पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेइं रएइ जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भूए तंचेव भणइ जाव पडिगए। तएणं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकाइयं जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधित्ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

तएणं से सोमिले चउत्थे दिवसे पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव वडपायवे तेणेव उवागए, वडपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइं वड्ढेइ, उवलेवणसमज्जणं करेइ जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भूए तं चेव भणइ जाव पडिगए। तएणं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकाइयं जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

तएणं से सोमिले पंचमदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव उंबरपायवे तेणेव उवागच्छेइ, उंबरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, वेइं वड्ढेइ जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ जाव तुसिणीए संचिट्ठइ।

काले सङ्गतिः=मित्रत्वं यैः सह तान् तथा पूर्वमित्राणि, पर्यायसङ्गतिकान्=तापसपर्यायवर्तिनः, काष्ठमुद्रया=काष्ठमयमुखबन्धनेन। गर्तायां=महत्यां खड्डायाम्, दर्यां=कन्दरायाम्, शेषं स्पष्टम् ॥ ६ ॥

मूलम्—तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए। तए णं से देवे सोमिलं माहणं एवं वयासी—हंभो सोमिलमाहणा! पव्वइया! दुप्पव्वइयं ते। तए णं से सोमिले तस्स देवस्स दोच्चंपि तच्चंपि एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ जाव तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं से देवे सोमिलेणं माहणरिसिणा अणाढाइज्जमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए। तए णं से सोमिले कल्लं जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकाइयं गहाय गहियभंडोवगरणे कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ बंधित्ता उत्तराभिमुहे संपत्थिए। तए णं से सोमिले बिइयदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव सत्तवन्ने तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सत्तवण्णस्स अहे किढिण-संकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइं वड्ढेइ, वड्ढित्ता जहा असोगवरपायवे जाव अग्गिं हुणइ, कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए। तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने जहा असोगवरपायवे जाव पडिगए। तए णं से सोमिले कल्लं जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकाइयं गिण्हइ,

यावत् बलिवैश्वदेव (नित्य यज्ञ करता है, काष्ठ मुद्रासे मुख बांधता है, और मौन होकर रहता है ॥ ६ ॥

અગ્નિને પ્રજ્વલિત કરીને પછી બલિ-વૈશ્વદેવ (નિત્ય યજ્ઞ) કરે છે અને કાષ્ઠ મુદ્રાથી મુખ બાંધે છે અને મૌન ધારણ કરી બેસી જાય છે (૬)

वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता जामेव दिसि पाउब्भूए जाव पडिगए।

तएण से सोमिले माहणरिसी तेणं देवेणं एव वुत्ते समाणे पुव्वपडिवन्नाइ पन्च अणुव्वयाइ सयमेव उवसपज्जित्ताणं विहरइ ।

तएण से सोमिले बहूहि चउत्थ छट्ठम जाव मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहि अप्पाण भावेमाणे बहुइ वासाइ समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्ते विराहियसम्मत्ते कालमासे काल किच्चा सुक्कवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि जावतोगाहणाए सुक्कमहग्गहत्ताए उववन्ने । तएण से सुक्के महग्गए अहुणोववन्ने समाणे जाव भासा-मणपज्जत्तीए० ।

एव खलु गोयमा ! सुक्केण महग्गहेण सा दिव्वा जाव अभिसमन्नागया, एगं पलिओवम ठिई । सुक्के ण भते ! महग्गहे तओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ कहि गच्छिहिइ ? २ गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५ । एवं खलु जबू ! समणेण निक्खेवओ ॥ ७ ॥

॥ तइय अज्झयण समत्त ॥ ३ ॥

छाया—तत खलु तस्य सोमिल ब्राह्मणऋषे पूर्वरात्रापरात्रकालसमये एको देवोऽन्तिक प्रादुर्भूत. । तत खलु स देव सोमिल ब्राह्मणमेवमवादीत्—हे भो सोमिलब्राह्मण !, प्रव्रजित ! दुष्प्रव्रजितं ते । तत खलु स सोमिल स्तस्य देवस्य द्वितीयमपि तृतीयमपि एतमर्थ नो आद्रियते नो परिजानाति

तएणं तस्स सोमिलमाहणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे जाव एव वयासी–हंभो सोमिला ! पव्वइया । दुप्पव्वइय ते पढम भणइ, तहेव तुसिणीए सचिट्ठइ । देवो दोच्चपि तच्चपि वदइ सोमिला ! पव्वइया दुप्पव्वइय ते । तएण से सोमिले तेण देवेणं दोच्चपि तच्चंपि एव वुत्ते समाणे त देव एवं वयासी–कहण्ण देवाणुप्पिया ! मम दुप्पव्वइयं ?। तएण से देवे सोमिलं माहण एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! तुम पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिय पचाणुव्वए सत्तसिक्खावए दुवालसविहे सावगधम्मे पडिवन्ने. तएणं तव अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण पुव्वरत्ता० कुडुव० जाव पुव्वचितिय देवो उच्चारेइ जाव जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइय जाव तुसिणीए सचिट्ठइ । तएण पुव्वरत्तावरत्तकाले तव अतिय पाउब्भवामि ह भो सोमिला ! पव्वइया ! दुप्पवइय ते तह चेव देवो नियवयण भणइ जाव पंचमदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयसि जेणेव उवरवरपायवे तेणेव उवागए किढिणसकाइय ठवेसि, वेइ वड्ढेसि, उवलेवण समज्जण करेसि, करित्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बधेसि, वधित्ता तुसिणीए सचिट्ठसि, त चेव खलु देवाणुप्पिया ! तव पव्वइय दुप्पव्वइय । तएण से सोमिले त देव एव वयासी–कहण्ण देवानुप्पिया ! मम सुप्पव्वइयं ? तएण से देवे सोमिलं एव वयासी जइण तुम देवाणुप्पिया । इयाणिं पुव्वपडिवण्णाइ पच अणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइ सममेव उवसपज्जित्ताण विहरसि, तोणं तुज्झ इदाणिं सुपव्वइय भविज्जा । तइण से देवे सोमिल

यित्वा वेदिं वर्धयति, वर्धयित्वा यथा अशोकवरपादपे यावत् अग्नि जुहोति, काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, तूष्णीकः संतिष्ठते।

ततः खलु तस्य सोमिलस्य पूर्वरात्रापररात्रकालसमये एको देवोऽन्तिकं प्रादुर्भूतः। ततः खलु स देवोऽन्तरिक्षप्रतिपन्नः यथा अशोकवरपादपे यावत् प्रतिगतः। ततः खलु स सोमिलः श्वो यावत् ज्वलति वल्कलवस्त्रनिवसितः किढिणसाङ्कायिकं गृह्णाति, गृहीत्वा काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, बद्ध्वा उत्तराभिमुखः संप्रस्थितः

नीचे अपना कावड रखता है, कावड रखकर वेदी बनाता है, और जैसे अशोक वृक्षके नीचे उसने किया वैसे ही सभी कार्य किये। अन्तमें उसने हवन किया और काष्ठमुद्रासे अपना मुँह बांधकर मौन होकर बैठ गया। उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मणके समक्ष मध्यरात्रिके समय एक देव प्रकट हुआ। और आकाशमें खडा होकर अशोक वृक्षके नीचे जिस प्रकार पहले उस सोमिल ब्राह्मणको देवताने कहा था उसी प्रकार फिर भी कहा, परन्तु उस सोमिल ब्राह्मणको देवताने कहा था उसी प्रकार फिर भी कहा, परन्तु उस सोमिल ब्राह्मणने उस देवताकी बातपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। सुनी अनसुनी करके केवल चुप रह गया। वह देवता अन्तर्हित हो गया। उसके बाद वल्कलवस्त्रधारी वह सोमिल ब्राह्मण अपना कावड ग्रहण करता है और काष्ठमुद्रासे अपना मुँह बांधता है। अनन्तर वह उत्तर दिशामें उत्तराभिमुख होकर प्रस्थित हुआ।

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण तीसरे दिन चौथे पहरमें जहां

વેદી બનાવે છે અને જેવી રીતે અશોક વૃક્ષની નીચે તેણે કર્યાં હતાં તેવાજ બધા કર્મો કરી અન્તે તેણે હવન કર્યો અને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોઢું બાંધી મૌન થઇ રહેવા લાગ્યો. પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણની સમક્ષ મધ્યરાત્રિના વખતે એક દેવ પ્રગટ થયો અને આકાશમાં ઊભો રહી અશોકવૃક્ષની નીચે જેમ પહેલા તે સોમિલ બ્રાહ્મણને દેવતાએ કહ્યું હતું તેવી જ રીતે વળી ફરીને કહ્યું પરંતુ તે સોમિલ બ્રાહ્મણે તે દેવતાની વાત ઉપર કાંઇ પણ ધ્યાન ન આપ્યું સાંભળ્યું ન સાંભળ્યું કરીને બિલકુલ ચુપ થઇ રહ્યો તે દેવતા અન્તર્ધ્યાન થઇ ગયો. પછી વલ્કલવસ્ત્ર ધારી તે સોમિલ બ્રાહ્મણે પોતાની કાવડ લીધી અને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોઢું બાંધે છે ત્યાર પછી ઉત્તર દિશામાં ઉત્તરાભિમુખ થઇને ચાલવા માંડયું

यावत् तूष्णीकः सतिष्ठते । ततः खलु स देवः सोमिलेन ब्राह्मणर्षिणा अनाद्रियमाणः यस्या दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः खलु स सोमिलः कल्ये यावत् ज्वलति वल्कलवस्त्रनिवसितः किढिणसाङ्कायिकं गृहीत्वा गृहीतभाण्डोपकरणः काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, बद्ध्वा उत्तराभिमुखः सम्प्रस्थितः । ततः खलु स सोमिलो द्वितीयदिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैव सप्तपर्णः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सप्तपर्णस्य अधः किढिणसाङ्कायिकं स्थापयति, स्था

'तएण तस्स' इत्यादि—

उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मण ऋषिके सामने मध्य रात्रिके समय एक देवता प्रकट हुआ। उसके बाद वह देव सोमिल ब्राह्मणको इस प्रकार कहा–हे प्रव्रजित सोमिल ब्राह्मण! तेरी यह दुष्प्रव्रज्या है। इस प्रकार उस देवके द्वारा दो तीन बार कहे जानेपर भी वह सोमिल उस देवताकी बातका आदर नही करता है न उसकी तरफ ध्यान ही देता है, किंतु मौन होकर रहता है उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मणसे अनादृत वह देव जिस दिशासे आया उसी दिशामें चला गया।

उसके बाद वल्कलवस्त्रधारी वह सोमिल सूर्योदय होनेपर कावडको उठाकर अपना भाण्ड–उपकरण लेकर काष्ठमुद्रासे अपना मुँह बांधकर उत्तर दिशाकी और प्रस्थान करता है।

अनन्तर वह सोमिल ब्राह्मण दूसरे दिन अपराह्ण कालके अंतिम प्रहारमें जहा सप्तपर्ण वृक्ष था वहा आया। और सप्तपर्ण वृक्षके

तएण तस्स ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિની સામે મધ્યરાત્રિના વખતે એક દેવતા પ્રગટ થયો. પછી તે દેવે સોમિલ બ્રાહ્મણને આમ કહ્યું,—હે પ્રવ્રજીત સોમિલ બ્રાહ્મણ! તારી આ પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા (દોષવાળી) છે એ પ્રકારે તે દેવની દ્વારા બે ત્રણ વાર કહેવામા આવતા છતા પણ તે સોમિલ તે દેવતાની વાતનો આદર કરતો નથી કે નથી તેના તરફ ધ્યાન પણ દેતો પણ એકદમ મૌન થઈ જાય છે ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણથી અનાદર પામેલો દેવ જે બાજુથી આવ્યો હતો તે બાજુએ ચાલ્યો ગયો

ત્યાર પછી વલ્કલવસ્ત્રધારી તે સોમિલ સૂર્યોદય થતા કાવડ ઉપાડી પોતાના ભાંડ ઉપકરણ લઈને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોઢું બાંધીને ઉત્તર તરફ પ્રસ્થાન કરે છે

પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ બીજે દિવસે અપરાહ્ણ કાલના છેલ્લા પહોરમા (સાંજ) જ્યા સપ્તપર્ણ વૃક્ષ હતુ ત્યા આવ્યો અને સપ્તપર્ણની નીચે પોતાની કાવડ રાખીને

यित्वा वेदिं वर्धयति, उपलेपनसमार्जनं करोति यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति तूष्णीकः संतिष्ठते। ततः खलु तस्य सोमिलस्य पूर्वरात्रापररात्रकाले एको देवोऽन्तिकं प्रादुर्भूतः। तदेव भणति यावत् प्रतिगतः। ततः खलु स सोमिलो यावज्ज्वलति वल्कलवस्त्रनिवसितः किढिणसाङ्कायिकं यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति बद्ध्वा उत्तरस्यां दिशि उत्तराभिमुखः संप्रस्थितः।

ततः खलु स सोमिलः पञ्चमदिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैव उदुम्बरपादपस्तत्रैवोपागच्छति, उदुम्बरपादपस्याधः किढिणसाङ्कायिकं स्थापयति, वेदिं वर्धयति यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति यावत् तूष्णीकः संतिष्ठते।

ततः खलु तस्य सोमिलब्राह्मणस्य पूर्वरात्रापररात्रकाले एको देवः यावत् एवमवादीत्–हं भो सोमिल! प्रव्रजित? दुष्प्रव्रजितं ते प्रथमं भणति तथैव तूष्णीकः संतिष्ठते, देवो द्वितीयमपि तृतीयमपि वदति सोमिल! प्रव्र-

---

कावड रखा। अनन्तर बैठनेकी वेदीको बनाया और उसको गोबर मिट्टीसे लीपा और साफ किया बाद मे मौन होकर बैठ गया, उसके बाद मध्य रात्रिके समय उस सोमिल ब्राह्मणके समीप एक देव प्रगट हुआ। और उसने वैसे ही कहा यावत अन्तर्हित हो गया।

उसके बाद वह सोमिल पाचवे दिनके चौथे पहरमे जहा उदुम्बर (गुलर) का वृक्ष था वहा आता है और उदुम्बर वृक्षके नीचे अपना कावड रखता है और वेदी बनाता है, यावत काष्ठमुद्रासे मुख बाधता है और मौन होकर रहता है। उसके बाद मध्य रात्रिमे उस सोमिल ब्राह्मणके पास एक देव प्रकट हुआ और यावत इस प्रकार कहा–हे सोमिल प्रव्रजित! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है, इस प्रकार पहली वार उस देवताके मुखसे वाणी सुनकर वह

વેદી બનાવી તે છાણ માટીથી લીપી અને સાફ કરી પછી મૌન થઈને બેઠો ત્યાર પછી મધ્યરાત્રિન વખતે તે સોમિલ બ્રાહ્મણની પાસે એક દેવ પ્રગટ થયો અને તેણે એમજ અગાઉ પ્રમાણે કહ્યુ અને અંતર્ધાન થઈ ગયો

ત્યાર પછી તે સોમિલ પાંચમા દિવસે ચોથા પહોરે જ્યા ઉદુમ્બર (ઉબરો) નુ વૃક્ષ હતુ ત્યા આવે છે અને તે ઉદુમ્બર વૃક્ષની નીચે પોતાની કાવડ રાખી વેદી બનાવે છે પહેલાની માફક બધા કૃત્યો કરી પછી કાષ્ઠમુદ્રાથી મોઢુ બાધી મૌન રહે છે ત્યાર પછી મધ્યરાત્રિમા તે સોમિલ બ્રાહ્મણની પાસે એક દેવ પ્રગટ થયો અને આ પ્રકારે કહ્યુ —હે સોમિલ પ્રવ્રજિત! તારી આ પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા છે આ પ્રકારની પહેલીવારની વાણી તે દેવનાન મુખેથી સાભળી તે સોમિલ મૌન રહે છે પછી તે દેવ

ततः खलु स सोमिलस्तृतीयदिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैवाशोकवरपादपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अशोकवरपादपस्याधः किढिणसाङ्कायिकं स्थापयति, वेदिं वर्धयति, यावद् गङ्गा महानदी प्रत्युत्तरति, प्रत्युत्तीर्य यत्रैवाशोकवरपादपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वेदिं रचयति, यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, बद्ध्वा तूष्णीकः संतिष्ठते। ततः खलु तस्य सोमिलस्य पूर्वरात्रापररात्रकाले एको देवोऽन्तिकं प्रादुर्भूतः तदेव भणति यावत् प्रतिगतः। ततः खलु स सोमिलो यावत् ज्वलति वल्कलवस्त्रनिवसितः किढिणसाङ्कायिकं यावत् काष्ठमुद्रया मुखं बध्नाति, बद्ध्वा उत्तरस्यां दिशि उत्तराभिमुखः सम्प्रस्थितः।

ततः खलु स सोमिलः चतुर्थे दिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैव वटपादपस्तत्रैवोपागतः, वटपादपस्याधः किढिणसाङ्कायिकं स्थापयति, स्थाप

अशोक वृक्ष था वहाँ आया। वहा आकर कावड रखता है, और बैठनेके लिये वेदी बनाता है और पहलेके ही तरह सभी कार्य करके काष्ठमुद्रासे मुह बाधता है, अनन्तर मौन होकर बैठ जाता है। उसके बाद मध्यरात्रिमे उस सोमिल ब्राह्मणके समीप एक देव प्रगट हुआ और फिर उसने उसी प्रकार कहा और यावत् चला गया। उसके बाद सूर्योदय होनेपर वल्कल वस्त्रधारी वह सोमिल ब्राह्मण अपना कावड उठाता है और काष्ठमुद्रासे अपना मुख बाधता है और उत्तराभिमुख हो उत्तर दिशामें प्रस्थान करता है।

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण चौथे दिवसके चौथे पहरमे जहा बडका वृक्ष था वहा आया। और उस वट वृक्षके नीचे अपना

પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ત્રીજે દિવસે ચોથા પહોરમા જ્યા અશોક વૃક્ષ હતુ ત્યા આવી કાવડ મૂકીને બેસવા માટે વેદી બનાવે છે પહેલાંની પ્રમાણે બધા કર્મો કરી કાષ્ઠમુદ્રાથી મોઢુ બાધી પછી મૌન થઇ બેસી જાય છે ત્યાર પછી મધ્યરાત્રિમા તે સોમિલ બ્રાહ્મણની પાસે એક દેવ પ્રગટ થયો અને વળી તેણે તજ પ્રકારે કહ્યુ અને પછી ચાલ્યો ગયો ત્યાર પછી સૂર્યોદય થતા વલ્કલવસ્ત્ર ધારી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ પોતાની કાવડ ઉપાડે છે અને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનુ મોઢુ બાધે છે અને પછી ઉત્તર દિશામા ઉત્તરાભિમુખ થઇને ચાલવા માડે છે

ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ચોથે દિવસે ચોથા પહોરમા જ્યા વડનુ વૃક્ષ હતુ ત્યા આવ્યો અને તે વડના ઝાડની નીચે પોતાની કાવડ રાખી પછી બેસવાની

वरपादपस्तत्रैवोपागच्छसि, उपागत्य किढिणसाङ्कायिकं यावत् तूष्णीकः संतिष्ठसे । ततः पूर्वरात्रापररात्रकाले तवान्तिकं प्रादुर्भवामि—हं भो सोमिल ! प्रव्रजित ? दुष्प्रव्रजित ते तथैव देवो निजवचनं भणति यावत् पञ्चमदिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैव उदुम्बरपादपस्तत्रैवोपागतः किढिणसाङ्कायिकं स्थापयसि, वेदीं वर्धयसि, उपलेपनं संमार्जनं करोषि, कृत्वा काष्ठमुद्रया मुखं बध्नासि, बद्ध्वा तूष्णीकः प्रतिष्ठसे, तदेवं खलु देवानुप्रिय ! तव प्रव्रजितं दुष्प्रव्रजितम् ।

लेकर जाऊँ और दिशाप्रोक्षक तापस बनूँ'। इत्यादि सोमिल ब्राह्मणके द्वारा पूर्व चिंतित विचारोंको देवताने उससे कहा। और फिर उसने कहा कि—'बादमें तुमने दिशाप्रोक्षक तापसके समीप दिक्षा ली और अभिग्रह लिया यावत् जहाँ अशोक वृक्ष था वहाँ आये और वहाँ कावड रख अपना सभी कृत्य किया बाद मेरे द्वारा प्रतिबोधित होनेपर भी तुमने उसपर ध्यान नहीं दिया और मौन होकर रह गये। इस प्रकार मैंने चार दिन तक तुम्हें समझाया पर तुमने ध्यान नहीं दिया। बाद आज पाँचवें दिवस चौथे पहरमें यहाँ उदुम्बर वृक्षके नीचे तुमने अपना कावड रखा, बैठनेकी जगहको साफ किया, अनन्तर उपलेपन और सम्मार्जन किया और काष्ठमुद्रासे अपना मुँह बाँधकर तुम मौन होकर बैठे। हे देवानुप्रिय ! इस प्रकार तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।

બનાવરાવી તે લઈને જાઉં અને દિશાપ્રોક્ષક તાપસ બનું' વગેરે સોમિલ બ્રાહ્મણના મનમાં પૂર્વ ચિંતન કરેલા જે વિચારો હતા તે દેવતાએ તેને કહ્યા. ફરી તેણે કહ્યું કે ત્યાર બાદ તમે દિશાપ્રોક્ષક તાપસની પાસે દીક્ષા લીધી અને અભિગ્રહ લીધો ત્યારથી જ્યાં અશોક વૃક્ષ હતું ત્યાં આવ્યા અને ત્યાં કાવડ રાખી તમે તમામ સર્વે કર્મો કર્યાં પછી મારા દ્વારા પ્રતિબોધિત કરાયા છતાં પણ તમે તે ઉપર ધ્યાન ન આપ્યું અને મૌન રહ્યા. આ પ્રકારે મેં ચાર દિવસ સુધી તમને સમજાવ્યા પણ તમે ધ્યાન ન આપ્યું. બાદ આજે પાંચમા દિવસના ચોથા પહોરમાં અહીં ઉદુમ્બર વૃક્ષની નીચે તમે તમારી કાવડ રાખી બેસવાની જગ્યાને સાફ કરી પછી તે લીંપી અને સંમાર્જન કર્યું અને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોઢું બાંધી મૌન થઈ બેઠા છો. હે દેવાનુપ્રિય ! આ પ્રકારની તમારી આ પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા છે.

जित ? दुष्प्रव्रजित ते । ततः खलु स सोमिलस्तेन देवेन द्वितीयमपि तृतीय मप्येवमुक्तः सन् त देवमेवमवादीत्-कथ खलु देवानुप्रिय ! मम दुष्प्रव्रजितम्

ततः खलु स देवः सोमिल ब्राह्मणमेवमवादीत्-एव खलु देवानुप्रिय ! त्व पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्यान्तिक पञ्चानुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि द्वादश विध श्रावकधर्मं प्रतिपन्नः, ततः खलु तवाऽन्यदा कदाचित् असाधुदर्शनेन पूर्वरात्रा० कुटुम्ब० यावत् पूर्वचिन्तित देव उच्चारयति यावत् यत्रैवाऽशोक

सोमिल मौन रहता है । अनन्तर उस सोमिलने उस देवतासे दुवारा तिवारा कहे जानेपर इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय ! मेरी प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या क्यों है ?

सोमिलके इस प्रकार पूछनेपर उस देवताने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—

सोमिलके इस प्रकार पूछनेपर उस देवताने इस प्रकार कहना आरम्भ किया—

हे देवानुप्रिय ! तुम मुमुक्षु जनोंसे सेव्य पार्श्व अर्हतके समीप पाँच अनुव्रत इस प्रकार शिक्षाव्रत, इस प्रकार बारह व्रतरूप श्रावक धर्मको स्वीकार किया । उसके बाद असाधुओंके दर्शनसे तुमने इस धर्मका परित्याग कर दिया । अनन्तर एक समय मध्य रात्रिमे कुटुम्ब जागरणा करते हुए तुम्हारे मनमे विचार पैदा हुआ कि–'गङ्गाके किनारेमे तपस्या करनेवाले विविध प्रकारके वानप्रस्थ तापस है, उन तापसोंमें जो दिशाप्रोक्षक तापस है उनके पास लोहेकी कडाहियाँ कलछु और ताम्बेका तापसपात्र बनवाकर उसे

देव બીજીવાર, ત્રીજીવાર પણ સોમિલને તેજ પ્રમાણે કહે છે સોમિલે તે દેવતાની વાણી સાંભળી આ પ્રકારે કહ્યુ —

હે દેવાનુપ્રિય ! મારી પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા કેમ છે?

સોમિલના આ પ્રકારે પૂછવાથી તે દેવના આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો —

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મુમુક્ષુજનોથી સેવાતા પાર્શ્વ અર્હતની પાસે પાચ અણુવ્રત, સાત શિક્ષા વ્રત એમ કુલ મળી બાર વ્રત રૂપ શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો ત્યાર પછી અસાધુઓના દર્શનથી તમે આ ધર્મનો પરિત્યાગ કર્યો પછી એક સમય મધ્યરાત્રિમા કુટુબ જાગરણ કરતા કરતા તમારા મનમા એવો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે ગગાને કાંઠે તપસ્યા કરવાવાળા જુદા જુદા પ્રકારના વાનપ્રસ્થ તાપસ છે તે તાપસોમા જે દિશાપ્રોક્ષક તાપસ છે તેની પાસે, લોઢાની કડાઈઓ કડછી તથા તાંબાના તાપસપાત્ર

मासिक्या सलेखनया आत्मान जोपयति, जोपयित्वा त्रिंशद् भक्तानि अनशनेन छिनत्ति, छित्त्वा तस्य स्थानस्यानालोचिताऽप्रतिक्रान्तो विराधितसम्यक्त्वः कालमासे काल कृत्वा शुक्रावतसके विमाने उपपातसभाया देवशयनीये यावताऽवगाहनया शुक्रमहाग्रहतया उपपन्न । तत खलु स शुक्रोमहाग्रह अधुनोपपन्न मन यावद् भापामन पर्याप्त्या० ।

एव खलु गौतम ! शुक्रेण महाग्रहेण सा दिव्या यावत् अभिसमन्वागता । एक पल्योपम स्थिति. । शुक्र. खलु भदन्त ! महाग्रहस्ततो देवलोकात् आयुःक्षयेण ३ कुत्र गमिष्यति, २ ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति ५ ! एव खलु जम्बू ! श्रमणेन० निक्षेपक ॥ ७ ॥

विचित्र तप उपधानोंसे अपनी आत्माको भावित करता हुआ बहुत वर्षों तक श्रमणोपासक (श्रावक) पर्यायका पालन करता है। अन्तमे अर्धमासिकी सलेखना द्वारा आत्माको भावित कर तथा तीस भक्त (आहार) को अनशनसे छेदित कर उस पूर्वकृत पापस्थानकी आलोचना और प्रतिक्रमण नही करता हुआ सम्यक्त्वकी विराधनासे काल मासमे कालकर शुक्रावतसक विमानमे उपपात सभाके अन्दर देवशयनीय शय्यामे जिस प्रमाणकी अवगाहनासे ज्योतिप देवोकी उत्पत्ति होती है, उस प्रमाणवाली अवगाहना अर्थात् जघन्य-अङ्गुलके असख्यातवें भाग और उत्कृष्ट-सात हाथ परिमाणवाली अवगाहनासे शुक्र महाग्रहपने उत्पन्न हुआ। उसके बाद वह शुक्र महाग्रह उत्पन्न होकर भापापर्याप्ति मन पर्याप्ति आदि पॉचो प्रकारकी पर्याप्तिसे पर्याप्तिभावको प्राप्त हुआ।

તથા માસક્ષમણરૂપ વિચિત્રતપ ઉપધાનોથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા ઘણા વર્ષો સુધી શ્રમણોપાસક (શ્રાવક) પર્યાયનુ પાલન કરે છે અ તમા અર્ધ માસિકી સલેખના દ્વારા આત્માને ભાવિત કરી તથા ત્રીસ ભકત (આહાર) નૂ અનશનથી છેદિત કરી તે પૂર્વકૃત પાપસ્થાનની આલોચના અને પ્રતિક્રમણ નહી કરતા સમ્યક્ત્વને વિરાધિત કરી કાલમાસમા કાલ કરીને શુક્રાવતસક વિમાનમા ઉપપાત સભાની અદર દેવશયનીય શય્યામા જે પ્રમાણની અવગાહનાથી જ્યોતિષ દેવોની ઉત્પત્તિ થાય છે તે પ્રમાણવાલી અવગાહના અર્થાત્-જઘન્ય-અ ગુલના અસખ્યાતમા ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ સાત હાથ પરિમાણવાળી અવગાહનાથી શુક્રમહાગ્રહપણામા ઉત્પન્ન થયા. પછી તે શુક્રમહાગ્રહ ઉત્પન્ન થઇ ભાષાપર્યાપ્તિ મન પર્યાપ્તિ આદિ પાચે પ્રકારની પર્યાપ્તિથી પર્યાપ્તિ ભાવને પ્રાપ્ત થયા

ततः खलु स सोमिलस्तं देवमेवमवादीत्–कथं खलु देवानुप्रिय ! मम सुप्रव्रजितम्? । ततः खलु स देवः सोमिलमेवमवादीत्–यदि खलु त्वं देवानुप्रिय ! इदानीं पूर्वप्रतिपन्नानि पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि स्वयमेव उपसंपद्य खलु विहरसि तर्हि खलु तवेदानीं सुप्रव्रजितं भवेत् । ततः खलु स देवः सोमिलं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा यस्या दिशः प्रादुर्भूतः यावत् प्रतिगतः ।

ततः खलु सोमिलो ब्राह्मण ऋषिस्तेन देवेन एवमुक्तः सन् पूर्वप्रतिपन्नानि पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि स्वयमेव उपसंपद्य खलु विहरति । ततः खलु स सोमिलो बहुभिश्चतुर्थषष्ठाष्टमयावन्मासार्द्धमासक्षपणैर्विचित्रैस्तपउपधानैरात्मनं भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रमणोपासकपर्यायं पालयति, पालयित्वा अर्ध

उसके बाद सोमिलने कहा–हे देवानुप्रिय ! अब आप ही बताओ कि मैं कैसे सुप्रव्रजित बनूं । उसके बाद उस देवने सोमिल ब्राह्मणसे इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय ! यदि तुम पहले ग्रहण किया हुआ पाँच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रतको स्वयमेव स्वीकार कर विचरण करो तो यह तुम्हारी प्रव्रज्या सुप्रव्रज्या हो जाय । उसके बाद उस देव सोमिल ब्राह्मणको वन्दन और नमस्कार कर जिस दिशासे प्रादुर्भूत हुआ उसी दिशामें अन्तर्हित हो गया ।

उस देवके अन्तर्हित होजानेपर उसके कथनानुसार वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि प्रथम स्वीकृत पाँच अनुव्रत और सात शिक्षाव्रत अपने हीसे स्वीकार कर विचरण करता है । उसके बाद वह सोमिल बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम यावत् मासार्ध मासक्षपणरूप

ત્યાર બાદ સોમિલે કહ્યું —હે દેવાનુપ્રિય ! તો હવે આપજ બતાવો કે હું કેવી રીતે સુપ્રવ્રજિત બનું ? ત્યાર પછી તે દેવતાએ સોમિલ બ્રાહ્મણને આ પ્રકારે કહ્યું —હે દેવાનુપ્રિય જો તમે હમણા અગાઉ ગ્રહણ કરેલા પાંચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષાવ્રતને પોતાની મેળે સ્વીકાર કરીને વિચરણ કરો તો આ તમારી પ્રવ્રજ્યા સુપ્રવ્રજ્યા થઈ જાય ત્યાર પછી તે દેવ સોમિલ બ્રાહ્મણને વંદન અને નમસ્કાર કરે છે પછી જે દિશામાંથી તે પ્રાદુર્ભૂત થયો હતા તેજ દિશામાં અંતર્હિત થઇ ગયો.

તે દેવ અંતર્હિત થઈ ગયા પછી તેના કથન અનુસાર તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિએ અગાઉ સ્વીકારેલા પંચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષાવ્રત પોતાની જાતે સ્વીકારી વિચરણ કરે છે પછી તે સોમિલ ઘણા ચતુર્થ ષષ્ઠ અષ્ટમથી માંડી યાવત્ માસાર્ધ

॥ अथ वहुपुत्रिकाख्यं चतुर्थमध्ययनम् ॥

मूलम्—जइणं भंते ! उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसढे, परिसा निग्गया। तेणं कालेणं २ वहुपुत्तिया देवी सोहम्मे कप्पे वहुपुत्तिए विमाणे सभाए सुहम्माए वहुपुत्तियंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं जहा सूरियाभे जाव भुंजमाणी विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, पासित्ता समणं भगवं महावीरं जहा सूरियाभो जाव णमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा सन्निसन्ना । आभियोगा जहा सूरियाभस्स, सूसरा घंटा, आभिओगियं देवं सद्दावेइ जाणविमाणं जोयणसहस्सवित्थिण्णं, जाणविमाणवण्णओ, जाव उत्तरिल्लेणं निज्जाणमग्गेणं जोयणसाहस्सिएहिं विग्गहेहिं आगया जहा सूरियाभे । धम्मकहा समत्ता । तएणं सा वहुपुत्तिया देवी दाहिणं भुयं पसारेइ देवकुमाराणं अट्ठसयं, देवकुमारियाण य वामाओ भुयाओ अट्ठसयं, तयाणंतरं च णं वहवे दारगा दारियाओ य डिंभए य डिंभियाओ य विउव्वइ, नट्टविहिं जहा सूरियाभो उवदंसित्ता पडिगया भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, कूडागारसाला० । वहुपुत्तियाए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी पुच्छा जाव अभिसमण्णागया ॥ १ ॥

टीका-'तएण तस्स' इत्यादि । असाधुदर्शनेन=साधुदर्शनाभावात् साधु दर्शनाच्च विराधितसम्यक्त्व सोमिलस्तस्य स्थानस्याऽनालोचिताऽप्रतिक्रान्ततया शुक्रावतसके विमाने देवशयनीये यावत्याऽवगाहनया-यावत्या=यत्परिमितत याऽवगाहनया ज्योतिर्देवस्योपपातो भवति तावत्या जघन्यतोऽङ्गुलासङ्ख्येय भागया उत्कृष्टत सप्तहस्तपरिमाणया अवगाहनया शुक्रमहाग्रहतया समुत्पन्न । शेष स्पष्टम् ॥ ७ ॥

॥ इति पुष्पिताया तृतीयमध्ययन समाप्तम् ॥ ३ ॥

हे गौतम ! शुक्र महाग्रहने इस कारण ऐसी दिव्य देव ऋद्धिको प्राप्त की है । शुक्र महाग्रहकी स्थिति एक पल्योपमकी है ।

गौतम स्वामी पूछते हैं—

—हे भदन्त ! वह शुक्र महाग्रह आयु भव स्थिति क्षय होनेके बाद उस देवलोकसे च्यवकर कहा जायगा ?

हे गौतम ! यह शुक्र महाग्रह महाविदेहक्षत्रमें जन्म लेकर यावत् सिद्ध होगा ।

सुधर्मा स्वामी कहते हे—

इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर प्रभुने पुष्पिताके तृतीय अध्ययनमे इस भावका निरूपण किया है ॥ ७ ॥

। पुष्पिताका तृतीय अध्ययन समाप्त हुआ ।

હે ગૌતમ ! શુક્રમહાગ્રહે આ કારણથી પોતાની આવી દેવ ઋદ્ધિઓ પ્રાપ્ત કરી છે. શુક્રમહાગ્રહની સ્થિતિ એક પલ્યોપમની છે

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે:—

'હે ભદન્ત ! તે શુક્રમહાગ્રહ આયુભવ સ્થિતિક્ષય થતા તે દેવલોકથી ચ્યવીને ક્યા જશે ?

હે ગૌતમ ! આ શુક્રમહાગ્રહ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ લઈ સિદ્ધ થશે

સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

આ પ્રકાર હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ પુષ્પિતાના ત્રીજા અધ્યયનમા આ ભાવનું નિરૂપણ કર્યું છે (૭)

પુષ્પિતાનું તૃતીય અધ્યયન સમાપ્ત

भुञ्जाना विहरति, इमं च खलु केवलकल्पं जम्बूद्वीपं द्वीपं विपुलेन अवधिना आभोगयन्ती २ पश्यति, दृष्ट्वा श्रमणं भगवन्तं महावीरं यथा सूर्याभो यावद् नमस्यित्वा सिंहासनवरे पौरस्त्याऽभिमुखी सन्निषण्णा। आभियोगा यथा सूर्याभस्य सुस्वरा घण्टा आभियोगिकं देवं शब्दयति यानविमानं योजनसहस्रविस्तीर्णं, यानविमानवर्णकः, यावत् उत्तरीयेण निर्याणमार्गेण योजनसाहस्रिकैः विग्रहैः आगता यथा सूर्याभः। धर्मकथा समाप्ता। ततः खलु सा बहुपुत्रिकादेवी

वचन उल्लङ्घित नहीं किया जा सकता ऐसी, प्रधानतम चार दिशा कुमारिकाओंसे परिवृत सूर्याभदेवके समान गीतवादित्रादि नानाविध दिव्य भोगोंको भोगती हुई विचर रही है, और वह इस सम्पूर्ण जम्बूद्वीपको विशाल अवधिज्ञानसे उपयोगपूर्वक देखती हुई राजगृहमें समवसृत भगवान महावीर स्वामीको देखती है। और उनको देखकर सूर्याभदेवके समान यावत् नमस्कार करके अपने श्रेष्ठ सिंहासनपर पूर्व दिशाकी ओर मुख करके बैठी। सूर्याभदेवके समान आभियोगिक (भृत्य) देवको बुलवाकर उसने सुस्वरा घण्टा बजानेकी आज्ञा दी। अनन्तर सुस्वरा घण्टा बजवाकर भगवान महावीरके दर्शन करनेको जानेके लिए सभी देवताओंको सूचित किया। उसका यान-विमान हजार योजन विस्तीर्ण था साढे बासठ योजन ऊँचा था। उसमें लगा हुआ महेन्द्रध्वज पचीस योजन ऊँचा था। अन्तमें वह बहुपुत्रिका देवी यावत् उत्तर दिशाके मार्गसे सूर्याभ देवके समान हजार योजनका वैक्रयिक शरीर बनाकर उतरी। बादमें भगवानके

ચારે દિશા કુમારીઓ સહિત સૂર્યાભદેવ સમાન ગીત વાદિત્ર આદિ નાના વિધ દિવ્ય ભોગોને ભોગવતી વિચરણ કરતી હતી અને તે આ સંપૂર્ણ જમ્બૂદ્વીપને વિશાલ અવધિજ્ઞાન વડે ઉપયોગપૂર્વક જોતી જોતી રાજગૃહમાં પધારેલ ભગવાન મહાવીર સ્વામીને જુએ છે, તેમને જોઈને સૂર્યાભદેવની પેઠે યાવત્ નમસ્કાર કરીને પોતાના શ્રેષ્ઠ સિંહાસન ઉપર પૂર્વ દિશાની તરફ મોઢું રાખીને બેઠી સૂર્યાભદેવની પેઠે જ આભિયોગિક (ભૃત્ય) દેવને બોલાવીને તેણે સુસ્વરા ઘંટા વગાડવાની આજ્ઞા આપી પછી સુસ્વરા ઘંટા વગાડીને ભગવાન મહાવીરના દર્શન કરવાને જવા માટે સર્વે દેવતાઓને સૂચના આપી તેનું યાન વિમાન હજાર યોજનના વિસ્તારવાળું હતુ સાડા બાસઠ યોજન ઊંચું હતુ તેમા ચડાવેલો મહેન્દ્રધ્વજ પચીસ યોજન ઊંચો હતો છવટે તે બહુપુત્રિકા દેવી યાવત્ ઉત્તર દિશાના માર્ગથી સૂર્યાભદેવની પેઠે હજાર યોજનનું વૈક્રયિક શરીર બનાવીને ઉતરી પછી ભગવાનની પાસે આવી અને ધર્મકથા સાભળી

छाया-यदि खलु भदन्त ! उत्क्षेपकः। एवं खलु जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन समये राजगृह नाम नगर, गुणशिलक चैत्य, श्रेणिको राजा, स्वामी समवसृतः। परिषत् निर्गता। तस्मिन काले तस्मिन समये बहुपुत्रिका देवी सौधर्मे कल्पे बहुपुत्रिके विमाने सभाया सुधर्माया बहुपुत्रिके सिंहासने चतसृभि' सामानिकसाहस्रीभि चतसृभि महत्तरिकाभि यथा सूर्याभो यावद्

चौथा अध्ययन

'जइण भते' इत्यादि—

जम्बूस्वामी पूछते है—

हे भदन्त ! यदि पुष्पिता (पुष्फिया) के तृतीय अध्ययनमे भगवानने पूर्वोक्त भावका वर्णन किया है तो फिर उसके बाद चतुर्थ अध्ययनके भावको उन्होने किस प्रकार निरूपण किया है।

सुधर्मा स्वामी कहते है—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमा राजगृह नामक नगर था उस नगरका राजा श्रेणिक था। उस नगरमे महावीर स्वामी पधारे। परिषद् उनके दर्शनके लिये निकली। उस काल उस समयमे बहुपुत्रिका देवी सौधर्मकल्पके बहुपुत्रिक विमानमे सुधर्मा सभाके अन्दर बहुपुत्रिक सिंहासन पर चार हजार सामानिक देवियों तथा चार महत्तरिकाओं=तुल्य विभववाली कुमारियोंसे, जिनका

ચોથુ અધ્યયન

जइण भते ઇત્યાદિ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે—

હે ભદન્ત ! જો પુષ્પિતના તૃતીય અધ્યયનમા ભગવાને પૂર્વોક્ત ભાવનુ વર્ણન કર્યું છે તો પછી તેના પછી ચોથા અધ્યયનના ભાવને તેમણે કયા પ્રકારે નિરૂપણ કર્યો છે ?

-સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ ! તે કાલે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તે નગરમા ગુણશિલક ચૈત્ય, અને તે નગરમા મહાવીર સ્વામી પધાર્યા પરિષદ્લોકોના દર્શન માટે નીકળી તે કાલ તે સમયે બહુપુત્રિકાદેવી સૌધર્મ કલ્પના બહુપુત્રિક વિમાનમા સુધર્માસભાની અદર બહુ પુત્રિક સિંહાસન પર ચાર હજાર સામાનિક દેવીઓ તથા ચાર મહત્તરિકાઓ =સમાન વૈભવવાળી કુમારિઓથી, જેનુ વચન ઉલ્લઘન ન કરી શકાય એવી પ્રધાનતમ,

टीका–'जण्ण भंते' इत्यादि–महत्तरिकाभिः=प्रधानतमाभिः तुल्यविभवाभिः कुमारिकाणामनतिक्रमणीयवचनाभिः दिशाकुमारिकाभिः, उत्तरीयेण=उत्तरदिग्भवेन, विग्रहे=शरीरे, देवकुमाराणाम्=देवानां=सुराणां कुमाराः=बहु र कालिका पुत्रा तेषाम्। दारकान्=बहुकालिकान् बालकान्, दारिका=बालिका, पुत्रा तेषाम्। दारकान्=बहुकालिकान् बालकान्, दारिका=बालिका, डिम्भान्=अल्पकालिकान् बालकान्, शेषं निगदसिद्धम् ॥

एतया 'किच्चा देविड्ढी पुच्छे' त्ति, 'किण्णा लद्धा'=केन हेतुनोपार्जिता? 'किण्णा पत्ता'=केन हेतुना प्राप्ता=स्वायत्तीकृता? 'किण्णा अभिसमन्नागया'=स्वायत्तीकृताऽपि केन हेतुनाऽऽभिमुख्येन साकल्येन च उपार्जनस्य पश्चाद् भोग्यतामुपगतेति? ॥ १ ॥

गौतम स्वामीने पूछा –

हे भगवन्! वह विशाल देवऋद्धि उसमें कैसे विलीन हो गयी?

भगवानने कहा––

हे गौतम! जिस प्रकार किसी उत्सव आदिके कारण फैला हुआ जन समूह वर्षा आदिके कारण पर्वत शिखरके समान ऊँचा और विशाल घरमें समा जाता है, उसी प्रकार ये देवकुमार और देवकुमारियां आदि देवऋद्धि बहुपुत्रिकाके शरीरमें अन्तर्हित हो गयी।

गौतमने फिर पूछा––

हे भदन्त! इस बहुपुत्रिकादेवीको इस प्रकारकी दिव्य देव ऋद्धि किस प्रकार मिली? और किस प्रकार उसको प्राप्त हुई? और किस पुण्यसे उपभोगमें आई है? और उन ऋद्धियोंके भोगनेमें कैसे समर्थ हुई? ॥ १ ॥

ગૌતમે પૂછ્યું —

હે ભગવન્! તે વિશાળ દેવઋદ્ધિ તેમાં કેવી રીતે વિલીન થઈ ગઈ?

ત્યારે ભગવાન કહે છે —

હે ગૌતમ! જેવી રીતે ઉત્સવ પ્રસંગે એકઠો થયેલો જનસમૂહ વરસાદ વગેરેના કારણથી પર્વત શિખરના જેવડા ઊંચા અને વિશાળ ઘરમાં સમાઈ જાય છે તેજ પ્રકારે આ દેવકુમાર અને દેવકુમારીઓ વગેરે દેવઋદ્ધિ બહુપુત્રિકાના શરીરમાં અન્તર્હિત થઈ ગઈ.

ગૌતમે વળી પૂછ્યું —હે ભદન્ત! આ બહુપુત્રિકા દેવીને આ પ્રકારની દિવ્ય દેવઋદ્ધિ કેવી રીતે મળી? અને કેવી રીતે પ્રાપ્ત થઈ અને કેવા પુણ્યથી તેના ઉપભોગમાં આવી તેમ વળી તે ઋદ્ધિઓને ભોગવવામાં કેવી રીતે સમર્થ થઈ? (૧)

दक्षिण भुजं प्रसारयति देवकुमाराणामष्टशतम्, देवकुमारिकाणां च वामतो भुजतोऽष्टशतम्, तदनन्तरं च खलु बहून् दारकांश्च दारिकाश्च डिम्भकांश्च डिम्भिकाश्च विकुरुते, नाट्यविधिं यथा सूर्याभः, उपदर्श्य प्रतिगता । भदन्त ! इति भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, कूटागारशाला० । बहुपुत्रिकया खलु भदन्त ! देव्या सा दिव्या देवर्द्धिः, पृच्छा यावत् अभिसमन्वागता ॥ १ ॥

समीप आई, और धर्मकथा सुनी। उसके बाद वह बहुपुत्रिका देवी अपनी दाहिनी भुजाको फैलाती है। और उससे एक सौ आठ देव कुमारोंको निकालती है। फिर बायी भुजाको फैलाती है, उससे एकसौ आठ देवकुमारियोंको निकालती है। उसके बाद बहुतसे दारक दारिका=बडी उमरवाले बचेबच्चियोंको तथा डिम्भक डिम्भिका=अल्प उमरवाले बचेबच्चियोंको अपनी वैक्रयिक शक्तिसे बनाती है। और सूर्याभदेवके समान नाट्यविधि दिखाकर चली जाती है। उसके जानेके बाद भगवान् गौतमने 'हे भदन्त' इस प्रकार सम्बोधन कर भगवान् महावीरको वन्दन और नमस्कार किया और पूछा की-हे भगवन्! इस बहुपुत्रिका देवी की दिव्य ऋद्धि दिव्य द्युति और दिव्य देवानुभाव कहाँ गया और किसमे समा गया!

भगवानने कहा-

हे गौतम! वह देवऋद्धि उसीके शरीरसे निकली और उसीमे विलीन हो गयी।

ત્યાર પછી તે બહુપુત્રિકા દેવી પોતાની જમણી ભુજા (હાથ)-ને ફેલાવે છે અને તેમાથી એકસો આઠ દેવકુમારોને કાઢે છે પછી ડાબી ભુજાને ફેલાવે છે તેમાથી એકસો આઠ દેવકુમારિઓને કાઢે છે પણ ઘણા દારક અને દારિકાઓ (મોટી ઉમરવાળા છોકરા છોકરીઓ) તથા ડિમ્ભક ડિમ્ભિકા (નાના બાળકો અને બાળિકાઓ) ને પોતાની વૈક્રિયિક શક્તિથી બનાવે છે અને સૂર્યાભદેવની પેઠે નાટ્યવિધિ બતાવીને ચાલી જાય છે તેના ગયા પછી ભગવાન ગૌતમે 'ભદન્ત' એવુ સબોધન કરી ભગવાન મહાવીરને વદન તથા નમસ્કાર કર્યા અને પૂછ્યુ કે હે ભગવન્! આ બહુપુત્રિકાદેવીની દિવ્ય ઋદ્ધિ અને દિવ્ય ધુતિ તથા દિવ્ય દેવાનુભાવ કયા ગયા અને શમા સમાઇ ગયા?

ભગવાને કહ્યુ—

હે ગૌતમ! ત દેવઋદ્ધિ તેના શરીરમાથી નીકળી અને તેમાજ વિલીન થઇ ગઇ.

बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ गामाणुगामं दूइज्जमाणीओ जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति ।

तएणं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए वाणारसीनयरीए उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे भद्दस्स सत्थवाहस्स गिहं अणुपविट्ठे ।

तएणं सुभद्दा सत्थवाही ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठ जाव खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ ! भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं दारियं वा पयामि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जाव एत्तो एगमवि न पत्ता, तं तुब्भे अज्जाओ ! बहुणायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागरनगर० जाव सण्णिवेसाइं आहिंडह, बहूणं राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईणं गिहाइं अणुपविसह, अत्थि से केइ कहि चि विज्जापओए वा मंतप्पओए वा वमणं वा विरेयणं वा वत्थिकम्मं वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धे, जेणं अहं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जा ॥ ३ ॥

एवं पृष्टे सति भगवानाह–'एवं खलु' इत्यादि ।

मूलम्–एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ वाणारसी नामं नयरी, अंबसालवणे चेइए । तत्थ णं वाणारसीए नयरीए भद्दे नामं सत्थवाहे होत्था, अड्ढे अपरिभूए । तस्स णं भद्दस्स य सुभद्दा नामं भारिया सुकुमाल० वंझा अवियाउरी जाणु कोप्परमाता यावि होत्था । तए णं तीसे सुभद्दाए सत्थवाहीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जाव सुलद्धे णं तासिं अम्मगाणं मणुयजम्मजीवियफले, जासिं मन्ने नियकुच्छिसंभूयगाइं थणदुद्धलुद्धगाइं महुरसमुल्लावगाणि मंजुल (मम्मण) प्पजंपियाणि थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणगाणि पण्हयंति, पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगनिवेसियाणि देंति, समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मम्मण (मंजुल) प्पभणिए अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगमवि न पत्ता ओहय० जाव झियाइ ।

तेणं कालेणं २ सुव्वयाओ णं अज्जाओ इरियासमियाओ भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियाओ उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणासमियाओ मणगुत्तीओ वयगुत्तीओ कायगुत्तीओ गुत्तिंदियाओ गुत्तबंभयारिणीओ

बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ गामाणुगामं दूइज्जमाणीओ जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ताणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति ।

तएणं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए वाणारसीनयरीए उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे भद्दस्स सत्थवाहस्स गिहं अणुपविट्ठे ।

तएणं सुभद्दा सत्थवाही ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठ जाव खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाण.खाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता एवं वयासी–एवं खलु अहं अज्जाओ ! भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं दारियं वा पयामि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जाव एत्तो एगमवि न पत्ता, तं तुब्भे अज्जाओ ! बहुणायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागरनगर० जाव सण्णिवेसाइं आहिंडह, बहूणं राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईणं गिहाइं अणुपविसह, अत्थि से केइ कहिं चि विज्जापओए वा मंतप्पओए वा वमणं वा विरेयणं वा वत्थिकम्मं वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धे, जेणं अहं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जा ॥ ३ ॥

छाया–एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये वाराणसी नाम नगरी आम्रशालवनं चैत्यम् । तत्र खलु वाराणस्यां नगर्यां भद्रो नाम सार्थवाहोऽभवत्, आढ्योऽपरिभूतः । तस्य खलु भद्रस्य च सुभद्रा नाम भार्या सुकुमारपाणिपादा वन्ध्या अविजनयित्री जानुकूर्परमाता चापि अभवत् । ततः खलु तस्याः सुभद्रायाः सार्थवाहिकाया अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकाले कुटुम्बजागरिका जाग्रत्या अयमेतद्रूपो यावत् सङ्कल्पः समुदपद्यत–एवं खलु अहं भद्रेण सार्थवाहेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरामि, नो चैव खलु अहं दारकं वा दारिकां वा प्रजनयामि, तद् धन्याः खलु ता अम्बिकाः (मातरः) यावत् सुलब्धं खलु तासाम् अम्बिकानां (मातॄणां) मनुजजन्मजीवित फलं याभिः मन्ये निजकुक्षिसम्भूतकाः स्तनदुग्धलुब्धकाः मधुरसमुल्लापकाः मञ्जुल (मम्मण) प्रजल्पिताः स्तनमूलकक्षदेशभागम् अभिसरन्तः प्रस्नुवन्ति । पुनश्च कोमलकमलोपमाभ्यां हस्ताभ्यां गृहीत्वा उत्सङ्गनिवेशिताः (सन्तः) ददति समुल्लापकान् सुमधुरान् पुनः पुनर्मम्मण (मञ्जुल) प्रभणितान्, अहं खलु अधन्या अपुण्या अकृतपुण्या (अस्मि यदहं) एतेषां (एतेषां मध्यात्) एकमपि न प्राप्ता । (एवं) अपहतमनःसङ्कल्पा यावत् ध्यायति ।

तस्मिन् काले च सुव्रताः खलु आर्याः ईर्यासमिताः, भाषासमिताः, एषणासमिताः, आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमिताः, उच्चारप्रस्रवणश्लेष्ममलसिंघाणपरिष्ठापनासमिताः, मनोगुप्तिकाः, वचोगुप्तिकाः कायगुप्तिकाः, गुप्तेन्द्रियाः, गुप्तब्रह्मचारिण्यः, बहुश्रुताः, बहुपरिवाराः पूर्वानुपूर्वं चरन्त्यः ग्रामानुग्रामं द्रवन्त्यः यत्रैव वाराणसी नगरी तत्रैवोपागताः, उपागत्य यथाप्रतिरूपम् अवग्रहम् अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्त्यो विहरन्ति ॥

ततः खलु तासां सुव्रतानामार्याणाम् एकः सङ्घाटको वाराणसीनगर्यां उच्चनीचमध्यमानि कुलानि गृहसमुदानस्य भिक्षाचर्यायै अटन् भद्रस्य सार्थवाहस्य गृहमनुप्रविष्टः ।

ततः खलु सुभद्रा सार्थवाहिका ता आर्या एजमाना पश्यति, दृष्ट्वा हृष्ट यावत् क्षिप्रमेव आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय सप्ताष्टपदानि अनुगच्छति, अनुगत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन प्रतिलम्भ्य एवमवादीत्–एवं खलु आर्याः ! भद्रेण सार्थवाहेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरामि नो चैव खलु अहं दारकं दारिकां वा प्रजनयामि, तद् धन्याः खलु ता अम्बिकाः (मातरः)

यावत्–एततः एकमपि न प्राप्ता, तद् यूयम् आर्याः ! बहुज्ञात्र्यः बहुपठिताः बहून् ग्रामाऽऽकरनगर० यावत् सन्निवेशान् आहिण्डध्वे बहूनां राजेश्वरतल वर० यावत् सार्थवाहप्रभृतीनां गृहान् अनुप्रविशथ, अस्ति स कश्चित् क्वचित् विद्याप्रयोगो वा मन्त्रप्रयोगो वा वमनं वा विरेचनं वा वस्तिकर्म वा औषधं वा भैषज्यं वा उपलब्धं येनाहं दारकं वा दारिकां वा प्रजनयामि ॥ २॥

टीका–'एवं खलु गोयमा' इत्यादि–हे गौतम ! एवं खलु तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'वाराणसी' नाम नगरी 'आम्रशालवनं' चैत्यं चासीत् तत्र=वाराणस्यां नगर्यां खलु भद्रो नाम सार्थवाहोऽभूत् आढ्यः अपरिभूतः, एतद्व्याख्या प्रागेवोक्ता। तस्य खलु भद्रस्य च सुभद्रा नाम भार्या सुकुमारपाणिपादा० वन्ध्या अविजनयित्री=पुत्रादिकानामप्रसवशीला, अत एव 'जानु-कूर्परमाता'–जानुकूर्पराणामेव माता=जननी या सा तथा, यद्वा–जानुकूर्पराण्येव नत्वपत्य मिमते=स्पृशन्ति तस्याः स्तनौ इति अथवा–जानुकूर्परमात्रेतिच्छाया–

ऐसे पूछनेपर भगवान कहते हैं—

'एवं खलु' इत्यादि—

हे गौतम ! उस काल उस समयमें वाराणसी नामकी नगरी थी। उस वाराणसी नामकी नगरीमें आम्रशालवन नामक उद्यान था। उस नगरीमें भद्र नामका सार्थवाह रहता था जो धनधान्यादिसे समृद्ध और दूसरोंसे अपरिभूत था। उस भद्र सार्थवाहकी पत्नीका नाम सुभद्रा था, जो सुकुमार हाथ पैरवाली थी। परन्तु वह वन्ध्या थी। अतएव उसने एक भी सन्तानको जन्म नहीं दिया था। केवल जानु और कूर्परकी माता थी। यहाँ "जानुकूर्परमाता" का यह भी अर्थ होता है=जिसके स्तनोंको केवल घुटने और कोहनियाँ स्पर्श

ગૌતમ સ્વામીએ આવા પ્રશ્નો પૂછવાથી ભગવાન કહ્યું —

'एवं खलु' ઇત્યાદિ

હે ગૌતમ ! તે કાલ તે સમયે વારાણસી નામે નગરી હતી તે વારાણસી નગરીમા આમ્રશાલવન નામનો ઉદ્યાન (બાગ) હતો તે નગરીમા ભદ્ર નામનો સાર્થવાહ રહેતો હતો કે જે ધનધાન્યાદિથી સમૃદ્ધ અને બીજાઓથી અપરિભૂત (અજીત) હતો તે ભદ્ર સાર્થવાહની સ્રીનુ નામ સુભદ્રા હતુ જે સુકુમાર હાથપગવાળી હતી પરન્તુ તે વાઝણી હતી એટલે તેણે એક પણ સંતાનને જન્મ આપ્યો નહોતો કેવળ જાનુ અને કૂર્પરની માતા હતી અહીં "જાનુકૂર્પરમાતા" નો એવો અર્થ થાય છે કે જેના સ્તનોને કેવળ

जानुकूर्पराण्येव मात्रा=परिकरः=क्रोडनिवेशनीय. परकीय=पुत्रादिसहायतासमर्थ रूपो यस्याः न तु स्वपुत्रलक्षण उत्सङ्गनिवेशनीय. परिकरः, इति जानुकूर्पर मात्रा च अपि अभवत्। ततः=तदनन्तर-तस्याः=पूर्वोक्तायाः खलु सुभद्रायाः सार्थवाहिकायाः अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकाले रात्रिपूर्वपरभागसमये कुटुम्बजागरिका जाग्रत्या=कुटुम्बार्थं जागरणा कुर्वत्या' अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमा णलक्षणः-' यावत् 'शब्देन आध्यात्मिकः, चिन्तित, प्रार्थितः, मनोगत' सङ्कल्प समुदपद्यत=जात, आध्यात्मिकादिसङ्कल्पान्ताना पदाना व्याख्या प्रागेव कृता। सुभद्रायाः सङ्कल्पस्वरूपमाह-' एव खल्वि ' त्यादिना-अह=सुभद्रा सार्थवाहिका भद्रेण=तन्नामकेन सार्थवाहेन स्वपतिना सार्द्धं=सह विपुलान्=बहुन् भोगभोगान्= शब्दादीन् विषयान् भुञ्जाना विहरामि, किन्तु नो चैव खलु अह दारक=पुत्र दारिका=कन्या वा प्रजनयामि=प्रसूये, तत्=तस्मात् हेतोः खलु ता अम्बिका= मातरो धन्या' धन=प्रशमारूपमर्हन्तीति धन्या'=कृतार्था., यावच्छब्देन-पुण्या,

करती थी, नकि सन्तान। अथवा यहाँ "जानुकूर्परमात्रा' यह भी छाया होती है। इसका अर्थ होता-है-जिसके जानु और कूर्पर अर्थात् गोदी और हाथ दूसरोंके पुत्रोंके लाड प्यारमे ही समर्थ थे, नकि अपने पुत्रोंके लाड प्यारमे। क्योकि उसको अपनी कोई सन्तान, नहीं थी।

उसके बाद एक समय पिछली रातमे कुटुम्बजागरणा करती हुई उस सुभद्रा सार्थवाहीके हृदयमे यह इस प्रकारका आध्यात्मिक, चिन्तन प्रार्थित और मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ कि-मै भद्रसार्थवाहके साथ अनेक प्रकारके शब्दादि विपुल भोगोको भोगती हुई विचरण कर रही हूँ। पर आजतक मेरे एक भी सन्तान नही हुई। वे माताएं

ગોઠણ અને કાણીઓ જ ... કરતી હતી નહિ કે સન્તાન અથવા અહીં 'જાનુકૂર્પર માત્રા' એવી પણ છાયા થાય છે-એનો અર્થ એવો થાય છે કે જેના જાનુ અને કૂર્પર એટલે ખોળો અને હાથ બીજાના પુત્રોને લાડપ્યારમાજ સમર્થ હતા, નહિ કે પોતાના પુત્રોને લાડ પ્યારમા કારણ કે તેને પોતાનુ સતાન નહોતુ

ત્યાર પછી એક વખત પાછલી રાત્રિમા કુટુબજાગરણ કરતા તે સુભદ્રા સાર્થવાહીના હૃદયમા આ એક એવા પ્રકારનો આધ્યાત્મિક, ચિંતિત, પ્રાર્થિત, અને મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે હુ ભદ્ર સાર્થવાહની સાથે અનેક પ્રકારના શબ્દ આદિ વિપુલ ભોગોને ભોગવતી વિચરૂ છુ. પણ આજસુધી મને એકપણ સતાન થયું નથી તે

कृतपुण्याः, कृतलक्षणाः,' इत्येषां सङ्ग्रहो विज्ञेयः, तत्र 'पुण्याः=पवित्राः' कृतपुण्याः=विहितसुकृताः, कृतलक्षणाः=सफलीकृतलक्षणाः, पुनस्तासाम् अम्बिकानाम्=मातृणां मनुजजन्म, जीवितफलम्=जीवनफलम् च सुलब्धम्=सम्यक्प्राप्तम् सफलमिति यावत् मन्ये=स्वीकुर्वे, यासां मातृणां निजकुक्षिसम्भूतानि=स्वकीयोदरजातानि शिशवः, अत्र सूत्रे नपुंसकत्वं प्राकृतत्वात्। स्तनदुग्धलुब्धकाः=स्तनयोर्दुग्धं तस्मिन् लुब्धाः=प्रसक्ताः, त एव लुब्धकाः, मधुरसमुल्लापकाः मधुराः= श्रवणरमणीयाः, समुल्लापाः=सम्यगुच्चैः शब्दाः येषां ते तथा, मञ्जुल (मम्मण) प्रजल्पिताः= मञ्जुल=रुचिर हृदयस्पृहणीयमिति यावत्, प्रजल्पित (मा-मा प्रभृति) शब्दोच्चारणं येषां ते तथा, स्तनमूलकक्षदेशभागम्=स्तनयोर्मूलम् स्तनमूलम् तस्मात् कक्षावेव देशौ 'बाहुमूले उभे कक्षा' इत्यमरात्, बाहुमूलप्रदेशौ तयोर्भागः=प्रान्तस्तम् अभिसरन्तः सम्मुखाभिसरणं कुर्वाणः प्रस्नुवन्ति=मातृस्तन्यं प्रधारयन्तीत्यन्तर्भावितण्यर्थः। तथा पुनश्च कोमलकमलोपमाभ्यां=कोम-

धन्य है, पुण्यशील है, उन्होंने पुण्योंका अर्जन किया है, उनका स्त्रीत्व सफल है और उन माताओंने अपने मनुष्य जन्म और जीवनका फल अच्छीतरह पाया है, जिन माताओंकी अपने उदरसे उत्पन्न, स्तनके दूधकी लोभी, कानोंको लुभानेवाली वाणीको उच्चारण करनेवाली माँ! माँ!! इस हृदयस्पर्शी शब्दको बोलनेवाली, तथा स्तनमूल और कक्षके बीच भागमें अभिसरण करनेवाली सन्तान उन माताओंके स्तनोंको दूधसे परिपूर्ण करती है अर्थात् सन्तानके वात्सल्यसे माताके स्तनोंमें दूधभर आता है। फिर वे सन्तान कोमल कमल सदृश हाथोंके द्वारा गोदमें बैठायी जानेपर उच्च स्वरसे उच्चारित कानोंको अच्छे लगनेवाले मधुर शब्दोंको सुनाकर माताओंको प्रसन्न करती है।

માતાને ધન્ય છે-તે પુણ્યશીલ છે-તેમણે પુણ્ય મેળવ્યું છે તેમનું સ્ત્રીપણું સફળ છે અને તે માતાઓએ, પોતાનો મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી રીતે મેળવ્યું છે કે જે માતાઓએ, પોતાના ઉદરથી ઉત્પન્ન, સ્તનના દૂધના લોભવાળા, કાનોને લલચાવનારી વાણી બોલતા મા મા એવા હૃદય સ્પર્શી શબ્દ બોલતા તથા સ્તનમૂલ અને કાખના વચલા ભાગમાં અભિસરણ કરવાવાળા સંતાન તે માતાઓના સ્તનને દૂધથી પરિપૂર્ણ કરે છે અર્થાત્ સંતાનના સ્નેહથી માતાના સ્તનોમાં દૂધ ભરાઇ જાય છે પછી તે સંતાન કોમળ કમળના જેવા હાથો વડે ખોળામાં બેસાડવામાં આવે ત્યારે ઉંચા સ્વરથી બોલીને કાનોને સારૂં લાગે એવા મધુર શબ્દોને સાંભળીને માતાઓને પ્રસન્ન કરે છે

लपङ्कजसदृशाभ्या हस्ताभ्या गृहीत्वा उत्सङ्गनिवेशिताः=उत्सङ्गः क्रोडः (अङ्क) तत्र निवेशिताः=स्थापिताः मत. समुल्लापकान्=सम्यगुच्चैः शब्दान् सुमधुरान् पुनः पुन.=भूयो भूय' मम्मण (मञ्जुल) प्रभणितान्=मा मा इति श्रवणरमणीयभाषितान् ददति=मातृप्रभृतिश्रवणाय वितरन्ति तादृशान् शब्दान् कुर्वन्तीति भाव.।

अहं=सुभद्रा खलु = निश्चयेन अधन्या, अपुण्या=अपवित्रा यद्वा एतस्मिन् जन्मनि पुण्यरहिता, अकृतपुण्या=असञ्चितसुकृता पूर्वजन्मन्यपि असम्पादितदानादिसुकर्मफलापेति तात्पर्यम्, अस्मि, यद् एततः=एतन्मध्यात् पूर्वोक्तविशेषणविशिष्टाना पुत्राणा मध्यात् एकमपि सन्तानं न प्राप्ता=न लब्धवती, इत्येव प्रकारेण अपहतमन'सङ्कल्पा=विनष्टमनोऽभिलषितकामना 'यावत्' शब्देन अधोमुखीत्यादीना प्रागुक्ताना सङ्ग्रहो बोध्य, ध्यायति=आर्तध्यान

मै भाग्यहीन हूँ, पुण्यहीन हूँ और मैंने पूर्वजन्ममे कभी पुण्योपार्जन नहीं किया इसी लिये इनमेसे सन्तान सम्बन्धी एक भी सुखको न पासकी क्योंकी मुझे एक भी संतान नहीं हुई। इस प्रकार सोच-विचार करती हुई वह अत्यन्त दीन तथा मलीन हो नीचा मुख करके आर्तध्यान करने लगी।

उस काल उस समयमें ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति तथा आदान, भाण्ड और अमत्रके निक्षेपणाकी समिति, और उच्चार प्रस्रवण-श्लेष्म-सिङ्घाण-परिष्ठापना समिति, इन समितियोंसे तथा मनोगुप्ति, वचोगुप्ति और कायगुप्ति, इन तीनो गुप्तियोंसे युक्त, इन्द्रियोंको दमन करनेवाली, गुप्तब्रह्मचारिणी, बहुश्रुता=बहुत शास्त्रोंको जाननेवाली, और बहुत परिवारसे युक्त, सुव्रता नामकी आर्याएँ,

હું ભાગ્યહીન છું-પુણ્યહીન છું—અને મેં પૂર્વજન્મમાં કદી પુણ્યનું ઉપાર્જન નથી કર્યું તેથી સંતાન સંબંધી આ સુખોમાંનું એક પણ સુખ મેળવી શકી નથી કેમકે મને એક પણ સંતાન થયું નથી આ પ્રકારે સોચ વિચાર કરતી તે અત્યન્ત દીન તથા મલીન થઈ નીચે મુખ કરી આર્તધ્યાન કરવા લાગી

તે કાલ તે સમયે ઇર્યાસમિતિ, ભાષાસમિતિ એષણાસમિતિ તથા આદાન ભાંડ અને અમત્રની નિક્ષેપણાની સમિતિ તથા ઉચ્ચારણ પ્રસ્રવણ, શ્લેષ્મ સિંઘાણ પરિષ્ઠાપના સમિતિ આ બધી સમિતિઓથી તથા મનોગુપ્તિ વચોગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ આ ત્રણ ગુપ્તિઓથી યુક્ત ઇન્દ્રિયોને દમન કરવાવાળી, ગુપ્ત બ્રહ્મચારિણી બહુશ્રુતા=બહુશાસ્ત્રોને જાણવાવાળી અને બહુ પરિવારથી યુક્ત, સુવ્રતા નામની આર્યાઓ તીર્થંકર પરંપરાથી.

करोति । सुव्रताः=तन्नामिका आर्यिका । 'सङ्घाटक'=साध्वी समूहः, गृहसमुदानस्य=गृहेषु=अनेकेषु गेहेषु समुदान=भिक्षाटन, गृहसमुदानम् अनेकगृहगृहीत भैक्ष तस्य तथा, शेष सुगमम् ॥ २ ॥

तीर्थङ्कर परम्परासे विचरण करती हुई ग्रामानुग्राम विहार करती हुई वाराणसी नगरीमें आयी। वहाँ आकर कल्पानुसार अवग्रह=आज्ञा लेकर उपाश्रयमें उ री और सयम तपके द्वारा अपनी आत्माको भावित करती हुई विचरने लगी।

उसके बाद उन सुव्रता आर्याओंका एक सघाडा वाराणसी नगरीके उच्च नीच मध्यम कुलोमें गृहसमुदानी भिक्षा (अनेक घरोंसे लीजानेवाली भिक्षा) के लिये फिरता हुआ भद्रासार्थवाहके घरमे आया। उसके बाद सुभद्रा सार्थवाही आती हुई उन आर्याओंको देखा और उनको देखकर उसका हृदय हृष्ट और तुष्ट हो गया, और विनयके लिये शीघ्र ही आसनके उठी। उठकर सात आठ पग सामने गई । सामने जाकर उनको वन्दन नमस्कार किया । बाद, विपुल अशन पान खाद्य स्वाद्यका प्रतिलाभ कराकर इस प्रकार बोली

हे देवानुप्रिये ! मैं भद्रसार्थवाहके साथ अनेक प्रकारके विपुल भोगोको भोगती हुई विचरती हूँ । परन्तु आज तक मेरे एक भी सन्तान नहीं हुई । वे माताएँ धन्य हैं, पुण्यशीला हैं उन्होंने पूर्व

વિચરતી એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતી હતી વાણારસી નગરીમા આવી અહીં આવીને કલ્પાનુસાર અવગ્રહ=આજ્ઞા લઈને ઉપાશ્રયમા ઉતરી અને સયમ તથા તપદ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતી થકી વિચરવા લાગી

ત્યાર પછી તે સુવ્રતા આર્યાઓનો એક સઘાડો વારાણસી નગરીના ઉચ્ચ નીચ અને મધ્યમ કુલમા ગૃહસમુદાની ભિક્ષા (અનેક ઘરમાથી લેવાની ભિક્ષા) ને માટે ફરતા ફરતા ભદ્રસાર્થવાહના ઘરમા આવ્યો ત્યાર પછી સુભદ્રા સાર્થવાહીએ તે આર્યાઓન આવતી જોઈ અને તેમને જોઈને તે સાર્થવાહીનુ હૃદય હૃષ્ટ અને તુષ્ટ થઈ ગયુ અને તેમનુ સ્વાગત વિનય કરવા માટે તુરત પોતાને આસનેથી ઊઠી ઊઠીને સાત આઠ પગના સામે ગઈ અને તેમને વદન નમસ્કાર કર્યા ત્યાર પછી વિપુલ અશન (ખાન) પાન ખાદ્ય સ્વાદ્યના પ્રતિલાભ કરાવી આ પ્રકારે બોલી

હે દેવાનુપ્રિયે! હુ ભદ્ર સાર્થવાહની સાથે અનેક પ્રકારના વિપુલ ભોગ ભોગવીને વિચરૂ છુ પરતુ આજપર્યંત મને એક પણ સતાન થયુ નથી તે માતાઓને ધન્ય છે-તે-પુણ્યશીલા છે-તેમણે પૂર્વજન્મમા પુણ્ય ઉપાર્જન કર્યુ છે

जन्ममे पुण्य उपार्जन किया है और उन माताओंने ही अपने मनुष्य जन्म और जीवनका फल अच्छी तरह पाया है जिन माताओंकी अपने उदरसे उत्पन्न, स्तनके दूधकी लोभी, कानोंको लुभानेवाली वाणीको उच्चारण करनेवाली, माँ ! माँ !! इस हृदयस्पर्शी शब्दको बोलनेवाली, तथा स्तन मूल और कक्षके बीच भागमे अभिसरण करनेवाली सन्तान, उन माताओंके स्तनोंको दूधसे परिपूर्ण करती है फिर वे कोमल कमल सदृश हाथोंके द्वारा गोदीमे बैठाये जानेपर उच्च स्वरोसे उच्चारित, कानोंको अच्छे लगनेवाले, मधुर शब्दोंको बोलकर माताओंको प्रसन्न करती है। मै भाग्यहीन हू, पुण्यहीन हू, मैने कभी पुण्याचरण नहीं किया इसी लिये इन सभी सुखोमेंसे एक भी सुखको न पा सकी। क्यो कि मुझे एक भी संतान नही हुई।

हे देवानुप्रियो! आप लोग बहुत ज्ञानवाली है, बहुतसी वातोंको जानती है और बहुतसे ग्राम, नगर यावत् सन्निवेशोमे विचरती है बहुतसे राजा, ईश्वर, तलवर आदिसे लेकर सार्थवाहोंके घरोमे भिक्षार्थ आपका जाना होता है। क्या कही कोई विद्या-प्रयोग वा मन्त्र-प्रयोग, वमन अथवा विरेचन, वस्तिकर्म वा औषध

અને તે માતાઓએ જ પોતાના મનુષ્યજન્મ અને જીવનનુ ફળ સારી રીતે મેળવ્યુ છે કે જે માતાઓના પોતાના ઉદરથી ઉત્પન્ન, સ્તનના દૂધ માટે લોભી કાનોને લલચાવનારી વાણી બોલતા, મા-મા એવા હૃદયસ્પર્શી શબ્દને બોલવાવાળા તથા સ્તનમૂલ અને કૂખની વચલા ભાગમા અભિસરણ કરવાવાળા સતાન તે માતાઓના સ્તનોને દૂધથી પરિપૂર્ણ કરે છે ધણી તે કોમલ કમળ જેવા હાથો વડે ખોળામા બેસાડતાં ઉચ્ચા સ્વરથી બોલી કાનોને સારૂ લાગે તેવાં મધુર શબ્દો બોલીને માતાઓને પ્રસન્ન કરે છે હુ ભાગ્યહીન છુ, પુણ્યહીન છુ મે કદી પુણ્યનુ આચરણ કર્યું નથી તેથી આવા પ્રકારના સુખોમાથી હુ એક પણ સુખને મેળવી શકી નહિ કેમકે મને એક પણ સતાન થયુ નથી

હે દેવાનુપ્રિયો! આપ લોક બહુ જ્ઞાનવાળા છો, ઘણીએ વાતોને જાણો છો અને ઘણા ગામ નગર યાવત્ સન્નિવેશોમા વિચરો છો ઘણા ઘણા રાજા, ઈશ્વર, તલવર આદિથી માંડીને સાર્થવાહોના ઘરોમા ભિક્ષાર્થ આપને જાવાનુ પણ થાય છે તો શુ ક્યાય કોઈ વિદ્યાપ્રયોગ અથવા મત્રપ્રયોગ, વમન અથવા વિરેચન, બસ્તિકર્મ

मूलम्—तएणं ताओ अज्जाओ सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभयारीओ, नो खलु कप्पइ अम्हं एयमट्ठं कण्णेहिं वि णिसामित्तए, किमंग ! पुण उद्दिसित्तए वा समायरित्तए वा, अम्हे णं देवाणुप्पिये ! णवरं तव विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेमो ।

तए णं सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा ताओ अज्जाओ तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामिणं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामिणं रोएमिणं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं ! एवमेयं, तहमेयं, अवितहमेयं, जाव सावगधम्मं पडिवज्जए । अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेह । तएणं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए जाव पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ पडिविसज्जइ ।

तएणं सुभद्दा सत्थवाही समणोवासिया जाया जाव विहरइ । तएणं तीसे सुभद्दाए समणोवासियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमए कुडुंबजागरियं जागरमाणीए समाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी जाव विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयामि,

अथवा भैषज्य आपको मिला है ? जिससे मेरे लडका या लडकी हो सके ॥ २ ॥

ઔષધ-અથવા ભૈષજ્ય તમને મળ્યું છે ? જેથી મને પુત્ર કે પુત્રી થઇ શકે ? (૨)

त सेय खलु ममं कल्ल पाउप्पभायाए जाव जलंते भद्दस्स आपुच्छित्ता सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए अज्जा भवित्ता अगाराओ जाव पव्वइत्तए, एव सपेहेइ, सपेहित्ता, कल्ले जेणेव भद्दे सत्थवाहे तेणेव उवागया, करतल–जाव एव वयासी–एव खलु अह देवाणुप्पिया ! तुब्भेहि सद्धिं बहुइ वासाइ विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी जाव विहरामि, नो चेव णं दारगं वा दारिय वा पयामि, त इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी सुव्वयाण अज्जाणं जाव पव्वइत्तए । तएण से भद्दे सत्थवाहे सुभद्द सत्थवाही एव वयासी–मा ण तुम देवाणुप्पिया ! इदाणि मुडा जाव पव्वयाहि, भुजाहि ताव देवाणुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइ, ततो पच्छा भुत्तभोइ सुव्वयाणं अज्जाण जाव पव्वयाहि । तए णं सुभद्दा सत्थवाही भद्दस्स० एयमट्ठ नो आढाइ नो परिजाणइ दोच्च पि तच्चपि भद्दा सत्थवाही एव वयासी–इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी जाव पव्वइत्तए । तए ण से भद्दे सत्थवाहे जाहे नो सचाएइ बहूहि आघयणाहिय एव पन्नवणाय सन्नवणाहिय विण्णवणाहिय आघवित्तए वा जाव विण्णवित्तए वा ताहे अकामए चेव सुभद्दाए निक्खमण अणुमण्णित्था ॥ ३ ॥

छाया—तत खलु ता आर्यिका सुभद्रा सार्थवाहीमेवमवादिपु –वय खलु देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य ईर्यासमिता यावत् गुप्तब्रह्मचारिण्य,

नो खलु कल्पते अस्माकम् एतमर्थं कर्णाभ्यामपि निशामयितुं किमङ्ग ! पुनरुपदेष्टुं वा समाचरितुं वा, वयं खलु देवानुप्रिये ! नवरं तव विचित्रं केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं परिकथयामः।

ततः खलु सुभद्रा सार्थवाही तासामार्याणामन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा ता आर्यास्त्रिकृत्वो वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्— श्रद्दधामि खलु आर्याः ! निर्ग्रन्थं प्रवचनं, प्रत्येमि खलु, रोचयामि खलु आर्याः ! निर्ग्रन्थं प्रवचनम् एवमेतत्, तथ्यमेतत्, अवितथमेतत्, यावत् श्रावक-

'तएणं ताओ' इत्यादि—

उसके बाद वह साध्वी उस सुभद्रा सार्थवाहीसे इस प्रकार बोली—

हे देवानुप्रिये ! हम लोग ईर्यासमिति आदि समितियोंसे तथा तीन गुप्तियोंसे युक्त, इन्द्रियको वशमें रखनेवाली गुप्तब्रह्मचारिणी निर्ग्रन्थ श्रमणी है? हमको इन बातोंका कानोंसे सुनना भी नहीं कल्पता, तो फिर हम लोग इनका उपदेश या आचरण कैसे कर सकती हं। हे देवानुप्रिये ! विशेष यह है कि हम लोग केवलि प्ररूपित दानशील आदि नाना प्रकारके धर्मका ही उपदेश करती हैं। उसके बाद वह सुभद्रा सार्थवाही उन आर्याओंसे धर्म सुनकर उसे हृदयमें धारण कर हृष्ट-तुष्ट हृदयसे उनको तीनबार वन्दन और नमस्कार कर इस प्रकार बोली-हे देवानुप्रिये। मैं निर्ग्रंथ प्रवचनपर श्रद्धा करती हूँ, विश्वास करती हूँ। निर्ग्रन्थ प्रवचनपर मेरी

'तएणं ताओ' ઇત્યાદિ

ત્યાર બાદ તે સાધ્વી (આર્યા) તે સુભદ્રા સાર્થવાહીને આ પ્રકારે બોલી —

હે દેવાનુપ્રિયે ! અમે લોક ઇર્યા સમિતિ આદિ સમિતિઓથી તથા ત્રણ ગુપ્તિઓથી યુકત ઇન્દ્રિયોને વશમાં રાખવાવાળી, ગુપ્ત બ્રહ્મચારિણી નિર્ગ્રંથ શ્રમણી છીએ અમા । લોકોને આવી બાબત કાનોથી સાંભળવી પણ કલ્પતી નથી તો પછી તેના ઉપદેશ અથવા આચરણ કેવી રીતે કરી શકીએ? હે દેવાનુપ્રિયે ! વિશેષ એ છે કે અમે લોકો કેવલી પ્રરૂપિત દાન શીલ આદિ નાના પ્રકારના ધર્મનોજ ઉપદેશ કરીએ છીએ ત્યાર બાદ તે સુભદ્રાસાર્થવાહી તે આર્યાઓ પાસેથી ધર્મ સાંભળીને તે હૃદયમાં ધારણ કરી હૃષ્ટ-તુષ્ટ હૃદયથી તેમને ત્રણ વાર વંદન અને નમસ્કાર કરી આ પ્રમાણે બોલી —હે દેવાનુપ્રિયે ! હું નિર્ગ્રંથ પ્રવચન પર શ્રદ્ધા કરૂં છું-વિશ્વાસ કરૂં છું

धर्मं प्रतिपन्ने । यथासुखं देवानुप्रिये ! मा प्रतिबन्धं कुरु । ततः खलु सा सुभद्रा सार्थवाही तासामार्याणामन्तिके यावत् प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य ता आर्याः वन्दते नमस्यति प्रतिविसर्जयति ।

ततः खलु सुभद्रा सार्थवाही श्रमणोपासिका जाता यावद् विहरति । ततः खलु तस्याः सुभद्रायाः श्रमणोपासिकाया अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकाले कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्या सत्याः अयमेतद्रूपो यावत् समुत्पद्यत-एवं खलु अहं भद्रेण सार्थवाहेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना यावद् विहरामि, नोचैव खलु अहं दारकं वा दारिकां वा प्रजनयामि, तत श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुर्यावत् ज्वलति भद्रमापृच्छय सुव्रतानामार्याणामन्तिके आर्या

रुचि हुई है । आपने जो उपदेश दिया है वह सत्य है,-सर्वथा सत्य है, मैं यावत् श्रावक धर्मको स्वीकार करती हूँ । उन आर्याओंने कहा-हे देवानुप्रिये ! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा ही करो धर्माचरणमें प्रमाद मत करना । उसके बाद उस सुभद्रा सार्थवाहीने उन आर्याओंके समीप निर्ग्रन्थ धर्मको स्वीकार किया । अनन्तर उन आर्याओंका वन्दन और नमस्कारके साथ विसर्जन किया ।

उसके बाद वह सुभद्रा सार्थवाही श्रमणोपासिका हो गयी, यावत् श्रावकधर्म पालती हुई विचरने लगी । उसके बाद एक समय पिछली रातमें कुटुम्बजागरणा करती हुई उस सुभद्रा सार्थवाहीके हृदयमें इस प्रकारका आध्यात्मिक यावत् विचार उत्पन्न हुआ कि-मैं भद्र सार्थवाहके साथ विपुल भोगोंको भोगती हुई यावत् विचर रही हूँ । पर आजतक मेरे एक भी सन्तान नहीं हुई । इसलिये मुझे उचित है कि सूर्योदय होनेपर भद्र सार्थवाहको पूछकर सुव्रता

निર્ગ્રંથ પ્રવચન પર મને રૂચી થઈ છે આપે જે ઉપદેશ આપ્યો છે તે સત્ય છે-સર્વથા સત્ય છે હું યાવત્ શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કરૂં છું તે આર્યાઓએ કહ્યું—

હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જે પ્રકારે સુખ થાય તેમજ કર ધર્માચરણમાં પ્રમાદ ન કરવો ત્યાર પછી તે સુભદ્રાસાર્થવાહીએ આર્યાઓની પાસે નિર્ગ્રંથ ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો ને પછી તે આર્યાઓને વંદન અને નમસ્કાર કરીને વિસર્જન કર્યું (વિદાય આપી)

ત્યાર પછી તે સુભદ્રા સાર્થવાહી શ્રમણ ઉપાસિકા થઈ ગઈ તમામ શ્રાવક-ધર્મનું પાલન કરતી વિચરવા લાગી ત્યાર પછી એક સમયે પાછલી રાત્રિએ કુટુંબ જાગરણા કરતી કરતી તે સુભદ્રાસાર્થવાહીના હૃદયમાં આ પ્રકારનો આધ્યાત્મિક-વિચાર આવ્યો કે હું ભદ્ર સાર્થવાહની સાથે વિપુલ ભોગોને ભોગવતી વિચરણ કરૂં છું પણ આજ પર્યન્ત મને એક પણ સંતાન થયું નથી આથી મને એ યોગ્ય છે કે સૂર્યોદય થતાજ ભદ્ર સાર્થવાહને પૂછીને સુવ્રતા આર્યાઓની પાસે આર્યા થઈ ઘર

भूत्वा अगाराद् यावत् प्रव्रजितुम् । एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य कल्ये यत्रैव भद्रः सार्थवाहस्तत्रैवोपागता, करतल-यावत् एवमवादीत्-एवं खलु अहं देवानुप्रियाः ! युष्माभिः सार्द्धं बहूनि वर्षाणि विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना यावद् विहरामि, नो चैव खलु दारकं वा दारिकां वा प्रजनयामि, तद् इच्छामि खलु देवानुप्रिया' ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती सुव्रतानामार्याणामन्तिके यावत् प्रव्रजितुम् । ततः खलु स भद्र' सार्थवाहः सुभद्रां सार्थवाहीम् एवमवादीत्-मा खलु त्वं देवानुप्रिये ! इदानीं मुण्डा यावत् प्रव्रज । भुङ्क्ष्व तावद् देवानुप्रिये ! मया सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् ततः पश्चात् भुक्तभोगिनी सुव्रतानामार्याणामन्तिके यावत् प्रव्रज । ततः खलु सुभद्रा सार्थवाही भद्रस्य० एतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति द्वितीयमपि तृतीयमपि भद्रा सार्थवाही एवमवादीत्-इच्छामि

आर्याओंके समीप आर्या हो घर छोडकर प्रव्रजित बनू । ऐसा विचार कर भद्रसार्थवाहके पास आयी और हाथ जोड कर इस प्रकार बोली हे देवानुप्रिय ! मै तुम्हारे साथ बहुत वर्षों तक विपुल भोगो को भोगती हुई विचर रही हूँ, पर आजतक मेरे एक भी सन्तान नहीं हुई । इसलिये में चाहती हूँ कि तुमसे आज्ञा लेकर सुव्रता आर्याओंके समीप दीक्षा लेकर प्रव्रजित हो जाऊँ । उसके बाद वह भद्र सार्थवाह सुभद्रा सार्थवाहीसे इस प्रकार कहने लगाः-

हे देवानुप्रिये ! तुम अभी दीक्षा मत लो । तुम अभी ससारमे ही रहो । विपुल भोग भोगनेके बाद सुव्रता आर्याओंके समीप दीक्षा लेकर प्रव्रजित होना । भद्र सार्थवाहके द्वारा इस प्रकार कहे जानेपर भी उस सुभद्रा सार्थवाहीने भद्रके वचनोंका आदर नहीं

બધુ છોડી દઈને પ્રવ્રજીત બનુ એવો વિચાર કરીને ભદ્રસાર્થવાહની પાસે આવી અને હાથ જોડી આ પ્રકારે બોલી —હે દેવાનુપ્રિય! હુ તમારી સાથે ઘણા વર્ષો સુધી વિપુલ ભોગવિલાસ ભોગવતી રહુ છુ પણ આજસુધી મને એક પણ સતાન નથી થયુ માટે હુ ચાહુ છુ કે તમારી આજ્ઞા લઈ સુવ્રતા આર્યાઓની પાસે દીક્ષા લઈને પ્રવ્રજીત થઈ જાઉ ત્યાર પછી તે ભદ્રસાર્થવાહ સુભદ્રા સાર્થવાહીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો —

હે દેવાનુપ્રિયે! તમે હમણા દીક્ષા ન લો તમે હમણા સસારમા જ રહો વિપુલભોગ ભોગવી લીધા પછી સુવ્રતા આર્યાઓની પાસે દીક્ષા લઈને પ્રવજિત થજો ભદ્ર સાર્થવાહે આ પ્રમાણે કહેવાથી તે સુભદ્રાસાર્થવાહીએ ભદ્રના વચનો માન્યા

खलु देवानुप्रिया ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती यावत् प्रव्रजितुम् । ततः खलु स भद्रः सार्थवाहो यदा नो शक्नोति-बह्वीभिराख्यापनाभिश्च एव प्रज्ञापनाभिश्च सञ्ज्ञापनाभिश्च, विज्ञापनाभिश्च, आख्यापयितुम् वा, यावत् विज्ञापयितु वा, तदा अकामतश्चैव सुभद्राया निष्क्रमणमन्वमन्यत ॥ ३ ॥

टीका-'तएण ताओ' इत्यादि-रोचयामि=रुचिविषयीकरोमि, प्रतिपद्ये= अङ्गीकरोमि, भोगभोगान्-भोगाः=शब्दादयस्तेषां भोगाः=आसेवनानि तान् । आख्यापनाभिः='गृहवासः श्रेयान्' इति तत्परीक्षार्थं सामान्यतः कथनैः, प्रज्ञापनाभिः=त्वं मा परिव्रज' 'संयमाऽऽचरणं दुष्करम्' इतिविशेषतः कथनैः, 'सञ्ज्ञापनाभिः=संयमाऽऽराधनं भुक्तभोगावस्थायां सुकरम्' इति संबोधनाभिः, विज्ञापनाभिः=संयमग्रहणे तदन्तःकरणदृढिमपरीक्षार्थं सप्रेमप्रतिपादनैः, अकामतः= संयममार्गे तां सुभद्रां निरोद्धुमक्षमः सन्ननिच्छन्नपि सुभद्रायाः निष्क्रमणं= परिव्रजनम् अन्वमन्यत=स्वीचकार । शेषं सुबोधम् ॥ ३ ॥

किया, और न उसके वचनों पर विचार ही किया । दूसरी बार तीसरी बार भी सुभद्रा सार्थवाहीने इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! तुमसे आज्ञा पाकर प्रव्रज्या लेनेकी इच्छा करती हूँ ।

उसके बाद वह भद्र सार्थवाह बहुत प्रकारकी 'आख्यापना'= 'घरमें रहना ही श्रेयस्कर है' इस प्रकार उसकी परीक्षाके लिये जो सामान्य कथन, तत्स्वरूप आख्यापनाओंसे एव 'प्रज्ञापना'='तुम प्रव्रजित मत होओ, संयमका आचरण दुष्कर है' इस प्रकार विशेष रूपसे कथन स्वरूप प्रज्ञापनाओंसे, और 'सञ्ज्ञापना'='भोगोंको भोग लेनेके बाद ही संयमका आराधन सुकर है' इस प्रकारका समझना रूप सञ्ज्ञापनाओंसे, 'विज्ञापना'=संयम ग्रहणमे उसके अन्त करणकी

नहि तेम तेना वचनो उपर विचार पण न कर्यो बीजीवार त्रीजीवार पण सुभद्रा-सार्थवाहीए आ प्रमाणे कह्युं —हे देवानुप्रिय ! तमारी आज्ञा लईने प्रव्रज्या लेवानी ईच्छा हुं करुं छुं

त्यार पछी ते भद्रसार्थवाह घणा प्रकारे आख्यापना='घरमां रहेवुं एज श्रेयस्कर छे' ए प्रकारे तेनी परीक्षाने माटे ज सामान्य कथन के तेना जेवी आख्यापनाओथी, तथा प्रज्ञापना='तमे प्रव्रजित न थाओ संयमनुं आचरण मुश्केल छे' आ प्रकारनुं विशेषरूपे कथन—तेवी कथनस्वरूप प्रज्ञापनाओथी तथा सञ्ज्ञापना=भोगो भोगवी लीधा पछी ज संयमनुं आराधन सुकर (सहज) छे' ए प्रकारे समजाववा रूपी सञ्ज्ञापनाथी, तथा विज्ञापना='संयमग्रहण करतां तेना अन्तःकरणनी दृढता

सूत्रम्--तएण से भद्दे सत्थवाहे विउल असण ४ उव-क्खडावेइ, मित्तनाइ जाव आमतेइ, पच्छा भोयणवेलाए जाव मित्तनाइ० सक्कारेइ सम्माणेइ, सुभद्द सत्थवाहि ण्हाय जाव पायच्छित्त सव्वालकारविभूसिय पुरिससहस्सवाहिणि सीय दुरूहेइ। तओ सा सुभद्दा सत्थवाही मित्तनाइ जाव सवधि-सपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेण वाणारसीनयरीए मज्झ मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीय ठवेइ, सुभद्दं सत्थवाहि सीयाओ पच्चोरुहेइ। तएण भद्दे सत्थवाहे सुभद्द सत्थवाहि पुरओ काउं जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! सुभद्दा सत्थवाही ममं भारिया इट्ठा कता जाव मा ण वाइया पित्तिया सिंभिया सन्निवाइया विविहा रोगातका फुसतु, एसणं देवाणुप्पिया! ससारभउव्विग्गा, भीया जम्मणमरणाणं, देवाणुप्पियाण अतिए मुडा भवित्ता जाव पव्वयाइ, त एय अह देवाणुप्पियाण सीसिणीभिक्ख दलयामि, पडिच्छंतु ण देवाणुप्पिया! सीसिणीभिक्ख। अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबध।

दृढताकी परीक्षाके लिये युक्ति प्रतिपादनरूप विज्ञापनाओंसे समझा नेमें समर्थ नहीं हो सका तब उसने अनिच्छापूर्वक सुभद्राको दीक्षा लेनेकी आज्ञा दी ॥ ३ ॥

પરીક્ષાને માટે યુક્તિપ્રતિપાદનરૂપ વિજ્ઞાપનાઓથી આજ્ઞા સમજાવવામાં સમર્થ ન થઈ શક્યો ત્યારે તેણે અનિચ્છાપૂર્વક સુભદ્રાને દીક્ષા લેવાની આજ્ઞા આપી (૩)

खलु देवानुप्रियाः ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती यावत् प्रव्रजितुम् । ततः खलु स भद्रः सार्थवाहो यदा नो शक्नोति-बह्वीभिराख्यापनाभिश्च एव प्रज्ञापनाभिश्च संज्ञापनाभिश्च, विज्ञापनाभिश्च, आख्यापयितुम् वा, यावत् विज्ञापयितु वा, तदा अकामतश्चैव सुभद्राया निष्क्रमणमन्वमन्यत ॥ ३ ॥

टीका-'तए णं ताओ' इत्यादि-रोचयामि=रुचिविषयीकरोमि, प्रतिपद्ये= अङ्गीकरोमि, भोगभोगान्-भोगाः=शब्दादयस्तेषां भोगाः=आसेवनानि तान् । आख्यापनाभिः='गृहवासः श्रेयान्' इति तत्परीक्षार्थं सामान्यतः कथनैः, प्रज्ञापनाभिः='त्वं मा परिव्रज' 'संयमाऽऽचरणं दुष्करम्' इति विशेषतः कथनैः, 'संज्ञापनाभिः=संयमाऽऽराधनं भुक्तभोगावस्थायां सुकरम्' इति संबोधनाभिः, विज्ञापनाभिः=संयमग्रहणे तदन्तःकरणदृढिमपरीक्षार्थं सप्रेमप्रतिपादनैः, अकामतः= संयममार्गात् तां सुभद्रां निरोद्धुमक्षमः सन्ननिच्छन्नपि सुभद्रायाः निष्क्रमणं= परिव्रजनम् अन्वमन्यत=स्वीचकार । शेषं सुबोधम् ॥ ३ ॥

किया, और न उसके वचनों पर विचार ही किया । दूसरी बार तीसरी बार भी सुभद्रा सार्थवाहीने इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! तुमसे आज्ञा पाकर प्रव्रज्या लेनेकी इच्छा करती हूँ ।

उसके बाद वह भद्र सार्थवाह बहुत प्रकारकी 'आख्यापना'= 'घरमें रहना ही श्रेयस्कर है' इस प्रकार उसकी परीक्षाके लिये जो सामान्य कथन, तत्स्वरूप आख्यापनाओंसे एवं 'प्रज्ञापना'='तुम प्रव्रजित मत होओ, संयमका आचरण दुष्कर है' इस प्रकार विशेष रूपसे कथन स्वरूप प्रज्ञापनाओंसे, और 'संज्ञापना'='भोगोंको भोग लेनेके बाद ही संयमका आराधन सुकर है' इस प्रकारका समझाना रूप संज्ञापनाओंसे, 'विज्ञापना'=संयम ग्रहणमें उसके अन्तःकरणकी

નહિ તેમ તેના વચનો ઉપર વિચાર પણ ન કર્યો બીજીવાર ત્રીજીવાર પણ સુભદ્રા-સાર્થવાહીએ આ પ્રમાણે કહ્યુ —હે દેવાનુપ્રિય ! તમારી આજ્ઞા લઈને પ્રવ્રજ્યા લેવાની ઈચ્છા હુ કરૂ છુ

ત્યાર પછી તે ભદ્રસાર્થવાહ ઘણા પ્રકારે આખ્યાપના='ઘરમા રહેવુ એજ શ્રેયસ્કર છે' એ પ્રકારે તેની પરીક્ષાને માટે જ સામાન્ય કથન કે તેના જેવી આખ્યાપનાએથી, તથા પ્રજ્ઞાપના='તમે પ્રવ્રજિત ન થાઓ સયમનુ આચરણ મુશ્કેલ છે' આ પ્રકારનું વિશેષરૂપે કહેવાની કથન સ્વરૂપ પ્રજ્ઞાપનાઓથી તથા સંજ્ઞાપના='ભોગો ભોગવી લીધા પછી જ સયમનુ આરાધન સુકર (સહજ) છે' એ પ્રકારે સમજાવવા રૂપી સંજ્ઞાપનાથી, તથા વિજ્ઞાપના='સંયમગ્રહણ કરતા તેના અન્તઃકરણ દૃઢતા

रवेण वाराणसीनगर्या मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामार्याणामुपाश्रयस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकां स्थापयति, सुभद्रा सार्थवाही शिबिकातः प्रत्यवरोहति। ततः खलु भद्रः सार्थवाहः सुभद्रां सार्थवाहीं पुरतः कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्याः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुव्रता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-एवं खलु देवानुप्रियाः ! सुभद्रा सार्थवाही मम भार्या इष्टा कान्ता यावत् मा खलु वातिकाः पैत्तिकाः श्लैष्मिकाः सान्निपातिका विविधा रोगातङ्काः स्पृशन्तु, एषा खलु देवानुप्रियाः ! संसारभयोद्विग्ना, भीता जन्ममरणाभ्यां, देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा भूत्वा यावत् प्रव्रजति ! तद् एतामहं देवानुप्रियेभ्यो शिष्याभिक्षां ददामि, प्रतीच्छन्तु खलु देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षाम्। यथासुखं देवानुप्रियाः मा प्रतिबन्धम्।

बाजोंके स्वरके साथ वाराणसी नगरीके बीचोबीचसे होती हुई सुव्रता आर्याओंके उपाश्रयमें आई, और हजार पुरुषोंसे वाहित उस शिबिकासे उतरी। बादमें वह भद्र सार्थवाह सुभद्रा सार्थवाहीको आगे कर सुव्रता आर्याके पास आया, और वन्दन नमस्कार किया। बाद उसको उसने इस प्रकार कहा :—

हे देवानुप्रियों ! यह मेरी भार्या सुभद्रा सार्थवाही मेरी अत्यन्त इष्ट और कान्त है। इसको वात पित्त कफ आदि रोग तथा शीत-उष्ण आदिके दुःख स्पर्श न कर सके इसके लिए सर्वदा यत्न करता आरहा हूँ, सो यह सार्थवाही संसारके भयसे उद्विग्न हो तथा जन्म मरणसे डरकर आप लोगोंके पास मुण्डित होकर प्रव्रजित हो रही है, इसलिये मैं आप लोगोंको यह शिष्यारूप भिक्षा दे रहा हूँ। हे देवानुप्रियों ! इसको आप लोग स्वीकार करें।

वच्चोवच्च थईने सुव्रता आर्याओना उपाश्रयमा आवी अने हजार पुरुषोए उपाडेली ते शिबिकामाथी उतरी पछी ते भद्रसार्थवाह सुभद्रा सार्थवाहीने आगळ करीने सुव्रता आर्यानी पासे आव्यो अने वन्दन नमस्कार कर्या पछी तेणे आ प्रकारे कह्यु –

हे देवानुप्रियो ! आ मारी स्त्री सुभद्रा सार्थवाही मारी घणीज इष्ट अने कान्त (प्रिय) छे तेने वात पित्त कफ वगेरे रोग ठंडी गरमी वगेरेना दुःख स्पर्श करी न शके ते माटे हु हमेशा यत्न करतो आवु छु ते आ सार्थवाही संसारना भयथी चिंतातुर बनीने तथा जन्ममरणना डरथी आप लोकोनी पासे मुंडित थई प्रव्रजित थाय छे माटे हु आप लोकोने आ शिष्यारूप भिक्षा आपु छु हे देवानुप्रियो, आनो आप लोको स्वीकार करो

तएणं सा सुभद्दा सत्थवाही तुट्ठा सुव्वयाहिं अज्जाहिं एव वुत्ता समाणी हट्ठ० सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता, सयमेव पचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणेणं वदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी–आलित्तेणं भते! जहा देवाणंदा तहा पव्वइया जाव अज्जा जाया जाव गुत्त बंभयारिणी ॥ ४ ॥

छाया–ततः खलु स भद्र सार्थवाहो विपुलम् अशन पान खाद्य स्वाद्यम् उपस्कारयति मित्रज्ञाति यावदामन्त्रयति। ततः पश्चात् भोजनवेलाया यावत् मित्रज्ञाति० सत्करोति सम्मानयति, सुभद्रा सार्थवाही स्नाता यावत् कृतमायश्चित्ता सर्वालङ्कारविभूपिता पुरुपसहस्रवाहिनीं शिविका दूरोहयति। तत सा सुभद्रा सार्थवाही मित्रज्ञाति० यावत् सम्बन्धिसपरिवृता सर्वऋद्धया यावत्

'तएण से भद्दे' इत्यादि–

उसके बाद उस भद्र सार्थवाहने विपुल अशन पान खाद्य स्वाद्यको तैयार करवाया और अपने सभी मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको बुलाया और आदर सत्कार के साथ सभी मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको भोजन कराया। बादमे स्नानकी हुई यावत् मसीतिलक आदिसे युक्त, सभी अलङ्कारोंसे विभूषित सुभद्र हजार मनुष्योंके द्वारा वाहिल शिबिका पर बैठायी गई। उसके बाद वह सुभद्रा सार्थवाही मित्र ज्ञाति स्वजन–बन्धु और सम्बन्धियोसे युक्त सभी प्रकारकी ऋद्धि यावत् भेरी आदि

'तएण से भद्दे' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે ભદ્રસાર્થવાહે વિપુલ અશનપાન ખાદ્ય સ્વાદ્ય તૈયાર કરાવ્યુ અને પોતાના બધા મિત્રો જ્ઞાતિ–સ્વજન બન્ધુઓને બોલાવ્યા અને આદર સત્કાર કરીને તે બધાને ભોજન કરાવ્યુ પછી સુભદ્રાને નવરાવી યાવત્ મસી તિલક (ચાંડલો) આદિ કરાવી તમામ અલકાર (ઘરેણા) શણગારી હજાર મનુષ્યોએ ઉપાડવી શિબિકા (પાલખી) ઉપર બેસાડવામા–આવી–

ત્યાર પછી તે સુભદ્રાસાર્થવાહી મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન–બન્ધુ તથા સબન્ધિઓની સાથે તમામ પ્રકારની ઋદ્ધિ, ભેરી આદિ વાજાના સ્વર સાથે વારાણસી નગરીની

टीका-'तए ण से भद्दे' इत्यादि-एतस्य व्याख्या निगदसिद्धेति बोध्यम् ॥४॥

मूलम्-तए णं सा सुभद्दा अज्जा अन्नया कयाइ बहुजणस्स चेडरूवे समुच्छिया जाव अज्झोववण्णा अब्भंगणं च उव्वट्टणं फासुयपाणं च अलत्तगं च कंकणाणि य अंजणं च वण्णगं च चुण्णगं च खेल्लगाणि य खज्जल्लगाणि य खीरं च पुप्फाणि य गवेसइ, गवेसित्ता बहुजणस्स दारए वा दारियाए वा कुमारे य कुमारियाए य डिंभए य डिंभियाओ य अप्पेगइयाओ अब्भंगेइ, अप्पेगइयाओ उव्वट्टेइ, एवं अप्पेगइयाओ फासुयपाणएणं ण्हावेइ, अप्पेगइयाणं पाए रयइ, अप्पेगइयाणं उट्ठे रयइ, अप्पेगइयाणं अच्छीणि अंजेइ, अप्पेगइयाणं उसुए करेइ, अप्पेगइयाणं तिलए करेइ, अप्पेगइयाओ दिगिंदलए करेइ, अप्पेगइयाणं पंतियाओ करेइ, अप्पेगइयाइं छिज्जाइं

मच्छर तथा वात पित्त कफ आदि रोग परीषह उपसर्ग कोई नुकसान न पहुँचा सके तथा मेरी आत्मा परलोकमें हित रूप, सुखरूप कुशल रूप और परम्परासे कल्याण रूप रहे। इस लिये मैं आपके पास मुण्डित होकर प्रव्रजित होती हूँ। मैं प्रतिलेखना आदि क्रियाको सीखूँगी। आपकी आज्ञासे संयमकी सब क्रियाको पालूँगी। इस प्रकार वह सार्थवाही देवानन्दाके समान प्रव्रजित हुई और आर्या हो गई तथा पंचसमिति और तीन गुप्तियोंसे युक्त हो सकल इन्द्रियोंका दमन कर वह गुप्तब्रह्मचारिणी हो गयी ॥ ४ ॥

कफ वगेरे रोग, परीषह, उपसर्ग कोई नुकसान पहोंचाडी न शके तथा मारो आत्मा परलोकमां हितरूप, सुखरूप, कुशलरूप तथा परम्पराथी कल्याणरूप रहे ते माटे तमारी पासे मुंडित थईने प्रव्रजित बनुं छुं हुं प्रतिलेखना आदि क्रियाने शीखीश आपनी आज्ञाथी संयमनी बधी क्रियाओनु पालन करीश आ प्रकारे ते सार्थवाही देवानन्दाना पेठे प्रव्रजित बनी अने आर्या थई गई तथा पांच समिति अने त्रण गुप्तिओथी युक्त थईने बधी इन्द्रिओनु दमन करीने ते गुप्त ब्रह्मचारिणी थई गई (४)

ततः खलु सा सुभद्रा सार्थवाही सुव्रताभिरार्याभिरेवमुक्ता सती स्वयमेव आभरणमाल्यालङ्कारमवमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्यास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुव्रता आर्यास्त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणेन वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, एवमवादीत्–आदीप्तः खलु भदन्त ! यथा देवानन्दा तथा प्रव्रजिता यावत् आर्या जाता यावद् गुप्तब्रह्मचारिणी ॥ ४ ॥

भद्र सार्थवाहके इस प्रकार कहने पर उस महासतीने उस सार्थवाहीसे कहा–हे देवानुप्रिये ! जैसी तुम्हारी खुशी हो, शुभ काममें प्रमाद मत करो। सुव्रता महासती द्वारा इस प्रकार कहे जानेपर वह सुभद्रा सार्थवाही अपने हाथोंसे माला और आभूषणोंको उतार दिया, और उसने अपने हाथसे पञ्चमुष्टिक लुञ्चन किया। बादमे वह सुव्रता आर्याके समीप आकर तीन बार आदक्षिण–प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दन नमस्कार करके बोली—

हे महासती ! यह संसार जरा–मरण रूप आगसे जल रहा है,–अत्यन्त जल रहा है। जिस तरह कोई गृहस्थ घरमे आग लगनेपर जलती हुई वस्तुओंसे बहुमूल्य और थोडे वजनवाली वस्तुको निकाल लेता है और उसे सुरक्षित रखता है उसी प्रकार मैं अपनी आत्माको जो मेरी इष्ट है, कान्त है, प्रिय है, संमत=सम्मानित है अनुमत–बडे प्रेमसे सुरक्षित है, बहुमत है अनेक प्रकारसे लालित पालित है, उसको शीत, उष्ण, भूख, तृषा, चोर, सिंह, सर्प, डांस,

ભદ્ર સાર્થવાહના આ પ્રકારે કહેવાથી તે મહાસતીએ તે સાર્થવાહીને કહ્યું–હે દેવાનુપ્રિયે ! જેવી તમારી ખુશી કોઇ શુભ કામમા પ્રમાદ ન કરો સુવ્રતા મહાસતીએ આ પ્રમાણે કહેવાથી તે સુભદ્રાસાર્થવાહીએ પોતાના હાથેથી માળા અને ઘરેણા ઉતારી નાખ્યા અને તેણે પોતાના હાથેથી પચ મુષ્ટિક લુંચન કર્યું પછી તે સુવ્રતા આર્યાની પાસે આવીને ત્રણ વાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણાપૂર્વક વદન નમસ્કાર કરીને બોલી —

હે મહાસતી ! આ સસાર જરા–મરણરૂપ અગ્નિ વડે બળી રહ્યો છે–ખૂબ બળે છે જેમ કોઈ ગૃહસ્થ ઘરમા આગ લાગે ત્યારે બળી જતી વસ્તુઓમાથી બહુ કિમતવાળી અને ઓછા વજનવાળી વસ્તુને કઢી લે છે અને તેને સુરક્ષિત રાખે છે તેવીજ રીતે હુ મારો આત્મા–કે જે મારો ઇષ્ટ છે–કાન્ત છે પ્રિય છે–સમ્મત=સમ્માનિત છે, અનુમત=બહુ પ્રેમથી સુરક્ષિત છે, બહુમત છે, બહુમત છે=અનેક પ્રકારથી લાલિત પાલિત છે, તેને ઠંડી ગરમી, ભૂખ, તરસ, ચોર, સિંહ સર્પ, ડાસ, મચ્છર, તથા વાત, પિત્ત,

टीका-'तएग से भद्दे' इत्यादि-एतस्य व्याख्या निगदसिद्धेति बोध्यम् ॥४॥

मूलम्-तएण सा सुभद्दा अज्जा अन्नया कयाइ बहुजणस्स चेडरूवे समुच्छिया जाव अज्झोववण्णा अब्भगण च उव्वट्टणं फासुयपाण च अलत्तगं च ककणाणि य अजण च वण्णग च चुण्णग च खेल्लगाणि य खज्जल्लगाणि य खीर च पुप्फाणि य गवेसइ, गवेसित्ता बहुज्जणस्स दारए वा दारियाए वा कुमारे य कुमारियाए य डिभए य डिभियाओ य अप्पेगइ-याओ अब्भगेइ, अप्पेगइयाओ उव्वट्टेइ, एव अप्पेगइयाओ फासुयपाणएण ण्हावेइ, अप्पेगइयाण पाए रयइ, अप्पेगइयाण उ॰ रयइ, अप्पेगइयाणं अच्छीणि अजेइ, अप्पेगइयाण उसुए करेइ, अप्पेगइयाणं तिलए करेइ, अप्पेगइयाओ दिगिदलए करेइ, अप्पेगइयाण पतियाओ करेइ, अप्पेगइयाइ छिज्जाइ

मच्छर तथा वात पित कफ आदि रोग परीषह उपसर्ग कोई नुक-सान न पहुँचा सके तथा मेरी आत्मा परलोकमे हित रूप, सुख-रूप कुशल रूप और परम्परासे कल्याण रूप रहे। इस लिये मै आपके पास मुण्डित होकर प्रव्रजित होती हूँ। मैं प्रतिलेखना आदि क्रियाको सीखूँगी। आपकी आज्ञासे सयमकी सब क्रियाको पालूँगी। इस प्रकार वह सार्थवाही देवानन्दाके समान प्रव्रजित हुई और आर्या हो गई तथा पँचसमिति और तीन गुप्तियोंसे युक्त हो सकल इन्द्रियोंका दमन कर वह गुप्तब्रह्मचारिणी हो गयी ॥ ४ ॥

ठर वगेरे रोग, परीषह, उपसर्ग कोई नुकशान पहोचाडी न शके तथा मारो आत्मा परलोकमा हितरूप, सुखरूप, कुशलरूप तथा परम्पराथी कल्याणरूप रहे ते माटे तमारी पासे मुडित थईने प्रव्रजित बनु छु हु प्रतिलेखना आदि क्रियाने शीखीश आपनी आज्ञाथी सयमनी बधी क्रियाओनु पालन करीश आ प्रकारे ते सार्थवाही देवानन्दाना पेठे प्रव्रजित बनी अने आर्या थई गई तथा पाच समिति अने त्रण गुप्तिओथी युक्त थईने बधी इन्द्रिओनु दमन करीने ते गुप्त ब्रह्मचारिणी थई गई (४)

करेइ, अप्पेगइया वन्नएणं समालभइ, अप्पेगइया चुन्नएणं समालभइ, अप्पेगइयाणं खेल्लणगाइ दलयइ, अप्पेगइयाणं खज्जुल्लगाइ दलयइ, अप्पेगइयाओ खीरभोयण भुंजावेइ, अप्पे गइयाणं पुप्फाइ ओमुयइ, अप्पेगइयाओ पाएसु ठवेइ, अप्पे गइयाओ जघासु करेइ, एव ऊरुसु, उच्छगे, कडीए, पिट्ठे, उरसि, खधे, सीसे य करतलपुडेणं गहाय हलउलेमाणी २ आगायमाणी २ परिगायमाणी २ पुत्तपिवास च धूयपिवास च नत्तुयपिवास च नत्तिपिवास च पच्चणुब्भवमाणी विहरइ।

तएण ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सुभद्दे अज्ज एव वयासी– अम्हे ण देवाणुप्पिए! समणीओ निग्गथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबभयारिणीओ नो खलु अम्ह कप्पइ जातककम्म करित्तए, तुम च णं देवाणुप्पिया! बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया जाव अज्झोववन्ना अब्भगण जाव नत्तिपिवास वा पच्च- णुब्भवमाणी विहरसि, त ण तुम देवाणुप्पिया एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि। तएण सा सुभद्दा अज्जा सुव्वयाण अज्जाण एयमट्ठ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ।

तएणं ताओ समणीओ निग्गथीओ सुभद्द अज्ज हीलेति निंदति खिसति गरहति अभिक्खण २ एयमट्ठ निवारेंति। तएण तीसे सुभद्दाए अज्जाए समणीहिं निग्गथीहिं हीलि- ज्जमाणीए जाव अभिक्खण २ एयमट्ठ निवारिज्जमाणीए अय मेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–जयाणं अह अगार-

वास वसामि तयाणं अहं अप्पवसा, जप्पभिइं च णं अह मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता, तप्पभिइ च ण अह परवसा, पुव्विं च समणीओ निग्गथीओ आढेति परिजाणेति, इणाणि नो आढाइति नो परिजाणंति, त सेयं खलु मे कल्लं जाव जलंते सुव्वयाणं अज्जाण अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडियक्क उवस्सय उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए। एव संपेहेइ, सपेहित्ता कल्ल जाव जलते सेव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमेइ, पडिनिक्खमित्ता पाडियक्क उवस्सय उवसपज्जित्ता णं विहरइ। तए णं सा सुभद्दा अज्जा अज्जाहि अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छदमई बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छित्ता जाव अब्भगणं जाव नत्तिपिवास च पच्चणुब्भावमाणी विहरइ।

तएण सा सुभद्दा अज्जा पासत्था पासत्थविहारी एव ओसण्णा० ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी ससत्ता ससत्तविहारी अहाच्छदा अहाच्छदविहारी बहूइ वासाइ सामन्नपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताणं झुसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयप्पडिक्कत कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तियाविमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरियाए अगुलस्स असखेज्जभागमेत्ताए ओगाहणाए बहुपुत्तियदेवित्ताए उववण्णा।

तए ण सा बहुपुत्तिया देवी अहुणोववन्नमित्ता समाणी पचविहाए पज्जत्तीए जाव भासामणपज्जत्तीए०। एव खलु

गोयमा ! बहुपुत्तियाए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया । से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ बहुपुत्तिया देवी २ ? गोयमा बहुपुत्तिया णं देवी जाहे जाहे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उवत्थाणियणं करेइ, ताहे २ बहवे दारए य दारियाए य डिंभए य डिंभियाओ य विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभागं उवदंसेइ, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ बहुपुत्तिया देवी ॥ ५ ॥

छाया—ततः खलु सा सुभद्रा आर्या अन्यदा कदाचित् बहुजनस्य चेटरूपे सम्मूर्च्छिता यावद् अध्युपपन्ना अभ्यञ्जनं च उद्वर्त्तनं च प्रासुकपानं च अलक्तकं च कङ्कणानि च अञ्जनं च वर्णकं च चूर्णकं खेलकानि च खज्जलकानि च क्षीरं च पुष्पाणि च गवेषयति, गवेषयित्वा बहुजनस्य दारकान् दारिका वा कुमाराश्च कुमारिकाश्च डिम्भाश्च डिम्भिकाश्च अप्येककान् अभ्यङ्गयति अप्येककान् उद्वर्त्तयति, एवम् अप्येककान् प्रासुकपानकेन स्नपयति, अप्येककानां पादौ रञ्जयति, अप्येककानाम् ओष्ठौ रञ्जयति, अप्येककानाम् अक्षिणी अञ्जयति अप्येककानाम् इषुकान् करोति, अप्येककानां तिलकान् करोति, अप्येककान् दिगिन्दलके करोति, अप्येककानां पङ्क्ती करोति, अप्येककान् छेद्यान् (छिन्नान्) करोति, अप्येककान् वर्णकेन समालभते, अप्येककान् चूर्णकेन समालभते, अप्येककेभ्यः खेलकानि ददाति, अप्येककेभ्यः खज्जुलकानि ददाति, अप्येककान् क्षीरभोजनं भोजयति, अप्येककानां पुष्पाणि अवमुञ्चति, अप्येककान् पादयोः स्थापयति, अप्येककान् जङ्घयोः करोति, एवं ऊर्वोः, उत्सङ्गे, कटयां, पृष्ठे, उरसि, स्कन्धे, शीर्षे च करतलपुटेन गृहीत्वा हलउलयन्ती २ आगायन्ती २ परिगायन्ती २ पुत्रपिपासां च दुहितृपिपासां च नप्तृकपिपासां च नप्त्रीपिपासां च प्रत्यनुभवन्ती विहरति ।

ततः खलु ताः सुव्रता आर्याः सुभद्रामार्यामेवमवादीत्—वयं खलु देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यो नो खलु

अस्माकं कल्पते जातकर्म कर्तुम्, त्वं च खलु देवानुप्रिये! बहुजनस्य चेटरूपेषु मूर्च्छिता यावत् अध्युपपन्ना अभ्यञ्जनं च यावत् नप्त्रीपिपासां वा प्रत्यनुभवन्ती विहरसि, तत् खलु देवानुप्रिये! एतस्य स्थानस्य आलोचय यावत् प्रायश्चित्तं प्रतिपद्यस्व। ततः खलु सा सुभद्रा आर्या सुव्रतानामार्याणामेतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति, अनाद्रियमाणा अपरिजानन्ती विहरति।

ततः खलु ताः श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्यः सुभद्रामार्यां हीलन्ति निन्दन्ति खिंसन्ति गर्हन्ते अभीक्ष्णम् २ एतमर्थं निवारयन्ति। ततः खलु तस्याः सुभद्राया आर्याया श्रमणीभिर्निर्ग्रन्थीभिर्हील्यमानाया यावत् अभीक्ष्णम् २ एतमर्थं निवारयन्त्या अयमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत् समुदपद्यत–यदा खलु अहम् अगारवासं वसामि तदा खलु अहम् आत्मवशा, यतः प्रभृति च खलु अहं मुण्डा भूत्वा अगारात् अनगारतां प्रव्रजिता ततः प्रभृति च खलु अहं परवशा, पूर्वं च श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य आद्रियन्ते, परिजानन्ति, इदानीं नो आद्रियन्ते नो परिजानन्ति, तत् श्रेयः खलु मे कल्ये यावत् ज्वलति सुव्रतानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रम्य प्रत्येकम् उपाश्रयम् उपसंपद्य खलु विहर्तुम्, एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य कल्ये यावत् ज्वलति सुव्रतानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामयति, प्रतिनिष्क्रम्य प्रत्येकमुपाश्रयमुपसंपद्य खलु विहरति। ततः खलु सा सुभद्रा आर्या आर्याभिः अनपवद्धिका अनिवारिता स्वच्छन्दमतिः बहुजनस्य चेटरूपेषु मूर्च्छिता यावत् अभ्यञ्जनं च यावत् नप्त्रीपिपासां च प्रत्यनुभवन्ती विहरति।

ततः खलु सा सुभद्रा आर्या पार्श्वस्था पार्श्वस्थविहारिणी एवमवसन्ना अवसन्नविहारिणी कुशीला कुशीलविहारिणी संसक्ता संसक्तविहारिणी यथाच्छन्दा यथाच्छन्दविहारिणी बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा अर्द्ध मासिक्या संलेखनया आत्मनं जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि अनशनेन छित्त्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे बहुपुत्रिकाविमाने उपपातसभायां देवशयनीये देवदूष्यान्तरिता अङ्गुलस्य असंख्येयभागमात्रया अवगाहनया बहुपुत्रिकादेवीतया उपपन्ना।

ततः खलु सा बहुपुत्रिका देवी अधुनोपपन्नमात्रा सती पञ्चविधया पर्याप्त्या यावद् भाषामनःपर्याप्त्या०। एवं खलु गौतम! बहुपुत्रिकया देव्या दिव्या देवर्द्धिः यावत् अभिसमन्वागता। अथ सा केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते बहुपुत्रिका देवी २? गौतम! बहुपुत्रिका खलु देवी यदा यदा शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य उपस्थानं (प्रत्यासत्तिगमनं) करोति। तदा

तदा बहून् दारकांश्च दारिकाश्च डिम्भांश्च डिम्भिकाश्च विकुरुते, विकृत्य यत्रैव शक्रो देवेन्द्रो देवराजस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य दिव्या देवर्द्धिं दिव्यं देवज्योतिः दिव्यं देवानुभागमुपदर्शयति। तत्तेनाऽर्थेन गौतम ! एवमुच्यते बहुपुत्रिका देवी ॥ ८ ॥

टीका–'तएणं सा' इत्यादि–ततः=तदनन्तरं खलु इति वाक्यालङ्कारे सा=पूर्वोक्ता प्रसिद्धा या आर्या=साध्वी सुभद्रानाम्नी, अन्यदा=अन्यस्मिन् समये कदाचित्=अनिश्चितकाले बहुजनस्य=बहुलोकस्य चेटरूपे=कुमारस्वरूपे सम्मूर्च्छिता=समोहिता यावद् अध्युपपन्ना=बाल्प्रेमासक्ता सजाता अत एव अभ्यङ्गनं=तैलादिमर्दनम्, चकारः सर्वत्र वाक्यालङ्कारार्थकः, उद्वर्तनं=गात्रमलापनयनाय पिष्टादिसुगन्धिद्रव्यविशेषम्, प्रासुकपानं=प्रगता असवः उच्छ्वासनिच्छ्वासात्मकाः प्राणा यतस्तत् प्रासुकं, पीयते यत् तत् पानं, प्रासुकं च तत्पानं प्रासुकपानं सकलजीवोपाधिरहितमचित्तजलम् अलक्तकम्=हस्तचरणादिरञ्जकं मेहद्यादिद्रव्यविशेषम्, कङ्कणानि=वलयानि करभूषणविशेषान्, अञ्जनं=कज्जलम्, वर्णकं=चन्दनादिविशेषम्, चूर्णकं=गन्धद्रव्यसम्बन्धिरजः, खेलकानि=शालभञ्जिकादीनि ('खिलौना' इति भाषायाम्) खज्जलकानि=खाद्यद्रव्यविशेषान्

'तएणं सा' इत्यादि—

उसके बाद वह सुभद्रा आर्या एक समय गृहस्थके बालबचों पर प्रेम करने लगी और प्रेमके आवेशमें उन बचोंके लिये वह आर्या लगानेके लिये तेल, शरीरका मैल दूर करनेके लिये उबटन, पीनेके लिये प्रासुक जल, उन बच्चोंके हाथ पैर रंगनेके लिए मेंहदी आदि रञ्जक द्रव्य, कङ्कण=हाथोंमें पहननेका कडा, अञ्जन=काजल, वर्णक=चन्दन आदि, चूर्णक=सुगन्धित द्रव्य, खेलक=खेलनेके लिये शालभञ्जिका (पुतली) आदि खिलौने, लिये खाजे, पीनेके लिये दूध और

'तएणं सा' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે સુભદ્રા આર્યા એક વખત ગૃહસ્થના બાલબચ્ચા ઉપર પ્રેમ કરવા લાગી અને પ્રેમના આવેશમાં તે બચ્ચાને માટે તે આર્યા, ચોળવા માટે તેલ, શરીરનો મેલ દૂર કરવા માટે ઉબટન (પીઠી), પીવા માટે પ્રાસુક પાણી તે બચ્ચાના હાથ પગ રંગવા માટે મેંદી વગેરે રંજક દ્રવ્ય, કંકણ=હાથમાં પહેરવા માટે કડાં, બંગડી, અંજન=કાજળ વર્ણક=ચન્દન આદિ, ચૂર્ણક=સુગન્ધિત દ્રવ્ય, ખેલક=રમવા માટે પૂતળીઓ આદિ રમકડાં ખાવા માટે ખાજા પીવા માટે દૂધ તથા

(खाजा इति भाषायाम्) क्षीर=दुग्ध पुष्पाणि=कुसुमानि च गवेपयति= अन्वेपयति, गवेपयित्वा=अभ्यङ्गनादिपुष्पान्तवस्तूनि अन्वेष्य बहुजनस्य= विपुललोकस्य दारकान = बहुकालिकाबालकान् दारिकाः = बहुकालिक बालिका वा=अथवा कुमारान्=अतिक्तरवर्पकान बालकान् कुमारिकाः=बहु तरवार्षिका बालिका, डिम्भान्=अल्पकालिकशिशून् डिम्भिका'=अल्पकालिक बालिकाश्च, अप्येककान्=कांश्चन अभ्यङ्गयति=तैलेन गात्र मर्दयति, अपीति समुच्चयार्थक', तेन एकमपि तदतिरिक्तश्च अनेकमित्यर्थः। एककान् उद्वर्तयति= गात्रमलापनयनाय पिष्टादिसुगन्धिद्रव्य लेपयति, एवम्=अनेन प्रकारेण एककाः प्रासुकपानीयेन स्नपयति, एककाना पादौ=चरणौ रञ्जयति=अलक्तकादिना रक्तवर्णौ करोति, एककानाम् औष्ठौ=अधरौ रञ्जयति=रक्तवर्णौ विदधाति एककानाम् अक्षिणी=नेत्रे अञ्जयति=अञ्जनेन भूषिते करोति, एककानाम् इपुकान्= ललाटदेशे बाणाकारान् तिलकविशेपान् करोति, एककाना तिलकान्=केशरकुङ्कु मादिना ललाटे विन्यासविशेपान् करोति, एककान् दिगिन्दलके देशीशब्दो

माला आदिके लिये अचित्त फूल, इन सभी वस्तुओंका अन्वेषण करती थी। बादमें उन गृहस्थोंके लडके लडकियों में से, कुमार कुमारियों में से बच्चे बच्चियों में से, किसी एक को तेलकी मालिश करती थी, किसीकी देहमे उबटन लगाती थी, किसी एकके प्रासुक जलसे स्नान कराती थी, किसी एकके पैरोंको रगती थी एकके ओठोंको रगती थी, किसीकी आँखोमें अॅजन लगाती थी किसीके ललाट पर बाण आदिके आकारका तिलक लगाती थी किसीके ललाटपर केशर आदिके द्वारा तिलक विशेषका विन्यास करती थी, किसी एक बच्चेको हिण्डोलेमें रखकर झुलाती थी, और कुछ बच्चोंको एक कतार (पक्ति) में खडा करती थी

માલા (હાર) ને માટે અચિત્ત ફૂલ, આ બધી વસ્તુએ મેળવવાની શોધ કરતી હતી પછી તે ગૃહસ્થોના છોકરા, છોકરીઓમાંથી, કુમાર કુમારિકાઓમાંથી, બાળક અને બાળાઓમાંથી કોઇને તેલ માલીસ કરતી હતી, કોઈને શરીરે ઉબટન (પીઠી લગાડતી હતી, કોઇને પ્રાસુક પાણીથી સ્નાન કરાવતી હતી, કોઇના પગ રગી દેતી હતી કોઇના હોઠ રગતી હતી, કોઇને આજણ આજતી હતી તો કોઇના કપાળ ઉપર બાણ આદિના આકારનો ચાંડલો ચોડતી હતી, કોઇના કપાળે કેશર આદિના જુદા જુદા પ્રકારના તિલક આદિના વિન્યાસ કરતી હતી, કોઇ એક બાળકને હીંચ નાખતી હતી તથા કેટલાક બાળકની એક હાર કરી ઊભા રાખતી હતી અને

ऽय तेन-'हिन्दोलके' इत्यर्थः करोति, एककाना पङ्क्तीः=श्रेणीः करोति, एककान् छिन्नान्=छिन्नभिन्नान एकत्रस्थितान पृथक् पृथक् करोति, एककान् वर्णकेन=चन्दनविशेषेण समालभते=अनुलेपयति, एककान् चूर्णकेन=सुगन्धि द्रव्यविशेषेण समालभते=सुवासयति, एककेभ्यः खेलकानि=शालभञ्जिकादीनि ददाति, एककेभ्यः खज्जुलकानि=खाद्यद्रव्यविशेषान 'खाजा' इति भाषाप्रसिद्धान् ददाति, एककान् क्षीरभोजनं=दुग्धपान भोजयति=कारयति, एककाना पुष्पाणि=कुसुमानि अवमोचयति=कण्ठादितोऽधस्ताद्विसर्जयति, एककान् पादयोः=चरणयोः स्थापयति, एककान् जङ्घयोः करोति, एवम्=अनेन प्रकारेण ऊर्वोः, उत्सङ्गे=क्रोडे, कटया=श्रोण्या, पृष्ठे=पृष्ठभागे, उरसि=वक्षसि, स्कन्धे =असे शीर्षे=शिरसि, करतलपुटेन=पाणितलपुटेन गृहीत्वा हलउलयन्ती=बालरञ्जनाय मधुरालाप 'हुलरावा' इति भाषाप्रसिद्ध कुर्वती, आगायन्ती=बालरञ्जनाय मन्द मन्द गायन्ती, परिगायन्ती=बालान् रुदतो विलोक्य उच्चस्वरेण

तथा पङ्क्तिमें खडे हुए बच्चोको अलग २ खडा करती थी, एकके शरीरमे चन्दन लगाती थी, तो एकके शरीर को सुगन्धित चूर्णक (पाउडर) से सुवासित करती थी, एकको खेलनेके लिये खिलौना देती थी, तथा किसीको खानेके लिये खाजे देती थी, और किसीको दूध पीलाती थी, किसीके कण्ठमे पडी हुई अचित्त (कागदके) फूलोंकी माला उतार लेती थी, किसीको अपने पैरोपर बैठाती थी तो किसीको अपनी जङ्घापर रखती थी और इसी प्रकार किसीको ऊरुपर, किसीको अपनी गोदीमे किसीको अपनी कमरपर, किसीको पीठपर किसीको अपनी छातीपर किसीको कन्धेपर किसीको अपने शिरपर रखती थी, किसीको हाथसे पकडकर झुलराती हुई और बालकोंके मनोरजनके लिये मन्द स्वरसे गाती हुई, बालकोको

હારમા ઉભેલામાથી કેટલાક બાળકોને જુદા જુદા ઊભા રાખતી હતી એકના શરીરને ચદન લગાવતી હતી તો એકને સુગધિત પાઉડરથી સુવાસિત કરતી હતી એકને રમવા માટે રમકડા દેતી તો કોઇને ખવા માટે ખાજા દેતી હતી અને કોઇને દૂધ પાતી હતી કેઇના ડોકમથી અચિત્ત (કાગળના) ફૂલની માળા ઉતારી લેતી કોઇને પોતાના પગ ઉપર બેસાડતી તો કોઇને પાતાના ખોળામા રાખતી કોઇને પેટ ઉપર તો કોઇને સાથળ ઉપર અને કોઇને કેડે તો કોઇને પીઠ ઉપર, કોઇને છાતી ઉપર તો કોઇને કાધ ઉપર કોઇને માથા ઉપર રાખતી તો કોઇને હાથેથી પકડીને હુલરાવતી બાળકને આનદ માટે ધીમા ધીમા સ્વરથી ગાતી અને રોતા બાળકને જોઇને તાળીને

गायन्ती, पुत्रपिपासा=पुत्रलालसा दुहितृपिपासा=पुत्रीवाञ्छा नप्तृकपिपासा=पौत्रदौहित्रलालसा नप्त्रीपिपासा=पौत्री दौहित्री स्पृहा च प्रत्यनुभवन्ती=एतत्कार्येण सन्तोष मन्यमाना विहरति=आस्ते। ततः खलु ताः=दीक्षादात्र्यः सुव्रता आर्याः=साध्व्य सुभद्रामेव=वक्ष्यमाणम् अवादिषु.—हे देवानुप्रिये! वय श्रमण्यः ससारविषयविरक्ता. साध्व्य. निर्ग्रन्थ्य.=ग्रन्थिरहिता ईर्यासमिता यावत् शब्देन भाषासमिता, इत्यादीना सग्रह', गुप्तब्रह्मचारिण्य.=सुरक्षितब्रह्मचर्या, नो खलु अस्माकं=श्रमणीना निर्ग्रन्थीनाम् जातकर्म=शिशुक्रीडनादिक्रिया कर्तुम्=अनुष्ठातु कल्पते=युज्यते, हे देवानुप्रिये! सुभद्रे! त्व बहुजनस्य चेटरूपेषु=कुमारस्वरूपेषु मूर्च्छिता=समोहिता यावत् अध्युपपन्ना दत्तचित्ता अभ्यङ्गन यावच्छब्देन वर्णकादीना सङ्ग्रह, नप्त्रीपिपासा=पौत्रीदौहित्रीस्पृहा प्रत्यनुभवन्ती

रोते हुए देखकर उच्च स्वरसे गाती हुई पुत्रकी लालसा, पुत्रीकी वाञ्छा, पोते और दौहित्रोंकी वाञ्छा, पौत्री और दौहित्रीकी इच्छाका अनुभव करती हुई, अपने उक्त कार्योंसे सन्तुष्ट होती हुई विचरण कर रही थी।

उसके ऐसे आचरणको देखकर सुव्रता आर्या सुभद्रा आर्यासे इस प्रकार बोली-हे देवानुप्रिये! अपन लोग संसारिक विषयोंसे विरक्त, ईर्यासमिति आदिसे युक्त यावत गुप्तब्रह्मचारिणी निर्ग्रन्थ श्रमणी हैं, इसलिये हम लोगोंको बालक्रीडा करना कराना आदि नही कलपता है। हे देवानुप्रिये! तुम गृहस्थोके बच्चोंसे प्रेम करने लग गयी हो बच्चोंको तेल आदि लगानेकी क्रिया आदि अकल्पनीय कार्य कर रही हो। तथा पुत्र पुत्री, पौत्र पौत्री और दौहित्र

ગાતી, પુત્રની લાલસા, પુત્રીની વાચ્છા, પૌત્ર અને દૌહિત્રની વાચ્છા, તથા પૌત્રી અને દૌહિત્રીની વાચ્છાના અનુભવ કરીને પોતાના એ કાર્યોથી સતોષ માની વિચરણ કરતી હતી

તેના આવા આચરણો જોઈને સુવ્રતા આર્યા સુભદ્રા આર્યાને આ પ્રકારે કહેવા લાગી હે દેવાનુપ્રિયે! આપણે લોકો સાસારિક વિષયોથી વિરકત ઈર્યાસમિતિ આદિથી યુકત યાવત્ ગુપ્ત બ્રહ્મચારિણી નિર્ગ્રન્થ શ્રમણી છીએ માટે આપણે બાળકને રમાડવુ આદિ કરાવવાનું નથી હે દેવાનુપ્રિયે! તમે ગૃહસ્થોના બચ્ચાને પ્રેમ કરવા લાગી ગયા છો બચ્ચાને તેલ આદિ લગાડવાની ક્રિયાથી માડીને બધા અકલ્પનીય કાર્યો કરી રહ્યા છો તથા પુત્ર-પુત્રી પૌત્ર-પૌત્રી અને દૌહિત્ર-દૌહિત્રીની વાચ્છના અનુભવ કરતા

ऽय तेन-'हिन्दोलके' इत्यर्थः करोति, एककाना पङ्क्तीः=श्रेणीः करोति, एककान् छिन्नान्=छिन्नभिन्नान एकत्ररिचतान पृथक् पृथक् करोति, एककान् वर्पकेन=चन्दनविशेषेण समालभते=अनुलेपयति, एककान् चूर्णकेन=सुगन्धि द्रव्यविशेषेण समालभते=सुवासयति, एककेभ्यः खेलकानि=शाल्भञ्जिकादीनि ददाति, एककेभ्यः खज्जुलकानि=खाद्यद्रव्यविशेषान 'खाजा' इति भाषा प्रसिद्धान् ददाति, एककान् क्षीरभोजन=दुग्धपान भोजयति=कारयति, एककाना पुष्पाणि=कुसुमानि अवमोचयति=कण्ठादितोऽधस्ताद्विसर्जयति, एककान् पादयो =चरणयो. स्थापयति, एककान् जङ्घयोः करोति, एवम्=अनेन प्रकारेण ऊर्वो, उत्सगे=क्रोडे, कटया=श्रोण्या, पृष्ठे=पृष्ठभागे, उरसि=वक्षसि, स्कन्धे =असे शीर्षे=शिरसि, करतलपुटेन=पाणितलपुटेन गृहीत्वा हलउलुगन्ती=बाल रञ्जनाय मधुरालाप 'हुलरावा' इति भाषाप्रसिद्ध कुर्वती, आगायन्ती=बालरञ्जनाय मन्द मन्द गायन्ती, परिगायन्ती=बालान् रुदता विलोक्य उच्चस्वरेण

तथा पङ्क्तिमें खडे हुए बच्चोको अलग २ खडा करती थी, एकके शरीरमे चन्दन लगाती थी, तो एकके शरीर को सुगन्धित चूर्णक (पाउडर) से सुवासित करती थी, एकको खेलनेके लिये खिलौना देती थी, तथा किसीको खानेके लिये खाजे देती थी, और किसीको दूध पीलाती थी, किसीके कण्ठमे पडी हुई अचित्त (कागदके) फूलोंकी माला उतार लेती थी, किसीको अपने पैरोपर बैठाती थी तो किसीको अपनी जङ्घापर रखती थी और इसी प्रकार किसीको ऊरुपर, किसीको अपनी गोदीमे किसीको अपनी कमरपर, किसीको पीठपर किसीको अपनी छातीपर किसीको कन्धेपर किसीको अपने शिरपर रखती थी, किसीको हाथसे पकडकर झुलराती हुई और बालकाके मनोरजनके लिये मन्द स्वरसे गाती हुई, बालकोको

હારમા ઉભેલામાથી કેટલાક બાળકોને જુદા જુદા ઊભા રાખતી હતી એકના શરીરને ચદન લગાવતી હતી તો એકને સુગધિત પાઉડરથી સુવાસિત કરતી હતી એકને રમવા માટે રમકડા દેતી તો કોકને ખવા માટે ખાજા દેતી હતી અને કોઇને દૂધ પાતી હતી કેઇના ડોકમાથી અચિત્ત (કાગળના) ફૂલની માળા ઉતારી લેતી કોઇને પોતાના પગ ઉપર બેસાડતી તો કોઇને પોતાના ખોળામા રાખતી કોઇને પેટ ઉપર તો કોઇને સાથળ ઉપર અને કોઇને કેડે તો કોઇને પીઠ ઉપર, કોઇને છાતી ઉપર તો કોઇને કાધ ઉપર કોઇને માથા ઉપર રાખતી તો કોઈને હાથેથી પકડીને હુલરાવતી બાળકને આનદ માટે ધીમા ધીમા સ્વરથી ગાતી અને રોતા બાળકને જોઇને તાળીને

ऽऽविष्करणपूर्वकं तिरस्कुर्वन्ति, अभीक्ष्ण २=वारवारम् एतमर्थं=पुत्रादिलालनादिविषय निवारयन्ति=अवरुन्धन्ति। तत खलु तस्याः सुभद्राया आर्यायाः श्रमणीभिर्निर्ग्रन्थीभि हिल्यमानाया यावत् अभीक्ष्णम् २ एतमर्थं निवार्यमाणायाः अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणलक्षण' आ यात्मिकः=अन्तःकरणगतः सङ्कल्पो यावत् समुदपद्यत। अनपघट्टिका=अविद्यमानोऽपघट्टकोयदन्ज्या प्रवर्त्तमानाया हस्तग्रहणादिना

स्कार रूप 'गर्हणा' करती हे और वे बालक बालिकाओ आदिका लालन विषय का बार बार निवारण करती है।

उसके बाद उन सुव्रता आदि आर्याओंके द्वारा पूर्वोक्त प्रकारसे हीलना निन्दना आदि करनेपर तथा बारम्बार निवारण करनेपर उस सुभद्रा आर्याके अन्त करणमे इस प्रकारका विचार उत्पन्न हुआ कि 'जब मै अपने घरमे थी तो स्वतन्त्र थी, जब मै घर छोडकर मुण्डित हो प्रव्रजित हो गई तबसे मै पराधीन हूँ। पहले ये श्रमण निर्ग्रन्थियॉ मेरा आदर करती थी और मेरे साथ प्रेमका वर्ताव करती थी, पर आज ये न मेरा आदर ही करती है और न प्रेमका वर्ताव ही करती हैं, अपितु ये सर्वदा मेरी निन्दा करती रहती है। इसलिये मुझे उचित है कि प्रात काल होते ही इन सुव्रता आर्याओंको छोडकर अलग उपाश्रयमे जाकर उतरूं। ऐसा विचार कर सूर्योदय होते ही सुव्रता आर्याओंको छोडकर वह सुभद्रा आर्या निकल गयी और अलग उपाश्रयमे जाकर अकेली ही रहने लगी। उसके बाद वह सुभद्रा आर्या गुरुणी आदिके द्वारा

ખુલ્લા કરીને તિરસ્કારરૂપે गर्हणा કરતી વાર વાર પુત્ર આદિના લાલન વિષયનુ નિવારણ કરે છે

તે સુવ્રતા આદિ આર્યાઓના ઉપરોક્ત પ્રમાણે हीलना निन्दना આદિ કરવાથી અને નિવારણ (મનાઇ) કરવામા આવતા તે સુભદ્રા આર્યાના અ ત કરણમા એવો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે 'જ્યારે હુ મારે ઘેર હતી ત્યારે સ્વતત્ર હતી હવે જ્યારે ઘર છોડી મુડિત થઇ પ્રવ્રજિત થઇ, ત્યારથી હુ પરાધીન છુ પહેલા આ શ્રમણ નિર્ગ્રન્થિઓ મારો આદર કરતી હતી અને મારા સાથે પ્રેમનો વર્તાવ કરતી હતી પણ આજ તે નથી મારો આદર કરતી કે નથી મારી સાથે પ્રેમનો વર્તાવ કરતી ઉલટી તે હમેશા મારી નિન્દા કર્યા કરે છે માટે સવાર પડતા જ આ સુવ્રતા આર્યાઓને છોડી દઇ કોઇ જુદા ઉપાશ્રયમા ઉતરૂ એ મારા માટે ઉચિત છે એમ વિચાર કરી સૂર્યોદય થતા જ સુવ્રતા આર્યાઓને છોડીને તે સુભદ્રા આર્યા નીકળી પડી અને જુદા ઉપાશ્રયમા જઇ

विहरसि, तत्=तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिये ! एतस्य स्थानस्य एतत्कर्तव्यस्य आलोचय=आलोचना कुरु यावत् प्रायश्चित्त=पापापनोदनरूपाम् क्रिया प्रतिपद्यस्व स्वीकुरु। ततः खलु सुभद्रा आर्या सुव्रतानामार्याणामेतम्=अव्यवहितोक्तम् अर्थम्=निर्दिष्टविषयम् नो आद्रियते=न सत्करोति नो परिजानाति=कर्तव्यत्वेन नो स्वीकरोति, अनाद्रियमाणा=उपेक्षमाणा, अपरिजानन्ती=कर्तव्यत्वेन तदुक्तमस्वीकुर्वाणा विहरति।

ततः खलु ता श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य सुभद्रामार्यं हिलन्ति=जन्मकर्ममर्मोद्घाटनपूर्वकं निर्भत्सयन्ति, निन्दन्ति=कुत्सितशब्दपूर्वकं दोषोद्घाटनेन अनाद्रियन्ते, खिसन्ति=हस्तमुखादिविकारपूर्वकमवमन्यन्ते, गर्हन्ते=गुर्वादिसमक्षं दोषा

दौहित्रीकी वाञ्छाका अनुभव करती हुई विचर रही हो, सो हे देवानुप्रिये ! तुम अपने इस कार्यपर विचार करो और इस पापकी विशुद्धिके लिये आलोचना करो और प्रायश्चित्त लो।

उन आर्याओंके द्वारा इस प्रकार अकल्पनीय बातोंका निषेध करनेपर भी उस सुभद्रा आर्याने न उन बातोंका कुछ आदर किया और न उन बातोंपर कुछ ध्यान ही दिया अपितु उसी प्रकारका व्यवहार करती हुई विचरने लगी।

उसके बाद वे आर्याय सुभद्रा आर्याकी 'तुम उत्तम कुलमे जन्म लेकर और उत्तम सयम अवस्थामे आकर ऐसे तुच्छ कर्म करती हो' इस प्रकारकी 'हीलना' करती है, और वे कुत्सित शब्द बोलकर उसका दोष प्रकट करती हुई 'निन्दना' करती हैं। हाथ मुख आदिको विकृत करके अपमान करती हुई 'खिसना' करती है। गुरु जनोंके समीप उसके दोषोंका उद्घाटन करती हुई तिर

વિચરો છો માટે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે તમારા આ કાર્યો માટે વિચાર કરો અને આ પાપની વિશુદ્ધિને માટે આલોચના કરો અને પ્રાયશ્ચિત્ત લો.

તે આર્યાઓના આ પ્રકારે અકલ્પનીય વાતોના નિષેધ કરવા છતા પણ તે સુભદ્રા આર્યાએ ન તો તે વાતોને માની કે ન તેના ઉપર કાઇ ધ્યાન આપ્યુ પણ તેજ પ્રકારના વ્યવહાર કરતી વિચરવા લાગી

ત્યાર પછી તે આર્યાઓ કહેતી કે—'તમે ઉત્તમ કુળમા જન્મીને ઉત્તમ સયમ અવસ્થામા આવી આવા તુચ્છ કર્મ કરો છો' આવા પ્રકારની હીલના કરતી, કુત્સિત શબ્દો (મેણા) બોલીને તેના દોષ જાહેર કરતી કરતી નિન્દના કરવા લાગી હાથ મો આદિથી ચાળા પાડી અપમાન કરતી ખિસના કરવા લાગી, ગુરૂજનોની પાસે તેના દોષો

सामाचारी शिथिलीकरणपूर्वक प्रवृत्ता यथाच्छन्दा=स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमतिकल्पितमार्गे प्रवृत्ता । शेष सुगमम् ॥५॥

पुत्रिका विमानमे उपपात सभाके अन्दर देवशयनीय शय्यामें देवदूष्य वस्त्रोंसे आच्छादित जघन्य अगुलके असख्यातवें भागमात्र अवगाहनावाली बहुपुत्रिका देवी होकर उत्पन्न हुई। उसके बाद यह बहुपुत्रिका देवी भाषापर्याप्ति मन.पर्याप्ति आदि पांच प्रकारकी पर्याप्तिसे पर्याप्त अवस्थाको प्राप्त कर उत्कृष्ट सात हाथकी अवगाहनावाली देवी होकर देवअवस्थामें विचरने लगी ।

हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवी इस प्रकार अपनी दिव्य देव ऋद्धि आदिसे यावत् समन्वित हुई है ।

हे भदन्त ! किस कारणसे इसका नाम बहुपुत्रिका हुआ ?

हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवी जब-जब देवराज इन्द्रके पास जाती है तब-तब वह बहुतसे लडके लडकियोंकी और बच्चे बच्चियोंकी विकुर्वणा करती है। विकुर्वणा करनेके बाद जहाँ देवताओंके राजा इन्द्र है वहाँ आती है, और देवताओंके राजा इन्द्रको अपनी दिव्य ऋद्धि, दिव्य देव ज्योति और दिव्य तेजको दिखलाती है। हे गौतम ! इसलिये यह बहुपुत्रिका देवी कहलाती है ॥ ५ ॥

ઉપપાત સભાની અદર દેવશયનીય શય્યામા દેવદૂષ્ય વસ્ત્રોથી આચ્છાદિત જઘન્ય અગુલના અસખ્યાતમા ભાગ માત્ર (અવગાહના) વાળી બહુપુત્રિકા દેવી થઈને ઉત્પન્ન થઇ ત્યાર પછી જન્મતી વખતે આ બહુપુત્રિકા દેવી ભાષાપર્યાપ્તિ મનપર્યાપ્તિ આદિ પાચ પ્રકારોની પર્યાપ્તિથી પર્યાપ્ત અવસ્થાને પામી ઉત્કૃષ્ટ-સાત હાથની અવગાહનાવાળી દેવી થઈ દેવ અવસ્થામા વિચરવા લાગી

હે ગૌતમ ! બહુપુત્રિકા દેવી આ પ્રકારે પોતાની દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિથી સમન્વિત (પરિપૂર્ણ) થઈ છે

હે ભદન્ત ! કયા કારણથી તેનુ નામ બહુપુત્રિકા પડયુ ?

હે ગૌતમ ! બહુપુત્રિકા દેવી જ્યારે જ્યારે દેવોના રાજા ઇન્દ્રની પાસે જાય છે ત્યારે ત્યારે તે ઘણા છોકરા-છોકરી તથા બાળકો અને બાળાઓની વિકુર્વણા કર્યા પછી જ્યા દેવતાઓના રાજા ઇન્દ્ર છે ત્યા આવે છે અને તે દેવતાઓના રાજા ઇન્દ્રને પોતાની દિવ્ય ઋદ્ધિ-દિવ્ય દેવજ્યોતિ તથા દિવ્ય તેજ દેખાડે છે હે ગૌતમ ! આ માટે તે બહુપુત્રિકા દેવી કહેવાય છે (૫)

निवर्तको यस्याः सा तथा, स्वच्छन्दप्रवृत्ता, पार्श्वस्था पार्श्वे=साधुगुणानामेकत.=साधुगुणेभ्यः पृथगित्यर्थ , तिष्ठतीति तथा, अवसन्ना=सामाचारीपालने अवसीदति=खेदमनुभवतीति तथा, कुशीला=कु=कुत्सित उत्तरगुणप्रतिसेवनया सञ्ज्वलनकषायोदयेन वा दूषितत्वात् शील यस्याः सा तथा, ससक्ता=गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन

रुकावट न होनेके कारण स्वच्छन्द मति हो गृहस्थोंके बच्चासे पूर्ववत् व्यवहार करने लगी।

उसके बाद वह सुभद्रा आर्या पार्श्वस्था=साधुके गुणोसे दूर हो, पार्श्वस्थ-विहारिणी हो गयी, इसी प्रकार अवसन्न=सामाचारी पालनमें खिन्न हो अवसन्न विहारिणी हो गयी। और उत्तर गुणमे दोष लगानेसे तथा सञ्ज्वलन कषायके उदयसे कुशीला हो कुशील विहारिणी हो गई और ससक्ता=गृहस्थ आदिके साथ प्रेम बन्धन करनेके कारण सामाचारीमे शिथिलतासे प्रवृत्त हो ससक्तविहारिणी हो गयी, यथाच्छन्दा=अपने अभिप्रायसे कल्पित मार्गमे प्रवृत्त हो यथाच्छन्दविहारिणी हो गयी। इस प्रकार बहुत वर्षों तक उसने श्रामण्य पर्यायका पालन किया। अन्तमे अर्धमासिकी सलेखना द्वारा अपनी आत्माको सेवित कर तीस भक्तोको अनसन द्वारा छेदन कर अपने उत्तरगुण प्रतिसेवनरूप पापस्थानकी आलोचना और प्रतिक्रमण नही करके काल अवसरमे कालकर सौधर्म कल्पके बहु-

એકલી જ રહેવા લાગી ત્યાર પછી તે સુભદ્રા આર્યા ગુરૂણી આદિનો અકુશ ન રહેવાથી સ્વચ્છન્દચારિણી થઇ ગૃહસ્થોના બાળકો સાથે આગળના જેવો વ્યવહાર કરવા લાગી

ત્યાર પછી તે સુભદ્રા આર્યા પાશ્વસ્થ થઇ=સાધુના ગુણોથી દૂર થઇ પાર્શ્વસ્થ વિહારિણી થઇ આ પ્રકારે અવસન્ન થઇ સામાચારી પાલનમા ખિન્ન થઇ અવસન્ન વિહારિણી બની કુશીલ થઇ અને ઉત્તરગુણમા દોષ લાગવાના કારણે તથા સજ્વલન કષાયોના ઉદયથી કુશીલા થઇ કુશીલ વિહારિણી થઇ, અને સસક્તા=ગૃહસ્થ વગેરેની સાથે પ્રેમ બન્ધન કરવાના કારણથી સામાચારીમા શિથિલ પ્રવૃત્તિવાળી થઇ=સસક્ત વિહારિણી થઇ ગઇ યથાછન્દા=પોતાની મરજીમા આવે તે કલ્પિત માર્ગમા પ્રવૃત્ત થઇ =યથાછન્દ વિહારિણી થઇ આ પ્રકારે ઘણા વર્ષો સુધી તેણે દીક્ષા પર્યાયનુ પાલન કર્યું આખરે અર્ધમાસિકી સલેખનાથી પોતાના આત્માને સેવિત કરીને ત્રીશ ભકતોનુ અનશન દ્વારા છેદન કરી પોતાના ઉત્તરગુણ પ્રતિસેવનરૂપ પાપસ્થાનની આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ ન કરતા કાલઅવસરમા કાલ કરી સૌધર્મ કલ્પના બહુપુત્રિકા નામે વિમાનમા-

सामाचारी शिथिलीकरणपूर्वक प्रवृत्ता यथाच्छन्दा=स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमतिकल्पितमार्गे प्रवृत्ता । शेष सुगमम् ॥५॥

पुत्रिका विमानमे उपपात सभाके अन्दर देवशयनीय शय्यामे देवदूष्य वस्त्रोंसे आच्छादित जघन्य अगुलके असख्यातवें भागमात्र अवगाहनावाली बहुपुत्रिका देवी होकर उत्पन्न हुई। उसके बाद यह बहुपुत्रिका देवी भाषापर्याप्ति मनःपर्याप्ति आदि पाँच प्रकारकी पर्याप्तिसे पर्याप्त अवस्थाको प्राप्त कर उत्कृष्ट सात हाथकी अवगाहनावाली देवी होकर देवअवस्थामें विचरने लगी ।

हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवी इस प्रकार अपनी दिव्य देव ऋद्धि आदिसे यावत् समन्वित हुई है ।

हे भदन्त ! किस कारणसे इसका नाम बहुपुत्रिका हुआ ?

हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवी जब-जब देवराज इन्द्रके पास जाती है तब-तब वह बहुतसे लडके लडकियोकी और बच्चे बच्चियोंकी विकुर्वणा करती है । विकुर्वणा करनेके बाद जहाँ देवताओंके राजा इन्द्र है वहाँ आती है, और देवताओंके राजा इन्द्रको अपनी दिव्य ऋद्धि, दिव्य देव ज्योति और दिव्य तेजको दिखलाती है। हे गौतम ! इसलिये यह बहुपुत्रिका देवी कहलाती है ॥ ५ ॥

ઉપપાત સભાની અંદર દેવશયનીય શય્યામાં દેવદૂષ્ય વસ્ત્રોથી આચ્છાદિત જઘન્ય અંગુલના અસંખ્યાતમા ભાગ માત્ર (અવગાહના) વાળી બહુપુત્રિકા દેવી થઈને ઉત્પન્ન થઈ ત્યાર પછી જન્મતી વખતે આ બહુપુત્રિકા દેવી ભાષાપર્યાપ્તિ મનપર્યાપ્તિ આદિ પાંચ પ્રકારોની પર્યાપ્તિથી પર્યાપ્તિ અવસ્થાને પામી ઉત્કૃષ્ટ-સાત હાથની અવગાહનાવાળી દેવી થઈ દેવ અવસ્થામાં વિચરવા લાગી

હે ગૌતમ ! બહુપુત્રિકા દેવી આ પ્રકારે પોતાની દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિથી સમન્વિત (પરિપૂર્ણ) થઈ છે

હે ભદન્ત ! કયા કારણથી તેનું નામ બહુપુત્રિકા પડ્યું ?

હે ગૌતમ ! બહુપુત્રિકા દેવી જ્યારે જ્યારે દેવોના રાજા ઈન્દ્રની પાસે જાય છે ત્યારે ત્યારે તે ઘણા છોકરા-છોકરી તથા બાળકો અને બાળાઓની વિકુર્વણા કર્યા પછી જ્યાં દેવતાઓના રાજા ઈન્દ્ર છે ત્યાં આવે છે અને તે દેવતાઓના રાજા ઈન્દ્રને પોતાની દિવ્ય ઋદ્ધિ-દિવ્ય દેવજ્યોતિ તથા દિવ્ય તેજ દેખાડે છે હે ગૌતમ ! આ માટે તે બહુપુત્રિકા દેવી કહેવાય છે (૫)

मूलम्—बहुपुत्तियाए णं भंते! देवीए केवइयं कालं ठिइ पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। बहुपुत्तिया णं भंते! देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! इहेव जम्बूदीवे दीवे भारहे वासे विज्झगिरिपायमूले विभेलसंनिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिइ। तएणं तीसे दारियाए अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वितिक्कंते जाव बारसेहिं दिवसेहिं वितिक्कंतेहिं अयमेयारूवं नामधिज्जं करेंति, होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जं सोमा। तएणं सोमा उम्मुक्कबालभावा विण्णयपरिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाव भविस्सइ। तएणं तं सोमं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं विण्णयपरिणयमित्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिकूविएणं सुक्केणं पडिरूवएणं नियगस्स भायणिज्जस्स रट्ठकूडयस्स भारियत्ताए दलइस्सइ। सा णं तस्स भारिया भविस्सइ इट्ठा कंता जाव भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविआ चेलपेला(डा) इव सुसंपरिग्गहिया रयणकरंडगओ विव सुसारक्खिया सुसंगोविया मा णं सीयं जाव मा णं विविहा रोगातंका फुसंतु।

तए णं सा सोमा माहिणी रट्ठकूडेण सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी संवच्छरे २ जुयलगं पयायमाणी सोलसेहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाइ। तए णं सा सोमा

माहणी तेहिं बहूहिं दारगेहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य डिभएहि य डिभियाहि य अप्पेगइएहि उत्ताणसेज्जएहि य अप्पेगइएहि थणियाएहि य अप्पेगइएहि पीहगपाएहिं अप्पेगइएहिं परंगणएहिं अप्पेगइएहिं परक्कममाणेहिं, अप्पेगइएहिं पक्खोलणएहिं अप्पेगइएहिं थणं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहि खीरं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहि खिल्लणय मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खज्जग मग्गमाणेहि अप्पेगइएहि कूर मग्गमाणेहि पाणिय मग्गमाणेहिंहसमाणेहिं रूसमाणेहिं अक्कोस्समाणेहि अक्कुस्समाणेह हणमाणेहि विप्पलायमाणेहिं अणुगम्ममाणेहिं रोवमाणेहि कंदमाणेहिं विलवमाणेहिं कूवमाणेहिंउक्कूवमाणेहिं निद्धायमाणेहिं पलवमाणेहिं दहमाणेहि दसमाणेहिं वममाणेहि छेरमाणेहिं मुत्तमाणेहि मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता मइलवसणपुच्चडा जाव असुइबीभच्छा परमदुग्गंधा नो सचाएइ रट्ठकूडेण सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए ॥ ६ ॥

छाया—बहुपुत्रिकाया भदन्त ! देव्याः कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! चतुःपल्योपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता। बहुपुत्रिका खलु भदन्त ! देवी तस्माद्देवलोकादायुःक्षयेण स्थितिक्षयेण भवक्षयेण अनन्तरं चयं च्युत्वा क्व गमिष्यति क्व उत्पत्स्यते ? गौतम ! अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे विन्ध्यगिरिपादमूले विभेलसन्निवेशे ब्राह्मणकुले दारिकातया प्रत्यायास्यति। ततः खलु तस्या दारिकाया अम्बापितरौ एकादशे दिवसे व्यतिक्रान्ते यावद् द्वादशाभिर्दिवसैर्व्यतिक्रान्तैरिदमेतद्रूपं नामधेयं कुरुतः, भवतु अस्माकमस्या दारिकाया नामधेयं सोमा। ततः खलु सोमा उन्मुक्तबालभावा विज्ञकपरिणतमात्रा यौवनमनुप्राप्ता रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च उत्कृष्टा उत्कृष्टशरीरा यावद् भविष्यति। ततः खलु तां सोमां दारिकाम् अम्बापितरौ उन्मुक्तबालभावां

विज्ञकपरिणतमात्रा यौवनमनुप्राप्ता प्रतिकूजितेन शुल्केन प्रतिरूपेण निजकाय भागिनेयाय राष्ट्रकूटकाय भार्यातया दास्यति । सा खलु तस्य भार्या भवि ष्यति इष्टा कान्ता यावद् भाण्डकरण्डकसमाना तैलकेला इव सुसगोपिता चेलपेटा इव सुसपरिगृहीता रत्नकरण्डक इव सुसरक्षिता सुसगोपिता मा खलु शीत यावत् मा विविधा॰ रोगातङ्काः स्पृशन्तु । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान भोगभोगान भुञ्जाना सवत्सरे युगल प्रज नयन्ती षोडशभि सवत्सरै' द्वात्रिंशद् दारकरूपाणि प्रजनयति । तत खलु सा सोमा ब्राह्मणी तैर्बहुभिर्दारकैश्च दारिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च डिम्भैश्च डिम्भिकाभिश्च अप्येककै॰ उत्तानशयकैश्च, अप्येककै॰ स्तनितैश्च अप्येककैः स्पृहकपादै , अप्येककै॰ पराङ्गणकै , अप्येककैः पराक्रममाणै', अप्येककै॰, प्रस्ख लनकै॰, अप्येककै॰ स्तन मृग्यमाणै॰ अप्येककै , क्षीर मृग्यमाणै , अप्येककै॰, खेलनक मृग्यमाणै॰, अप्येककैः खाद्यक मृग्यमाणै , अप्येककै॰ कूर (भक्त) मृग्यमाणै॰, पानीय मृग्यमाणै॰, हसद्भिः, रुष्यद्भि', आक्रोशद्भि , आकुश्यद्भि॰, घ्नद्भि , हन्यमानै , विमलपद्भि॰, अनुगम्यमानै', रुदद्भि , क्रन्दद्भि , विलपद्भि॰, कूजद्भि , उत्कूजद्भि , निर्धावद्भि॰, प्रलम्बमानै , दहद्भि दशद्भिः, वमद्भि॰, छेरद्भिः, मूत्रयद्भि , मूत्रपुरीषवान्तसुलिप्तोपलिप्ता मलिनवसनपुच्चडा यावद् अशुचिबीभत्सा परमदुर्गन्धा नो शक्नोति राष्ट्रकूटेन सार्द्ध विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहर्तुम् ॥ ६ ॥

टीका–'बहुपुत्तियाएण' इत्यादि–हे भदन्त ! बहुपुत्रिकाया देव्याः कियन्त काल स्थिति॰ प्रज्ञप्ता ? हे गौतम ! चतु॰पल्योपमा स्थिति प्रज्ञप्ता । हे भदन्त ! बहुपुत्रिका देवी तस्माद् देवलोकाद् आयु क्षयेण=आयुर्दलिक निर्जरणेन देवलोकवासोचितावधिव्यतिगमेन स्थितिक्षयेण=आयु कर्मण

'बहुपुत्तियाएण' इत्यादि—

हे भदन्त ! बहुपुत्रिकादेवीकी स्थिति कितने कालकी है ?

हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवीकी स्थिति चार पल्योपमकी है !

हे भदन्त ! वह बहुपुत्रिकादेवी आयुक्षय भवक्षय और स्थिति

'बहुपुत्तियाएण' ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત ! બહુપુત્રિકા દેવીની સ્થિતિ કેટલા સમયની છે ?

હે ગૌતમ ! બહુપુત્રિકા દેવીની સ્થિતિ ચાર પલ્યોપમ છે

હે ભદન્ત ! તે બહુપુત્રિકા દેવી આયુક્ષય, ભવક્ષય તથા સ્થિતિક્ષય પછી દેવલોકમાંથી ચ્યવીને ક્યાં જશે ? ક્યાં જન્મ લેશે ?

स्थितिनिर्जरणेन भवक्षयेण=देवभवकारणभूतकर्मणा गत्यादीना निर्जरणेन क=कुत्र उत्पत्स्यते ?=जनिष्यते ? गौतम ! अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे=तन्नामके द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे भारते=तन्नामके वर्षे विन्ध्यगिरिपादमूले=विन्ध्याचलाधस्तले विभेलसनिवेशे=विभेलनामकग्रामविशेषे ब्राह्मणकुले=ब्राह्मणवंशे दारिकातया=पुत्रीत्वेन प्रजनिष्यते=समुत्पत्स्यते। ततः=जननानन्तरं खलु तस्या दारिकाया अम्बापितरौ=मातापितरौ एकादशे दिवसे=दिने व्यतिक्रान्ते=व्यतीते यावत् द्वादशभिर्दिवसैः इदमेतद्रूपं=वक्ष्यमाणलक्षणं नामधेयं कुरुत, अस्माकमस्याः दारिकायाः=पुत्र्याः 'सोमा' इति नामधेयं=नाम भवतु। ततः=तदनन्तरम् खलु=निश्चयेन सोमा उन्मुक्तबालभावा=व्यतीतबाल्यावस्था, विज्ञकपरिणतमात्रा=विषयसुखाभिज्ञा यौवनम्=युवतिदशाम् अनुप्राप्ता=अनु=बाल्यात् पश्चात् प्राप्ता, रूपेण=आकृत्या, च=पुनः, यौवनेन=तारुण्येन, च=पुनः लावण्येन=मुक्ताफलगतच्छायातरलतासदृशशरीरावयवान्तःप्रविष्टचाकचिक्येन, उक्तं च—

"मुक्ताफलेषु च्छायायास्तरलत्वमिवान्तरे।
प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते ॥ १ ॥

क्षयके बाद देवलोकसे च्यवकर कहाँ जायगी ? कहाँ उत्पन्न होगी ?

हे गौतम ! यह बहुपुत्रिकादेवी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर भरत क्षेत्रमे विन्ध्यपर्वतके समीप विभेल सनिवेश (गाम) मे ब्राह्मणकी कन्या होकर जन्म लेगी। उसके बाद उसके माता पिता ग्यारह दीन बीतनेपर बारहवे दिन अपनी लडकीका नाम सोमा रखेंगे। वह सोमा बालभाव छोडती हुई विषय सुखके परिज्ञानके साथ यौवनावस्थामे प्रवेशकर रूप-यौवन-लावण्यसे उत्कृष्ट और उत्कृष्ट शरीरवाली होगी।

गौर आदि सुन्दर वर्णवाले आकारको 'रूप' कहते है।

હે ગૌતમ ! આ બહુપુત્રિકા દેવી જમ્બૂદ્વીપની અંદર ભરત ક્ષેત્રમા વિન્ધ્ય પર્વતની પાસે વિભેલ (સંનિવેશ) ગામમા બ્રાહ્મણની કન્યા થઈને જન્મ લેશે ત્યાર પછી તેના માતાપિતા અગીયાર દિવસ વીતી ગયા પછી બારમે દિવસે પોતાની છોકરીનું નામ સોમા રાખશે તે સોમા બાલભાવ છોડી વિષય સુખના પરિજ્ઞાનવાળી યૌવન અવસ્થામા પ્રવેશ કરશે ત્યારે રૂપયૌવન–લાવણ્યથી ઉત્કૃષ્ટ અને ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી થશે

ગૌર આદિ સુંદરવર્ણવાળા આકારને 'રૂપ' કહે છે મોતીની અંદરની ચમકના

विज्ञकपरिणतमात्रा यौवनमनुप्राप्ता प्रतिकूजितेन शुल्केन प्रतिरूपेण निजकाय भागिनेयाय राष्ट्रकूटकाय भार्यातया दास्यति । सा खलु तस्य भार्या भविष्यति इष्टा कान्ता यावद् भाण्डकरण्डकसमाना तैलकेला इव सुसंगोपिता चेलपेटा इव सुसंपरिगृहीता रत्नकरण्डक इव सुसरक्षिता सुसंगोपिता मा खलु शीत यावत् मा विविधाः रोगातङ्काः स्पृशन्तु । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान भोगभोगान भुञ्जाना सवत्सरे युगल प्रजनयन्ती षोडशभि संवत्सरै द्वात्रिंशद् दारकरूपाणि प्रजनयति । तत खलु सा सोमा ब्राह्मणी तैर्बहुभिर्दारकैश्च दारिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च डिम्भैश्च डिम्भिकाभिश्च अप्येककै उत्तानशयकैश्च, अप्येककैः स्तनितैश्च अप्येककै. स्पृहकपादै', अप्येककै. पराङ्गणकै , अप्येककैः पराक्रममाणै., अप्येककै., प्रस्वलनकै:, अप्येककैः स्तन मृग्यमाणैः अप्येककै, क्षीर मृग्यमाणै , अप्येककै., खेलनक मृग्यमाणै , अप्येककै' खाद्यक मृग्यमाणै', अप्येककै कूर (भक्त) मृग्यमाणै', पानीय मृग्यमाणै., हसद्भि , रुष्यद्भिः, आक्रोशद्भि', आक्रुश्यद्भि., नद्भि , हन्यमानै., विप्रलपद्भि., अनुगम्यमानैः, रुदद्भि , क्रन्दद्भि , विलपद्भि., कूजद्भि , उत्कूजद्भि , निर्धावद्भि., प्रलम्बमानै , दहद्भि दशद्भि , वमद्भि., छेरद्भिः, मूत्रयद्भि', मूत्रपुरीषवान्तसुलिप्तोपलिप्ता मलिनवसनपुचडा यावद् अशुचिबीभत्सा परमदुर्गन्धा नो शक्नोति राष्ट्रकूटेन सार्द्ध विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहर्तुम् ॥ ६ ॥

टीका–'बहुपुत्तियाएण इत्यादि–हे भदन्त ! बहुपुत्रिकाया देव्या' कियन्त काल स्थिति. प्रज्ञप्ता ? हे गौतम ! चतु'पल्योपमा स्थिति प्रज्ञप्ता । हे भदन्त ! बहुपुत्रिका देवी तस्माद् देवलोकाद् आयु क्षयेण=आयुर्दलिक निर्जरणेन देवलोकवासोचितावधिव्यतिगमेन स्थितिक्षयेण=आयु कर्मण.

'बहुपुत्तियाएण' इत्यादि—
हे भदन्त ! बहुपुत्रिकादेवीकी स्थिति कितने कालकी है ?
हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवीकी स्थिति चार पल्योपमकी है !
हे भदन्त ! वह बहुपुत्रिकादेवी आयुक्षय भवक्षय और स्थिति

'बहुपुत्तियाएण' ઇત્યાદિ
હે ભદન્ત ! બહુપુત્રિકા દેવીની સ્થિતિ કેટલા સમયની છે ?
હે ગૌતમ ! બહુપુત્રિકા દેવીની સ્થિતિ ચાર પલ્યોપમ છે
હે ભદન્ત ! તે બહુપુત્રિકા દેવી આયુક્ષય, ભવક્ષય તથા સ્થિતિક્ષય પછી દેવલોકમાંથી ચ્યવીને ક્યાં જશે ? ક્યાં જન્મ લેશે ?

नाना प्रकाराः रोगातङ्काः=रोगाः=चिरघातिनः, ज्वरादयः आतङ्काः सद्योघातिनः, मस्तकशूलादय। इमा मा खलु=नैव स्पृशन्तु=आश्रयन्तु। ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान् बहून् भोगभोगान्=विषयभोगान् भुञ्जाना संवत्सरे संवत्सरे=प्रतिवर्षं युगलं=सन्तानयुग्म प्रजनयन्ती=प्रसूयमाना षोडशभि संवत्सरैःवर्षैः द्वात्रिंशद्=द्व्यधिकत्रिंशद् दारकरूपान्=बालकलक्षणान् अत्र दारिकाश्च दारकाश्चेत्यर्थे एकशेषेण दारिका शब्दस्य लोपे रूपशब्देन समासे पुत्रीपुत्ररूपान् इति तदर्थः, प्रजनयति=उत्पादयति। ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी तैः बहुभि= अनेकैः दारकै=पुत्रैः दारकाभि=पुत्रीभिः बहुकालिकीभि, कुमारैः=बहुतरकालिकैः, पुत्रैः, कुमारिकाभि=बहुतरकालिकीभिः पुत्रीभिः, डिम्भै=अल्पकालिकपुत्रै डिम्भिकाभि=अल्पकालिकीभिः पुत्रीभिश्च, अप्येकैः उत्तानशयकैः= ऊर्ध्वमुखशयनशीलैः, अप्येकैः स्तनितैः=चीत्कारशब्दितैः, अप्येककैः स्पृहकपादैः—स्पृहन्ति= गमनं वाञ्छन्ति, इति स्पृहकाः पादाः=चरणा येषामिति ते तथा गमनेच्छुचरणाः, गमनोत्सुकपादा इत्यर्थः अत्र गमनेच्छायाश्चेतनवृत्तित्वेऽपि पादेष्वारोपात् 'स्थाली पचति' स्थाल्या पच्यते, इत्यादिवत् साधुता बोध्या। उक्तञ्च—

करण्डकके समान प्राणोंसे अधिक महत्त्व देकर रक्षा करेगा, और उसको वात पित्त आदि रोग और आतङ्क न स्पर्श कर सकें इस प्रकार सवदा रक्षाकी चेष्टा करता रहेगा। उसके बाद वह सोमा दारिका राष्ट्रकूटके साथ विपुल भोगोको भोगती हुई प्रत्येक वर्षमें एक २ सन्तान-युगलको जन्म देगी। और वह सोलह वर्षमे बत्तीस बच्चोंकी माँ होजायगी बाद उसके वह सामा ब्राह्मणी अपने उन छोटे बडे बच्चे बच्चयोंसे तग आजायगी। उसके उन बच्चोंमे कोई अल्पकालका जन्मा हुआ बच्चा उत्तान होकर सोता रहेगा, कोई चीत्कार मार कर रोता रहेगा, कोई चलनेकी इच्छा करगा, कोई

દઈને તેની રક્ષા કરશે તથા તને વાત પિત્ત આદિ રોગ તથા આતંક પણ સ્પર્શ ન કરી શકે એવી રીતે હમેશા રક્ષા કરવાની વ્યવસ્થા કરતો રહેશે ત્યાર પછી તે સોમા દારિકા રાષ્ટ્રકૂટની સાથે વિપુલ ભોગોને ભોગવતી દર વર્ષે એક એક સંતાનના જોડલાને જન્મ દેશે અને તે સોળ વર્ષમા બત્રીસ બાળક બાળકીઓની મા થઈ જશે પછી નાના મોટા બાળકોથી તે સોમા બ્રાહ્મણી તંગ થઈ જશે તેના એ બચ્ચાઓમા કોઈ થોડાજ કાળમા જન્મેલા બચ્ચા ઉત્તાન થઈને સુઈ રહેશે, કોઈ ગાડો પાડીને રોવા લાગશે, કોઈ ચાલવાની ઇચ્છા કરશે કોઈ બીજાના ફળીયામા જતુ રહેશે, અથવા

उत्कृष्टा=उत्कृष्टशरीरा=मनोहरकाया यावद् भविष्यति, ततः=परिणययोग्यता प्राप्त्यनन्तरं खलु तां सोमां दारिकाम् अम्बापितरौ=उन्मुक्तबालभावां विज्ञकपरिणतमात्रां यौवनमनुप्राप्ताम् एतेषां व्याख्याऽत्रैव सूत्रे प्रागुपपादिता, प्रतिकूजितेन=स्वीकृततया प्रतिभाषितेन शुल्केन देयद्रव्येण प्रचुराभरणादिना विभूषितां कृत्वेति शेषः, प्रतिरूपेण=अनुकूलेन प्रियवचनेन 'भवद्योग्येय' मितिप्रभृतिना वचसा, निजकाय=स्वकीयाय भागिनेयाय=भगिनीपुत्राय राष्ट्रकूटाय भार्यातया=स्त्रीत्वेन दास्यति। सा=सोमा खलु तस्य=राष्ट्रकूटस्य भार्या भविष्यति, इष्टा=वल्लभा कान्ता कमनीयत्वात्, यावच्छब्देन, प्रिया सदाप्रेमविषयत्वात्, मनोज्ञा सुन्दरत्वात् एव 'मणामा समया अणुमया' इत्यादि दृश्यम्। एतद्व्याख्या पूर्वं प्रतिपादिता। भाण्डकरण्डकसमाना=भूषणादिकरण्डकवत्, तैलकेला=तैलधानी सौराष्ट्रदेशप्रसिद्धो मृन्मयतैलपात्रविशेषः तद्वत् सुसंरक्षिता=अतितरां परिपालिता, सुसंगोपिता=यत्नेन रक्षिता चेलपेटा इव=वस्त्रमञ्जूषावत् सुसंपरिगृहीता=सुष्ठु परिग्रहत्वेन संरक्षिता। रत्नकरण्डकवत्= इन्द्रनीलादिरत्नमञ्जूषावत् सुसंगोपिता च, शीतं=शीतबाधाः यावत् विविधा'=

मोतीके अन्दरकी चमकके समान जो शरीरकी चमक हो उसे 'लावण्य' कहते हैं।

उसके बाद माता पिता, बाल्यावस्था पारकर यौवनावस्थामे प्रविष्ट उस सोमा बालिकाको विषय सुखसे अभिज्ञ जानकर निश्चित देने योग्य द्रव्य और प्रियवचनके साथ अपने भानजे राष्टकूटके साथ उसका विवाह कर देंगे। वह सोमा उसकी इष्टा कान्ता और वल्लभा होगी, और वह उस सोमाकी आभूषणके करण्डकके समान, तेलके सुन्दर वर्तनके समान यत्नपूर्वक रक्षा करेगा, वस्त्रोंकी पेटी के समान उसको अच्छी तरह रखेगा और इन्द्रनील आदि रत्न

જેવી શરીરની ચમક થાય તેને લાવણ્ય કહે છે

ત્યાર પછી માતાપિતા, બાલ્યાવસ્થા વીતી ગયા પછી યૌવન અવસ્થામા આવેલી તે સોમા બાલિકાને વિષય સુખથી અભિજ્ઞ (જાણીતી) થયેલી જાણી નિશ્ચિત દેવાયોગ્ય દ્રવ્ય તથા પ્રિય વચન સાથે પોતાના ભાણેજ રાષ્ટ્રકૂટની સાથે તેના વિવાહ કરશે તે સોમા તેની ઇષ્ટા કાન્તા અને વલ્લભા થશે અને તે, સોમાનાં આભૂષણના કરંડક પેઠે, તેલના સુંદર વાસણની પેઠે યત્નપૂર્વક રક્ષા કરશે વસ્ત્રોની પેટીના પેઠે તેને સારી રીતે રાખશે અને ઇન્દ્ર નીલ આદિ રત્નકરંડના પેઠે પ્રાણથી પણ વધારે ગાઢત્વ

द्भि'=चीत्कुर्वद्भि., विलपद्भिः=आर्तस्वर कुर्वाणै, कूजद्भिः=स्फुटदधरपूर्वक-मप्रकटशब्द कुर्वद्भि', उत्कूजद्भि'=उच्चै शब्द कुर्वाणै पूत्कुर्वद्भि', निद्राद्भिः=निद्रा सेवमानै., (स्वपद्भि) प्रलम्बमानै'=वस्त्राञ्चल समालम्बमानै दहद्भिः=ज्वलद्भि., दशद्भि =दन्तै कृन्तद्भि वमद्भि.=उद्गिलद्भि (प्रच्छर्दयद्भि) छेरद्भि.=वारवार हदमानै, मूत्रयद्भि =मूत्र कुर्वद्भिः मूत्रपुरीषवान्तसुलिप्तोपलिप्ता प्रस्रावविष्ठोद्गीर्णोतप्रोता, मलिनवसनपुच्चडा=मल्युक्तवस्त्रै पुच्चडा=निश्शोभा कान्तिहीनेत्यर्थ, यावद् अशुचिवीभत्सा=अशुचित्वेन नितरा दुर्निरीक्षणीया (घृणिता) परमदुर्गन्धा=अतिदुर्गन्धयुक्ता, राष्ट्रकूटेन स्वपतिना सार्द्ध विपुलान्=वहून् भोगभोगान भुञ्जन्ते=भोगविषयीक्रियन्त इति भोगा शब्दादयो विषयास्तेषा भोगा.=सेवनानि तान् तथा भुञ्जाना=सेवमाना विहर्त्तुम्=अवस्थातु नो शक्नोति=न प्रभवति ॥ ६ ॥

मूलम्—तएण तीसे सोमाए माहणीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरिय जागरमाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेहि वहूहि दारगेहिं य जाव डिभियाहि य अप्पेगइएहि उत्ताणसेज्जएहि य जाव

र्तस्वरसे रोयेगा, कोइ बच्चा कूजता-अव्यक्त शब्द करता रहेगा, कोइ जोरसे अव्यक्त शब्द करता रहेगा, कोइ सोता रहेगा, कोइ कपडेका अचल पकडकर लटकता रहेगा, कोई आगसे जल जायगा, कोई दॉतसे काटता रहेगा, कोई वमन करता रहेगा, कोई पाखाना करता रहेगा, कोई मूत्र करता रहेगा। इसलिये उन बच्चोंका पेशाब पाखाना वमनसे भरी हुई तथा मैले कपडोसे कान्तिहीन, यावत् अशुचि, विभत्स, अत्यन्त दुर्गन्धित हो राष्ट्रकूटके साथ अपने विपुल भोगोंको भोगनेमे समर्थ न हो सकेगी ॥ ६ ॥

કૂજતા (ટીકા કરતા) અવ્યક્ત ન સમજાય તેવા શબ્દ બોલ્યા કરશે કોઈ જોરથી અવ્યકત શબ્દ કર્યા કરશે કોઈ સુતા રહેશે, કોઇ કપડાના છેડા પકડીને લટકયા કરશે કોઈ અગ્નિમાં બળી જાશે, કોઇ દાંત વડે કરડવા લાગશે, કોઇ ઉલટી કરશે, કોઇ ઝાડે ફરતા રહેશે, કેઈ મૂતર્યા કરશે આ માટે તે બચ્ચાના પેશાબ-પાયખાના-ઉલટીથી ભરેલી મેલા કપડાથી કાન્તિહીન એટલે અશુચિ, બીભત્સ અત્યન્ત દુર્ગન્ધિત થઈને રાષ્ટ્રકૂટની સાથે પોતાના વિપુલ ભોગ ભોગવવા સમર્થ નહિ થઈ શકશે (૬)

"वस्तुतस्तदनिर्देश्य नहि वस्तु व्यवस्थितम् ।
स्थाल्या पच्यत इत्येषा, विवक्षा दृश्यते यतः ॥ " इति

अप्येककैः पराङ्गणकैः=पर=स्वकीयादन्यत् अङ्गणं = गम्यत्वेन येषां ते तथा, अन्याङ्गणगमनशीलैः, अथवा पराञ्चनकैरितिच्छाया, परम्=उत्कृष्टम् अञ्चनं= गमनं येषां ते तथा, सम्यग्गमनवद्भिः, अप्येककैः पराक्रममाणैः=उत्सहमानैः, अप्येककैः प्रस्खलनकैः = प्रकृष्टनिपतनवद्भिः, अप्येककैः स्तन=पानाय मातुः कुचं मृग्यमाणैः=अन्वेषयद्भिः, अप्येककैः क्षीरं=दुग्धं मृग्यमाणैः, अप्येककैः खेलनकं=खेलत्यनेनेति खेलनं तदेव खेलनकं=क्रीडासाधनं कन्दुक-लगुडादिकं मृग्यमाणैः, अप्येककैः खाद्यकं खाद्यमेव खाद्यकं खाद्यवस्तु 'लपनश्री' मोदकप्रभृतिं मृग्यमाणैः, अप्येककैः कूरं=भक्तम् (ओदनं) मृग्यमाणैः, पानीयं=जलं मृग्यमाणैः, हसद्भिः, रुष्यद्भिः,=रोषं कुर्वद्भिः, आक्रोशद्भिः= क्रुध्यद्भिः आक्रुश्यद्भिः, स्वस्ववस्तु ग्रहीतुं कलहं कुर्वद्भिः, घ्नद्भिः=ताडयद्भिः, हन्यमानैः=अन्येन ताड्यमानैः, विप्रलपद्भिः=विरुद्धं वदद्भिः, अनुगम्यमानैः=पलायनादिकाले पश्चाद् गम्यमानैः, रुदद्भिः=शब्दायमानैः, क्रन्द-

दूसरोके आङ्गनमें चला जायेगा अथवा कोई बच्चा अच्छी तरह चलेगा, कोइ बचा उत्साह करेगा, कोइ गिरेगा, कोइ बच्चा स्तनको ढूंढेगा, कोइ दूध चाहेगा, कोइ बच्चा खाना मागेगा। कोई भातके लिये हठ करेगा, कोइ पानीका हठ करेगा, कोइ हसता रहेगा, कोइ रुष्ट होता रहेगा, कोइ क्रोध करता रहेगा और कुछ बच्चे अपनी २ वस्तुके लिए लडते रहेंगे, कोइ कीसीको मारता मारता रहेगा। कोइ किसीकी मार खाता रहेगा कोइ बचा अण्डबण्ड बकेगा अर्थात् व्यर्थका बकवाद-शोर गुल करेगा। कोइ किसीके पीछे २ दौडता रहेगा, कोइ रोता रहेगा, कोइ बच्चा प्रलाप करता रहेगा, कोइ आ

કોઈ બચ્ચું સારી રીતે ચાલશે કોઈ બાળક ઉત્સાહ કરશે, કોઈ પડશે, કોઈ બચ્ચું સ્તનને શોધવા લાગશે, કોઈ દૂધ માગશે, કોઈ બચ્ચું ખાવાનું માગશે, કેઈ ભાતને માટે હઠ કરશે, કોઈ પાણી માટે હઠ કરશે, કોઈ હસતું રહેશે, કોઈ ગુસ્સે થતું રહેશે, કોઈ રીસાઈ જશે, કોઈ બચ્ચા તો પોતપોતાની ચીજ માટે લડતાજ રહેશે, અને કોઈ કોઈને મારતા રહેશે કોઈ તો કોઈનો માર ખાતા રહેશે, તો કોઈ બચ્ચા જેમ તેમ બકશે અર્થાત્ વ્યર્થ બકવાદ-શોરબકોર કરી મૂકશે, કોઈ કોઈની પાછળ દોડયા કરશે, કોઈ રોતા રહેશે, કેઈ પ્રલાપ કરતા રહેશે, કોઈ આર્તસ્વરથી રૂદન કરશે, કોઈ બચ્ચા

द्भि =चीत्कुर्वद्भिः, विलपद्भिः=आर्तस्वरं कुर्वाणैः, कूजद्भिः=स्फुटदधरपूर्वक-मप्रकटशब्दं कुर्वद्भिः, उत्कूजद्भिः=उच्चैः शब्दं कुर्वाणैः पूत्कुर्वद्भिः, निद्रद्भिः=निद्रां सेवमानैः, (स्वपद्भिः) प्रलम्बमानैः=वस्त्राञ्चलं समालम्बमानैः दहद्भिः=ज्वलद्भिः, दशद्भिः=दन्तैः कृन्तद्भिः वमद्भिः=उद्गिलद्भिः (प्रच्छर्दयद्भिः) छेरद्भिः=वारंवारं हन्यमानैः, मूत्रयद्भिः=मूत्रं कुर्वद्भिः मूत्रपुरीषवान्तसुलिप्तोपलिप्ता मस्रावविष्ठोद्गीर्णोतिमोता, मलिनवसनपुच्चडा=मल्युक्तवस्त्रैः पुच्चडा=निश्शोभा कान्तिहीनेत्यर्थः, यावद् अशुचिबीभत्सा=अशुचित्वेन नितरां दुर्निरीक्षणीया (घृणिता) परमदुर्गन्धा=अतिदुर्गन्धयुक्ता, राष्ट्रकूटेन स्वपतिना सार्द्धं विपुलान्=बहून् भोगभोगान् भुज्यन्ते=भोगविषयीक्रियन्ते इति भोगाः शब्दादयो विषयास्तेषां भोगाः=सेवनानि तान् तथा भुञ्जाना=सेवमाना विहर्तुम्=अवस्थातुं नो शक्नोति=न प्रभवति ॥ ६ ॥

मूलम्—तएणं तीसे सोमाए माहणीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेहिं बहूहिं दारगेहिं य जाव डिंभियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहिं य जाव

र्तस्वरसे रोयेगा, कोइ बच्चा कूजता-अव्यक्त शब्द करता रहेगा, कोइ जोरसे अव्यक्त शब्द करता रहेगा, कोइ सोता रहेगा, कोइ कपडेका अंचल पकडकर लटकता रहेगा, कोई आगसे जल जायगा, कोई दाँतसे काटता रहेगा, कोई वमन करता रहेगा, कोई पाखाना करता रहेगा, कोई मूत्र करता रहेगा। इसलिये उन बच्चोंका पेशाब पाखाना वमनसे भरी हुई तथा मैले कपडोंसे कान्तिहीन, यावत् अशुचि, बिभत्स, अत्यन्त दुर्गन्धित हो राष्ट्रकूटके साथ अपने विपुल भोगोंको भोगनेमें समर्थ न हो सकेगी ॥ ६ ॥

कूजतां (टीका करतां) अव्यक्त न समजाय तेवा शब्द बोल्या करशे कोई जोरथी अव्यक्त शब्द कर्या करशे कोई सुता रहेशे, कोई कपडाना छेडा पकडीने लटक्या करशे कोई अग्निमां बळी जशे, कोई दांत वडे करडवा लागशे, कोई उलटी करशे, कोई झाडे फरता रहेशे, कोई मूतर्या करशे आ माटे ते बच्चाना पशाब-पायखाना-उलटीथी भरेली मेला कपडाथी कान्तिहीन एटले अशुचि, बीभत्स अत्यन्त दुर्गन्धित थईने राष्ट्रकूटनी साथे पोताना विपुल भोग भोगववा समर्थ नहि थई शकशे (६)

अप्पेगइहि मुत्तमाणेहि दुज्जाएहि दुज्जम्मएहि हयविप्पहयभग्गेहि एगप्पहारपडिएहिं जाण मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता जाव परमदुब्भिगधा नो सचाएमि रट्ठकूडेण सद्धि जाव भुंजमाणी विहरित्तए । त धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव जीविय-फले जाओण वझाओ अवियाउरीओ जाणुकोप्परमायाओ सुरभिसुगधगधियाओ विउलाइ माणुस्सगाइं भोगभोगाइ भुज-माणीओ विहरति, अह ण अधन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा नो सचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं जाव विहरित्तए ।

तेण कालेण २ सुव्वयाओ नाम अज्जाओ इरियासमियाओ जाव बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि जेणेव विभेले सनिवेसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह जाव विहरति । तएण तासि सुव्वयाणं अज्जाण एगे सघाडए विभेले सन्नि-वेसे उच्चनीय जाव अडमाणे रट्ठकडस्स गिह अणुपविट्ठे । तएण सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा० खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वदइ नमसइ, विउलेण असण ४ पडिलाभेइ, पडिलभित्ता एव वयासी—एव खलु अह अज्जाओ रट्ठकूडेण सद्धिं विउलाइ जाव सवच्छरे २ जुगल पयामि, सोलसहि संवच्छरेहि बत्तीस दारगरूवे पयाया । तएण अह तेहि बहूहि दारएहि य जाव डिंभियाहिय अप्पेगइ-एहिं उत्ताणसिज्जएहि जाव मुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं जाव नो सचाएमि रट्ठकडेण सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरित्तए, त इच्छामि ण अज्जाओ ! तुम्ह अतिए धम्म निसामित्तए । तएण ताओ अज्जाओ सोमाए माहणीए

विचित्त जाव केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेइ। तएणं सा सोमा माहणी तासिं अज्जाणं अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जाव हियया ताओ अज्जाओ वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी सद्दहामि णं अज्जाओ! निग्गथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि ण अज्जाओ जाव से जहेय तुब्भे वयह, जं नवर अज्जाओ! रट्ठकूड आपुच्छामि। तएणं अहं देवाणुप्पियाण अंतिए मुडा जाव पव्वयामि। अहासुह देवाणुप्पिए! मा पडि-बधं। तएणं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता पडिविसज्जेइ ॥ ७ ॥

छाया—ततः खलु तस्या. सोमाया ब्राह्मण्या अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये कुटुम्बजागरिका जाग्रत्या अयमेतद्रूपो यावत् समुत्पन्नत-एव खलु अहमेभिर्बहुभिर्दारकैश्च यावद् डिम्भिकाभिश्च अप्येककै उत्तान शयकैश्च यावद् अप्येककैर्मूत्रयद्भिः दुर्जातै' दुर्जन्मभिः हतविप्रहतभाग्यैश्च एकप्रहारपतितै' या खलु मूत्रपुरीषवमितसुलिप्तोपलिप्ता यावत् परमदुरभिगन्धा नो शक्नोमि राष्ट्रकूटेन सार्द्धं यावद् भुञ्जाना विहर्तुम। तद् यन्याः खलु

'तएण तीसे' इत्यादि–

उसके बाद एक समय पिछली रातमे कुटुम्बजागरणा करती हुई उस सोमा ब्राह्मणीके आत्मामे इस प्रकारका विचार उत्पन्न होगा-कि अहो! मै मलमूत्र करनेवाले इन बहुतसे अभागे दुःख दायी थोडे २ दिनोमे उत्पन्न होनेवाले, दुर्जन्मा छोटे बडे और नव जात शिशुओके द्वारा मलमूत्र और वमनसे लिपी-पुती अत्यन्त दुर्गन्धमयी होकर राष्ट्रकूटके साथ सुखका अनुभव नहीं कर पाती हूँ।

'तएण तीसे' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી એક સમય પાછલી રાતે કુટુંબ જાગરણ કરતા તે સોમા બ્રાહ્મણીના મનમા એવો વિચાર ઉત્પન્ન થશે કે —અહો! હું મળમૂત્ર કરવાવાળા ઘણા કમનસીબ દુઃખદાયી થોડા દિવસોમા જન્મ લેવાવાળા દુર્જન્મા નાના મોટા અને નવા જન્મેલા બાળકોના મળમૂત્ર તથા વમનથી લીંપાયેલ, ખરડાયેલ અત્યન્ત દુર્ગન્ધિમયી બની હોવાથી રાષ્ટ્રકૂટની સાથે સુખનો અનુભવ લઇ શકતી નથી

ता अम्बिका यावद् जीवितफल याः खलु वन्ध्या अविजननशीला जानुकूर्पर मातरः सुरभिसुगन्धगन्धिका विपुलान् मानुष्यकान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरन्ति, अहं खलु अधन्या अपुण्या नो शक्नोमि राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान् यावद् विहर्तुम्।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये सुव्रता नाम आर्या इर्यासमिता यावद् बहुपरिवाराः पूर्वानुपूर्वी यत्रैव वेभेलः सन्निवेशस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यथाप्रतिरूपमम् अवग्रह यावद् विहरन्ति । तत खलु तासा सुव्रतानामार्याणाम् एक' सघाटको वेभेले सन्निवेशे उच्चनीच० यावत् अटन् राष्ट्रकूटस्य गृहमनुप्रविष्टः । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी ता आर्या एजमाना' पश्यति दृष्ट्वा हृष्टतुष्टा० क्षिप्रमेव० आसनादभ्युत्तिष्ठति अभ्युत्थाय सप्ताष्टपदानि अनु

वे माताएँ धन्य हैं और उनका जीवन सफल है, जो वन्ध्या हैं, जिन्हें, जिन्हें बच्चा नहीं होता, जो जानुकूर्परमाता है जो सुगन्ध द्रव्योंसे सुवासित हो मनुष्य सम्बन्धी भोगोंको भोगती हुई विचर रही है, मैं अधन्य हूँ, अपुण्य हूँ, जो कि मैं राष्ट्रकूटके साथ विपुल भोगोंको नहीं भोग सकती हूँ।

उस काल उस समयमे सुव्रता नामकी आर्याएँ ईर्यासमिति आदिसे युक्त बहुत सी साध्वियोंके साथ तीर्थंकर परम्परासे विचरती हुई वेभेल सन्निवेशमे आवेंगी और यथोचित अवग्रह लेकर वहाँ रहने लगेगी। बाद उसके एक दिन उन सुव्रता आर्याओंका एक सघाटक वेभेल सन्निवेशके उच्च नीच मध्यम कुलमे फिरता हुआ राष्ट्रकूटके घरमे आयेगा। उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी आती हुई उन आर्याओंको देखेगी देखकर हृष्ट तुष्ट हृदय हो

તે માતાઓને ધન્ય છે અને તેમના જીવન સફળ છે કે જે વાઝણી છે–જેને છોકરૂ થતુ નથી, જે જાનુકુર્પરમાતા છે, જે સુગધી દ્રવ્યોથી સુવાસિત થઈને મનુષ્ય સબધી ભોગો ભોગવતી વિચરે છે હુ અધન્ય છુ, અપુણ્યા છુ જેથી હુ રાષ્ટ્રકૂટની સાથે વિપુલ ભોગોને ભોગવી શકતી નથી

તે કાળે તે સમયે સુવ્રતા નામની આર્યાઓ ઈર્યાસમિતિ આદિ યુકત ઘણી સાધ્વીઓની સાથે તીથ કર પરપરાથી વિચરતી બિભેલ સન્નિવેશમા આવશે અને યથોચિત અવગ્રહ લઈને ત્યા રહેવા લાગશે પછી એક દિવસ તે સુવ્રતા આર્યાઓનુ એક સઘાડુ બિભેલ સન્નિવેશના ઊચા નીચા અને મધ્યમ કુલમા ફરતા ફરતા રાષ્ટ્રકૂટના ઘરમા આવશે ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓને આવતી જોશે અને તેમને જોઈને

गच्छति, अनुगत्य वन्दते नमस्यति विपुलेन अशन० ४ प्रतिलम्भयति, प्रतिलम्भ्य एवमवादीत्-एवं खलु अहमार्याः ! राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान यावत् संवत्सरे द्वात्रिंशद् दारकरूपान प्रजाता । ततः खलु अहं तैर्बहुभिर्दारकैश्च यावद् डिम्भिकाभिश्च अप्येककैः उत्तानशयकैः यावत् मूत्रयद्भिः दुर्जाते यावद् नो शक्नोमि राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान भुञ्जाना विहर्तुम्, तदिच्छामि खलु आर्याः ! युष्माकमन्तिके धर्मं निशामयितुम् । ततः खलु ता आर्याः सोमायै ब्राह्मण्यै विचित्रं यावत् केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं परिकथयन्ति । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी तासामार्याणामन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा० यावद् हृदया ता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा

शीघ्रातिशीघ्र अपने आसनसे उठ कर खडी होगी। और उन आर्याओंका आदर सत्कार करनेके लिए सात आठ पग आगे जायेगी। अनन्तर वन्दन नमस्कार कर विपुल अशन पान आदिसे प्रतिलाभित करेगी। और उनसे इस प्रकार कहेगी-हे देवानुप्रिये। राष्ट्रकूटके साथ विपुल भोगोको भोगती हुई हमने प्रत्येक वर्षमे युगल बच्चोको जन्म देकर सोलह वर्षोमे बत्तीस बच्चोको जन्म दिया है। मै दुर्जन्मा उन बच्चोका मल-मूत्र और वमन आदिसे सनी-पुती दुर्गन्धित शरीर हो अपने पतिके साथ कुछ भी आनन्द भोग नही कर पाती। हे आर्याएँ ! मैं आप लोगोंके समीप धर्म सुनना चाहती हूँ। उसके बाद वे साध्वियाँ सोमा ब्राह्मणीको विचित्र यावत् केवली प्ररूपित धर्मका उपदेश देंगी।

હૃષ્ટતુષ્ટ અંતઃકરણથી જલદી જલદી પોતાને આસનેથી ઉઠીને ઉભી થશે અને તે આર્યાઓનો આદર સત્કાર કરવા માટે સાત આઠ પગલા સામે જશે ત્યાર પછી વન્દન અને નમસ્કાર કરીને સારી રીતે અશનપાન આદિથી પ્રતિલાભિત કરશે (વહોરાવશે) અને તેમને આ પ્રકારે કહેશે —

હે દેવાનુપ્રિયે! રાષ્ટ્રકૂટની સાથે વિપુલ ભોગોને ભોગવતી મેં પ્રત્યેક વર્ષે એક જોડકા બાળકને જન્મ આપતા સોળ વર્ષમાં બત્રીસ બચ્ચાને જન્મ આપ્યો છે હું દુર્જન્મા તે બચ્ચાના મળમૂત્ર અને ઉલટી આદિથી લીપાયેલી દુર્ગન્ધવાળા શરીરે મારા પતિની સાથે કોઈ જાતનો આનંદ ભોગ કરી શકતી નથી હે આર્યાઓ! હું આપ લોકોની પાસે ધર્મ સાંભળવા માગું છું ત્યાર પછી તે સાધ્વીઓ સોમા બ્રાહ્મણીને વિચિત્ર એટલે કેવલી પ્રરૂપિત ધર્મનો ઉપદેશ આપશે

एवमवादीत्–श्रद्दधामि खलु आर्याः ! निर्ग्रन्थं प्रवचनम्, इदमेतद् आर्या ! यावत् यद् यथेद यूय वदथ, यद् नवरमार्या ! राष्ट्रकूटमापृच्छामि। ततः खलु अह देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा यावत् प्रव्रजामि। यथासुख देवानुप्रिये! मा प्रतिबन्धम्। ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी ता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा प्रतिविसर्जयति ॥ ७ ॥

टीका–'तएण तीसे' इत्यादि–दुर्जातै'–दुष्ट जात=प्रादुर्भावो येषा ते तथा तैः, अत एव–दुर्जन्मभि = दुष्ट=कुत्सित येषा मम दु खदायित्वात् ते तथा तैः, हतविप्रहतभाग्यै.=सर्वथा भाग्यहीनैः। एकप्रहारपतितै.=अल्पकालेनैव मम कुक्ष्यवतीर्णै । शेष सुगमम् ॥ ७ ॥

उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओंसे धर्म सुनकर उसे हृदयमे अवधारित कर हृष्ट तुष्ट हो अत्यन्त हर्षयुक्त हृदयसे उन आर्याओंका वन्दन और नमस्कार करके इस प्रकार कहेगी–

हे आर्याओ ! मै निर्गन्थ प्रवचनपर श्रद्धा रखती हूँ, और निर्गन्थ प्रवचन को सम्मानित करती हूँ।

हे देवानुप्रिये ! जो आप कहती हैं वही सत्य है। मै राष्ट्रकूटको पूछती हूँ, बादमें आपके पास मुण्डित होकर प्रव्रजित होऊँगी।

उसके बाद आर्याने कहा–जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो। शुभ काममे प्रमाद मत करो। उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओको वन्दन और नमस्कार कर विसर्जन करेगी ॥ ७ ॥

ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓ પાસેથી ધર્મ સાભળીને તે હૃદયમા ધારણ કરીને હૃષ્ટ તુષ્ટ થઇને અત્યત હર્ષયુકત હૃદયથી તે આર્યાઓને વદન અને નમસ્કાર કરીને આ પ્રકારે કહેશે —

હે આર્યાઓ! હુ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન ઉપર શ્રદ્ધા રાખુ છુ અને નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને સમ્માનિત કરૂ છુ

હે દેવાનુપ્રિયે! જે આપ કહો છો તેજ સત્ય છે હુ રાષ્ટ્રકૂટને પૂછુ છુ પછી આપની પાસે મુડિત થઇને પ્રવ્રજિત થઇશ

ત્યાર પછી આર્યાઓ કહે છે — જેવી રીતે તને સુખ થાય તેમ કર શુભ કામમા પ્રમાદ ન કર ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓને વદન અને નમસ્કાર કરી વિસર્જન કરશે (૭)

मूलम्–तएण सा सोमा माहणी जेणेव रट्ठकडे तेणेव उवागया करतल० एव वयासी–एव खलु मए देवाणुप्पिया! अज्जाण अतिए धम्मे निसते, से वि य णा धम्मे इच्छिए जाव अभिरुचिए, तएण अह देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया सुव्वयाण अज्जाणं जाव पव्वइत्तए। तए ण से रट्ठकूडे सोम माहणि एव वयासी–मा णं तुम देवाणुप्पिए! इदाणि मुंडा भवित्ता जाव पव्वयाहि। भुजाहि ताव देवाणुप्पिए! मए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ, ततो पच्छा भुत्त भोई सुव्वयाण अज्जाण अतिए मुडा जाव पव्वयाहि। तएण सा सोमा माहणी ण्हाया जाव सरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता विभेल सनिवेस मज्झमज्झेण जेणेव सुव्वयाण अज्जाण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वदइ नमसइ, पज्जुवासइ। तएण ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्त केवलिपण्णत्त धम्म कहिकहेइ जहा जीवा वज्झति। तएण सा सोमा माहणी सुव्वयाण अज्जाण अतिए जाव दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया। तएण सा सोमा माहणी समणोवासिया जाया अभिगत० जाव अप्पाण भावे माणी विहरइ।

तएण ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णया कयाइ विभेलाओ सनिवेसाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता, वहिया जणवयविहार विहरति ॥ ८ ॥

एवमवादीत्–श्रद्दधामि खलु आर्याः ! निर्ग्रन्थ प्रवचनम्, इन्मेतद् आर्या' ! यावत् यद् यथेद यूय वदथ, यद् नवरमार्याः ! राष्ट्रकूटमापृच्छामि। ततः खलु अह देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा यावत् प्रव्रजामि। यथासुख देवानुप्रिये ! मा प्रतिवन्धम्। ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी ता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दिता नमस्यित्वा प्रतिविसर्जयति ॥ ७ ॥

टीका–'तएण तीसे' इत्यादि–दुर्जातैः–दुष्ट जात=प्रादुर्भावो येपा ते तथा तैः, अत एव–दुर्जन्मभि = दुष्ट=कुत्सित येपा मम दु खदायित्वात् ते तथा तै., हतविप्रहतभाग्यै.=सर्वथा भाग्यहीनैः। एवमहारपतितै.=अल्पकालेनैव मम कुक्ष्यवतीर्णैः। शेप सुगमम् ॥ ७ ॥

उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओंसे धर्म सुनकर उसे हृदयमे अवधारित कर हृष्ट तुष्ट हो अत्यन्त हर्षयुक्त हृदयसे उन आर्याओंका वन्दन और नमस्कार करके इस प्रकार कहेगी–

हे आर्याओ ! मै निर्गन्थ प्रवचनपर श्रद्धा रखती हूँ, और निर्गन्थ प्रवचन को सम्मानित करती हूँ।

हे देवानुप्रिये ! जो आप कहती है वही सत्य है। मै राष्ट्रकूटको पूछती हूँ, बादमें आपके पास मुण्डित होकर प्रव्रजित होऊँगी।

उसके बाद आर्याने कहा–जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो। शुभ काममे प्रमाद मत करो। उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओको वन्दन और नमस्कार कर विसर्जन करेगी ॥ ७ ॥

ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓ પાસેથી-ધર્મ સાભળીને તે હૃદયમા ધારણ કરીને હૃષ્ટ તુષ્ટ થઈને અત્યત હર્ષયુકત હૃદયથી તે આર્યાઓને વદન અને નમસ્કાર કરીને આ પ્રકારે કહેશે —

હે આર્યાઓ ! હુ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન ઉપર શ્રદ્ધા રાખુ છુ અને નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને સમ્માનિત કરૂ છુ

હે દેવાનુપ્રિયે ! જે આપ કહો છો તેજ સત્ય છે હુ રાષ્ટ્રકૂટને પૂછુ છુ પછી આપની પાસે મુડિત થઇને પ્રવ્રજિત થઇશ

ત્યાર પછી આર્યાઓ કહે છે —જેવી રીતે તને સુખ થાય તેમ કર શુભ કામમા પ્રમાદ ન કર ત્યાર પછી તે, સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓને વદન અને નમસ્કાર કરી વિસર્જન કરશે (૭)

शरीरा चेटिकाचक्रवालपरिकीर्णा स्वस्माद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य विभेल सन्निवेश मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामार्याणामुपाश्रयस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुव्रता आर्या वन्दते नमस्यति पर्युपास्ते । ततः खलु ताः सुव्रताः आर्याः सोमायै ब्राह्मण्यै विचित्र केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं परिकथयन्ति, यथा जीवा बध्यन्ते । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी सुव्रतानामार्याणामन्तिके यावद् द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य सुव्रता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेवदिशं प्रतिगता । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिका जाता अभिगत० यावत् आत्मानं भावयन्ती विहरति ।

हो दासियोंके समूहसे घिरी हुई अपने घरसे निकल कर विभेल सन्निवेशके मध्य भागसे होती हुई सुव्रता आर्याओंके उपाश्रयमे आयेगी । आकर वह सुव्रता आर्याको वन्दन और नमस्कार कर सेवा करेगी । उसके बाद वे सुव्रता आर्या उस सोमा ब्राह्मणीको अनेक प्रकारसे विचित्र केवली प्रज्ञप्त धर्मका उपदेश करेगी–'जिस प्रकार जीव कर्मसे बद्ध होते हैं और मुक्त होते हैं' । इस प्रकार केवलि प्ररूपित धर्म सुनकर वह सोमा ब्राह्मणी सुव्रता आर्याके पास यावत् बारह प्रकारका श्रावक धर्मको स्वीकार करेगी । बाद उन आर्याओंको वन्दन नमस्कार कर जिस दिशासे आयेगी उसी दिशामें लौट जायगी ।

तदन्तर वह सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिका बनेगी । और सभी जीव अजीव आदि तत्वोंको जानकर श्रावकव्रतसे आत्माका

મંડળીમાં વીંટાઇને પોતાના ઘરમાંથી નીકળી વિભેલ સન્નિવેશના મધ્ય ભાગમાંથી થઈને સુવ્રતા આર્યાઓના ઉપાશ્રયમાં આવશે આવીને તે સુવ્રતા આર્યાને વંદન નમસ્કાર કરી સેવા કરશે ત્યાર પછી તે સુવ્રતા આર્યાઓ તે સોમા બ્રાહ્મણીને વિચિત્ર કેવલી પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનો અનેક પ્રકારે ઉપદેશ કરશે જે પ્રકારે જીવ કર્મથી બંધાય છે અને મુક્ત થાય છે ઇત્યાદિ કેવલી પ્રરૂપિત ધર્મ સાંભળીને તે સોમા બ્રાહ્મણી સુવ્રતા આર્યાઓની પાસે બાર પ્રકારના શ્રાવકધર્મનો સ્વીકાર કરશે પછી તે આર્યાઓને વંદન-નમસ્કાર કરીને જે દિશાથી તેઓ આવી હશે તે દિશામાં પાછી જશે

ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી શ્રમણ ઉપાસિકા બનશે અને બધા જીવ અજીવ આદિ તત્ત્વોને જાણી શ્રાવક વ્રતથી આત્માને ભાવિત કરતી વિચરશે ત્યાર

छाया—ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी यत्रैव राष्ट्रकूटस्तत्रैव उपागता करतल० एवमवादीत्–एवं खलु मया देवानुप्रिया ! आर्याणामन्तिके धर्मो निशान्तः (श्रुतः) सोऽपि च खलु धर्म इष्टो यावद् अभिरुचित, ततः खलु अहं देवानुप्रिया ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सुव्रतानामार्याणां यावत् प्रव्रजितुम्। ततः खलु स राष्ट्रकूटः सोमां ब्राह्मणीमेवमवादीत्–मा खलु देवानुप्रिये ! इदानीं मुण्डा भूत्वा यावत् प्रव्रज, भुङ्क्ष्व तावद् देवानुप्रिये ! मया सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान्, ततः पश्चाद् भुक्तभोगा सुव्रतानामार्याणामन्तिके मुण्डा यावत् प्रव्रज। ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटस्य एतमर्थं प्रतिशृणोति। ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी स्नाता यावत् सर्वालङ्कारभूषित

'तएण सा' इत्यादि—

उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटके पास आवेगी और हाथ जोडकर इस प्रकार कहेगी-हे देवानुप्रिय ! मैने आर्याओके समीप धर्म सुना। वह धर्म भी मुझे इष्टप्रिय और हितकारक जान पडा और अच्छा लगा, इसलिये हे देवानुप्रिय ! मेरी इच्छा है कि तुमसे आज्ञा लेकर मै उन आर्याओके पास जाउँ, और दीक्षा ग्रहण करूँ। सोमा ब्राह्मणीका ऐसा वचन सुनकर राष्ट्रकुट उससे कहेगा–

हे देवानुप्रिये ! अभी तुम मुण्डित होकर प्रव्रजित मत होओ ! हे देवानुप्रिये ! अभी तुम मेरे साथ विपुल भोगोका भोग करो। उसके बाद भुक्तभोगा होकर सुव्रता आर्याके पास प्रव्रजित होना। सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटकी इस सलाहको मान जायगी। बादमे वह सोमा ब्राह्मणी स्नान करके सभी प्रकारोके अलङ्कारोंसे अलङ्कृत

'तएण सा' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી રાષ્ટ્રકૂટની પાસે આવશે અને હાથ જોડીને આ પ્રકારે કહેશે —હે દેવાનુપ્રિય ! મે આર્યાઓ પાસેથી ધર્મનું શ્રવણ કર્યું તે ધર્મ પણ મને ઇષ્ટ પ્રિય અને હિતકારક લાગ્યો ને સારો પણ જણાયો છે માટે હે દેવાનુપ્રિય ! મારી ઇચ્છા છે કે તમારી આજ્ઞા લઈને હું તે આર્યાઓ પાસે જાઉં અને દીક્ષા ગ્રહણ કરૂં સોમા બ્રાહ્મણીના એવા વચન સાભળી રાષ્ટ્રકૂટ તેને કહેશે —

હે દેવાનુપ્રિયે ! હાલ તું મુંડિત થઈને પ્રવ્રજિત ન થા હે દેવાનુપ્રિય ! હાલ તો મારી સાથે વિપુલ ભોગોને ભોગવ ત્યાર પછી ભુક્તભોગા થઈ સુવ્રતા આર્યાની પાસે પ્રવ્રજિત થજે સોમા બ્રાહ્મણી રાષ્ટ્રકૂટની આ સલાહને માની જશે પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી સ્નાન કરીને તમામ જાતના ઘરેણા–ગાંઠાથી અલંકૃત થઈ દાસીઓની

शरीरा चेटिकाचक्रवालपरिकीर्णा स्वस्माद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य विभेल सन्निवेश मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामार्याणामुपाश्रयस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुव्रता आर्या वन्दते नमस्यति पर्युपास्ते । तत. खलु ताः सुव्रताः आर्याः सोमायै ब्राह्मण्य विचित्र केवलिप्रज्ञप्त धर्म परिकथयन्ति, यथा जीवा बध्यन्ते । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी सुव्रतानामार्याणामन्तिके यावद् द्वादशविध श्रावकधर्म प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य सुव्रता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेवदिश प्रतिगता । तत' खलु सा सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिका जाता अभिगत० यावत् आत्मान भावयन्ती विहरति ।

हो दासियोके समूहसे घिरी हुई अपने घरसे निकल कर विभेल सन्निवेशके मध्य भागसे होती हुई सुव्रता आर्याओके उपाश्रयमे आयेगी । आकर वह सुव्रता आर्याको वन्दन और नमस्कार कर सेवा करेगी । उसके बाद वे सुव्रता आर्या उस सोमा ब्राह्मणीको अनेक प्रकारसे विचित्र केवली प्रज्ञप्त धर्मका उपदेश करेगी–'जिस प्रकार जीव कर्मसे बद्ध होते हैं और मुक्त होते हैं' । इस प्रकार केवलि प्ररूपित धर्म सुनकर वह सोमा ब्राह्मणी सुव्रता आर्याके पास यावत बारह प्रकारका श्रावक धर्मको स्वीकार करेगी । बाद उन आर्याओंको वन्दन नमस्कार कर जिस दिशासे आयेगी उसी दिशामे लौट जायगी ।

तदन्तर वह सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिका बनेगी । और सभी जीव अजीव आदि तत्वोको जानकर श्रावकव्रतसे आत्माका

મડળીમા વેરાઈને પોતાના ઘરમાથી નીકળી બિભેલ સન્નિવેશના મધ્ય ભાગમાથી થઈને સુવ્રતા આર્યાઓના ઉપાશ્રયમા આવશે આવીને તે સુવ્રતા આર્યાને વદન નમસ્કાર કરી સેવા કરશે ત્યાર પછી તે સુવ્રતા આર્યાઓ તે સોમા બ્રાહ્મણીને વિચિત્ર કેવલી પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનો અનેક પ્રકારે ઉપદેશ કરશે જે પ્રકારે જીવ કર્મથી બધાય છે અને મુક્ત થાય છે ઇત્યાદિ કેવલી પ્રરૂપિત ધર્મ સાભળીને તે સોમા બ્રાહ્મણી સુવ્રતા આર્યાઓની પાસે બાર પ્રકારના શ્રાવકધર્મનો સ્વીકાર કરશે પછી તે આર્યાઓને વદન-નમસ્કાર કરીને જે દિશાથી તેઓ આવી હશે તે દિશામા પાછી જશે.

ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી શ્રમણ ઉપાસિકા બનશે અને બધા જીવ અજીવ આદિ તત્ત્વોને જાણી શ્રાવક વ્રતથી આત્માને ભાવિત કરતી વિચરશે ત્યાર

ततः खलु ताः सुव्रता आर्या अन्यदा कदाचित् बिभेलात् सन्निवेशात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति ॥ ८ ॥

टीका—'तएण सा' इत्यादि-व्याख्या पठितसिद्धा ॥ ८ ॥

मूलम्–तएण ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं जाव विहरइ । तएण सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा ण्हाया तहेव निग्गया जाव वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता धम्मं सोच्चा जाव नवरं रट्ठकूडं आपुच्छामि, तएण पव्वयामि । अहासुहं । तएण सा सोमा माहणी सुव्वयं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सुव्वयाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करतल परिग्गहिय० तहेव आपुच्छइ जाव पव्वइत्तए । अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं । तएण से रट्ठकूडे विउलं असणं तहेव जाव पुव्वभवे सुभद्दा जाव अज्जा जाता, इरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी । तएण सा सोमा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं छट्ठट्ठम दसम दुवालस० जाव भावेमाणी बहुइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सा

भावित करती हुई विचरेगी उसके बाद वह सुव्रता आर्या किसी समय बिभेल सन्निवेश से निकलकर बाहर देशमे विहार करती हुई विचरेगी ।८ ।

પછી સુવ્રતા આર્યાઓ કોઈ સમયે બિભેલ સન્નિવેશથી નિકળીને બીજા દેશમા વિહાર કરતી વિચરશે (૮)

माणियदेवत्ताए उववन्ना । तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं दोसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ ण सोमस्स वि देवस्स दोसागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

से ण भंते ! सोमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव चय चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाव अंत काहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेण चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ ९ ॥

॥ पुप्फियाए चउत्थ अज्झयणं समत्त ॥ ४ ॥

छाया—ततः खलु ताः सुव्रता आर्या अन्यदा कदाचित् पूर्वानुपूर्वी यावद् विहरन्ति । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी अस्या कथाया लब्धार्था सती हृष्टतुष्टा० स्नाता तथैव निर्गता यावद् वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा धर्मं श्रुत्वा यावद् नवर राष्ट्रकूटमापृच्छामि, यथासुखम्० । तत'

'तएण ताओ' इत्यादि—

उसके बाद वह सुव्रता आर्या किसी समय पूर्वानुपूर्वी विचरती हुई फिर विभेल सन्निवेशमे आएगी और वसतिकी आज्ञा लेकर वहाँ तप संयमसे आत्मको भावित करती हुई रहेगी। बाद वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओके आनेका समाचार पाकर हृष्ट तुष्ट हृदय हो स्नान कर तथा सभी अलङ्कारोसे विभूषित हो पूर्ववत् उन आर्याओंके पास जाकर यावत् वन्दन और नमस्कार करेगी । वन्दन नमस्कार करके धर्म सुनकर उस आर्यासे

'तएण ताओ' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે સુવ્રતા આર્યાઓ કોઇ સમયે પૂર્વાનુપૂર્વી વિચરણ કરતા કરતા પાછી બિભેલ સન્નિવેશમા આવશે અને વસ્તીની આજ્ઞા લઇ ત્યા તપસયમથી આત્માને ભાવિત કરતી રહેશે ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓના આવવાના સમાચાર મળતા હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી સ્નાન કરી તથા ઘરેણા આભૂષણથી વિભૂષિત થઇ અગાઉની જેમ તે આર્યાઓની પાસે જઇને વદન નમસ્કાર કરશે અને વદન નમસ્કાર

ततः खलु ताः सुव्रता आर्या अन्यदा कदाचित् विभेलात् सन्निवेशात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति ॥ ८ ॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि-व्याख्या पठितसिद्धा ॥ ८ ॥

मूलम्—तएणं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं जाव विहरइ । तएणं सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा ण्हाया तहेव निग्गया जाव वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता धम्मं सोच्चा जाव नवरं रट्ठकूडं आपुच्छामि, तएणं पव्वयामि । अहासुहं । तएणं सा सोमा माहणी सुव्वयं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सुव्वयाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करतल परिग्गहियं॰ तहेव आपुच्छइ जाव पव्वइत्तए । अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं । तएणं से रट्ठकूडे विउलं असणं तहेव जाव पुव्वभवे सुभद्दा जाव अज्जा जाता, इरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी । तएणं सा सोमा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं छट्ठट्ठम दसम दुवालस॰ जाव भावेमाणी बहुइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सा

भावित करती हुई विचरेगी उसके बाद वह सुव्रता आर्या किसी समय विभेल सन्निवेश से निकलकर बाहर देशमें विहार करती हुई विचरेगी ।८।

પછી સુવ્રતા આર્યાઓ કોઈ સમયે વિભેલ સન્નિવેશથી નીકળીને બીજા દેશમાં વિહાર કરતી વિચરશે (૮)

सामायिकादिनि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य बहुभिः षष्ठाष्टमदशमद्वादश० यावद् भावयन्ती बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयति, पालयित्वा मासिक्या सलेखनया षष्टि भक्तानि अनशनेन छित्वा आलोचितप्रतिक्रान्ता समाधिप्राप्ता कालमासे काल कृत्वा शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य सामानिकदेवतया उदपद्यत। तत्र खलु अस्त्येकैकेषा देवाना द्विसागरोपमा स्थिति प्रज्ञप्ता, तत्र खलु सोमस्यापि देवस्य द्विसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता।

स खलु भदन्त! सोमो देवः तस्माद् देवलोकाद् आयु:क्षयेण यावत् चय च्युत्वा क्व गमिष्यति? क्व उत्पत्स्यते? गौतम! महाविदेहे वर्षे यावद्

होकर ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी होवेगी। उसके बाद वह सोमा आर्या उन सुव्रता आर्याओंके समीप सामायिक आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन करेगी, और बहुतसे षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश आदि तपोंके द्वारा आत्माको भावित करती हुई बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्यायका पालन कर मासिकी सलेखनासे साठ भक्तोंको अनशनसे छेदन कर अपने पाप स्थानोंका आलोचन और प्रतिक्रमण कर समाधिको प्राप्त हो काल मासमें काल कर देवेन्द्र शक्रके सामानिक देव होकर उत्पन्न होगी। वहाँ एक २ देवकी स्थिति दो सागरोपम है। उस देवलोकमे सोमदेवकी भी स्थिति दो सागरोपम होगी।

गौतम स्वामी पूछते हैं–हे भदन्त! वह सोमदेव आयु भव स्थिति क्षयके बाद उस देवलोकसे च्यवकर कहाँ जायगा? और कहाँ उत्पन्न होगा।

युक्त थई यावतगुप्त ब्रह्मचारिणी थशे त्यार पछी ते सोमा आर्या ते सुव्रता आर्याओनी पासे सामायिक आदि अगीयार अगोनु अध्ययन करशे अने घणाओ तप–षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादशम आदि तपोथी आत्माने भावित करती घणा वर्षो सुधी दीक्षा पर्यायनु पालन करी पछी मासिकी सलेखनाथी साठ भक्तोने अनशन द्वारा (उपवासथी) छेदन करी पोताना पापस्थानोना आलोचन अने प्रतिक्रमण करी समाधिने प्राप्त थई काल मासमा काल करी देवेन्द्र शक्रनी सामानिक देव थईने उत्पन्न थशे त्या एक एक देवनी स्थिति बे सागरोपम छे ते देवलोकमा सोमदेवनी पण स्थिति बे सागरोपमनी थशे

गौतम स्वामी पूछे छे—हे भदन्त ते सोमदेव आयुभव अने स्थितिक्षय पछी ते देवलोकमाथी च्यवीने क्या जशे? अने क्या उत्पन्न थशे?

खलु सा सोमा ब्राह्मणी सुव्रतामार्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा सुव्रतानामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव राष्ट्रकूटस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीत० तथैव आपृच्छति यावत् प्रव्रजितुम् । यथासुखं देवानुप्रिये ! मा प्रतिबन्धम् । ततः खलु स राष्ट्रकूटो विपुलमशनं तथैव यावत् पूर्वभवे सुभद्रा यावद् आर्या जाता, ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिणी । ततः खलु सा सोमा आर्या सुव्रतानामार्याणामन्तिके

कहेगी–हे देवानुप्रिये ! मै राष्ट्रकूटसे पूछकर आपके समीप मुण्डित होकर प्रव्रज्या लेना चाहती हूँ । वह आर्या उससे कहेगी–हे देवानुप्रिये ! तुम्हें जिस प्रकार सुख हो वैसा करो । प्रमाद मत करो । उसके बाद सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओंको वन्दन और नमस्कार कर उनके पाससे अपने घरमें राष्ट्रकूटके पास आयेगी । आकर हाथ जोड राष्ट्रकूटसे पूर्ववत पूछेगी कि हे देवानुप्रिय ! मेरी इच्छा है कि मै तुमसे आज्ञा लेकर सुव्रता आर्याओंके पास प्रव्रजित होऊँ । इस बातको सुनकर राष्ट्रकूट कहेगा–हे देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो । इस कार्यको करनेमें प्रमाद मत करो । उसके बाद वह राष्ट्रकूट विपुल अशन पान खाद्य स्वाद्य चार प्रकारके भोजन बनवाकर अपने मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको आमन्त्रित करेगा । और आदर सत्कारके साथ उनको भोजन करायेगा । जिस प्रकार पूर्वभवमें सुभद्रा आर्या हुई थी उसी प्रकार यह भी आर्या

करी धर्म સાભળીને તે આર્યાઓને કહેશે–હે દેવાનુપ્રિયે ! હુ રાષ્ટ્રકૂટને પૂછીને આપની પાસે મુડિત થઇને પ્રવ્રજ્યા લેવા ચાહુ છુ તે આર્યા તેને કહેશે —હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જે પ્રકારે સુખ થાય તેમ કર પ્રમાદ ન કર ત્યાર પછી સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓને વદન નમસ્કાર કરી તેમની પાસેથી પોતાને ઘેર રાષ્ટ્રકૂટની પાસે આવશે આવીને હાથ જોડી રાષ્ટ્રકૂટને અગાઉની જેમ પૂછશે કે —હે દેવાનુપ્રિય ! મારી ઇચ્છા છે કે હુ તમારી આજ્ઞા લઇને સુવ્રતા આર્યાઓની પાસે પ્રવ્રજિત થાઉ આ વાત સાભળી રાષ્ટ્રકૂટ કહેશે – હે દેવાનુપ્રિયે ! જેમ તને સુખ થાય તેમ કર આ કાર્ય કરવામા પ્રમાદ ન કર ત્યાર પછી તે રાષ્ટ્રકૂટ વિપુલ (ઘણા) અન્નપાન, ખાદ્ય સ્વાદ્ય ચાર પ્રકારના ભોજન બનાવરાવી પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન બધુઓને આમત્રણ આપશે અને આ ર સત્કાર સહિત તેમને ભોજન કરાવશે જે પ્રકારે આગલા ભવમા સુભદ્રા આર્યા થઈ હતી તેજ પ્રકારે આ પણ આર્યા થઇને ઇર્યાસમિતિ આદિથી

सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य बहुभिः षष्ठाष्टमदशमद्वादश० यावद् भावयन्ती बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयति, पालयित्वा मासिक्या सलेखनया षष्टि भक्तानि अनशनेन छित्त्वा आलोचितप्रतिक्रान्ता समाधिप्राप्ता कालमासे काल कृत्वा शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य सामानिकदेवतया उदपद्यत। तत्र खलु अस्त्येकैकेषां देवाना द्विसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता, तत्र खलु सोमस्यापि देवस्य द्विसागरोपमा स्थिति॰ प्रज्ञप्ता।

स खलु भदन्त! सोमो देवः तस्माद् देवलोकाद् आयुःक्षयेण यावत् चय च्युत्वा क्व गमिष्यति? क्व उत्पत्स्यते? गौतम! महाविदेहे वर्षे यावद्

होकर ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत गुप्तब्रह्मचारिणी होवेगी। उसके बाद वह सोमा आर्या उन सुव्रता आर्याओके समीप सामायिक आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन करेगी, और बहुतसे षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश आदि तपोंके द्वारा आत्माको भावित करती हुई बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्यायका पालन कर मासिकी सलेखनासे साठ भक्तोंको अनशनसे छेदन कर अपने पाप स्थानोंका आलोचन और प्रतिक्रमण कर समाधिको प्राप्त हो काल मासमें काल कर देवेन्द्र शक्रके सामानिक देव होकर उत्पन्न होगी। वहॉ एक २ देवकी स्थिति दो सागरोपम है। उस देवलोकमे सोमदेवकी भी स्थिति दो सागरोपम होगी।

गौतम स्वामी पूछते हैं–हे भदन्त! वह सोमदेव आयु भव स्थिति क्षयके बाद उस देवलोकसे च्यवकर कहॉ जायगा? और कहॉ उत्पन्न होगा।

युક્ત થઇ યાવતગુપ્ત બ્રહ્મચારિણી થશે ત્યાર પછી તે સોમા આર્યા તે સુવ્રતા આર્યાઓની પાસે સામાયિક આદિ અગીયાર અંગોનુ અધ્યયન કરશે અને ઘણાએ તપ–ષષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશમ આદિ તપોથી આત્માને ભાવિત કરતી ઘણા વર્ષો સુધી દીક્ષા પર્યાયનુ પાલન કરી પછી માસિકી સંલેખનાથી આઠ ભક્તોને અનશન દ્વારા (ઉપવાસથી) છેદન કરી પોતાના પાપસ્થાનોના આલોચન અને પ્રતિક્રમણ કરી સમાધિને પ્રાપ્ત થઇ કાલ માસમા કાલ કરી દેવેન્દ્ર શક્રની સામાનિક દેવ થઇને ઉત્પન્ન થશે ત્યા એક એક દેવની સ્થિતિ બે સાગરોપમ છે તે દેવલોકમા સોમદેવની પણ સ્થિતિ બે સાગરોપમની થશે

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છ —હે ભદન્ત તે સોમદેવ આયુભવ અને સ્થિતિક્ષય પછી તે દેવલોકથી ચ્યવીને ક્યા જશે! અને કયા ઉત્પન્ન થશે?

अन्त करिष्यति। एव खलु जम्बू। श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन चतुर्थस्याध्ययस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः ॥ ९ ॥

॥ पुष्पिताया चतुर्थमध्ययन समाप्तम् ॥ ४ ॥

टीका–'तएण ताओ' इत्यादि–व्याख्या निगदसिद्धा ॥ ९ ॥

पञ्चममध्ययनम्

मूलम्–जइण भंते ! समणेणं भगवया उक्खेवओ०। एव खलु जंबू ! तेण कालेण २ रायगिहे नाम नयरे गुणसिलए चेइए, सेणियराया, सामी समोसरिए, परिसा निग्गया। तेणं कालेण २ पुण्णभद्दे देवे सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे सभाए सुहम्माए पुण्णभद्दसि सीहासणसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहा सूरियाभो जाव बत्तीसविह नट्टविहि उवदसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए। कूडागारसाला० पुव्वभवपुच्छा। एव गोयमा ! तेण कालेण २ इहेव जम्बूदीवे दीवे भारहे वासे मणिवइया नाम नयरी होत्था रिद्ध०, चंदो राया, ताराइण्णे चेइए। तत्थण मणिवइयाए नयरीए पुण्णभद्दे नाम गाहावई परिवसइ अड्ढे। तेण कालेणं २ थेरा भगवंतो जातिसपण्णा जाव जीवियास-

---

भगवान कहेते हैं–हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्रमें उत्पन्न होकर यावत् सिद्ध होगा, और सब दुःखोका अन्त करेगा।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं–हे जम्बू ! इस प्रकार श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिताके चतुर्थ अध्ययनके भावोंका निरूपण किया है ॥ ९ ॥

। पुष्पिताका चौथा अध्ययन समाप्त हुआ ।

ભગવાન કહે છે —હે ગૌતમ ! મહા વિદેહક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થઈને તે સિદ્ધ થશે અને તમામ દુ ખોનો અત કરશે.

સુધર્મા સ્વામી કહે છે–હે જમ્બૂ ! આ પ્રકરે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના ચતુર્થ અધ્યયનના ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે (૯)

। પુષ્પિતાનુ ચોથુ અધ્યયન સમાપ્ત ।

मरणभयविप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरिवारा पुव्वाणुपुव्विं जाव समोसढा, परिसा निग्गया। तएणं से पुण्णभद्दे गाहावइ इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ० जाव पण्णत्तीए गंगदत्ते तहेव निग्गच्छइ जाव निक्खंतो जाव गुत्तबंभयारी। तएणं से पुण्णभद्दे अणगारे भगवंताणं अंतिए सामाइयमादियाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहुहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जाव भासामणपज्जत्तीए। एवं खलु गोयमा! पुण्णभद्देणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया। पुण्णभद्दस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! दोसागरोवमा ठिई पण्णत्ता। पुण्णभद्दे णं भंते! देवे ताओ देवलोगाओ जाव कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिइ? एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं निक्खेवओ ।१।

॥ पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥ ५ ॥

छाया—यदि खलु भदन्त! श्रमणेन भगवता उत्क्षेपकः। एवं खलु जम्बूः! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरं गुणशिलं नाम चैत्यम्, श्रेणिको राजा, स्वामी समवसृतः, परिषद् निर्गता। तस्मिन् काले २ पूर्ण-

भद्रो देवः सौधर्मे कल्पे पूर्णभद्रे विमाने सभाया सुधर्मायां पूर्णभद्रे सिंहासने चतुर्भिः सामानिकसहस्रैः यथा सूर्याभो यावद् द्वात्रिंशद्विध नाट्यविधिमुपदर्श्य यस्या दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिश प्रतिगत', कूटागारशाला, पूर्वभवपृच्छा।

पाँचवाँ अध्ययन।

'जइण भंते' इत्यादि—

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिताके चतुर्थ अध्ययनमे पूर्वोक्त भावोंका वर्णन किया है, तो हे भगवन् ! पञ्चम अध्ययनमे भगवानने किस अभिप्राय का निरूपण किया है।

आर्य सुधर्माने कहा—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें राजगृह नामक नगर था। वहाँ गुणशिलक नामक चैत्य था। उस नगरका राजा श्रेणिक था। उस कालमे श्रमण भगवान महावीर स्वामी उस नगरीमें पधारे। भगवानके दर्शनके लिये परिषद निकली। उस काल उस समयमे पूर्णभद्र देव सौधर्म कल्पके पूर्णभद्र विमानमे सुधर्मा सभाके अन्दर पूर्णभद्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक देवोके साथ बैठे हुए थे वह पूर्णभद्र देव सूर्याभ देवके समान भगवानको यावत् बत्तीस प्रकारकी नाट्यविधि दिखाकर जिस दिशासे आये उसी दिशामें चले गये। गौतमने भगवानसे पूर्णभद्र देवकी देव ऋद्धिके विषयमें

'અધ્યયન પાચમુ'

'जइण भंते' ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના ચોથા અધ્યયનમા પૂર્વોક્ત ભાવોનુ વર્ણન કર્યું છે તો હે ભગવન્! પાચમા અધ્યયનમા ભગવાને કયા અભિપ્રાયનુ નિરૂપણ કર્યું છે?

આર્ય સુધર્માએ કહ્યુ —

હે જમ્બૂ! તે કાળે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ ત્યા ગુણશિલક નામનુ ચૈત્ય હતુ તે નગરનો રાજા શ્રેણિક હતો, તે કાળે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સ્વામી તે નગરીમા પધાર્યા ભગવાનના દર્શન માટે પરિષદ નીકળી તે કાળ તે સમયે પૂર્ણભદ્ર દેવ સૌધર્મકલ્પના પૂર્ણભદ્ર વિમાનમા સુધર્મા સભાની અદર પૂર્ણભદ્ર સિંહાસન ઉપર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે બેઠેલા હતા તે પૂર્ણભદ્ર દેવ, સૂર્યાભદેવના જેવા ભગવાનને બત્રીસ પ્રકારની નાટ્યવિધિ બતાવી જે દિશામાથી આવ્યા તે દિશામાં પાછા ગયા ગૌતમે ભગવાનને પૂર્ણભદ્ર દેવની દેવઋદ્ધિના વિષયમાં

एवं गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये अत्रैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मणिपदिका नाम नगरी अभवत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धा०, चन्द्रो राजा, ताराकीर्णं चैत्यम्। तत्र खलु मणिपदिकाया नगर्यां पूर्णभद्रो नाम गाथापतिः परिवसति, आढ्य। तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्थविरा भगवन्तो जातिसम्पन्नाः, यावत् जीविताशामरणभयविप्रमुक्ता बहुश्रुता बहुपरिवारा. पूर्वानुपूर्वी यावत् समवसृताः। परिषत् निर्गता। ततः खलु स पूर्णभद्रो गाथापति. अस्याः कथाया लब्धार्थं सन् हृष्टतुष्टो० यावत् प्रज्ञप्त्या गङ्गदत्तस्तथैव निर्गच्छति

पूछा भगवानने पूर्ववत् कूटागार शालाके दृष्टान्तसे उन्हें प्रतिबोधित किया। फिर गौतमको उस देवके पूर्वभव जाननेकी जिज्ञासा होने पर, भगवानने कहा-उस काल उस समय इसी मध्य जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमे मणिपदिका नामकी नगरी थी, जो बडी २ अट्टालिकाओसे युक्त तथा बाहरी भीतरी शत्रुओसे रहित एव धनधान्य आदिसे सम्पन्न थी। उस नगरीके राजाका नाम चन्द्र था। उसमे ताराकीर्ण नामक एक उद्यान था। उस नगरीमें पूर्णभद्र नामक धनधान्यसम्पन्न गाथापति रहता था। उस काल उस समयमे जाति सम्पन्न कुल सम्पन्न स्थविरपदभूषित मुनिराज यावत् जीवनकी आशा और मरणभयसे रहित, बहुश्रुत तथा बहुत मुनि परिवारसे युक्त तीर्थंकर परम्परासे विचरते हुए मणिपदिका नगरीमे पधारे। जन-समुदायरूप परिषद उनके दर्शनार्थ निकली। उसके बाद वह पूर्ण-भद्र गाथापति उन स्थविरोके आनेका वृत्तान्त जानकर हृष्ट तुष्ट

પૂછ્યુ, ભગવાને પૂર્વવત્ કૂટાગારશાલાના દૃષ્ટાંતથી તેને પ્રતિબોધિત કર્યા પછી ગૌતમને તે દેવના પૂર્વભવ જાણવાની જિજ્ઞાસા થવાથી ભગવાને કહ્યુ —તે કાળ તે સમય આ મધ્ય જમ્બૂદ્વીપના ભરત ક્ષેત્રમા મણિપદિકા નામે નગરી હતી જેમા મોટી મોટી અટારિઓવાળી હવેલીઓ હતી તથા બહાર તેમજ અંદર શત્રુઓથી રહિત અને ધનધાન્ય આદિથી સંપન્ન હતી તે નગરીના રાજાનુ નામ ચન્દ્ર હતુ તેમા તારાકીર્ણ નામે એક ઉદ્યાન હતો તે નગરીમા પૂર્ણભદ્ર નામે ધનધાન્ય સંપન્ન ગાથાપતિ રહેતા હતા તે કાળ તે સમયે જાતિસંપન્ન—કુળસંપન્ન સ્થવિર પદથી ભૂષિત એવા મુનિરાજ જે જીવનની આશા અને મરણના ભયથી રહિત તથા બહુશ્રુત અને બહુમુનિ પરિવારોથી યુક્ત તીર્થંકર પરંપરાથી વિચરણ કરતા મણિપદિકા નગરીમા પધાર્યા જનસમુદાયરૂપ પરિષદ્ તેમના દર્શન માટે નીકળી ત્યાર પછી તે પૂર્ણભદ્ર ગાથાપતિ તે સ્થવિરોના આવવાના ખબર જાણી હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી ભગ-

भद्रो देवः सौधर्मे कल्पे पूर्णभद्रे विमाने सभायां सुधर्मायां पूर्णभद्रे सिंहासने चतुर्भिः सामानिकसहस्रैः यथा सूर्याभो यावद् द्वात्रिंशद्विधं नाट्यविधिमुपदर्श्य यस्या दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः, कूटागारशाला, पूर्वभवपृच्छा।

पाँचवाँ अध्ययन।

'जइ णं भंते' इत्यादि—

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिताके चतुर्थ अध्ययनमें पूर्वोक्त भावोंका वर्णन किया है, तो हे भगवन् ! पञ्चम अध्ययनमें भगवानने किस अभिप्राय का निरूपण किया है।

आर्य सुधर्माने कहा—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें राजगृह नामक नगर था। वहाँ गुणशिलक नामक चैत्य था। उस नगरका राजा श्रेणिक था। उस कालमें श्रमण भगवान महावीर स्वामी उस नगरीमें पधारे। भगवानके दर्शनके लिये परिषद् निकली। उस काल उस समयमें पूर्णभद्र देव सौधर्म कल्पके पूर्णभद्र विमानमें सुधर्मा सभाके अन्दर पूर्णभद्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक देवोंके साथ बैठे हुए थे वह पूर्णभद्र देव सूर्याभ देवके समान भगवानको यावत् बत्तीस प्रकारकी नाट्यविधि दिखाकर जिस दिशासे आये उसी दिशामें चले गये। गौतमने भगवानसे पूर्णभद्र देवकी देव ऋद्धिके विषयमें

'અધ્યયન પાચમુ'

'जइ णं भंते' ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના ચોથા અધ્યયનમા પૂર્વોકત ભાવોનું વર્ણન કર્યું છે તો હે ભગવન્ ! પાચમા અધ્યયનમા ભગવાને કયા અભિપ્રાયનુ નિરૂપણુ કર્યું છે ?

આર્ય સુધર્માએ કહ્યુ —

હે જમ્બૂ ! તે કાળે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ ત્યા ગુણશિલક નામનુ ચૈત્ય હતુ તે નગરનો રાજા શ્રેણિક હતો, તે કાળે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સ્વામી તે નગરીમા પધાર્યા ભગવાનના દર્શન માટે પરિષદ નીકળી તે કાળ તે સમયે પૂર્ણભદ્ર દેવ સૌધર્મકલ્પના પૂર્ણભદ્ર વિમાનમા સુધર્મા સભાની અંદર પૂર્ણભદ્ર સિંહાસન ઉપર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે બેઠેલા હતા તે પૂર્ણભદ્ર દેવ, સૂર્યાભદેવના જેવા ભગવાનને બત્રીસ પ્રકારની નાટ્યવિધિ બતાવી જે દિશામાથી આવ્યા તે દિશામાં પાછા ગયા ગૌતમે ભગવાનને પૂર્ણભદ્ર દેવની દેવઋદ્ધિના વિષયમા

कियन्त काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! द्विसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता । पूर्णभद्रः खलु भदन्त ! देवस्तस्माद् देवलोकाद् यावत् क्व गमिष्यति ? क्व उत्पत्स्यते ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावदन्त करिष्यति । एवं खलु जम्बूः श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन निक्षेपकः ॥ १ ॥

॥ पञ्चममध्ययन समाप्तम् ॥ ५ ॥

टीका-'जइण भंते' इत्यादि व्याख्या स्पष्टा ॥ १ ॥

॥ इति पञ्चमाध्ययन समाप्तम् ॥ ५ ॥

गौतम स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त ! पूर्णभद्र देवकी स्थिति कितने कालकी है ?

भगवान कहते है—हे गौतम ! पूर्णभद्र देवकी स्थिति दो सागरोपमकी है ।

गौतमने फिर पूछा—हे भदन्त ! यह पूर्णभद्र देव देवलोकसे च्यवकर कहाँ जायगा तथा कहाँ उत्पन्न होगा ।

भगवानने कहा—

हे गौतम ! यह पूर्णभद्र देव महाविदेह क्षेत्रमें उत्पन्न होकर सिद्ध होगा और यावत् सब दुःखोका अन्त करेगा ।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं-

हे जम्बू ! मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने इस प्रकार पुष्पिताके पाचवें अध्ययनका भाव कहा है सो मैंने तुम्हे कहा ॥१॥

। पुष्पिताका पाँचवाँ अध्ययन समाप्त हुआ ।

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે —

હે ભદન્ત ! પૂર્ણભદ્ર દેવની સ્થિતિ કેટલા કાળની છે ?

ભગવાન કહે છે —હે ગૌતમ ! પૂર્ણભદ્ર દેવની સ્થિતિ બે સાગરોપમની છે

ગૌતમે વળી પૂછયુ —હે ભદન્ત આ પૂર્ણભદ્રદેવ દેવલોકથી ચ્યુત થઈને કયા જશે અને કયા ઉત્પન્ન થશે ?

ભગવાને કહ્યુ —

હે ગૌતમ ! આ પૂર્ણભદ્રદેવ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થઇ સિદ્ધ થશે અને તમામ દુઃખોનો અંત આણશે

સુધર્મા સ્વામી કહે છે હે જમ્બૂ ! મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ પ્રકારે પુષ્પિતાના પાંચમા અધ્યયનનો ભાવ કહ્યો છે તે મે તને કહ્યો છે

यावद् निष्क्रान्तो यावद् गुप्तब्रह्मचारी। ततः खलु स पूर्णभद्रोऽनगारो भगवतामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य चतुर्थ षष्ठाष्टम० यावद् भावयित्वा बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या सलेखनया षष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्त्वा आलोचित–प्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः कालमासे काल कृत्वा सौधर्मे कल्पे पूर्णभद्रे विमाने उपपातसभाया देवशयनीये यावद् भाषामन'पर्याप्त्या। एवं खलु गौतम! पूर्णभद्रेण देवेन सा दिव्या देवर्द्धि' यावद् अभिसमन्वागता। पूर्णभद्रस्य खलु भदन्त! देवस्य

हृदयसे भगवती सूत्रमें उक्त गङ्गदत्तके समान उनके दर्शनके लिये गया और धर्मकथा सुनकर यावत् प्रव्रजित होगया। तथा ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत गुप्तब्रह्मचारी हो गया। उसके बाद उस पूर्णभद्र अनगारने उन स्थविरोंके पास सामायिक आदि ग्यारह अगोंका अध्ययन किया और बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम आदि तपसे आत्मा को भावित करके बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्याय पाला। बादमे मासिक सलेखनासे साठ भक्तोंको अनशनसे छेदकर अपने पापस्थानोंकी आलोचना और प्रतिक्रमणकर समाधि प्राप्त की। तथा काल अवसरमें कालकर सौधर्म कल्पके पूर्णभद्र विमानमें उपपात सभाके अन्दर देवशयनीय शय्यामे यावत् पूर्णभद्र देवपनेमें उत्पन्न होकर भाषापर्याप्ति मन पर्याप्ति आदि पर्याप्तिभावको प्राप्त किया। हे गौतम! पूर्णभद्र देवने इस प्रकारसे इस दिव्य देव ऋद्धिको प्राप्त किया।

વતીસૂત્રમા કહેલ ગગદત્તની પેઠે તેમના દર્શનને માટે ગયા અને ધર્મકથા સાભળીને યાવત્ પ્રવ્રજિત થઇ ગયા તથા ઈર્યાસમિતિ આદિથી યુકત થઈને ગુપ્તબ્રહ્મચારી થઇ ગયા ત્યાર પછી તે પૂર્ણભદ્ર અનગારે તે સ્થવિરોની પાસે સામાયિક આદિ અગીયાર અગોનુ અધ્યયન કર્યું અને ઘણા ચતુર્થષષ્ઠ અષ્ટમ આદિ તપોથી આત્માને ભાવિત કરીને બહુ વર્ષો સુધી દીક્ષા પર્યાયનુ પાલન કર્યું પછી માસિકી સલેખનાથી સાઠ ભકતોનુ અનશન વડે છેદન કરી પોતાના પાપસ્થાનોની આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ કરી સમાધિ પ્રાપ્તિ કરી તથા કાળ અવસર આવતા કાળ કરી સૌધર્મ કલ્પના પૂર્ણભદ્ર વિમાનમા ઉપપાત સભાની અદર દેવશયનીય શય્યામા તે પૂર્ણભદ્ર દેવપણામા ઉત્પન્ન થઇને ભાષાપર્યાપ્તિ મન પર્યાપ્તિ આદિ પર્યાપ્તિઓથી પર્યાપ્તિભાવોને પ્રાપ્ત કર્યા હે ગૌતમ! પૂર્ણભદ્રદેવે આ પ્રકારે આ દિવ્ય દેવની ઋદ્ધિને પ્રાપ્ત કરી

राजा, स्वामी समवसृतः तस्मिन काले तस्मिन समये माणिभद्रो देव. सभाया सुधर्मायां माणिभद्रे सिंहासने चतुर्भिः सामानिकसहस्रैर्यावत् पूर्णभद्रस्तथैवाऽऽगमन, नाट्यविधि , पूर्वभवपृच्छा, मणिपदा नगरी, माणिभद्रो गाथापति', स्थविराणामन्तिके प्रव्रज्या, एकादशाङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि पर्याय , मासिकी सलेखना, षष्टिं भक्तानि०, माणिभद्रे विमाने उपपात , द्विसागरोपमा

राज्य करते थे । भगवान महावीर स्वामी उस नगरमें पधारे । परिषद भगवानके वन्दनके निमित्त गई । उस काल उस समयमें माणिभद्र देव सुधर्मा सभामे माणिभद्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक देवोंके साथ बैठे हुए थे । वे माणिभद्र देव पूर्णभद्रके समान भगवानके पास आये और नाट्यविधि दिखाकर चले गये । गौतमने माणिभद्रको दिव्य देवऋद्धिके बारेमे पूर्ववत् प्रश्न किया । भगवानने कूटागारशालाके दृष्टान्तसे उसका उत्तर दिया । गौतमने माणिभद्र देवके पूर्व जन्मके बारेमें प्रश्न किया ।

भगवानने कहा–

उस काल उस समयमें मणिपदिका नामकी नगरी थी, उसमें माणिभद्र नामका एक गाथापति था। जिसने स्थविरोंके समीप प्रव्रज्या ग्रहणकर ग्यारह अगो का अध्ययन किया । बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्यायका पालन किया और मासिक सलेखना की, अनशन द्वारा साठ भक्तोंको छेदनकर पापस्थानोंका आलोचन प्रतिक्रमण

नामे નગર હતો શ્રેણિક નામના રાજા તેમા રાજ્ય કરતા હતા ભગવાન મહાવીર સ્વામી તે નગરમા પધાર્યા પરિષદ્ ભગવાનને વદન કરવા ગઈ તે કાળ તે સમયે માણિભદ્ર દેવ સુધર્મા સભામા માણિભદ્ર સિંહાસન ઉપર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે બેઠેલા હતા માણિભદ્ર દેવ પૂર્ણભદ્રની પેઠે ભગવાનની પાસે આવ્યા અને નાટ્ય વિધિ દેખાડી અન્તર્ધાન થઈ ગયા–પાછા જતા રહ્યા ગૌતમે માણિભદ્રની દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિના બાબત અગાઉની પેઠે પ્રશ્ન કર્યો ભગવાને કૂટાગારશાલાના દૃષ્ટાતથી તેનો ઉત્તર આપ્યો. ગૌતમે માણિભદ્ર દેવના પૂર્વજન્મ વિષે પ્રશ્ન કર્યો

ભગવાને કહ્યુ –

તે કાળ તે સમયે મણિપદિકા નામની નગરી હતી તેમા માણિભદ્ર નામે એક એક ગાથાપતિ હતો જેણે સ્થવિરોની પાસે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરી અગીયાર અગોનુ અધ્યયન કર્યુ ઘણા વર્ષો સુધી દીક્ષા પર્યાય, ચારિત્ર પર્યાયનુ પાલન કર્યુ માસિકી સલેખનાથી અનશન દ્વારા સાઠ ભકતોનુ છેદન કરી પાપ સ્થાનોની આલોચના પ્રતિક્રમણ

मूलम्–जइणं भंते ! समणेणं भगवया जाव सपत्तेणं उक्खेवओ०, एव खलु जंवू ! तेण कालेणं २ रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसरिए । तेणं कालेण २ माणिभद्दे देवे सभाए सुहम्माए माणिभद्दसि सीहासणसि चउहि सामाणियसाहस्सीहि जहा पुण्णभद्दो, तहेव आगमण, नट्टविही, पुव्वभवपुच्छा, मणिवया नयरी, माणिभद्दे गाहावई, थेराण अंतिए पव्वज्जा, एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, वहूइ वासाइ परियाओ, मासिया संलेहणा, सट्ठि भत्ताइ०, माणिभद्दे विमाणे उववाओ, दोसागरोवमा ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । एव खलु जंबू ! निक्खेवओ ॥

॥ छट्ठं अज्झयण समत्त ॥ ६ ॥

छाया–यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन उत्क्षेपकः। एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले २ राजगृह नगर, गुणशिल चैत्य, श्रेणिको

छठा अध्ययन

'जइण भते' इत्यादि–

जम्बू स्वामी पूछते है—

हे भदन्त ! मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने पॉचवें अध्ययनका पूर्वोक्त भाव बतलाया है, तो फिर छठे अध्ययनमें उन्होने किस भावका निरूपण किया है ?

भगवान कहते है–

हे जम्बू ! उस काल उस समयमे राजगृह नामका नगर था। उस नगरमे गुणशिलक चैत्य था। श्रेणिक नामके राजा उसमें

छठ्ठुं अध्ययन

'जइण भते' ઇત્યાદિ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે —

હે ભદન્ત ! મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પાંચમા અધ્યયનનો પૂર્વોક્ત ભાવ બતાવ્યો છે તો પછી છઠ્ઠા અધ્યયનમાં તેમણે કયા ભાવનુ નિરૂપણ કર્યુ

ભગવાન કહે છે —

હે જમ્બૂ ! તે કાળે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તે નગરમાં ગુણશિલક

अथ पुष्पचूलिकाख्यश्चतुर्थो वर्ग. ॥ ४ ॥

मूलम्—जइ्ण भंते! समणेण भगवया उक्खेवओ जाव दस अज्झयणा पण्णत्ता। त जहा—

"सिरि-हिरि-धिइ-कित्तीओ, बुद्धी लच्छी य होइ बोधव्वा।
इलादेवी सुरादेवी, रसदेवी गधदेवी य ॥ १ ॥"

जइ्ण भंते! समणेण भगवया जाव सपत्तेण उवंगाण चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भते! उक्खेवओ, एव खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी

दत्तः चन्दनायाम्, शिवो मिथिलाया, वलो हस्तिनापुरे नगरे, अनादृत काकन्द्या, चैत्यानि यथा सग्रहण्याम् ॥ १ ॥

॥ इति पुष्पिताया सप्तमाष्टमनवमदशमान्यध्ययनानि समाप्तानि ॥ ७।८।९।१० ॥

॥ इति तृतियो वर्गः समाप्तः ॥

टीका- 'एव' इत्यादि-व्याख्या स्पष्टा ॥ २ ॥

पुष्पिताख्यस्तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

विमानोंका नाम है! 'दत्त' अपने पूर्व जन्ममे चन्दना नगरीमे, 'शिव' मिथिलामें, 'वल' हस्तिनापुरमें, 'अनादृत' काकन्दीमे जन्मे थे। सग्रहणी गाथाके अनुसार उद्यान जानना चाहिये। ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ पुष्पिताका सातवाँ, आठवाँ, नवमाँ, और दसवाँ अध्ययन समाप्त हुआ।

पुष्पिता नामका तृतिय वर्ग समाप्त हुआ ॥ ३ ॥

દેવોના નામના જેવાજ તેમના વિમાનના નામ છે દત્ત પોતાના પૂર્વજન્મમા ચન્દના નગરીમા, શિવ મિથિલામા, બલ હસ્તિનાપુરમા અનાદૃત કાકન્દીમા જન્મ્યા હતા સગ્રહણી ગાથા અનુસાર ઉદ્યાન જાણી લેવા જોઈએ ॥ ૭ ॥ ૮ । ૯ ॥ ૧૦ ॥ પુષ્પિતાનુ સાતમુ—આઠમુ—નવમુ—દશમુ અધ્યયન સમાપ્ત

પુષ્પિતા નામે તૃતીય વર્ગ સમાપ્ત

मूलम्–एव दत्ते ७ सिवे ८ बले ९ अणाढिए १० सव्वे जहा पुण्णभद्दे देवे। सव्वेसि दोसागरोवमाइ ठिई। विमाणा देवसरिसनामा। पुव्वभवे दत्ते चदणाए, सिवे मिहिलाए बलो हत्थिणपुरनयरे, अणाढिए काकदीए, चेइयाइ जहा सगहणीए॥

॥ तइओ वग्गो सम्मत्तो ॥

स्थितिः, महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति। एव खलु जम्बूः! निक्षेपकः ॥ १ ॥

॥ इति षष्ठाध्ययन समाप्तम् ॥ ६ ॥

टीका– 'जइण भते' इत्यादि–व्याख्या स्पष्टा ॥ १ ॥

छाया–एव दत्तः ७ शिवः ८ बलः ९ अनादृतः १० सर्वे यथा पूर्णभद्रो देवः! सर्वेषा द्विसागरोपमा स्थिति, विमानानि देवसदृशनामानि, पूर्वभवे

करके काल अवसरमें कालकर माणिभद्र विमानमे उत्पन्न हुआ। यहाँ उसकी स्थिति दो सागरोपम है। अन्तमें देवलोकसे च्यव कर महा विदेह क्षेत्रमें जन्म लेकर सिद्ध होगा और सब दुःखोका अन्त करेगा।

सुधर्मा स्वामी कहते है—

हे जम्बू! इस प्रकार श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिताके छठे अध्ययनके भावका प्रतिपादन किया।

। पुष्पिताका छठा अध्ययन समाप्त हुआ।

इसी प्रकार ७ दत्त, ८ शिव, ९ बल, १० अनादृत, इन सभी देवोंका वर्णन पूर्णभद्र देव के समान जानना चाहिये। सभीकी स्थिति दो दो सागरोपम है। इन देवोंके नामके समान ही इनके

કરી કાળ અવસરમા કાળ કરીને માણિભદ્ર વિમાનમા ઉત્પન થયા ત્યા તેની સ્થિતિ બે સાગરોપમ છે આખરે દેવલોકથી ચ્યવી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ લઈ સિદ્ધ થશે અને સર્વ દુખોનો અત લાવશે

સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ! આ પ્રકારે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના છઠ્ઠા અધ્યયનના ભાવનુ પ્રતિપાદન કર્યું

પુષ્પિતાનુ છઠ્ઠુ અધ્યયન સમાપ્ત

આ પ્રકારે ૭ દત્ત, ૮ શિવ, ૯ બલ, ૧૦ અનાદૃત આ બધા દેવોનુ વર્ણન પૂર્ણભદ્ર દેવના જેવુ જાણી લેવુ જોઈએ બધાની સ્થિતિ બબ્બે સાગરોપમ છે તે

नियपयरिवारपरिवुडा रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थकरातिसए० पासइ, धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता चेडीचक्कवालपरिकिण्णत्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासइ। तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए भूयाए दारियाए तीसे महइ० धम्मकहा, धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ० वदइ, वदित्ता एवं वयासी सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, से जहेयं तुब्भे वदेह, जं नवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं जाव पव्वइत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं सा भूया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्पवरं जाव दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागया, रायगिहं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया, रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागया, करतल० जहा जमाली आपुच्छइ। अहासुहं देवाणुप्पिए! तएणं से सुदंसणे गाहावई विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ, मित्तनाइ० जाव जिमियभुत्तुत्तरकाले सुईभूए निक्खमणमाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! भूयादारियाए पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता जाव पच्चप्पिणह। तएणं ते जाव पच्चप्पिणंति ॥ १ ॥

— छाया– यदि खलु भदन्त! श्रमणेन भगवता उत्क्षेपको यावद् दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि। तद् यथा–

समोसढे, परिसा निग्गया। तेणं कालेण २ सिरि देवी सोहम्मे कप्पे सिरिवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिंसि सीहासणंसि चउहि सामाणियसाहस्सेहि चउहि महत्तरियाहि सपरिवाराहि जहा बहुपुत्तिया जाव नट्टविहि उवदसित्ता पडिगया। नवर [दारय] दारियाओ नत्थि। पुव्वभवपुच्छा। एव खलु गोयमा! तेणं कालेण २ रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए जियसत्तु राया। तत्थ ण रायगिहे नयरे सुदसणे नाम गाहावइ परिवसइ अड्ढे। तस्स ण सुदसणस्स गाहावइस्स भूया पियाए गाहावइणीए अत्तया भूया नाम दारिया होत्था वुड्ढा वुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी वरगपरिवज्जिया यावि होत्था। तेण कालेण २ पासे अरहा पुरिसादाणीए जाव नवरयणिए, वण्णओ सो चेव, समोसरण, परिसा निग्गया। तएण सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी—एव खलु अम्मताओ! पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे जाव देवगणपरिवुडे विहरइ. त इच्छामि ण अम्मयाओ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवदिया गमित्तए। अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबध।

तए ण सा भूया दारिया ण्हाया० जाव सरीरा चेडीचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरूढा। तएण सा भूया दारिया

गुणशिल चैत्य, श्रेणिको राजा, स्वामी समवसृत', परिषद् निर्गता। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रीदेवी सौधर्मे कल्पे श्र्यवतंसके विमाने सभायां सुधर्मायां श्रियि सिंहासने चतुर्भि' सामानिकसहस्रै• चतसृभिर्महत्तरिकाभिः सपरिवाराभि' यथा बहुपुत्रिका यावद् नाटयविधिमुपदर्श्य प्रतिगता। नवरं [दारक] दारिका न सन्ति। पूर्वभवपृच्छा। एवं खलु गौतम' तस्मिन् काले

जम्बू स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पचूलिका नामक चतुर्थवर्ग रूप उपाङ्गमें दस अध्ययनोंका निरूपण किया है, तो प्रथम अध्ययनका उन्होंने क्या भाव फरमाया है।

सुधर्मा स्वामी कहते है—

हे जम्बू' प्रथम अध्ययनके भावको भगवानने इस प्रकार निरूपण किया है—उस काल उस समयमे राजगृह नामक नगर था। उस नगरमें गुणशिलक नामक चैत्य था। उस नगरीके राजा श्रेणिक थे, वहाँ श्रमण भगवान महावीर पधारे। परिषद् उनके दर्शनके लिये निकली। उस काल उस समयमे श्री-देवी सौधर्म कल्पके श्री-अवतंसक विमानमें सुधर्मा सभाके अन्दर श्री-सिंहासनपर चार हजार सामानिक देवोंके साथ तथा सपरिवार चार महत्तरिकाओंके साथ बैठी हुई थी। वह श्री-देवी बहुपुत्रिका देवीके समान भगवानके लिये आई और नाट्यविधि दिखाकर वापस गयी। बहुपुत्रि

હે ભદન્ત! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પચૂલિકા નામે ચોથા વર્ગરૂપ ઉપાંગમાં દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો પ્રથમ અધ્યયનમાં તેમણે કયો ભાવ બતાવ્યો છે?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ! પ્રથમ અધ્યયનના ભાવને આવી રીતે નિરૂપણ કર્યો છે — તે કાળ તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તે નગરમાં ગુણશિલક નામે ચૈત્ય હતું તે નગરીનો રાજા શ્રેણિક હતો ત્યાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પધાર્યા પરિષદ્ તેમના દર્શન માટે નીકળી તે કાળ તે સમયે શ્રી દેવી સૌધર્મકલ્પના શ્રી અવતંસક વિમાનમાં સુધર્માસભાની અંદર શ્રી સિંહાસન પર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે તથા સપરિવાર ચાર મહત્તરિકાઓના સાથે બેઠી હતી તે શ્રીદેવી બહુપુત્રિકા દેવીની પેઠે ભગવાનના દર્શન માટે આવી અને નાટ્યવિધિ દેખાડી પાછી ચાલી ગઈ

"श्री-ह्री-धृति-कीर्तयो बुद्धिलक्ष्मीश्च भवति बोद्धव्या ।
इलादेवी सुरादेवी, रसदेवी गन्धदेवी च ॥ १ ॥"

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन उपाङ्गाना चतुर्थस्य वर्गस्य पुष्पचूलाना दशाऽध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! उत्क्षेपकः, एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगर,

---

चतुर्थ वर्ग (४)

पुष्पचूलिका.

'जइण' भते इत्यादि-

जम्बू स्वामी पूछते है-

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिता वर्गमे इस अध्ययनोका निरूपण किया है । उसके बाद उन्होंने क्या कहा है?

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! उसके बाद भगवानने पुष्पचूलिका वर्गका निरूपण किया है। उसमे उन्होंने दस अध्ययन बतलाये हैं। जोकि इस प्रकार है-(१) श्री, (२) ह्री, (३) धी, (४) कीर्ति, (५) बुद्धि, (६) लक्ष्मी, (७) इलादेवी, (८) सुरादेवी, (९) रसदेवी (१०) गन्धदेवी ॥

हे जम्बू ! इस प्रकार भगवानने दस अध्ययनोंका निरूपण किया है ।

ચતુર્થ વર્ગ (૪)

પુષ્પચૂલિકા

'जइण भते' ઇત્યાદિ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે —

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતા વર્ગમા દશ અધ્યયનનુ નિરૂપણ કર્યું છે ત્યાર પછી તેમણે શુ કહ્યુ છે ?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ ! ત્યાર પછી ભગવાને પુષ્પચૂલિકા વર્ગનું નિરૂપણ કર્યું છે તેમ તેઓએ દશ અધ્યયન બતાવ્યા છે જેના નામ આવા પ્રકારના છે —(૧) શ્રી, (૨) હ્રી, (૩) ધી, (૪) કીર્તિ, (૫) બુદ્ધિ, (૬) લક્ષ્મી, (૭) ઇલાદેવી, (૮) સુરાદેવી, (૯) રસદેવી, (૧૦) ગન્ધદેવી

હે જમ્બૂ ! આ પ્રમાણે ભગવાને દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે —

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે —

वर्जिता चापि अभवत् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वोऽर्हन् पुरुषा दानीयो यावद् नवरत्निको वर्णक सएव, समवसरण, परिषद् निर्गता। ततः खलु सा भूता दारिका अस्याः कथाया लब्धार्था सती हृष्टतुष्टा० यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एव खलु अम्बतातौ ! पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः पूर्वानुपूर्वी चरन् यावद् देवगणपरिवृतो विहरति, तद् इच्छामि खलु अम्बातातौ ! युवाभ्यामभ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्याऽर्हत पुरुषादानीयस्य पादवन्दनाय गन्तुम्, यथासुख देवानुप्रिये! मा प्रतिबन्धम् । ततः खलु सा भूता दारिका स्नाता यावत् सर्वालङ्कारविभूषितशरीरा चेटीचक्रवालपरिकीर्णा स्वस्माद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति,

अर्हत पार्श्व प्रभु उस नगरीमें पधारे। भगवानके दर्शनके लिये परिषद अपने २ घरसे निकली। उसके बाद वह भूता दारिका भगवान पार्श्व प्रभुके आनेका वृत्तान्त सुनकर हृष्ट तुष्ट हृदयसे माता पिताके समीप आयी, और उनसे इस प्रकार कहा हे माता पिता! पुरुषादानीय भगवान पार्श्व प्रभु तीर्थंकरपरम्परासे विचरते हुए देवगणोंसे परिवृत हो इस राजगृह नगरमें पधारे हैं, इस लिये मेरी इच्छा है कि पुरुषादानीय उन पार्श्व प्रभुकी चरण वन्दनाके लिये जाऊँ। पुत्रीकी ऐसी इच्छा जानकर उन्होंने कहा-जाओ बेटी! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो। प्रमाद मत करो।

उसके बाद वह भूता दारिका स्नान कर सभी प्रकारोंके अलङ्कारोंसे अपने को अलङ्कृतकर दासियोंसे परिवेष्टित हो अपने घरसे निकलकर

અર્હત્ પાર્શ્વ પ્રભુ તે નગરીમાં પધાર્યા ભગવાનના દર્શન કરવા માટે પરિષદ્ પોતપોતાના ઘરમાંથી નીકળી ત્યાર પછી તે ભૂતા દારિકા ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુના આવવાનું વૃત્તાન્ત સાભળીને હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી માતાપિતાની પાસે આવી અને તેમને આ પ્રકારે કહ્યું —હે માતાપિતા! પુરુષાદાનીય ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુ તીર્થંકર પરંપરાથી વિચરતા દેવગણોથી પરિવૃત આ રાજગૃહ નગરમાં પધાર્યા છે આ માટે મારી ઇચ્છા છે કે પુરુષાદાનીય તે પ્રભુની ચરણ વન્દનાને માટે જાઉં પુત્રીની એવી ઇચ્છા જાણીને તેઓએ કહ્યું— જાઓ દીકરી! જે પ્રકારે તમને સુખ થાય તેમ કરો કોઈ પ્રકારનો પ્રમાદ ન કરો

ત્યાર પછી તે ભૂતા દારિકા સ્નાન કરી બધા પ્રકારના અલંકારો (ઘરેણા) થી વિભૂષિત થઇ દાસીઓથી પરિવેષ્ટિત (ઘેરાયેલી) થઇને પોતાના ઘેરથી નીકળી બાહાર

तस्मिन् समये राजगृहं नगरं, गुणशिलं चैत्यं, जितशत्रू राजा । तत्र खलु राजगृहे नगरे सुदर्शनो नाम गाथापतिः परिवसति, आढ्यः । तस्य खलु सुदर्शनस्य गाथापतेः प्रिया नाम भार्या अभवत् सुकुमारा । तस्य खलु सुदर्शनस्य गाथापते दुहिता प्रियाया गाथापतिकाया आत्मजा भूता नाम दारिका-अभवत् वृद्धा वृद्धकुमारी जीर्णा जीर्णकुमारी पतितपुतस्तनी वरपरि-

कासे विशेष केवल इतना ही है कि इसने कुमार कुमारियोंको वैक्रियिक शक्तिसे उत्पन्न नही किया ।

गौतमने पूछा—

हे भदन्त ! यह श्री देवी पूर्व जन्ममे कौन थी ।

भगवानने कहा—

हे गौतम ! उस काल उस समयमे राजगृह नामका नगर था। उस नगरमे गुणशिलक नामक चैत्य था। उस नगरके राजाका नाम जितशत्रु था। उसमे सुदर्शन नामका गाथापति रहता था जो धनधान्यादिसे सम्पन्न था । उस गाथापतिकी पत्नीका नाम प्रिया था । जो अत्यन्त सुकुमार थी । उस सुदर्शन गाथापतिकी पुत्री तथा प्रिया गाथापत्नीकी आत्मजा- लडकीका नाम भूता था, जो कि वृद्धा और वृद्ध कुमारी (अधिक वयवाली कन्या) तथा जीर्णा और जीर्ण कुमारी थी, एव शिथिल नितम्ब और स्तनवाली थी, तथा अविवाहित थी। उस काल उस समयमे पुरुषादानीय (पुरुषोंमें श्रेष्ठ) नौ हाथके अवगाहनावाले

બહુપુત્રિકાથી વિશેષ માત્ર એ હતુ કે આણે કુમાર કુમારિઓને વૈક્રિયિક શક્તિથી ઉત્પન્ન કર્યાં નહોતા

ગૌતમે પૂછયુ —હે ભદન્ત ! આ શ્રીદેવી પૂર્વજન્મમા કોણ હતી ?

ભગવાને કહ્યુ —હે ગૌતમ ! તે કાળ તે સમયે રાજગૃહ નામનુ નગર હતુ તે નગરમા ગુણશિલક નામનુ ચૈત્ય હતુ તે નગરના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતુ તે રાજગૃહ નગરમા સુદર્શન નામનો ગાથાપતિ રહેતો હતો જે ધનધાન્ય આદિથી સંપન્ન હતો તે ગાથાપતિની પત્નીનુ નામ પ્રિયા હતુ, જે અત્યંત સુકુમાર હતી તે સુદર્શન ગાથાપતિની પુત્રી તથા પ્રિયા ગાથાપત્નીની આત્મજા (દીકરી)નુ નામ ભૂતા હતુ કે જે વૃદ્ધા અને વૃદ્ધકુમારી (વધારે વયવાળી કન્યા) તથા જીર્ણા અને જીર્ણકુમારી હતી એટલે કે શિથિલ નિતંબ અને સ્તનવાળી તથા અવિવાહિત હતી તે કાળ તે સમયે ત્યા પુરુષાદાનીય (પુરુષોમા શ્રેષ્ઠ) નવહાથની અવગાહનાવાળા

वर्जिता चापि अभवत् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयो यावद् नवरत्निको वर्णक सएव, समवसरण, परिषद् निर्गता । ततः खलु सा भूता दारिका अस्याः कथाया लब्धार्था सती हृष्टतुष्टा० यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एवं खलु अम्बतातौ ! पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः पूर्वानुपूर्वी चरन् यावद् देवगणपरिवृतो विहरति, तद् इच्छामि खलु अम्बातातौ ! युवाभ्यामभ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्याऽर्हतः पुरुषादानीयस्य पादवन्दनाय गन्तुम्, यथासुखं देवानुप्रिये ! मा प्रतिबन्धम् । ततः खलु सा भूता दारिका स्नाता यावत् सर्वालङ्कारविभूषितशरीरा चेटीचक्रवालपरिकीर्णा स्वस्माद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति,

अर्हत पार्श्व प्रभु उस नगरीमें पधारे । भगवानके दर्शनके लिये परिषद् अपने २ घरसे निकली । उसके बाद वह भूता दारिका भगवान पार्श्व प्रभुके आनेका वृत्तान्त सुनकर हृष्ट तुष्ट हृदयसे माता पिताके समीप आयी, और उनसे इस प्रकार कहा हे माता पिता ! पुरुषादानीय भगवान पार्श्व प्रभु तीर्थंकरपरम्परासे विचरते हुए देवगणोंसे परिवृत हो इस राजगृह नगरमें पधारे हैं, इस लिये मेरी इच्छा है कि पुरुषादानीय उन पार्श्व प्रभुकी चरण वन्दनाके लिये जाऊँ । पुत्रीकी ऐसी इच्छा जानकर उन्होंने कहा-जाओ बेटी ! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो । प्रमाद मत करो ।

उसके बाद वह भूता दारिका स्नान कर सभी प्रकारोके अलङ्कारोसे अपने को अलङ्कृतकर दासियोंसे परिवेष्टित हो अपने घरसे निकलकर

અર્હત્ પાર્શ્વ પ્રભુ તે નગરીમા પધાર્યા ભગવાનના દર્શન કરવા માટે પરિષદ્ પોતપોતાના ઘરમાથી નીકળી ત્યાર પછી તે ભૂતા દારિકા ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુના આવવાનુ વૃત્તાન્ત સાભળીને હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી માતાપિતાની પાસે આવી અને તેમને આ પ્રકારે કહ્યુ —હે માતાપિતા ! પુરુષાદાનીય ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુ તીર્થંકર પરપરાથી વિચરતા દેવગણોથી પરિવૃત આ રાજગૃહ નગરમા પધાર્યા છે આ માટે મારી ઈચ્છા છે કે પુરુષાદાનીય તે પ્રભુની ચરણ વન્દનાને માટે જાઉ પુત્રીની એવી ઈચ્છા જાણીને તેઓએ કહ્યુ– જાઓ દીકરી ! જે પ્રકારે તમને સુખ થાય તેમ કરો કોઈ પ્રકારનો પ્રમાદ ન કરો

ત્યાર પછી તે ભૂતા દારિકા સ્નાન કરી બધા પ્રકારના અલકારો (ઘરેણા) થી વિભૂષિત થઇ દાસીઓથી પરિવેષ્ટિત (ઘેરાયેલી) થઇને પોતાના ઘેરથી નીકળી બાહાર

प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्योपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिक यानप्रवर दुरूढा । ततः खलु सा भूता दारिका निजपरिवारपरिवृता राजगृह नगर मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव गुणशिल चैत्य तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य छत्रादीन् तीर्थंकरातिशयान् पश्यति । धार्मिकात् यानप्रवरात् प्रत्यवरुह्य चेटीचक्रवालपरिकीर्णा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीय स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त्रिकृत्वो यावत् पर्युपास्ते । ततः खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयो भूतायै दारिकायै तस्या महातिमहत्या० धर्मकथा । धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा० वन्दते, वन्दित्वा एवमवादीत्-श्रद्दधामि खलु भदन्त ! निर्ग्रन्थ प्रवचन यावद् अभ्युत्तिष्ठामि खलु भदन्त ! निर्ग्रन्थ

बाहर उपवेशन शालामे आयी । वहाँ अपने धार्मिक रथपर चढी । उसके बाद वह भूता दारिका अपनी दासियोंसे परिवेष्टित हो राजगृह नगरके मध्यसे होती हुई गुणशिलक चैत्यमे पहुँची । वहाँ उसने तीर्थकरोंसे परिवेष्टित हो पुरुपादानीय भगवान पर्श्व प्रभुके पास गयी और तीन बार प्रदक्षिणापूर्वक वन्दन नमस्कार करके उपासना करने लगी । उसके बाद पुरुषादानीय अर्हत् भगवान पार्श्व प्रभुने उस महती सभामे भूता दारीकाको धर्मोपदेश किया । अनन्तर भूता दारिका धर्म सुनकर उसे हृदयमे अवधारण कर हृष्ट तुष्ट हृदय हो भगवानको वन्दन और नमस्कार किया । पश्चात् उसने इस प्रकार कहा—हे भगवन् ! आपने जिस निर्ग्रन्थ प्रवचनका निरूपण किया है उस निर्ग्रन्थ प्रवचन पर में श्रद्धा रखती हूँ और उसके आराधनके लिये मैं उद्यत हूँ । हे भदन्त !

બેસવાની શાળામા આવી ત્યા પોતાના ધાર્મિક રથ ઉપર ચડી ત્યાર પછી તે ભૂતા દારિકા પોતાની દાસીઓથી પરિવેષ્ટિત થઈ રાજગૃહ નગરની વચ્ચે થઈને ગુણશિલક ચૈત્યમા પહોચી ત્યા તેણે તીર્થંકરના અતિશયક છત્ર આદિ જોયા ત્યા પોતાના ધાર્મિક રથમાથી નીચે ઉતરી પછી પોતાની દાસીઓથી ઘેરાઈને પુરુષાદાનીય ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુની પાસે ગઈ અને ત્રણવાર પ્રદક્ષિણાપૂર્વક વદન નમસ્કાર કરી ઉપાસના કરવા લાગી ત્યાર પછી પુરુષાદાનીય અર્હત્ ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુએ તે મોટી સભામા ભૂતા દારિકાને ધર્મોપદેશ કર્યો પછી ભૂતા દારિકાએ ધર્મનુ શ્રવણ કરી તેને હૃદયમા અવધારણ કરી હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી ભગવાનને વદન તથા નમસ્કાર કર્યા પછી આ પ્રકારે કહ્યુ —હે ભગવન્ ! જે પ્રકારે આપે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનનુ નિરૂપણ કર્યું છે તે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનમા હુ શ્રદ્ધા રાખુ છુ અને તેના આરાધન માટે હું યત્નશીલ છુ

प्रवचनम्, तद् यथैतद् यूय वदथ, यद् नवर देवानुप्रिय ! अम्बापितरौ आपृच्छामि । ततः खलु अहम् यावत् प्रव्रजितुम् । यथासुख देवानुप्रिये ! तत खलु सा भूता दारिका तदेव धार्मिक यानप्रवर यावद् दूरोहति, रुह्य यत्रैव राजगृह नगर तत्रैवोपागता, राजगृह नगर मध्यमध्येन यत्रैव स्व गृह तत्रैवोपागता, रथात् प्रत्यवरुह्य यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैवोपागता, करतल० यथा जामालिः आपृच्छति । यथासुख देवानुप्रिये ! तत स सुदर्शनो गाथापति. विपुलमशनम् ४ उपस्कारयति, मित्रज्ञाति० आमन्त्रयति, आमन्त्र्य यावत जिमितभुक्त्युत्तरकाले शुचिभूतो निष्क्रमणमानाप्य कौटुम्बिक-पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया. !

मैं अपने माता पिताको पूछकर आपके समीप प्रव्रज्या लेना चाहती हूँ।

भगवानने कहा—हे देवानुप्रिये ! जिस प्रकार तुझे सुख हो वैसा करो।

उसके बाद वह भूता दारिका उसी धार्मिक रथपर चढी और वहाँसे राजगृहकी ओर आयी। राजगृह नगरमें जहाँ उसका घर था वहाँ गयी। अपने घर जाकर रथसे उतरी, अनन्तर अपने माता पिताके समीप पहुँची। जमालीके तरह हाथ जोडकर अपने माता पितासे प्रव्रज्याके लिये आज्ञा माँगी। उन लोगोने आज्ञा दी हे पुत्री ! जैसी तुम्हारी इच्छा हो।

उसके बाद उस सुदर्शन गाथापतिने विपुल अशन पान खाद्य इन चारो प्रकारके आहारको तैयार करवाया, तथा मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको निमन्त्रित किया और आदर सत्कार पूर्वक भोजन कराया। खाने पीनेके बाद पवित्र हो कौटुम्बिक (आज्ञाकारी) पुरुषोंको

હે ભદન્ત ! હુ મારા માતાપિતાને પૂછીને આપની પાસે પ્રવ્રજ્યા લેવા ચાહુ છુ

ભગવાને કહ્યુ —હે દેવાનુપ્રિયે ! જે પ્રકારે તને સુખ થાય તેમ કર ત્યાર પછી તે ભૂતાદારિકા તેજ ધાર્મિક રથ ઉપર ચડી અને ત્યાંથી રાજગ્રહ તરફ આવી રાજગૃહ નગરમા જ્યા તેનુ ઘર હતુ ત્યા ગઈ પોતાને ઘેર જઈ રથમાથી ઉતરી પછી પોતાના માતાપિતાની પાસે પહોચી જમાલીની પેઠે હાથ જોડીને પોતાના માતાપિતા પાસે પ્રવ્રજ્યા લેવા માટે આજ્ઞા માગી તેઓએ આજ્ઞા આપી—' હે પુત્રી ! જેવી તારી ઈચ્છા'

ત્યાર પછી તે સુદર્શન ગાથાપતિએ વિપુલ (ખૂબ) અશનપાન–ખાદ્યસ્વાદ્ય એવા ચારે પ્રકારના આહાર તૈયાર કરાવ્યા તથા મિત્ર, જ્ઞાતિ સ્વજન બધુઓને નિમત્રણ આપ્યુ અને આદર સત્કારપૂર્વક ભોજન કરાવ્યુ ખાવાપીવાનુ થઈ રહ્યા પછી પવિત્ર થઈ કૌટુબિક (આજ્ઞાકારી) પુરુષોને બોલાવી દીક્ષાની તૈયારી કરવાની આજ્ઞા દેતા તેઓને

भूतादारिकायै पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकामुपस्थापयत, उपस्थाप्य० प्रत्यर्पयत! ततः खलु ते यावत् प्रत्यर्पयन्ति ॥ १ ॥

टीका-'जइ ण भंते' इत्यादि व्याख्या सुगमा ॥ १ ॥

मूलम्-तए णं से सुदंसणे गाहावई भूयं दारियं ण्हायं जाव विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मित्तनाइ० जाव रवेणं रायगिहं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागए, छत्ताईए तित्थयराइसए पासइ, पासित्ता सीयं ठावेइ, ठावित्ता भूयं दारियं सीयाओ पच्चोरुहेइ। तए णं तं भूयं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए-तेणेव उवगया, तिक्खुत्तो वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! भूया दारिया अम्हं एगा धूया इट्ठा०, एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा भीया जाव देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयइ। तं एयं णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्खं। अहासुहं देवाणुप्पिए०। तए णं सा भूया दारिया पासेणं अरहया० एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा० उत्तरपुरत्थिमं

बुलवाकर दीक्षाकी तैयारी की आज्ञा देते हुए इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रियों! तुम लोग हजार पुरुषोंसे उठायी जानेवाली शिबिकाको भूता दारिकाके लिये तैयार करो और ले आओ। उसके बाद वे लोग शिबिकाको सजाकर ले आये ॥ १ ॥

આ પ્રકારે કહ્યુ —હે દેવાનુપ્રિયે! તમે લોકો હજાર પુરુષોથી ઉપાડાય એવી શિબિકા (પાલખી) ને ભૂતા દારિકા માટે તૈયાર કરો અને લઈ આવો ત્યાર પછી તે લોકો તે પાલખીને સજાવીને લાવ્યા (૧)

सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, जहा देवाणदा पुप्फ-चूलाण अतिए जाव गुत्तवभयारिणी तएण सा भूया अज्जा अण्णया कयाइं सरीरवाओसिया जाया यावि होत्था हत्थे धोवइ, पाये धोवइ, एव सीस धोवइ, मुह धोवइ, थणगतराइ धोवइ, कक्खतराइ धोवइ, गुज्झतराइ धोवइ, जत्थ जत्थ वि य णं ठाणं वा सिज्ज वा निसीहिय वा चेएइ, तत्थ तत्थ वि य ण पुव्वामेव पाणएण अब्भुक्खेइ । तओ पच्छा ठाण वा सिज्ज वा निसीहिय वा चेएइ । तएण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ भूय अज्ज एव वयासी अम्हे ण देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह सरीरवाओसियाण होत्तए, तुम च ण देवाणुप्पिए ! सरीरवाओसिया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव निसीहिय चेएसि, त ण तुम देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि त्ति, सेस जहा सुभद्दाए जाव पाडिय उवस्सय उवसपज्जिता ण विहरइ । तएण सा भूया अज्जा अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवइ जाव चेएइ। तएण सा भूया अज्जा वहूहिं चउत्थछट्ठ० वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि जावतोगाहणाए सिरिदेवित्ताए उववण्णा पचविहाए पज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए पज्जत्ता । एव

खलु गोयमा ! सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता। ठिई एगं पलिओवमं । सिरी णं भंते ! देवी जाव कहिं गच्छिहिइ ? महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ । एवं सेसाणं वि नवण्ह भाणियव्वं, सरिसनामा विमाणा, सोहम्मे कप्पे, पुव्वभवे नयरचेइयपियमाईण अप्पणो य नामादी जहा संगहणीए, सव्वा पासस्स अंतिए निक्खंता। ताओ पुप्फचूलाणं सिस्सिणियाओ सरीरवाओसियाओ सव्वाओ अणंतरं चइं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ २ ॥

॥ पुप्फचुलिया णाम चतुत्थवग्गो सम्मत्तो ॥ ४ ॥

छाया–ततः खलु स सुदर्शनो गाथापतिः भूतां दारिकां स्नातां यावद् विभूषितशरीरां पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकां दूरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञाति० यावद् रवेण राजगृहनगरं मध्यमध्येन तत्रैव गुणशिलं चैत्यं तत्रैवोपागतः, छत्रादीन् तीर्थकरातिशयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिबिकां स्थापयति, स्थापयित्वा भूतां दारिकां शिबिकातः प्रत्यवरोहयति । ततः खलु तां भूतां दारिकां

'तएण से' इत्यादि—

उसके बाद उस सुदर्शन गाथापतिने स्नान की हुई तथा सभी अलङ्कारोंसे अलङ्कृत उस भूता दारिकाको शिविकामें बैठाया। अनन्तर वह अपने सभी मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंके साथ भेरी आदि बाजोंकी ध्वनिसे दिशाको मुखरित करता हुआ राजगृह नगरीके बीचोबीचसे होता हुआ गुणशिलक चैत्यके पास पहुँचा। वहाँ उसने तीर्थंकरोंके अतिशयको देखा और शिबिकाको ठहराया। तथा भूता

'तएण से' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે સુદર્શન ગાથાપતિએ ભૂતા દારિકા કે જે સ્નાન કરીને તથા તમામ અલંકારોથી વિભૂષિત હતી તેને તે શિબિકામાં બેસાડી પછી તે પોતાના સર્વે મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન બંધુઓની સાથે ભેરી, શરણાઈ આદી વાજાઓના ધ્વનિથી દિશાઓને મુખરિત કરતા રાજગૃહ નગરીની વચ્ચોવચ થઈને આવતા ગુણશિલક ચૈત્યની પાસે પહોંચ્યા ત્યાં તે પાલખીને થોભાવી તથા ભૂતા દારિકા શિબિકામાંથી નીચે ઉતરી ત્યાર

मम्बापितरौ पुरतः कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागतौ, त्रिकृत्वो वन्देते नमस्यत, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादिष्टाम्-एव खलु देवानुप्रियाः ! भूता दारिका अस्माकमेका दुहिता इष्टा०, एषा खलु देवानुप्रिया ! संसारभयोद्विग्ना भीता यावद् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा यावत प्रव्रजति, तद् एता खलु देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षा दद्मः, प्रतिच्छन्तु खलु देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षाम् । यथासुखं देवानुप्रिया ! ततः खलु सा भूता दारिका पार्श्वेनार्हता० एवमुक्ता सती हृष्टा उत्तरपौरस्त्या स्वयमेव

दारिका शिबिकासे उतरी। उसके बाद माता पिता भूता दारिकाको आगे कर जहाँ पर पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु थे वहाँ आये, और तीन बार आदक्षिण-प्रदक्षिण करके वन्दन और नमस्कार किया अनन्तर उन्होंने कहा-हे देवानुप्रिय ! यह भूता दारिका हमारी एका-एक (इकलौती) पुत्री है, यह हमलोगोंकी अत्यन्त प्यारी है। यह दारिका संसारके भयसे अत्यन्त उद्विग्न है, तथा इसको जन्म और मरणका भय लगा हुआ है, इसलिये यह आपके समीप मुण्डित होकर प्रव्रजित होना चाहती है। हे भदन्त! इसलिये हम आपको यह शिष्यारूप भिक्षा देते हैं। हे देवानुप्रिय ! इस शिष्यारूप भिक्षाको आप स्वीकार करें।

भगवानने कहा-हे देवानुप्रिये ! जैसी तुम्हारी इच्छा हो।

उसके पश्चात् अर्हत् पार्श्व प्रभुके इस प्रकार कहने पर वह भूता दारिका हृष्टतुष्टहृदयसे ईशान कोणमें जाकर अपने ही हाथोंसे

પછી માતાપિતા ભૂતા દારિકાને આગળ કરીને ચાલતા જ્યાં પુરુષાદાનીય અર્હત્ પાર્શ્વ પ્રભુ હતા ત્યાં આવ્યા અને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરીને વંદન તથા નમસ્કાર કર્યાં પછી તેઓએ કહ્યું - હે દેવાનુપ્રિય ! આ ભૂતા દારિકા અમારી એકની એક પુત્રી છે તે અમને બહુજ વહાલી છે આ દારિકા સંસારના ભયથી ઘણીજ ઉદ્વિગ્ન છે અને તેને જન્મ તથા મરણનો ભય લાગ્યા કરે છે તે માટે તે આપની પાસે મુંડિત થઇને પ્રવ્રજિત થવા ચાહે છે હે ભદન્ત ! તે માટે અમે આપને આ શિષ્યારૂપ ભિક્ષા દઇએ છીએ હે દેવાનુપ્રિય ! આ શિષ્યારૂપ ભિક્ષાનો આપ સ્વીકાર કરો

ભગવાને કહ્યું —હે દેવાનુપ્રિયે ! જેવી તમારી ઇચ્છા

ત્યાર પછી અર્હત્ પાર્શ્વ પ્રભુના એ પ્રકારે કહેવાથી તે ભૂતા દારિકા હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી ઇશાન કોણમાં જઇને પોતાના જ હાથેથી આભૂષણ આદિને પોતાના શરીર

खलु गोयमा ! सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता। ठिई एग पलिओवम । सिरी णं भंते ! देवी जाव कहिं गच्छिहिइ ? महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । एव खलु जंबू ! निक्खेवओ । एव सेसाणं वि नवण्ह भाणियव्व, सरिसनामा विमाणा, सोहम्मे कप्पे, पुव्वभवे नयरचेइयपियमाईण अप्पणो य नामादी जहा सगहणीए, सव्वा पासस्स अतिए निक्खता। ताओ पुप्फचूलाणं सिस्सिणियाओ सरीरबाओसियाओ सव्वाओ अणतर चइं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ २ ॥

॥ पुप्फचुलिया णाम चतुत्थवग्गो सम्मत्तो ॥ ४ ॥

छाया–तत• खलु स सुदर्शनो गाथापति' भूता दारिका स्नाता यावद् विभूपितशरीरा पुरुपसहस्रवाहिनी शिविका दूरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञाति० यावद् रवेण राजगृहनगर मध्यमध्येन तत्रैव गुणशिल चैत्य तत्रैवोपागत, छत्रादीन् तीथकरातिशयान पश्यति, दृष्ट्वा शिविका स्थापयति, स्थापयित्वा भूता दारिका शिविकात प्रत्यवरोहयति । तत खलु ता भूता दारिका

'तएण से' इत्यादि—

उसके बाद उस सुदर्शन गाथापतिने स्नान की हुई तथा सभी अलङ्कारोसे अलकृत उस भूता दारिकाको शिविकामे बैठाया। अनन्तर वह अपने सभी मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओके साथ भेरी आदि बाजोकी ध्वनिसे दिशाको मुखरित करता हुआ राजगृह नगरीके बीचोबीचसे होता हुआ गुणशिलक चैत्यके पास पहुँचा। वहाँ उसने तीर्थकरोके अतिशयको देखा और शिविकाको ठहराया। तथा भूता

'तएण से' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે સુદર્શન ગાથાપતિએ ભૂતા દારિકા કે જે સ્નાન કરીને તથા તમામ અલકારોથી વિભૂષિત હતી તેને તે શિબિકામા બેસાડી પછી તે પોતાના સર્વ મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન બધુઓની સાથે ભેરી, શરણાઈ આદી વાજાઓના ધ્વનિથી દિશાઓને મુખરિત કરતા રાજગૃહ નગરીની વચ્ચોવચ થઈને આવતા ગુણશિલક ચૈત્યની પાસે પહોચ્યા ત્યા તે પાલખીને થોભાવી તથા ભૂતા દારિકા શિબિકમાથી નીચે ઉતરી ત્યાર

खलु कल्पते अस्माकं शरीरबाकुशिकाः खलु भवितुम्, त्वं च खलु देवानुप्रिये ! शरीरबाकुशिका: अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावसि यावद् नैषेधिकीं चेतयसि, तत् खलु त्वं देवानुप्रिये ! एतस्य स्थानस्य आलोचयेति, शेषं यथा सुभद्रायाः यावत् प्रत्येकमुपाश्रयमुपसम्पद्य खलु विहरति । ततः खलु सा भूता आर्या अनपवर्त्तिका अनिवारिता स्वच्छन्दमति अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति यावत् चेतयते । तत खलु सा भूता आर्या बहुभिः चतुर्थ षष्ठाष्टम० बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा तस्य स्थानस्य अनालोचितमतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे श्र्यवतंसके विमाने उपपातसभाया देवशयनीये यावत् तदवगाहनया श्रीदेवीतयोपपन्ना पञ्चविधया पर्याप्त्या भाषामनःपर्याप्त्या पर्याप्ता । एवं खलु

उचित नहीं है। हे देवानुप्रिये ! तुम शरीर बाकुशिका हो गयी हो, उससे सर्वदा-बार २ हाथ पैर आदि अंगोंको धोती हो, बैठने सोने तथा स्वाध्याय करनेकी जगहको पानीसे छिडका करती हो। इसलिये हे देवानुप्रिये ! तुम इस पाप स्थानकी आलोचना करो। उसके बाद पुष्पचूलाकी बात न मानकर वह भूता आर्या सुभद्रा आर्याके समान अकेली ही अलग उपाश्रयमें उतरी और पूर्ववत् क्रिया करती हुई स्वतन्त्र होकर रहने लगी। उसके बाद वह भूता आर्या बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम आदि तपसे आत्माको भावित करती हुई अपने पापस्थानोंकी आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना काल अवसरमें कालकर सौधर्म कल्पके श्री-अवतंसक विमानमें उपपात सभाके अन्दर देव-शयनीय शय्यामें उस देव सम्बन्धी

થવુ ઉચિત નથી હે દેવાનુપ્રિયે ! તુ શરીરબાકુશિકા થઈ ગઈ છે તેથી હમેશા હાથ, પગ આદિ અંગોને વારવાર ધુએ છે બેસવા, સૂવા તથા સ્વાધ્યાય કરવાની જગા ઉપર પાણી છાટે છે માટે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુ આ પાપસ્થાનની આલોચના કર ત્યાર પછી તે પુષ્પચૂલાની વાત ન માનીને તે ભૂતા આર્યા સુભદ્રા આર્યાની પેઠે એકલી જ જુદા ઉપાશ્રયમા ઉતરી અને પૂર્વવત્ વર્તતી સ્વતત્ર થઈને રહેવા લાગી ત્યાર પછી તે ભૂતા આર્યા ઘણા ચતુર્થ, ષષ્ઠ અષ્ટમ આદિ તપોથી આત્માને ભાવિત કરતી અને ઘણા વર્ષો સુધી દીક્ષા પર્યાયનુ પાલન કરતી તેણે પોતાના પાપસ્થાનોની આલોચના અને પ્રતિક્રમણ કર્યા વગર પછી કાળ અવસરમા કાળ કરીને સૌધર્મ કલ્પના શ્રી અવતસક વિમાનમા ઉપપાત સભાની અદર દેવશયનીય શય્યામા તે દેવ સબધી અવ-

आभरणमाल्यालङ्कारमवमुञ्चति, यथा देवानन्दा पुष्पचूलानामन्तिके यावद् गुप्तब्रह्मचारिणी । ततः खलु सा भूता आर्या अन्यदा कदाचित् शरीरबाकुशिका जाता चापि अभवत् । अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति, पादौ धावति, एवं शीर्षं धावति, मुखं धावति, स्तनान्तराणि कक्षान्तराणि धावति, गुह्यान्तराणि धावति, यत्र यत्रापि च खलु स्थानं वा शय्यां वा नैषेधिकीं (स्वाध्यायभूमिं) चेतयते (करोति) तत्र तत्रापि च खलु पूर्वमेव पानीयेन अभ्युक्षति । ततः पश्चात् स्थानं वा शय्यां वा नैषेधिकीं वा चेतयते । ततः खलु ताः पुष्पचूला आर्या भूतामार्यामेवमवादिषु —वयं खलु देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्यः, ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यः, नो

आभूषण आदिको अपने शरीरसे उतारती है। बादमें वह देवानन्दाके समान पुष्पचूला आर्याके समीप प्रव्रजित हो यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी होती है। उसके बाद वह भूता आर्या किसी समय शरीर बाकुशिका हो गयी, जिससे वह अपने हाथोंको, पैरोंको, शिरको, मुँहको तथा स्तनके अन्तर भागोको, एवं कॉखके अन्तरको और गुह्यके अन्तरको बार बार धोने लगी। जहाँ कहीं भी सोनेके लिये, बैठनेके लिये, स्वाध्याय करनेके लिये उपयुक्त स्थान निश्चित करती थी उसे पहलेसे ही पानीसे छिडकती थी, बाद वहाँ बैठती थी, सोती थी, स्वाध्याय करती थी। अनन्तर उस भूता आर्या के इस प्रकारके व्यवहारको देखकर पुष्पचूला आर्याने उससे इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रिये! हमलोग ईर्यासमिति आदि समितियोंसे युक्त यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी श्रमणी निर्ग्रन्थी हैं। हमे शरीर बाकुशिका होना

ઉપરથી ઉતારે છે પછી તે દેવાનન્દાની પેઠે પુષ્પચૂલા આર્યાની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ ગુપ્તબ્રહ્મચારિણી બને છે ત્યાર પછી તે ભૂતા આર્યા કોઇ એક વખતે શરીર બાકુશિકા થઇ ગઇ જેથી તે પોતાના હાથ, પગ, માથું, મો તથા સ્તનના અંદરના ભાગોને અને કાખના અંદરના ભાગો તથા ગુહ્યની અંદરના ભાગો વારંવાર ધોવા લાગી જ્યાં ત્યાં પણ સુવા માટે, બેસવા માટે સ્વાધ્યાય કરવા માટે ઉપયુક્ત સ્થાનનો નિશ્ચય કરતી હતી તે પહેલા જ ત્યાં પાણી છાંટતી હતી, પછી ત્યાં બેસતી હતી, સૂતી હતી, સ્વાધ્યાય કરતી હતી પછી તે ભૂતા આર્યાનો આ પ્રકારનો વ્યવહાર જોઇને પુષ્પચૂલા આર્યાએ તને આ પ્રકારે કહ્યું —હે દેવાનુપ્રિયે! આપણે ઇર્યાસમિતિ આદિ સમિતિ એથી યુક્ત અને ગુપ્તબ્રહ્મચારિણી શ્રમણી નિગ્રન્થી છીએ આપણને શરીર બાકુશિકા

खलु कल्पते अस्माक शरीरबाकुशिकाः खलु भवितुम्, त्वं च खलु देवानुप्रिये ! शरीरबाकुशिकाः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावसि यावद् नैषेधिकी चेतयसि, तत् खलु त्वं देवानुप्रिये ! एतस्य स्थानस्य आलोचयेति, शेष यथा सुभद्राया यावत् प्रत्येकमुपाश्रयमुपसपद्य खलु विहरति । ततः खलु सा भूता आर्या अनपवर्त्तिका अनिवारिता स्वच्छन्दमति अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति यावत् चेतयते । ततः खलु सा भूता आर्या बहुभिः चतुर्थ षष्ठाष्टम० बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा तस्य स्थानस्य अनालोचितप्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा सौधर्मे कल्पे श्र्यवतसके विमाने उपपातसभाया देवशयनीये यावत् तदवगाहनया श्रीदेवीतयोपपन्ना पञ्चविधया पर्याप्त्या भाषामन•पर्याप्त्या पर्याप्ता । एवं खलु

उचित नही है। हे देवानुप्रिये ! तुम शरीर बाकुशिका हो गयी हो, उससे सर्वदा-बार २ हाथ पैर आदि अगोको धोती हो, बैठने सोने तथा स्वाध्याय करनेकी जगहको पानीसे छिडका करती हो । इसलिये हे देवानुप्रिये ! तुम इस पाप स्थानकी आलोचना करो। उसके बाद पुष्पचूलाकी बात न मानकर वह भूता आर्या सुभद्रा आर्याके समान अकेली ही अलग उपाश्रयमे उतरी और पूर्ववत् क्रिया करती हुई स्वतन्त्र होकर रहने लगी। उसके बाद वह भूता आर्या बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम आदि तपसे आत्माको भावित करती हुई अपने पापस्थानोंकी आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना काल अवसरमे कालकर सौधर्म कल्पके श्री-अवतसक विमानमे उपपात सभाके अन्दर देव-शयनीय शय्यामे उस देव सम्बन्धी

थवु उचित नथी हे देवानुप्रिये ! तु शरीरबकुशका थई गई छे तेथी हमेशा हाथ, पग आदि अगोने वारवार धुओ छे बेसवा, सूवा तथा स्वाध्याय करवानी जगा उपर पाणी छाटे छे माटे हे देवानुप्रिये ! तु आ पापस्थाननी आलोचना कर त्यार पछी ते पुष्पचूलानी वात न मानीने ते भूता आर्या सुभद्रा आर्यानी पेठे एकली ज जुदा उपाश्रयमा उतरी अने पूर्ववत् वर्तती स्वतत्र थईने रहेवा लागी त्यार पछी ते भूता आर्या घणा चतुर्थ, षष्ठ अष्टम आदि तपोथी आत्माने भावित करती अने घणा वर्षो सुधी दीक्षा पर्यायनु पालन करती तेणे पोताना पापस्थानोनी आलोचना अने प्रतिक्रमण कर्या वगर पछी काळ अवसरमा काळ करीने सौधर्म कल्पना श्री अवतसक विमानमा उपपात सभानी अदर देवशयनीय शय्यामा ते देव सबधी अव-

आभरणमाल्यालङ्कारमवमुञ्चति, यथा देवानन्दा पुष्पचूलानामन्तिके यावद् गुप्तब्रह्मचारिणी । ततः खलु सा भूता आर्या अन्यदा कदाचित् शरीरवाकुशिका जाता चापि अभवत् । अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति, पादौ धावति, एव शीर्षं धावति, मुख धावति, स्तनान्तराणि कक्षान्तराणि धावति, गुह्यान्तराणि धावति, यत्र यत्रापि च खलु स्थान वा शय्या वा नैषेधिकीं (स्वाध्यायभूमिं) चेतयते (करोति) तत्र तत्रापि च खलु पूर्वमेव पानीयेन अभ्युक्षति । तत पश्चात् स्थान वा शय्या वा नैषेधिकीं वा चेतयते । ततः खलु ताः पुष्पचूला आर्या भूतामार्यामेवमवादिषु -वय खलु देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्यः, ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्य , नो

आभूषण आदिको अपने शरीरसे उतारती है। बादमे वह देवान्दाके समान पुष्पचूला आर्याके समीप प्रव्रजित हो यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी होती है। उसके बाद वह भूता आर्या किसी समय शरीर बाकुशिका हो गयी, जिससे वह अपने हाथोंको, पैरोको, शिरको, मुँहको तथा स्तनके अन्तर भागोको, एव काँखके अन्तरको और गुह्यके अन्तरको बार बार धोने लगी। जहाँ कही भी सोनेके लिये, बैठनेके लिये, स्वाध्याय करनेके लिये उपयुक्त स्थान निश्चित करती थी उसे पहलेसे ही पानीसे छिडकती थी, बाद वहाँ बैठती थी, सोती थी, स्वाध्याय करती थी। अनन्तर उस भूता आर्या के इस प्रकारके व्यवहारको देखकर पुष्पचूला आर्याने उससे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिये ! हमलोग ईर्यासमिति आदि समितियोंसे युक्त यावत गुप्तब्रह्मचारिणी श्रमणी निर्ग्रन्थी हैं। हमे शरीर बाकुशिका होना

ઉપરથી ઉતારે છે પછી તે દેવાનંદાની પેઠે પુષ્પચૂલા આર્યાની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગુપ્તબ્રહ્મચારિણી બને છે ત્યાર પછી તે ભૂતા આર્યા કોઈ એક વખતે શરીર બાકુશિકા થઈ ગઈ જેથી તે પોતાના હાથ, પગ, માથુ, મો તથા સ્તનના અંદરના ભાગોને અને કાખના અંદરના ભાગો તથા ગુહ્યની અંદરના ભાગો વારવાર ધોવા લાગી જ્યા ત્યા પણ સુવા માટે, બેસવા માટે સ્વાધ્યાય કરવા માટે ઉપયુક્ત સ્થાનનો નિશ્ચય કરતી હતી ત પહેલાજ ત્યા પાણી છાટતી હતી, પછી ત્યા બેસતી હતી, સૂતી હતી, સ્વાધ્યાય કરતી હતી પછી તે ભૂતા આર્યાનો આ પ્રકારનો વ્યવહાર જોઈને પુષ્પચૂલા આર્યાએ તને આ પ્રકારે કહ્યુ —હે દેવાનુપ્રિયે! આપણે ઈર્યાસમિતિ આદિ સમિતિ ઓથી યુક્ત અને ગુપ્તબ્રહ્મચારિણી શ્રમણી નિર્ગ્રન્થી છીએ આપણને શરીર બાકુશિકા

आत्मनश्च नामादिर्यथा सग्रहण्याम्, सर्वा' पार्श्वस्यान्तिके निष्क्रान्ताः । ताः पुष्पचूलाना शिष्याः शरीरबाकुशिकाः सर्वा अनन्तर चय च्युत्वा महाविदेहे वर्षे सेत्स्यन्ति ॥ २ ॥

टीका–'तएण से सुदसणे' इत्यादि । 'अब्भुक्खइ'=अभ्युक्षति=अभिषिञ्चति । चेएइ' चेतयति=उपविशति । शेष स्पष्टम् ॥

पुष्पचूलिकाख्यश्चतुर्थो वर्ग' समाप्तः ॥ ४ ॥

इसी प्रकार शेष नौ अध्ययनोंका भी भाव जानना चाहिये । इन नवोंके विमानोंका नाम इनके समान है । सौधर्म कल्पमे ये सब देवीपनमे उत्पन्न हुई । इनके पूर्वभवमे नगर उद्यान पिता आदि तथा इनका अपना नाम आदि सग्रहणीगाथामे आये हुए नामके समान जानना चाहिये । ये सभी पार्श्व प्रभुके समीपमे प्रव्रजित होकर पुष्पचूलाकी शिष्या हुई तथा सभी शरीरबाकुशिका हो गयी । और ये सभी देवलोकसे च्यवकर महाविदेह क्षेत्रमे जन्म लेकर सिद्ध होगी । और सब दुःखोका अन्त करेगी ॥ २ ॥

पुष्पचूलिका नामका चतुर्थ वर्ग समाप्त हुआ

આ પ્રકારે શેષ (બાકીના) નવ અધ્યયનોનો પણ ભાવ જાણી લેવો જોઈએ આ નવમા વિમાનના નામ તેના નામના જેવા જ છે સૌધર્મ કલ્પમા એ બધીનો દેવી પણામા જન્મ થયો તેમના પૂર્વભવમા નગર, ઉદ્યાન, પિતા આદિ તથા તેના પોતાના નામ આદિ સગ્રહણી ગાથામા આવેલા નામના જેવા જાણવા આ બધી પાર્શ્વ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ અને તે બધી પુષ્પચૂલાની શિષ્યાઓ થઇ હતી તથા બધી શરીર-બાકુશિકા થઇ ગઇ હતી તે પછી બધી દેવલોકમાથી ચ્યવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ લઇ સિદ્ધ થશે અને સર્વે દુખનો અત લાવશે (૨)

પુષ્પચૂલિકા નામનો ચોથો વર્ગ સમાપ્ત

गौतम ! श्रिया देव्या एषा दिव्या देवऋद्धिर्लब्धा प्राप्ता: स्थितिरेक पल्योपमम् । श्री० खलु भदन्त ! देवी यावत् क्व गमिष्यति ? महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति। एवं खलु जम्बूः ! निक्षेपकः । एवं शेषाणामपि नवाना भणितव्य सदृशानामानि विमानानि, सौधर्मे कल्पे, पूर्वभवे नगरचैत्यपित्रादीनाम्

अवगाहनासे श्री देवी पने उत्पन्न हुई और भाषापर्याप्ति मन पर्याप्ति आदि पॉच पर्याप्तियोंसे युक्त हो गयी। देवगतिमे भाषा और मनपर्याप्ति एक साथ बाँधनेके कारण पॉच पर्याप्ति कही गयी है।

हे गौतम! श्री-देवीने इस प्रकार इस दिव्य देवऋद्धिको पाया है। देवलोकमे इसकी स्थिति एक पल्योपमकी है।

गौतम स्वामीने पूछा—

हे भदन्त। यह श्री-देवी यहॉसे च्यवकर कहॉ जायगा।

भगवान कहेते है—

हे गौतम! वह महाविदेह क्षेत्रमे जन्म लेकर सिद्ध होगी और सब दु:खोका अन्त करेगी।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पचूलिकाके प्रथम अध्ययनका भाव उक्त प्रकार निरूपित किया है।

ગાહના દ્વારા શ્રી–દેવી પણામા જન્મ લીધો અને ભાષાપર્યાપ્તિ, મન પર્યાપ્તિ આદિ પાચ પર્યાપ્તિઓથી યુક્ત થઇ ગઇ દેવગતિમા ભાષા અને મન પર્યાપ્તિ એક સાથે બાધવાના કારણે પાચ પર્યાપ્તિ કહી છે

હે ગૌતમ! શ્રી–દેવીએ આ પ્રકારે આ દિવ્ય દેવઋદ્ધિને મેળવી છે દેવલોકમા તેની સ્થિતિ એક પલ્યોપમની છે

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે –

હે ભદન્ત! આ શ્રી–દેવી અહીંથી ચ્યવીને ક્યા જશે

ભગવાન કહે છે –

હે ગૌતમ! તે મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ લઇ સિદ્ધ થશે અને બધા દુખનો અંત લાવશે

સુધર્મા સ્વામી કહે છે –

હે જમ્બૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પચૂલિકાના પ્રથમ અધ્યયનનો ભાવ ઉપર પ્રમાણે નિરૂપિત કર્યો છે

जाव दरिसणिज्जे । तत्थण नदणवणे उज्जाणे सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था चिराइए जाव बहुजणो आगम्म अच्चेइ सुरप्पिय जक्खाययण । से णं सुरप्पिए जक्खाययणे एगेण महया वणसडेणं सुव्वओ समत्ता सपरिक्खित्ते जहा पुण्णभद्दे जाव सिलावट्टए । तत्थण बारवईए नयरीए कण्हे नाम वासुदेवे राया होत्था जाव पसासेमाणे विहरइ । से ण तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाण दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पचण्ह महावीराण, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्ह रायसहस्साण पज्जुण्णपामोक्खाण अद्धुट्ठाण कुमारकोडीण, सवपामोक्खाण सट्ठीए दुद्दसाहस्सीण, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसीए वीरसाहस्सीणं, महासेणपामोक्खाण छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं रुप्पिणिपामोक्खाणं सोलसण्ह देवीसाहस्सीण, अणगसेणापामोक्खाण अणेगाणं गणियासाहस्सीण, अण्णेसि च बहूण राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईण वेयड्ढगिरिसागरमेरागस्स दाहिणड्ढभरहस्स आहेवच्च जाव विहरइ । तत्थण बारवईए नयरीए बलदेवे नामं राया होत्था, महया जाव रज्ज पसासेमाणे विहरइ । तस्स ण बलदेवस्स रण्णो रेवई नाम देवी होत्था, सोमाला जाव विहरइ । तएण सा रेवई देवी अण्णया कयाइ तसि तारिसगसि सयणिज्जसि जाव सीह सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा०, एव सुमिण दसणपरिकहण, निसढे नाम कुमारे जाए जाव कलाओ जहा महाबले, पन्नासओ दाओ, पण्णासरायकण्णगाण एगदिवसेण पाणिं गिण्हावेइ, नवर निसढे नाम जाव उप्पिपासाए विहरइ ॥ १ ॥

वृष्णिदशा ५

मूलम्—जइणं भंते ! उक्खेवओ० उवगाणं चउत्थस्स पुप्फचुलाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवगाणं वह्निदसाणं भगवया जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

" निसढे १ मायनि २ वह ३ वहे ४, पगता ५ जुत्ती ६ दसरहे ७ दढरहे ८ य । महाधणू ९ सत्तधणू १०, दस-धणू ११ नामे सयधणु १२ य ॥ १ ॥

जइण भते ! समणेण जाव दुवालस्स अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भंते ! उवक्खेवओ । एव खलु जबू ! तेणं कालेण २ बारवई नामं नयरी होत्था दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । तीसे ण बारवईए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ ण रेवए नाम पव्वए होत्था, तुंगे गगण-तलमणुविहतसिहरे नाणाविहरुक्खगुच्छगुलमलतावल्लीपरिगताभि-रामे हस—मिय—मयूर कोंच-सारस चक्कवाग मयणसाला कोइलकु-लोववेए अणेग तडकडगवियरओज्झरपवायपब्भारसिहरपउरे अ-च्छरगणदेवसगचारणविज्जाहरमिहुणसनिविन्ने निच्चच्छणए दसा रवःवीरपुरिसतेलोकबलवगाण सोमे सुभए पियदसणे सुरूवे पासाईए जाव पडिरूवे । तत्थ ण रेवयगस्स पव्वयस्स अदूर-सामते एत्थ णं नदणवणे नाम उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फ

भदन्त ! उत्क्षेपकः । एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारावती नाम नगरी अभवत् द्वादशयोजनायामा यावत् प्रत्यक्ष देवलोकभूता प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा प्रतिरूपा। तस्या खलु द्वारावत्या' नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे, अत्र खलु रैवतो नाम पर्वतोऽभवत्, तुङ्गो गगनतलमनुल्लिखच्छिखरः नानाविधवृक्षगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगताभिरामः हंसमृगमयूरक्रौञ्चसारसचक्रवाकमदनशालाकोकिलकुलोपपेत', अनेकतटकटकविवरावझरप्रपातप्रा-

जम्बू स्वामी पूछते हैं-

हे भदन्त ! यदि श्रमण भगवान महावीरने वृष्णिदशामें बारह अध्ययनोंका निरूपण किया है तो उन अध्ययनोंमें प्रथम अध्ययनका क्या भाव कहा है ?

सुधर्मा स्वामी कहते हैं-

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें द्वारावती नामकी नगरी थी। जो बारह योजन लम्बी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक सदृश 'प्रसादीया' =मनको प्रसन्न करने वाली तथा 'दर्शनीया'=देखने योग्य एवं 'अभिरूपा' =सुन्दर छटावाली और 'प्रतिरूपा'=अनुपम शिल्पकलासे सुशोभित थी। उस द्वारावती नगरीके बाहर ईशानकोणमें ऊँचा तथा आकाशको छूनेवाले शिखरोंसे युक्त रैवतक नामक पर्वत था। वह पर्वत अनेक प्रकारके वृक्ष गुच्छ गुल्म और लता वल्लियोंसे मनोहर था। वह हंस, मृग, मयूर, क्रौञ्च (पक्षी विशेष) सारस, चक्रवाक, मदनशाला (मैना) और कोकिल आदि पक्षिवृन्दसे सुशोभित था।

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે—

હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે વૃષ્ણિદશામાં બાર અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો તે અધ્યયનોમાં પ્રથમ અધ્યયનનો શું ભાવ કહ્યો છે ?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે -

હે જમ્બૂ ! તે કાળ તે સમયે દ્વારાવતી નામની નગરી હતી, જે બાર યોજન લાંબી યાવત્ પ્રત્યક્ષ દેવલોકના જેવી, प्रसादीया=મનને પ્રસન્ન કરવાવાળી તથા दर्शनीया=દેખવા યોગ્ય, अभिरूपा=સુંદર છટાવાળી અને प्रतिरूपा=અનુપમ શિલ્પકલાથી સુશોભિત હતી તે દ્વારાવતી નગરીની બહાર ઈશાન કોણમાં ઊંચો તથા ગગનચુંબી શિખરોવાળો રૈવતક નામનો પર્વત હતો. તે પર્વત અનેક જાતના વૃક્ષો, ગુચ્છ ગુલ્મ અને લતાવલ્લીઓથી મનોહર હતો. વળી તે હંસ, મૃગ મયૂર, ક્રૌંચ (પક્ષી), સારસ, ચક્રવાક, મદનશાલા (મેના) અને કોકિલ આદિ પક્ષીવૃન્દથી

छाया-यदि खलु भदन्त ! उत्क्षेपकः, उपाङ्गाना चतुर्थस्य पुष्पचूलाना प्रथमर्थः प्रज्ञप्त., पञ्चमस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य उपाङ्गाना वृष्णिदशाना श्रमणेन भगवता यावत्समाप्तेन कोऽर्थ प्रज्ञप्तः ? एव खलु जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावद् द्वादशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद् यथा-

निषध. १, मायनी २ वहः ३ वहः ४ पगता, ५ ज्योतिः ६ दशरथ ७ दृढरथश्च ८ महाधन्वा, ९ सप्तधन्वा, १० दशधन्वा, ११ नाम शतधन्वाच १२ ॥ १ ॥

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावद् द्वादशा ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! श्रमणेन यावद् द्वादशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु

। वृष्णिदशा वर्ग ।

'जइण भते' इत्यादि—

जम्बू स्वामी पूछते हैं-हे भदन्त ! पुष्पचूला नामके चतुर्थ उपाङ्गमे भगवानने पूर्वोक्त प्रकारसे दस अध्ययनोका निरूपण किया तो हे भदन्त ! उसके बाद वृष्णिदशा नामक पाँचवें उपाङ्गमे मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने किन अर्थोंका निरूपण किया है ?

सुधर्मा स्वामी कहते हैं-

हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीरने वृष्णिदशा नामक पॉचवें वर्गमे बारह अध्ययनोका निरूपण किया है।

उनके नाम (१) निषध, (२) मायनी, (३) वह, (४) वह, (५) पगता, (६) ज्योति, (७) दशरथ, (८) दृढरथ, (९) महाधन्वा, (१०) सप्तधन्वा, (११) दशधन्वा और (१२) शतधन्वा है।

વૃષ્ણિદશા વર્ગ (૫)પાચમો

'जइण भते' ઇત્યાદિ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે હે ભદન્ત ! પુષ્પચૂલા નામના ચોથા ઉપાગના ભગવાને પૂર્વોકત પ્રકારથી દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો હે ભદન્ત ! ત્યાર પછી વૃષ્ણિદશા નામના પાચમા ઉપાગમા મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કયા અર્થોનું નિરૂપણ કર્યું છે

સુધર્મા સ્વામી કહે છે —હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે વૃષ્ણિદશા નામના પાચમા વર્ગમા બાર અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે

તેમના નામ—(૧) નિષધ (૨) માયની, (૩) વહ, (૪) વહ, (૫) પગતા (૬) જ્યોતિ, (૭) દશરથ, (૮) દ્દઢરથ (૯) મહાધન્વા, (૧૦) સપ્તધન્વા (૧૧) દશધન્વા અને (૧૨) શતધન્વા છે

भदन्त! उत्क्षेपकः। एवं खलु जम्बू'। तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारावती नाम नगरी अभवत् द्वादशयोजनायामा यावत् प्रत्यक्ष देवलोकभूता प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा प्रतिरूपा। तस्या खलु द्वारावत्याः नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे, अत्र खलु रैवतो नाम पर्वतोऽभवत्, तुङ्गो गगनतलमनुलिहच्छिखरः नानाविधवृक्षगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगताभिरामः हंसमृगमयूरक्रौञ्चसारसचक्रवाकमदनशालाकोकिलकुलोपपेत, अनेकतटकटकविवरावझरप्रपातमा-

जम्बू स्वामी पूछते हैं-

हे भदन्त! यदि श्रमण भगवान महावीरने वृष्णिदशामें बारह अध्ययनोंका निरूपण किया है तो उन अध्ययनोंमे प्रथम अध्ययनका क्या भाव कहा है?

सुधर्मा स्वामी कहते हैं-

हे जम्बू! उस काल उस समयमे द्वारावती नामकी नगरी थी। जो बारह योजन लम्बी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक सदृश 'प्रसादीया' =मनको प्रसन्न करने वाली तथा 'दर्शनीया'=देखने योग्य एव 'अभिरूपा' =सुन्दर छटावाली और 'प्रतिरूपा'=अनुपम शिल्पकलासे सुशोभित थी। उस द्वारावती नगरीके बाहर ईशानकोणमे ऊँचा तथा आकाशको छूनेवाले शिखरोंसे युक्त रैवतक नामक पर्वत था। वह पर्वत अनेक प्रकारके वृक्ष गुच्छ गुल्म और लता वल्लियोंसे मनोहर था। वह हंस, मृग, मयूर, क्रौञ्च (पक्षी विशेष) सारस, चक्रवाक, मदनशाला (मैना) और कोकिल आदि पक्षिवृन्दसे सुशोभित था।

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે —

હે ભદન્ત! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે વૃષ્ણિદશામા બાર અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો તે અધ્યયનોમા પ્રથમ અધ્યયનનો શું ભાવ કહ્યો છે?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે -

હે જમ્બૂ! તે કાળ તે સમયે દ્વારાવતી નામની નગરી હતી, જે બાર યોજન લાંબી યાવત્ પ્રત્યક્ષ દેવલોકના જેવી, प्रसादीया=મનને પ્રસન્ન કરવાવાળી તથા दर्शनीया=દેખવા યોગ્ય, अभिरूपा=સુંદર છટાવાળી અને प्रतिरूपा=અનુપમ શિલ્પકળાથી સુશોભિત હતી તે દ્વારાવતી નગરીની બહાર ઈશાન કોણમા ઊંચો તથા ગગનચુંબી શિખરોવાળો રૈવતક નામનો પર્વત હતો. તે પર્વત અનેક જાતના વૃક્ષો, ગુચ્છ ગુલ્મ અને લતાવલ્લીઓથી મનોહર હતો વળી તે હંસ, મૃગ મયૂર, ક્રૌંચ (પક્ષી), સારસ, ચક્રવાક, મદનશાલા (મેના) અને કોકિલા આદિ પક્ષીવૃન્દથી

ग्भारशिखरप्रचुरः अप्सरोगणदेवसङ्घ-चारण विद्याधरमिथुनसन्निचीर्णः, नित्य क्षणकः, दशार्हवरवीरपुरुषत्रैलोक्यबलवता सोमः शुभ प्रियदर्शन सुरूप प्रासादीयो यावत् प्रतिरूपः। तस्य खलु रैवतकस्य पर्वतस्य अदूरसामन्ते, अत्र खलु नन्दनवन नाम उद्यानम् अभवत्, सर्वऋतु पुष्प० यावद् दर्शनीयम्।

तथा जिसमे अनेक तट=किनारे और कटक=पर्वतका रमणीय भाग, तथा विवर=सुन्दर गुफाएँ और अवझर=सुन्दर झरने एव प्रपात=जहाँ झरना गिरता है वह स्थान, तथा प्राग्भार=पर्वतका झुका हुआ रम्य प्रदेश और अनेक सुन्दर शिखर विद्यमान थे। वहाँ अप्सरागण देवगण और विद्याधरोंके युगल आकर क्रीडा करते थे। और जहाँ जङ्घाचरण विद्याचरण मुनि भी ध्यान मौनादिके लिये निवास करते थे। तथा वह पर्वत उत्सवका एक रमणीय स्थल था। और नेमि नाथ भगवानसे युक्त होनेके कारण तीनों लोकमे श्रेष्ठ बलवीर दशार्होंका वह पर्वत सोम=आह्लाद उत्पन्न करनेवाला था, शुभ=मगल-कारी था प्रियदर्शन=नेत्रोंको सुख देनेवाला था, सुरूप=सुहावना था, प्रसादीय=मनको प्रसन्न करनेवाला था, दर्शनीय=देखने योग्य था, अभिरूप=अपनी सुन्दरताके कारण चमकता था, प्रतिरूप=दर्शक जनोंके हृदयमे प्रतिबिम्बित हो जाता था। उस रैवतक पर्वतके समीपमे नन्दनवन नामक उद्यान था, जो सभी ऋतुओके फूलोंसे सम्पन्न

સુશોભિત હતો. તથા જેમા અનેક तट=કિનારા અને कटक=પર્વતના રમણીય ભાગ તથા विवर=સુંદર ગુફાઓ અને अवझर=સુંદર ઝરણાઓ, प्रपात=જ્યા ઝરણા પડે છે તે સ્થાન, તથા प्राग्भार=પર્વતના નમેલા રમણીય ભાગ અને સુંદર શિખર વિદ્યમાન હતા ત્યા અપ્સરાગણ, દેવગણ અને વિદ્યાધરોના જોડલા આવીને ક્રીડા કરતા હતા અને જ્યા જંઘાચરણ, વિદ્યાચરણ મુનિ પણ ધ્યાન, મૌન આદિ માટે નિવાસ કરતા હતા તથા આ પર્વત હમેશા ઉત્સવનુ એક રમણીય સ્થાન હતુ અને નેમીનાથ ભગવાનથી યુક્ત હોવાથી ત્રણે લોકમા શ્રેષ્ઠ બલવીર દશાર્હોનો તે પર્વત सोम= આહ્લાદ ઉત્પન્ન કરનાવાળો હતો, शुभ=મંગળકારી હતો प्रियदर्शन=નેત્રોને સુખ આપવાવાળો હતો, सुरूप=રૂપાળો શોભાદાર હતો, प्रासादीय=મનને પ્રસન્ન કરવાવાળો હતો, दर्शनीय=જોવા યોગ્ય હતો, अभिरूप=પોતાની સુંદરતાને લીધે ચમકતો હતો, प्रतिरूप=જોનારના હૃદયમા છાપ પાડે તેવો હતો, (પ્રતિબિંબિત થઈ જતો હતો.) તે રૈવત પર્વતની પાસે નન્દનવન નામે એક બગીચો હતો જે બધી ઋતુઓમા ફૂલોથી સંપન્ન હોવાથી દર્શનીય હતો. તે [illegible] प्रतिरूप=

तत खलु नन्दनवने उद्याने सुरप्रियस्य यक्षस्य यक्षायतनमभवत्, चिरातीत, यावद् बहुजन आगम्य अर्चयति सुरप्रिय यक्षायतनम्। तत् खलु सुरप्रिय यक्षायतनम् एकेन महता वनषण्डेन सर्वतः समन्तात् सपरिक्षिप्तम् यथा पूर्णभद्रो यावत् शिलापट्टकः। तत्र खलु द्वारावत्या नगर्यां कृष्णो नाम वासुदेवो राजाऽभवत् यावत् प्रशासद् विहरति। स खलु तत्र समुद्रविजयप्रमुखाना दशाना दशार्हाणा, बलदेवप्रमुखाना पञ्चाना महावीराणाम्, उग्रसेनप्रमुखाना षोडशाना राजसहस्राणा, प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अध्युष्टाना (सार्द्धतृतीयाना) कुमारकोटीना, शाम्बप्रमुखाना षष्ट्या दुर्दान्तसहस्राण, वीरसेनप्रमुखानामेकविंशत्या वीरसहस्राणा, महासेनप्रमुखाना षट्पञ्चाशतो बलवत्सहस्राणा, रुक्मिणीप्रमुखाना षोडशाना देवीसाहस्रीणाम्, अनङ्गसेनाप्रमुखानामनेकासा गणिकासाहस्रीणाम्,

---

यावत् दर्शनीय था। उस नन्दनवन उद्यानमे सुरप्रिय=यक्षका यक्षायतन बहुत प्राचीन था और लोक उसे मानते थे। वह सुरप्रिय यक्षायतन चारों तरफसे एक बडा वनषण्डसे घिरा हुआ था। जैसा पूर्णभद्र उद्यान था। उसमे अशोक वृक्षके नीचे एक शिला पट्टक था। उस द्वारावती नगरीमे कृष्ण वासुदेव राजा थे, जो उस नगरीका यावत् शासन करते हुए विचरते थे। वह कृष्ण वासुदेव समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्होके बलदेव प्रमुख पॉच महावीरोके, उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजाओके, प्रद्युम्न प्रमुख साढे तीन करोड कुमारोके, शाम्ब प्रमुख साठ हजार दुर्दान्त शूरोके, वीरसेन प्रमुख एक्कीस हजार वीरोके, महासेन प्रमुख छप्पन हजार बलवानोके, रुक्मिणी प्रमुख सोहल हजार देवियोके तथा अनङ्गसेना प्रमुख

યક્ષનુ યક્ષાયતન બહુ પ્રાચીન હતુ અને લોકો તેને માનતા હતા તે સુરપ્રિય યક્ષાયતન ચારે તરફથી એક મોટા વનષણ્ડથી ઘેરાયેલુ હતુ કે જેવુ પૂર્ણભદ્ર ઉદ્યાન હતુ તેમા અશોકવૃક્ષની નીચે એક શિલાપટ્ટક હતુ

તે દ્વારાવતી નગરીમા કૃષ્ણ વાસુદેવ નામે રાજા હતા જે તે નગરીમા રાજ્ય કરતા વિચારતા હતા તે કૃષ્ણ વાસુદેવ સમુદ્રવિજય પ્રમુખ દશ દશાર્હોના, બલદેવ પ્રમુખ પાચ મહાવીરોના, ઉગ્રસેન પ્રમુખ સોળ હજાર રાજાઓના પ્રદ્યુમ્ન પ્રમુખ સાડા ત્રણ કરોડ કુમારોના, સામ્બ પ્રમુખ સાઠ હજાર દુર્દાન્ત શૂરવીરોના, વીરસેન પ્રમુખ એકવીશ હજાર વીરોના, મહાસેન પ્રમુખ છપ્પન હજાર બલવાનોના, રૂકિમણી પ્રમુખ સોળ હજાર દેવીઓના તથા અનગ સેના પ્રમુખ અનેક હજાર

ग्भारशिखरप्रचुरः अप्सरोगणदेवसंघ–चारण विद्याधरमिथुनसन्निचीर्णः, नित्य क्षणकः, दशार्हवरवीरपुरुषत्रैलोक्यबलवता सोमः शुभः प्रियदर्शनः सुरूपः प्रासादीयो यावत् प्रतिरूपः। तस्य खलु रैवतकस्य पर्वतस्य अदूरसामन्ते, अत्र खलु नन्दनवनं नाम उद्यानम् अभवत्, सर्वर्तुपुष्प० यावद् दर्शनीयम्।

तथा जिसमे अनेक तट=किनारे और कटक=पर्वतका रमणीय भाग, तथा विवर=सुन्दर गुफाएँ और अवझर=सुन्दर झरने एवं प्रपात=जहाँ झरना गिरता है वह स्थान, तथा प्राग्भार=पर्वतका झुका हुआ रम्य प्रदेश और अनेक सुन्दर शिखर विद्यमान थे। वहाँ अप्सरागण देवगण और विद्याधरोंके युगल आकर क्रीडा करते थे। और जहाँ जङ्घाचरण विद्याचरण मुनि भी ध्यान मौनादिके लिये निवास करते थे। तथा वह पर्वत उत्सवका एक रमणीय स्थल था। और नेमिनाथ भगवानसे युक्त होनेके कारण तीनों लोकमे श्रेष्ठ बलवीर दशार्होंका वह पर्वत सोम=आह्लाद उत्पन्न करनेवाला था, शुभ=मंगलकारी था प्रियदर्शन=नेत्रोंको सुख देनेवाला था, सुरूप=सुहावना था, प्रसादीय=मनको प्रसन्न करनेवाला था दर्शनीय=देखने योग्य था, अभिरूप=अपनी सुन्दरताके कारण चमकता था, प्रतिरूप=दर्शक जनोंके हृदयमे प्रतिबिम्बित हो जाता था। उस रैवतक पर्वतके समीपमे नन्दनवन नामक उद्यान था, जो सभी ऋतुओंके फूलोंसे सम्पन्न

સુશોભિત હતો. તથા જેમા અનેક **तट**=કિનારા અને **कटक**=પર્વતના રમણીય ભાગ તથા **विवर**=સુંદર ગુફાઓ અને **अवझर**=સુંદર ઝરણાઓ, **प्रपात**=જ્યાં ઝરણાં પડે છે તે સ્થાન, તથા **प्राग्भार**=પર્વતના નમેલા રમણીય ભાગ અને સુંદર શિખર વિદ્યમાન હતા ત્યાં અપ્સરાગણ, દેવગણ અને વિદ્યાધરોના જોડલા આવીને ક્રીડા કરતા હતા અને જ્યાં જંઘાચરણ, વિદ્યાચરણ મુનિ પણ ધ્યાન, મૌન આદિ માટે નિવાસ કરતા હતા. તથા આ પર્વત હમેશા ઉત્સવનું એક રમણીય સ્થાન હતું અને નેમીનાથ ભગવાનથી યુક્ત હોવાથી ત્રણે લોકમા શ્રેષ્ઠ બળવીર દશાર્હોનો તે પર્વત **सोम**= આહ્લાદ ઉત્પન્ન કરવાવાળો હતો, **शुभ**=મંગળકારી હતો **प्रियदर्शन**=નેત્રોને સુખ આપવાવાળો હતો, **सुरूप**=રૂપાળો શોભાદાર હતો, **प्रासादीय**=મનને પ્રસન્ન કરવાવાળો હતો **दर्शनीय**=જોવા યોગ્ય હતો, **अभिरूप**=પોતાની સુંદરતાને લીધે ચમકતો હતો, **प्रतिरूप**=જોનારના હૃદયમા છાપ પાડે તેવો હતો, (પ્રતિબિંબિત થઈ જતો હતો.) તે રૈવત પર્વતની પાસે નન્દનવન નામે એક બગીચો હતો જે બધી ઋતુઓમા ફૂલોથી સંપન્ન હોવાથી દર્શનીય હતો. તે નન્દનવન બગીચામા **सुरप्रिय**=

सम्प्राप्त' अभिरामः=शोभा यत्र स तथा अनेकप्रकारकतरुस्तवकस्तम्बलतावल्ली-सम्प्राप्तच्छवि', हंस-मृग-मयूर-क्रौञ्च-सारस-चक्रवाकमदनशाला कोकिलकुलो-पपेत. हंसा.=पक्षिविशेषा., मृगाः=हरिणा', मयूरा , क्रौञ्चा', सारसा , चक्रवाका , मदनशालाः=सारिकाविशेषाः, कोकिलाश्च, तेषा यत् कुल=समूहस्तेन उपपेतः= युक्त । अनेकतटकटकविवरावझरप्रपातप्राग्भारशिखरप्रचुर -अनेकानि तटानि= तीराणि कटकाः=गण्डशैलाः पर्वतात्सत्रुटय-पतिता महापाषाणा , विवराणि= छिद्राणि, अवझराः=निर्झरविशेषा , प्रपाता =भृगवः=गर्त्तरूपाणि निर्झरणजल-पतनस्थानानि, प्राग्भारा =ईषदवनता पर्वतप्रदेशा , शिखराणि=शृङ्गाणि, एतानि प्रचुराणि यत्र स तथा, अप्सरोगणदेवसङ्घचारणविद्याधरमिथुनसंनिचीर्ण'-अप्स रसा गण'=समूह', देवसङ्घः=देवसमूह' चारणा =जङ्घाचारणादय' साधुविशेषा , विद्याधरमिथुनानि, तै,' संनिचीर्ण अधिष्ठित , नित्यक्षणक -नित्यम्=अनवरत क्षण एव क्षणक =उत्सवो यत्र सः, केषामय गिरि ? इत्याह-दशार्हवरवीर-पुरुषत्रैलोक्यबलवता-दशार्हा =समुद्रविजयादयो दश दशार्हा , तेषु वरा.=श्रेष्ठा , वीरपुरुषाश्च ते, त्रैलोक्य=लोकत्रये बलवन्तश्च अतुलबलशालिनेमिनाथयुक्तत्वात्, ये ते तथा तेषाम् । शेष सुगमम् ॥ १ ॥

मूलम्-तेणं कालेणं २ अरहा अरिट्ठनेमी आदिकरे दस-धणूइ वण्णओ जाव समोसरिए, परिसा निग्गया। तएण से

देवका सुनाया। अनन्तर समय बीतने पर रेवतीके गर्भसे एक कुमार पैदा हुआ, जिसका नाम निषध रखा गया। वह कुमार बडा होकर महाबलके समान बहत्तर कलाओंमें प्रवीण हो गया। पचास राजकन्याओंके साथ एक दिनमें उसका विवाह हुआ तथा उसको पचास-पचास दहेज मिला। अनन्तर पूर्वजन्म उपार्जित पुण्यसे मिले हुए पाँचो इन्द्रियोंके सुखोंका अनुभव करता हुआ अपने महलमे उत्सव आदिके साथ रहने लगा ॥ १ ॥

સંભળાવ્યું પછી સમય વીતતા રેવતીના ગર્ભથી એક કુમારનો જન્મ થયો, જેનું નામ निषध રાખવામાં આવ્યું તે કુમાર મોટો થતા મહાબલના જેવો બોંતેર કળાઓમાં પ્રવીણ થઈ ગયો પચાસ રાજકન્યાઓની સાથે એક દિવસમાં તેના લગ્ન થયા અને પચાસ પચાસ દહેજ મળ્યા પછી પૂર્વજન્મ ઉપાર્જિત પુણ્યથી મળેલા પાંચે ઇન્દ્રિયોના સુખોનો અનુભવ કરતો તે પોતાના મહેલમાં આનંદ ઉત્સવમાં રહેવા લાગ્યો (૧)

अन्येषां च बहूनां राजेश्वर० यावत् सार्थवाहप्रभृतीनां वैताढयगिरिसागरमर्यादस्य दक्षिणार्द्धभरतस्याधिपत्यं यावत् विहरति। तत्र खलु द्वारावत्यां नगर्यां बलदेवो नाम राजाऽभवत्, महता यावद् राज्यं प्रशासद् विहरति। तस्य खलु बलदेवस्य राज्ञो रेवती नाम देव्यभवत् सुकुमारपाणिपादा यावद् विहरति। ततः खलु सा रेवती देवी अन्यदा कदाचित् तादृशे शयनीये यावत् सिंह स्वप्ने दृष्ट्वा खलु प्रतिबुद्धा एवं स्वप्नदर्शनपरिकथनं, निषधो नाम कुमारो जातः, यावत् कला यथा महाबलस्य, पञ्चाशद् दायाः, पञ्चाशद्राजकन्यकानामेकदिवसेन पाणिं ग्राहयति, नवरं निषधो नाम यावद् उपरिप्रासादे विहरति ॥१॥

टीका—'यदि खलु' इत्यादि—नानाविधगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगताभिराम'—नानाविधाः=अनेकप्रकाराः वृक्षाश्च गुच्छाः=स्तबकाश्च गुल्माः=स्तम्बाश्च (स्कन्धरहितास्तरवः) लताः=व्रततयश्च वल्ल्यः=लताविशेषाश्च, ताभिः परिगतः=

अनेक हजार गणिकाओंके और बहुतसे राजा ईश्वर तलवर माडम्बिक कौटुम्बिक श्रेष्ठी सेनापति सार्थवाह प्रभृतिओंके तथा वैताढयगिरि और सागरसे मर्यादित दक्षिण अर्धभरतके, ऊपर आधिपत्य करते हुए विचर रहे थे।

उस द्वारावती नगरीमे बलदेव नामक राजा थे, जो महाबली थे और यावत् अपने राज्यका शासन करते हुए विचर रहे थे। उस बलदेव राजाकी पत्नी का नाम रेवती देवी था, जो सुकुमार हाथ पैरवली और सर्वाङ्ग सुन्दर थी। तथा पॅचो इन्द्रियोके अनुभव करती हुई विचरती थी। अनन्तर किसी समय वह रेवती देवी पुण्यवानके सोने लायक अपनी सुकोमल शय्यामे सोयी हुई स्वप्नमे सिंहको देखा और जाग गयी। स्वप्नका वृत्तान्त उसने राजा बल

ગણિકાઓના, વળી ઘણા રાજા ઇશ્વર તલવાર માડમ્બિક કૌટુમ્બિક શ્રેષ્ઠી સેનાપતી સાર્થવાહ આદિના તથા વૈતાઢ્યગિરિ અને સાગરથી મર્યાદિત દક્ષિણ અર્ધભરતના ઉપર આધિપત્ય કરતા થકા રહેતા હતા

તે દ્વારાવતી નગરીમા બલદેવ નામે રાજા હતા જે મહાબલવાન હતા અને પોતાના રાજ્યનુ શાસન કરતા વિચરતા હતા તે બલદેવ રાજાની પત્નીનુ નામ રેવતી દેવી હતુ, જે સુકુમાર હાથપગવાળી હતી અને સર્વાંગ સુંદર હતી અને પાંચે ઇન્દ્રિયોના સુખ અનુભવ કરતી વિચરતી હતી પછી કોઇ સમયે તે રેવતી દેવી પુણ્યવાન લોકોને પોઢવા યોગ્ય એવી પોતાની સુકોમલ શય્યામા સૂતી હતી ત્યા સ્વપ્નમા સિંહ જોયો અને જાગી ગઇ સ્વપ્નનુ વૃત્તાન્ત તેણે રાજા બલદેવને કહી

सोच्चा निसम्म वदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी सद्दहामि ण भते ! निग्गंथं पावयणं जहा चित्तो जाव सावग-धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता पडिगए । तेण कालेण २ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतेवासी वरदत्ते नाम अणगारे उराले जाव विहरइ । तएण से वरदत्ते अणगारे निसढ कुमार पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी अहो ण भते ! निसढे कुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कते कंतरूवे एव पिए० मणुन्नए० मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदसणे सुरूवे । निसढेणं भते ! कुमारेण अयमेयारूवे माणुवइड्ढी किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता ? पुच्छा जहा सूरियाभस्स, एव खलु वरदत्ता ! तेण कालेण २ इहेव जबूदीवे दीवे भारहे वासे रोहीडए नाम नयरे होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धे०, मेहवन्ने उज्जाणे, मणिदत्त-स्स जक्खस्स जक्खायतणे । तत्थ ण रोहीडए नयरे महब्बले नाम राया पउमावई नाम देवी, अन्नया कयाइ तसि तारि सगसि सयणिज्जसि सीह सुमिणे एव जम्मण भाणियव्व जहा महब्बलस्स, नवर वीरगओ नामं, वत्तीसओ दाओ, वत्तीसाए रायवरकन्नगाण पाणि जाव उवगिज्जमाणे २ पाउ-सवरिसारत्तसरयहेमतवसन्तगिम्हपज्जते छप्पि उऊ जहाविभवेण भुजमाणे २ काल गालेमाणे इट्ठ सद्दे जाव विहरइ । तेण कालेण २ सिद्धत्था नाम आयरिया जाइसपन्ना जहा केसी नवर वहुस्सुया वहुपरिवारा जेणेव रोहीडए नयरे जेणेव मेहन्ने उज्जाणे जेणेव मणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवा-गया, अहापडिरूव जाव विहरति, परिसा निग्गया । तएण

कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे० कोडु-वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी खिप्पामेव देवाणु-प्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाणिय भेरि तालेह। तएणं से कोडुवियपुरिसे जाव पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए जेणेव सामुदाणिया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सामुदाणिय भेरी महया २ सद्देण तालेइ, तएण तीसे सामु-दाणियाए भेरीए महया २ सद्देण तालियाए समाणीए समु-द्दविजयपामोक्खा दस दसारा देवीओ उण भाणियव्वाओ जाव अणगसेणापामोक्खा अणेगा गणियासहस्सा, अन्ने य वहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईओ ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालकारविभूसिया जहा विभवइड्ढिसक्कारसमुदएण, अप्पेगइया हयगया जाव पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता० जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करतल० कण्ह वासुदेव जएण विजएण वद्धावेति। तएण से कण्हे वासुदेवे कोडुं-वियपुरिसे एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभि-सेक्क हत्थिरयण कप्पेह हयगयरहपवरजाव पच्चप्पिणति। तएण से कण्हे वासुदेवे मज्जणघरे जाव दुरूढे, अट्ठट्ठमगलगा, जहा कूणिए, सेयवरचामरेहिं उद्धयमाणेहिं २ समुद्दविजयपामोक्खेहि दसारेहि जाव सत्थवाहप्पभिईहि सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण वारवईनयरीमज्झ मज्झेण सेस जहा कूणिओ जाव पज्जुवासइ। तएण तस्स निसढस्स कुमारस्स उप्पिं पासाय-वरगयस्स त महया जणसद्द च जहा जमाली जाव धम्म

सोच्चा निसम्म वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जहा चित्तो जाव सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता पडिगए । तेणं कालेणं २ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी वरदत्ते नामं अणगारे उराले जाव विहरइ । तएणं से वरदत्ते अणगारे निसढं कुमारं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी अहो णं भंते ! निसढे कुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे एवं पिए० मणुन्नए० मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे । निसढेणं भंते ! कुमारेणं अयमेयारूवे माणुयइड्ढी किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता ? पुच्छा जहा सूरियाभस्स, एवं खलु वरदत्ता ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे रोहीडए नामं नयरे होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धे०, मेहवन्ने उज्जाणे, मणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे । तत्थ णं रोहीडए नयरे महब्बले नामं राया पउमावई नामं देवी, अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सीहं सुमिणे, एवं जम्मणं भाणियव्वं जहा महब्बलस्स, नवरं वीरंगओ नामं, बत्तीसओ दाओ, बत्तीसाए रायवरकन्नगाणं पाणिं जाव उवगिज्जमाणे २ पाउसवरिसारत्तसरयहेमंतवसन्तगिम्हपज्जंते छप्पि उऊ जहाविभवेणं भुंजमाणे २ कालं गालेमाणे इट्ठे सद्दे जाव विहरइ । तेणं कालेणं २ सिद्धत्था नामं आयरिया जाइसपन्ना जहा केसी नवरं बहुस्सुया बहुपरिवारा जेणेव रोहीडए नयरे जेणेव मेहन्ने उज्जाणे जेणेव मणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया, अहापडिरूवं जाव विहरंति, परिसा निग्गया । तएणं

तस्स वीरगणस्स कुमारस्स उप्पि पासायवरगतस्स त महया जणसद्दं च जहा जमाली निग्गओ धम्म सोच्चा ज नवर देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि जहा जमाली तहेव निक्खतो जाव अणगारे जाए जाव गुत्तवभयारी । तए ण से वीरगए अणगारे सिद्धत्थाणं आयरियाणं अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वहूइ जाव चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणे वहुपडिपुण्णाइ पणयालीसवासाइ सामन्नपरियायं पाउणित्ता, दोमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सवीस भत्तसय अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा वभलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थण अत्थेगइयाण देवाण दससागरोवमा ठिई पण्णत्ता । तत्थण वीरगयस्स देवस्स वि दस सागरोवमा ठिई पण्णत्ता, से ण वीरगए देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव अणतर चय चइत्ता इहेव बारवईए नयरीए बलदेवस्स रन्नो रेवईए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने । तएण सा रेवई देवी तसि तारिसगसि सयणिज्जसि सुमिणदसण जाव उप्पि पासायवरगए विहरइ । त एव खलु वरदत्ता ! निसढेण कुमारेण अयमेयारुवा ओराला मणुयइड्ढी लद्धा ३ । पभू ण भते ! निसढे कुमारे देवाणुप्पियाण अंतिए जाव पव्वइत्तए ? हता पभू । से एव भते ! २ इय वरदत्ते अणगारे जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥ २ ॥

छाया—तस्मिन् काले तस्मिन् समये अर्हन् अरिष्टनेमिः आदिकरो दशधनुष्कः वर्णकः यावत् समवसृतः, परिषत् निर्गता। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवोऽस्याः कथायाः लब्धार्थः सन् हृष्टतुष्ट० कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव देवानुप्रियाः! सभायां सुधर्मायां सामुदानिकी भेरीं ताडयत। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रतिश्रुत्य यत्रैव सभायां सुधर्मायां सामुदानिकी भेरी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तां सामुदानिकीं भेरीं महता २ शब्देन ताडयन्ति। ततः खलु तस्यां सामुदानिक्यां भेर्यां महता २ शब्देन ताडितायां सत्यां समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्हाः,

'तए णं' इत्यादि—

उस काल उस समयमें दस धनुष प्रमाण शरीरवाले धर्मके आदिकर अर्हत् अरिष्टनेमि उस द्वारका नगरीमे पधारे। परिषद उनके दर्शन निमित्त अपने २ घरसे निकली। भगवानके आनेका समाचार सुनकर कृष्ण वासुदेवने हृष्टतुष्ट हृदयसे कौटुम्बिकपुरुषोंको बुलवाया और इस प्रकारकी आज्ञा दी—

हे देवानुप्रिय! शीघ्र ही जाकर सुधर्मा सभाकी सामुदानिक भेरीको बजाओ। जिस भेरीके बजाये जानेपर जन समुदाय एकत्रित हो जाय, उसे सामुदानिक भेरी कहते है। वासुदेव कृष्णके द्वारा इस प्रकार आज्ञापित वे कौटुम्बिक पुरुष उनकी आज्ञाको स्वीकार कर जहाँ सामुदानिक भेरी थी उधर गये, और वहाँ जाकर सामुदानिक भेरीको खूब जोरसे बजाया। उसको अत्यधिक जोरसे बजाये जानेपर समुद्रविजय प्रमुख दस दशार्हसे लेकर यावत् रुक्मिणी

'तेण कालेण' ઇત્યાદિ

તે કાળ તે સમયે દશ ધનુષના જેટલા પ્રમાણ (માપ) ના શરીરવાળા ધર્મના આદિકર અર્હત્ અરિષ્ટનેમી તે દ્વારકા નગરીમાં પધાર્યા પરિષદ્ તેમના દર્શન નિમિત્તે પોતપોતાને ઘેરથી નીકળી ભગવાનના આવ્યાના સમાચાર સાંભળી કૃષ્ણવાસુદેવે હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને આ પ્રકારે આજ્ઞા આપી

હે દેવાનુપ્રિય! જલદી જઈને સુધર્મા સભાની સામુદાનિક ભેરી (વાજું) વગાડો જે ભેરીને વગાડવાથી જનસમુદાય એકત્રિત થઈ જાય તેને સામુદાનિક ભેરી કહે છે

કૃષ્ણવાસુદેવ તરફથી આ પ્રકારે આજ્ઞા મળતા તે કૌટુંબિક પુરુષ તેમની આજ્ઞાનો સ્વીકાર કરી જ્યાં સામુદાનિક ભેરી હતી ત્યાં ગયા અને ત્યાં જઈને સામુદાનિક ભેરી ખૂબ જોરથી વગાડી તે બહુ જોરથી વગાડવાથી સમુદ્રવિજય પ્રમુખ દશ દશાર્હથી માંડીને

तस्स वीरंगणस्स कुमारस्स उप्पि पासायवरगतस्स त महया जणसद्दं च जहा जमाली निग्गओ धम्मं सोच्चा ज नवर देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि जहा जमाली तहेव निक्खतो जाव अणगारे जाए जाव गुत्तबभयारी । तए ण से वीरगए अणगारे सिद्धत्थाणं आयरियाणं अतिए सामाइ-यमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वहूइ जाव चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणे वहुपडिपुण्णाइ पणयालीस-वासाइ सामन्नपरियाय पाउणित्ता, दोमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सवीस भत्तसय अणसणाए छेदित्ता आलो-इयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा वभलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थण अत्थेगइयाण देवाण दससागरोवमा ठिई पण्णत्ता । तत्थण वीरगयस्स देव-स्स वि दस सागरोवमा ठिई पण्णत्ता, से ण वीरगए देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव अणतर चय चइत्ता इहेव वारवईए नयरीए बलदेवस्स रन्नो रेवईए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने । तएण सा रेवई देवी तसि तारिसगसि सयणिज्जसि सुमिणदसण जाव उप्पि पासायवरगए विहरइ । त एव खलु वरदत्ता ! निसढेण कुमारेण अयमेयारुवा ओराला मणुयइड्ढी लद्धा ३ । पभू ण भते ! निसढे कुमारे देवाणु-प्पियाण अतिए जाव पव्वइत्तए ? हता पभू । से एव भते ! २ इय वरदत्ते अणगारे जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥ २ ॥

चामरैरुद्धूयमानैः समुद्रविजयप्रमुखैः दशभिर्दशार्हैर्यावत् सार्थवाहप्रभृतिभिः सार्द्धं सपरिवृतः सर्वर्द्ध्या यावत् रवेण यावत् द्वारावतीनगरीमध्यमध्येन शेषं यथा कूणिको यावत् पर्युपास्ते । ततः खलु तस्य निषधस्य कुमारस्योपरि प्रासादवरगतस्य स महाजनशब्दं च यथा जमालिर्यावद् धर्मं श्रुत्वा निशम्य

रोंसे अलङ्कृत हो अपने आभिषेक्य हाथी पर चढे। और उन्हें शुभ शकुनके लिये आठ-आठ माङ्गलिक वस्तुएँ दिखायी गई। इसके बाद वह कृष्ण वासुदेव कूणिकके समान डुलाए जाते हुए श्वेतचामरोंसे सुशोभित तथा समुद्रविजय प्रमुख दस दशार्होंसे लेकर यावत् सार्थवाह प्रभृतियोंसे घिरे हुए तथा सभी प्रकारके विभवके साथ भेरी आदि बाजाके शब्दोंसे दिशाको मुखरित करते हुए द्वारावती नगरीके बीचोबीच चलते हुए भगवान अर्हत् अरिष्टनेमिके पास पहुँचे। और कूणिकके समान तीनवार आदक्षिण प्रदक्षिण करके वन्दन नमस्कार किया और सेवा करने लगे।

उसके बाद वह निषध कुमारने अपने उपरी महलमें शब्दादिविषयोंका सुखानुभव करता हुआ मनुष्योंके महान कोलाहलको सुना। उसे जिज्ञासा हुई कि क्या बात है? पूछने पर उसे ज्ञात हुआ कि भगवान अर्हत अरिष्टनेमि यहाँ पधारे है। जनता उनकी वन्दनाके लिये जा रही है इसीलिये यह कोलाहल हो रहा है। यह जानकर जमालिके समान वह भी भगवानके दर्शनके लिये आये,

વઈ પોતાના અભિષેકય પટ્ટ હાથી ઉપર ચડયા અને તેમને શુભ શુકનને માટે આઠ આઠ માંગલિક વસ્તુઓ દેખાડવામાં આવી ત્યાર પછી કૃષ્ણવાસુદેવ કૂણિકની પેઠે ઢોળાઈ રહેતા શ્વેત ચામરેથી સુશોભિત તથા સમુદ્રવિજય પ્રમુખ દશદશાર્હથી માંડીને યાવત્ સાર્થવાહ આદિથી ઘેરાયેલ તથા સર્વ પ્રકારના વૈભવ સાથે, ભેરી વગેરે વાજાના શબ્દોથી દિશાઓને મુખરિત કરતા દ્વારાવતી નગરીની વચ્ચો-વચ્ચથી ચાલતા ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમીની પાસે પહોંચ્યા અને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરીને વંદન નમસ્કાર કર્યા અને સેવા કરવા લાગ્યા

ત્યાર પછી તે નિષધ કુમારે પણ પોતાના ઊંચા મહેલમાં શબ્દાદિ વિષયોનો સુખાનુભવ કરતા થકા મનુષ્યોનો મોટો કોલાહલ સાંભળ્યો તેમને જીજ્ઞાસા થઈ કે શું વાત છે? પૂછવાથી ખબર પડી કે ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ અહીં પધાર્યા છે અને જનતા તેમના વંદન-દર્શન માટે જાય છે તેથી કોલાહલ થાય છે આ જાણીને જમાલીની પેઠે તે પણ ભગવાનના દર્શન માટે આવ્યા અને આદક્ષિણ

देव्य० पुनर्भणितव्या, यावद् अनङ्गसेनाप्रमुखानि अनेकानि गणिकासहस्राणि, अन्ये च बहवो राजेश्वर० यावत् सार्थवाहप्रभृतय स्नाता' यावत् कृतप्रायश्चित्ता सर्वालङ्कारविभूपिता यथाविभवऋद्धिसत्कारसमुदयेन अप्येकके हयगता० यावत् पुरुपवागुरापरिक्षिप्ता यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतल० कृष्ण वासुदेव जयेन विजयेन वर्द्धयन्ति। ततः खलु कृष्णो वासुदेव० कौटुम्बिकपुरुपानेवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया! आभिषेक्य हस्तिरत्न कल्पय वम्, हय-गज-रथ प्रवरान् यावत् प्रत्यर्पयन्ति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो मज्जनगृहे यावद् दूरूढ अष्टाष्टमङ्गलकानि, यथा कूणिक०, श्वेतवर

आदि देवियाँ तथा अनङ्गसेना प्रभृति अनेक सहस्र गणिकायें और दूसरे बहुतसे राजा ईश्वर तलवर माडम्बिक कौटुम्बिक यावत् सार्थवाह आदि स्नान और दु'स्वप्न आदिके निवारणके लिये मषी तिलक आदि करके सभी अलङ्कारोसे अलङ्कृत हो अपने २ विभवके अनुसार सत्कार सामग्रियोंके साथ घोडे आदि सवारियों पर बैठकर अपने २ अनुचर पुरुषोंके साथ जहाँ कृष्ण वासुदेव थे वहाँ आये। वहाँ आकर हाथ जोडकर कृष्ण वासुदेवको जय विजय शब्दसे वधाया। उसके बाद कृष्ण वासुदेवने अपने कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलाकर इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय! आभिषेक्य (पट्ट) हस्तिरत्नको और अन्य हाथी घोडे रथ आदिको सजाकर ले आओ। कृष्ण वासुदेवकी ऐसी आज्ञा सुनकर वे कौटुम्बिक पुरुष शीघ्र ही हाथी घोडे रथ आदिको सजाकर ले आये। उसके बाद कृष्ण वासुदेव मज्जनगृहमे स्नान करनेके लिये गये, स्नान कर सभी अलङ्का

રૂકિમણી આદિ દેવિઓ તથા અનંગસેના આદિ અનેક સહસ્ર ગણિકાઓ તથા બીજા રાજા ઇશ્વર, તલવર, માડમ્બિક કૌટુમ્બિક અને સાર્થવાહ આદિ સ્નાન તથા દુસ્વપ્નના નિવારણને માટે મષી તિલક કરીને બધા ઘરેણાથી વિભૂષિત થઇને પોત-પોતાના વૈભવ પ્રમાણે સત્કાર સામગ્રીઓ લઇને ઘોડા વગેરે ઉપર સવારી કરીને પોતાના નોકર-ચાકર સાથે જ્યાં કૃષ્ણવાસુદેવ હતા ત્યાં આવીને હાથ જોડી કૃષ્ણ વાસુદેવને જયવિજય શબ્દથી વધાવ્યા ત્યાર પછી કૃષ્ણવાસુદેવે પોતાના કૌટુમ્બિક પુરૂષોને બોલાવી આ પ્રકારે કહ્યુ —હે દેવાનુપ્રિય! આભિષેક્ય (પટ્ટ) હાથીરત્નને તથા બીજા હાથી ઘોડા રથ આદિ તૈયાર કરી લઇ આવો કૃષ્ણવાસુદેવની એવી આજ્ઞા સાભળીને તે કૌટુમ્બિક પુરૂષ જલદી હાથી રથ આદિને તૈયાર કરી લઇ આવ્યા ત્યાર પછી કૃષ્ણવાસુદેવ સ્નાનઘરમાં ન્હાવા ગયા સ્નાન કરી બધા ઘરેણાઓથી વિભૂષિત

एवं खलु वरदत्त ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे रोहितकं नाम नगरमासीत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्० मेघवर्णमुद्यानं, मणिदत्तस्य यक्षस्य यक्षायतनम् । तत्र खलु रोहितके नगरे महाबलो नाम राजा, पद्मावती नाम देवी, अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशे शयनीये सिंहं स्वप्ने०, एवं जन्म भणितव्यं यथा महाबलस्य, नवरं वीरगतो नाम, द्वात्रिंशद्

हे भदन्त ! इस निषध कुमारको इस प्रकारकी मनुष्य सम्बन्धी ऋद्धि कैसे मिली, कैसे प्राप्त हुई, और कैसे यह ऋद्धि इसके भोगमें आई ? इत्यादि- गौतमने सूर्याभकी देव ऋद्धिके बारेमें जिस प्रकार भगवानसे पूछा था उसी प्रकार-वरदत्तने पूछा ।

भगवान कहते है-

हे वरदत्त । उस काल उस समयमें इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर भरत क्षेत्रमें रोहितक नामक नगर था, जो कि धन धान्यादि ऋद्धिसे समृद्ध था । उस नगरमे मेघवर्ण नामक उद्यान था । उस उद्यानमे मणिदत्त नामक यक्षका एक यक्षायतन था । उस रोहितक नगरका राजा महाबल था । उसकी रानीका नाम पद्मवती था ।

एक समय सुकोमल शय्यापर सोयी हुई उस पद्मावती रानीने स्वप्नमें सिंहको देखा । अनन्तर उसके गर्भसे एक बालक उत्पन्न हुआ । उसका जन्म आदिका वर्णन महाबलके समान जानना चाहिये । उस बालकका नाम वीरङ्गत रखा गया । जब वह कुमार

હે ભદન્ત ! આ निषधकुमार ને આ પ્રકારની મનુષ્ય સબધી ઋદ્ધિ કેવી રીતે મળી, કેમ પ્રાપ્ત થઇ, અને કેવી રીતે તે ઋદ્ધિ તેમના ભોગમા આવી ?

ગૌતમે સૂર્યાભની દેવઋદ્ધિ વિષે જેવી રીતે ભગવાનને પૂછ્યુ હતુ તેવી રીતે વરદત્તે પૂછ્યુ ?

ભગવાને કહ્યુ —હે વરદત્ત ! તે કાળ તે સમયે આ જમ્બૂદ્વીપ નામે દ્વીપની અદર ભરતક્ષેત્રમા રોહિતક નામે નગર હતુ કે જે ધનધાન્ય ઋદ્ધિથી સમૃદ્ધ હતુ તે નગરમા મેઘવર્ણ નામે ઉદ્યાન હતુ ત ઉદ્યાનમા મણિદત્ત નામે યક્ષનુ યક્ષાયતન હતુ તે રોહિતકનો રાજા મહાબલ હતો તેની રાણીનુ નામ પદ્માવતી હતુ

એક સમય સુકોમળ શય્યા ઉપર સૂતેલી તે પદ્માવતી રાણીએ સ્વપ્નમા સિંહને જોયો પછી તેના ગર્ભથી महाबल ના જેવો એક બાળક ઉત્પન્ન થયો તેના જન્મ આદિનુ વર્ણન મહાબલ જેવુ સમજવુ તેનુ નામ वीरगत રાખ્યુ હતુ જ્યારે

वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्–श्रद्दधामि खलु भदन्त ! निर्ग्रन्थ प्रवचन यथा चित्तो० यावत् श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य प्रतिगतः ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तेवासी वरदत्तो नाम अनगार॰ उदारो यावद् विहरति । ततः स वरदत्तोऽनगारो निषध कुमार पश्यति, दृष्ट्वा जातश्रद्धो यावत् पर्युपासीन एवमवादीत्–अहो ! खलु भदन्त ! निषध॰ कुमार इष्ट इष्टरूपः कान्तः कान्तरूपः, एव मियो० मनोज्ञो० मनोऽमो मनोऽमरूप॰ सोमः सामरूपः प्रियदर्शन॰ सुरूप । निषधेन भदन्त ! कुमारेण अयमेतद्रूपा मानुष्यऋद्धिः कथ लब्धा ? कथ प्राप्ता ? पृच्छा यथा सूर्याभस्य ।

और आदक्षिण प्रदक्षिण करके वन्दन नमस्कार किया। अनन्तर धर्म सुनकर उसे हृदयसे अवधारण कर वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार कहने लगा–हे भदन्त ! मै निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ। इसके बाद वह चित्त प्रधानके समान यावत् श्रावक धर्मको स्वीकार कर अपने घर लौट आया।

उस काल उस समयमे अर्हत् अरिष्टनेमिके अन्तेवासी उदार प्रधान ओजस्वी वरदत्त नामके अनगार धर्मध्यान करते हुए एका-न्तमें बैठे थे। भगवान्‌के समीप आये हुए निषध कुमारको देखकर उन्हें श्रद्धा जिज्ञासा और कौतूहल उत्पन्न हुआ और उन्होंने भग वानसे इस प्रकार पूछा—

हे भदन्त ! वह निषध कुमार इष्ट है, इष्टरूप है, कान्त है, कान्तरूप है। इसी तरह प्रिय है मनोज्ञ है मनोऽम (मनको अच्छा लगनेवाला) है, सोम है, सोमरूप है, प्रियदर्शन है, सुरूप है।

પ્રદક્ષિણા કરીને વદન નમસ્કાર કર્યા પછી ધર્મનું શ્રવણ કરી તેને હૃદયમા અવધારણ કરીને વદન નમસ્કાર કરી આ પ્રકારે કહ્યુ –

હે ભદ ત ! હુ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન ઉપર શ્રદ્ધા રાખુ છુ ત્યાર પછી તે ચિત્ત પ્રધાનની પેઠે શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કરીને પોતાને ઘેર પાછો આવ્યો

તે કાળ તે સમયે અર્હત્ અરિષ્ટનેમિના અ તેવાસી ઉદાર પ્રધાન ઓજસ્વી વરદત્ત નામે અનગાર ધર્મધ્યાન કરતા એકાન્તમા બેઠા હતા ભગવાનની પાસે આવેલા निषधकुमार ને જોઈને તેને જીજ્ઞાસા અને કૌતુહલ ઉત્પન્ન થયુ અને ભગવાનને આ પ્રમાણે પૂછ્યુ —હે ભદ ત ! निषधकुमार ઇષ્ટ છે ઇષ્ટરૂપ છે, કાન્ત છે, મનોજ્ઞ છે, મનોરમ છે, સોમ છે, સોમરૂપ છે પ્રિયદર્શન છે, સુરૂપ છે

एवं खलु वरदत्त ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे रोहितकं नाम नगरमासीत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्० मेघवर्णमुद्यान, मणिदत्तस्य यक्षस्य यक्षायतनम् । तत्र खलु रोहितके नगरे महाबलो नाम राजा, पद्मावती नाम देवी, अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशे शयनीये सिंह स्वप्ने०, एवं जन्म भणितव्य यथा महाबलस्य, नवर वीरगतो नाम, द्वात्रिंशद्

हे भदन्त ! इस निषध कुमारको इस प्रकारकी मनुष्य सम्बन्धी ऋद्धि कैसे मिली, कैसे प्राप्त हुई, और कैसे यह ऋद्धि इसके भोगमें आई ? इत्यादि– गौतमने सूर्याभकी देव ऋद्धिके बारेमें जिस प्रकार भगवानसे पूछा था उसी प्रकार-वरदत्तने पूछा ।

भगवान कहते है–

हे वरदत्त ! उस काल उस समयमें इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर भरत क्षेत्रमें रोहितक नामक नगर था, जो कि धन धान्यादि ऋद्धिसे समृद्ध था । उस नगरमे मेघवर्ण नामक उद्यान था । उस उद्यानमे मणिदत्त नामक यक्षका एक यक्षायतन था । उस रोहितक नगरका राजा महाबल था । उसकी रानीका नाम पद्मवती था ।

एक समय सुकोमल शय्यापर सोयी हुई उस पद्मावती रानीने स्वप्नमें सिंहको देखा । अनन्तर उसके गर्भसे एक बालक उत्पन्न हुआ । उसका जन्म आदिका वर्णन महाबलके समान जानना चाहिये । उस बालकका नाम वीरङ्गत रखा गया । जब वह कुमार

હે ભદન્ત ! આ निषधकुमार ને આ પ્રકારની મનુષ્ય સબધી ઋદ્ધિ કેવી રીતે મળી, કેમ પ્રાપ્ત થઇ, અને કેવી રીતે તે ઋદ્ધિ તેમના ભોગમા આવી ?

ગૌતમે સૂર્યાભની દેવઋદ્ધિ વિષે જેવી રીતે ભગવાનને પૂછ્યુ હતુ તેવી રીતે વરદત્તે પૂછ્યુ ?

ભગવાને કહ્યુ —હે વરદત્ત ! તે કાળ તે સમયે આ જમ્બૂદ્વીપ નામે દ્વીપની અદર ભરતક્ષેત્રમા રોહિતક નામે નગર હતુ કે જે ધનધાન્ય ઋદ્ધિથી સમૃદ્ધ હતુ તે નગરમા મેઘવર્ણ નામે ઉદ્યાન હતુ તે ઉદ્યાનમા મણિદત્ત નામે યક્ષનુ યક્ષાયતન હતુ તે રોહિતકને। રાજા મહાબલ હતો તેની રાણીનુ નામ પદ્માવતી હતુ

એક સમય સુકોમળ શય્યા ઉપર સૂતેલી તે પદ્માવતી રાણીએ સ્વપ્નમા સિંહને જોયો પછી તેના ગર્ભથી महाबल ના જેવો એક બાળક ઉત્પન્ન થયો તેના જન્મ આદિનુ વર્ણન મહાબલ જેવુ સમજવુ તેનુ નામ वीरगत રાખ્યુ હતુ જ્યારે

प्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः कालमासे कालं कृत्वा ब्रह्मलोके कल्पे मनोरमे विमाने देवतया उपपन्नः । तत्र खलु अस्त्येकेषां देवानां दशसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता । तत्र खलु वीरगतस्य देवस्यापि दशसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता । स खलु वीरगतो देवस्तस्माद् देवलोकात् आयुःक्षयेण यावद् अनन्तरं चयं च्युत्वा इहैव द्वारावत्यां नगर्यां बलदेवस्य राज्ञो रेवत्या देव्याः कुक्षौ पुत्रतयोपपन्नः । ततः खलु सा रेवती देवी तस्मिन् तादृशे शयनीये स्वप्नदर्शनं यावद् उपरि प्रासादवरगतो विहरति । तदेवं खलु वरदत्त ! निषधेन कुमारेण इयमेतद्रूपा उदारा मनुष्य-ऋद्धिर्लब्धा ३ । प्रभुः खलु भदन्त ! निषधः कुमारो देवानुप्रियाणामन्तिके यावत् प्रव्रजितुम् ? हन्त प्रभुः । स एवं भदन्त ! २ इति वरदत्तोऽनगारो यावदात्मानं भावयन् विहरति ॥ २ ॥

टीका–'तेणं कालेणं' इत्यादि । व्याख्या स्पष्टा ॥ २ ॥

नोंकी आलोचना और प्रतिक्रमण कर समाधि प्राप्त हो काल अवसरमें काल कर ब्रह्म नामक पाचवें देवलोकके मनोरम विमानमें देवता होकर उत्पन्न हुए। वहाँ कई एक देवोंकी स्थिति दस सागरोपम है, वहाँ इस वीरङ्गत देवकी भी स्थिति दश सागरोपम थी। वह वीरङ्गत देव देवसम्बन्धी आयु भव और स्थितिके क्षय होनेपर उस ब्रह्मलोकसे च्यवकर इस द्वारावती नगरीमे राजा बलदेवकी पत्नी रेवतीके उदरमे पुत्र होकर जन्मे। उस रेवती देवीने स्वप्नमें सिंह देखा। और उसके बाद यह निषध कुमार उत्पन्न हुए यावत् शब्दादि विषयोंका अनुभव करते हुए अपने ऊपरी महलमे विचर रहे है। हे वरदत्त! इस प्रकार इस निषध कुमारने इस प्रकारकी उदार मनुष्यऋद्धि पायी है।

આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ કરી સમાધિ પ્રાપ્ત થતા કાળ અવસરમા કાળ કરીને બ્રહ્મનામક પાચમા દેવલોકના મનોરમ વિમાનમા દેવતા થઇને ઉત્પન્ન થયા ત્યા કેટ-લેક દેવોની સ્થિતિ દશ સાગરોપમની છે ત્યા वीरगतदेव ની પણ સ્થિતિ દશ સાગરોપમની હતી તે वीरगतदेव દેવ સબધી આયુષ્ય ભવ અને સ્થિતિ ક્ષય થવાથી તે બ્રહ્મ લોકમાથી ચ્યવીને આ દ્વારાવતી નગરીમા રાજા બલદેવની પત્ની રેવતીના ઉદરમા પુત્ર થઇને જન્મ્યા તે રેવતી દેવીએ સ્વપ્નમા સિંહને દીઠો અને ત્યાર પછી આ निषधकुमार ઉત્પન્ન થયા અને યાવત શબ્દાદિ વિષયોનો અનુભવ કરતા તે પોતાના મહેલના ઉપલે માળે રહેવા લાગ્યા હે વરદત્ત! આ પ્રકારે આ निषधकुमार ને આવા પ્રકારની ઉદાર મનુષ્ય ઋદ્ધિ મળેલી છે

मूलम्—तएणं अरहा अरिट्ठनेमी अण्णया कयाइ बारवईओ नयरीओ जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ। निसढे कुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ। तएणं से निसढे कुमारे अण्णया कयाइं जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव दब्भसंथारोवगए विहरइ। तएण निसढस्स कुमारस्य पुव्वरत्तावरत्त० धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए० धन्ना णं ते गामागर जाव सन्निवेसा जत्थणं अरहा अरिट्ठनेमी विहरइ। धन्ना णं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभईओ जे णं अरिट्ठनेमिं वंदंति नमंसंति जाव पज्जुवासंति, जइ णं अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्विं० नंदणवणे विहरेज्जा तोणं अहं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदिज्जा जाव पज्जुवा-

---

वरदत्त पूछते है—

हे भदन्त! क्या यह निषधकुमार आपके समीप प्रव्रजित होगा?

भगवान कहते हैं—

हाँ, वरदत्त! यह निषधकुमार अनगार बन सकेगा।

वरदत्त कहते है—

हे भदन्त! आप जो कहते हैं वह सत्य ही है, ऐसा कह कर वरदत्त अनगार आत्माको तप संयमसे भावित करते हुए विचरने लगे ॥ २ ॥

વરદત્ત પૂછે છે—

હે ભદન્ત! આ निषधकुमार આપની પાસે પ્રવ્રજિત થવામા સમર્થ છે?

ભગવાન કહે છે-

હે વરદત્ત! હા, આ निषधकुमार અનગાર બનવામા સમર્થ છે

વરદત્ત કહે છે-

હે ભદન્ત! આપ કહો છો તેમજ છે એમ કહીને વરદત્ત અનગાર આત્માને

प्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः कालमासे कालं कृत्वा ब्रह्मलोके कल्पे मनोरमे विमाने देवतया उपपन्नः। तत्र खलु अस्त्येकेषां देवानां दशसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता। तत्र खलु वीरगतस्य देवस्यापि दशसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता। स खलु वीरगतो देवस्तस्माद् देवलोकात् आयुःक्षयेण यावद् अनन्तरं चयं च्युत्वा इहैव द्वारावत्यां नगर्यां बलदेवस्य राज्ञो रेवत्या देव्याः कुक्षौ पुत्रतयोपपन्नः। ततः खलु सा रेवती देवी तस्मिन् तादृशे शयनीये स्वप्नदर्शनं यावद् उपरि प्रासादवरगतो विहरति। तदेवं खलु वरदत्त! निषधेन कुमारेण इयमेतद्रूपा उदारा मनुष्य-ऋद्धिर्लब्धा ३। प्रभुः खलु भदन्त! निषधः कुमारो देवानुप्रियाणामन्तिके यावत् प्रव्रजितुम्? हन्त प्रभुः। स एवं भदन्त! २ इति वरदत्तोऽनगारो यावदात्मानं भावयन् विहरति ॥ २ ॥

टीका–'तेणं कालेणं' इत्यादि। व्याख्या स्पष्टा ॥ २ ॥

नोकी आलोचना और प्रतिक्रमण कर समाधि प्राप्त हो काल अवसरमें काल कर ब्रह्म नामक पाचवें देवलोकके मनोरम विमानमें देवता होकर उत्पन्न हुए। वहाँ कई एक देवोंकी स्थिति दस सागरोपम है, वहाँ इस वीरङ्गत देवकी भी स्थिति दश सागरोपम थी। वह वीरङ्गत देव देवसम्बन्धी आयु भव और स्थितिके क्षय होनेपर उस ब्रह्मलोकसे च्यवकर इस द्वारावती नगरीमे राजा बलदेवकी पत्नी रेवतीके उदरमे पुत्र होकर जन्मे। उस रेवती देवीने स्वप्नमे सिंह देखा। और उसके बाद यह निषध कुमार उत्पन्न हुए यावत् शब्दादि विषयोका अनुभव करते हुए अपने ऊपरी महलमे विचर रहे हैं। हे वरदत्त! इस प्रकार इस निषध कुमारने इस प्रकारकी उदार मनुष्यऋद्धि पायी है।

આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ કરી સમાધિ પ્રાપ્ત થતા કાળ અવસરમા કાળ કરીને બ્રહ્મનામક પાચમા દેવલોકના મનોરમ વિમાનમા દેવતા થઈને ઉત્પન્ન થયા ત્યા કેટલાક દેવોની સ્થિતિ દશ સાગરોપમની છે ત્યા वीरगतदेव ની પણ સ્થિતિ દશ સાગરોપમની હતી તે वीरगतदेव દેવ સબધી આયુષ્ય ભવ અને સ્થિતિ ક્ષય થવાથી તે બ્રહ્મલોકમાથી ચ્યવીને આ દ્વારાવતી નગરીમા રાજા બલદેવની પત્ની રેવતીના ઉદરમા પુત્ર થઈને જન્મ્યા તે રેવતી દેવીએ સ્વપ્નમા સિંહને દીઠો અને ત્યાર પછી આ निषधकुमार ઉત્પન્ન થયા અને યાવત શબ્દાદિ વિષયોનો અનુભવ કરતા તે પોતાના મહેલના ઉપલે માળે રહેવા લાગ્યા હે વરદત્ત! આ પ્રકારે આ निषधकुमार ને આવા પ્રકારની ઉદાર મનુષ્ય ઋદ્ધિ મળેલી છે

कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं सोहम्मीसाण जाव अच्चुते तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धविमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं निसढस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। से णं भंते! निसढे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? वरदत्ता! इहेव जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उन्नाए नयरे विसुद्धपिइवंसे रायकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ तएणं से उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलबोहिं बुज्झिहिइ, बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वज्जिहिइ। से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी। से णं तत्थ बहूइं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिस्सइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसिहिइ, झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदिहिइ। जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए जाव अदंतवणए अच्छत्तए अणोवाहणए फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे पिंडवाओ लद्धावलद्धे उच्चावया य गामकंटया अहियासिज्जइ, तमट्ठं आराहिइ, आराहित्ता, चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणं अंतं काहिइ। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं जाव निक्खेवओ ॥ ३ ॥

पढमं अज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

सिज्जा। तएणं अरहा अरिट्ठनेमी निसढस्स कुमारस्स अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता अट्ठारसहिं समणसहस्सेहिं जाव नंदणवणे उज्जाणे समोसढे। परिसा निग्गया। तएणं निसढे कुमारे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ० चाउग्घंटेणं आसरहेणं निग्गए, जहा जमाली, जाव अम्मापियरो आपुच्छित्ता पव्वइए, अणगारे जाते जाए गुत्तबंभयारी। तएणं से निसढे अणगारे अरहतो अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ अहिज्जित्ता बहूइं चउत्थछट्ठ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं नव वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए। तएणं से वरदत्ते अणगारे निसढं अणगारं कालगतं जाणित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से णं भंते! निसढे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववन्ने? वरदत्ताइ! अरहा अरिट्ठनेमी वरदत्तं अणगारं एवं वयासी—एवं खलु वरदत्ता! मम अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दे जाव विणीए मम तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं नववासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते

कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं सोहम्मीसाण जाव अच्चुते तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वीइवयित्ता सव्वट्ठसिद्धविमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं निसढस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। से णं भंते! निसढे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? वरदत्ता! इहेव जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उन्नाए नयरे विसुद्धपिइवंसे रायकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ तएणं से उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलबोहिं बुज्झिहिइ, बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वज्जिहिइ। से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी। से णं तत्थ बहूइं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिस्सइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसिहिइ, झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदिहिइ। जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए जाव अदंतवणए अच्छत्तए अणोवाहणए फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे पिंडवाओ लद्धावलद्धे उच्चावया य गामकंटया अहियासिज्जइ, तमट्ठं आराहिइ, आराहित्ता, चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणं अंतं काहिइ। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं जाव निक्खेवओ ॥ ३ ॥

पढमं अज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

छाया—ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिरन्यदा कदाचित् द्वारावत्या नगर्या यावत् बहिर्जनपदविहारं विहरति। निषधः कुमारः श्रमणोपासको जातः अभिगतजीवाजीवो यावद् विहरति। ततः खलु स निषधः कुमारः अन्यदा कदाचित् यत्रैव पोषधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यावद् दर्भसंस्तारोपगतो विरहति। ततः खलु तस्य निषधस्य कुमारस्य पूर्वरात्रापररात्रकाले धर्मजागरिका जाग्रतोऽयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः०–धन्याः खलु ते ग्रामागर यावत् सन्निवेशाः, यत्र खलु अर्हन् अरिष्टनेमिर्विहरति, धन्याः खलु ते राजेश्वर यावत् सार्थवाहप्रभृतिकाः, ये खलु अरिष्टनेमिं वन्दन्ते नमस्यन्ति यावत्० पर्युपासते,

'तएण अरहा' इत्यादि—

उसके बाद अर्हत् अरिष्टनेमि एक समय द्वारावती नगरीसे निकलकर जनपद=देशमें विहार करने लगे। 'निषधकुमार' श्रमणोपासक हो गये और वह जीव अजीव आदि तत्त्वोंको जानकर विचरने लगे। उसके बाद वह निषधकुमार एक समय जहाँ पौषधशाला थी वहाँ गये और वहाँ दाभका आसनपर बैठकर धर्मध्यान करते हुए विचरने लगे। उसके बाद रात्रिके अन्तिम प्रहरमे धर्म जागरणा करते हुए उस 'निषधकुमार' के हृदयमें इस प्रकारका विचार उत्पन्न हुआ कि वह ग्राम यावत् सन्निवेश धन्य है जहाँ अर्हत् अरिष्टनेमि भगवान् विचरते हैं! वे राजा ईश्वर तलवर माडम्बिक यावत् सार्थवाह प्रभृति धन्य है जो भगवानको वन्दन नमस्कार करते हैं और सेवा करते हैं।

'तएण अरहा' ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી અર્હત અરિષ્ટનેમિ એક સમય દ્વારાવતી નગરીથી નીકળીને દેશમા વિચરવા લાગ્યા निषधकुमार શ્રમણોપાસક થઈ ગયા અને તે જીવ અજીવ આદિ તત્ત્વોને જાણીને વિચરવા લાગ્યા ત્યાર પછી તે निषधकुमार એક વખત જ્યા પૌષધશાળા હતી ત્યા ગયા અને ત્યા દાભનો સન્સ્તારક (આસન) બિછાવી તેના પર બેસી ધર્મધ્યાન કરતા વિચરવા લાગ્યા ત્યાર પછી પાછલી રાત્રિએ ધર્મ-જાગરણ કરતા તે निषधकुमार ના મનમા એવો વિચાર પેદા થયો કે તે ગ્રામ સન્નિવેશ આદિ ધન્ય છે કે જ્યા અર્હત અરિષ્ટનેમિ ભગવાન વિચરે છે તે રાજા ઈશ્વર, તલવર, માડમ્બિક, કૌટુંબિક યાવત્ સાર્થવાહ આદિ ધન્ય છે જે ભગવાનને વંદન નમસ્કાર કરે છે

यदि खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वानुपूर्वी० नन्दनवने विहरेत् तर्हि खलु अह-मर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्देय नमस्येय यावत् पर्युपासीय । ततः खलु अर्हन् अरिष्ट-नेमिः निषधस्य कुमारस्य इममेतद्रूपमाध्यात्मिकं यावद् विज्ञाय अष्टादशभिः श्रमणसहस्रैः यावद् नन्दनवने उद्याने समवसृतः, परिषद् निर्गता । ततः खलु निषधः कुमारः अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् हृष्ट० चातुर्घण्टेन अश्वरथेन यावद् निर्गतः, यथा जमालिः, यावद् अम्बापितरौ आपृच्छ्य प्रव्रजितः, अनगारो जातो यावद् गुप्तब्रह्मचारी । ततः खलु स निषधोऽनगारः अर्हतो-रिष्टनेमेस्तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते,

यदि अर्हत् अरिष्टनेमि भगवान पूर्वानुपूर्वी विचरते हुए नन्दन वनमें पधारें तो मैं भी भगवानको वन्दन नमस्कार करूँ और उनकी सेवा करूँ। उसके बाद भगवान अर्हत् अरिष्टनेमि उस 'निषधकुमार' के इस प्रकारका आध्यात्मिक=अन्तःकरणका विचार जानकर, अठारह हजार श्रमणोंके साथ उस नन्दनवन उद्यानमें पधारे। भगवानके दर्शनके लिए परिषद् अपने २ घरसे निकली। उसके बाद 'निषधकुमार' भी इस वृत्तान्तको जानकर हृष्ट तुष्ट हृदयसे चार घंटावाला अश्वरथपर चढकर भगवानका दर्शनके लिये निकले, और जमालिके समान यावत् माता पिताकी आज्ञासे प्रव्रजित होकर अनगार हो गये। तथा ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हो गये। उसके बाद वह निषध अनगार अर्हत् अरिष्टनेमि भगवानके तथारूप स्था-विरोंके समीप सामायिक आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन किया तथा

જો અર્હત અરિષ્ટનેમિ ભગવાન પૂર્વાનુપૂર્વી વિચરતા નન્દનવનમા પધારે તો હુ પણ ભગવાનને વંદન નમસ્કાર કરૂં અને તેમની સેવા કરૂં, ત્યાર પછી ભગવાન અર્હત અરિષ્ટનેમિ તે નિષધકુમાર ના આ પ્રકારના આધ્યાત્મિક=અંતઃકરણના વિચાર આદિ જાણીને અઢાર હજાર શ્રમણોની સાથે તે નન્દનવન ઉદ્યાનમા પધાર્યા ભગવાનના દર્શન કરવા માટે પરિષદ્ પોતપોતાને ઘેરથી નીકળી ત્યાર પછી નિષધકુમાર પણ આ વૃત્તાન્તને જાણીને હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી ચાર ઘંટાવાળા અશ્વ-રથ ઉપર ચડીને ભગવાનના દર્શન કરવા નીકળ્યા અને જમાલીની પેઠે માતાપિતાની આજ્ઞાથી પ્રવ્રજિત થઇને અનગાર થઈ ગયા તથા ઈર્યાસમિતિ આદિથી યુક્ત થઈ ગુપ્તબ્રહ્મચારી બની ગયા ત્યાર પછી તે નિષધ અનગારે અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ ભગ-વાનના તથારૂપ સ્થવિરોની પાસે સામાયિક આદિ અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું

अधीत्य बहूनि चतुर्थ षष्ठ यावद् विचित्रैः तपःकर्मभिरात्मान भावयन् बहु प्रतिपूर्णानि नव वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयति, चत्वारिंशद् भक्तानि अनशनेन छिनत्ति, आलोचितप्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः आनुपूर्व्या कालगतः। ततः खलु स वरदत्तोऽनगारो निषधमनगार कालगत ज्ञात्वा यत्रव अर्हन् अरिष्टनेमिस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यावद् एवमवादीत्—एव खलु देवानुप्रियाणामन्तेवासी निषधो नाम अनगारः प्रकृतिभद्रको यावद् विनीत.। स खलु भदन्त ! निषधोऽनगार' कालमासे काल कृत्वा क्व गतः ? क्व उपपन्नः ? वरदत्त ! इति अर्हन् अरिष्टनेमि. वरदत्तमनगारमेवमवादीत्—एव खलु वरदत्त ! ममान्तेवासी निषधो नाम अनगार' प्रकृतिभद्रो यावद् विनीतो मम तथारूपाणा स्थविराणामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीत्य बहुप्रतिपूर्णानि नव

बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम आदि विचित्र तपसे आत्माको भावित करते हुए पूरे नौ वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालन किया। बयालीस भक्तोको अनशनसे छेदनकर पापस्थानोंकी आलोचना और प्रतिक्रमण कर समाधि प्राप्त हो, क्रमसे काल प्राप्त हुए। उसके बाद निषध अनगारको कालगत जानकर वरदत्त अनगार जहाँ अर्हत् अरिष्टनेमि थे वहाँ आये और वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार पूछे—हे भदन्त ! आपके अन्तेवासी निषध अनगार प्रकृतिभद्रक और यावत् विनीत थे, सो हे भदन्त ! वह निषध अनगार काल अवसरमें कालकर कहाँ गये और कहाँ उत्पन्न हुए ? वरदत्त अनगारका इस प्रकार वचन सुनकर भगवानने उनसे कहा—

हे वरदत्त ! मेरा अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक यावत् विनीत निषध

તથા ઘણા ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ આદિ વિચિત્ર તપ વડે આત્માને ભાવિત કરતા પૂરા નવ વર્ષ સુધી દીક્ષા પર્યાયનુ પાલન કર્યુ બેતાલીસ ભકતોનુ અનશનથી છેદન કરી પાપસ્થાનોની આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ કરી સમાધિ પ્રાપ્ત થતા આનુપૂર્વીથી કાલ ગત થયા ત્યાર પછી નિષધ અનગારને કાલગત થયેલા જાણીને વરદત્ત અનગાર જ્યા અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ હતા ત્યા આવ્યા અને વદન નમસ્કાર કરી આ પ્રકારે પૂછ્યુ —હે ભદન્ત ! આપના અ તેવાસી નિષધ અનગાર પ્રકૃતિભદ્રક અને બહુ વિનીત હતા માટે હે ભદન્ત ! તે નિષધ અનગાર કાળ અવસરમા કાળ કરીને કયા ગયા અને કયા જન્મ્યા ? વરદત્ત અનગારના આ પ્રકારના વચન સાભળીને ભગવાને તેને કહ્યુ —

હે વરદત્ત ! મારા પ્રકૃતિભદ્રક અ તેવાસી અને વિનીત એવા નિષધ અનગાર

वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा द्विचत्वारिंशद् भक्तानि अनशनेन छित्वा आलोचितप्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः कालमासे कालं कृत्वा ऊर्ध्वं चन्द्र-सूर्य-ग्रह-नक्षत्र-ताराल्पाणां सौधर्मेशान० यावद् अच्युतं त्रीणि च अष्टादशोत्तराणि ग्रैवेयकविमानावासशतानि व्यतिव्रज्य सर्वार्थसिद्धविमाने देवत्वेनोपपन्नः। तत्र खलु देवानां त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता। तत्र खलु निषधस्यापि देवस्य त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता। स खलु भदन्त! निषधो देवस्तस्माद् देवलोकाद् आयुःक्षये भवक्षयेण स्थितिक्षयेण अनन्तरं चयं च्युत्वा क्व गमिष्यति? क्व उपपत्स्यते? वरदत्त! इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे

अनगार मेरे तथारूप स्थविरोंके समीप सामयिक आदि ग्यारह अंगोंका अध्ययनकर पूरे नौ वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालनकर बयालीस भक्तोंका अनशनसे छेदनकर पापस्थानोंकी आलोचना और प्रतिक्रमणकर समाधि प्राप्त हो काल अवसरमे कालकर चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा आदिसे ऊपर सौधर्म ईशान आदि यावत् अच्युत देवलोकको उल्लङ्घन कर तीनसौ अठारह ग्रैवेयक विमानावासको भी उल्लङ्घन करता हुआ सर्वार्थसिद्ध विमानमे देवता होकर उत्पन्न हुआ। वहाँ देवताओंकी स्थिति तेंतीस सागरोपम है। उसी प्रकार निषध देवकी भी तेंतीस सागरोपम स्थिति है।

वरदत्त पूछते है—हे भदन्त! वह निषध देव उस देवलोकसे देव सम्बन्धी आयु भव और स्थिति क्षयके बाद च्यवकर कहाँ जायँगे और कहाँ उत्पन्न होंगे?

મારા તથારૂપ સ્થવિરોના પાસે સામાયિક આદિ અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કરી પૂરા નવ વરસ સુધી દીક્ષા પર્યાયનું પાલન કરીને અનશન વડે બેતાલીસ ભકતોનું છેદન કરી પોતાના પાપસ્થાનની આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ કરીને સમાધિ પ્રાપ્ત થતા કાળ અવસરમાં કાળ કરીને ચન્દ્ર, સૂર્ય, ગ્રહ, નક્ષત્ર, તારા, આદિની ઉપર સૌધર્મ ઈશાન આદિ યાવત્ અચ્યુત દેવલોકનું ઉલ્લંઘન કરી ત્રણસો અઢાર ગ્રૈવેયક વિમાનાવાસનું પણ ઉલ્લંઘન કરતા સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાં દેવતાપણામાં ઉત્પન્ન થયા ત્યાં દેવતાઓની સ્થિતિ તેત્રીસ સાગરોપમ છે એવી જ રીતે निषध દેવની પણ તેત્રીસ સાગરોપમ સ્થિતિ છે

વરદત્ત પૂછે છે—હે ભદન્ત! તે निषधदेव તે લોકમાંથી દેવ સંબંધી આયુભવ અને સ્થિતિ ક્ષય પછી ચ્યવીને ક્યાં જશે અને ક્યાં ઉત્પન્ન થશે?

वर्षे उन्नाते नगरे विशुद्धपितृवंशे राजकुले पुत्रतया प्रत्यायास्यति। ततः खलु स उन्मुक्तबालभावः विज्ञातपरिणतभावः यौवनकमनुप्राप्तः तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके केवलबोधिं बुद्‌ध्वा अगाराद् अनगारतां प्रव्रजिष्यति। स खलु तत्राऽनगारो भविष्यति, ईर्यासमितो यावद् गुप्तब्रह्मचारी। स खलु तत्र बहूनि चतुर्थषष्ठाष्टमदशमद्वादशैः मासार्द्धमासक्षपणैः विचित्रैः तपःकर्मभिरात्मानं भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयिष्यति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया आत्मानं जोषयिष्यति, जोषयित्वा षष्टिं भक्तानि अनशनेन छेत्स्यति। यस्यार्थं क्रियते नग्नभावो, मुण्डभावः, अस्नानको, यावद् अदन्तवर्णकः,

भगवान कहते है—

हे वरदत्त! यह निषध देव इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर महाविदेह क्षेत्रके उन्नात नगरमे विशुद्ध पितृवंशवाले राजकुलमे पुत्र रूपसे उत्पन्न होगा। उसके बाद बाल्यकाल बीतनेपर, सुप्त दसो अंगोके जागनेपर वह युवाऽवस्था को प्राप्त होगा, और तथारूप स्थविरोके समीप शुद्ध सम्यक्त्वको प्राप्तकर अगारसे अनगार होगा। वह अनगार वहाँ ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारी होगा। वह वहा बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम दशम द्वादश मासार्द्ध मास क्षपण-रूप विचित्रतपसे आत्माको भावित करता हुआ बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालन करेगा। बादमे मासिकी संलेखनासे आत्माको सेवित कर साठ भक्तोको अनशनसे छेदित करेगा। जिस मोक्ष प्राप्तिके लिये अनगार, नग्नत्व=परिमितवस्त्रधारित्व मुण्डभाव=द्रव्य भावसे

ભગવાન કહે છે —

હે વરદત્ત! આ નિષધદેવ આજ જમ્બૂદ્વીપ નામે દ્વીપની અંદર મહાવિદેહ ક્ષેત્રના ઉન્નાત નગરમાં વિશુદ્ધ પિતૃવંશવાળા રાજકુળમાં પુત્રરૂપે જન્મશે, ત્યાર પછી બાલ્યકાળ વીતી ગયા પછી સુતેલા દશેય અંગોની જાગૃતિ થતાં તે યુવાવસ્થાને પ્રાપ્ત થશે અને તથારૂપ સ્થવિરો પાસે શુદ્ધ સમ્યકત્વને પ્રાપ્ત કરી અગારમાંથી અનગાર થશે તે અનગાર ત્યાં ઈર્યાસમિતિ આદિથી યુકત થઈ યાવત્ ગુપ્તબ્રહ્મચારી થશે તે ત્યાં ઘણા ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ, માસાર્ધ, માસ, ક્ષપણરૂપ વિચિત્ર તપથી—આત્માને ભાવિત કરતાં ઘણાં વર્ષ સુધી દીક્ષાપર્યાયનું પાલન કરશે પછી માસિકી સંલેખનાથી આત્માને સેવિત કરી અનશનથી સાઠ ભકતોનું છેદન કરશે જે મોક્ષપ્રાપ્તિ માટે અનગાર નગ્નત્વ=પરિમિત વસ્ત્રધારિત્વ, મુંડભાવ=દ્રવ્ય ભાવથી

अच्छत्रकः, अनुपानत्कः, फलकशय्या, काष्ठशय्या, केशलोचो, ब्रह्मचर्यवासः, परगृहप्रवेशः, पिण्डपातः, लब्धापलब्धः, उच्चावचाश्च ग्रामकण्टका अ यास्यन्ते, तमर्थमाराधयिष्यति, आरा य चरमैरुच्छ्वास-निःश्वासैः सेत्स्यति, भोत्स्यते, यावत् सर्वदुःखानामन्त करिष्यति । एव खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन यावत् निक्षेपकः ॥ ३ ॥

॥ प्रथमम ययन समाप्तम् ॥ १ ॥

टीका—'तएण अरहा' इत्यादि । यस्यार्थं=यन्मोक्षप्राप्त्यर्थं क्रियते नग्नभाव.=अचेलत्व परिमितवस्त्रधारित्वमित्यर्थ', मुण्डभावः=दीक्षितत्वम् । अस्नातक =देशसर्वस्नानवर्जित. स्यात्मेति शेषः, अदन्तवर्णक =दन्तवर्णो-दन्ताना-मुज्ज्वलीकरण स एव दन्तवर्णक', अङ्गुलिदन्तशाणकाष्ठादिभिर्दन्तघर्षण, न दन्त-वर्णकोऽदन्तवर्णक.=दन्तोज्ज्वलीकरणव्यापारराहित्यम् । अच्छत्रक =छत्ररहित' । अनुपानत्क =पादत्राणरहित , उपलक्षणमेतत्-शकटशिबिकातुरगादि वाहनानामपि फलकशय्या=फलक=प्रतिलमायतकाष्ठ तद्रूपा शय्या (पाटा) इति भाषायाम् ।

मुण्डत्व, अस्नातक=देशत. और सर्वत. स्नान वर्जन, अदन्तवर्णक=अंगुलि दातन आदिसे दातोंको स्वच्छ न करना और मिसी आदिसे दातको न रगना, अच्छत्र=रजोहरण आदिका भी छत्र धारण नही करना, अनुपानत्क=पगरखी तथा मौजे आदिको नही पहिनना, एव गाडी शिबिका और घोडा आदिकी सवारी नहीं करना, फलकशय्या=काष्ठ आदिके पाटपर सोना, काष्ठशय्या=काष्ठपर सोना, केशलोच=अपने या दूसरे साधुओंके हाथसे केशोका लुचन करना-कराना । ब्रह्मचर्यवास= विषय सुख परित्याग रूप ब्रह्मचर्यमें स्थिर होना, परगृहप्रवेश=भिक्षाके लिए गृहस्थोंके घरमें जाना, पिण्डपात=भिक्षाग्रहण, लब्धापलब्ध=लाभ

મુડત્વ, अस्नातक=દેશત અને સર્વત સ્નાન વર્જન (ન નહાવુ), अदन्तवर्णक= આગળી दन्तशाण=કાષ્ટ (લાકડુ) આદિથી દાતોને સ્વચ્છ ન કરવા તથા મીશી આદિથી દાતને ન રગવા अच्छत्र=રજોહરણ આદિનુ પણ છત્ર ધારણ ન કરવુ, अनुपानत्क= પગરખા અને મોજા આદિ પગમા ન પહેરવા, વળી ગાડી પાલખી અને ઘોડા આદિની સવારી ન કરવી, फलकशय्या=લાકડાની(કાષ્ઠની બનાવેલી)પાટ ઉપર સૂવુ काष्ठशय्या= લાકડા પર સૂવુ केशलोच=પોતાના કે બીજા સાધુઓના હાથથી કેશોનુ લુચન કરવુ-કરાવવુ, ब्रह्मचर्यवास=વિષયસુખ પરિત્યાગરૂપી બ્રહ્મચર્યમા સ્થિર રહેવુ, परगृहप्रवेश ભિક્ષા માટે ગૃહસ્થોના ઘરમા જવુ, पिण्डपात=ભિક્ષાગ્રહણ, लब्धापलब्ध=લાભ તેમજ

वर्षे उन्नाते नगरे विशुद्धपितृवंशे राजकुले पुत्रतया प्रत्यायास्यति । ततः खलु स उन्मुक्तबालभावः विज्ञातपरिणतमात्रः यौवनकमनुप्राप्तः तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके केवलबोधिं बुद्ध्वा अगारात् अनगारतां प्रव्रजिष्यति । स खलु तत्राऽनगारो भविष्यति, ईर्यासमितो यावद् गुप्तब्रह्मचारी । स खलु तत्र बहूनि चतुर्थषष्ठाष्टमदशमद्वादशैः मासार्द्धमासक्षपणैः विचित्रैः तपःकर्मभिरात्मानं भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयिष्यति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया आत्मानं जोषयिष्यति, जोषयित्वा षष्टिं भक्तानि अनशनेन छेत्स्यति । यस्यार्थं क्रियते नग्नभावो, मुण्डभावः, अस्नानको, यावद् अदन्तवर्णकः,

---

भगवान कहते हैं—

हे वरदत्त ! यह निषध देव इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर महाविदेह क्षेत्रके उन्नात नगरमें विशुद्ध पितृवंशवाले राजकुलमें पुत्र-रूपसे उत्पन्न होगा । उसके बाद बाल्यकाल बीतनेपर, सुप्त दसों अंगोंके जागनेपर वह युवाऽवस्था को प्राप्त होगा, और तथारूप स्थविरोंके समीप शुद्ध सम्यक्त्वको प्राप्तकर अगारसे अनगार होगा । वह अनगार वहाँ ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारी होगा । वह वहां बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम दशम द्वादश मासार्द्ध मास क्षपण रूप विचित्रतपसे आत्माको भावित करता हुआ बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालन करेगा । बादमें मासिकी संलेखनासे आत्माको सेवित कर साठ भक्तोंको अनशनसे छेदित करेगा । जिस मोक्ष प्राप्तिके लिये अनगार, नग्नत्व=परिमितवस्त्रधारित्व मुण्डभाव=द्रव्य भावसे

ભગવાન કહે છે —

હે વરદત્ત ! આ નિષધદેવ આજ જમ્બૂદ્વીપ નામે દ્વીપની અંદર મહાવિદેહ ક્ષેત્રના ઉન્નાત નગરમાં વિશુદ્ધ પિતૃવંશવાળા રાજકુળમાં પુત્રરૂપે જન્મશે, ત્યાર પછી બાલ્યકાળ વીતી ગયા પછી સુતેલા દશેય અંગોની જાગૃતિ થતાં તે યુવાવસ્થાને પ્રાપ્ત થશે અને તથારૂપ સ્થવિરો પાસે શુદ્ધ સમ્યકત્વને પ્રાપ્ત કરી અગારમાંથી અનગાર થશે તે અનગાર ત્યાં ઈર્યાસમિતિ આદિથી યુક્ત થઈ યાવત્ ગુપ્તબ્રહ્મચારી થશે તે ત્યાં ઘણા ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ, માસાર્ધ, માસ, ક્ષપણરૂપ વિચિત્ર તપથી-આત્માને ભાવિત કરતા ઘણાં વર્ષ સુધી દીક્ષાપર્યાયનું પાલન કરશે પછી માસિકી સંલેખનાથી આત્માને સેવિત કરી અનશનથી સાઠ ભકતોનું છેદન કરશે જે મોક્ષપ્રાપ્તિ માટે અનગાર નગ્નત્વ=પરિમિત વસ્ત્રધારિત્વ, મુંડભાવ=દ્રવ્ય ભાવથી

एवं सेसा वि एक्कारस अज्झयणा नेयव्वा संगहणीअणु-
सारेण, अहीणमइरित्त एक्कारससु वि। तिबेमि ॥ ३ ॥

॥ बारस अज्झयणा समत्ता ॥ १२ ॥

॥ वह्लिदसा नामं पंचमो वग्गो समत्तो ॥ ५ ॥

॥ निरयावलिया सुयक्खंधो समत्तो ॥

॥ समत्ताणि उवगाणि ॥

छाया—एवं शेषाण्यपि एकादशाध्ययनानि ज्ञेयानि संग्रण्यनुसारेण, अहीनातिरिक्तम् एकादशस्वपि। इति ब्रवीमि ॥ ३ ॥

॥ द्वादशाध्ययनानि समाप्तानि ॥ १२ ॥

॥ वृष्णिदशानामा पञ्चमोवर्गः समाप्तः ५ ॥

॥ 'निरयावलिकाश्रुतस्कन्धः समाप्त' ॥

॥ समाप्तानि उपाङ्गानि ॥

टीका—एवं शेषाण्यपि=अवशिष्टान्यपि एकादशाध्ययनानि संग्रहण्यनु-सारेण=अस्यैवाध्ययनस्यादौ "निसढे मायनी" इत्यादिसंग्रहणीगाथानुसारेण ज्ञातव्यानि। एकादशस्वपि=सर्वेष्वप्यध्ययनेषु अहीनातिरिक्त=न्यूनाधिकभाव-रहितं वर्णनं विज्ञेयमिति भावः। शेषं निगदसिद्धम्। इति=यथा भगवत्समीपे मया श्रुतं तथैव ब्रवीमि=कथयामि ॥ ३ ॥

॥ इति द्वादशमध्ययनं समाप्तम् ॥ १२ ॥

इसी प्रकार शेष ग्यारह अध्ययनोंको भी संग्रहणी गाथाके अनुसार जानना चाहिये। ग्यारहों अध्ययनोंमें न्यूनाधिकभावसे रहित वर्णन जानना चाहिये।

સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે વૃષ્ણિદશાના પ્રથમ અધ્યયનના ભાવ આ પ્રકારે કહ્યા છે (૩)

વૃષ્ણિદશાનું પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત

આવી રીતે બાકીના અગીયાર અધ્યયનને પણ સંગ્રહણી ગાથાને અનુસરીને જાણવા જોઇએ અગીયારે અધ્યયનોમાં ન્યૂનાધિક (વધતા ઓછા) ભાવથી રહિત વર્ણન જાણવું જોઇએ

काष्ठशय्या=काष्ठं स्थूलमायतमेव तद्रूपा शय्या, केशलोच'=स्वपरहस्तेन केशो त्पाटनम् । ब्रह्मचर्यवास'-ब्रह्मचर्ये=विषयसुखत्यागे वसनं ब्रह्मचर्यवासः । पर-गृहप्रवेश'=भिक्षाद्यर्थमन्यगृहप्रवेश' । पिण्डपातः=भिक्षाग्रहणम् । लब्धापलब्धः=लाभालाभः । उच्चावचा'-उच्चाश्च अवचाश्च उच्चावचा=अनुकूलप्रतिकूला ग्राम कण्टका.-ग्राम=इन्द्रियसमूहस्तस्य कण्टका इव कण्टकाः इन्द्रियवर्गानुकूलप्रति कूलशब्दादिषु सुखदु खोत्पादकत्वेन मुक्तिमार्गं प्रति विघ्नहेतुत्वादेषां कण्टकत्व व्यक्तम् । उच्चावचा ग्रामकण्टका अ यास्यन्ते तम् अर्थं=मोक्षप्राप्तिरूपम् आरा धयिष्यति । सेत्स्यति=सकलकार्यकारितया सिद्धो भविष्यति । भोत्स्यते=वि मलकेवलालोकेन सकललोकालोकं ज्ञास्यति । यावच्छब्देन-'मुच्चिहिइ परिणि-व्वाहिइ' इत्यनयो' सङ्ग्रहः, तथाहि-मोक्ष्यते=सर्वकर्मभ्यो मुक्तो भविष्यति । परिनिर्वास्यति=समस्तकर्मकृतविकाररहितत्वेन स्वस्थो भविष्यति । सर्वदु.खाना=समस्तक्लेशानाम् अ त=नाशं करिष्यति अव्याबाधसुखभाग् भविष्यतीत्यर्थ । हे जम्बूः ! एवम्=उक्तप्रकारेण श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सिद्धिगति नामधेयं स्थान समाप्तेन यावद् निक्षेपक=समाप्तिसूचको वाक्यप्रबन्ध ॥३॥

इति प्रथमम ययनं समाप्तम् ॥ १ ॥

और अलाभ, और उच्चावचग्रामकण्टक=इन्द्रियोके अनुकूल प्रतिकूल शब्द आदिको सहन करना, आदि मर्यादामें चलते है, उस मोक्षरूप अर्थकी आराधना करेगा। और सकल कार्योंको सिद्ध करके अन्तिम उच्छ्वास नि श्वासोसे सिद्ध होगा। निर्मल केवलज्ञानसे सकल लोकालोकको जानेगा और सर्वकर्मोंसे मुक्त होगा, और सकल-कर्मविकाररहित होकर शीतलीभूत होगा और सम्पूर्ण दु खोका अन्त करके अव्याबाध सुखको प्राप्त करेगा।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीरने वृष्णिदशाके प्रथम अध्य-यनका भाव इस प्रकार कहा है ॥ ३ ॥

वृष्णिदशाका प्रथम अध्ययन समाप्त हुआ

ગેરલાભ, અને उच्चावचग्रामकण्टक=ઇન્દ્રિયોને અનુકૂળ શબ્દો આદિ સહન કરવા આદિ મર્યાદામા ચપે છે, તે મોક્ષરૂપ અર્થની આરાધના કરશે અને સકલ કાર્ય સિદ્ધ કરી છેલ્લા ઉચ્છવાસ નિ શ્વાસો પછી સિદ્ધ થશે. નિર્મળ કેવળજ્ઞાનથી તમામ લોક અલોકને જાણશે અને સર્વ કર્મથી મુકત થશે અને સકળ કર્મ વિકાર રહિત થઈને શીતલીભૂત (શાન્ત) થશે અને સંપૂર્ણ દુ ખોનો અ ત લાવીને અવ્યાબાધ સુખને પ્રાપ્ત કરશે.

एवं सेसा वि एक्कारस अज्झयणा नेयव्वा संगहणीअणुसारेण, अहीणमइरित्त एक्कारससु वि। तिबेमि ॥ ३ ॥

॥ बारस अज्झयणा समत्ता ॥ १२ ॥

॥ वह्दिसा नामं पंचमो वग्गो समत्तो ॥ ५ ॥

॥ निरयावलिया सुयकखंधो समत्तो ॥

॥ समत्ताणि उवंगाणि ॥

छाया—एव शेषाण्यपि एकादशाध्ययनानि ज्ञेयानि सग्रण्यनुसारेण, अहीनाऽतिरिक्तम् एकादशस्वपि । इति ब्रवीमि ॥ ३ ॥

॥ द्वादशाध्ययनानि समाप्तानि ॥ १२ ॥

॥ वृष्णिदशानामा पञ्चमोवर्ग. समाप्त. ५ ॥

॥ निरयावलिकाश्रुतस्कन्धः समाप्त ॥

॥ समाप्तानि उपाङ्गानि ॥

टीका—एव शेषाण्यपि=अवशिष्टान्यपि एकादशाध्ययनानि सग्रहण्यनुसारेण=अस्यैवाध्ययनस्यादौ "निसढे मायनी" इत्यादिसग्रहणीगाथानुसारेण ज्ञातव्यानि । एकादशस्वपि=सर्वेष्वप्यध्ययनेषु अहीनातिरिक्त=न्यूनाधिकभावरहित वर्णन विज्ञेयमिति भावः । शेष निगदसिद्धम् । इति=यथा भगवत्समीपे मया श्रुत तथैव ब्रवीमि=कथयामि ॥ ३ ॥

॥ इति द्वादशमध्ययन समाप्तम् ॥ १२ ॥

इसी प्रकार शेष ग्यारह अध्ययनोंको भी सग्रहणी गाथाके अनुसार जानना चाहिये। ग्यारहों अध्ययनोंमे न्यूनाधिकभावसे रहित वर्णन जानना चाहिये ।

સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે વૃષ્ણિદશાના પ્રથમ અધ્યયનના ભાવ આ પ્રકારે કહ્યા છ (૩)

વૃષ્ણિદશાનુ પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત.

આવી રીતે બાકીના અગીયાર અધ્યયનને પણ સગ્રહણી ગાથાને અનુસરીને જાણવા જોઇએ અગીયારે અધ્યયનોમા ન્યૂનાધિક (વધતા ઓછા) ભાવથી રહિત વર્ણન જાણવુ જોઇએ

मूलम्–निरयावलियाउवंगे णं एगो सुयक्खधो, पच्च वग्गा, पंचसु दिवसेसु उद्दिस्सति, तत्थ चउसु वग्गेसु दस दस उद्देसगा, पच्चमवग्गे वारस उद्देसगा ॥

॥ निरयावलियासुत्त समत्त ॥

छाया–निरयावलिकोपाङ्गे खलु एकः श्रुतस्कन्ध, पञ्च वर्गाः, पञ्चसु दिवसेसु उद्दिश्यन्ते, तत्र चतुर्षु वर्गेषु दश दश उद्देशकाः, पञ्चमवर्गे द्वादशोद्देशकाः ॥

॥ इति निरयावलिकासूत्र समाप्तम् ॥

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! भगवानके समीप मैंने जैसा सुना वैसा तुम्हें कहा ॥ ३ ॥

। वारहवाँ अध्ययन समाप्त हुआ ।

। वृष्णि दशा नामक पाँचवाँ वर्ग समाप्त हुआ ।

निरयावलिका नामक श्रुतस्कन्ध समाप्त.

(उपाङ्ग समाप्त हुए)

निरयावलिका उपाङ्गमें एक श्रुतस्कन्ध है, पाँच वर्ग हैं, पाच दिनोंमें इसका उपदेश दिया गया है। इसके चार वर्गोंमे दस–दस उद्देश हैं, पाचवें वर्गमें बारह उद्देश हैं।

इति निरयावलिका सूत्र समाप्त ।

સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ ! ભગવાનની પાસે મે જેવું સાભળ્યુ એવુ તને કહુ છુ (૩)

બારમુ અધ્યયન સમાપ્ત.

વૃષ્ણિદશા નામનો પાંચમો વર્ગ સમાપ્ત.

નિરયાવલિકા નામનો શ્રુતસ્કન્ધ સમાપ્ત

(ઉપાંગ સમાપ્ત)

નિરયાવલિકા ઉપાગમા એક શ્રુતસ્કન્ધ છે પાચ વર્ગ છે પાચ દિવસમા આનો ઉપદેશ અપાયો છે આના ચાર વર્ગમા દશ–દશ ઉદ્દેશો છે પાચમા વર્ગમા બાર ઉદ્દેશો છે

ઇતિ નિરયાવલિકા સૂત્ર સમાપ્ત.

॥ शास्त्रप्रशस्तिः ॥

काठियावाड देशेऽस्मिन्, वांकानेरपुर महत् ।
अत्रेत्य मुनिभिः सार्द्धं, ग्रामाद्ग्रामान्तर व्रजन् ॥ १ ॥
टीकामकार्षमेतर्हि, मुद्री सुन्दरबोधिनीम् ।
त्रिपरद्विसहस्राब्दे, विक्रमीये सुखावहे ॥ २ ॥
आषाढे बहुले पक्षे, पञ्चम्या बुधवासरे ।
सेय सम्पूर्णता याता, भव्यानामुपकारिणी ॥ ३ ॥
टीकासमाप्तिकाले च साधव सत्य उत्तमाः ।
सन्त्यत्र तेषा नामानि, कथ्यन्ते गुणवृद्धये ॥ ४ ॥
सम्प्रदाया लसन्त्यत्र, निरपायाः सदार्हताः ।
लिम्बडीसम्प्रदायोऽत्र, दीप्यते दिवि चन्द्रवत् ॥ ५ ॥

प्रशस्ति.

काठियावाड प्रान्तमें वांकानेर नामका एक नगर है। तीर्थङ्कर परम्परासे ग्रामानुग्राम विहार करते हुए इस नगरमें आकर विक्रम सम्वत् २००३ को मैंने इस सुन्दरबोधिनी नामक टीकाकी रचना की ॥ १ ॥ २ ॥

भव्योंकी उपकारिणी यह टीका अषाढ कृष्ण पञ्चमी बुधवारको समाप्त हुई ॥ ३ ॥

इस टीकाकी समाप्तिके समय जो महासतियां तथा मुनिराज विराजते थे उनके नाम गुणवृद्धिके लिये कहे जाते हैं ॥ ४ ॥

इस ससारमे पवित्र और निर्मल बहुतसी आर्हत सम्प्रदायें

પ્રશસ્તિ

કાઠિયાવાડ પ્રાન્તમા वांकानेर નામે એક નગર છે તીર્થંકર પરપરાથી ગ્રામેગ્રામ વિહાર કરતા કરતા આ નગરમા આવીને વિક્રમ સવત્ ૨૦૦૩ મા મે આ सुदरबोधिनी નામની ટીકા રચી (૧–૨)

ભવ્યોની ઉપકાર કરવાવાળી આ ટીકા અષાઢ (ગુ૦ જેઠ) વદિ પાચમ બુધવારે સમાપ્ત થઇ (૩)

આ ટીકાની સમાપ્તિ વખતે જે ઉત્તમ સાધુ અને ઉત્તમ સાધ્વીઓ હતી તેમના નામ ગુણવૃદ્ધિ માટે કહુ છુ (૪)

આ સસારમા ઘણા નિર્મલ અને ઉત્તમ જૈન સપ્રદાયો છે તે સપ્રદાયોમા लींबडी सप्रदाय આકાશમા ચન્દ્ર ની પેઠે દેદીપ્યમાન છે (૫)

मूलम्–निरयावलियाउवगे णं एगो सुयक्खंधो, पंच वग्गा, पंचसु दिवसेसु उद्दिस्सति, तत्थ चउसु वग्गेसु दस दस उद्देसगा, पंचमवग्गे बारस उद्देसगा ॥

॥ निरयावलियासुत्तं समत्तं ॥

छाया–निरयावलिकोपाङ्गे खलु एकः श्रुतस्कन्धः, पञ्च वर्गाः, पञ्चसु दिवसेसु उद्दिश्यन्ते, तत्र चतुर्षु वर्गेषु दश दश उद्देशकाः, पञ्चमवर्गे द्वादशोद्देशकाः ॥

॥ इति निरयावलिकासूत्रं समाप्तम् ॥

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! भगवानके समीप मैंने जैसा सुना वैसा तुम्हें कहा ॥ ३ ॥

। बारहवाँ अध्ययन समाप्त हुआ ।

। वृष्णि दशा नामक पाँचवाँ वर्ग समाप्त हुआ ।

निरयावलिका नामक श्रुतस्कन्ध समाप्त.

(उपाङ्ग समाप्त हुए)

निरयावलिका उपाङ्गमे एक श्रुतस्कन्ध है, पाँच वर्ग हैं, पाच दिनोंमें इसका उपदेश दिया गया है। इसके चार वर्गोंमें दस–दस उद्देश हैं, पाचवें वर्गमे बारह उद्देश हैं।

-इति निरयावलिका सूत्र समाप्त

સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ ! ભગવાનની પાસે મેં જેવું સાભળ્યું એવું તને કહું છુ (૩)

બારમું અધ્યયન સમાપ્ત.

વૃષ્ણિદશા નામનો પાંચમો વર્ગ સમાપ્ત.

નિરયાવલિકા નામનો શ્રુતસ્કન્ધ સમાપ્ત

(ઉપાંગ સમાપ્ત)

નિરયાવલિકા ઉપાગમા એક શ્રુતસ્કન્ધ, છે પાચ વર્ગ છે પાચ દિવસમા આનો ઉપદેશ અપાયો છે આના ચાર, વર્ગમા દશ–દશ ઉદ્દેશો છે પાચમા વર્ગમા બાર ઉદ્દેશો છે

ઇતિ નિરયાવલિકા સૂત્ર સમાપ્ત

॥ शास्त्रप्रशस्तिः ॥

काठियावाड देशेऽस्मिन्, वाकानेरपुर महत् ।
अत्रेत्य मुनिभिः सार्द्धं, ग्रामाद्ग्रामान्तर व्रजन् ॥ १ ॥
टीकामकार्षमेतर्हि, मुद्रीं सुन्दरबोधिनीम् ।
त्रिपरद्विसहस्राब्दे, विक्रमीये सुखावहे ॥ २ ॥
आषाढे बहुले पक्षे, पञ्चम्यां बुधवासरे ।
सेयं सम्पूर्णता याता, भव्यानामुपकारिणी ॥ ३ ॥
टीकासमाप्तिकाले च साधवः सत्य उत्तमाः ।
सन्त्यत्र तेषां नामानि, कथ्यन्ते गुणवृद्धये ॥ ४ ॥
सम्प्रदाया ह्यसन्त्यत्र, निरपायाः सदार्हताः ।
लिम्बडीसम्प्रदायोऽत्र, दीप्यते दिवि चन्द्रवत् ॥ ५ ॥

प्रशस्ति.

काठियावाड प्रान्तमें वाकानेर नामका एक नगर है। तीर्थंकर परम्परासे ग्रामानुग्राम विहार करते हुए इस नगरमें आकर विक्रम सम्वत् २००३ को मैंने इस सुन्दरबोधिनी नामक टीकाकी रचना की ॥ १ ॥ २ ॥

भव्योंकी उपकारिणी यह टीका अषाढ कृष्ण पञ्चमी बुधवारको समाप्त हुई ॥ ३ ॥

इस टीकाकी समाप्तिके समय जो महासतिया तथा मुनिराज विराजते थे उनके नाम गुणवृद्धिके लिये कहे जाते हैं ॥ ४ ॥

इस ससारमें पवित्र और निर्मल बहुतसी आर्हत सम्प्रदायें

પ્રશસ્તિ

કાઠિયાવાડ પ્રાન્તમા વાકાનેર નામે એક નગર છે તીર્થંકર પરપરાથી ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતા કરતા આ નગરમા આવીને વિક્રમ સવત્ ૨૦૦૩ મા મે આ સુંદરબોધિની નામની ટીકા રચી (૧-૨)

ભવ્યોની ઉપકાર કરવાવાળી આ ટીકા અષાઢ (ગુ૦ જેઠ) વદિ પાચમ બુધવારે સમાપ્ત થઇ (૩)

આ ટીકાની સમાપ્તિ વખતે જે ઉત્તમ સાધુ અને ઉત્તમ સાધ્વીઓ હતી તેમના નામ ગુણવૃદ્ધિ માટે કહુ છુ (૪)

આ સસારમા ઘણા નિર્મલ અને ઉત્તમ જૈન સપ્રદાયો છે તે સપ્રદાયોમા લીંબડી સમ્પ્રદાય આકાશમા ચન્દ્ર ની પેઠે દેદીપ્યમાન છે (૫)

तत्राऽस्ति शान्तो मनसाऽथ दान्तः, कृती मुनिः केशवलालनामा ।
गुणैर्गुरोरुच्चपदाऽधिकारी, स्वतत्त्वधारी विलसत्प्रभावः ॥ ६ ॥
गुणाभिरामो गुणसम्प्रचारे, सदाऽनिरामो निहतस्वकामः ।
सुत्यक्तरामोऽपि विभाति नाम्ना, रामो मुनिः केवल इत्यय च ॥७॥
प्रवर्त्तिनी झाकलबाइनाम्नी श्रीजीकुमारेति सतीतरा च ।
सन्तोकबाईति परा सती च, तिस्रोऽप्यजस्रं दधते व्रतित्वम् ॥८॥

हैं। इन सम्प्रदायोंमे लिम्बडी सम्प्रदाय आकाशमें चन्द्रमाके समान देदीप्यमान है ॥ ५ ॥

इस लिम्बडी सम्प्रदायमें शान्त तथा मन और इन्द्रियोंको दमन करने वाले कृती अर्थात् पण्डितराज मुनिश्री 'केशवलालजी महाराज हैं, जो गुणोंसे गुरुके उच्च पदके उत्तराधिकारी हैं। तथा ये मुनिवर स्व=आत्मा अथवा जैनागमके तत्त्वोंके निरूपण करनेमें प्रवीण हैं, एव अपने तेजसे देदीप्यमान हैं ॥ ६ ॥

और दूसरे मुनि जो कि गुणोसे अभिराम (सुन्दर) हैं तथा गुणोके प्रचारमे सर्वदा लगे रहेते हैं और जिन्होने सभी सांसारिक कामनाओंका त्याग कर दिया है इस प्रकारके यह मुनिराज सुत्यक्त राम=(रामा=स्त्रीके त्यागी) होनेपर भी 'राम' इस नामसे प्रसिद्ध हैं। और तीसरे विद्यार्थी केवल मुनि हैं ॥ ७ ॥

अब महासतियोके नाम कहते हैं-

यहाँ पर ये महासतियाँ सर्वदा पञ्चमहाव्रतको धारण करती

આ લીંબડી સમ્પ્રદાયમા શાન્ત તથા મન અને ઇન્દ્રિયોને સયમથી દમન કરવાવાળા કૃતી અર્થાત પડિત પ્રવર મુનિશ્રી केशवलालजी મહારાજ છે જે ગુણો વડે ગુરૂના ઉચ્ચપદના ઉત્તરાધિકારી છે, તથા આ મુનિવર સ્વ=આત્મા અથવા જૈન આગમના તત્વોના નિરૂપણ કરવામા પ્રવીણ છે એ પ્રમાણે તેઓ પોતાના તેજ વડે દેદીપ્યમાન છે (૬)

વળી બીજા મુનિ કે જે ગુણો વડે અભિરામ (સુન્દર) છે તથા ગુણોના પ્રચારમા સર્વદા લાગ્યા રહે છે તથા જેમણે સાસારિક બધી કામનાઓનો ત્યાગ કર્યો છે એવા મુનિરાજ सुत्यक्तराम=રામા (સ્ત્રી) ને છોડીને પણ 'राम' આવા નામથી શોભી રહ્યા છે અર્થાત બીજા રામ મુનિ છે ત્રીજા केवळमुनि છે (૭)

હવે મહાસતીઓના નામ કહે છે -

અહીં સાધ્વીઓ હમેશા પાચ મહાવ્રત ધારણ કરતા વિચરે છે તેમા પ્રથમ

साध्वी श्रीपार्वतीबाई, श्री हेमकुमरा ऽभिधा ।
वैयावृत्त्यैकशीला श्री, सम्झूबाई महासती ॥ ९ ॥

वांकानेरपुरस्थ एष परमोदारो महाधार्मिकः,
शुद्धस्थानकवासिधर्मनिरतः सम्यक्त्वभावान्वितः ।
तत्त्वातत्त्वपयोविवेचनविधौ हंसायमानः सदा,
सर्वेषामुपकारको विजयते श्री जैनसंघो महान् ॥ १० ॥

हुई विचर रही हैं, इनमें प्रथम महासतीका नाम प्रवर्तिनी श्री झाकलबाई स्वामी है, दूसरी महासतीका नाम श्री श्रीजी कुँवरबाई स्वामि है, तथा तीसरी महासतीका नाम श्री सन्तोकबाई स्वामी है । ये तीन ठाणो से स्थिरवास विराजती हैं ॥ ८ ॥

तथा महासती श्री पार्वतीबाई स्वामी और महासती श्री हेमकुवरबाई स्वामी एवं सेवाभावी महासती श्री सम्झुबाई स्वामी यहाँ तीन ठाणों से विराजती हैं ॥ ९ ॥

वांकानेरका यह परम उदार महाधार्मिक श्री जैनसंघ सदा विजयशाली है । यह जैनसंघ शुद्ध स्थानकवासी धर्ममें निरत है तथा सम्यक्त्वभावसे युक्त है, एवं तत्व और अतत्व रूपी दुग्ध और जलके विवेचनमें हंसके समान है, और यह संघ सभी प्राणियोंका हितकारक है ॥ १० ॥

મહાસતીનું નામ પ્રવર્તિની झाकलबाई स्वामी છે બીજી સતીનું નામ श्रीश्रीजीकुवरबाई स्वामी તથા ત્રીજી સતીનું નામ श्रीसतोकबाई स्वामी છે આ ત્રણ ઠાણા સ્થિરવાસ બિરાજે છે (૮)

મહાસતી श्री पार्वतीबाई स्वामी તથા श्री हेमकुवरबाई स्वामी અને સેવાપરાયણ श्री समजुबाई स्वामी અહીં બિરાજે છે (૯)

વાંકાનેરનો આ પરમ ઉદાર મહાધાર્મિક श्री जैनसंघ સદા વિજયશાળી છે આ जैनसंघ શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મમાં નિરત છે તથા સમ્યકત્વ ભાવથી યુક્ત છે અર્થાત તત્ત્વ અને અતત્ત્વરૂપી દૂધ અને પાણીના વિવેચનમાં હંસ સમાન છે અને આ સંઘ સર્વ પ્રાણીઓનો હિતકારક છે (૧૦)

तत्रास्ति शान्तो मनसाऽथ दान्तः, कृतो मुनिः केशवलालनामा ।
गुणैर्गुरोरुच्चपदाऽधिकारी, स्वतत्त्वधारी विलसत्प्रभाव. ॥ ६ ॥
गुणाभिरामो गुणसम्प्रचारे, सदाऽविरामो निहतस्वकामः ।
सुत्यक्तरामोऽपि विभाति नाम्ना, रामो मुनिः केवल इत्यय च ॥७॥
प्रवर्त्तिनी झाकलबाइनाम्नी श्रीजीकुमारेति सतीतरा च ।
सन्तोकबाईति परा सती च, तिस्रोऽप्यजस्र दधते व्रतित्वम् ॥८॥

हैं। इन सम्प्रदायोंमे लिम्बडी सम्प्रदाय आकाशमें चन्द्रमाके समान देदीप्यमान है ॥ ५ ॥

इस लिम्बडी सम्प्रदायमें शान्त तथा मन और इन्द्रियोंको दमन करने वाले कृती अर्थात् पण्डितराज मुनिश्री 'केशवलालजी महाराज हैं, जो गुणोंसे गुरुके उच्च पदके उत्तराधिकारी है। तथा ये मुनिवर स्व=आत्मा अथवा जैनागमके तत्वोंके निरूपण करनेमें प्रवीण है, एव अपने तेजसे देदीप्यमान हैं ॥ ६ ॥

और दूसरे मुनि जो कि गुणोसे अभिराम (सुन्दर) हैं तथा गुणोके प्रचारमे सर्वदा लगे रहते है और जिन्होने सभी सांसारिक कामनाओंका त्याग कर दिया है इस प्रकारके यह मुनिराज सुत्यक्त राम=(रामा=स्त्रीके त्यागी) होनेपर भी 'राम' इस नामसे प्रसिद्ध हैं। और तीसरे विद्यार्थी केवल मुनि हैं ॥ ७ ॥

अब महासतियोके नाम कहते हैं–

यहाँ पर ये महासतियॉ सर्वदा पञ्चमहाव्रतको धारण करती

આ લીંબડી સપ્રદાયમા શાન્ત તથા મન અને ઇન્દ્રિયોને સયમથી દમન કરવાવાળા કૃતી અર્થાન પડિત પ્રવર મુનિશ્રી केशवलालजी મહારાજ છે જે ગુણો વડે ગુરૂના ઉચ્ચપદના ઉત્તરાધિકારી છે, તથા આ મુનિવર સ્વ=આત્મા અથવા જૈન આગમના તત્વોના નિરૂપણ કરવામા પ્રવીણ છે એ પ્રમાણે તેઓ પોતાના તેજ વડે દેદીપ્યમાન છે (૬)

વળી બીજા મુનિ કે જે ગુણો વડે અભિરામ (સુન્દર) છે તથા ગુણોના પ્રચારમા સર્વદા લાગ્યા રહે છે તથા જેમણે સાસારિક બધી કામનાઓનો ત્યાગ કર્યો છે એવા મુનિરાજ सुत्यक्तराम=રામા (સ્ત્રી) ને છોડીને પણ 'राम' આવા નામથી શોભી રહ્યા છે અર્થાત બીજા રામ મુનિ છે ત્રીજા केवलमुनि છે. (૭)

હવે મહાસતીઓના નામ કહે છે–

અહીં સાધ્વીઓ હમેશા પાચ મહાવ્રત ધારણ કરતી વિચરે છે તેમા પ્રથમ

देवे गुरौ धर्मपथे च भक्तिर्येषा सदाचाररुचिर्हि नित्यम् ।
ते श्रावका धर्मपरायणाश्च सुश्राविकाः सन्तिगृहे गृहेऽत्र ॥११॥

इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषाकलितललित–कलापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक–श्री शाहूछत्रपति कोल्हापुर राजप्रदत्त–'जैनशास्त्राचार्य'पपद भूषित–कोल्हापुरराज गुरु–बालब्रह्मचारि- जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर–पूज्यश्री–घासीलाल व्रतिविरचिता श्री निरयावलिकादि पञ्चसूत्राणा सुन्दरबोधिनी टीका समाप्ता ।

卐 श्री आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार 卐
सचालक
श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, जयपुर

इस नगरके घर घरमे देव, गुरू और धर्ममे सर्वदा श्रद्धा रुचि रखनेवाले तथा सदाचारसे युक्त एव धर्मपरायण श्रावक और श्राविकाए विद्यमान है । ॥ ११ ॥

इति श्री निरयावलिका आदि पाच सूत्रोंकी सुन्दरबोधिनी टीकाका हिन्दी अनुवाद समाप्त ।

જેમની દેવ, ગુરૂ તથા ધર્મમા હમેશા ભક્તિ છે તથા સદાચારમા રૂચી છે એવા શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓ આ નગરમા ઘેરઘેર વિદ્યમાન છે (૧૧)

ઇતિ નિરયાવલિકા આદિ પાચ સૂત્રોની સુન્દરબોધિની ટીકાનો ગુજરાતી અનુવાદ સમાપ્ત

मङ्गल भगवान वीरो मङ्गल गौतम' प्रभु ।
सुधर्मा मङ्गल जम्बूर्जैनधर्मश्च मङ्गलम् ॥